www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चेतना की शिखर यात्रा

द्वितीय भाग

स्मररखण्ड

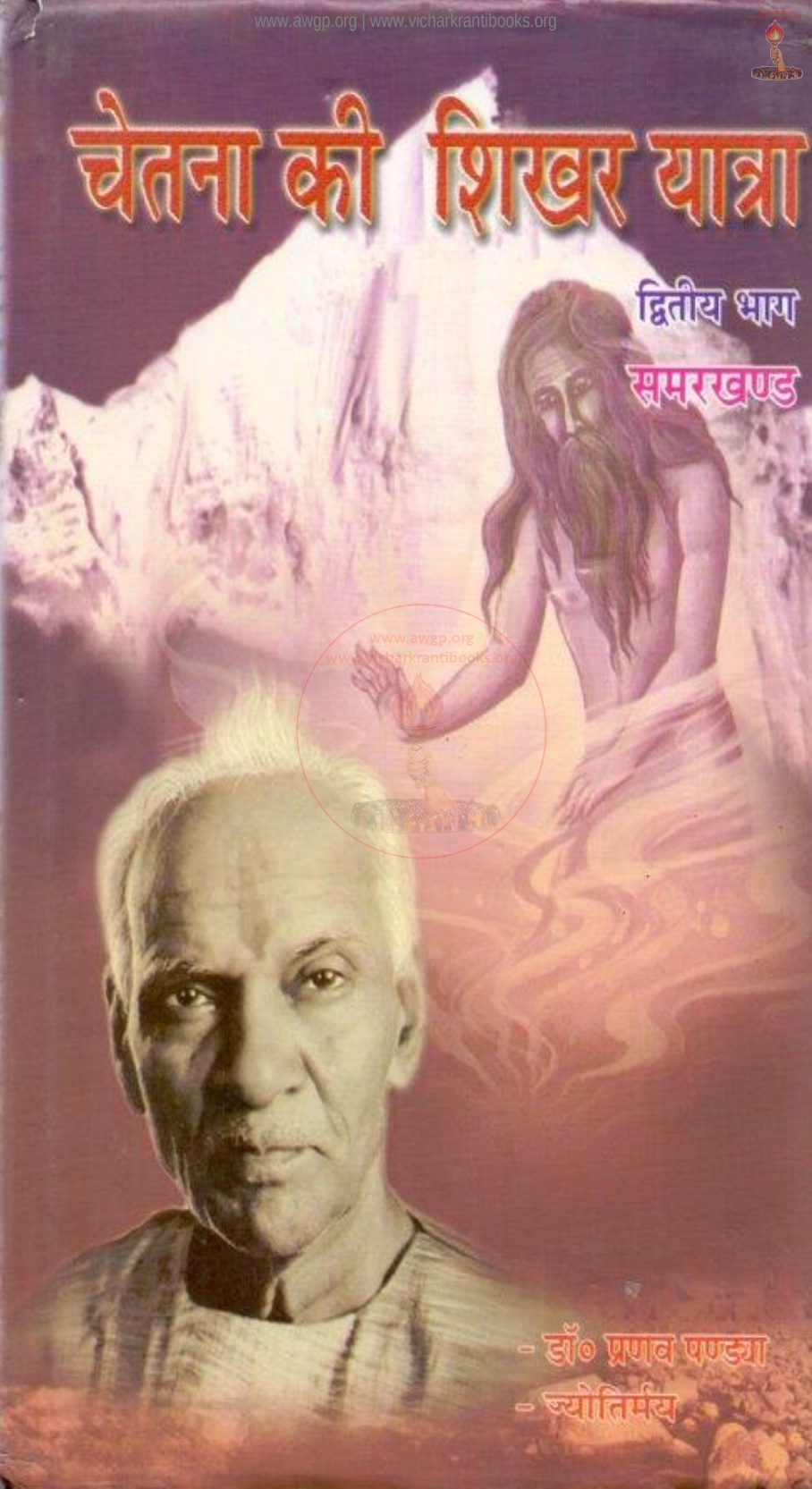

- डॉ० प्रणव पण्ड्या
- ज्योतिर्मय

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चेतना की शिखर यात्रा

द्वितीय भाग

समर खण्ड

लेखक
डॉ० प्रणव पण्ड्या
ज्योतिर्मय

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लेखक
-डॉ० प्रणव पण्ड्या
-ज्योतिर्मय

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१३

ISBN : 81-8255-005-9

मूल्य : १५० रुपये

पत्र व्यवहार का पता
गायत्री तीर्थ - शांतिकुञ्ज
हरिद्वार (उत्तराखंड) २४९४११
फोन- (०१३३४) २६०६०२, फैक्स- २६०८६६
E-mail : shantikunj@awgp.org
Website : www.awgp.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

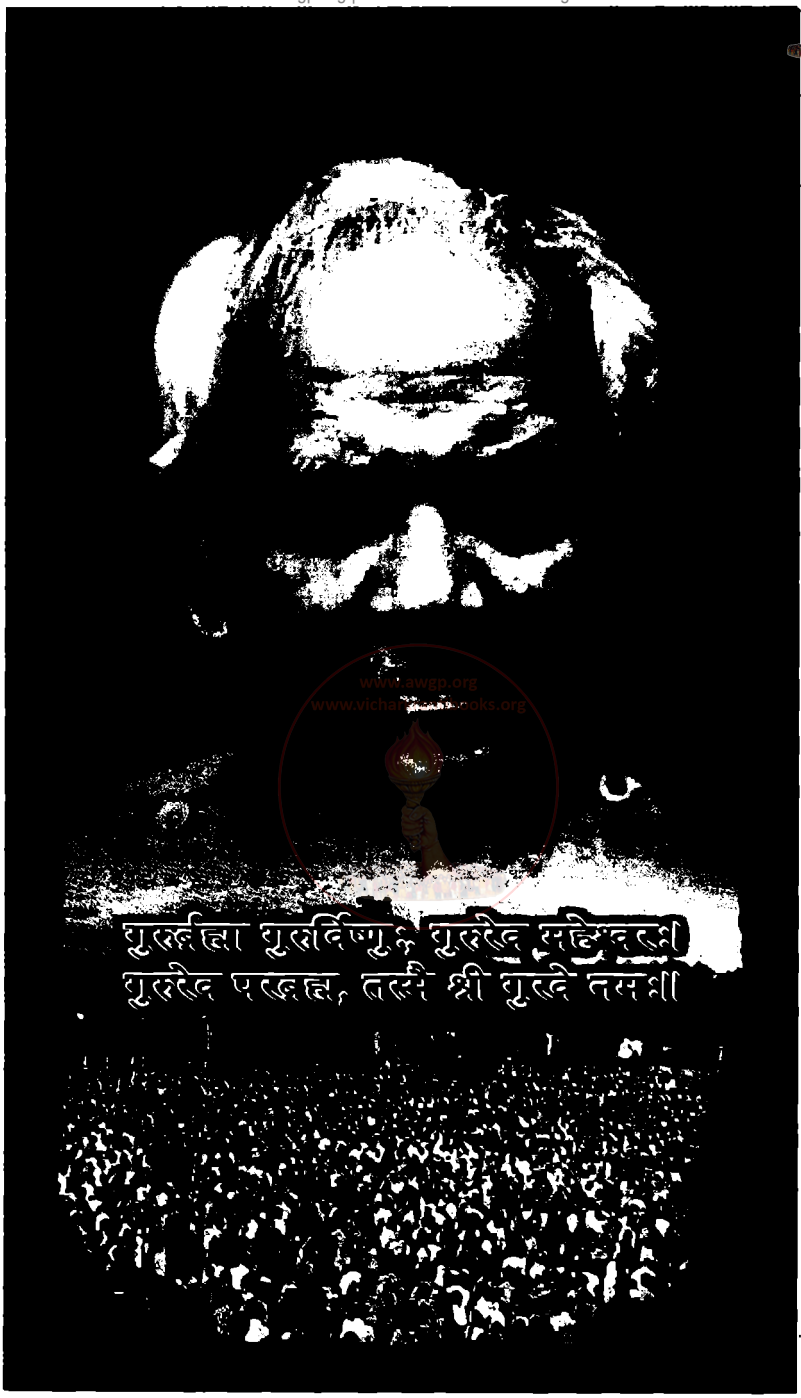

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनुक्रम

१- **पुण्य ऊर्जा के संस्कार** ७

पुष्टिमार्गी साधक से भेंट, यंत्र बाधा का निवारण, भाई दूज के निमित्त से, कटरा केशवदेव में, स्थान नहीं प्रयोगशाला, अनोखी पेशकश, ताई जी का विस्मय।

२- **यमुना के तट पर गायत्री** २४

ठाकुर जी को भोग, बगीची की परख, दुर्वासा की तपस्थली, पुण्य का विसर्जन, दीपक और अग्नि।

३- **साधना और संजीवनी** ३७

केसर के छींटें, शास्त्रार्थ की चुनौती, गीता जयंती का वह पर्व, अपकार्य का उत्तर, उद्योगपति संत की रुचि, अनुग्रह की प्रतीक्षा, सबका और सबके लिए।

४- **आचार्य देवो भव** ५६

सहयोग और संकल्प, चुनाव से परहेज, असल चमत्कार, प्राण प्रतिष्ठा से पहले, आचार्य वरण।

५- **आह्वान और स्थापन** ६९

चरण स्पर्श पर रोक, वर्ण धर्म की चिंता, हिमालय का प्रतिनिधि, अग्नि स्थापन, खुले में आवास, जेठ की सुबह बरस उठी।

६- **व्रतेन दीक्षामाप्नोति** ८७

अभिनव आरंभ, विरोध का प्रतिरोध, विश्वनाथ की नगरी में, अनोखा प्रस्ताव, अन्यतम बद्रीनाथ, क्षमा ही करें।

७- **बलिदानियों की खोज** १०३

पतों की चोरी, अग्नि स्वरूप तीर्थ, प्रतीक्षा से समाधान, जीवन से श्रेष्ठ मोक्ष, सिद्ध सहयोग का संकेत।

८- **यज्ञेन यज्ञमयजंत** ११९

गुरु निंदा के विरुद्ध, बोझ हल्का हो जाए, अवरोधी निराश हुए, भक्ति ने कमजोर किया? भैरवी का भाग, परिवर्तन के संकेत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

९- शीश दिए प्रभु मिले १३८

सिद्धि से धन, तपोभूमि मत जाओ, ब्राह्मणत्व का आह्वान, विरोध का अभिवादन, राधेश्याम के राम, बलियूपों से बद्ध, अपना निर्णय आप।

१०-सविता की विजय यात्रा १५७

भीड़ नहीं संस्कार, डगर डगर में यज्ञ, रामनाथ की नगरी में, अशोक का संबोधि क्षेत्र, यज्ञ के विरुद्ध धरना।

११-रामेश्वरम से अनुग्रह १७१

उपासना में अभेद, भगवान ने नहीं रोका, गायत्री के तीन रूप, अतीत में निर्जन, रामझरोखा में आहुतियां, विरोध के विरोध में।

१२-संघर्ष और चुनौती १८६

असहमति लेकिन अभिवादन, बहिष्कार के बावजूद, सम्मेलन की तैयारी, भागो नहीं निभाओ, काम ही जवाब है, अभाव में भी आवश्यक, साधनों की चिंता।

१३-आग्नेय आराधन २०३

गुरुसत्ता का निर्देश, उत्तरकाशी में एक चिंतन, साधन भी और साधक भी, स्थिति और वय से परे, घर से मंदिर में।

१४-मंथन और निर्धारण २१८

शास्त्र और गुरु, तीर्थराज पुष्कर, विक्षिप्त सुनंदा, महिलाएं ही अधिकारी, सारनाथ से संवाद, धर्म चक्र प्रवर्तन।

१५- महायज्ञ का प्रत्यक्ष और परोक्ष २३५

शरद पूर्णिमा पर चयन, यही है शक्तिपीठ, हिसाब नहीं रखा, यमुना की स्थापना, अदृश्य उपस्थिति, जैसे तैसे पहुंचे, बस्तियों में बसा यज्ञ नगर, अनाम साधु का उल्लास, याजक के हित आयोजन, ललिता सखी या मीरा।

१६- संस्कारों का आवेग २५७

द्वारका से मिले निर्देश, अवधूत से छुटकारा, इसलिए विवाह करो, अनुनय को आदेश, साधना का नया संकल्प, आगे क्या करें?, आश्रम धर्म की दीक्षा, निवृत्ति और मुक्ति, संगठन परिवार की तरह, प्रकट मत होइए, मिला जुला रंगमंच, बैठ जाओ गंगा माता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

१७- आर्ष वाङ्मय का संधान २८३
उस वसंत का संदेश, एक अघोषित निर्धारण, मंत्र और मर्म भी, व्यास का आश्वासन, जहां भी संहिता मिली, दक्षिण में संपर्क, तंत्र पर आधारित तीर्थ, धरोहर सौंपी।

१८- सिद्ध लोक में प्रवेश ३०७
क्षमादान का दोष, यमुनोत्री में गंगाजल, भागीरथ शिला पर तप, उदासीन बाबा की कुटी, बद्रीनाथ अत्यंत निकट।

१९- जहां न पहुंचे काया ३२३
तपोवन का मार्ग, सात जन्मों में साक्षात, गुरुभाई का सान्निध्य, कलाप का अद्भुत लोक, सिद्ध शिष्य।

२०- गुरुर्देवो महेश्वरः ३३६
तापस वृक्ष की छाया, अनुग्रह के लिए तप, अर्चना स्तुति से परे, योगाश्रम के साधक, सरोवर-शिव के नेत्र, शिव का नैसर्गिक विग्रह।

२१- ममता के संरक्षण में ३५३
गौवरीकर का आश्चर्य, अज्ञातवास के उत्पात, उपवास का निषेध, शंका मिटी, अष्टग्रही का आतंक।

२२- साधकों के लिए आह्वान ३७०
वानप्रस्थ की ओर, असली संकट आगे, परिवर्तन का संकेत, पवित्र रहें और आगे बढ़ें, नए युग का अभिवादन।

२३-समय रहेगा साक्षी ३८७
नये शिविर की व्यवस्था, व्यासपूजा का भाव बोध, भविष्य की समीक्षा, सभी मार्ग आलोकित।

२४-सृजन शिल्पियों की खोज ४०१
नेहरू के बाद, मंथन और परामर्श, समाचार की परिभाषा, चोरी और बंटवारा, शिक्षण की योजना, राष्ट्रीय संकट की वह घड़ी।

२५- संक्रमण का दौर ४१७
माताजी का निश्चय, संन्यास की सार्थकता, धर्मगुरुओं का संगठन, गोरक्षा और राजनीति, युग निर्माण विद्यालय, कुण्डलिनी जगा दो, जानकी तू पवित्र।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

२६- अभिनिष्क्रमण ४३६

भोज भंडारों पर प्रतिबंध, पूर्व जन्म के संस्कार, ताई जी का निर्देश, एक बार फिर पढ़ाई, इस तरह हुई खोज, वेदना उभरने लगी, उस स्थान की महत्ता।

२७-आषाढ़ का वह दिन ४५५

राजनीति में धर्मक्षेत्र, असंग निर्णय, मथुरा को प्रणाम।

चित्र विवरण

पृष्ठ संख्या ६४ एवं ६५ के मध्य ⊙ ऋषियुग्म की विभिन्न मुद्राएँ ⊙ नरमेध महायज्ञ एवं ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान ⊙ गायत्री तपोभूमि के नियमित क्रम में भागीदारी ⊙ गायत्री तपोभूमि में प्राण-प्रतिष्ठित वेदमाता गायत्री।

पृष्ठ संख्या १२८ एवं १२९ के मध्य ⊙ १००८ कुण्डी महायज्ञ में विशिष्ट अभ्यागत ⊙ १००८ कुण्डी गायत्री महायज्ञ-एक झलक ⊙ गायत्री तपोभूमि का क्रमशः विस्तार ⊙ आराध्य गायत्री माता एवं ऋषियुग्म।

पृष्ठ संख्या १९२ एवं १९३ के मध्य ⊙ सूक्ष्म शरीरधारी गुरुसत्ता का सान्निध्य ⊙ दुर्गम हिमालय ⊙ सुनसान के सहचर आचार्यश्री ⊙ एकान्त तपसाधना में निरत आचार्यश्री।

पृष्ठ संख्या २५६ एवं २५७ के मध्य ⊙ आत्मीयता के विस्तार ने खड़ा किया बृहद् परिवार ⊙ गायत्री तपोभूमि में डाकघर का शुभारम्भ, साधकों के मध्य आचार्यश्री ⊙ आर्षग्रन्थों एवं गायत्री महाविज्ञान का प्रकाशन ⊙आचार्यश्री की विभिन्न चिन्तन मुद्राएँ।

पृष्ठ संख्या ३२० एवं ३२१ के मध्य ⊙ लेखन साधना में निरत युगनायक ⊙ नवयुग का घोषणा पत्र ⊙ युग प्रत्यावर्तन प्रक्रिया की घोषणा ⊙ क्षेत्रीय आयोजन।

पृष्ठ संख्या ३८४ एवं ३८५ के मध्य ⊙ विदाई की वेला में ऋषियुग्म की अन्तर्वेदना, गायत्री तपोभूमि में साधकगण ⊙ अन्तरंग परिजनों द्वारा भावभीनी विदाई ⊙ गायत्री तपोभूमि में विदाई के क्षण ⊙ गायत्री तपोभूमि के कार्यकर्ताओं का अन्तिम प्रणाम।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक

पुण्य ऊर्जा के संस्कार

ताई जी नियमित रूप से द्वारकाधीश मंदिर जाया करती थीं। कभी कभार श्रीराम भी साथ हो जाते। साथ जाने के लिए वे शाम का समय ही चुनते थे। साढ़े छह बजे होने वाली शयन आरती में ताई जी के साथ शामिल होकर वे विश्राम घाट पर आ जाते। यमुना की संध्या आरती उन्हें लुभाती थी। लोग दोना-पत्तों में दीप जलाकर रखते और यमुना के प्रवाह में छोड़ देते। श्रीराम स्वयं दीपक प्रवाहित नहीं करते। ताई जी अवश्य आरती के बाद दीप जलातीं। वे खड़े खड़े उन्हें देखते रहते। कहीं जरूरत होती तो हाथ बटाते। मन होता तो विश्राम घाट की सीढ़ियां उतर कर धारा में खड़े हो जाते। आरती और दीपदान के क्रम में एक बार श्रीराम ने विनोद किया, 'ताई आज तो यमुना में सीधे उतर जाउं।'

'क्या मतलब?' ताई ने डपट कर पूछा। श्रीराम बोले, 'यह कि आज सीढ़ी पर बैठ कर मुँह धोने और आचमन करने के बजाय यमुना में उतर कर ही आचमन कर लूं।'

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ताईजी समझ गईं कि लाड़ला मजाक कर रहा है। उन्होंने मजाक करते हुए ही आँखें तरेरी और श्रीराम को घूर कर देखा। श्रीराम धीरे से हंस दिए और सीढ़ियों पर बैठकर आचमन करने लगे। वहां दीपदान कर रहे लोगों में किसी ने ध्यान नहीं दिया कि माँ बेटे में विनोद चल रहा है। दीपदान के बाद दोनों सीढ़ियाँ चढ़ कर आये तो सामने खड़े एक तेजस्वी साधु ने उन्हें टोका। संन्यासी वैष्णव संप्रदाय का अनुयायी था और माथे पर तिलक लगाये हुए था। उसने कहा, 'बेटा माँ की गोद में तो किसी भी अवस्था में उतरा जा सकता है। यह विधि निषेध क्यों मानते हो कि आचमन करके ही धारा में उतरना चाहिए?'

इस तरह सीढ़ियों पर ही रोक लेना और साधु द्वारा उपदेश देना अप्रत्याशित था। श्रीराम ने साधु को प्रणाम किया और बोले, 'मेरे पास इसका कोई उत्तर नहीं है लेकिन मेरी माँ कहती है, इसलिए कभी कुछ सोचा नहीं। माँ का कहना ही मैं उचित मानता हूँ।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसी संन्यासी ने कहा, 'यह माँ जिस जगन्माता की प्रतिनिधि है, उसने तुम्हें और भी तो आदेश दिए हैं।'

श्रीराम उस साधु का मुँह देखने लगे। वैष्णव साधु ने इसके बाद कुछ नहीं कहा। वह चुपचाप सीढ़ियां चढ़ने लगा। श्रीराम और ताईजी भी उनके पीछे-पीछे चल दिए। मन में प्रतीत हो रहा था, जैसे बात अभी पूरी नहीं हुई है। साधु कुछ और कहने वाला है। लेकिन सीढ़ियां चढ़ते हुए साधु ने एक शब्द भी नहीं कहा। वह चबूतरेनुमा मंदिर के पास आकर रुक गया। चबूतरे पर एक छोटा सा मंदिर बना हुआ था। लोगों का विश्वास है कि कंस का वध करने के बाद कृष्ण ने इसी जगह विश्राम किया था। साधु चबूतरे के पास खड़ा होकर श्रीराम की ओर देखने लगा। उसने कहा, 'जानते हो न! जगन्माता ने तुम्हें क्या आदेश दिया है?'

श्रीराम उसकी बातों को समझ नहीं पा रहे थे। अवाक से उसकी ओर देखते रहे। साधु बोला, 'यहाँ श्रीकृष्ण ने कुछ देर बैठकर अपनी क्लांति मिटाई थी। विश्राम किया था। इसीलिए यह जगह विश्राम घाट कही जाती है। जिस जगह आत्मिक क्लांति का निवारण होता है, उसे 'आश्रम' कहकर भी सम्बोधित किया जाता है।'

यह कहकर साधु क्षण भर के लिए रुका। फिर बोला कि मथुरा में ऐसे स्थान का अभाव है। अगर तुम्हारे मन में इस तरह की स्थापना का भाव आया हो तो उसे विश्वमाता की प्रेरणा ही समझना।

यह कहकर साधु यमुना की ओर मुड़ा। वह उस पार देखने लगा। श्रीराम ने उस इंगित की ओर देखा। जिस तरफ साधु देख रहा था, वहाँ यमुना के उस पार महर्षि दुर्वासा का स्थान था। अब उस जगह एक भव्य मंदिर बन गया है, लेकिन तब वहां साधारण सा देवालय था। श्रीराम दुर्वासा मंदिर की ओर देखते हुए अपनी दृष्टि घुमाते कि साधु घाट से ऊपर चढ़ने लगा। ताई जी भी यह सब चुपचाप देख रही थीं। श्रीराम को किन्हीं विचारों में खोया देखकर वे बोलीं, 'चलना नहीं है क्या? वापस चलो देर हो रही होगी।'

यह घटना अक्टूबर १९४९ के तीसरे सप्ताह की है। दीपावली का त्यौहार समीप ही था। शायद दो तीन दिन ही रहे होंगे। ताई जी का निर्देश सुनकर श्रीराम आगे बढ़े। घाट से बाहर चौक पर आते ही उन्होंने साधु को फिर देखा। विश्राम घाट पर संध्या के झुरमुट में साधु की आकृति स्पष्ट नहीं दिखाई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दे रही थी। चौक पर आते ही दूकानों में जल रहे पैट्रोमैक्स, लालटेन और मशालों की रोशनी में साधु का चेहरा स्पष्ट दिखाई दिया। वह पैतीस चालीस वर्ष के बीच का तरुण संन्यासी था। स्वस्थ,हृष्टपुष्ट शरीर और बातों से वह कुलीन परिवार का और विद्वान लग रहा था।

पुष्टिमार्गी साधक से भेंट

चौक में आकर उस संन्यासी ने श्रीराम का परिचय पूछा। उन्होंने अपने काम के बारे में सकुचाते हुए परिचय दिया। कहा, 'हम लोग गायत्री उपासना का प्रचार करने में लगे हुए हैं। आगे यह काम बड़े स्तर पर करने की प्रेरणा है। देखें क्या होता है?'

साधु ने भी अपना परिचय दिया। नाम बताया माधवदास। स्वयं को पुष्टिमार्ग का साधक कहा। ताईजी बीच में ही बोल उठी, 'तब तो आप भागवत भी अच्छी कहते होंगे। किसी दिन हमारे डेरे पर आइए न।'

साधु माधवदास ने ताई जी का निमंत्रण स्वीकार किया। साथ ही यह भी कहा, 'भागवत तो भगवान का लीला विग्रह है। उसकी जो भी आराधना करेगा वह तर जाएगा। और माई आपके दुलारे ने तो भागवत के बीज मंत्र का ही आश्रय लिया है।'

'लेकिन यह कथा नहीं कहता। इसके पिताजी अच्छी कथा बांचते थे। हजारों लोग उन्हें सुनते थे।' ताई जी कहे जा रही थीं। वे अभी श्रीराम की शिकायत करने ही वाली थी कि साधु माधवदास ने कहा, 'प्रभु की इच्छा समझो माई। उसे जिनसे जो काम लेना होता है, ले ही लेता है।'

साधु माधवदास वल्लभाचार्य की बैठक के पास रुके हुए थे। उन्होंने माँ बेटे को अपने साथ चलने के लिए कहा। श्रीराम ने कहा कि अभी देर हो रही है। कल आप घीयामंडी आइए। वहीं भोजन भी कीजिए। साधु माधवदास ने श्रीराम को वहीं खड़े-खड़े विश्रामघाट के बारे में कुछ विचित्र बातें बताईं।

पुष्टिमार्ग के ग्रंथों में खासतौर पर 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' में उल्लेख मिलता है कि वल्लभाचार्य ने विश्रामघाट का उद्धार किया था। चमत्कारिक ढंग से इस तथ्य का वर्णन किया जाता है। वार्ता के अनुसार वल्लभ स्वामी मथुरा आये तो स्नान करने के लिए विश्रामघाट जाने लगे। वहाँ यमुना के पंडे उजागर चौबे और उसके साथियों ने स्वामी जी को रोका। उसने कारण बताया कि दिल्ली के सुलतान सिकंदर लोदी का एक कामदार यहाँ आया था। चतुर्वेदियों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ने उसका मजाक उड़ाया। उससे कुपित होकर कामदार रुस्तम अली ने विश्रामघाट पर एक ऐसा यंत्र लगा दिया कि वहाँ जाते ही लोगों का धर्मभ्रष्ट हो जाता है। उनकी शिखा कट कर गिर जाती है और यज्ञोपवीत भंग हो जाता है। यही नहीं उनकी मुसलमानों की तरह दाढ़ी भी निकल आती है।

वल्लभ स्वामी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। वे अपने साथियों को लेकर विश्रामघाट चले गए। अपने शिष्यों सहित यमुना में स्नान किया और 'शरणं मंत्र' का जाप करते हुए बाहर निकल आए। उन लोगों पर यंत्र का कोई प्रभाव नहीं हुआ। लेकिन बाद में दूसरे लोग यमुना स्नान के लिए गए तो उनके साथ वही त्रासदी हुई। उनके सिर के लंबे केश कट गये। शिखा लुप्त हो गई और जनेऊ भी टूट कर गिर गई। कथा कहती है कि मथुरा के लोगों ने पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक वल्लभ स्वामी से वह यंत्र बाधा हटाने का अनुरोध किया। आचार्य वल्लभ ने उन लोगों की बात सुनी और एक अलग यंत्र बनाया। वह यंत्र उन्होंने अपने दो शिष्य वासुदेव दास और कृष्णदास के हाथों दिल्ली भिजवाया। दिल्ली में उस समय सिकंदर लोदी का शासन था। कथा के अनुसार यंत्र से बादशाह इतना प्रभावित हुआ कि उसने विश्रामघाट पर लगा बाधा यंत्र हटाने का आदेश दे दिया।

साधु माधवदास ने यह कथा सुना कर श्रीराम से पूछा कि क्या सचमुच ऐसा हुआ होगा? उन्होंने तुरंत कुछ नहीं कहा और अगले दिन घियामंडी (निवास) पर इस संबंध में विमर्श के लिए कहा। अगले दिन साधु माधवदास समय पर घियामंडी पहुँचे। परिवार में उनका आत्मीय सत्कार हुआ। साधु माधवदास ने वहाँ चल रही प्रवृत्तियों को बारीकी से देखा। भगवती गायत्री के सम्मुख जल रहा अखंड दीपक, वहाँ चलने वाला उपासना क्रम, अभ्यागतों के लिए सत्कार की समुचित व्यवस्था, दो मंजिले मकान में कार्यालय और निवास आदि ने माधवदास को अभिभूत कर दिया।

आतिथ्य का दायित्व स्वयं माताजी ने संभाला था। 'अखंड ज्योति' कार्यालय में काम करने वाले छोटे बड़े कार्यकर्त्ता तब श्रीराम की लीला सहचरी को माँ या माताजी कहने लगे थे। ताई जी और बड़ी उम्र के लोग ही उन्हें सहज रिश्तों के स्नेह संबोधन से पुकारते थे। स्वामी माधवदास ने भी श्रीराम की लीला सहचरी को माताजी कहा।

माँ भगवती देवी ने रोका कि स्वामी जी आप तो कम से कम 'माताजी' मत कहिए। साधु माधवदास ने कहा, 'मैं ही क्या' आपका हजारों लाखों लोगों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का भरा पूरा परिवार आपको इसी संबोधन से पुकारेगा। उसमें सभी उम्र और आश्रम के लोग होंगे।'

यह चर्चा चल ही रही थी कि ताई जी आ गईं। उन्होंने अपने पतिदेव पंडित रूपकिशोर जी के कथा वैभव का जिक्र छेड़ दिया। कहने लगीं कि श्रीराम ने उन बातों को बिसरा दिया है। लेकिन उन्हें कोई शिकायत नहीं है। कुछ-कुछ कथा भागवत कहता रहे तो अच्छा हो। सुनकर श्रीराम भी मुसकरा रहे थे और साधु माधवदास भी। उन्होंने विश्रामघाट की बात याद दिलाई और कहा, 'ताई जी यहाँ वल्लभ स्वामी ने बैठ कर कथा कही थी। सिर्फ एक बार। और वह स्थान तीर्थ हो गया। मैं श्रीराम के बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानता, न ही कहता हूँ। लेकिन वेदमाता इसी तपस्वी आत्मा को अपना वाहन बनाएगी। वह जहां भी बैठेगा, तीर्थ बन जाएगा।'

यंत्र बाधा का निवारण

विश्रामघाट पर बल्लभाचार्य की बैठक का प्रसंग छिड़ते ही कल छूट गई अधूरी बात याद आ गई। साधु ने श्रीराम को छेड़ा 'हां उस यंत्र बाधा का रहस्य बताइए।'

श्रीराम कहने लगे, 'यंत्र बाधा की प्रचलित कहानी में कल्पना का रंग ज्यादा है। उस समय सिकंदर लोदी का जैसा आतंक था, उसे देखते हुए कोई भी व्यक्ति उसका अथवा किसी राजकीय कर्मचारी का उपहास उड़ा ही नहीं सकता था। कुछ विद्वान रुस्तम अली का मजाक उड़ाने की बात सही मानते हैं। हो सकता है यह बात कुछ अंशों तक सही हो। लेकिन यंत्र बाधा और उसके निवारण के लिए दूसरा यंत्र लगाने का वृत्तांत आलंकारिक वर्णन ही ज्यादा है।'

साधु माधवदास ने कहा, 'वैष्णव संतों ने भी इस घटना का उल्लेख किया है अगर यह वृत्तांत आलंकारिक ही है तो वास्तविक स्थिति क्या होगी?'

श्रीराम ने अपना मंतव्य समझाते हुए कहा, 'विश्राम घाट यमुना तट पर स्थित है। यह संभव है कि उन दिनों यहाँ श्मशान रहा है। यहाँ हिंदू अपने स्वजन संबंधियों का अंतिम संस्कार करने के बाद क्षौरकर्म और स्नानादि किया करते हों। सिकंदर लोदी ने उन कृत्यों पर पाबंदी लगा दी हो। उस सुलतान की क्रूरताओं से इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं। उसने मथुरा आने और ध्वंस मचाने के बाद यहाँ ऐसे कर्मचारी नियुक्त कर दिए होंगे जो श्रद्धालुओं को स्नान नहीं करने देते होंगे। चोरी छुपे स्नान करने वालों को पीड़ित करते होंगे।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्रीराम कुछ क्षण रुके जैसे अपनी स्मृति को टटोल रहे हों। कोई संदर्भ याद आया और वे बोले, 'जहांगीर के समय के एक मुसलिम इतिहासकार अब्दुल्ला ने 'तारीख ए दारदी' नामक पुस्तक में लिखा बताते हैं कि सिकंदर ने मथुरा में हिंदुओं पर कड़ी पाबंदियाँ लगा दी थीं। यह नितांत स्वाभाविक है कि किसी श्रद्धालु को यमुना स्नान नहीं करने देने का फरमान जारी किया हो। वल्लभाचार्य जी जैसे संत यहाँ आये तो हमें यह दिखाई देता है कि उन्होंने सुलतान के पास अपने प्रतिनिधि भेजे थे। सिकंदर लोदी जैसे क्रूर और उन्मादी बादशाह के पास अपने प्रतिनिधि भेजना भी साहस की बात है। उसने सिर्फ इस तरह के अनुरोध और वल्लभ स्वामी की ख्याति से प्रभावित होकर ही कर चुकाने की शर्त पर श्रद्धालुओं को स्नानादि की छूट दे दी हो।'

अपना पक्ष रखकर श्रीराम चुप हो गये। साधु माधवदास उनकी व्याख्या सुनकर संतुष्ट से हुए। बात पूरी तरह गले उतरी। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा 'पंडित जी आपकी बात सोलहों आने सही है। ऐसा ही हुआ होगा। अब वल्लभाचार्य की बैठक के बारे में बताएं। उस संबंध में आपकी क्या राय है?'

'उस विषय में राय क्या जताना? आचार्यश्री वल्लभ ने वहाँ भागवत कथा कही थी। जहाँ-जहाँ भी उन्होंने धर्मोपदेश दिया, वहाँ बैठक के प्रमाण मिलते ही हैं,' श्रीराम ने कहा।

इसके बाद अन्य विषयों पर चर्चा होने लगी। विमर्श के इसी क्रम में साधु माधवदास ने श्रीराम की भावी योजनाओं के बारे में पूछा। उन्होंने बताया। किसी उपयुक्त स्थान पर एक आश्रम बनाने का संकल्प है। हमारे गुरुदेव की प्रेरणा है। वहाँ एक मंदिर और साधना स्थली होगी। साधकों के निवास की व्यवस्था भी रखेंगे। ऐसा वातावरण रखने का मन है कि साधकों को आत्म परिष्कार में सहायता मिले।'

साधु ने सहज ही पूछा, 'वह स्थान भी क्या हमारे गुरु भगवान वल्लभाचार्य जी महाराज की बैठक के समान होगा?'

श्रीराम ने कहा, 'हम वल्लभाचार्य जी महाराज से अपनी क्या तुलना करें। वे यदि होते तो उनकी चरण रज लेकर हम आरंभ करते। स्वामी जी महाराज ने सोलहवीं शताब्दी के उस अंधकार युग में भी पूरे व्रजक्षेत्र में साधना केन्द्रों (बैठकों) की स्थापना कर दी। हम एक केन्द्र बना लें तो भी धन्य हैं।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वल्लभाचार्य ने व्रजमंडल में चौबीस बैठकों की स्थापना की थी। गोकुल, मथुरा, मधुवन, कुमुदवन, राधाकुंड, गोवर्धन, बरसाना आदि स्थानों पर बनी बैठकों की वर्तमान स्थिति से वल्लभाचार्य के समय का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। इन स्थानों पर सत्संग, स्वाध्याय और साधन भजन की व्यवस्था रही थी। पुष्टिमार्गीय परंपरा के साधक यहाँ रुककर अपनी आंतरिक स्थिति को गति और दिशा दे सकते थे। अब भी उस परंपरा का किसी न किसी रूप में निर्वाह होता ही है। साधु वैष्णवदास अपनी बातचीत और व्यक्तित्व से पुष्टिमार्गीय परंपरा के विशिष्ट साधक लग रहे थे। उन्होंने आचार्यश्री और उनकी आरंभ की हुई मर्यादाओं के बारे में गहरी जानकारी दी। करीब दो घंटे तक 'अखंड ज्योति' कार्यालय में रुके और उठते-उठते कहने लगे कि आपके साथ जुड़कर भगवान की सेवा करने का मन होने लगा है। लेकिन आपका साधना संप्रदाय थोड़ा अलग है। क्या किया जाए?

'मार्ग भिन्न है तो क्या हुआ? हम सभी उस परम चेतना को अपने जीवन में व्यक्त करने का प्रयास कर रहे हैं। भगवान श्रीकृष्ण, गायत्री माता, राम, शिव, शक्ति और ईश्वर के सभी रूप तत्वत: एक ही हैं। आप हमारे साथ ही हैं।' श्रीराम ने कहा। लेकिन इससे साधु माधवदास का मन नहीं मान रहा था। उनके चेहरे पर दिखाई दे रही अतृप्ति को पहचानते हुए श्रीराम ने कहा, 'आपका हमारे साथ जुड़ कर काम करने का मन है न।'

कुछ क्षण रुक कर फिर बोले, 'तो एक काम कीजिए। गायत्री आश्रम के लिए जगह तलाशने में हमारी मदद करें।'

साधु को जैसे दिशा मिली। उसने तुरंत हां कहा और उठकर चलने लगे। फिर आने की बात कहते हुए वे सीढ़ियां उतर गए। श्रीराम उन्हें छोड़ने के लिए नीचे तक गये।

भाई दूज के निमित्त से

सन् १९४९ में २३ अक्टूबर का दिन था। दीपावली के दूसरे दिन भैयादूज का पर्व। यमुना किनारे इस दिन विशेष आयोजन होता है। भाई अपनी बहिन को यमुना में स्नान कराने लाते हैं और पूजा उपचार के बाद यथाशक्य भेंट देते हैं। ताईजी को यमुना स्नान कराने के लिए सहपऊ से उनके भाई पंडित हरिदास आये। सुबह घर में चलने की तैयारी होने लगी तो उन्होंने साथ लाये वस्त्र आभूषण दिखाये। ताईजी ने कहा 'हरि मुझे यह सब नहीं चाहिए।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भाई ने कहा, 'मना करते हुए अच्छा लगता है क्या? असगुन क्यों कर रही हो। देख तो लो एक बार। फिर भले ही कोई और चीज ले लेना।' ताई जी ने इठलाते हुए से कहा, 'मना नहीं कर रही। यह सब तो लूंगी ही। आज कुछ और भी मांगने का मन है।'

भाई बहिन के देर तक चले संवाद से यह निश्चित हुआ कि स्नान के बाद भाई बहिन और भानजा श्रीराम नौका में बैठकर यमुना के उस पार जाएंगे। ताईजी ने अपने भाई को बता दिया कि श्रीराम ने मथुरा में एक आश्रम बनाने का निश्चय किया है। उसके लिए कुछ जगह वगैरह देख कर आएंगे। भाई ने इस सूचना या बहिन की इच्छा पर कोई टीका टिप्पणी नहीं की। यह जरूर कहा कि जमीन देखने जा रही हो तो बहू को भी साथ ले चलो। जिस समय यह संवाद चल रहा था मातृ देवी भीतर रसोई में तैयारी कर रही थीं।

ताई जी ने आवाज लगाकर पूछा। माताजी ने कहा चल सकती हूँ। तभी ताई जी को याद आया कि बहू को भी तो अपने भाई के साथ जाना होगा। वे बोली, "अभी देखने ही तो जा रहे हैं। जब तय कर लेंगे तो ले चलेंगे हरि। उसे भी अपने भाई के साथ जाने दे।'

यमुना स्नान और पूजा आदि से निवृत्त होते ही तीनों यमुना के उस पार पहुँचे। माधवदास ने जिस जगह दुर्वासा मंदिर बताया था, वह हंसगंज और किशनगंज के बीच थी। मंदिर में जाने के बजाय उन्होंने नदी का कछार छानने में समय बिताया। यमुना में पानी पूरे वेग से बह रहा था। कछार और किनारे पर बसे गांवों में घूमते हुए चार घंटे बीत गए। कोई जगह ऐसी नहीं दिखाई दी, जहाँ श्रीराम का मन अटका हो। डेढ़ दो एकड़ तक के तीन टुकड़े देखे। एक बगीची भी देखी, उसमें सती के चरण बने हुए थे। शिवालय भी था। यह जगह ईसापुर गांव के पास थी। ताई जी को जगह अच्छी लगी थी। उनका कहना था कि जमुना के इस पार श्रीराम का आश्रम और उस पार द्वारकानाथ का डेरा (द्वारकाधीश का मंदिर)। बड़ा अच्छा रहेगा। बहूरानी गौरीशंकर की पूजा करती है। उनके लिए भी यहां जगह है।

हरिदास जी ने पूछा, 'कुछ जम रहा भानजे?'

सुनकर श्रीराम ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे शून्य में ताक रहे थे। ताईजी ने फिर कहा, 'गांव का नाम भी अच्छा है ईसापुर। अनपढ़ लोग हैं न इसलिए ईशपुर को ईसापुर कहते हैं। असल नाम तो ईशपुर ही होगा। तुम्हारा धर्म कर्म खूब जमेगा।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भाई की बात सुनकर ताई जी भी हंसी थीं। फिर बोली, 'चलो सोच लेने दो। कौन सा आज ही सौदा कर लेना है।' कह कर तीनों वापस चल दिए। रास्ते में श्रीराम ऊहापोह से बाहर आए और कहने लगे, 'आज देखी हुई किसी भी जगह पर आश्रम नहीं बना सकते। हमें कोई और जगह देखनी होगी।'

श्रीराम के इस निर्णय पर न ताई जी ने कोई प्रश्न किया और न ही उनके मामा ने। श्रीराम ने स्वगत ही कहा, 'हम किसी ऐसे स्थान पर आश्रम बनाएंगे, जहां पहले कुछ सिद्ध संतों ने तपस्या की हो। उनकी तपस्या की गरमाहट स्थान को भी गरमाए रखेगी। हमें तपोभूमि बनाना है, सिर्फ मंदिर या पूजा पाठ की जगह नहीं।'

तपोभूमि की बात श्रीराम के मुँह से अनायास ही नहीं निकली थी। जिस दिन उन्हें साधना कक्ष में 'आश्रम बनाओ' 'आश्रम बनाओ' की गूंज सुनाई दी थी, उसी दिन से वे लगातार गुन रहे थे। मातुल श्री ने पूछा 'तपोभूमि में क्या करोगे?'

श्रीराम ने कहा, 'यह तो भगवान ही जाने लेकिन अभी इतना ही स्पष्ट हुआ है कि गायत्री महाविद्या की शोध करना है। उस महाविद्या को जन-जन तक पहुँचाना है। इस काम में तपस्वी और मनस्वी साधक लगेंगे। उनके लिए मंदिर भी होगा, आवास भी और यज्ञ-याग करने की व्यवस्था भी। लेकिन वह स्थान मथुरा वृंदावन में विद्यमान और मंदिरों की तरह नहीं होगा, जहाँ लोग आते हैं, दर्शन करते और घूम फिर कर वापस चले जाते हैं।'

पंडित हरिदास ने बहिन को चिढ़ाने के अंदाज में कहा तो क्या तुम्हारी माँ द्वारकाधीश के मंदिर में घूमने फिरने जाती है? सुनकर ताईजी चौंकी। उन्होंने श्रीराम को घूरते हुए देखा जैसे स्पष्टीकरण मांग रही हों। श्रीराम ने कहा ताई अब घूम फिर कर क्या करेगी। वह तो व्रजमंडल छोड़कर कहीं नहीं जाने वाली। तपोभूमि बनाने के लिए तैयार हो गई हैं लेकिन रहेंगी वहाँ भी थोड़े ही। अपनी बात और प्रसंग आगे बढ़ाते हुए वे बोले, 'ताई द्वारकाधीश की परिधि से दस गज दूर भी नहीं जाएंगी। बस चले तो वह मंदिर में ही रहने लगे।'

इस तरह हँसी विनोद करते हुए कब यमुना पार कर ली कुछ पता ही नहीं चला। द्वारकाधीश की आरती देखकर वे घर की ओर बढ़ने लगे तो श्रीराम ने अनायास ही कहना शुरु किया, 'मथुरा वृंदावन में जितने भी विख्यात देवालय, मंदिर या पवित्र स्थान हैं वे पर्याप्त जीवंत और जागृत नहीं है। कारण यह है कि उन स्थानों पर मध्यकाल के अंधकार युग में घोर अत्याचार हुए, अनर्थ अमंगल घटित हुआ। उन अनर्थों के कारण पूजा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साधना का क्रम नियमित नहीं चल सका। वे उपचार बंद हो गए जिनसे ऊष्मा बनी रह सकती थी।

'मामाजी आपने द्वारकाधीश मंदिर के बारे में कहा। यह उत्सव मंदिर है। व्यक्ति अपनी श्रद्धा भावना के अनुसार यहाँ से भगवान का अनुग्रह ग्रहण करता है। जिस मंदिर की कल्पना हम लोगों ने की है वह साधना मंदिर होगा। तपोभूमि नाम इसीलिए दिया है। वहाँ ऊर्जा का प्रवाह पहले से बिद्यमान हो तो कम से कम चौबीस वर्ष के एक श्रम से बच जाएंगे।' श्रीराम की इन बातों को कहते सुनते हुए द्वारकाधीश से घीयामंडी तक का रास्ता भी कट गया। मामाजी ने और ताई जी ने भी उस दिन श्रीराम के मन में चल रही उथल पुथल को निकट से देखा।

कटरा केशवदेव में

स्वामी अखंडानंद सरस्वती उस दिन श्रीराम से कह रहे थे मथुरा का पुराना नाम 'मधुरा' या मधुवन है। पुराणों में यत्र-तत्र गाया गया है कि परम पवित्र मधुवन में श्री हरि नित्य सन्निहित रहते हैं-'पुण्यं मधुवन यत्र सन्निध्वं नित्यदा हरें,' लेकिन आज जहाँ मथुरा बसी हुई है, वह प्राचीन स्थान से काफी हटकर है। पुरानी मथुरा कटरा केशवदेव के आसपास कहीं बसी हुई थी। भगवान कृष्ण का अवतरण इसी स्थान पर हुआ था। यहीं उनका भव्य मंदिर बनना चाहिए।

स्वामी अखण्डानंद सरस्वती से श्रीराम की भेंट उस क्षेत्र में घूमते हुए हो गई थी। स्वामीजी भागवत के प्रकांड विद्वान थे। सनातन धर्म जगत में उनकी प्रतिष्ठा रही है। वेदांत और भक्तिमार्ग के आचार्यों में उनकी गणना होने लगी थी। सन् १९५० के आसपास जो लोग मथुरा में श्रीकृष्ण जन्म स्थान का काम देख रहे थे, उनमें स्वामीजी भी प्रमुख जनों की श्रेणी में थे।

जन्म स्थान पर मंदिर बनाने का प्रसंग थोड़ा विस्तार लेने के बाद थमने लगा तो श्रीराम ने अपनी बात छेड़ी। उन्होंने कहा 'हम लोग मथुरा में गायत्री साधना का केन्द्र बनाना चाहते हैं। उसके लिए उपयुक्त स्थल कहाँ हो सकता है। कुछ मार्गदर्शन कीजिए।'

आगंतुक ब्राह्मण युवक को स्वामी अखंडानंद तप अनुष्ठान में निरत एक निष्ठावान साधक और 'अखंड ज्योति' पत्रिका के संपादक के रूप में जानते थे। स्वामी अखण्डानंद भी तब वृंदावन में आश्रम का विकास कर रहे थे। वे गीताप्रेस से प्रकाशित धर्म अध्यात्म और संस्कृति की मासिक पत्रिका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'कल्याण' से भी जुड़े थे। एक मान्यता के अनुसार कोई संन्यासी व्यक्ति भागवत का सप्ताह पारायण नहीं कर सकता। इसलिए बहुत से लोग उनके पूर्व आश्रम नाम से भी उन्हें पुकारते थे। उनका पुराना नाम शांतनु बिहारी द्विवेदी था।

श्रीराम ने उनसे उपयुक्त स्थान के बारे में पूछा तो वे कहने लगे कि अच्छा हो किसी उच्चकोटि के संत विद्वान से परामर्श लिया जाए। मैं इस संबंध में अधिकार पूर्वक कुछ नहीं कह सकता। अगर आप चाहें तो शोधयात्रा में आपका साथी अवश्य बन सकता हूँ। स्वामी अखंडानंद की शालीनता ने श्रीराम के मन को छू लिया। तभी कोई व्यक्ति 'द्विवेदीजी' 'द्विवेदीजी' कहता हुआ उनके पास आया। वह स्वामीजी को पूर्व आश्रम के नाम से संबोधित कर रहा था। पास आकर उसने स्वामी जी के कान में कुछ कहा। सुनकर स्वामीजी ने अच्छा कहा और उस व्यक्ति को रुखसत किया। फिर श्रीराम से बोले,' न जाने क्यों हमारे समाज में लोग किसी को अपनी तरह से धर्मकार्य करते हुए देखना पसंद नहीं करते। गायत्री उपासना के प्रचार का जो काम आप कर रहे हैं उससे लोगों को क्यों नाराजी होना चाहिए? लेकिन लोग आपका भी विरोध करते हैं। हम लोग यहाँ भगवान श्रीकृष्ण का मंदिर बनाने के लिए उद्योग कर रहे हैं। अपने ही समाज के लोगों को वह पसंद नहीं है।'

वे जन्म स्थान के विरुद्ध रचे जा रहे षडयंत्रों की चर्चा कर रहे थे। बातचीत में उन्होंने इंगित किया कि आपका अर्थात श्रीराम का भी विरोध है। बहुत स्पष्ट नहीं कहा था, सिर्फ संकेत ही था कि श्रीराम भी श्रीकृष्ण जन्म स्थान के महत्कार्य से जुड़ जाएं और इसी मंच से गायत्री साधना का प्रचार करें। उसके लिए प्रस्तावित सेवा संस्थान में ही कुछ जगह देने की पेशकश की। श्रीराम अपनी तापसी और साहित्यिक प्रतिभा का उपयोग यहीं रहते हुए करें।

श्रीराम ने स्वामी जी की सदाशयता को सराहा। सुझाव या प्रस्ताव में कोई बुराई नहीं थी। अब तक उन्हें जगह-जगह जिस तरह विरोध सहना पड़ा था, उसे देखते हुए यह प्रस्ताव निरापद भी लग रहा था। बल्कि सुविधाजनक था। लेकिन श्रीराम को लगा कि सेवा संस्थान से जुड़कर गायत्री महाविद्या का शोध अनुसंधान उतनी स्वतंत्रता से नहीं हो सकेगा। उन्होंने कहा 'श्रीकृष्ण जन्मस्थान जैसे महत्कार्य के लिए मैं पूरी तरह आपके साथ हूँ। लेकिन मेरी मार्गदर्शक सत्ता ने मुझे गायत्री महाविद्या पर ही केन्द्रित रहने के लिए कहा है।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वामी जी ने श्रीराम से उनके गुरुदेव के बारे में पूछा। करीब आधा घंटे तक उनके काम और उद्देश्य पर चर्चा की। फिर कहा कि इस स्थिति में आपका स्वतंत्र रूप से काम करना ही अच्छा है। जगह का प्रबंध भी हो सकता है। रामकृष्ण दास परसों यहां आ रहे हैं। आप भी आइए। उनसे मिलकर कोई रास्ता निकल आए। हो सकता है कटरे के आसपास ही जगह मिल जाए।

श्रीकृष्ण जन्म स्थान जिस भूमि पर स्थित है, वह रामकृष्ण दासजी के स्वामित्व में थी। सन् १८१५ में उनके पूर्वज राजा परनीमल ने यह जगह ईस्ट इंडिया कंपनी से खरीदी थी। यहाँ स्थित जन्मभूमि मंदिर को सत्रहवीं शताब्दी में ध्वस्त कर देने की एक अलग कहानी है। उस जगह पर स्वामित्व को लेकर बाद में निरंतर संघर्ष चलता रहा। मथुरा पर ईस्ट इंडिया कंपनी का अधिकार होते ही कटरा केशवदेव की जगह भी उसी की हो गई। कंपनी ने ईदगाह को छोड़कर बाकी जगह नीलाम कर दी। बनारस के तत्कालीन राजा परनीमल ने वह जगह खरीद ली। उनकी इच्छा थी कि इस जगह भव्य मंदिर बने, लेकिन वैसा अवसर बाद के करीब डेढ़ सौ वर्ष तक नहीं आ सका। लंबी अदालती लड़ाई के बाद फैसले में कटरा राजा परनीमल के वंशजों का ही अधिकार माना गया।

अखंडानंद जी ने दो दिन बाद इन्हीं रामकृष्ण दास जी के आने की बात कही थी। आशय यह था कि इतने विशाल परिसर से एक छोटा सा हिस्सा गायत्री साधना के लिए सुरक्षित रखा जाय। वह जगह देने के लिए उन्हें मनाया जा सकता है। अखंडानंदजी श्रीराम की इस बात से बहुत प्रभावित हुए थे कि भागवत पुराण सनातन धर्म का प्रतिनिधि शास्त्र है। उसके बारह स्कंध अध्याय गायत्री मंत्र के अक्षरों और ध्वनियों का ही विस्तार है।

स्थान नहीं प्रयोगशाला

स्वामी जी ने श्रीराम के इस संकल्प को भी सराहा था कि घर-घर में गायत्री उपासना का प्रचलन करेंगे। उनकी शास्त्रीय मान्यता थी कि गायत्री मंत्र का जप हर किसी को नहीं करना चाहिए। केवल द्विज ही संध्या गायत्री का जप करें। लेकिन वे इस सचाई की उपेक्षा भी नहीं कर रहे थे कि वर्ण धर्म का लोप हो गया है। उसके स्थान पर जाति पांति ही रह गई है। वह भी बहुत विकृत रूप में। अगर द्विज का अर्थ गायत्री और यज्ञ के सान्निध्य में संस्कारित होना मान लिया जाए तो गायत्री उपासना का अधिकार सभी श्रद्धालुओं को मिलना चाहिए। स्वामी अखंडानंद ने इस मान्यता का समर्थन नहीं किया लेकिन उन्होंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्रीराम को निरुत्साहित भी नहीं किया। उन्होंने कहा कि अपने विश्वास और श्रद्धा के अनुसार प्रभु को पाने का अधिकार हर किसी को है।

घर पर ताईजी से, माताजी से और अपने सहयोगियों से इस बारे में विचार किया। जिनसे भी विचार विमर्श किया उनकी प्रतिक्रिया अलग अलग तरह की थी। किसी की राय थी कि सुझाव अच्छा है। श्रीकृष्ण जन्म स्थान अगले दिनों स्वतंत्र तीर्थ की तरह विकसित होगा। वहाँ नित्य उत्सव का वातावरण रहने वाला है। किसी की राय थी कि यह जगह भेंट में नहीं ली जाए। उसका मूल्य चुकाया जाए। इस उधेड़बुन में तीन दिन व्यतीत हो गए। कुछ निश्चय करते नहीं बन रहा था। अभी तक दस बारह जगह देख चुके थे। कहीं भी बात बनती नहीं लग रही थी। जिस दिन रामकृष्ण दास जी को आना था, उससे पहले वाली रात बेहद तनाव में व्यतीत हुई थी। श्रीराम एक पल के लिए भी आँखें नहीं मूंद पाए थे।

सामान्य दिनों में श्रीराम आठ बजे सो जाते थे। उस दिन रात के एक बज गए। मस्तिष्क में विचार और वितर्क का घमासान चल रहा था। जब एक पक्ष हावी होता तो लगता था कि वही सही है। उसे ही चुनना चाहिए। वितर्क शुरू होते तो पहला पक्ष ध्वस्त हो जाता था। रात आँखों में कट गई और नित्य उपासना की बेला शुरू हो गई। बिना सोचे, शरीर को आराम दिए बगैर वे बिस्तर से उठे और स्नानादि से निवृत्त होकर उपासना के लिए बैठ गए। उस दिन भी दीप्त और स्वर्णिम आभा बिखेरता हुआ सविता देवता का तप्त पिंड दिखाई दिया। फिर उस पिंड से उठती हजारों कोस दूर तक जाती लपटें। उन लपटों में भस्मीभूत होता कषाय कलुष।

ध्यान की इन अनुभूतियों के बाद आत्मचेतना अव्याख्येय अव्यक्त स्तर पर पहुँच गई। भीतर के लोक में क्या हलचल चल रही थी, यह कोई नहीं पकड़ पा रहा था। दृष्टा का मन भी नहीं। वह कभी का तिरोहित हो गया था। असंप्रज्ञात समाधि या उससे भी पार की स्थिति रही होगी। जब समाधि खुली तो प्रातःकाल हो चुका था। पूर्व दिशा में सूर्य ऊपर तक चढ़ आया था। उस दिन श्रीराम ने अपने आपको बहुत हलका और स्फूर्तिवान अनुभव किया। गायत्री साधना केन्द्र की स्थापना के लिए पिछले छह सात महीने से मन में जो द्वन्द्व चल रहा था, उसका तिरोधान हो चुका था। इष्ट आराध्य से आश्वासन आ गया था कि सहज भाव से जो कर रहे हो करते चलो। स्पर्धा या अधीरता नहीं है। जो काम करवाना है, करा लिया जाएगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दस साढ़े दस बजे के लगभग श्रीराम स्वामी अखंडानंद के शिविर की ओर चल दिए। वहाँ पहुँचे तो देखा कि स्वामी जी उन्हीं की प्रतीक्षा कर रहे थे। बोले 'पंद्रह मिनट से लग रहा था कि आप आने वाले हैं। मैं आपको शुभ संवाद देने वाला था। रामकृष्ण दास जी से मैने आपकी परियोजना पर बात की है। वे बहुत प्रसन्न हैं। उन्होंने निर्णय हम लोगों पर ही छोड़ दिया है।'

श्रीराम ने कहा, 'स्वामी जी अन्यथा न लें। ऐसी प्रेरणा उभरी है कि साधना केन्द्र का विकास आरण्यक की भाँति हो। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म स्थान स्तुत्य और वंदनीय है। यहाँ के आश्रम से भी गायत्री साधना, धर्म और भक्ति आदि का प्रचार चलता रहे। हम लोग नयी योजना बना कर नहीं चल रहे। समय समय पर जैसी प्रेरणा होगी, उसी तरह काम करेंगे। अभी यह प्रेरणा है कि केंद्र नगर से बाहर, यमुना के तट पर हो।'

स्वामी जी ने श्रीराम की बात गंभीरता से सुनी। करीब दो घंटे तक विभिन्न विषयों पर चर्चा करते रहे। इन विषयों में साधना उपासना के प्रचार, साहित्य प्रकाशन, धर्म प्रचारक तैयार करने और गुरुकुलों की स्थापना पर विमर्श चला। बदलते समय में समाज और व्यक्ति के सामने क्या चुनौतियाँ आने वाली हैं। उनका समाधान करने के लिए स्वामीजी का जोर परंपरा की रक्षा और उसमें समयोचित संशोधन पर था। श्रीराम का मानना था कि अगले दिनों आमूल चूल बदलाव आने वाले हैं। उनसे बचा नहीं जा सकता। उन परिवर्तनों में व्यक्ति की आत्मा खो जाने का भय भी है। मनुष्य की आत्मा को बचाये रखने के लिए प्राचीन और अर्वाचीन में सेतु बनाना चाहिए। आवश्यकता और विचार विनिमय की दृष्टि से भी आगे मिलते रहने का निश्चय कर वह चर्चा सम्पन्न हुई।

अनोखी पेशकश

सुबह आठ साढ़े आठ का समय रहा होगा। श्रीराम प्रातःकालीन पूजा उपासना और लेखन आदि से निपट कर अपने कक्ष में पहुँचे ही थे कि एक मुसलिम युवक आया। शायद वह पहले से इंतजार कर रहा था। श्रीराम बैठने वाले थे कि 'गुरुजी' कहते हुए उसने श्रीराम के चरण छुए। चरण छूकर खड़ा हुआ और बोला, 'मैं आपके मशीन मेन अब्दुल मियां का भतीजा हूँ। मेरा नाम हनीफ है।'

अब्दुल मिंया यानी अब्दुल लतीफ। घियामंडी के इस मकान में आने के बाद जो छोटी सी प्रेस लगाई थी, अब्दुल मिंया उसके पहले मशीन मेन थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन्हीं के हाथों से नारियल तुड़वाया था। विभाजन के कुछ वर्ष बाद अब्दुल मिंया अपने कुछ नाते रिश्तेदारों के साथ पाकिस्तान चले गए थे। वहाँ कराची में रहने लगे थे। खास पढ़े लिखे थे नहीं। महीने पंद्रह दिन में श्रीराम के पास उनकी चिट्ठी आ जाया करती थी। टूटी फूटी भाषा में कभी वे खुद कुछ पंक्तियां लिख देते थे। कभी आसपास के लोगों से लिखा देते थे। श्रीराम स्वयं उनके पत्रों का जवाब दिया करते थे। उन अब्दुल मिंया का भतीजा आया तो श्रीराम ने उसके सिर पर हाथ रखा और बैठने के लिए कहा। कुशल क्षेम पूछने के बाद बोले, 'क्या खबर लाए हो?'

हनीफ ने बताया कि चचा जान ने अपने हिस्से की जमीन गुरुजी को दे देने के लिए कहा है। गुरुजी यानी श्रीराम। शुरू से ही वह इसी संबोधन से पुकारता था। श्रीराम ने वजह पूछी तो बोला, 'चचा जान ने आलमबाग वाली जगह आपको देने के लिए लिखवाया है। कहा है कि उस जगह का गुरुजी जिस तरह भी इस्तेमाल करना चाहें, करें।'

डेढ़ दो महीने पहले श्रीराम के पास भी इस तरह का पत्र आया था। श्रीराम ने उसका जवाब यथासमय दे दिया था। जगह करीब दो सौ वर्गगज की रही होगी। पैतृक संपत्ति थी। उसका इंतजाम किये बिना ही अब्दुल मिंया पाकिस्तान चले गए थे। अब वारिसों में जायदाद के बटवारे की नौबत आई तो अब्दुल मिंया के हिस्से में दो सौ गज का टुकड़ा आया। श्रीराम ने अपने उत्तर में लिखा था कि उस जगह एक स्कूल बना दिया जाए। अब्दुल मिंया के कुटुंब के लोग ही उसे चलाएं। वहां बच्चे पढ़ेंगे तो अच्छा लगेगा। अब्दुल मिंया का मन उस जगह ऐसी कोई धार्मिक गतिविधि चलाने का था, जिसमें हिन्दू मुसलमान सिख ईसाई सभी साथ बैठ सकें। इस तरह का पत्र आठ दस दिन पहले ही आया था। श्रीराम तय नहीं कर पा रहे थे कि क्या जवाब दें और हनीफ मौखिक संदेश लेकर आ गया।

श्रीराम ने हनीफ से उसके और परिचय वालों के बारे में पूछा। चाचा की जमीन के बारे में और लोग क्या सोचते हैं? इस बारे में जानकारी ली। हनीफ ने बताया कि और लोग भी पाकिस्तान जाने की सोच रहे हैं। यहाँ की जमीन के बारे में किसी की रुचि नहीं है। श्रीराम ने वहाँ स्कूल खोलने के बारे में बताया। लतीफ मिंया को इस आशय का पत्र लिख दिया है, यह भी बताया। उन्होंने कहा कि हमारी मां ताईजी के पास गांव में काफी जमीन है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हम वहाँ भी स्कूल खुलवाएंगे। पाठशाला से अच्छा धार्मिक स्थान कोई और नहीं हो सकता।'

हनीफ ने कहा, 'आप स्वयं भी तो धार्मिक केन्द्र चलाने के बारे में सोच रहे हैं। हम लोग सोचते हैं कि चाचा वाली जगह का इस्तेमाल किया जाए।'

श्रीराम ने इस भावना को सिर आंखों पर रखने के लिए कहा। फिर बोले, 'हम एक केन्द्र शुरु करना तो चाहते हैं लेकिन वह किसी एक व्यक्ति के दिये हुए स्थान पर नहीं होगा। बहुत से लोग मिलकर ऐसा निर्माण चलाएँगे। या फिर हम अपनी ही कोशिशों से व्यवस्था करेंगे। समझा बुझा कर श्रीराम ने हनीफ को वापस भेज दिया। स्कूल चलाने की बात उसे भी जंच रही थी। हनीफ और श्रीराम की चर्चा के समय ताईजी भी आ गई थी। आंवलखेड़ा की जमीन पर स्कूल चलाने का विचार उन्होंने पहली बार सुना था। हनीफ के जाने के बाद वे कहने लगीं, स्कूल वाली बात तो तुमने पहले कभी बताई ही नहीं। मैं तो तय किए हुए थी कि उस जमीन से जो आमदनी होगी वह तुम्हारे मंदिर में लगाउंगी।

ताईजी का विस्मय

श्रीराम को हंसी आ गई। वे ताई जी की बात पर नहीं हंसे थे, उनके अंदाज पर हंसे थे। ताई जी ने हनीफ से कही बातों पर जैसी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी उसमें खीझ, हताशा और आश्चर्य के मिले-जुले भाव थे। ताईजी ने कभी कामना नहीं की थी कि श्रीराम ने आंवलखेड़ा की जमीन के बारे में इस तरह की बात सोची होगी। वे मानती थीं कि जमीन आदि से जो आय होगी उसे गायत्री मंदिर में लगा देंगी। यह धारणा थोड़ी हिली तो उन्हें खीझ हुई। ताई जी को एक बार भरपूर निगाहों से निहारने के बाद श्रीराम ने कहा, 'उदास मत हो ताई। मंदिर में फुलवारी तुम्हारे पैसों से ही लगाउंगा। बाकी स्कूल भी तो मंदिर ही है। आंवलखेड़ा के बच्चे उसमें पढ़-लिखकर होशियार बनेंगे।' कहते कहते श्रीराम थोड़े गंभीर हुए। वे कहे जा रहे थे, 'गायत्री विद्या बुद्धि की देवी है। पुराने जमाने में बच्चे यह मंत्र सीखने के बाद ही विद्यारंभ करते थे। गायत्री पढ़ने का अर्थ है विद्या बुद्धि अर्जित करना। उस विद्यालय को भी हम प्राचीनकाल के गुरुगृहों की तरह समझें।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लंबे वार्तालाप के बाद श्रीराम की बात ताईजी के गले उतरने लगी थी। मन में यह सवाल अब भी घिरा हुआ था कि साधना केन्द्र की व्यवस्था कैसे होगी। मन में घुमड़ रहा सवाल उन्होंने चिरंजीव के सामने रख दिया। श्रीराम बोले, 'जिस मार्गदर्शक सत्ता ने तप आरंभ कराया और अभी तक निबाहा है, जो आंवलखेड़ा से मथुरा तक ले आई है, वही तपोभूमि की व्यवस्था भी कराएगी। कोई इंतजाम नहीं हुआ तो तुम्हारी जायदाद (आंवलखेड़ा की जमीन) से उधार ले लूंगा।'

सुनकर ताईजी को संतोष हुआ। वहां बैठक पूरी होने वाली थी कि मंडी रामदास के एक निवासी निरंजन चौबे आ गए। निरंजन मथुरा के चतुर्वेदी परिवारों के उन गिने चुने लोगों में थे जो घियामंडी आया करते थे। वे यथा अवसर संस्थान के काम में हाथ भी बटाया करते। कहीं से उन्हें खबर मिली थी कि मंडी रामदास में बारह कमरों का एक मकान है। मालिक मकान वह जगह बेचना चाहता है। जरूरतमंद है इसलिए कीमत थोड़ी बहुत कम भी कर सकता है। पूरा वृत्तांत लेने के बाद श्रीराम उस मकान की स्थिति और आसपास के वातावरण के बारे में जानकरी लेते रहे।

इस दिन शाम को जगह देखने गये भी सही। मंडी रामदास का वह मकान घियामंडी स्थित निवास से चार फर्लांग (करीब एक किलोमीटर) दूर पड़ता था। वहाँ के कमरों की मामूली मरम्मत करा दी जाती तो साधकों के आवास की व्यवस्था भी हो जाती लेकिन मकान की स्थिति ने साधना केन्द्र की कसौटी पर मकान नहीं उतरने दिया। श्रीराम ने निरंजन को समझाया कि हम लोगों को भजन पूजन के लिए जगह चाहिए। मण्डी रामदास का यह मकान भीड़भाड़ वाले इलाके में हैं। यहाँ लोगों का मन एकाग्र नही हो सकेगा। निरंजन को भी यह बात जंची। अचानक उसे खयाल आया कि वृंदावन रोड पर गायत्री टीला भी एक जगह है। वहाँ गायत्री का मंदिर भी है। टीले पर पहले भी जप-तप होता रहा है। यह विचार आते ही निरंजन ने कहा, 'पंडित जी गायत्री टीले के बारे में भी विचारकर सकते हैं। वहाँ एकांत भी है और मंदिर भी।'

निरंजन का यह प्रस्ताव सुनकर श्रीराम का चेहरा खिल उठा। उन्हें लगा कि उपयुक्त स्थान मिल गया। कोई अन्य कारण नहीं बनता हो तो गायत्री टीला अभीष्ट प्रकार का साधना केंद्र बन सकता है। उसके लिए गायत्री पर्वत नाम से एक संबोधन भी मन में उभर आया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दो

यमुना के तट पर गायत्री

घियामंडी से वृदांवन की ओर चलने पर बांई तरफ गायत्री टीला पड़ता है। मंडी रामदास का मकान देखने के बाद इसके बारे में विचार चला। श्रीराम की बचपन की स्मृतियाँ ताजा हो गई। पहली बार अकेले मथुरा वृंदावन की यात्रा की थी तो टीले पर बूटी सिद्ध बाबा से भेंट हुई थी। उन्होंने हाथ उठाकर आशीष दिया था। आवास और कार्यालय में कुछ देर रुक कर श्रीराम निरंजन के साथ पैदल ही टीले की ओर चल दिए। तेजी से चलते हुए श्रीराम बीस मिनट में टीले के पास पहुँच गए। बचपन में जिस समय टीले पर गए थे तब अलग दृष्टि थी। उस समय एक संत के दर्शन करने थे। अब उस जगह को साधना केन्द्र के रूप में चुनने का फैसला करना था।

तीस पैतीस गज ऊँचे टीले पर चढ़ते हुए श्रीराम ने तीन चार जगह से मिट्टी उठाई। उसे अंगुलियों से मसल कर देखा। मिट्टी भुरभुरी थी। जैसे यहाँ कभी जंगल रहा हो और बड़े पैमाने पर लकड़ियाँ जलाई गई हो। या जंगल में आग लगी हो और राख को मिट्टी में मिलाकर यहाँ इकट्ठा कर दिया गया हो। कहीं कहीं जमीन के रेतीली होने के लक्षण भी दिखाई दिए थे। टीला ऊपर संकरा होता जा रहा था। जहां मंदिर बना हुआ था, वहाँ मुश्किल से दस बारह वर्ग गज जगह रह गई थी। आधी जगह में मंदिर बना हुआ था। वहाँ कभी गायत्री की प्रतिमा थी। बूटी सिद्ध बाबा के बाद स्थान उपेक्षित हो गया था। वह प्रतिमा भी कोई निकाल ले गया था। खंडहर की तरह खड़ा मंदिर आवारा लड़कों और भिखारियों की शरणगाह बना हुआ था। वहाँ लिखी ऊलजलूल इबारतें भी उस जगह के उपेक्षित होने की कहानी कह रही थीं।

ऊपर के विस्तार को देख परख लेने के बाद श्रीराम ने निरंजन से कहा 'साधना केन्द्र के लिए यह जगह बहुत कम पड़ेगी। कम से कम दो-ढाई सौ गज जगह चाहिए।'

निरंजन ने कहा, 'टीला तोड़कर जगह निकाली जा सकती है।'

टीला तोड़ने का मतलब ऊपर से खुदाई करना और जगह को समतल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बनाना था। श्रीराम ने कहा, 'इससे बात नहीं बनेगी। यहाँ बड़ा निर्माण करना है। हम लोग यहां एक मंदिर बनाएंगे, यज्ञशाला होगी, साधक गण निवास कर रहे होगें। सुबह चार पांच बजे लोग जाग जाया करेंगे। प्राचीन काल के गुरुकुलों जैसा वातावरण होगा। बड़ा आनंद आयेगा।'

फिर कहने लगे, 'टीला तोड़कर जगह निकालें तो भी बात नहीं बनेगी। रेतीली भुरभुरी मिट्टी में कोई भी निर्माण नींव नहीं पकड़ेगा।' यह कहते हुए उस जगह को अपने काम की नहीं पाकर श्रीराम और निरंजन नीचे उतर आए। वे नीचे उतरे और वृंदावन रोड पर कदम रखा। कदम रखते ही ठिठके। निरंजन ने पूछा, 'किधर जाना है, घिया मंडी या जयसिंहपुरा?'

किधर जाना है यह समस्या नहीं थी। दरअसल सड़क पर पांव रखते ही श्रीराम की बांई भुजा फड़की थी। दांई ओर से एक कपिला गाय दौड़ती हुई, उस दिशा में निकल गई थी। रंभाती और पूंछ उठा कर दौड़ती हुई गाय जैसे अपने बछड़े को तलाश रही थी। लेकिन कपिला के निकलने से पहले कोई बछड़ा तो नहीं निकला था। फिर वह गाय इस तरह भागती हुई क्यों निकली? श्रीराम दौड़ती हुई गाय को गौर से देखते रहे। टीले के सामने मैदान में दो मोर नाच रहे थे। वे फुदकते हुए सड़क तक आ गये थे। श्रीराम ने उन्हें भी गौर से देखा और कुछ सोचने लगे। बीस पचीस साल पहले की स्मृतियाँ फिर धुंधली सी उभरने लगीं। लगा कि बांई ओर कुछ आगे चलकर एक बगीची है। उस बगीची में शायद कुछ दिन ठहरना हुआ था।

मन हुआ कि उस दिशा में चला जाए। कुछ तय नहीं कर पा रहे थे। शायद निश्चित करने के लिए ही खड़े हो गए थे। निरंजन उन्हें चुपचाप खड़ा देख सोचने लगा था कि रोकें या नहीं रोंके। थोड़ी सी हिम्मत जुटा कर पूछा, 'जयसिंहपुरा की ओर चलना है क्या साहब?'

श्रीराम ने कहा, 'नहीं। कल चलेंगे। अभी घर चलते हैं। वहाँ मिलने के लिए आए लोग इंतजार कर रहे होंगे।'

इतना कहकर उन्होंने घियामंडी की ओर मुँह किया। उस दिशा में चल दिए। अगले दिन जयसिंहपुरा में चामुंडा मंदिर के सामने वाली बगीची देखने की याद आई। याद पहले भी थी लेकिन लेखन और संपर्क में व्यस्त होने के कारण समय नहीं निकाल पाए थे। चामुंडा मंदिर से कुछ आगे भूतेश्वर मंदिर है। यह मंदिर मथुरा के दसों दिक्पालों के आराध्य के रूप में बनाया गया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्रीराम ने बगीची के बारे में ताई और माताजी को बताया। यह भी कहा कि जिस तरह का साधना केन्द्र बनाने की प्रेरणा उभरी है, उसके लिए यह स्थान उपयुक्त हो सकता है।

बगीची जाने से पहले द्वारकाधीश मंदिर में दर्शन और अर्चा का विचार आया। उस तरफ चल दिए। वहाँ होते हुए निकल ही रहे थे कि मंदिर के पास कुछ शोरगुल सुनाई दिया। ज्यादा नहीं दो ही लोग थे लेकिन जोर जोर से बोल रहे थे। मंदिर से कुछ आगे चौक के सामने एक मिठाई वाले ने साधु को घेर रखा था। घेर क्या रखा था? उसकी मनुहार किये जा रहा था और साधु का उत्तर था, 'अब तो भरोसा हो गया न कि वह मिठाई ठाकुर जी ने ही ग्रहण की थी।'

फूलचंद नामक उस मिठाई वाले ने साधु को दंडवत किया और कहा, 'लाख करोड़ बार भरोसा है महाराज। आप चलकर मेरे ठिकाने को पवित्र कीजिए।'

साधु किसी भी तरह मानने के लिए राजी नहीं था। चरणों में गिर पड़ा, देख कर उसे खीझ हुई और बोला, 'अब तंग मत करो, वरना ठाकुर जी नाराज हो जाएंगे।'

साधु का इतना कहना था कि फूलचंद तपाक से उठ कर खड़ा हो गया। वह मनुहार करने लगा। साधु पर कोई असर नहीं हुआ। वह कुछ दूर दूकान से आगे मंदिर की तरफ चल दिया। इस बीच श्रीराम ने सहज भाव से पूछा कि क्या हुआ। फूलचंद ने कल सुबह की अपनी एक आपबीती सुनाई । वह चमत्कारी अनुभव ही था। फूलचंद की मिठाई की दूकान थी। वह लगन और कौशल से मिठाइयाँ तैयार करता था लेकिन बिक्री बहुत कम होती थी। कई बार तो दूकान का उस दिन का किराया भी नहीं निकलता। कोई और काम वह जानता नहीं था। इसलिए मिठाई के काम पर ही निर्भर रहना उसकी मजबूरी था।

ठाकुर जी को भोग

पिछले दिन वही वैष्णव साधु फूलचंद की दूकान पर आया। सुबह दूकान खोलते ही वह आकर खड़ा हो गया और ठाकुर जी को भोग लगाने के लिए कहने लगा। फूलचंद ने उसे साधारण भिक्षुक बाबा समझ कर फटकारा। कहा कि दूकान चलती नहीं है और भीख मांगने वाले चैन नहीं लेने देते। साधु ने कहा, 'भीख नहीं मांगता बच्चा। ठाकुर जी को भोग लगाएंगे।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

फूलचंद ने उस साधु को एक दोने में कुछ पेड़े रख कर दे दिए और कहा 'अब जाओ।'

साधु वहाँ से खिसकने के बजाय दूकान पर ही खड़े होकर पेड़े खाने लगा। देखकर फूलचंद को खीझ हुई। उसने साधु को फटकारते हुए कहा, 'यह ठाकुरजी को भोग लगा रहे हो। तुम जैसे ढोंगी साधुओं ने धर्म का बेड़ा गर्क कर रखा है।'

साधु पर फटकार का कोई असर नहीं हुआ। वह बोला, 'हां यह ठाकुर जी को ही भोग लग रहा है।'

फिर दोने में से दो पेड़े निकाल कर कहा, 'तुम भी खाओ।'

फूलचंद मुंह बनाने लगा। साधु ने कहा, 'संकोच मत करो। यह प्रसाद ही है। इसे आदर के साथ ग्रहण करो। तुम्हारी दुकान खूब चलेगी।'

बिक्री बढ़ने की बात ने फूलचंद को शांत किया और साधु की बात मानने के लिए प्रेरित भी। उसने पेड़े खा लिये। इसके बाद साधु चला गया। फूलचंद का कहना था कि उस दिन एक सौ चालीस रुपये के पेड़े बिके। सामान्य दिनों में पचीस तीस रुपए का सामान भी नहीं बिकता था। उस दिन पांच गुना बिक्री बढ़ गई। अगली सुबह नौ साढ़े नौ बजे बाद साधु दूकान पर फिर आया। पूछने लगा कि प्रसाद का कैसा असर हुआ। साधु को देखते ही फूलचंद दुकान से कूदकर नीचे उतर आया। महात्मा के पैर छू लिए। कुछ सेवा स्वीकार करने के लिए कहने लगा। साधु ने सिर्फ यही कहा यमुना माई की सेवा करो। वह ठाकुर जी की लाड़ली है। सेवा से यमुना माई खुश होगी।

यह सब वार्तालाप चल ही रहा था कि साधु वापस आता दिखाई दिया। उसे देखते ही श्रीराम ने पहचान लिया। अरे यह तो वही माधवदास है, जो कुछ दिन पहले घियामंडी आये थे और भक्ति आदि की चर्चा कर रहे थे। उन्होंने यह वायदा भी किया था कि भविष्य में कोई साधना केन्द्र बनाएंगे तो स्थान के चयन में वे भी हाथ बटाएंगे।

उन्हें देखकर श्रीराम ने नमस्कार किया। साधु ने कहा पंडित जी अभी आपको स्थान मिला है या नहीं। श्रीराम ने कहा स्थान की ही तलाश है। योजना तैयार है, साधनों की व्यवस्था के बारे में भी सोच लिया है। उस स्थान को ऊर्जावान बनाने के लिए सैकड़ों साधक जप-तप कर रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साधु ने पूछा किस तरह का जप तप। श्रीराम ने कहा, हमारे संपर्क में जो भी लोग आते हैं उन्हें हम गायत्री मंत्र की दस मालाओं का नियमित जप करने के लिए कहते हैं। आहार विहार में सात्विकता पर भी जोर रहता है। सभी लोग तो न्यूनतम एक घंटा प्रतिदिन जप नहीं कर पाते। कुछ लोग तैयार हुए हैं। वे जप कर रहे हैं। साधना केन्द्र के लिए गायत्री तपोभूमि की स्थापना करेंगे तो उन सभी साधकों को बुलाएंगे। सुनकर साधु ने कहा, जगह खरीदने के लिए व्यवस्था कर ली गई है तो फिर क्या बाधा है।

उपयुक्त स्थान नहीं मिल रहा है। कहीं जगह थोड़ी है तो कहीं जन संकुल एकाध स्थान पर एकांत में पर्याप्त जगह दिखाई भी दी लेकिन वह संस्कारित नहीं थी। तीनों तरह से उपयुक्त स्थान की तलाश है। आज के निर्धारण के बारे में उन्होंने कहा, 'एक जगह और है। किशोर अवस्था में कभी वहाँ आना हुआ था। तभी से मन खींच रहा है। आज वहाँ जाने का मन है। समय हो तो आप भी चलिए।'

साधु माधव ने तपाक से निमंत्रण स्वीकार कर लिया और श्रीराम के साथ हो लिए। रास्तें में हंसी मजाक चलता रहा। गायत्री मंत्र के तीन पाद होते हैं। हम तीनों उन तीनों पादों के जैसे उपासक है। साधु महाराज आप भक्ति के, पंडित जी निरंजन ज्ञान के और हम कर्म के। हम तो सिर्फ कर्म ही कर सकते हैं। इस तरह हास्य विनोद चलता रहा। हास्य विनोद में भी तत्त्वज्ञान की चर्चा हो गई थी। चामुंडा मंदिर के सामने वाली बगीची कब आ गई कुछ पता ही नहीं चला।

बगीची के पीछे मुश्किल से एक फर्लांग दूर जमुना बहती थी। बरसात के दिनों में उसका पाट बगीची तक आ जाता था। ठीक सामने एक रास्ता चामुंडा मंदिर की ओर जाता था। मंदिर बहुत विशाल नहीं था। एक साथ पूजा करने की स्थिति आए तो पांच छह लोग भी नहीं समा सकते थे। बगीची मुश्किल से दो सौ वर्गगज में फैली हुई थी। भीतर जाने के लिए द्वार आदि नहीं था। कंटीले तारों की काम चलाऊ बाढ़ लगी हुई थी। अंदर जाने के लिए बीच में थोड़ी सी जगह खाली छूटी हुई थी। बांई तरफ एक कुइयां थी। दांई और टूटा फूटा हाल नुमा कमरा था। दरवाजे वाली दीवार खुली पड़ी थी। अगर वहाँ रात काटना पड़े तो ठंडी गरम हवाओं से बचाव का कोई उपाय नहीं था। सामने एक छोटा सा चार पांच फुट ऊंचा देवालय था। उसके भीतर एक प्रतिमा थी, जिसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बारे में काठिया बाबा ने कभी बताया था कि यह गायत्री माता की है। तीन चार सौ साल पहले यहाँ किसी सिद्ध यति द्वारा तपस्या का उल्लेख भी मिलता था, लेकिन उन दिनों बगीची का उपयोग संध्या, स्नान और थोड़ी बहुत देर विश्राम के लिए ही होता था। जगह को अच्छी तरह देखा परखा। स्थान की विशेषताओं और आवश्यकताओं के बारे में तरह-तरह की बातें छिड़ी।

बगीची की परख

बातचीत करते हुए ही श्रीराम ने कुइयां का पानी निकलवाया। उसे चख कर देखा। साथ आए साधु माधवदास और निरंजन पंडित को भी चखाया। दोनों ने पानी के स्वाद के बारे में ही बताया। श्रीराम ने कुछ पल के लिए आँखें मूंदी। ध्यान लगाया और एक बार फिर आचमन किया। अंतरंग में अनुभूति जगी कि जल पवित्र और शुद्ध है। यमुना की मूल धारा से आ रहा है। अर्थात विभिन्न नदियों और स्रोतों से बचकर बहता हुआ यमुनोत्री का जो जल यहाँ तक आता है उसके अंश कुइयां के पानी में है। श्रीराम ने कहा, 'अभी तो यह अंश है। आगे भी कम से कम पचास वर्ष और रहेंगा। इस बीच पर्यावरण की क्या स्थिति बनती है, कुछ नहीं पता।'

उन्होंने मन ही मन इस स्थान को गायत्री तपोभूमि के रूप में विकसित करने का निश्चय कर लिया। वहीं उन्होंने चर्चा भी छेड़ी कि गायत्री की उपासना करने वालों का पारिवारिक संगठन यही से आरम्भ करेंगे। संगठन का उद्देश्य गायत्री उपासना और आदिशक्ति के इस मंत्र में निहित भारतीय संस्कृति का प्रचार करना होगा। मंदिर, यज्ञशाला, पुस्तकालय आदि की स्थापना का निश्चय भी था। इस बारे में एक योजना अगस्त १९५१ में तैयार कर ली गई थी। श्रीराम बगीची में जब अपनी योजना के बारे में चर्चा कर रहे थे तो आठ दस और लोग भी इकट्ठे हो गए थे। योजना के बारे में बताते हुए उन्होंने सामने खड़े व्यक्तियों से कहा, 'हम लोग बैठ जाएं तो अच्छा रहेगा।'

सब लोग बैठ गए। वहां मौजूद सभी व्यक्ति गायत्री संध्या से परिचित थे। यह भी जानते थे कि भारतीय धर्म परंपरा में आस्था रखने वालों को गायत्री की उपासना अनिवार्य है। निर्माण की जितनी बड़ी योजना थी, उसे पूरा करने में बीस पचीस हजार रुपये खर्च बैठता था। उस जमाने में यह रकम आज के बीस पचीस लाख रुपये से कम नहीं होगी। आगंतुकों में एक सज्जन गोविंद चंद्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मिश्रा थे। वे इलाहाबाद के रहने वाले थे कि उन्होंने पूछा, 'आपके पास अपनी निजी व्यवस्था है या जन सहयोग से इंतजाम करेंगे।'

'अभी इस बारे मैं कुछ निश्चित नहीं किया है, फिर भी लोगों से अनुदान के लिए तो कहेंगे ही,' श्रीराम ने कहा,'तपोभूमि की योजना प्रकाशित करते हुए भी हमने अनुरोध किया था। ज्यादा से ज्यादा लोग इस स्थापना में अंशदान कर सकें तो उसका अपना महत्व होगा।'

'ऋषियों के पुण्य का संचय कर आहूत की गई जानकी जी की तरह,' साधु माधवदास ने अपनी बात पूरी की।

उसी दिन शाम को श्रीराम ताई जी और माताजी को साथ लेकर एक बार फिर बगीची गये। उन दोनों ने भी उस स्थान को पसंद किया। ताई जी को याद आया कि बचपन में एक बार वे स्वयं भी यहां आई हैं। पिताश्री के साथ वर्ष में कम से कम एक बार मथुरा आना होता था। वे चौरासी कोस परिक्रमा भी करती रहीं थी लेकिन वह क्रम तीन चार साल में एकाध बार आता था। डोलोत्सव, घटा, छटा उत्सव या मेलों के दिनों में प्रायः आती रहती थीं। पिताजी के साथ मथुरा से वृंदावन जाते हुए एक बार उस बगीची में रुकी भी थीं शायद। उन्होंने पूछा, 'सड़क के उस पार एक मंदिर भी है क्या?'

श्रीराम ने हामी भरी। ताईजी ने कहा कि उन्होंने याद दिलाया कि वह मंदिर मामूली सा दिखाई देता है, लेकिन असल में है नहीं। किसी जमाने में वहाँ सिद्धों का वास था। तंत्र के जानने वाले महात्मा वहाँ रहते थे। श्रीराम ने ताई जी की सूचना की पुष्टि की। वे बोले, 'हाँ, कुछ लोगों से सुना है कि वह चामुंडा देवी का मंदिर है। तांत्रिक पीठ रहा है। चार पांच सौ साल पहले वहाँ मथुरा की रक्षा के लिए पूजा पाठ अनुष्ठान आदि हुआ करते थे'।

ताई जी, माताजी और श्रीराम चामुंडा देवी के दर्शन करते गए। मंदिर जर्जर अवस्था में था। भूले भटके ही लोग वहाँ आते थे। चैत्र और आश्विन नवरात्रि के दिनों में थोड़े बहुत लोग आते रहते थे। तब वहाँ कोई पंडा पुजारी भी बैठ जाता था। ताई जी ने उस जगह की दुर्दशा से द्रवित होते हुए कहा, 'अपनी तपोभूमि बन जाएगी तब लोग शायद यहाँ की सुध भी लेंगे।'

वहां से बगीची (भविष्य की तपोभूमि) होते हुए तीनों वापस घर आ गये। यही तय किया कि देखे गये स्थान पर ही गायत्री तपोभूमि की स्थापना करेंगे। बगीची के मालिकों को तलाशने और जमीन खरीदने की बात चलाने के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिए लोगों से कहना शुरु किया। आमतौर पर श्रीराम रात नौ बजे तक सो जाया करते थे। उस दिन देर तक जागते रहे। करीब दो घंटे तक जागकर प्रस्तावित गायत्री तपोभूमि का नक्शा बनाया। गायत्री मंदिर ट्रस्ट की रूपरेखा बनाई। यह भी निश्चित किया कि आगामी वसंत पर्व तक विधिवत ट्रस्ट की स्थापना हो जाए और तपोभूमि के निर्माण के लिए भी पहल कर दी जाए।

दुर्वासा की तपस्थली

स्थान खरीदने का अभी संकल्प ही हुआ था। लेकिन श्रीराम को लग रहा था कि वह जगह मिल गई। सोने से पहले उस जगह को लेकर कई दृश्य मन में आये। जैसे वहाँ यज्ञ याग चल रहे हैं, बहुत से लोग जप तप कर रहे हैं, स्वाध्याय और सत्संग का क्रम चल रहा है। लोग निरंतर आ जा रहे हैं। यह दृश्य भविष्य के थे अथवा अतीत के, कुछ स्पष्ट बोध नहीं हो रहा था। मन में भी दो चार बार सवाल उठा कि यह इतिहास है अथवा भावी संभावना? कोई उत्तर नहीं मिला। उत्तर तलाशने की झंझट में पड़े बिना वे उन दृश्यों का आनंद लेने लगे।

गायत्री तपोभूमि का नक्शा पूरा हो चुका था। उसे रखकर श्रीराम बिस्तर पर लेट गए। लेटे-लेटे भी मन उन्हीं दृश्यों में रमा हुआ था। एक दृश्य में देखा, विशाल यज्ञ चल रहा है। सैंकड़ों हजारों लोग आहुतियाँ दे रहे हैं। जितने लोग आहुतियां दे रहे हैं, उनसे ज्यादा संख्या में अशरीरी अस्तित्व यज्ञकुंडों को घेरे हुए खड़े हैं। कुंड में प्रज्वलित अग्नि और उससे उठते सुवासित धूम्र को देख कर वे आत्माएं आह्लादित हो रही हैं। उनका कलेवर ऋषियों जैसा है। जटा और दाढ़ी बढ़ाए इन ऋषियों ने कमर से नीचे एक साधारण अधोवस्त्र पहन रखा है। यज्ञकुंड में से उठ रही ज्वालाओं की आंच से उनका मुखमंडल चमक रहा है।

श्रीराम इस आयोजन को दृष्टा की तरह देख रहे हैं। उन्हीं ऋषि सत्ताओं में एक दिव्य व्यक्तित्व श्रीराम की ओर पलकें उठाकर देखता है। उस व्यक्तित्व को श्रीराम तुरंत पहचान जाते हैं। अरे यह तो अपनी मार्गदर्शक सत्ता है। गुरुदेव! बिस्तर पर लेटे लेटे ही श्रीराम सब देख रहे हैं। आँखें खुली हुई है लेकिन कमरे में आसपास की वस्तुओं का कोई बोध नहीं हुआ है। गुरुदेव श्रीराम की ओर देखते और उनकी ओर आने लगते हैं। स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि महायज्ञ में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उपस्थित लोगों को, निहारते हुए आकाश मार्ग से आ रहे है। आ कर सामने खड़े हो गए है। वे आ रहे हैं। उनके अभिवादन में श्रीराम बिस्तर से उठकर बैठ जाते है। यह कृत्य प्रत्यक्ष है। गुरुदेव निकट आते जा रहे हैं। श्रीराम करबद्ध होकर खड़े हो गये हैं। पास आकर मार्गदर्शक सत्ता ने दायां हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में ऊपर उठाया। श्रीराम उनके चरणों में प्रणाम निवेदन करते हुए घुटनों के बल बैठ गए। प्रणाम करने के बाद फिर खड़े हो गये। कोई भूमिका बांधे बिना ही गुरुदेव ने कहा, 'यह सब तुम्हें ही करना है। जो महापुरश्चरण किए थे, उनकी पूर्णाहुति के लिए भी और आगे जो कुछ करना है उसकी तैयारी के रूप में भी।'

श्रीराम ने निर्देश को चुपचाप सुना। गुरुदेव कह रहे थे, 'स्थान थोड़ा सा ही मिला है। लेकिन उसका अभाव नहीं रहेगा। साधनों की कमी भी नहीं रहेगी। जो ऋषि आत्माएं यज्ञकुंडों में आहुति दे रही आत्माओं के पीछे खड़ी हैं, वे ही व्यवस्था करेंगी।'

'जो जगह आज देखने गये थे, वहीं तपोभूमि का निर्माण होना है। हजारों साल पहले महर्षि दुर्वासा ने यहाँ गायत्री का उग्र तप किया था।' गुरुदेव कहे चले जा रहे थे। श्रीराम के मन में शंका उठी कि दुर्वासा का मंदिर तो यमुना के उस पार है। यहाँ से तीन चार मील दूर। लोग उसे ही दुर्वासा की तपस्थली कहते हैं। गुरुदेव इस जगह के बारे में संकेत कर रहे हैं। मन में चल रही उथल-पुथल को गुरुदेव ने जैसे ताड़ लिया था, वे बोले, 'दुर्वासा की तपस्थली यही है। उनके युग में यमुना इस स्थान के सामने ही बहा करती थी। यह जगह तब नदी के बांई ओर थी।'

श्रीराम के मन में उठ रही शंका तिरोहित हो गई। एक सवाल उठने की तैयारी कर रहा था। किसी ऋषि की तपस्थली ही चुनना था तो वसिष्ठ या विश्वामित्र का स्थान चुनते। दुर्वासा जैसे क्रोधी ऋषि का स्थान चुनने के पीछे क्या दृष्टि? श्रीराम ने गुरुदेव से पूछ ही लिया। गुरुदेव ने उत्तर दिया, 'दुर्वासा के व्यक्तित्व को लेकर प्रचलित मान्यताओं का उत्तर समय पर तुम्हें स्वयं मिल जाएगा। इस तरह के कई और प्रश्नों का उत्तर भी तुम्हें ही देना है। यहाँ दुर्वासा का स्थान इसलिए चुना गया कि ब्रजभूमि में उनसे ज्यादा प्रचंड तप करने वाला कोई और ऋषि नहीं हुआ है। गायत्री के तप से उन्होंने जो प्रचंड तेज अर्जित किया था, उस कारण भी लोग उनकी उपस्थिति में प्रचंड तेज का अनुभव करते थे। सामान्य लोग उसे सह नहीं पाते और उसे उनका क्रोध भी समझ बैठते थे।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'वसिष्ठ और विश्वामित्र की तप स्थलियों में भी काम करना है। वे काम यहीं के विस्तार होंगे। लेकिन अभी यह चरण पूरा हो जाए।' गुरुदेव ने कहा। तपोभूमि की स्थापना और स्थान चयन के साथ साधना उपासना का निर्धारण भी हुआ। गुरुदेव ने इस संबंध में संकेत भर किया। श्रीराम जब तक जागते रहे, तब तक अपनी मार्गदर्शक सत्ता और उनके सान्निध्य में चल रहे महायज्ञ सत्र का अनुभव करते रहे। वह अनुभूति योगनिद्रा की भावभूमि में पहुँचने तक भी चलती रही।

पुण्य का विसर्जन

चौबीस लाख गायत्री मंत्र के चौबीस महापुरश्चरण १९२६ में आरंभ हुए थे। एक वर्ष में एक महापुरश्चरण सम्पन्न होने के क्रम से यह साधना सन १९४९-५० में पूरी हो जाना चाहिए थी। लेकिन स्वतंत्रता आंदोलन और दूसरे रचनात्मक कार्यों में लगे रहने के कारण समय लंबा खिंच गया था। मार्गदर्शक सत्ता ने इन कामों को भी साधना का ही भाग बताया था। स्वतंत्रता आंदोलन में भागीदारी, उस अवधि में तीन बार की जेल यात्रा और दूसरी सक्रियताओं के चलते जप में थोड़ा व्यवधान पड़ा। आहार-विहार और दिनचर्या का अनुशासन यथाशक्य, यथावत चल रहा था। नियत संख्या में जप बाद में भी पूरा किया जा सकता था लेकिन श्रीराम ने निरंतरता के निर्वाह को महत्व दिया। उस स्थिति में महापुरचरण के तीन वर्ष और बढ़ गए थे। गई संध्या को गायत्री तपोभूमि का प्रारूप तैयार करते समय अंत:क्षेत्र में हुई अनुभूति उस अवधि को भी याद करा गई थी।

प्रात:काल अपने स्वजन संबंधियों से पत्राचार और वार्तालाप के दौरान श्रीराम ने गायत्री तपोभूमि का उल्लेख किया। पत्राचार में स्वजनों को पत्र लिखने के साथ नियमित रूप से प्रकाशित होती आ रही मासिक पत्रिका 'अखंड ज्योति' का नाम भी सम्मिलित है। श्रीराम पत्रिका के लिए जो लेख आदि तैयार करते थे, उन्हें वे अपने लोगों को लिखा गया 'पत्र', गायत्री चर्चा ही कहते थे। मिलने आये लोगों को भी भावी योजना के बारे में बताया।

महापुरश्चरण शृंखला पूरी होने में लगभग दो वर्ष शेष थे। महापूर्णाहुति के लिए जून १९५३ में विराट आयोजन का निर्धारण हुआ। संवत २०१० के वसंत पर्व तक महापुरश्चरण साधना पूरी हो जानी थी। श्रीराम ने परामर्श कक्ष में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आए कार्यकर्त्ताओं से पूर्णाहुति के बारे में कहा तो उनमें से एक बोल उठा, 'आप इस यज्ञ में सब लोगों को शामिल करना चाहते हैं। ऐसा किया गया तो आपकी चौबीस या सत्ताईस वर्ष की साधना का फल उन सभी लोगों में बंट जाएगा। आपको क्या लाभ होगा?'

श्रीराम ने कहा, 'हमारी परंपरा में जितनी भी साधनाएं की जाती हैं,' कर्मकांड होते हैं वे सब समापन के समय भगवान को अर्पित कर दिए जाते हैं। जप-तप और अनुष्ठान अपने लिए नहीं सबके लिए होते हैं। फिर अपनी साधना तो धर्म संस्कृति के पुनरुद्धार के लिए ही हुई है। इनका पुण्यफल जिस किसी को भी मिलेगा, वह इसी काम में जुटेगा।

महापुरश्चरण से पहले 'सहस्रांशु ब्रह्म यज्ञ' की योजना अपने निजी तप अनुष्ठान का ही समाजीकरण थी। इस योजना में हजारों लोगों द्वारा १२५ करोड़ गायत्री मंत्र का जप, १२५ हजार उपवास और १२५ लाख आहुतियों का हवन किया जाना था। जगह-जगह व्यक्तिगत और सामूहिक साधनाओं से यह लक्ष्य प्राप्त किया जाना था। परामर्श में जब यह चर्चा चल रही थी तो गायत्री तपोभूमि का उल्लेख भी आया। श्रीराम ने कहा जमीन तो हम अपने स्वयं के संसाधनों से खरीदेंगे। उसके बाद निर्माण में सभी लोगों का सहयोग चाहिए। एक एक पैसे का हिसाब रखा जाएगा। कोई भी व्यक्ति वह हिसाब देख सकेगा।

बातचीत चल ही रही थी कि ताई जी आ गई। गायत्री तपोभूमि की योजना के बारे में उन्होंने भी सुना। सुन कर कहा सबसे पहले मेरा अनुदान लिया जाए। वहाँ उपस्थित लोग इस अचानक घोषणा से चौंके। ताई जी ने किसी के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना कहा, 'मैं ग्यारह सौ रुपए इस काम के लिये तय करती हूँ।'

संकल्प के तौर पर उन्होंने चांदी के ग्यारह सिक्के निकाले और श्रीराम के सामने बिछी चौकी पर रख दिए।

वहाँ बैठे और लोगों ने भी अपने जेब में हाथ डालने की कोशिश की। लेकिन श्रीराम ने बीच में ही टोक दिया, 'अरे इस तरह नहीं। अभी रसीदें छपवाएंगे, हिसाब किताब के लिए बही बनाएंगे, कोई व्यवस्था होगी तभी अनुदान इकट्ठा शुरु करेंगे।' लोग रुक गए। लेकिन पटना से आए केदारनाथ सिंह तब तक कुछ रुपये निकाल कर कागज में लपेट चुके थे। वह उन्होंने चौकी पर रख दिये। यह भी कहा कि सबके सामने खोलिएगा मत। यह मेरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और गायत्री माता के बीच का मामला है। वहाँ बैठे और लोगों ने भी केदारनाथ सिंह का अनुकरण करना चाहा था पर श्रीराम ने सख्ती से मना कर दिया।

दीपक और अग्नि

गायत्री तपोभूमि की स्थापना होगी तो क्या अखण्ड दीपक भी वहीं ले जाया जाएगा? परिवार में सबके साथ बैठने पर प्रश्न उठा था। इस विषय में सबके अलग अलग मत थे। परिवार का अर्थ माताजी अथवा साथ निवास कर रही संतानें ही नहीं था। संताने तो अभी परामर्श देने जैसी स्थिति में भी नहीं थी। श्रीराम के लिए परिवार का अर्थ वहां काम कर रहे कार्यकर्त्ता और उपस्थित गायत्री साधक थे। उनमें से कुछ लोगों का विचार था कि 'अखण्ड दीपक' गायत्री तपोभूमि में रखना चाहिए। वहीं लोग दर्शन करेंगे। आगे चल कर दीपक को 'अखंड ज्योति' को देव प्रतिमा की तरह मानेंगे। वह पूजा आराधना के सामूहिक स्थान पर ही रखा जाए तो अच्छा है। इस विचार का कई लोगों ने समर्थन किया।

श्रीराम उन सभी के विचार और तर्क सुनते रहे। कुछ देर सोचते रहे। फिर बोले, 'अपनी निजी उपासना आराधना इस दीपक ज्योति की साक्षी में ही की है। अभी महापुरश्चरण पूरे होने में तीन वर्ष और चाहिए। तपोभूमि की स्थापना में भी इतना समय चाहिए। 'अखंड ज्योति' की स्थापना वहां भी की जा सकती है। लेकिन इस की देखभाल का दायित्व माताजी ने लिया हुआ है। 'अखंड ज्योति' वहां ले जाते हैं तो माताजी को भी वहां जाना और रहना पड़ेगा? क्या यह संभव है?'

इस बात ने उपस्थित लोगों के सामने दुविधा सी खड़ी कर दी। कोई बड़ा भारी प्रश्न नहीं था लेकिन निश्चय तो किया ही जाना था। एक कार्यकर्त्ता ने कहा, 'आपकी साधना यहीं चली है। तपोभूमि में जाना और रहना संभव नहीं होगा। वहाँ रहने लगेंगे तो यहाँ की व्यवस्था लड़खड़ा जाएगी। पत्रिका और साहित्य का प्रकाशन यहीं से हो रहा है। गायत्री तपोभूमि को साधना, स्वाध्याय और स्वावलम्बन का केन्द्र बना रहे हैं। वहाँ अभी ऐसी कोई योजना नहीं है। अतः 'अखंड ज्योति' का यहीं रहना ठीक है।' और लोगों ने भी इस विचार का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समर्थन किया और निश्चित हुआ कि श्रीराम की निजी साधना भूमि यहीं स्थित रहे। उसी स्थान पर जहां श्रीराम रहें। और भी स्पष्ट कहें तो उस जगह जहां माताजी 'अखंड ज्योति' की देखभाल कर सकें। दीपक में घृत अनवरत भरा रहे, हवा के झोंके उसकी लौ को कंपित नहीं करें। ऐसी व्यवस्था के लिए सतत चौकसी चाहिए। उसी गोष्ठी में निश्चित हुआ कि सहस्रांशु ब्रह्मयज्ञ में चौबीस लाख मंत्रों का लेखन होना है। मंत्रलेखन की पुस्तकों का संग्रह गायत्री तपोभूमि में किया जाए। यह भी कि चौबीस सौ तीर्थों का जल रज संग्रहीत किया जाए। वह भी गायत्री तपोभूमि में स्थापित हों।'

गोष्ठी के बीच में ही श्रीराम ने व्यवस्था दी कि तपोभूमि की यज्ञशाला में अखंड अग्नि स्थापित की जाए। यह घोषणा अनायास ही हुई थी। श्रीराम ने सोच समझकर नहीं, किसी के संकेत निर्देश पर कहा था। यज्ञशाला में 'अखंड अग्नि' की स्थापना के विचार में साधकों के मन में पुलक बिखेर दी। बातचीत पूरी करते हुए उन्होंने कहा, 'यह अग्नि हिमालय के हृदय प्रदेश से लाई जाएगी। उस जगह से जहां हमारी मार्गदर्शक सत्ता अपने शिष्यों को अपने सान्निध्य में रखते हैं। उन्हीं साधकों के अग्निहोत्र की ऊर्मि गायत्री तपोभूमि में अग्नि आधान करेगी।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साधना और संजीवनी

गायत्री तपोभूमि के लिए उस जगह का सौदा छह हजार रुपए में तय हुआ। इतनी रकम का इंतजाम नहीं था। ताईजी ने खुदकाश्त की जमीन और जमींदारी के बांड बेचकर कीमत जुटाने की पेशकश की थी। श्रीराम उस पेशकश को पहले ही मना कर चुके थे। ग्यारह सौ रुपए से ज्यादा किसी हालत में लेने का मन नहीं था। पत्रिका और पुस्तकों के प्रकाशन से इतनी आमदनी नहीं होती थी कि पांच हजार रुपए जुटाने की बात सोची जाए। थोड़ी पूंजी थी। उससे पत्रिका और पुस्तकों का पहिया ही घूमता था। 'अखंड ज्योति' के सदस्य सालाना चंदा जमा कराते थे। वह रकम पुस्तकों के प्रकाशन में लग जाती। पुस्तकों से जो आमदनी होती थी, वह पत्रिका के लिए कागज और छपाई आदि में खर्च हो जाती।

उन्हीं दिनों गायत्री महाविद्या पर विशिष्ट साहित्य प्रकाशित करने की योजना बनी। 'गायत्री योग,' 'गायत्री तंत्र,' 'यज्ञ विज्ञान' और 'गायत्री की उच्चस्तरीय साधना' जैसी पुस्तकें पहले लिखी जा चुकी थीं। इन पुस्तकों में आये तत्वज्ञान को संकलित, संपादित और संवर्धित कर 'गायत्री महाविज्ञान' के रूप में प्रस्तुत करने का निश्चय था। ग्रंथ के संबंध में आचार्यश्री का कहना था कि इसके बाद गायत्री के संबंध में कोई भी बात जानने के लिए यहां वहां नहीं भटकना पड़ेगा। शास्त्र, प्रमाण और सिद्धों के अनुभव सब एक जगह उपलब्ध हो जाएंगे।

नवरात्रियों में अभी कुछ समय था। इस बीच जमीन के लिए पैसा जुटाना था, लेकिन कठिनाई थी कि जुटाया कहां से जाए? श्रीराम तब खादी की धोती कुर्ता पहनते थे। किसी कार्यक्रम में जाने पर एक जाकिट और कंधे पर डाल लेते। तीन जोड़ी से ज्यादा कपड़े कभी नहीं बनाए। कभी कभार तो दो ही। माताजी की भी यही स्थिति थी। ऐसा कोई अभाव भी नहीं था कि चाहें तो सुविधा साधन नहीं जुटा पाए। लेकिन उस दिशा में कभी सोचा नहीं। पत्रिका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और साहित्य की आमदनी से अथवा यदाकदा मिलने वाले अंशदान से थोड़ी बहुत रकम जुटती तो वह गायत्री विद्या के प्रचार में लगा देते। प्रचार का उन दिनों एक ही तरीका था, पुस्तकें लिखना, प्रकाशित करना और लागत मूल्य पर बांट देना। सन् १९५० पूरा होने तक उनकी लिखी सौ पुस्तकें प्रकाशित हो गई थीं।

घर में साधनों के बारे में चर्चा तो चलती थी लेकिन चिंता नहीं होती थी। माताजी, ताईजी और श्रीराम ने गायत्री जयंती के आसपास साधनों के बारे में चर्चा छेड़ी। श्रीराम का कहना था कि जमीन का प्रबंध हमें अपने ही साधनों से करना चाहिए। जन सहयोग इसके बाद जुटाया जाए।

अपने ही साधनों से उनका आशय पत्रिका और साहित्य से होने वाली आमदनी और खुद की संपत्ति से था। ताईजी ने कहा कि अपनी संपत्ति तो गांव में है। उसे बेचकर काम चलाया जा सकता है। श्रीराम ने अपना निर्णय दोहरा दिया कि वह संपत्ति गांव के ही काम में लगाना है। ताईजी ने इस निर्णय पर पहले भी हामी भर रखी थी। अब की जरूरतें देखकर बेचने का ख्याल आया। श्रीराम ने दृढ़ता दिखाई तो उन्होंने सुझाव रखा कि बेचें नहीं गिरवी रख देते हैं। जब छह हजार रुपए का प्रबंध हो जाएगा। तो छुड़ा लेंगे।

सुझाव सुन कर श्रीराम कुछ सोचने लगे। शायद यह सुझाव उनके गले उतर रहा था। तत्क्षण वे द्वन्द्व से बाहर आये, 'नहीं ताई। अपनी संपत्ति हो तो उसे गिरवी रख दें। वह अपनी कहां रही। उसे हम पहले ही गांव की निश्चित कर चुके हैं। हमारा उस पर कोई अधिकार नहीं है।'

ताईजी ने समझाने की कोशिश की,'हम उस संकल्प को बदल कहां रहे हैं। गांव के ही काम आएगी। जब तक गांव के काम नहीं आती तब तक यहीं सही।'

श्रीराम ने कहा 'मंदिर में हम रुपया पैसा चढ़ाते हैं। वह मंदिर का हो गया। उसका जब भी उपयोग हो या नहीं हो, लेकिन हम उसे अपने काम में तो नही लेते। उसे उधार भी नहीं लेते।'

यह उत्तर सुनकर ताईजी चुप रह गईं। श्रीराम कुछ पल सोचते रहे। माताजी इस वार्तालाप में चुपचाप बैठी हुई थीं। कुछ पल की चुप्पी के बाद श्रीराम ने कहा, 'अपना यह प्रेस है न। इसे बेच दिया जाए। साल दो साल में फिर खरीद लेंगे। पत्रिका और पुस्तकें किसी दूसरे प्रेस में छपवा लिया करेंगे।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'लेकिन इससे भी छह हजार रुपए कहां बनेंगे,' ताई जी ने कहा। श्रीराम का विचार था कि डेढ़ दो हजार रुपए तो मिल ही जाएगे। बाकी इंतजाम के लिए कुछ और उपाय सोचा जाए।'

कुछ और उपाय शब्द सुनते ही माताजी ने कहा, 'मेरे आभूषण बेचे जा सकते हैं। वे किस दिन काम आएंगे।'

माताजी के पास कर्णफूल, गले का हार, हंसुली, करधनी, हाथ में कंगन आदि आभूषण थे। हिसाब लगाकर देखा तो प्रेस और आभूषण बेचने से मिलने वाली रकम छह हजार से कुछ ज्यादा बैठती थी। माताजी ने कहा, 'आभूषणों से ही काम चल जाता हो तो प्रेस को रहने दीजिए साहब। वह मशीन है। कुछ दिन भी नहीं रही तो अड़चन होगी। जेवरों का क्या है ? आते जाते रहेंगे।'

इस पारिवारिक गोष्ठी के बाद श्रीराम के चित्त से एक व्यवस्था का तनाव फिलहाल खत्म सा हो गया था। तपोभूमि के लिए जमीन की बातचीत चलाना थी। सहस्त्रांशु ब्रह्मयज्ञ का जो स्वरूप निश्चित हुआ, वह छपने के लिए पत्नों पर उतारा गया। गायत्री परिवार का विधिवत गठन होने जा रहा था। पत्रिका में छापने के साथ ब्रह्मयज्ञ का विवरण अलग डाक से भेजने का निश्चय भी किया गया। हाथ से लिखे संदेश को शीर्षक लगाकर, संपादित कर श्रीराम ने पूजा कक्ष में रख दिया। वेदी पर जहां अखंड दीपक स्थापित था, वहां संदेश की प्रति रख दी। अगले दिन वह प्रेस में जाना थी।

केसर के छींटे

जनवरी की ही कोई तारीख थी। वसंत पंचमी के आसपास का दिन रहा होगा। ब्रह्मयज्ञ के विवरण वाली प्रति रात भर पूजा कक्ष में रखी रही। सुबह उठ कर देखा। उस प्रति पर केसर के छींटे थे। माताजी इस दिव्य स्वीकृति की पहली साक्षी थीं। श्रीराम तो उठकर स्नानादि के लिए चले गए थे। माताजी इस बीच साधना कक्ष की सफाई करती थीं। संध्यावंदन के पंचपात्रों को संभालना भी अपने जिम्मे लिया हुआ था। ब्रह्मयज्ञ के संदेश पर केसर का छिड़काव देखकर वे चौंकी नहीं। देखकर उन्होंने ध्यान तो दिया था लेकिन समझा कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शायद कागज की बनावट ही ऐसी हो या पूजा प्रतिष्ठा के समय श्रीराम ने शुभाशंसा के रूप में कुछ छिड़क दिया हो।

स्नानादि से निवृत्त होकर श्रीराम ने भी संदेश पर केसर की छाप देखी। उन्होंने माताजी से इस बारे में पूछा। दोनों को अब जाकर स्पष्ट हुआ कि यह गायत्री माता का अनुग्रह है। लेकिन श्रीराम ने इस बारे में किसी को कुछ बताने से मना कर दिया। उनका विचार था कि इस घटना की सूचना फैली तो लोग चमत्कार और अलौकिक घटनाओं के जाल जंजाल में उलझ जाएंगे।

केसर का रंग श्रीराम की दृष्टि में पवित्रता और तेज का समन्वित प्रतीक था। उस दिन की उपासना के बाद श्रीराम ने वह संदेश कंपोज होने के लिए भेज दिया। 'अखंड ज्योति' में छपने के लिए अभी समय था। मार्च १९५२ के अंक में ही वह प्रकाशित हो रहा था। श्रीराम ने अनुभव किया कि तब तक परिजनों को इस संदेश से वंचित नहीं रखना चाहिए। उन्होंने कंपोज हुई सामग्री को परिपत्र के रूप में अलग से तैयार कराया। उसे डाक से भेज दिया।

गायत्री तपोभूमि की स्थापना अगले वर्ष गायत्री जयंती पर होनी थी। तब तक 'सहस्रांशु ब्रह्मयज्ञ' अनुष्ठान चलना था। अनुष्ठान का स्वरूप विराट था। परिजनों से प्रतिदिन गायत्री मंत्र की दस मालाएँ जप करने के लिए कहा गया था। यह जप समवेत रूप से सवा करोड़ के आसपास बैठता था। किसी साधना अनुष्ठान में जप संख्या के दसवें भाग के बराबर आहुतियों का हवन किया जाता है। अगले वर्ष गायत्री जयंती तक जगह जगह यज्ञ, हवन का दायित्व भी परिजनों को सौंपा गया। उच्चस्तरीय साधनाओं के साथ उपवास और सत्कार्य के प्रचार-ज्ञानयज्ञ के कर्मकाण्ड भी सम्मिलित होते हैं। यह अनुष्ठान पूरा होने के बाद गायत्री के सवा लाख नैष्ठिक साधक तैयार करने थे।

परिपत्र लोगों के पास पहुँचा। दस पंद्रह प्रतिशत लोगों ने उत्साह दिखाया था। कुछ ने इस योजना का विरोध भी किया। उनके अनुसार गायत्री मंत्र की उपासना हर किसी को नहीं करनी चाहिए। श्रीराम ने अपने परिपत्र में यह बात स्पष्ट कर दी थी कि गायत्री जप के लिए जाति, वर्ण या वंश विशेष का व्यक्ति होना आवश्यक नहीं है। सात्विक रहन सहन वाला कोई भी व्यक्ति गायत्री मंत्र का जप कर सकता है। इस प्रतिपादन का विरोध करते हुए भी उनके पास कुछ पत्र आए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मथुरा के कन्या इन्टर कालेज में एक अवसर पर उनका मुखर विरोध हुआ। उस दिन स्वाधीनता दिवस मनाया जा रहा था। नगर के गणमान्य व्यक्तियों को सभा समारोह में आमंत्रित किया गया। उद्‌बोधन देने वालों की सूची में श्रीराम का नाम भी था। उन्हें मंच पर बैठा देखकर एक विद्वान पंडित ने अपने व्याख्यान को अलग ही मोड़ दिया। स्वाभाविक तो यही था कि स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित समारोह में उस अवसर की महत्ता और नागरिकों के दायित्व की चर्चा होती।

उन विद्वान ने जिनका नाम वल्लभ पांडेय था, स्वतंत्रता का एक अलग अर्थ में जिक्र किया। उन्होंने कहा, 'हम स्वतंत्र हो गये है लेकिन कुछ विद्या अभिमानी इस स्वतंत्रता का मनमाना अर्थ करने लगे हैं। वे वेदशास्त्र, गायत्री मंत्र और यज्ञ जैसी मर्यादा वाले विधि विधानों को सबके लिए सुलभ कराने की वकालत करने लगे हैं। यह स्वतंत्रता नहीं, स्वच्छंदता है। विद्वान मनीषियों को इस तरह की स्वच्छंदता पर रोक लगाना चाहिए।'

वहां उपस्थित विद्वानों को सहज ही पता चल गया कि संकेत किधर है? श्रीराम को इस अवसर की चुनौतियां परोक्ष रूप से मिलती रही थीं। पत्रों से और संदेश वाहकों के माध्यम से दूसरे विद्वान खासकर परंपरावादी विद्वान उलाहना भेजते रहते थे। श्रीराम भी उनका यथोचित उत्तर देते। विवाद से बचने के लिए कई बार चुप्पी भी लगा जाते लेकिन यहां स्थिति अलग ही थी। वल्लभ पांडेय ने अपनी बात पूरी की तो मनीराम शर्मा उठ खड़े हो गए। उन्होंने भी वही धुन बजाना शुरू की। उनका भाषण पूरा हुआ।

एकाध वक्ता और बोले होंगे। उन्होंने किसी और विषय पर अपने विचार व्यक्त किए थे। पूर्ववर्ती दो वक्ताओं ने जितनी भी कडुआहट उडेली थी, उसका प्रभाव वातावरण में दिखाई देने लगा था। श्रोताओं में हर किसी की आंख श्रीराम पर टिकी हुई थी। कुछ नजरों में जवाब की मांग स्पष्ट झलकती दिखाई दे रही थी। कुछ नजरें उन्हें अपराधी की तरह भी देख रही थीं। संयोजक रामाधार द्विवेदी ने पंडित श्रीराम का नाम लेकर पुकारा कि वे अपने विचार व्यक्त करें।

श्रीराम धीर उदात्त भाव से अपने स्थान पर खड़े हुए। वहां से थोड़ा आगे आये और बोलना शुरू किया। उनके व्याख्यान में शास्त्रीय उद्धरण देते हुए कहा गया था कि गायत्री मंत्र में हर उस व्यक्ति का अधिकार है, जिसने ऋषि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सत्ता को अपने पथ प्रदर्शक के रूप में चुना हो और जो यज्ञ परंपरा को त्याग बलिदान को अपने आदर्श के रूप में अंगीकार करता हो। कर्मकांड का जहां तक प्रश्न है, मनु ,याज्ञवल्क्य, आपस्तंब आदि स्मृतिकारों ने विधान किया है कि तीन दिन तक संध्या गायत्री नहीं करने वाला ब्राह्मण भी अपने धर्म से पतित हो जाता है। उसे 'व्रात्य संज्ञक' कहते हैं। ऐसे व्यक्ति के लिए प्रायश्चित और दोबारा उपनयन का विधान है।'

श्रीराम ने कहा कि जिन्हें हम आज शूद्र कहते हैं, उन्हीं के पूर्वजों द्वारा वेदमंत्रों की रचना और वैदिक विद्याओं की शिक्षा के उल्लेख मिलते हैं। छांदोग्य उपनिषद में कथा आती है कि गाड़ीवान रैक्व ने जानश्रुति को वेद पढ़ाया था। आज की परिभाषा के अनुसार गाड़ीवान शूद्र ही होते हैं। ऋषि महीधर ने ऐतरेय ब्राह्मण पर भाष्य की रचना की। वे शूद्र परिवार में जन्मे थे। सायण ने अपने भाष्य में स्पष्ट कहा है कि वे इतरा नामक दासी के पुत्र थे, ऐलुष नामक ऋषि ने ऋग्वेद के दशम मंडल में कई मंत्रों की रचना की। महाऐतरेय उपनिषद के अनुसार कावषेय जाति के लोग यज्ञों के आध्यात्मिक रहस्य पर प्रवचन दिया करते थे। ये लोग दासीपुत्र थे और शूद्र कहे जाते थे। भरद्वाज और कात्यायन श्रौत सूत्रों के उद्धरण देकर श्रीराम ने कहा कि इनमें यज्ञ का अधिकार हर उस व्यक्ति को दिया गया है जो उसके लिए तत्पर है। वेदों में राजा सुदास का उल्लेख आया है। वे शास्त्रों के मर्मज्ञ रूप में विख्यात थे और शूद्र परिवार से आये थे। वैदिक परंपरा के अनुसार वे राजर्षि विश्वामित्र के संरक्षक थे। उनका राज्याभिषेक वसिष्ठ ऋषि ने किया था। इतना कहकर उनने स्वतंत्रता दिवस पर जो वास्तविक विषय था, उस पर अपने विचार व्यक्त किए।

शास्त्रार्थ की चुनौती

श्रीराम के विद्वत्ता पूर्ण भाषण को सुनकर आक्षेप करने वाले दोनों वक्ता चुपचाप खिसक गए। संयोजक की निगाहें उन्हें ढूंढ़ती रही। पंडित रामाधार द्विवेदी ने समारोह के बाद कहा कि वे इन पंडितों को उत्तर देने के लिए बुलाना चाहते थे लेकिन उनका कहीं पता नहीं था। वहां उपस्थित विद्वानों ने श्रीराम के उद्बोधन की भूरि भूरि प्रशंसा की। व्याख्यान के बीच में कई बार तालियां बजीं।

श्रीराम ने अपनी बात पूरी करते हुए घोषणा की कि वे किसी भी विषय पर शास्त्रार्थ करने के लिए तैयार हैं। लोग पत्रों में, चर्चाओं, संवादों और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भाषणों में हमारे काम की आलोचना करते हैं। गायत्री महाविद्या में महिलाओं और अंत्यजों के अधिकार की बात पर हमारी निंदा करते हैं। कोई बात नहीं। हमारे समाज ने और इतिहास ने रैदास, कबीर, दादू, नानक, मीरा जैसे ब्राह्मणेत्तर भक्तों को संत के रूप में प्रतिष्ठित किया था, गायत्री मंत्र के द्रष्टा ऋषि विश्वामित्र ब्राह्मण पंडित नहीं थे। उस परंपरा में होने के कारण मुझे ब्राह्मण विरोधी बताया जाए या किसी भी जाति का निरूपित किया जाए, कोई चिंता नहीं है। मुझे अपने देश की किसी भी जाति का होने में सदा गर्व रहेगा। शास्त्रार्थ की चुनौती का जहां तक सवाल है, वह मुझे हमेशा स्वीकार है। लेकिन उसकी कोई परिणति भी होनी चाहिए। शास्त्रार्थ वाक् वितंडा तक ही नही रहे। परास्त होने वाला व्यक्ति अपना मत और मार्ग भी बदले।

घोषणा पूरी गंभीरता से की गई थी। उसमें आवेग का भी पुट था। लगता था कि अभी कोई शास्त्रार्थ की चुनौती देता हुआ सामने आया तो श्रीराम उसे स्वीकार करते ही इन दोनों शर्तों को लागू करने वाले की नियुक्ति पर जोर देंगे। न्यायाधीश की नियुक्ति होते ही तुरंत शास्त्रार्थ करने लगेंगे। उनकी घोषणा सुनकर लोग सन्न रह गए। श्रीराम ने अपना स्थान ग्रहण करने से पहले एक ही वाक्य कहा कि वे अपने इस संकल्प पर हमेशा कायम रहेंगे और इन शर्तों पर किसी से भी कहीं भी शास्त्रार्थ के लिए तैयार हैं। यह चुनौती या शर्त सुनने के बाद वर्षों तक कोई विद्वान शास्त्रार्थ के लिए आगे नहीं आया। श्रीराम की यह चुनौती केवल मौखिक ही नहीं थी। अपनी पत्रिका में इसे विधिवत प्रकाशित किया था। बाद में अखबारों में भी चुनौती छपी। इस घटना के बाद किसी ने खुल कर आक्षेप नहीं किया। लोग दबे स्वर से आलोचना करते रहे। यहां वहां अफवाह फैलाते और तपोभूमि के लिए कोई सहयोग देने आता तो उसे बहकाते बरगलाते रहे।

पत्रिका और प्रचारक कार्यकर्त्ताओं के माध्यम से तपोभूमि की स्थापना का संदेश लोगों तक पहुंचने लगा था। एक वर्ष के लिए गायत्री यज्ञ अभियान की रूपरेखा तैयार की। इस अभियान का पहला यज्ञ आर्यसमाज चौक में हुआ। लगभग एक सप्ताह तक तैयारी की और मुश्किल से दस लोगों ने यज्ञ में भाग लेने की तैयारी दिखाई। मथुरा में पुराणपंथी ब्राह्मणों और अति सुधारवादी नेताओं के बीच में श्रीराम की स्थिति बड़ी अजीब थी। दोनों धाराएं एक दूसरे से भिन्न परस्पर विरोधी थीं। तात्विक दृष्टि से तो दोनों में विरोध नहीं था। ईश्वर की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सत्ता, वेदशास्त्रों का प्रामाण्य, कर्मफल और पुनर्जन्म में दोनों ही धाराओं का विश्वास था। लेकिन परंपराओं, रिवाजों और कर्मकांडों, को लेकर दोनों में घोर विरोध था। वैर विरोध के सामान्य नियम के अनुसार तो यह होना चाहिए कि दोनों ही श्रीराम को अपने साथ लेने की कोशिश करते। लेकिन वहां दोनों ही उनके विरोध में थे।

गीता जयंती का वह पर्व

संवत २००९ के मार्गशीर्ष मास का शुक्ल पक्ष था। तिथि एकादशी। गीता जयंती का दिन था। उस दिन दोपहर के समय मथुरा की तहसील में गायत्री तपोभूमि के लिए लिखा पढ़ी हुई। छह हजार रुपये चुकाने के बाद वह बगीची वेदमाता गायत्री के नाम हो गई। श्रीराम के साथ नारायण पंडित और श्यामलाल भी थे। उस तरफ से बगीची के मालिक हरीचंद और यह सौदा कराने वाले विनय पटेल। बगीची का स्थायित्व विधिवत कागजों पर गायत्री माता के नाम हस्तांतरित होने के बाद चारों पांचों ने एक दूसरे का मुंह मीठा कराया। उसके बाद एक बार बगीची गए। श्रीराम ने उस स्थान को देखा और साथ आये कार्यकर्ता से कहा 'आज गीता जयंती है। भगवान कृष्ण ने आज ही के दिन अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। इस स्थान पर गायत्री का वैधानिक अधिकार हो जाना भी एक अविस्मरणीय क्षण होगा।'

कुछ देर तक तपोभूमि की निर्माण योजना पर चर्चा करने और कुइयां के जल से आचमन आदि के बाद श्रीराम अखंड ज्योति की ओर रवाना हो गये। हलकी फुलकी सर्दी शुरु हो गई थी। धूप में तेजी घटने लगी थी। श्रीराम ने घर तक पैदल ही चलने का प्रस्ताव रखा। कहने लगे कि सुबह से ही रिक्शे वगैरह पर चल रहे हैं। अब थोड़ा टहलते हुए निकल जाएं।

चौक तक दोनों साथ आए। वहां से श्रीराम अकेले ही घियामंडी की ओर रवाना हुए। निवास की सीढ़ियां चढ़ते हुए ऊपर पहुंचे ही थे कि सामने ताईजी आती हुई दिखाई दीं। उन्हें प्रणाम किया और गायत्री मंदिर के लिए पक्की रजिस्ट्री हो जाने की सूचना दी। सूचना देते हुए श्रीराम ने देखा कि ताईजी का मुखमंडल पहले ही प्रसन्नता से दमक रहा है। उन्होंने कहा यह बहुत अच्छा हुआ। अब एक समाचार यहां का भी सुनो। घर में लक्ष्मी आई है। उन्होंने यह कहते हुए परिवार में कन्या के जन्म की सूचना दी थी। यह सूचना पाकर श्रीराम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ने मां के चरणों में एक बार फिर प्रणाम किया। प्रणाम के बाद वे उपासना कक्ष में गये। कुछ देर वहां रुककर परिवार में आये शिशु को देखने के लिए आ गये। उस समय शाम के पांच बज गये थे। शिशु को दूर से ही देखा और बाहर निकल आये।

कार्यालय में कुछ लोग प्रतीक्षा कर रहे थे। ये लोग गायत्री तपोभूमि की योजना पर विमर्श के लिए जयपुर से आए थे। अनुरोध कर रहे थे कि वह स्थान देखना चाहते है। वहां की वास्तु परीक्षा करेंगे और कुइयां का जल अपने यहां भी ले जाएंगे। जल ले जाने का उद्देश्य उसे अपने निवास पर प्रतिष्ठित करना था।

श्रीराम ने उन लोगों को स्वयं ही जाने के लिए कहा और यह भी कि आप वहां हो आयें चाहें तो सुबह हमारे साथ चलें। उन परिजनों ने अभी अकेले और सुबह श्रीराम के साथ चलने की तत्परता दिखाई। श्रीराम उन्हें सीढ़ियों तक छोड़ने गये और सायंकालीन संध्या की तैयारी करने लगे। उसी अवधि में उन्हें शिशु की याद आई। सुबह माताजी अपने स्वप्नों की चर्चा कर रही थीं। पहले भी वे इस तरह के स्वप्नों का उल्लेख कर चुकी थीं। उन स्वप्न दृश्यों में निर्जन प्रांत दिखाई देते हैं, कभी पर्वत और कभी नदीनद। प्रकृति के इन विभिन्न रूपों में कभी कभार मार्गदर्शक सत्ता के दर्शन भी होते थे।

एकाध बार अपने जन्मना इष्ट आराध्य भगवान शिव की झलक भी दिखाई दी। आज भी दिखाई दी थी। उन दृश्यों में कभी कभार बच्चों की किलकारियां सुनाई देती थीं। माताजी इन दृश्यों के संबंध में बताती तो श्रीराम कहते कि ये स्वप्न अपनी आंतरिक आध्यात्मिक स्थिति के प्रतीक हैं। परिवार में एक नये सदस्य को आना होता है तब भी मां की चेतना में कुछ बिंब प्रवेश कर जाते हैं। माताजी ने आज सुबह भी ऐसे एक स्वप्न की चर्चा की थी और श्रीराम ने कहा था कि आज गीता जयंती है। गायत्री तपोभूमि के लिए स्थान का प्रबंध हो जाना है। इसलिए भी यह सब कुछ अनुभव हो रहा होगा। प्रसन्न होना चाहिए।

सायंकालीन संध्या पूरी की तो तरंग उठी कि पूर्णिमा के दिन तपोभूमि का शिलान्यास कर लिया जाए। इसके बाद तपोभूमि का कार्य गति पकड़ने लगेगा। फिर यह भी ध्यान आया कि कन्या का नाम माताजी के प्रथम इष्ट भगवान शिव या शिव परिवार को संबोधित करता हुआ होना चाहिए। ऐसा नाम जो शिवशंकर के अर्थ को भी या उन्हें इंगित करता हो।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ताईजी के मुंह से तीन चार नाम निकले शिवा, गौरी, पार्वती, शैलबाला। उसके बाद उन्होंने ही अंतिम नाम पर अपनी मोहर लगा दी। कहा शैलबाला ठीक रहेगा।

रात में सोने से पहले उन्होने शिलान्यास कार्यक्रम की रूपरेखा निश्चित कर ली। तपोभूमि पर एक यज्ञ करना है यहीं के कुछ कार्यकर्त्ताओं, मित्रों और स्वजनों को आमंत्रित करना है। सुबह से ही श्रीराम तीन दिन बाद होने वाले कार्यक्रम की तैयारी में जुट गए। उस आयोजन को भूमिपूजन का नाम दिया था। शिलान्यास के रूप में पहली ईंट ताईजी के हाथों रखवाई। वृंदावन के एक संत स्वामी शरणानंद भी उस समय उपस्थित थे। उस कार्यक्रम में भी अगली योजनाओं की चर्चा चली। निर्माण को गति देने और लोगों से सहयोग जुटाने की योजनाओं पर विचार हुआ।

तपोभूमि के लिए नियत हुई जगह पर यह विचार चल रहा था। बाहर कुछ विरोधी उन चर्चाओं पर कान लगाये हुए थे। वे अपनी रणनीति बना रहे थे। सहयोग जुटाने के लिए जगह-जगह यज्ञ अग्निहोत्र करने और गोष्ठियों में अपनी बात करने का निश्चय हुआ तो विरोधी भी सक्रिय हुए। उन लोगों में आर्यसमाजी, सनातनी और आधुनिक मतवादी सभी तरह के लोग थे। मतवादियों की संख्या कम थी। धार्मिक क्षेत्र में काम करने वाले लोग ही ज्यादा थे।

अपकार्य का उत्तर

प्रचारक तपोभूमि के लिए सहयोग आदि की अपील लेकर निकलने लगे तो कुछ विरोधी उनसे भी ज्यादा सक्रिय हुए। वे उनके पीछे पीछे जाते। उनके संदेश से विरुद्ध बातें कहते। श्रीराम की प्रणीत गायत्री उपासना को वेद विरुद्ध बताते। यह भी कि जो उस पद्धति का अवलंबन लेता है, उसके चित्त में रजस और तमस के भाव जागते हैं। गायत्री वेदमंत्र है। श्रीराम उसे देवी के रूप में बता रहे हैं। इससे व्यक्ति का आध्यात्मिक अपकर्म होता है आदि आदि। इस तरह के प्रतिपादनों का जवाब देने के लिए ही श्रीराम ने शायद आर्यसमाज चौक में गायत्री यज्ञ का आयोजन किया था।

कोशिश करने के बाद दस साधक जुट पाए। यह संख्या खास नहीं थी। घरेलू आयोजनों में इससे ज्यादा लोग इकट्ठे हो जाते हैं। साथी सहयोगियों को लग रहा था कि कार्यक्रम विफल जा रहा है। श्रीराम का मानना इससे उलट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

था। वे उत्साहित थे। यज्ञ में दस नए लोग भी आ रहे हैं तो बहुत है। आज दस आये हैं, कल पंद्रह भी आ सकते हैं, आगे चलकर सौ, हजार भी आएंगे।

इस तरह की बातें सुनकर श्रीराम के सहयोगी मधुसूदन ने कहा, 'आप कुछ ज्यादा ही उत्साहित लग रहे हैं। यह भी हो सकता है कि कल दस लोग भी नहीं आएं।'

श्रीराम ने इसका उत्तर दिया कि हम निराशावादी दृष्टि से ही क्यों सोचे। यह बिलकुल संभव है कि दस में से एक लोग भी नहीं आए। लेकिन जीवन इसका नाम नहीं है। जीवन सिर्फ एक आती और जाती सांस पर निर्भर है। जाती हुई सांस के बाद आने वाली सांस का कोई भरोसा नहीं है। फिर भी लोग सांसों के आते रहने की उम्मीद करते हैं। उसी आधार पर पूरे जीवन की योजनाएं बनाते हैं। इस यज्ञ के बारे में भी मैं इसी तरह सोचता हूँ। जीवन यज्ञ की तरह इस आयोजन के भी भविष्य में फलने फूलने की आशा है।'

मधुसूदन के साथ कुछ और कार्यकर्त्ता भी वहां बैठे थे। वे श्रीराम की बात सुनकर प्रफुल्ल भाव से देखने लगे, जैसे कोई मूल्यवान निधि मिल गई हो। मधुसूदन ने कहा भी कि हम लोगों के और आपके सोचने में यही तो फर्क है। आर्य समाज चौक पर १४ अप्रैल को यज्ञ हुआ। आरंभ होने तक उसमें आठ लोग ही पहुँच पाये। किसी ने उपहास उड़ाने की कोशिश की, 'दो लोग और कम हो गए।'

श्रीराम ने उस बात का कोई जवाब नहीं दिया। चुपचाप यज्ञ आरंभ कर दिया। वे और मधुसूदन वेदी पर बैठे। शिखावंदन का मंत्र पढ़ा और सिर पर जल का अभिसिंचन किया। फिर पवित्रीकरण और आचमन। तीन क्रियाएं संपन्न कर श्रीराम रुके। उन्होंने कहा इन क्रियाओं के द्वारा हमने अपने मस्तिष्क, मन और अंत:करण के साथ शरीर को भी पवित्र किया है। भावना की है कि हम पवित्र हुए हैं। पूजा आराधना पवित्र भाव से ही होनी चाहिए। बिना नहाए धोए, स्वच्छ शुद्ध हुए जिस तरह हम मंदिर में नहीं जाते, उसी तरह मन और आत्मा भी शुद्ध शुचितर होना चाहिए। इन क्रियाओं का यही संदेश है। संदेश के साथ संस्कार भी।

यज्ञ के सभी कर्मकाण्डों की व्याख्या इसी तरह की गई। एक सौ आठ आहुतियों के उस यज्ञ में बारी-बारी से आठों लोग बैठे। आयोजन के बीच-बीच में लोग आते जाते रहे। करीब पचीस तीस लोग आये गये। कुछ देर बैठे और सुनकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बैठे ही रहे। इक्का दुक्का लोगों ने प्रतिक्रिया भी की—इस तरह के यज्ञ हों तो लोगों को धर्म, अध्यात्म और यज्ञ आदि कार्यों का संदेश समझाया जा सकता है।

एक और तरह की प्रतिक्रिया थी जो वैदिक परंपरा का दंभ भरने वालों की थी। इस तरह के लोगों में आर्यसमाजी विद्वान ज्यादा थे। उनका भी कहना था कि यह आयोजन विधि सम्मत नहीं है। वैदिक मर्यादाओं का उल्लंघन हुआ है। श्रीराम ने उन्हें आमने सामने तो कुछ नहीं कहा, एक अन्य आयोजन में उनका उत्तर दिया। यह समारोह घियामंडी के पास ही हुआ था। कार्यक्रम में आर्यसमाजियों के अलावा सनातन धर्मी भी थे। लेकिन श्रीराम ने यहां आर्यसमाजियों को ही लक्ष्य करके कहा, 'स्वामी दयानंद ने वेद शास्त्रों के प्रति आस्था को पुनर्जीवित किया। उनके विचारों से लोग सहमत असहमत हो सकते हैं लेकिन उनकी निष्ठा और सदाशयता के बारे में किसी को संदेह नहीं है। कदाचित वे आज जीवित होते तो हमारे प्रयत्नों की सराहना ही करते।'

श्रीराम ने अत्यंत विनय से कहा, 'सामाजिक विकृतियों और वंचनाओं को दूर करने के लिए स्वामी जी ने जैसे साहस और शौर्य का परिचय दिया वैसा हम तो शायद नहीं दे पा रहे हैं। लेकिन हम उन्हीं के पदचिह्नों पर चलने की कोशिश कर रहे है। उनके अनुयायी भाईयों से भी अपेक्षा करते है कि वे आलोचना और विरोध के लिए ही आलोचना विरोध नहीं करें। रचनात्मक और सुधारात्मक कार्यों में हमारा साथ दें।

इस संबोधन में श्रीराम ने आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की निश्छल आलोचना की थी। आलोचना को लोगों ने सराहा भी था और कोसा भी था। ऐसे लोग भी थे जिन्होंने उन प्रेरणाओं को ग्रहण करने का उत्साह दिखाया।

उद्योगपति संत की रुचि

समारोह संपन्न हुआ। बाद में आर्यसमाज के कुछ नैष्ठिक कार्यकर्त्ता श्रीराम के कार्यक्रमों से आ जुड़े। इनमें अवनीद्र त्यागी और पंडित सत्य प्रकाश आर्य ने गायत्री तपोभूमि की स्थापना के लिए अर्थ संचय का काम भी किया। तपोभूमि की उन्हीं दिनों की घटना है। शिलान्यास के बाद तपोभूमि का निर्माण मंथर गति से आरंभ हो गया था। मंथर गति से इसलिए कि साधनों का अभाव था। जैसे-जैसे वे जुटते जाते निर्माण में लगा दिए जाते। उन दिनों आने डेढ़ आने (छह से दस पैसे) प्रतिदिन पर मजदूर मिलते थे। इससे दो गुना मजदूरी पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

राजमिस्त्री। मुश्किल से बीस पचीस रुपए रोज का खर्च था। ईंट, गारा, सीमेंट पानी का रोजमर्रा का प्रबंध भी इतने ही रुपयों में हो जाता। कोई बहुत बड़ी राशि नहीं थी लेकिन इसके लिए भी उद्यम करना पड़ता था, समय पर प्रबंध नहीं होता तो काम रोक देना पड़ता।

इधर कुछ वर्ष पहले दो फर्लांग की दूरी पर भव्य बिड़ला मंदिर बन कर तैयार हुआ था। वृंदावन रोड पर बना यह मंदिर मथुरा के दर्शनीय स्थानों में है। पर्यटक गाइड अब इसे ऐतिहासिक महत्व का भी बताने लगे हैं। दूसरी दिशा में श्रीकृष्ण जन्म स्थान का निर्माण द्रुतगति से हुआ था और उसके विस्तार की प्रक्रिया अभी चल ही रही थी। इन दोनों संस्थानों के निर्माण में साधनों का अभाव जरा भी आड़े नहीं आया था। गायत्री तपोभूमि का निर्माण साधनों की कमी से उनके विकास की तुलना में रेंगता हुआ सा चल रहा था।

बिड़ला मंदिर की व्यवस्था देखने के लिए उस उद्योग समूह के प्रमुख अक्सर आया जाया करते थे। इस परिवार के अग्रज राजा जुगलकिशोर बिड़ला तो अपना पूरा समय ही धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यों मे लगा रहे थे। राजस्थान के झुंझुनू जिले के पिलानी गांव से निकले बिड़ला परिवार को धार्मिक संस्कार जैसे विरासत में मिले थे। राजा बलदेवदास के बड़े पुत्र जुगल किशोर बिरला के व्यापार व्यवसाय में रहते हुए भी पूरी तरह धर्म कर्म में रम जाने की भी अनूठी कहानी है।

बीस साल की उम्र में जुगल किशोर बिड़ला ने कलकत्ता में 'बलदेवदास जुगलकिशोर' के नाम पहली फर्म खोली थी। यही फर्म बंबई और कलकत्ता में धीरे-धीरे विकसित होती हुई बिड़ला ब्रदर्स के नाम से दूसरे शहरों में भी विकसित हुई। देश विदेश में फैला आज का बिड़ला उद्योग समूह सन् १९०३ में स्थापित बलदेवदास जुगल किशोर फर्म का ही विस्तार है। ''बिड़ला ब्रदर्स' के नाम से विख्यात इस परिवार में जुगलकिशोर के अलावा तीन भाई और थे रामेश्वरदास, घनश्याम दास और ब्रजमोहन दास। बलदेव-जुगल फर्म से पहले राजा बलदेव दास ने बंबई में एक छोटी सी फर्म और शुरू की थी। वह धीमे-धीमे चल रही थी। जुगल किशोर के हाथ लगते ही उद्योग ने जैसे गति पकड़ ली। बहुत कम लोगों को पता होगा कि सेठ जुगलकिशोर को विद्यालय में जाने का अवसर नहीं मिला। इसकी चजह साधनों की कमी नहीं थी। राजा बलदेवदास स्वयं विद्यालय चलाते थे। लेकिन उनका मानना था कि व्यापारी को ज्यादा पढ़ा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिखा नहीं होना चाहिए। उतनी ही शिक्षा पर्याप्त है, जितनी व्यापार में आवश्यक हो। विद्वत्ता व्यापार में बाधक होती है।

पिता ने बालक को व्यापार करने लायक पढ़ाई के लिए मुनीम पन्नालाल को सौंप दिया। मुनीम ने ही उन्हें अक्षर ज्ञान कराया और गणित की शिक्षा दी। उनके भाई रामेश्वर दास और घनश्याम दास आदि को बिड़ला परिवार की स्थापित पाठशाला में पढ़ने का अवसर अवश्य मिला, लेकिन जुगलकिशोर ज्यादा नहीं पढ़ पाए। परिवार के लोगों में माता योगेश्वरी देवी का नाम मुख्य था। सेठ जुगल किशोर में धर्मनिष्ठा, सेवा और भक्तिभाव कुछ विशेष थे तो कारण पूर्व जन्मों के संस्कार भी रहे होंगे।

सेठ जुगल किशोर की आध्यात्मिकता और सेवा भावना के पीछे कुछ नैष्ठिक कारण भी थे। ग्यारह वर्ष की उम्र में उनका विवाह हो गया था। विवाह के बाद लोगों के मन में घर गृहस्थी के प्रति आसक्ति, अनुराग और लोभ मोह आदि के भाव आ जाते हैं। जुगल किशोर के मन में अलग ही प्रवृत्ति जगी। कहने लगे गृहस्थ तो एक तपोवन है। यह भगवान की ओर बढ़ते हुए आने वाला एक पड़ाव है। घर परिवार के सदस्यों की सेवा करते हुए गाँव और देश तक अपने आपे का विस्तार करना चाहिए।

पहली फर्म बनाते ही उन्होंने कलकत्ता में स्वामी विशुद्धानंद विद्यालय को मासिक अनुदान देना शुरू किया। सार्वजनिक क्षेत्र में बिड़ला परिवार का यह पहला सहयोग था। बाद में सेठ जुगलकिशोर ने विद्यालय के लिए स्थायी निधि के तौर पर दो लाख रुपए और इकट्ठे किए। विद्यालय के विकास के लिए तब महोमना मदनमोहन मालवीय जी ने भी पहल की थी। स्थायी निधि बन जाने तक सेठ जुगल किशोर की ओर से विद्यालय के लिए नियमित अनुदान आता रहा। अपने एक विश्वस्त सहयोगी रामदेव चोखानी को उन्होंने पूरे समय के लिए वहां नियुक्त कर दिया था।

सन् १९२९ में उनकी पत्नी का निधन हो गया। उस वज्रपात को अध्यात्म भाव से झेलते हुए सेठ जुगल किशोर ने अपना सारा समय धर्म संस्कृति और समाज सेवा में ही लगाने का निश्चय किया। परिवार के लोगों ने दोबारा विवाह की सलाह दी। इसके लिए मनाने की कोशिश भी की लेकिन सेठजी टस से मस नहीं हुए। उन्होंने अपने अनुज घनश्याम दास के पुत्र लक्ष्मी निवास को दत्तक पुत्र बनाया। अपने हिस्से का कारोबार उसे सिखाने सौंपने लगे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और अपना ध्यान धर्मकार्य में केन्द्रित करने लगे। अपने हिस्से की बहुत सी संपदा उन्होंने ट्रस्टों और धार्मिक संस्थाओं को दे दी। श्रीकृष्ण जन्म स्थान ट्रस्ट ऐसी ही स्थापनाओं में एक है जो बिड़ला जी के प्रयत्न और सहयोग से संपन्न हुई।

मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मस्थान का निर्माण लगभग पूरा हो चुका था। सौंदर्यीकरण और भागवत भवन के विकास का काम द्रुतगति से चल रहा था। उधर वृंदावन मार्ग पर गीता मंदिर का निर्माण भी हो चुका था। इस मंदिर को लोग बिड़ला मंदिर के नाम से ज्यादा जानते हैं।

मंदिर की व्यवस्था देखने और वृंदावन के दूसरे मंदिरों का दर्शन करने के निमित्त भी सेठ जी अक्सर जाया करते थे। आते जाते वे गायत्री तपोभूमि वाली जगह पर खुदाई, भराई और ईंट रोडियां आदि देखते। इन कामों की निगरानी करते हुए धोती कुर्ता पहने एक तेजस्वी तरुण को देखकर उनका मन आकर्षित होता। इच्छा होती कि ठहर कर देखें, पूछें कि यहाँ क्या हो रहा है लेकिन बिरला जी संकोच के कारण अपने मन की बात मन में ही दबाते हुए आगे बढ़ जाते।

आखिर रहा नहीं गया और उन्होंने अपने सचिव को भेज कर श्रीराम की देखरेख में चल रहे निर्माण का ब्यौरा मंगा ही लिया। सचिव ने लौट कर श्रीराम के बारे में विस्तार से बताया। चौबीस वर्ष तक गायत्री के चौबीस पुरश्चरण, जौ के आटे से बनी रोटी और गाय के दूध से बनी छाछ पर ही गुजा¯। दिन में एक बार भोजन करने का 'एकाशन व्रत', साहित्य सृजन, धर्म प्रचार ओर बीच-बीच में राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने की सूचना ने जुगल किशोर जी को अभिभूत कर दिया।

वे राम, कृष्ण, शिव, शक्ति, योग, वेदांत आदि के नाम पर तो ऐसे कई संस्थान और आश्रम आदि देखते रहते थे। वैदिक और सनातन धर्म के नाम पर कई संस्थाओं के बारे में जानकारी थी। गायत्री के नाम पर बनने वाला संस्थान पहली बार सुना था। उसकी स्थापना से जुड़े श्रीराम के बारे में भी सुना तो उत्कंठा और प्रबल हुई। उन्होंने श्रीराम के पास स्वयं ही जाने और अपना सहयोग प्रस्तुत करने का फैसला कर लिया।

अनुग्रह की प्रतीक्षा

तपोभूमि स्थल पर बिड़ला जी का आना अचानक ही था। नींव की खुदाई और सफाई आदि का काम चल रहा था। श्रीराम सड़क से लगी हुई बाड़

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के पास कुर्सी पर बैठे थे। सामने तिपाई पर एक गत्ता और उस पर क्लिप किए हुए कागज थे। वे कुछ लिखने की तैयारी में थे या लिख ही रहे थे और बीच में रुक गये थे। तिपाई पर कागज कलमें और संदर्भ नोट्स रखे हुये थे। बिड़ला जी के आने से कुछ ही मिनट पहले सूचना मिली और श्रीराम ने केदार नाथ सिंह को बुलाकर कुर्सी वगैरह ठीक से लगवाई। यहाँ वहाँ बिखरी ईंटें और रोडी हटवाई।

बिड़ला जी आये। सामान्य शिष्टाचार के बाद वे संस्थान और उसकी जरूरतों के बारे में पूछने लगे। श्रीराम ने अपने पूर्व जीवन और वर्तमान गतिविधियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी देते हुए आगे की योजनाओं के बारे में बताया। करीब तीस मिनट तक श्रीराम बताते रहे। बिड़ला जी बीच-बीच में कुछ पूछते जाते थे। श्रीराम की बात पूरी होने पर वे अच्छी तरह समझ गए कि यह संस्थान गायत्री मंत्र के माध्यम से सनातन धर्म की मीमांसा और साधना का केन्द्र बनने जा रहा है।

सेठ जी ने पूछा, 'इस संस्थान के लिए आपने कितना खर्च करने की ठानी है।'

'जैसे-जैसे साधन आते जाएंगे और ईश्वर चाहेगा वैसे वैसे खर्च होता जाएगा। कोई बजट तय नहीं किया है। इस तरह के काम बजट तय करके पूरे भी नहीं होते,' श्रीराम ने कहा।

सेठ जी ने पूछा, 'अभी आपकी योजना मंदिर, यज्ञशाला, कार्यालय और कुछ कमरे बनाने की है। उसके खर्च का अनुमान तो किया ही होगा।'

सेठजी का आशय स्पष्ट नहीं हो रहा था कि वे क्या जानना चाहते हैं। श्रीराम ने कहा, 'सचमुच कोई कल्पना नहीं की है। भगवान ने चाहा तो यह वर्तमान योजना से सौ गुना ज्यादा भी फैल सकता है और उसे मंजूर नहीं हुआ तो जो बन रहा है वह भी ध्वस्त हो जाए।'

उन्होंने स्पष्ट किया कि यह कोई परियोजना नहीं है, जिसकी निश्चित लागत हो। लोगों के सहयोग और अंशदान से संपन्न होने वाली दीर्घकालिक योजना है। इसके उद्देश्य भी भिन्न हैं। हम इस कामना से प्रयत्न कर रहे हैं कि परमात्मा का अनुग्रह पृथ्वी पर सघन रूप में प्रकट हो। संसार और समाज पहले की तुलना में ज्यादा शुद्ध सात्विक बने। देवत्व की भावना का विकास हो और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लगे कि हम भगवान के चुने हुए देश में निवास कर रहे हैं, जहां उसने तेईस बार स्वयं शरीर धारण किया और हजारों बार अपनी विभूतियों को प्रकट किया।'

सेठ जी ने कहा, 'आपने सनातन धर्म का सही रहस्य समझा है। लेकिन हमारा यह धर्म सभी लोगों को आराधना उपासना की अनुमति नहीं देता। वैदिक मंत्रों और गायत्री उपासना के संबंध में तो स्पष्ट निषेध है। श्रीकृष्ण जन्मस्थान ट्रस्ट में शामिल कई संत महात्मा भी इन विधि निषेधों को सही और शास्त्र सम्मत मानते हैं। आपकी क्या राय है?'

सबका और सबके लिए

श्रीराम ने कहा, 'भगवान को स्थान विशेष या प्रतिमा में ही सीमित मानने और कुछ खास लोगों के छूने से पवित्र अपवित्र होने की मान्यता से मैं सहमत नहीं हूँ। ईश्वर उसे चाहने वाले हर व्यक्ति का है और नहीं चाहने वाले का भी है। ईश्वरीय प्रेरणाओं से विरुद्ध काम करने वाले असुरों का भी वह कल्याण करता है। हम इस मान्यता के समर्थक हैं कि ईश्वर की उपासना, आराधना का अधिकार हर व्यक्ति को है। गायत्री मंत्र की आराधना सभी कोई कर सकते हैं। हिंदू भी और गैर हिंदू भी। आचार शुद्ध सात्विक होना चाहिए।'

कुछ रुक कर उन्होंने प्रति प्रश्न किया, 'आपकी मान्यता क्या है?'

सेठजी बोले 'मेरी आस्था तो यह है कि भगवान सर्वव्यापी है। वह प्रतिमा में भी है। अगर है तो उसे छूने से अपावन को भी पावन हो जाना चाहिए। वह किसी के छूने से अपवित्र क्यों होने लगा। अगर भगवान प्रतिमा में नहीं है तो फिर उसकी पवित्रता का ध्यान रखने की जरूरत ही क्या है?'

श्रीराम और सेठ जी में देर तक विभिन्न विषयों पर विचार विमर्श होता रहा। बातचीत में ही उन्होने पूछा कि गायत्री के संबंध में अपनी विशिष्ट मान्यताओं के कारण श्रीराम का विरोध सनातनियों और आर्यसमाजियों दोनों ने किया। इसका सामना कैसे किया जा सका? श्रीराम ने कहा कि हमने विरोध का सामना करने की कोशिश ही नहीं की। मुकाबला करने के बजाय बचकर निकल जाने में ही समझदारी मानी है। एकाध अवसरों पर लोगों ने घेरने की कोशिश की, शास्त्रार्थ की चुनौती दी तो यही निवेदन किया कि वह हो तो आखिरी बार ही हो। खुले मन से बातचीत हो। जो अपनी आस्था पर दृढ़ नहीं रह सके, वह अपने आपको बदले।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सेठजी हंसे। वे बहुत धीरे-धीरे बोलते थे। आर्यसमाज के संबंध में अपनी राय व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि यह अपने देश में आई विकृतियों के निराकरण का ही प्रयत्न था। वह अलग से चलाया गया कोई मत, संप्रदाय नहीं था। वेदादि शास्त्रों का पठन पाठन, संस्कृत और हिंदी भाषा का प्रचार, हिंदू संगठन, अंत्यजोद्धार,गुण कर्मों के अनुसार वर्ण की मान्यता, ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा, बाल विवाह का निषेध और ढकोसलों का विरोध। मेरी समझ में आर्यसमाज का यही स्वरूप था। आर्य समाजियों को इस तथ्य का ध्यान रखना चाहिए। वे ध्यान नहीं रखते हैं तो स्वामी दयानन्द के और वैदिक धर्म के सिद्धांतों की अवहेलना करते हैं।

लंबी चर्चा के बाद सेठजी अपने प्रस्थान बिंदु पर वापस आये। उस बिंदु पर जहां से चर्चा छिड़ी थी कि तपोभूमि की स्थापना में कितना खर्च आना है। उन्होंने बिना पूछे ही अपनी बात स्पष्ट की, 'आपके उद्देश्यों से मैं पूरी तरह सहमत हूँ। उन्हें प्राप्त करने में अपना योगदान भी प्रस्तुत करना चाहता हूँ। गायत्री तपोभूमि के संबंध में मैं भी कुछ जिम्मेदारी उठाना चाहता हूँ।'

श्रीराम उनकी बात ध्यान से सुन रहे थे। उन्होंने कहना जारी रखा, 'मैं आपकी तरह विद्वान तो नहीं हूँ। सामान्य पढ़ा लिखा वैश्य हूँ। आप मुझे तपोभूमि के निर्माण का जिम्मा सौंप दें। वह खर्च हमारा ट्रस्ट उठाए।'

सेठजी ने इसको तत्क्षण बाद अपना प्रस्ताव रख दिया। कहा कि 'आप इस पूरी परियोजना के लिए पचीस हजार रुपये तुरंत स्वीकार करें। इतनी ही राशि दस साल तक हर महीने देने का मैं संकल्प भी करता हूँ।'

श्रीराम ने सुना। कुछ देर चुप रहे। क्या करना है, यह सोचने के लिए नहीं ठहरे थे, शायद यह सोचने लगे थे कि अपनी बात कैसे कहें। सेठजी श्रीराम के मुंह की ओर देख रहे थे। उनके उत्तर की प्रतीक्षा में। श्रीराम ने उनके प्रस्ताव का उत्तर देते हुए उन्होंने पूछा, 'आप यह राशि कहाँ से लाएंगे।'

'भगवान देता है।' सेठजी ने कहा, 'वही भगवान के काम में लगा देता हूँ।'

श्रीराम ने सुनते ही कहा, 'तो फिर भगवान से हम सीधे ही ले लें तो वह ज्यादा उचित होगा। आप भगवान से लें और हमें दें। इससे अच्छा यही है कि हम भगवान से और जन-जन में बैठी भगवदसत्ता के अंश से यह मांग लें।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्रीराम ने अपनी बात को और स्पष्ट किया। कहा कि एकाध स्रोत से ही साधन जुटाने की बात होती तो हम अपनी पैतृक संपत्ति से संचित कर सकते थे लेकिन इस निर्माण में हजारों लोगों का सहयोग अपेक्षित है। समुद्र पर पुल बनाने के लिए असंख्य रीछ वानरों ने जैसे अपने आपको झोंक दिया था। गोवर्धन पर्वत उठाने के लिए जिस तरह ग्वाल बालों ने अपनी लाठियों का सहारा दिया उसी तरह यह निर्माण भी हजारों सामान्य लोगों के सहयोग से होना चाहिए। हमारी इस आस्था के चलते किसी एक व्यक्ति को पूरा दायित्व नहीं दे पाएंगे। आप अंशदान करना चाहें तो स्वागत है। वह कीजिए। बाकी काम यज्ञ अग्निहोत्र की तरह तमाम लोगों को करने दें।'

सेठ जी ने कहा, फिर तो मैं श्रमदान भी करना चाहूंगा। शरीर उसके लिए समर्थ नहीं है तो इतनी ही कृपा कीजिए कि पांच मजदूरों की दिहाड़ी नियमित रूप से स्वीकार करते रहें।

श्रीराम ने कोई उत्तर नहीं दिया। सेठजी ने अपने सचिव से इसके प्रबंध के लिए कहा। श्रीराम ने इसके बाद कहा कि बेहतर तो यही होगा कि आप स्वयं इस दायित्व को निभाए। स्वयं आकर अंश सहयोग देते रहें। वह ब्रह्मयज्ञ में दी हुई आहुति की तरह होगा। यज्ञभाग, पुण्य कार्य, तीर्थाटन, पूजा पाठ स्वयं ही करने चाहिए। उसके लिए कोई प्रतिनिधि नियुक्त नहीं किया जाए। यही अच्छा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चार

आचार्य देवो भव

बगीची में निर्माण कार्य चल रहा था। श्रीराम देवभूमि के सामने चहल कदमी करते घूम रहे थे। सुबह का वक्त था। रास्ते में सन्नाटा था। मथुरा वृंदावन के उस मार्ग पर दिन में भी ज्यादा चहल पहल नहीं रहती थी। गर्मी के दिन थे इसलिए लोग शाम के वक्त ही घोड़ा गाड़ियों में बैठकर या पैदल ही बगीचियों में हवाखोरी के लिए निकलते थे। लेकिन वह सुबह का समय था। आवाजाही नहीं के बराबर थी। गायत्री संस्थान के द्वार पर लगे लकड़ी के फाटक को ठेल कर एक साधु अचानक भीतर आ गया। उसने प्रवेश करते ही जोर से पुकारा, 'जय जय राधे।'

फिर दौड़ता हुआ सा श्रीराम के पास तक गया और उनके सामने दंडवत लेट गया। श्रीराम ने कहा, 'बाबाजी आप हमें पाप के भागी क्यों बनाते हैं? उठिए! हमारे लायक सेवा बताइए।'

कहते हुए उन्होंने साधु की बाहें पकड़ी और उठा कर खड़ा करने लगे। साधु उठ तो गया लेकिन खड़ा नहीं हुआ। बैठे बैठे ही उसने हाथ जोड़े और कहा, 'हमें अपने गुरु को प्रणाम करने दीजिए। शिष्य के प्रणाम करने से गुरु पाप का भागी कैसे बनता है?'

'कौन गुरु और कौन शिष्य? हम आपके गुरु कैसे हुए?' श्रीराम ने पूछा। इस पर साधु का जवाब था कि आप भले ही भूल रहे हों, हम अपने मार्गदर्शक को नहीं भूल सकते। याद कीजिए पचीस तीस साल पहले आप ब्रजधाम आए थे। अपने पिता के साथ। तब आपने एक भटकते हुए साधक की आंखें खोली थीं और मथुरा वृंदावन की रज में ही भगवान का दर्शन करने के लिए कहा था। उस दिन मेरी खोज पूरी हो गई। मुझे गोविंद मिल गए।

श्रीराम को बचपन की वह घटना याद आने लगी, जब वे अपने पिताजी और माँ के साथ पहली बार मथुरा आए थे। ननिहाल से लौटते हुए मथुरा से कुछ पहले एक गांव के बाहर मंदिर में थोड़ी देर के लिए रुके थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साधु के निवेदन में इतना आवेग था कि श्रीराम की स्मृति ने अपने द्वार तुरंत खोल दिए। उन्हें याद आया कि गोविन्द जी के मंदिर के बाहर ताई जी ने साधु को कुछ पूड़ियां खाने के लिए दी थीं और उन्होंने खुद भगवान को देखने के बारे में पूछा था। उत्तर देते हुए साधु निराश सा था और उन्होंने कहा था कि इसी भूमि पर भगवान मिलेंगे। वह क्षण उनकी पकड़ में आ गया था। उन्होंने साधु की ओर देखा। साधु उन्हें ही देखे जा रहा था। दृष्टि पड़ते ही साधु जैसे पुलकित हो उठा। बोला, 'याद आ गया भगवन।'

श्रीराम ने कहा, 'क्या नाम था उस गांव का?

ननिहाल से आते हुए उस समय श्रीराम अपने माता-पिता के साथ गांव के बाहर होते हुए निकले थे। साधु ने याद दिलाया 'महावन! ....महावन प्रभु।'

'अच्छा, ठीक है,' श्रीराम साधु का हाथ पकड़ कर उठाते हुए बोले, 'अब खड़े हो जाइए। वह बचपन की बात थी। कह दिया होगा या मुंह से निकल गया होगा। उससे कोई गुरु या वंदनीय हो जाता है क्या?'

'आप मुझे बहलाइये मत,' साधु ने कहा, 'मुझे गोविंदजी ने साक्षात बताया है कि आप ही मेरे गुरु हैं। आपने बोध नहीं कराया होता तो मैं न जाने कब तक भटकता रहता। दया कीजिए। मुझे स्वीकार करें।' यह कहकर साधु फिर झुकने लगा। श्रीराम ने कहा, 'अच्छा बाबा। मेरे मानने नहीं मानने से क्या होता है? आपने तो गुरु मान ही लिया है न। उठिए खड़े होइए। आपका शुभ नाम क्या है?'

साधु ने कहा, 'मेरा कोई नाम नहीं है। मैं इस संसार में प्रभु के मार्ग का एक पथिक हूँ। लोग मुझे पथिक कहते हैं।' इतना कह कर वह साधु खड़ा हो गया। फिर कहने लगा, 'गोविंद जी की ओर से मुझे एक प्रेरणा मिली है कि मैं आपको आचार्यश्री कह कर पुकारूं। उन्होंने कहा है कि भविष्य में पूरी दुनिया आपको इसी आदर भाव से पुकारेगी।'

फिर पथिक नामक वह साधु कुछ पल रुका और मुखरित हुआ, 'गोविंदजी के आदेश से ही शंकर, रामानुज, मध्व, निंबार्क, कुमारिल, रामानंद जैसे संतवृंदों को आचार्य कहा गया। उनके आचार और उपदेशों से मुमुक्षजनों ने अपने जीवन में प्रकाश प्राप्त किया।'

'अच्छा अच्छा अब रहने दीजिए' श्रीराम ने फिर टोका, 'अपने मन की बात बताइए। आप क्या कहना चाहते हैं।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'मेरी दक्षिणा स्वीकार कीजिए,' कह कर पथिक साधु ने अपनी पोथी में रखे रुपये दो रुपये के तीन चार नोट निकाले और श्रीराम को सौंप दिए। फिर बोला, 'इसके अलावा गोविंदजी के उस मंदिर की थोड़ी सी रज भी लाया हूँ, जिस पर लोटते हुए मैंने आपको पाया था। वह रज मंदिर के लिए काम आ रहे मसाले में छिड़कने दीजिए। कहते हुए साधु ने छोटी सी पोटली खोली और देखते ही देखते उसमें बंधी मिट्टी पास ही गूंथी हुई मिट्टी में मिला दी।'

'आचार्य प्रवर गुरुदेव को प्रणाम है,' कहते हुए पथिक स्वामी उठ खड़े हो गए। श्रीराम कुछ देर स्तब्ध से देखते रहे। फिर बोले, 'पथिक जी महाराज एक काम और करना।'

साधु की आंखों में उत्कंठा का भाव झलकने लगा। भाव जैसे कह रहे हों कि आदेश कीजिए। श्रीराम ने कहा, 'मंदिर के साथ हम कुछ महत्वपूर्ण स्थापनाएं भी कर रहे हैं ताकि यह तीर्थ के रूप में विकसित हो सके। हम यहाँ कई स्थापनाएं करेंगे। उनमें २४०० तीर्थों की स्थापना भी होगी। आप अगली बार आएं तो गोविंदजी के प्रांगण की रज और वहां का जल भी साथ लाए। मंदिर में उसकी प्रतिष्ठा करेंगे।'

साधु पथिक के चेहरे पर संतोष भरा उल्लास दिखाई दिया। लगा कि जैसे कोई महत्वपूर्ण काम सौंपा गया हो। गुरु ने कोई काम सौंपा है, यही अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण था। उन्होंने प्रणाम किया और साधु यह कहते हुए रवाना हो गया कि फिर मैं सबके सामने आपको गुरुदेव कह सकूंगा न। श्रीराम ने साधु की इस बात को स्मितभाव से लिया। कोई उत्तर नहीं दिया।

सहयोग और संकल्प

तपोभूमि का निर्माण तेजी से चल रहा था। लोगों का सहयोग मिल रहा था। उसे बटोरने के लिए गायत्री साधक सक्रिय थे। वे सहयोग राशि इकट्ठी कर रहे थे। पूरे संस्थान का निर्माण एक संपन्न विभूति द्वारा कराने की पेशकश से इनकार करने की घटना का ज्यादा लोगों को पता नहीं था। यह संवाद श्रीराम और बिड़लाजी के बीच तक ही सीमित था। लेकिन रीछ वानरों और गोप बालों के सहयोग से ही गायत्री संस्थान बनाने की बात वे अपने साथी सहयोगियों से करने लगे थे। इसके लिए पत्रों, आपसी चर्चाओं और गोष्ठियों में भी सावधान करने के निर्देशों या विधि निषेधों के कारण दस-पांच-पंद्रह और इक्कीस रुपये के अनुदानों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की झड़ी लगने लगी। लोगों ने एक-एक, दो-दो रुपए भी दिए। श्रीराम इन अनुदानों का उल्लेख गर्व से करते थे।

लखनऊ के एक संपन्न और प्रतिष्ठित परिवार ने तपोभूमि में अपनी ओर से कमरे बनवाने की पेशकश की। विलासराव नामक इन उद्योगपति का आग्रह था कि वे अपनी दिवंगत मातुश्री के स्मृति में कमरे बनवाएंगे। कमरों के बाहर किसी पट्टिका पर यह उल्लेख कर दिया जाए तो अच्छा रहे। श्रीराम ने स्पष्ट मना किया कि गायत्री तपोभूमि को किसी का स्मारक नहीं बनाना है। संस्थान भले ही साल भर की जगह दस साल में बन कर तैयार हो, लेकिन वह साधना और अध्यात्म शक्ति के केन्द्र के रूप में ही विकसित होगा। सहयोग जुटाने के लिए श्रीराम ने पत्रिका में सूचना दी। पत्रों द्वारा परिजनों से कहा और निजी चर्चाओं में भी लोगों को प्रेरित किया। लेकिन सहयोग के बदले नाम विज्ञापित करने को निरुत्साहित ही किया।

एक मजेदार प्रसंग और उन दिनों हुआ। बड़ोदरा के सेठ दीना भाई एक हजार रुपए लेकर आए। सन् १९५२ के मई जून महीनों की बात होगी। उनकी माँ का निधन हो गया था। उन्हें श्रीराम के संपर्क में आए दो ढाई साल हुए होंगे। दीनाभाई उन्हें गुरु की तरह मानते थे और वे भी मानने लगे थे कि मृत्युभोज वगैरह फिजूलखर्ची है। धन की बर्बादी है। उसे नहीं करना चाहिए। यदि दिवंगत आत्मा के लिए कुछ करने की इच्छा हो तो ऐसा काम करना चाहिए, जिससे लोगों का भला हो।

उनका अनुमान था कि मृत्युभोज में कम से कम एक हजार रुपए तो खर्च हो ही जाएगा। यह रकम किस काम में लगाई जाए? उन्होंने श्रीराम से पूछना और उनके अनुसार वहीं खर्च कर देना ठीक समझा। गायत्री तपोभूमि की भोजना तब तक प्रकाशित हो गई थी। उस पर अमल भी होने लगा था। दीनाभाई ने सोचा कि गायत्री मंदिर बनाने में यह रकम लगाने से ज्यादा अच्छा उपयोग क्या हो सकता है? इस भावना से वे मथुरा आए और सुबह आठ नौ बजे के लगभग घियामंडी स्थित आवास पर पहुँच गए। ट्रेन से उतरते ही उन्होंने गुरुगृह जाने की बात सोची थी लेकिन स्टेशन पर ही स्नानादि से निवृत्त हो गए। विचार आया था कि गुरु के पास आध्यात्मिक आश्रय ही ग्रहण करना चाहिए। वहाँ अतिथि नहीं बनना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गाड़ी आने के दो घंटे बाद 'अखंड ज्योति संस्थान' पहुँचे तो श्रीराम ने छूटते ही सवाल किया, 'इतनी देर कहां लगा दी?'

'स्टेशन पर ही रुक गया था,' दीना भाई ने कहा। श्रीराम ने डपटा, 'यहां घर नहीं था क्या? घर छोड़ कर स्टेशन पर ठहरना शोभा देता है?'

'गलती हो गई साहब,' दीना भाई ने कहा। यह वार्तालाप सुनकर माताजी रसोई से बाहर आ गई थी। श्रीराम ने कहा, 'मैने तो कुछ नहीं कहा। अब माताजी की फटकार सुनो।'

माताजी ने कहा, 'कोई फटकार नहीं है। नाश्ता करो। इस बार तो माफ कर दिया। आगे से कोई बहाना नहीं चलेगा, कहते कहते माताजी ने दीनाभाई को बैठ जाने के लिए कहा। थाली लगाई, दो परांठे और सब्जी परोसी। उसके बाद लस्सी पीने के लिए कहा। दीना भाई को लग रहा था कि भारी नाश्ता हो गया है। प्रातराश या भोजन के बाद वे श्रीराम के साथ ही तपोभूमि की ओर चल दिए। चलने से पहले उन्होंने श्रद्धांजलि के तौर पर लाए एक हजार रुपए माताजी को दे दिए। कारण पूछा तो कहा कि बाद में बता दूंगा। अभी गुरुजी के साथ जा रहा हूँ।'

रास्ते में दीनाभाई ने अपनी भावनाओं के बारे में बताया। मृत्युभोज का रुपया गायत्री मंदिर में लगाने की बात कही। सुनते ही श्रीराम ने कहा, 'पागल हो। श्राद्ध के रुपए को सेवा में ही लगाना चाहिए। मंदिर के काम में लगाना है तो उसके निमित्त अलग संकल्प करो। लेकिन अभी जो रुपया लाये हो उसे अनाथ विधवाओं की सेवा में ही लगाना। मथुरा वृंदावन में बहुत सी परित्यक्ताएं विधवाएं मारी मारी फिरती हैं। उनकी खबर लो तो तुम्हारी माँ की आत्मा को भी संतोष मिलेगा।'

दोपहर को श्रीराम वापस अखंड ज्योति संस्थान आए। माताजी के पास दीनाभाई की रखी हुई अमानत ली। उससे चावल, दाल, आटा, घी, तेल आदि सामान खरीदा। कुछ कपड़े भी खरीदे और मथुरा वृंदावन में भटक रही विधवाओं को वह सामान बंटवाया। यहां जिक्र करना जरूरी होगा कि वृंदावन में न जाने कब से विधवाएं बड़ी संख्या में रहती हैं। बंगाल, उत्तरप्रदेश, बिहार आदि प्रांतों में गांवों और कस्बों में स्त्रियां विधवा हो जाती हैं तो उनमें से कई को लोग वृंदावन आकर छोड़ जाते हैं। ससुराल में यातना मिलती है। उससे छुटकारा पाने के लिए भी स्त्रियां भाग कर यहाँ ठौर ठिकाना ढूंढने आ जाती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश की विधवाएं यहाँ बड़ी संख्या में हैं। उन लोगों में कृष्ण भक्ति का विशेष प्रचार होना शायद मुख्य वजह हो। खैर! श्रीराम ने दीना भाई से उन विधवाओं की सेवा सहायता कराई। जाते जाते वे मंदिर के लिए इक्यावन रुपए दे गए। क्षेत्र से अनुदान जुटाने का संकल्प भी लिया।

उस समय तपोभूमि का निर्माण शुरू नहीं हुआ था। निर्माण की योजना बनने लगी थी। सन् १९५३ की बात है। सोचा गया कि कुछ समय बाद ही निर्माण शुरू किया जाए क्योंकि तब पहले आम चुनाव की हलचल शुरू हो गई थी। मथुरा ही क्या पूरे देश का मानस अनुभव के एक नये दौर से गुजरने की तैयारी में जुटा हुआ था। उस तैयारी का निर्माण पर खास असर नहीं होना था। मजदूर मिलना थोड़ा कठिन था। लोग चुनाव प्रचार और उससे संबंधित दूसरे कामों में लग गए थे। मंच बनाने, प्रचार सामग्री ढोने और कार्यकर्त्ताओं के भोजन आदि की व्यवस्था में भी मजदूर लगे। वहां अच्छी मजदूरी मिलने की उम्मीद थी, इसलिए भी लोग उधर भाग रहे थे। संसदीय चुनाव पूरे देश में हो रहे थे इसलिए बाहर से मजदूर बुलाना भी मुश्किल था। इन दिनों श्रीराम ने लेखन और संपर्क पर विशेष जोर दिया।

चुनाव से परहेज

श्रीराम के मित्र जगन प्रसाद रावत उन दिनों मथुरा आये। उन्होंने यूं ही बातों-बातों में कहा, 'पंडित जी, आप भी चुनाव लड़िये।'

श्रीराम ने हँसकर बात टालने की कोशिश की। लेकिन रावत जी ने गंभीरता से कहा था। वे फिर बोले 'आप कांग्रेस के कार्यकर्त्ता रहे हैं। उसी मंच से आपको देश के निर्माण के लिए काम करना चाहिए।'

इस पर श्रीराम ने कहा, 'मेरे लिए महात्मा गांधी की बात अब भी आदर्श है। व्यक्तिगत रूप से उन्होंने मुझ से कहा था कि धर्मक्षेत्र में रहते हुए नये भारत के निर्माण के लिए कार्य करूं।'

रावतजी बोले कि कहा तो गांधी जी ने कांग्रेस के लिए भी था कि उसे राजनीति छोड़ देना चाहिए और वह समाज सुधार का काम करे लेकिन क्या उसने इस बात को माना? श्रीराम ने कहा 'मान लिया होता तो अच्छा होता। काँग्रेस जुझारू और लड़ाका लोगों का संगठन रहा है। वे लोग संघर्ष तो कर सकते हैं। लेकिन नवनिर्माण के लिए ज्यादा उपयुक्त नहीं है।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रावतजी ने कहा, 'शायद आप ठीक कहते हैं। पर हम लोगों ने अभी तक राजनीति में ही समय गुजारा है। उसे छोड़कर दूसरे क्षेत्र में नहीं जा सकते।'

श्रीराम ने कहा, 'चलिए हो गई बात। आप जिस तरह राजनीति नहीं छोड़ सकते, मैं भी उसी तरह धर्मक्षेत्र नहीं छोड़ सकता।'

रावतजी मुद्दे पर आये और बोले कि मेरे एक मित्र हैं लीलाधर पाण्डेय। यह आपके पास एक खास उद्देश्य से आये हैं। वृंदावन में कोई सिद्ध संत हों तो इन्हें मिलाइये। राजनीति में सफल होने की उत्कट लालसा है। उनके आशीर्वाद से इनकी इच्छा पूरी जो जाए शायद।'

श्रीराम ने कहा, 'इस क्षेत्र के साधु-संतों से मेरा विशेष परिचय नहीं है। दो-एक लोगों को जानता हूँ। जैसे देवरहा बाबा और बाबा नीम करौरी। लेकिन वे हमेशा यहाँ नहीं रहते हैं।' रावतजी ने पूछा कि, इन बाबाओं के बारे में आपके क्या विचार है। दोनों बड़े सिद्ध संत कहे जाते हैं।

श्रीराम ने कहा कि इनकी सिद्धियों को मैंने परखा तो नही है, लेकिन काफी लोग आते जाते हैं। रावत जी नीम करौरी बाबा के बारे में पूछने लगे। श्रीराम ने उनसे अपनी भेंट के बारे में बताया। वाराणसी के स्वामी विशुद्धानंद, महाअवतार बाबा, देवरहा बाबा आदि अलौकिक शक्तियों के कारण विख्यात संतों की तरह नीम करौरी बाबा के संबंध में भी लोगों को कई तरह के अनुभव हैं।

नीम करौरी बाबा से श्रीराम की भेंट प्रयाग में १९५१ में हुई थी। उस समय वह संगम के पास घूम रहे थे। महंतों व मण्डलेश्वरों जैसा कोई वैभव नहीं था। साधारण साधु-संन्यासियों की तरह घूमते हुए बाबा की निगाह श्रीराम पर पड़ गई थी। देखकर वे ठिठक गये थे। श्रीराम का ध्यान अचानक ही बाबा की ओर गया और उन्हें घूरते हुए पाया। लगा जैसे नाराज हों। श्रीराम ने उन्हें प्रणाम किया और कहा बाबा कोई अपराध हुआ है क्या? सुनते ही बाबा ने ठहाका लगाया। उनकी हंसी थमीं तो बोले, 'हां इस दुनिया में आने का अपराध हुआ है। तुम मुक्त आत्मा हो। यहाँ क्यों आये हो?' फिर स्वगत ही उत्तर दिया, 'आना पड़ता है। भगवान की मर्जी होती है।' बाबा ने श्रीराम के अतीत के बारे में कुछ भी नहीं कहा। उन्होंने पूछा, 'मेरे लायक कोई सेवा हो तो बताइये।' बाबा बोले,'सेवा हमारी नहीं अपने गुरु की करना। हमें तो किसी गुरु की कृपा पाने का सौभाग्य नहीं मिला, तुम्हारे गुरु विलक्षण हैं।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

फिर श्रीराम से उनकी साधना वगैरह के बारे में पूछने लगे। और भी कई विषयों पर बातचीत हुई जैसे अध्यात्म, गुह्य विद्या आदि। श्रीराम ने रावत जी को बताया कि बाबा भारत के उज्ज्वल भविष्य के बारे में बहुत आश्वस्त थे। उन्होंने कई उदाहरण, शास्त्र वचन और प्रमाण आदि देकर कहा कि भारत असाधारण तेजी से प्रगति करेगा। यहाँ की प्राचीन संस्कृति उभरेगी। भारत की संस्कृति से समूचा विश्व प्रकाशित होगा। हम लोग व्यवस्थाएं और शासन प्रबन्ध भले ही पश्चिमी देशों से सीखें, लेकिन आधुनिक व्यवस्था भी धीरे धीरे अपने ऋषि मुनियों के आदर्शो के अनुरूप मुड़ेगी, आकार लेगी।

असल चमत्कार

श्रीराम ने रावतजी से उनकी कुछ चमत्कारिक घटनाओं का जिक्र किया। फिर कहने लगे इन चमत्कारों से मैं प्रभावित नहीं हूँ। बाबा की आध्यात्मिकता का अनुभव मैंने कुछ और तरह से किया है। रावत जी ने उस विषय को थोड़ा और आगे बढ़ाया तो श्रीराम ने कहा कि किसी भी योगी या सिद्ध संत के तेज का अनुभव उसकी विलक्षणताओं से नहीं होता। चमत्कार तो राह में खिलने वाले फूल की तरह हैं जो भगवान के मंदिर की ओर जाते हुए कई जगह लगे दिखाई दे जाऐंगे। उन फूलों को देखने या चुनने में उलझ जायें तो ईश्वर की यह यात्रा रुक जाऐगी। नीम करौरी या देवरहा बाबा ने मेरे देखे अपनी यात्रा निरन्तर जारी रखी। क्योंकि उनके सान्निध्य में किसी भी व्यक्ति को आत्मिक क्षेत्र में ऊपर उठने की प्रेरणा मिलती है। लगता है जैसे कोई शक्ति ऊपर सूर्य की दिशा में खींच रही है।

स्वतन्त्रता आंदोलन के दिनों में श्रीराम का कांग्रेस से घनिष्ठ सम्बन्ध था। एक तरह से उसके कार्यकर्त्ता ही थे। लेकिन आजादी के बाद उन्होंने कांग्रेस के कार्यक्रमों में भाग लेना बन्द कर दिया था। १५ अगस्त या २६ जनवरी को झंडावंदन आदि कार्यक्रमों में उन्हें निमंत्रित किया जाता था। श्रीराम उन कार्यक्रमों में प्राय: नहीं जाते थे। अलबत्ता वह अपने घर में तिरंगा जरूर फहराते थे। गायत्री परिवार के कुछ कार्यकर्त्ताओं के साथ भारत माता की पूजा भी करते थे। लेकिन पार्टी कार्यक्रमों में शामिल नहीं होते थे।

तब भारतीय जनसंघ के नाम से एक नई राजनैतिक पार्टी का गठन भी हो गया था। राष्ट्रीय सरकार में केन्द्रीय मंत्री रहे डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बनाई इस पार्टी की राय में कांग्रेस भारत विभाजन की गुनाहगार थी। कांग्रेस ने यदि थोड़ा दृढ़ता का परिचय दिया होता तो शायद विभाजन टल जाता। डॉ० मुखर्जी और उनके सहयोगी इस आस्था से प्रेरित थे कि भारत फिर एक होगा। विभाजन अस्थाई है और एक दिन आयेगा जब अखण्ड भारत की स्थापना होगी।

जनसंघ की विचारधारा भारतीय संस्कृति, राष्ट्रवाद और अखण्ड भारत को केन्द्र में रखते हुए बुनी गई थी। धर्म संस्कृति से वास्ता रखने वाले विद्वान साधु संत और कांग्रेस से रुष्ट व्यापारी व्यवसायी भी इस पार्टी का समर्थन कर रहे थे। मथुरा में भी जनसंघ की शाखा खुली। बलवन्त चौबे उसके कर्त्ताधर्ता थे। वह श्रीराम की पृष्ठभूमि से अच्छी तरह परिचित थे। यह भी जानते थे कि श्रीराम आजकल कांग्रेस की गतिविधियों में कोई रुचि नहीं लेते हैं। उनका ध्यान धर्म धारणा पर ही ज्यादा है। पता नहीं क्यों उन्हें लगा कि श्रीराम के मन में जनसंघ के प्रति राग जगाया जा सकता है। वे एक दिन 'अखण्ड ज्योति संस्थान' आये। उनके साथ दिल्ली से आये कोई नेता भी थे। सनातन धर्म, प्राचीन भारतीय संस्कृति की गौरव गरिमा, राष्ट्रप्रेम, संस्कृति प्रेम और देशभक्ति आदि भावों का हवाला देते हुए उन्होंने श्रीराम को जनसंघ का साथ देने के लिए कहा।

श्रीराम ने स्पष्ट उत्तर दिया। राजनीति या शुद्ध सामाजिक कामों के जरिये ही कुछ करना होता तो कांग्रेस या गांधीवादी सिद्धान्तों के अनुसार काम कर रही कई सामाजिक संस्थायें थीं। राजनीति या कोरी समाज सेवा हमारा क्षेत्र नहीं है। यह हमारा अपना निर्णय भी नहीं है। हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने हमें धर्मक्षेत्र में नियोजित किया है। इस क्षेत्र में रहते हुए भी जो कुछ करना हो करेंगे। श्रीराम की लगन और निष्ठा से परिचित कांग्रेस के पुराने कार्यकर्त्ता भी श्रीराम के पास आये। उनका उद्देश्य भी यही था। श्रीराम ने उन्हें भी यही उत्तर दिया।

प्राण प्रतिष्ठा से पहले

मंदिर का निर्माण लगभग पूरा होने आया तो प्राणप्रतिष्ठा के बारे में विचार किया जाने लगा। निर्माण आरंभ होते ही गायत्री उपासना का एक अभियान छेड़ दिया था। प्रतिदिन एक हजार मंत्र जप करने वाले साधकों की अच्छी खासी संख्या हो गई थी। तपोभूमि में प्राणप्रतिष्ठा की तिथियाँ निश्चित होने से पहले भी बताया जाता रहा था कि संवत् २०१० की गायत्री जयंती को पूर्णाहुति होगी। सवा सौ करोड़ गायत्री महामंत्र के जप, विभिन्न स्थानों पर सवा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ऋषियुग्म भिन्न-भिन्न मुद्राओं में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

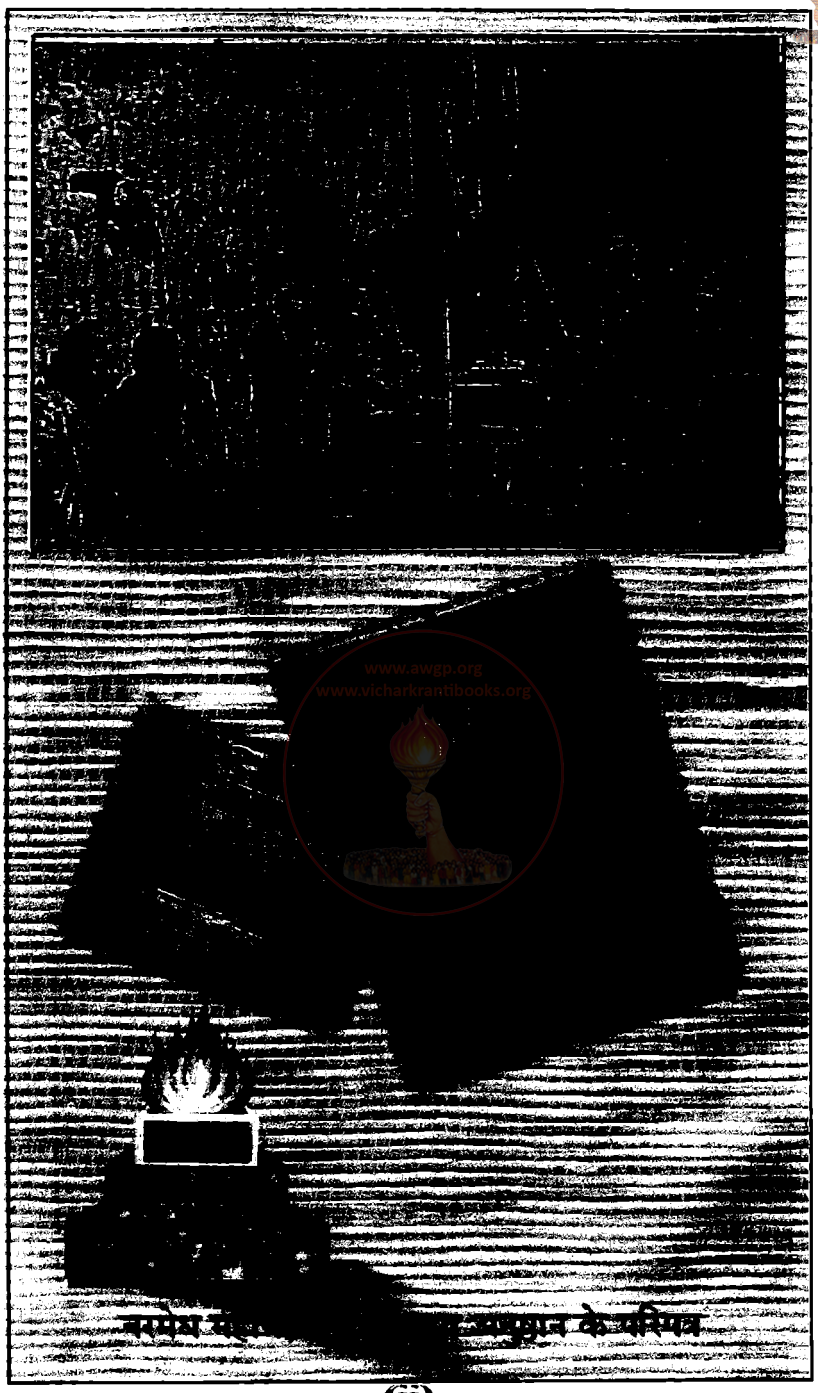

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लाख आहुतियों के कई अग्निहोत्र और गायत्री उपासकों द्वारा किए गए उपवास भी वसंत पंचमी तक लगभग पूरे हो जाने थे। शेष कार्यक्रम गायत्री जयंती तक निश्चित ही संपन्न हो रहे थे।

मंदिर में गायत्री की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा, वैशाख पूर्णिमा से गायत्री जयंती तक श्रीराम का निराहार उपवास, उस अवधि में केवल गंगाजल का सेवन, गायत्री जयंती पर ही यज्ञशाला में अखंड अग्नि का आधान, प्राय: सभी तीर्थों से लाये गये जल रज की स्थापना के विभिन्न कार्यक्रमों की घोषणा की जा चुकी थी। समारोह बड़ा था लेकिन उसके लिए ज्यादा लोगों को आमंत्रित नहीं किया। यज्ञ आयोजन में १२५ लोगों के शामिल होने की बात निश्चित कर दी गई थी। वही लोग शामिल किये जाने थे जिन्होंने सहस्रांशु ब्रह्मयज्ञ में भाग लिया हो। यज्ञशाला में अखंड अग्नि की स्थापना करने वाले ऋत्विज का नाम घोषित नहीं किया गया था। पूछने पर श्रीराम यही कहते कि हमें स्वयं नहीं मालूम। जो शक्तियां यह अनुष्ठान आयोजन करा रही हैं, वे ही जानती हैं कि कौन अग्नि आधान करेगा। आयोजन कैसे संपन्न होगा।

गायत्री जयंती के कार्यक्रम को लेकर साधकों में बड़ी उत्सुकता थी। प्राण प्रतिष्ठा, जल उपवास और महायज्ञ बड़े आयोजन थे। कुछ संपन्न परिजनों को चिंता थी कि इनका प्रबंध कैसे होगा? वे पूछने आते। उन्हें भी श्रीराम का यही जवाब होता। जनवरी की ही कोई तारीख थी। वसंत पर्व से कुछ दिन पहले की घटना है। बंबई से सेठ जीवनदास अपने पूरे परिवार को लेकर आ गए। देहरादून एक्सप्रेस से उतर कर वे सीधे घियामंडी पहुँचे और पहुँचते ही पहली बात गायत्री जयंती पर होने वाले समारोह का व्यय स्वयं उठाने की कही। श्रीराम ने कहा लोग महीनों से इस आयोजन की तैयारी में लगे हैं। साधना कर रहे हैं, क्षेत्र में घूम-घूम कर प्रचार कर रहे हैं। सभी को मिल जुल कर व्यवस्था करनी चाहिए।

जीवनदास के पास इस उत्तर के आगे कहने के लिए कुछ बाकी नहीं बचा था। फिर भी उसने पांच सौ रुपये निकाले और श्रीराम के सामने रख दिए 'ये रुपये अब आपके हैं। गायत्री माता के काम में ही लगने चाहिए। मंदिर में लगायें या प्रतिष्ठा समारोह में।' सेठ जीवनदास का उत्साह देख कर श्रीराम ने थैली उठा ली। हाथों में थामे रहे और बोले, 'ये रुपये अब मेरे हुए।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हां में सिर हिला जीवनदास से श्रीराम ने कहा, 'गायत्री माता के काम में ही लगेंगे लेकिन कैसे लगेंगे यह तय करना मेरा काम है। बीच में कुछ नहीं बोलना।'

ठेठ गुजराती लहजे में सेठ ने कहा 'बरोबर'। इसके बाद श्रीराम ने कहा, 'इन रुपयों को संभालो। आज ही हम बाजार जाएंगे। श्रीकृष्ण जन्म स्थान के बाहर, द्वारकाधीश के सामने विश्रामघाट पर और वृंदावन में बहुत से गरीब साधु वैरागी और अनाथ असहाय लोग ठंड से ठिठुरते रहते हैं। हम उनके लिए रुई भरी बंडियां खरीदेंगे और दो एक दिन में सबको बांट कर आएगे।'

श्रीराम ने अपनी बात समाप्त की ही थी कि सेठ जीवनदास की आंखे भर आई। वह खुशी के आंसू थे। सेठ ने अपने किसी संबंधी से कहा कि बंडियां खरीदने और गरीबों में बांटने तक पंडित जी का साथ मिलने की आशा ने ही मन को खिला दिया था। श्रीराम ने मंदिर का काम देखते रहकर भी जीवनदास को पूरा समय दिया।

वसंत पंचमी पर संक्षिप्त कार्यक्रम प्रतिवर्ष होता था। यह आयोजन घियामंडी स्थित आवास पर ही होता। दस बारह साधक और परिवार के लोग मिलते। सामूहिक उपासना होती, कुछ देर बैठकर गायत्री चर्चा करते और भोजन आदि के बाद वापस चले जाते। संवत २००९ की वसंत पंचमी पर गायत्री तपोभूमि में कार्यक्रम रखने का निश्चय हुआ। असल में उस दिन ऋषिकेश, वाराणसी और प्रयाग से कुछ संतों विद्वानों को पहुँचना था। ये लोग श्रीराम की गायत्री साधना और अब तक के कार्यों से अच्छी तरह परिचित थे। उन्हें गायत्री जयंती पर होने वाले समारोह के बारे में भी पता था। आने वालों में ऋषिकेश से स्वामी सच्चिदानंद, वाराणसी से पंडित शिवशंकर द्विवेदी, रामानुज उपाध्याय और शैव साधु भोले बाबा के अलावा प्रयाग से पंडित लक्ष्मीकांत मुख्य थे। सब लोगों के आने और मिल बैठने का उद्देश्य गायत्री जयंती के कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करना भी था।

आचार्य वरण

पांचों मनीषी वसंत पंचमी से दो दिन पहले ही आ गये। गायत्री तपोभूमि में तब इतनी जगह नहीं बनी थी कि वहां ठहराया जा सके। उन्हें घियामंडी में ही ठहराया गया। पहली गोष्ठी हुई। गायत्री मंत्र के सस्वर उच्चारण के बाद चर्चा शुरू होने ही वाली थी कि स्वामी सच्चिदानंद ने बातचीत का सिरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने हाथ में लिया। कहने लगे प्राण प्रतिष्ठा समारोह में आचार्यत्व का आपका पहला अवसर होगा। आगे आपको यज्ञ अभियान तो चलाना है ही। गायत्री उपासना का धुँआधार प्रचार करना है। साधना का एक लम्बा दौर पूरा कर लेने के बाद आप ऋषियों की श्रेणी में आ गये। अपने आप को सिर्फ पण्डित श्रीराम शर्मा न लिखें। यह कह कर दूसरे क्षेत्र से आये साधु विद्वानों की ओर देखने लगे। उन साधु ने भी हामी भरी। कहा अब आपको अपने आचार से भी लोगों को शिक्षित और संस्कारित करना है। यह उचित होगा कि अब आप आचार्य के नाम से जाने जायें।

स्वामी सच्चिदानंद ने कहा, 'प्राचीन काल में गुरुकुल और आश्रमों का संचालन करने वाली विभूतियां आचार्य के नाम से जानी जाती थीं। उनके सान्निध्य में लोग आत्म विकास के साथ देश और समाज की सेवा का पाठ भी पढ़ते थे। आश्रमों का निर्वाह उन साधकों के सहयोग और संस्थान की अपनी निजी संपदा से होता था। अब हमारे पण्डित जी भी इसी भूमिका का निर्वाह करेंगे।' कहते हुए स्वामी सच्चिदानंद अपने स्थान पर खड़े हो गये जैसे घोषणा कर रहे हों। उन्होंने कहा कि मैं अपने इस प्रस्ताव के लिए अनुमोदन की अपेक्षा करता हूँ।

वहां बैठे विद्वानों ने समर्थन में हाथ उठा दिए। श्रीराम चुपचाप यह सब देख रहे थे। उन्हें संकोच हो रहा था। उस स्थिति का सामना करना जैसे कठिन हो रहा था। हाथ जोड़ कर उन्होंने कहा, 'हम अपने आपको आचार्य का गुरुतर भार उठाने में सक्षम नहीं समझते। फिर इस उपाधि से होगा क्या?'

उनकी बात पर जैसे किसी ने ध्यान नहीं दिया। पंडित शिवशंकर द्विवेदी और रामानुज उपाध्याय ने कहा कि हम काशी की विद्वत्परिषद की ओर से इस प्रस्ताव की संस्तुति करते हैं। वहां के विद्वान अरसे से इस बारे में विचार कर रहे हैं। उसी बैठक में यह भी तय हो गया कि वसंत पंचमी पर गायत्री मंदिर में ही श्रीराम का पट्टाभिषेक कर दिया जाए। ज्येष्ठ सुदी दशमी को होने वाले समारोह का आरंभ भी तभी से मान लें। ऋषि और देवसत्ताओं को निमंत्रित करने वाले कर्मकांड के साथ एक आयोजन तपोभूमि के प्रांगण में ही हो।

श्रीराम के लिए विचित्र स्थिति थी। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें? गोष्ठी की स्थिति भी विचित्र हो गई थी। श्रीराम ने तीन चार बार संकोच व्यक्त किया। इस पर भोले बाबा बोले, 'अब पंडित जी आगे की चर्चा भी होने दीजिए। पांच पंचों ने मिलकर जो तय किया, उसे मान लेना ही पुण्य है।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गोष्ठी में वसंत पंचमी के बाद की स्थितियों पर भी विचार किया गया। लेकिन उस दिन मुख्य रूप से बसंत पर्व के बारे में ही चर्चा हुई। दो दिन बाद तपोभूमि में मंदिर के सामने ईंटों से बनाये अस्थाई कुंड में यज्ञ आहुतियां दी गईं। घर पर परिवार के लोगों ने प्रणाम अभिवादन किया और शुभकामनाएं दीं। छह बजे तक वहां के कार्यक्रम संपन्न हो गए। सूर्य उत्तरायण में था। उन दिनों सुबह देर से होती थी। छह बजे तक तपोभूमि के रास्ते में धूप नहीं आती थी। सुबह का उजियारा अपनी छटा बिखेरना शुरु कर देता था। उस उदय वेला में ही सब लोग तपोभूमि पहुंच गए।

यज्ञ संपन्न होने में सवा या डेढ़ घंटा लगा। तब तक कुछ और लोग प्रांगण में आ गए थे। इनमे मथुरा वृदांवन के कुछ विद्वान और साधु भी थे। द्वारकाधीश मंदिर के पास पंडित विट्ठल चतुर्वेदी, डैंपियर पार्क से प्रो० अवध शरण, वृंदावन से स्वामी शरणानंद, अनंतबिहारी गोस्वामी आदि विद्वानों की उपस्थिति में श्रीराम को पीला दुपट्टा ओढ़ाया गया। काशी के द्विवेदी जी और उपाध्याय जी ने मंत्रोच्चार के साथ दशविध स्नान कराये। उन्हीं ने घोषणा की कि गायत्री तपोभूमि की स्थापना के बाद पंडित श्रीराम को यज्ञ संस्कृति का पुनर्जीवन और आर्ष साहित्य का उद्धार करना है। अभी तक उन्होंने जो किया है, वह भविष्य में आ रहे एक बड़े दायित्व की पृष्ठभूमि है। हम सब कामना और वेदमाता से प्रार्थना करें कि वे अपना दायित्व निभाए। पट्टाभिषेक में वहां बैठे विद्वानों और साधकों ने भी पुष्प, अक्षत, चंदन आदि भेंट करते हुए हिस्सा लिया। (आगे के वृत्तांत में हम भी अब श्रीराम को 'आचार्यश्री' ही कहेंगे।)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आह्वान और स्थापन

संवत २०१० की वैशाख पूर्णिमा से गायत्री जयंती तक आचार्यश्री ने जल उपवास का निश्चय किया था। इस अवधि में गंगाजल पर ही निर्भर रहना था। ताईजी ने चिंता जताई। हलके से दबाव भी बनाया। उनका कहना था कि एक समय भोजन करने की बात तो ठीक है। चौबीस साल एकाशन पर ही बिताए हैं। दो चार दिन का निराहार व्रत भी ठीक है लेकिन चौबीस दिन का उपवास शरीर को तोड़ देगा। जल उपवास तय होते ही उन्होंने कहना शुरु कर दिया था। दिनोंदिन जोर देने लगी थी। माताजी भी चिंतित थीं लेकिन वे कुछ कह नहीं पाती थी। भीतर से कोई आवाज आती थी कि अपने आराध्य के निर्धारणों में कोई हस्तक्षेप नहीं करना है। चुपचाप उनका अनुसरण करना है। जैसा कहें, वैसा ही पालन करते जाना है।

मन में आया कि स्वयं भी जल उपवास पर रहा जाए। एक दिन मन की बात सामने रख दी। आचार्यश्री ने कहा कि दोनों ही उपवास पर बैठ जाएंगे तो आने वाले साधकों को कौन संभालेगा। फिर यह आदेश हमारे लिए हुआ है। तुम्हें भी उपवास करना होता तो गुरुदेव बता देते। तुम्हें बाहरी व्यवस्थाओं को संभालने में ही लगना चाहिए।

माताजी तो मान गईं। ताईजी को संभालना कठिन पड़ रहा था। वे जिद किए जा रही थीं कि उपवास नहीं करें। गुरुदेव ने कहा है तो हम उनसे क्षमा मांग लेंगे। वे कोई प्रायश्चित बतायेंगे तो कर लेंगे। ताईजी के सामने सभी तर्क और कारण बेकार साबित हो रहे थे। एक बारगी तो आचार्यश्री को लगा कि अपना निर्णय बदलना पड़ सकता है। वे ताईजी से कहने जा ही रहे थे कि एक आसरा दिखाई दिया–उनके अपने आराध्य द्वारकाधीश। उस दिन ताई जी ने नए सिरे से जिद की थी कि अपना इरादा बदलता है या नहीं?

आचार्य श्री ने कहा 'ताईजी आपकी बात मान ली। समझो कि मै चौबीस दिन का उपवास नहीं करूंगा लेकिन आप एक बार द्वारकाधीश महाराज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

से भी पूछ कर देखिए। वे मुझे संकल्प तोड़ने की अनुमति दे रहे हैं क्या? आप ही उनसे पूछिए और आप ही उनका उत्तर सुनिए। आप जो सुनेंगी और फिर कहेंगी, वही मैं करूंगा।'

यह सलाह ताईजी के गले उतर गई। फाल्गुन मास का कोई दिन था। होली के रंग हवाओं में उड़ने लगे थे। मथुरा वृंदावन में वैसे भी हफ्तों पहले होली पर तरह तरह के आयोजन शुरु हो जाते हैं। द्वारकाधीश मंदिर में भी उत्सव चल रहा था। ताईजी बताया करती थीं कि श्रीराम ने कहा उसके अगले दिन की ही बात है। ठाकुर जी के सामने आंख बंद करके खड़ी हो गई। उन्हें साक्षात मान कर पूछा। खुद तो अपने लिए मेवा मिष्ठान्न खाते रहते हो। भंडार भरा पड़ा है। और श्रीराम को जेठ के महीने में निराहार रखने पर तुले हुए हो। ऐसा क्यों है? अपने ठाकुर से इसी तरह का संवाद चल रहा था। वे तरह तरह से उलाहना दिए चली जा रही थीं। पता ही नहीं चला कि अपनी तरफ से कुछ कहना कब बंद हो गया।'

'मंदिर में ठाकुरजी के सामने मेरे अलावा किसी की भी प्रतीती नहीं हो रही थी। लगा प्रभु के होंठ हिल रहे हैं। उनके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान भी थी। वे कह रहे थे कि श्रीराम जब तुम्हारे गर्भ में था तो उसे कौन पोषण दे रहा था। तब भी तो वह उपवास पर ही था। चिंता न करो। भवानी ही उससे उपवास करा रही है। आदिशक्ति के आंचल में बैठे श्रीराम के बारे में चिंता करने वाले हम कौन? फिर प्रभु मुसकराये और कहने लगे कि जिस मेवा मिष्ठान्न की बात कह रही हो वह भी तो श्रीराम का पोषण करने के लिए ही है।'

आराध्य के इस संवाद ने मन की दुविधा मिटा दी। ताई जी खिलखिलाती हुई सी घर वापस आईं। इस तरह का मुखर संदेश पहले कभी नहीं आया था। घोर संकट के दिनों में भी भीतर से उठने वाले स्पष्ट संकेतों-प्रेरणाओं को अपने इष्ट का संकेत माना था। और उसी आधार पर निर्णय लिए थे। भगवान की यह आवाज ताईजी के लिए साक्षात्कार से कम नहीं थी। उसी उल्लास में वे घर पहुँची। पहुँचते ही उन्होंने आचार्यश्री को पुकारा और अपने आराध्य का उत्तर सुनाया। माँ और पुत्र दोनों ही प्रसन्न थे। पुत्र ने मजाक किया, 'मैं तो डर ही रहा था ताई कि तुम्हारे आगे मुझे अपना व्रत तोड़ना पड़ेगा।'

बात हंसी में समाप्त हुई। ताई जी तो मान गईं लेकिन गायत्री साधकों का क्या करें? उनके पत्र आ रहे थे कि वे भी उपवास करेंगे। आचार्यश्री ने औसत स्वास्थ्य, अभ्यास और ग्रीष्म ऋतु का हवाला देते हुए समझाया कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हठधर्मिता छोड़ें। एकाध दिन का सांकेतिक उपवास कर लें। उन दिनों जप, ध्यान और पाठ आदि कार्यक्रम चलाये जांय। प्रतिदिन इस तरह के तीस चालीस पत्र लिखे जाते थे। सहस्रांशु ब्रह्मयज्ञ की सूचना देने और आगे के लिए दिशा निर्देश लेने के लिए आ रहे साधकों से भी आचार्यश्री यही कहते थे।

वैशाख पूर्णिमा ३० मई को थी। उसी दिन से जल उपवास आरम्भ किया। मंदिर के सामने एक लकड़ी का तख्त बिछाया गया। उस पर दरी और चादर। धूप से बचाव के लिए तिरपाल तान दिया था। आचार्य श्री तख्त पर ३० मई की सुबह बैठे। उस दिन घियामंडी में नियमित पूजा करने के बाद वे सीधे मन्दिर आ गये थे। गायत्री माता की प्रतिमा के सामने पर्दा पड़ा हुआ था। प्रतिमा आवृत की हुई थी। मंदिर में पुताई और घिसाई का कुछ काम बाकी था। वह अपनी तरह चलता रहा। आचार्यश्री पूर्णिमा को वहाँ आकर बैठे तो माताजी भी साथ थीं। सुबह पांच बजे का समय था। उन्होंने आचार्यश्री को तिलक किया, चरण छुए और एक तुलसी दल दिया। आचार्यश्री ने तुलसी का वह पत्ता मुँह में रखा। गायत्री मंत्र का उच्चारण किया। तपोभूमि में पहले से मौजूद पांच कार्यकर्त्ताओं ने भी गायत्री मंत्र का पाठ किया। यह आचार्यश्री के जल उपवास आरम्भ होने की सूचना थी।

अगले चौबीस दिनों में उपवास के दौरान साधकों का आना जारी रहा। कभी कभी बीस पचीस तो कभी तीस चालीस, इस तरह लोग आते जाते रहे। १९ से २४ जून तक के समारोह की रूपरेखा पहले ही तय थी। उपवास के दिनों में आते-जाते रहे साधकों ने उसकी व्यवस्था को सँवारा। औसतन पचीस, तीस। लेकिन तपोभूमि जैसे नये संस्थान में ब्रजमंडल के बाहर से इतने लोगों का रोज आना भी बड़ी बात थी। स्थानीय लोग तो आते-जाते रहते ही थे।

चरण स्पर्श पर रोक

जिस दिन उपवास आरम्भ हुआ। उसी दिन लोगों से मिलने जुलने की व्यवस्था बनाई। उस व्यवस्था में कम से कम शब्दों में अपनी बात कहने, उनके आसन के आसपास लोगों के जमा नहीं होने और पैर नहीं छूने की पाबंदियां थीं। लोगों का आना जाना तो खैर ज्यादा नहीं था, लेकिन चरण-स्पर्श के लिए निषेध का मर्म लोगों को समझ नहीं आया। साधकों को विचित्र लगा। एक यही अवसर तो था जब केन्द्र में साधकों को इकट्ठा होना था। वह अपने प्रेरक,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मनीषी और २४ महापुरश्चरण तपने वाले तपस्वी के इर्दगिर्द जमा हो रहे थे। उस अवसर पर प्रणाम और श्रद्धा निवेदन पर रोक कुछ समझ नहीं आई।

पटना के केदार नाथ सिंह ने इस पाबन्दी के बारे में पूछा भी कि क्या वजह है? आचार्यश्री ने टालने की कोशिश की। केदार नाथ सिंह अपने प्रश्न पर अड़े रहे। घुमा-फिरा कर पूछते ही रहे। आचार्यश्री को कहना ही पड़ा कि जल उपवास के समय उनके शरीर में और आसपास दिव्य ऊर्जा संचरित होने लगेगी। उस ऊर्जा को ग्रहण करने की सामर्थ्य हर किसी में नहीं होती। अपरिपक्व स्थिति में उससे हानि भी हो सकती है। इसलिए स्पर्श की मनाही है। लकड़ी का तख्त, उस पर दरी और ज्येष्ठ मास की गर्मी में भी ओढ़ने के लिए कम्बल जैसी व्यवस्था। इस व्यवस्था का उद्देश्य भी ऊर्जा के विकिरण को रोकना ही रहा होगा।

केदार नाथ सिंह ने फिर पूछा कि लोगों को आस-पास जमा न होने देने का भी क्या उद्देश्य है। लोग तो हैं ही नहीं?

आचार्यश्री ने कहा, 'स्थापना के समय बड़ी संख्या में लोग आयेंगे।'

संवाद इसके बाद खत्म हो गया। जल उपवास चलता रहा। बीच-बीच में कभी कभार लोग आते जाते रहे। आने वाले विशिष्ट लोगों में साधु-संतों की संख्या ज्यादा होती थी। थोड़ी बहुत देर बैठते। शास्त्रीय विषयों पर चर्चा करते। सामान्य विषयों पर भी चर्चा हो जाती थी। कुछ लोग तो ऐसे भी आते जिनके लिए तपोभूमि एक नया लंगर था। ऐसा मन्दिर जहाँ सुबह-शाम खाना बंट सकता है। इन लोगों की बात पर आचार्यश्री ज्यादा ध्यान नहीं देते थे।

ऋषिकेश के एक संत स्वामी गंभीरानंद एक दिन आचार्यश्री के पास आये। वे वृंदावन की यात्रा पर थे। राह चलते उन्होंने तपोभूमि को देखा। वे अन्दर आये। आचार्यश्री के पास बैठे। भीतर आते तक उन्हें किसी साधक ने इस संस्था और संस्थापक के बारे में बता दिया था। स्वामी जी ने आते ही आचार्यश्री से विनोद के भाव से पूछा,'इतना बड़ा तप क्यों किया रे बाबा।'

उनके स्वर में विनोद के साथ गरिमा और अधिकार का भाव भी था। आचार्यश्री ने कहा, 'हमें कारण नहीं मालूम। मार्गदर्शक सत्ता ने इस साधना में नियोजित किया था। और हमारे लिए उनकी आज्ञा ही पर्याप्त थी।'

स्वामी गम्भीरानन्द ने आचार्यश्री की आंखों में झाँका। उन्होंने पलकें झुका लीं। स्वामी जी ने कहा, 'आंखों में बड़ा तेज है। हर कोई इसे सहन नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर सकता। इसीलिए आप किसी से नजरें नहीं मिलाते। यहाँ की योजनाओं के बारे में बतायें।'

आचार्यश्री ने गायत्री तपोभूमि के उद्देश्य और योजनाओं के बारे में बताया। यहाँ पर चौबीस सौ तीर्थों का जल रज संग्रह किया जाना है। सामने बन रही यज्ञशाला में हिमालय के तपस्वियों की दी हुई अग्नि का आधान किया जायेगा। यह अग्नि उन तपस्वियों की धूनी से लाई गई होगी।

स्वामीजी ने कहा कि आप गायत्री उपासना का प्रचार करेंगे। वह तो सन्ध्या वंदन के रूप में घर-घर में वैसे ही प्रचलित है। पौराणिक देवी देवताओं जैसे लक्ष्मी, विष्णु, दुर्गा, शिव, पार्वती, कृष्ण राम आदि की तरह उसका स्वरूप विख्यात नहीं है। आप गायत्री के इस रूप को स्थापित करेंगे।

आचार्यश्री ने बताया कि हमने पहले से कुछ तय नहीं किया है। यथा अवसर जैसी प्रेरणा उठेगी वैसे ही निर्णय लेंगे।

स्वामीजी ने पूछा 'उस प्रेरणा की कसौटी क्या होगी।'

आचार्यश्री ने उत्तर दिया 'अपनी अन्तरात्मा। भगवती की आराधना करते करते यह विश्वास सुदृढ़ हुआ है कि अंतरात्मा में जो भी प्रेरणायें उभरेंगी वे सही ही होंगी।'

देर तक बात होती रहीं। स्वामीजी ने उठते हुए प्रणाम किया। आचार्यश्री तखत पर अधलेटे से थे। स्वामी जी के प्रणाम करते ही वह तनकर उठे और खड़े हो गये। पांव खड़ाऊं पर रख लिये और तपाक से बोले प्रणाम तो मुझे करना चाहिए। आप संन्यासी हैं। आश्रम धर्म के अनुसार और विद्या के क्षेत्र में भी मुझसे बहुत आगे हैं। मेरे प्रणाम स्वीकार करें। स्वामी गम्भीरानंद अलमोड़ा के अद्वैत आश्रम से सम्बन्ध रखते थे। इस आश्रम की स्थापना स्वामी विवेकानन्द ने की थी।

उपवास के दिनों में ही भागवत भवन से सन्देश आया कि जय दयाल गोयंदका मिलना चाहते हैं। श्रीकृष्ण जन्म स्थान में भागवत भवन के निर्माण में गोयंदकाजी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही थी। गीताप्रेस जिन दो महानुभावों के कारण धार्मिक साहित्य और समाज सेवा के क्षेत्र में शिखर पर पहुँच सका उनमें गोयंदका जी एक थे। दूसरे महानुभाव हनुमान प्रसाद पोद्दार के बारे में विशेष कुछ कहने की जरूरत नहीं है। गोयंदकाजी का संदेश वाहक आया तो आचार्यश्री ने कहा उनका यहाँ हमेशा स्वागत है। उचित तो यह है कि उन जैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ऋषिकर्म करने वाले महापुरुष से मिलने मैं स्वयं ही जाऊं लेकिन मैं इस समय एक विशेष व्रत में दीक्षित हूँ। वह जब भी चाहें यहाँ आयें।

दो या तीन दिन बाद गोयंदकाजी का तपोभूमि आना हुआ। आचार्यश्री ने आसन से खड़े होकर उनका स्वागत किया। कुशल क्षेम के बाद गोयंदकाजी ने कहा कि हम भी सन्ध्या गायत्री का प्रचार करते हैं। इस नाते आप और हम सभी सनातन धर्म की सेवा कर रहे हैं। हमें एक दूसरे का सहयोग करना चाहिये।

आचार्यश्री ने कहा, 'हम सिर्फ गायत्री उपासना पर ही केन्द्रित हैं। आप सनातन धर्म के आराध्य सभी रूपों की भक्ति का प्रचार करते हैं। इस नाते आपका दायित्व और काम बड़ा है।'

गोयंदकाजी इस विनय से अभिभूत हुए। उन्होंने कहा, 'हमारे लायक कोई सेवा हो तो बतायें।'

आचार्यश्री ने कहा 'आपके पास एक व्यवस्थित तंत्र है। वेद, शास्त्र, उपनिषद, दर्शन आदि ग्रन्थों का लोप हो रहा है। उस तंत्र का उपयोग करते हुए वेदों और उपनिषदों के सस्ते सरल संस्करण प्रकाशित करें। स्वाध्याय करने वालों को इससे आसानी होगी।'

गोयंदकाजी ने कहा, 'इस मामले में हमारी मान्यता थोड़ी अलग है। आर्य समाज ने वेद-शास्त्रों को सबके लिए सुलभ करा दिया है। लेकिन हम लोग मानते हैं कि यह द्विजों को ही उपलब्ध होना चाहिए। वेद शास्त्रों में हर किसी का अधिकार नहीं है। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीनों वर्ण ही गुरुमुख से गायत्री मंत्र की दीक्षा लेकर श्रुति शास्त्रों का अध्ययन कर सकते हैं।'

वर्ण धर्म की चिंता

आचार्यश्री ने पूछा कि दूसरे वर्णों के लिए क्या कोई उपाय नहीं है? वे यदि अध्यात्म विद्या पढ़ना चाहें तो क्या करें? गोयंदकाजी ने कहा कि उनके लिए पुराण ग्रंथ हैं। रामायण महाभारत का अवगाहन कर वे अपना कल्याण कर सकते हैं। वेदशास्त्र सीधे ब्रह्मा के मुख से निकले हैं। उन्हें सुनने और पढ़ने के लिए एक विशिष्ट स्तर चाहिए। उस स्तर पर सिर्फ द्विजों की आत्मा ही पहुँच सकती है। वैदिक ग्रंथों का गूढ़ ज्ञान सूत्र-रूपों में है। वैसे भी उसे समझना हर किसी के वश की बात नहीं है। कथा कहानियों के माध्यम से रामायण, महाभारत, पुराण आदि ग्रन्थों ने उसी सत्य का विस्तार किया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपनी बात कहकर गोयंदकाजी चुप हो गये तो आचार्यश्री ने कहा, 'आप ठीक कहते होंगे। स्थितियों को देखने का अपना अपना ढंग है। हमारी मान्यता है कि वेद शास्त्र सहज उपलब्ध नहीं हुए तो आगे चलकर उनका लोप हो सकता है। वेदों का तत्त्वज्ञान हो सकता है हर किसी को समझ न आये लेकिन उपनिषदों का संदेश हर कोई ग्रहण कर सकता है। उसे सुलभ कराने के बारे आपकी क्या राय है? उपनिषदों के लिए तो यह पाबन्दी भी नहीं है कि अमुक व्यक्ति छू सकता है और अमुक नहीं।'

गोयंदकाजी ने कहा, 'हम अपनी ओर से कोई निर्णय नहीं लेते। संत महात्मा जो दिशा-निर्देश देते हैं या उनसे जो प्रेरणा मिलती है, वैसा ही करते हैं।'

गोयंदकाजी और आचार्यश्री में देर तक चर्चा चलती रही। एक मुद्दा स्पृश्यास्पृश्य विवेक का था। गोयंदका जी ने ही प्रसंग छेड़ा था कि आधुनिकता के प्रवाह में लोग शास्त्रीय मर्यादाओं का उल्लंघन कर रहे हैं। मंदिरों में उन लोगों के प्रवेश के लिए आंदोलन छिड़ रहे हैं, जिनके लिए शास्त्रों में प्रतिबंध हैं। मान्यता की पुष्टि के लिए वे कई तर्क दे रहे थे और कह रहे थे कि इससे वर्ण धर्म का लोप हो जाएगा।

आचार्यश्री ने कहा कि शास्त्रों का थोड़ा बहुत अध्ययन हमने भी किया है। कहीं देखने में नहीं आया कि शूद्रों या निम्नजाति के कहे जाने वाले लोगों को मंदिर में नहीं जाने देना चाहिए। वे भगवान का भजन नहीं कर सकते।

गोयंदकाजी ने यहां भी संत महात्माओं के निर्णय का हवाला दिया कि वे जो व्यवस्था दें वहीं मान्य है। आचार्यश्री ने सलाह दी कि श्रुतियां सनातन हैं लेकिन स्मृतियां तो युगों के अनुसार लिखी जाती हैं। किसी समय में मनुस्मृति का महत्त्व रहा होगा। संभवत: मध्यकाल में। लेकिन अब परिस्थितियां बदल गई हैं। नई स्मृति तैयार की जानी चाहिए। साधु संत आज की परिस्थितियों को देखें और उसके अनुसार नया अनुशासन समाज को दें।

जयदयालजी उनकी बातों को गौर से सुन रहे थे। उन्होंने कहा कि आप ठीक ही कहते होंगे। लेकिन हमारा मन बंधा हुआ है। हम साधु संतों को परामर्श नहीं दे सकते। वैश्य है न, इसलिए यह बात अधिकारी ब्राह्मण विद्वान कहें। किसी धर्म विषय पर नया विचार देना उन्हीं का काम है। गोयंदकाजी ने इस बात से सहमति जताई कि यातायात और संचार के साधन जैसे-सैसे बढ़ेंगे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वैसे-वैसे लोग ज्यादा संपर्क में आएंगे। यह पहचानना मुश्किल हो जाएगा कि कौन किस जाति का है? लेकिन उन्होंने अपनी मान्यताओं और विश्वासों के आगे स्वयं को निरुपाय बताया।

चलते चलते उन्होंने आचार्यश्री से अपने लायक कोई काम बताने के लिए कहा। आचार्यश्री ने कहा आप और हम सब सनातन धर्म की ही आराधना कर रहे है। अलग से बताने जैसा कोई काम नहीं है। अपना स्नेह ही पर्याप्त है। फिर भी आवश्यकता हुई तो आपको याद करेंगे।

गोयंदकाजी ने पगड़ी उठाई और अपने सिर पर रखी। आचार्यश्री को प्रणाम करते हुए उन्होंने पगड़ी उतार कर नीचे रख दी थी। पगड़ी पहन कर उन्होंने प्रणाम किया और उठ कर चलने लगे। आचार्यश्री ने उठने की कोशिश की तो गोयंदकाजी ने उन्हें रोक दिया। कहा आप एक व्रत में दीक्षित हैं। लोकाचार पर इतना जोर मत दीजिए।

हिमालय का प्रतिनिधि

सहस्त्रांशु ब्रह्मयज्ञ की पूर्णाहुति और गायत्री तपोभूमि के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में भाग लेने के लिए सैंकड़ों निमंत्रण पत्र भेजे गये थे। लगभग सभी साधकों ने तत्परता दिखाई थी। ढाई तीन हजार लोगों के आने की संभावना बन रही थी। सोचा गया कि सब लोग यज्ञ में आयें, इससे अच्छा यह होगा कि कुछ लोग अपने क्षेत्रों में भी काम करें। गायत्री जयंती पर तपोभूमि की प्राण प्रतिष्ठा की गूंज मथुरा के बाहर भी सुनाई देनी चाहिए। साधकों से कहा गया कि अपने यहां गायत्री उपासना के प्रचार की मुहिम चलायें। लोगों को जप और ध्यान के लिए प्रेरित करें। मथुरा आने के बारे में कहा गया कि एक जगह से एक व्यक्ति आ जाये तो भी पर्याप्त है। बहुत हुआ तो दो प्रतिनिधि आ जाएं, वरना अपने यहां ही उस दिन सामूहिक जप और उपासना चलायें।

कुछ कार्यकर्त्ता यात्रा पर थे। वे मंदिर के लिए चौबीस सौ तीर्थों का जल रज इकट्ठा करने निकले थे। वे वापस आने लगे थे। मंदिर के दक्षिण भाग में तीर्थों के जल और रज की स्थापना की जानी थी। जल रज लेकर आये कार्यकर्त्ताओं और प्राण प्रतिष्ठा में यजमान की तरह सम्मिलित होने वाले साधकों को मिलाकर आगंतुकों की संख्या डेढ़ हजार तक पहुँचती थी। १९ जून की शाम तक ज्यादातर लोग पहुँच गये थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वह शाम कार्यक्रम की घोषणा, सूचना और आगंतुकों को ठहराने में बीत गई। ऋषिकेश से आये स्वामी देवदर्शनानंद का व्याख्यान हुआ। मुख्य कार्यक्रम २० जून को आरंभ होना था। स्वामी ओंकारानंद और आर्यसमाज के संन्यासी स्वामी प्रेमानंद भी तीन दिन के समारोह में सम्मिलित होने के लिए डेरा डाले हुए थे। आचार्यश्री स्वयं आयोजन में शरीर से बहुत सक्रिय नहीं हो पा रहे थे। जल उपवास के कारण वे काफी कमजोर हो गये थे। उपवास आरंभ करने के समय उनका वजन डेढ़ मन (लगभग ५६ किलोग्राम) था। २० जून को वह घटकर ५१ सेर (लगभग ४८ किलो ग्राम) रह गया था। शरीर का तापमान भी बढ़ गया था। थर्मामीटर से मापने का उस जमाने में खास प्रचलन नहीं था।

आचार्यश्री को स्वयं लग रहा था कि हरारत सी है। उन्हें बोलने में भी कष्ट होता था। फिर भी आंतरिक ऊर्जा में कमी नहीं आई थी। वैसे भी वे मितभाषी थे। लेकिन उपवास के दिनों में करीब-करीब मौन ही रहे। इस प्राण प्रतिष्ठा समारोह में दैनिक कार्यक्रम तय किये जाते समय आचार्यश्री के प्रवचन की बात उठी तो निर्धारण समिति ने उन्हीं से पूछा। पहले भी अनुमान था कि वे शायद प्रवचन नहीं करें और उपवास के बाद उनसे इस बारे में पूछना ज्यादती होती। फिर भी एक बार उनकी सम्मति लेना आवश्यक समझा गया।

आचार्यश्री ने कहा कि वे अपना संदेश लिखकर देंगे। उसे पढ़कर सुना दिया जाए। शरीर से कमजोर होने और हलका बुखार रहने के बावजूद आचार्यश्री की आंखों में तेज झलकता था। बहुत लोगों ने महसूस किया। आचार्यश्री अपनी पलकें झुकाये रखते थे। २० जून की सुबह पंडित लालकृष्ण पंड्या की अध्यक्षता में पंचकुंडीय गायत्री महायज्ञ आरंभ हुआ। इन दिनों जहाँ यज्ञशाला है तब वहाँ पांच अस्थाई कुंड बनाये गये थे। उसी सुबह तीन दिन चलने वाले गायत्री यज्ञ के अलावा साधना उपासना के विशेष कार्यक्रम शुरु हुए। इन कार्यक्रमों में सवा हजार चालीसा पाठ, पुरुषसूक्त, महामृत्युंजय यज्ञ, गायत्री सहस्त्रनाम, और दुर्गा सप्तशती का पाठ चलता रहा।

दो प्रकार की अग्रियां स्थापित की गई थीं। एक अरणि मंथन से प्रकट की गई और दूसरी हिमालय से लाई गई विशिष्ट अग्रि। शिव पार्वती की तपस्थली हिमालय में सात सौ वर्ष पहले प्रज्वलित यह अग्रि एक सिद्ध आत्मा की धूनी से त्रियुगी नारायण से लाई गई थी। यज्ञशाला में इसके प्रकट होने का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विधान भी अद्‌भुत था। अरणि मंथन के लिए आचार्यश्री ने पलाश और शमी वृक्ष की कुछ सूखी लकड़ियां दी। ये समिधाएं उन्होंने अपने तखत के पास से निकाल कर दीं। पता नहीं कहां सहेज कर रखीं हुई थीं। घियामंडी से चलते हुए माता जी इन्हें लेती आई थीं।

आचार्यश्री ने कहा कि यज्ञकुंड में बाहर से अग्नि का आह्वान नहीं करना है। दियासलाई या पत्थर रगड़कर अग्नि प्रकट नहीं करना है। यह विधान लौकिक प्रयोजनों के लिए किये जाने वाले अग्निहोत्र कर्म के लिए तो ठीक है लेकिन प्राण प्रतिष्ठा और विशिष्ट आध्यात्मिक प्रयोगों के लिए सूक्ष्म से ही अग्नि स्थापना होगी। उन्होंने कहा कि यज्ञकुंड में दी गई समिधाएँ रखी जाए। उनके बीच में घी में डूबी हुई रुई से बनी बत्ती रख दी जाय।

दूसरे प्रकार की अग्नि हिमालय से लाई गई थी। उसके बारे में किसी को पता नहीं था कि वह कहाँ सुरक्षित थी और कब लाई गई? यज्ञ आरंभ होने की पूर्व संध्या को अनायास ही एक अज्ञात साधु तपोभूमि पहुँचा। उसे किसी ने भी आते हुए नहीं देखा था, यद्यपि शाम को दो ढाई सौ लोग वहाँ मौजूद थे। साधु पर लोगों की निगाह ही उस समय पड़ी जब वह आचार्यश्री के निकट दिखाई दिया। यों कहें कि साधु ने ही जैसे सब लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा।

पुरानी किंतु साफ सुथरी चीवर धारण किए वह साधु अपनी उपस्थिति से ही आकर्षित कर रहा था। सामान्य से दिखने वाले उस संन्यासी के व्यक्तित्व में अनूठी आभा थी। ऐसी आभा कि उसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। पटना से आये केदारनाथ सिंह, अयोध्या के जानकी शरण दास, जयपुर के चंद्रकांत, पूना के रमाकांत जोशी आदि कार्यकर्त्ताओं का मानना था कि यह साधु अचानक ही प्रकट हुआ है। उन साधु के पास एक कमंडल था। सामान्य से बड़े आकार के इस कमंडल में हलकी सी आंच के साथ आभा निकल रही थी। आचार्यश्री ने उन साधु को देखा और देखते ही उठ खड़े हुए। अभी तक जिनके लिए बैठना भी संभव नहीं था, उनका तनकर खड़े हो जाना वहाँ मौजूद लोगों के लिए सुखद आश्चर्य था। आचार्यश्री ने उन साधु को झुककर प्रणाम किया। साधु ने कहा कि यज्ञशाला में सिद्धभूमि की इस अग्नि का आधान भी किया जाना है। अरणि मंथन से प्रकट हुई अग्नि यज्ञाग्नि होगी। यह सिद्ध अग्नि है। इसे कभी मंद नहीं पड़ना चाहिए, न ही तिरोहित होना चाहिए। अग्नि अखंड रहे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कमंडल से निकाल कर साधु ने वह अग्नि एक पात्र में रखी। यह दृश्य वहाँ मौजूद साधक अहोभाव से देख रहे थे। एकाध ने उठकर पूछा भी कि महाराजश्री कहां से पधारे हैं। आचार्यश्री ने कहा कि उस जगह से जहाँ से ऋषिसत्ताएँ इस यज्ञ का संचालन कर रही हैं। हिमालय के जिस अगम्य प्रदेश में सिद्धजन सैकड़ों साल से तप कर रहे हैं, वहीं के प्रतिनिधि के रूप में इन विभूति का आगमन हुआ है।

अग्नि के संबंध में उन्होंने विशेष कुछ नहीं बताया। बाद में कभी-कभार चर्चा के दौरान ही अंतरंग परिजनों को स्फुट विवरण दिये। संवत् १९८५ में आचार्यश्री ने हिमालय में सिद्धलोक की पहली यात्रा की थी। पहली बार अपनी मार्गदर्शक सत्ता के साथ, उन्हीं के पुण्य प्रदेश में रहे थे। उस रहस्य लोक की यात्रा करते हुए, आचार्यश्री ने सूक्ष्म देहधारी ऋषि सत्ताओं को हवन करते देखा था। तीस से अस्सी वर्ष की उम्र वाले चौबीस संन्यासी उस अगम घाटी में यज्ञ अग्निहोत्र कर्म में संलग्न थे। मंत्रोच्चार की शैली और स्वर से ही लगता था कि यह बहुत पुराने युग की बात है। उन यतियों की काया हृष्टपुष्ट और स्वस्थ थी।

गुरुदेव ने ही आचार्यश्री को बताया था कि ये ऋषिसत्ताएं हैं। विश्व में सद्धर्म का पोषण करने के लिए तप अनुष्ठान में निरत रहती हैं। इन्हें अपने मोक्ष और पुण्य के लिए साधना की आवश्यकता नहीं है। लोक में व्याप्त पतन और दारिद्रय के निवारण के लिए ही यहाँ तप कर रहे हैं। संवत् १९८५ की उस यात्रा में ही मार्गदर्शक सत्ता ने संकेत कर दिया था कि इसी तरह का एक साधनात्मक उपक्रम भविष्य में बनने वाले केन्द्र में भी चलाना है।

अग्नि स्थापन

अरणि मंथन से प्रकट हुई अग्नि को चार यज्ञकुंडों में स्थापित किया गया। उससे पहले बीच में स्थित प्रमुख कुंड में सिद्ध लोक से लाई अग्नि स्थापित की जानी थी। आचार्यश्री अपने आसन से उठे। पैरों में खड़ाऊं पहनी और धीरे-धीरे चलते हुए यज्ञशाला तक आये। माताजी भी उनके साथ चल रही थीं।

उनके हाथ में दिव्य अग्निवाला पात्र था। कुंड के पास बैठकर आचार्यश्री ने समिधाएं चुनी। उन्हें कुंड में स्थापित किया और मंत्रोच्चार के साथ अग्निदेव का आह्वान किया। यज्ञशाला के आसपास तमाम साधक खड़े हुए थे। वे भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मंत्रोच्चार कर रहे थे। स्वस्तिवाचन और रक्षा विधान आदि उपचार पहले ही संपन्न किये जा चुके थे। आचार्यश्री और माताजी ने अग्नि का आह्वान किया। 'स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीववरिम्णा—अग्नये नमः आवाहयामि स्थापयामि' का उच्चार करते हुए कपूर और घी में भीगी हुई रुई की मोटी बत्ती के बीच अग्नि रखते हुए अग्नि का आधान कर दिया। दोनों ने गंध, अक्षत, पुष्प आदि से अग्निदेव की आराधना की।

स्तुति, आराधना करते ही स्थापित अग्नि प्रज्वलित हो उठी। स्तवन के बाद समिधाधान और आज्याहुति दी गई। घी की सात आहुतियां देते ही ऊर्मियां बिखेरती हुई लपटें उठने लगीं। नीली, पीली और लाल रंग की ज्वालाओं को जागने में कुछ क्षण भी नहीं लगे। इनमें धुंए की एक भी रेखा नहीं थी। निर्धूम अग्नि को यज्ञाचार्यों ने अग्निदेव के प्रसन्न होकर आहुतियां ग्रहण करने का प्रतीक बताया है। इस अग्निस्थापना के बाद शेष कुंडों में भी अरणिमंथन से अग्नि प्रकट की गई। उन कुंडों में मंत्रशक्ति का प्रभाव परिलक्षित होता था।

शेष चार कुंडों में भी समिधाएं रखी गईं। इन कुंडों में अग्नि आधान के लिए विशेष सावधानी बरती गई। शमी और पलाश की लकड़ियों को रगड़कर ही अग्नि प्रकट की जानी थी। उससे कुछ चिंगारियां प्रकट होती और उन्हें ही अग्नि में परिवर्तित होना था। प्रकट हुई चिंगारियों को सहेजने के लिए रुई, कपूर, घी आदि की व्यवस्था के अलावा कुंड में पतली और सूखी लकड़ियां रखी गईं। पंडित लालकृष्ण पंड्या इस विद्या में पारंगत थे। उन्होंने प्रयत्न और सावधानी से समिधाधान किया। वे आचार्यश्री से बार-बार कह रहे थे कि चकमक पत्थर का प्रबंध भी रखा जाए। लकड़ियों के रगड़ने से अग्नि प्रकट होने और यज्ञकुंड के जागृत होने की बातें कथा पुराणों में बहुत मिलती हैं। प्रख्यात योगी यतियों के संबंध में भी उल्लेख मिलते हैं। लेकिन ऐसे प्रसंग कहीं देखे नहीं हैं।

उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि रुई, घी, शोरा, तेजाब आदि का प्रबंध किये बिना अग्नि के अपने आप प्रकट होने का आयोजन किया जा सकता है। आयोजन इसलिए कि उनके अनुसार अग्नि अपने आप प्रकट नहीं होती। वह दृश्य रचने के लिए उपाय किये जाते हैं। पंडितजी चार पांच बार अपनी बात कह चुके थे लेकिन आचार्यश्री ने हर बार अपना विश्वास दोहरा दिया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जून के तपते दिन थे। सुबह से ही सविता देव अपनी प्रखरता बिखेर रहे थे। उनका उदय हुए अभी कुछ ही मिनट हुए होंगे। पूर्व दिशा में उठते हुए उन्होंने थोड़ा झांका ही था, जैसे वे भी अरणि मंथन से अग्नि प्रकट होने के साक्षी बनना चाह रहे हों। सिद्धलोक से लाई अग्नि प्रज्वलित होने के बाद आचार्यश्री ने दूसरे कुंडों के पास अपना आसन लगाया। बांई ओर माताजी बैठी। यह कुंड मुख्य कुंड के नैऋत्य कोण पर था। प्रत्येक कुंड पर दो दो दंपत्ति बैठे थे। आचार्यश्री ने नैऋत्य कोण पर बने कुंड के पास आसन जमाया—माताजी भी उनके पास ही बैठी। दोनों ने शमी और पलाश की सूखी हुई लकड़ियां पकड़ी। हाथ बढ़ा कर कुंड तक पहुँच गये थे। कुंड में रची गई समिधाओं से हाथ की समिधा का स्पर्श कराया और ऋग्वेद के प्रथम मंडल के प्रथम सूक्त का पाठ करने लगे।

पाठ करते करते ही उन्होंने लकड़ियों को रगड़ा। लोग उत्सुक हो कर देख रहे थे। अरणियों के रगड़ते ही कुछ पल के लिए लपट उठी। चकमक पत्थर की रगड़ और पेट्रोल से अचानक जल उठने वाले लाइटरों से जैसी लौ उठती है, वैसी ही छोटी सी लौ निकली थी। उपस्थित लोगों ने देखा तो उनकी आंखें खुली रह गईं। वे विस्फारित नेत्रों से देखते चमत्कृत हो गए। लकड़ियों से प्रकट हुई शिखा ने अग्निकुंड में रखी समिधाओं का स्पर्श किया होगा कि लपटें चेत गईं। उसके तुरंत बाद घृत की आहुतियाँ दी गई।

अखंड अग्नि की स्थापना के बाद अरणि मंथन के प्रयोग में ही कर्मकाण्ड दोहराये गये। अब प्रमुख कुंड पर आचार्यश्री और माताजी बैठे। दूसरे कुंडों पर चार-चार दंपत्ति बिठाये गये। उस दृश्य को देखकर लोग अभिभूत थे। जो साधक उस पहली पारी में नहीं बैठ पाये थे, वे भी यज्ञशाला के बाहर खड़े समवेत स्वरों में निर्धारित वैदिक मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे। सूर्योदय से पहले आरंभ हुआ यज्ञ करीब सवा दो घंटे चला।

अखण्ड अग्नि की स्थापना और तीन दिन तक चलने वाले समारोह में यज्ञ अग्निहोत्र का पहला सत्र पूरा होने के बाद मंदिर में साधना उपचार चले। गायत्री प्रतिमा अभी आवृत्त थी। वहां घी का पंचमुखी दीपक जलाया गया। घियामंडी में 'अखंड ज्योति' की भांति पंचमुखी दीपक की देखभाल भी माताजी के जिम्मे ही थी। दीप भी उन्ही ने जलाया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

थोड़े से कार्यकर्त्ता साधकों की उपस्थिति में चर्चा करते हुए माताजी ने शेष तीन दिन के कार्यक्रम बता दिये थे। कार्यक्रमों की सामान्य रूपरेखा तो पहले ही बताई जा चुकी थी। माताजी ने साधना उपासना से संबंधित कार्यक्रमों के बारे में बताया। प्राण प्रतिष्ठा समारोह में साधकों के लिए खिचड़ी और दलिये का प्रबंध किया गया था। माताजी जब भोजन के बारे में बता रही थी तो साधकों ने कहा कि इसकी क्या आवश्यकता है, सभी लोग उपवास कर रहे हैं। माताजी ने कहा एक समय का भोजन भी उपवास की श्रेणी में आता है। साधकों को इन तीन दिनों में काफी भागदौड़ करना है। इसलिए पूर्ण निराहार कोई न रहे। साधकों ने उस निर्देश को चुपचाप मान लिया।

मंदिर के सामने साधकों ने अखण्ड जप शुरु किया। चौबीस-चौबीस साधकों की पारियाँ बनाई गई। समारोह में महिलाएँ भी बड़ी संख्या में आई थीं। कुछ रुढ़िवादी लोगों के लिए यही बड़े आश्चर्य की बात थी कि जिस गायत्री मंत्र को वे सिर्फ पुरुषों के लिए ही आराध्य मानते थे, उसका जप महिलाएं करें। गायत्री मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में वे बराबरी से हिस्सा लें, यह भी उनके लिए आश्चर्य का एक कारण था। महिलाएं भी मंदिर के सामने अखंड जप में बैठी थीं।

खुले में आवास

साधकों को ठहराने के लिए धर्मशाला में व्यवस्था की गई थी। लेकिन प्राय: सभी ने मना कर दिया। गायत्री मंदिर और यज्ञशाला के बीच का स्थान, सामने चामुण्डा देवी का परिसर और पास की बगीचियों से अच्छा कोई स्थान उन लोगों को सूझ नहीं रहा था। मौसम खुले में सोने जैसा था। उस दशा में सोने में सुगंध जैसी बात यह कि आचार्यश्री का सान्निध्य मिल रहा था। खुले में सोना खतरे से खाली नहीं था। वृंदावन मार्ग की वह जगह निर्जन में पड़ती थी। निर्जन होना समस्या नहीं थी। ढाई तीन सौ लोग जहाँ हों, वह अपने आप जन संकुल हो जाती थी। मुख्य समस्या उपद्रवी अराजक तत्वों की संभावित शरारतें थीं। वे परेशान करने के लिए कुछ भी कर सकते थे।

पहले दिन ही उनके कारनामे सामने आए। सोये हुए साधकों के बीच में तीन चार उठाईगीर घुस आए। शाम नौ बजे तक भजन कीर्तन और प्रवचन आदि चलते रहे। बाद में जब साधक सोने लगे तो उठाईगीर लोग भी उनके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बीच में जा पसरे। साधकों की जैसे ही नींद लगी, वे हाथ की सफाई दिखाने लगे। ज्यादा कुछ हाथ साफ नहीं कर पाये, क्योंकि साधकों ने नकदी और मूल्यवान वस्तुएं कार्यालय में जमा कर दी थीं। उनके पास रोजमर्रा के लिए काम चलाऊ कुछ रुपये और कपड़े लत्ते ही बचे थे। लेकिन चोर भी अपनी तरह के ही थे। उन्होंने कपड़ों को भी नहीं बख्शा। चार पांच लोगों के कपड़े और पास में जो नकदी थी वह ले उड़े।

सुबह पता चला तो बात फैल गई। लेकिन इस घटना को किसी ने गंभीरता से नहीं लिया। जिनका सामान गया था उनमें से एक राममूर्ति दीक्षित से आचार्यश्री ने पूछा कि आपका जो नुकसान हुआ है, बताइए। गायत्री मंदिर से मदद करायेंगे।

राममूर्ति दीक्षित ने उत्तर दिया, 'गायत्री मंदिर से मदद क्यों कराएंगे साहब। हम माखनचोर की नगरी में आए हैं। यहाँ साहूकारी की उम्मीद क्यों करें? उन्हीं के गणों ने अपना सहज कर्म किया है।' इतना कह कर दीक्षित और दूसरे लोग फी फी कर हंस दिये। बात आई गई हो गई। किसी ने पुलिस में रिपोर्ट लिखाने की बात छेड़ी। एक दूसरे साधक जगतसिंह का कहना था कि गया हुआ सामान वापस आने से रहा। पुलिस आयेगी। अपने ही भाईयों से पूछताछ करेगी। थोड़ी देर के लिए ही सही, रंग में भंग होगा।

बात इससे आगे नहीं बढ़ी। चोरी की घटना पर अफसोस वहीं पूरा हो गया। उस रात साधक सावधान होकर सोये। उन्होंने बारी बारी से पहरा भी दिया। शाम के सांस्कृतिक कार्यक्रम में यह घटना एक अलग ढंग से शामिल हुई। स्वामी प्रेमानंद ने अपने व्याख्यान में इसका जिक्र किया। उन्होंने कहा राम जब वनवास में थे तो वहाँ के कोल किरात उनके दर्शन करने आये। उनमें कुछ लोग व्यवसाय से चोर बटमार भी थे। आर्थिक दृष्टि से वे बहुत दरिद्र थे। राम की महिमा सुनकर वे बोले, 'हमारे पास आपकी सेवा के लिए कुछ नहीं है। लेकिन हम आपकी सेवा करना चाहते हैं। बहुत सोच विचार के बाद एक ही बात सूझी है कि हम लोग आपके यहाँ चोरी नहीं करेंगे। हमारी ओर से यही बड़ी सेवा होगी। 'नाथ हमार यही सेवकाई, किए न बासन वसन चुराई।' अपने क्षेत्र में आये लोगों को हम बख्शते नहीं हैं।'

सुनकर भगवान मुसकराये बिना न रह सके। प्रवचन सुन रहे लोग भी खिलखिलाकर हंस दिये। २१ जून की शाम को मंच पर मौनी बाबा ने 'तांडव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नृत्य' प्रस्तुत किया। यह एक सांस्कृतिक कार्यक्रम था। लेकिन बहुत सजीव था। मौनी बाबा आश्रम धर्म के अनुसार गृहस्थ थे। उनका असली नाम पंडित दुर्गाप्रसाद था लेकिन मौन उनकी जीवन चर्या में शामिल हो गया था। वे रविवार को मौन व्रत रखते थे, सूर्योदय और सूर्यास्त के समय भी एक घड़ी (करीब चौबीस मिनट) मौन रखते थे, भोजन के समय भी नहीं बोलते थे। उन्होंने एक नियम यह भी बना रखा था कि कोई बात बुरी लगेगी या किसी स्थिति में गुस्सा आयेगा तो उसे बोलकर व्यक्त नहीं करेंगे। शोक, विषाद और रोष के क्षणों में चुप रह जायेंगे। अपने इन व्रतों के बारे में उन्होंने कम ही लोगों को बताया था। संपर्क में आने वाले लोग उनके व्यवहार से ही जानते थे कि वे चुप रहते हैं। इसीलिए उनका नाम 'मौनी बाबा' हो गया था।

'तांडव नृत्य' उनका अपना ही रचा हुआ संयोजन था। आधा घंटा तक तांडव की विभिन्न मुद्राएं अभिनीत की। यह कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए उन्होंने शिव का वेष धारण नहीं किया। सिर पर जटाएँ और लंबी दाढ़ी मूंछ रखे हट्टे कट्टे शरीर के मौनी बाबा ने कस कर धोती बांधी हुई थी। कमर से ऊपर कुछ नहीं पहना था। गले में रुद्राक्ष की माला पहनी हुई थी। रूप नहीं धारण करते हुए भी वे अपने अभिनय से शिव की उपस्थिति का आभास करा रहे थे। नृत्य के समय बज रहे वाद्यों ने भी वातावरण को सजीव कर दिया। नृत्य जब अपने उभार पर था तो पास ही बसे गांव जयसिंहपुरा से लोग उठकर आ गये। कुछ तो यह समझे थे कि दशहरा मन रहा है। गंगा दशहरा था भी सही लेकिन ग्रामीणों की अपनी समझ के अनुसार दशहरे के समय होने वाले राम-रावण युद्ध की प्रतीती हो रही थी।

जेठ की सुबह बरस उठी

आचार्यश्री ने उस दिन भी कोई उद्‌बोधन नहीं दिया। उनका लिखा हुआ संदेश पढ़कर सुना दिया गया। माताजी ने एक भजन गाया था और गायत्री चालीसा का सस्वर पाठ भी किया। प्रवचन या संदेश जैसा उन्होंने भी कुछ नहीं किया। स्वामी दिव्यानंद, पंडित लक्ष्मीकांत पंड्या, प्रभुदयाल और बृजेश नारायण ने ही मंच से अपने विचार रखे। उनके उद्‌बोधनों का सार यह था कि राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक स्वतंत्रता भी प्राप्त करनी चाहिए। ये लक्ष्य रचनात्मक प्रयासों से ही प्राप्त किये जा सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अगले दिन ही प्राण प्रतिष्ठा का मुहूर्त था। तीन-दिन से छाये हुए बादल और घनीभूत हुए थे। नवमी-दशमी की रात थी। सामान्य दिनों में इस रात को देर तक चाँद अपनी किरणें जेठ की तपती हुई धरती पर बिखेरता रहता है। लेकिन उस दिन चन्द्रमा बादलों के पीछे कहीं छुप गया था। उस कमी को शायद पवन देव पूरा कर रहे थे। दूर कहीं वर्षा हुई थी। उसको छूती हुई हवाएं तपोभूमि में शीतलता फैलाती हुई बह रहीं थीं। जेठ-आषाढ़ की ठंडी हवाऐं उमस भरी होती हैं। लेकिन वहाँ नमी का कहीं नामोनिशान नहीं था। प्राण-प्रतिष्ठा समारोह शुरु होने के पहले ही दिन आचार्यश्री ने कहा था कि पूर्णाहुति पर वर्षा होगी। साधकों को वह कथन याद आ रहा था।

गायत्री जयन्ती की सुबह तड़के चार बजे प्रतिमा के सामने बारह कन्याएं बिठाई गई। आठ से बारह वर्ष की इन कन्याओं को विधि-विधान पहले ही समझा दिया गया था। प्रतिमा पर्दे से पीछे थी और ढंकी हुई भी थी। कन्याओं ने पिछले तीन दिन दूध और गंगाजल पर ही व्यतीत किये थे। बाहर प्रांगण में साधक बैठे थे। षटकर्म आदि प्रारम्भिक कृत्य सम्पन्न होने के बाद वे कन्याऐं गर्भ गृह में चली गई। बाहर मंत्रोच्चार होता रहा। प्रतिमा में प्राण-प्रतिष्ठा का मुख्य उपचार दश-विध स्नान करवाया गया। यज्ञ भस्म, मिट्टी, गोमय और गोमूत्र से स्नान के बाद छः स्नान और करवाये गये। दूध, दही, घी, औषधि, कुशोदक और शहद से स्नान के बाद शुद्ध जल से स्नान करवाया गया। प्राण आवाहन और न्यास के बाद प्राण स्थिरीकरण की प्रक्रिया आरम्भ हुई। दौ-सौ चालीस साधकों ने अपनी दोनों हथेलियां प्रतिमा के सामने की और मंत्र-पाठ किया।

गर्भ-गृह में आचार्यश्री और माताजी के अलावा कुंवारी कन्याएं मंत्र पढ़ रहीं थीं। उस समय बादलों के गरजने की आवाज सुनाई दे रही थी। बिजलियाँ चमकी। बार-बार कड़कड़ाई बिजलियों से साधकों को लगा कि जैसे इन्द्र का वज्रपात होने जा रहा है। फिर पानी की मोटी-मोटी बूंदें बरसने लगीं। साधक थोड़े परेशान हुए। शायद इधर-उधर भी होते, लेकिन किसी ने कहा अपने स्थान पर खड़े रहें अभी बारिश नहीं होना है। यह इन्द्रदेव के आगमन का प्रमाण भी हो सकता है। सचमुच मोटी-मोटी बूंदें थोड़ी देर बरस कर थम गईं। बिजलियाँ वैसे ही रह-रह कर चमकती रहीं। गायत्री प्रतिमा के शोभा शृंगार के बाद गर्भ गृह के द्वार पर लगा पर्दा खोल दिया गया। छः कन्याएं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रतिमा के एक तरफ और छः कन्याएं प्रतिमा के दूसरी तरफ खड़ी थी। उनके हाथ में आरती के थाल सजे हुए थे। आचार्यश्री प्रतिमा के दांई ओर और माताजी बाई ओर खड़ी थीं।

बाहर आंगन में खड़े साधकों ने गायत्री माता की पहली झलक देखी। जैसे सौन्दर्य, शोभा, वैभव और देवत्व का भंडार खुल गया हो। हजारों रत्न और मणि मुक्ताएं जैसे एक साथ चमक उठे हों। कन्याओं के हाथ में आरती के थाल, उनमें जलते आरती के दीपक, पंचमुखी घृतदीप और उनमें जगमग चमकती भगवती आदि शक्ति का विग्रह। बाहर बिजलियां चमक रहीं थीं। साधकों को लगा कि वेदमाता के सौन्दर्य के सामने आकाश की बिजलियों की चमक फीकी है।

गायत्री पुरश्चरण पद्धति में दी गई आरती के साथ कन्याओं के हाथ थालों को घुमाने लगे। दायें से बायें और दायें और वापस बायें। उसके बाद देवप्रतिमा को आवृत करता हुआ वर्तुल। जब तक आरती स्तोत्र चलते रहे, थाल भी घूमते रहे। आरती सम्पन्न होने के बाद नमस्कार। बाहर खड़े साधक मंत्रमुग्ध से देखते रहे। उनके लिए जीवन की यह दुर्लभ और शायद दोबारा न आने वाली घड़ी थी।

उसी सुबह तीन दिन से चले आ रहे महायज्ञ की पूर्णाहुति भी हुई। पूर्णाहुति होते ही बादलों ने बरसना शुरु किया। रह-रहकर पूरे दिन वर्षा होती रही। आगन्तुकों का मानना था कि यज्ञ सफल हुआ। आचार्यश्री से किसी ने पूछा कि वर्षा होना यज्ञ की सफलता का प्रमाण क्यों है?

उन्होंने कहा, 'वर्षा हमारे जीवन को प्रभावित करने वाली प्रकृति की प्रमुख विशेषता है। वैदिक काल में इसे इन्द्र का अनुग्रह समझा जाता था। इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ याग होते थे। लोग समझते थे कि इन्द्र देव प्रसन्न हो गये। यह पौराणिक उल्लेख है। इस धारणा का मर्म अलग है। यज्ञ से प्रकृति में सूक्ष्म परिवर्तन होते हैं। यह परिवर्तन प्रकृति को आन्तरिक रूप से समृद्ध करते हैं। वह समृद्धि ही वृष्टि के रूप में दिखाई देती है।'

आचार्यश्री कुछ देर रुके, फिर बोले, 'यह बाहरी प्रतीक है। इस आयोजन के परिणाम अगले दस-बीस पच्चीस वर्षों में दिखाई देंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्रतेन दीक्षामाप्नोति

प्राण प्रतिष्ठा समारोह संपन्न हुआ। साधकों की विदाई भी हो गई। वापस जाते हुए उनका मन विचित्र भावों से सराबोर था। आषाढ़ के पहले दिन बरसने वाले बादलों की बूंदे तन मन को जैसी शीतलता और शांति देती हैं, वैसी ही अनुभूति समारोह में आये साधकों को हो रही थी। ऋतु बदलने और भीषण गर्मी से शीतल आर्द्रता में प्रवेश करने जैसा सुख संतोष इस समारोह में मिला था। आचार्यश्री का सौंपा हुआ यह दायित्व निजी सुख संतोष से भी ज्यादा महत्वपूर्ण लग रहा था कि गायत्री तपोभूमि में जिस गंगा का अवतरण हुआ है, उसका नीर देश विदेश में अकुला रहे संतप्तजनों तक भी पहुँचना चाहिए। आए डेढ़ हजार साधकों में से एक सौ अस्सी ने संकल्प लिया था कि अगली गायत्री जयंती तक दस दस लोगों को और तैयार करेंगे।

समारोह में शामिल हुए परिजन अपनी चेतना में दो संकल्प संजो कर जा रहे थे। उनमें एक था गायत्री साधकों के एक समुदाय का गठन और दूसरा स्वयं को अध्यात्म मार्ग पर ले चलने के लिए मुमुक्षुओं को दीक्षित कराना। दीक्षा अर्थात् साधना उपासना के विशिष्ट अनुशासन से प्रतिबद्ध होना। संगठन का विचार आचार्यश्री के चिंतन में अरसे से चल रहा था। सूक्ष्म जगत में यह संकल्प आचार्यश्री ने महापुरश्चरण आरंभ करने से पहले ही कर लिया होगा। जिस दिन उनकी मार्गदर्शक सत्ता ने उन्हें चौबीस महापुरश्चरणों की साधना के लिए कहा था, उसी दिन से वह संकल्प व्यक्त होने लगा था। १९५३ की गायत्री जयंती से कुछ समय पहले से वे इस बारे में परिजनों से सीधे बात करने लगे थे।

पहला संवाद माताजी से ही हुआ था। घियामण्डी स्थित आवास और कार्यालय में वे, माताजी और कुछ परिजन बैठे हुए थे। चर्चा चल रही थी। कोई प्रसंग छिड़ा और उसी संदर्भ में माताजी ने कहा, 'हमारे यहाँ धन को तिरस्कार की दृष्टि से क्यों देखा जाता है साहब? पता है कि सभी लौकिक काम धन से ही होते हैं। उसके बिना गाड़ी एक इंच भी आगे नहीं बढ़ती। लोग लक्ष्मी की पूजा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

धूमधाम से करते हैं। उसका आशीर्वाद भी चाहते हैं। धनवान का आदर करते हैं लेकिन यह भी कहते हैं कि धन संपदा पाप और पतन का कारण है। उसका त्याग करने वाले धनवानों की तुलना में ज्यादा आदर पाते हैं। बल्कि पूजे जाते हैं।'

आचार्यश्री ने कहा कि ऐसा हमेशा नहीं था। प्राचीनकाल के ऋषि आश्रम अति समृद्ध हुआ करते थे। एक-एक गुरुकुल में हजारों छात्र पढ़ते थे। ऋषियों को यही पता नहीं होता था कि उनके आश्रम में कितना धन वैभव है। संकट के समय राजा अपनी सेनाओं और प्रजाजनों सहित महीनों तक आश्रमों में आश्रय लिये रहते थे। इसलिए यह तो नहीं कह सकते कि धन को तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता था। बीच के अंधकार युग में ही यह मूढ़ मान्यता जन्मी कि धन संपदा से पाप, पतन और रोग शोक आते हैं।

कुछ देर रुककर वे बोले, 'सत्पुरुषों को धन के प्रति वितृष्णा नहीं दिखानी चाहिए। वे प्रचुर मात्रा में उपार्जन करें। वे जो कमाएं, उसका एक अंश समाज के उत्कर्ष में भी खर्च करें। अंधकार युग ने धन के प्रति जिस तरह तिरस्कार की भावना को जन्म दिया, उसी तरह संगठन के प्रति भी उपेक्षा बरती। समाज में अनीति अन्याय इसलिए हावी नहीं हैं कि वह सत्व की तुलना में बलवान है। बल्कि इसलिए आतंक मचाए हुए है कि अच्छाई संगठित नहीं है। अच्छे लोगों को, सत्पुरुषों को संगठित होना चाहिए।'

आगे की चर्चाओं में गायत्री परिवार का स्वरूप स्पष्ट उभरता आया। उसकी रूपरेखा बनती गई। गायत्री तपोभूमि की प्राण प्रतिष्ठा के दिन गायत्री परिवार के नाम से एक छोटा मोटा संगठन शुरु हुआ। आचार्यश्री ने इसका स्वरूप स्पष्ट किया कि हम लोग कोई सख्त अनुशासन नहीं थोप रहे। यह सिर्फ परिवार है। परिवार में लोग जिस तरह एक दूसरे की आवश्यकताओं का ध्यान रखते हैं, उसी तरह हम लोग भी एक दूसरे के आत्मिक विकास का ध्यान रखेंगे।

गायत्री माता के सामने गायत्री परिवार की स्थापना के लिए संक्षिप्त सी घोषणा की गई थी। वहां मौजूद साधकों और आयोजन के स्वरूप को देखते हुए उस घोषणा का तत्काल महत्व नहीं था। घोषणा के अगले उपक्रम में माताजी ने कहा था कि इसका व्यापक प्रभाव होगा। अभी जो लोग इकट्ठे हुए हैं, वे नींव के पत्थर की तरह हैं।

गायत्री परिवार की स्थापना वहां उपस्थित साधकों के चित्त और चेतना में हुई। आरंभ गायत्री दीक्षा के साथ हुआ। अखंड अग्नि से दीप्त यज्ञशाला में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पूर्णाहुति से पहले ही दीक्षा संपन्न हुई। आचार्यश्री ने कहा कि आदिशक्ति की प्राणप्रतिष्ठा के साथ प्रथम मंत्र दीक्षा भी यहीं संपन्न होगी। वहां गिने चुने लोग ही थे। वे कौतूहल से देखने लगे कि प्रथम दीक्षा किसे मिलती है?

वेदमाता की प्रतिमा के सामने आराधन व्यवस्था देख रही माताजी, इस घोषणा के सुनते ही यज्ञशाला में आ गई थीं। उन्होंने कहा, 'मैं आपकी प्रथम शिष्य होने का सौभाग्य प्राप्त करना चाहती हूँ। आपकी अर्धांगिनी होने के नाते यह मेरा विनम्र अधिकार भी है।'

माताजी ने शांत, संयत और संतुलित भाव से अपनी बात कही थी। वहां बैठे और आसपास खड़े या यज्ञ के प्रबंध में लगे लोग उनकी बात सुन कर जहां के तहां स्थिर हो गए। माताजी का यह निवेदन अप्रत्याशित सा था। लोग समझ रहे थे कि पहले से कोई सूची बनी होगी। उसके अनुसार बारी-बारी से नाम लिया जाएगा और मंत्र दीक्षा होगी। कुछ लोग घोषणा से इसलिए भी सन्न रह गए कि उन्हें माताजी पहले से ही दीक्षित लग रहीं थीं। अमरेली से आये निरंजन भट्ट ने कहा भी सही कि माताजी तो पहले ही मंत्रदीक्षा ले चुकी होंगी। हम लोग यही समझ रहे थे। आश्चर्य की बात है।

अभिनव आरंभ

आचार्यश्री ने यज्ञ भगवान और गायत्री माता को इस दीक्षा के अधिष्ठातृ देव और शक्ति बताया। कहा कि आज का आयोजन आरंभ है। इसके बाद दीक्षा, साधना, व्रत, दक्षिणा और आत्मकल्याण के मार्ग पर साधकों को अनवरत प्रवेश मिलता रहेगा। माताजी लौकिक दृष्टि से हमारी धर्मपत्नी हैं लेकिन असल में वे मातृसत्ता की प्रतिनिधि हैं। धर्मपत्नी के रूप में उनके लौकिक दायित्व पूरे हुए। वे और हम अपनी मार्गदर्शक सत्ता के संकेतों निर्देशों का पालन करते हुए ही महाकाल की आराधना करेंगे। यहां उन्होंने दीक्षा ली। यह ठीक है। उन्होंने हमें गुरु के स्थान पर चुना। वे हमारे लिए श्रद्धा और वात्सल्य का साकार रूप है। जिस तरह आप उन्हें माता के रूप में देखते है, हमारे लिए भी वे मां के समान ही हैं।

आचार्यश्री ने इस घोषणा के बाद यज्ञशाला के बाहर व्यवस्था में लगे एक कार्यकर्त्ता को नाम लेकर पुकारा 'पहाड़ियाजी।' वह कार्यकर्त्ता पुकार सुनते ही हाथ का काम दूसरे को सौंप कर दौड़ते हुए यज्ञशाला में आये। पहाड़िया जी उस समय गेट के पास बनी कुइयां से पानी खींच रहे थे। पानी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वहाँ आये साधकों के लिए भोजन बनाने और पीने के काम में आता था। लोगों ने पिछले तीन दिन से उन्हें सुबह शाम इसी काम में निरत देखा था। न प्रवचन सुनने गये, न यज्ञ अग्निहोत्र में बैठ पाये। हर घड़ी वे पानी के इंतजाम में ही लगे रहे। यह पहला अवसर था जब उन्होंने अपना काम छोड़ा और उस जगह से हटे।

आचार्यश्री ने कहा, 'आओ पहाड़ियाजी। तुम भी दीक्षा लो। यहां आकर बैठो।' उन्होंने यज्ञकुंड के पास की जगह का इशारा किया। पहाड़िया जी वहां बैठ गये। यज्ञशाला की परिक्रमा पार करते हुए उनके हाथ आचार्यश्री की ओर प्रणाम की मुद्रा में जुड़े हुए थे। बैठते हुए भी करबद्ध ही थे। पवित्रीकरण आचमन आदि षटकर्म संपन्न करते हुए उन्होंने 'ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति.....' आदि मंत्र सुने, आशीर्वाद ग्रहण किया और आचार्यश्री से व्रत लेकर शेष जीवन उन्हीं के काम में लगाने का संकल्प लिया।

पहाड़िया जी-पूरा नाम बद्री प्रसाद पहाड़िया बांदा (उ०प्र०) के निवासी थे। पिछले पंद्रह साल से आचार्यश्री के साथ थे। साथ क्या थे, उनके बताये काम कर रहे थे। प्राण प्रतिष्ठा समारोह से साल भर पहले वे तीर्थों की यात्रा पर निकल पड़े थे। यात्रा का उद्देश्य था-गायत्री मंदिर के लिए वहां का जल और रज संग्रह करना। और लोग भी इस काम में जुटे थे लेकिन वे अपने आसपास के तीर्थों से ही संचय करके आये थे। पहाड़िया जी ने पांच सौ से ज्यादा तीर्थों का जल और वहां का रज इकट्ठा किया था।

बांदा के इस कार्यकर्त्ता ने वर्षों पहले पारिवारिक दायित्वों से लगभग विराम ले लिया था। सन् १९४४ में उनकी पत्नी का निधन हो गया। तब उनकी आयु करीब पैतीस वर्ष रही होगी। स्वजन संबंधियों ने सलाह दी कि दूसरा विवाह कर लें। अभी उम्र हुई ही क्या है? सभी तरफ से आते आग्रह ने पहाड़ियाजी के मन में दूसरा विवाह करने की इच्छा जगा दी। निश्चय तो नहीं किया, लेकिन मन करने लगा कि अभी आधा जीवन शेष है। बचपन के पंद्रह साल अबोध या किशोरावस्था के कच्चे खाते में डाल दें तो जिंदगी देखी ही क्या है? घर-गृहस्थी का जितना सुख देखा है, उससे दो गुना समय अभी बाकी है।

पहाड़िया जी इस हद तक सोचने के बाद फिर सकुचा भी जाते थे। मन का एक कोना उन्हें सचेत कर देता। दूसरी दिशा में सोचने लगते। थोड़ी देर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बाद फिर मन का पेंडुलम विलोम दिशा में घूमने लगता। करीब महीने भर तक मन झूलता रहा। द्वन्द्व से बाहर आने और किसी नतीजे पर पहुँचने के लिए वे आचार्यश्री के पास गए। वहां से दिशा मिली कि दूसरा विवाह नहीं करें। अपना शेष जीवन समाज के लिए लगायें। इस परामर्श को आदेश की तरह मान कर उन्होंने पलट कर नहीं देखा। इससे पहले वे कुछ दिन राजनीति में भी सक्रिय रहे थे। आचार्यश्री ने उसका निषेध किया तो शांतिकुंज की स्थापना के बाद पहाड़िया जी स्थाई रूप से यहीं आकर बस गये थे। अंतिम समय तक वे आश्रम के भोजनालय की व्यवस्था में जुटे रहे थे।

विरोध का प्रतिरोध

पहाड़ियाजी के बाद आचार्यश्री ने और लोगों को भी दीक्षा दी। संख्या की दृष्टि से तब बहुत लोग नहीं थे। वहां आये साधकों ने अपने छोटे बच्चों के यज्ञोपवीत संस्कार भी कराये। यज्ञशाला में अठारह किशोरों के संस्कार हुए। सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार का चलन नया नहीं था। महामना मदन मोहन मालवीय तीस पैतीस साल पहले इस तरह का अभियान छेड़ चुके थे। मथुरा में इस तरह की पहल नई थी। नई नहीं रही हो तो भी विरोध के लिए काफी थी। शहर में जैसे ही पता चला कि गायत्री मंदिर में सामूहिक यज्ञोपवीत हो रहा है, तीन पंडित दौड़े चले आये। उनकी अपनी कोई सामर्थ्य या प्रतिष्ठा नहीं थी। छत्ता बाजार और विश्रामघाट के पास दो मंदिरों में पूजा पाठ करते थे। आते ही उन्होंने बवाल मचाने की कोशिश की। चिल्लाने लगे धर्म भ्रष्ट कर दिया। जनेऊ क्या इस तरह दिया जाता है? रोको रोको!

वे शोरगुल मचा रहे थे कि सत्यदेव नामक एक युवा गायत्री मंदिर से बाहर निकला। उसने तीनों पंडितों से कुछ पल के लिए चुप हो जाने को कहा। यह भी कहा कि अपनी बात कहने के बाद मै भी तुम लोगों के साथ हो जाऊंगा। पंडित पुजारी चुप हुए तो सत्यदेव ने कहा, 'आप लोग तो है मंदिर के पुजारी। पूजा पाठ और कर्मकांड से ही अपनी गाड़ी चलाते हैं। इस ब्राह्मण (आचार्यश्री) ने सत्ताइस साल तक जौ की रोटी और छाछ पर रहकर तप किया है। इससे क्या होड़ लेंगे? शोरगुल मचाएंगे तो समाज के समझदार लोग इसी ब्राह्मण की बात में वजन देखेंगे।'

सत्यदेव ने इसके बाद दूसरे ढंग से समझाया। कहा कि ज्यादा शोरगुल मचाने पर यहां पिट जाने का डर भी है। हजार आदमी बाहर से आये हुये हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कौन तुम्हें मारपीट जाएगा पता ही नहीं चलेगा। वे तुम्हें सबक सिखाकर शाम को ही खिसक जाएंगे। क्यों अपनी शामत बुलाते हो?

यह नसीहत काम कर गई। बवाल मचाने वाले तीनों लोग वहां से चुपचाप खिसक गये। शाम को वृंदावन के गोस्वामी शरण बिहारी, स्वामी परमानंद, पंडित चतुरानन, गोविंद शर्मा आदि आए। उन्होंने सामूहिक यज्ञोपवीत पर आपत्ति की। कहा कि यज्ञोपवीत का एक विधि विधान है। कम से कम तीन दिन तक समारोह होता है। धूमधाम से संस्कार कराया जाता है। उससे बटुक को उपवीत का महत्त्व पता चलता है। वह मर्यादा समझता है और प्राणपण से उसे निबाहता है।

आचार्यश्री ने इन आक्षेपों का निराकरण दो टूक शब्दों में कर दिया। उन्होंने कहा, 'वैसी धूमधाम से कितने लोग संस्कार करा पाते हैं। ब्राह्मणों में भी उसका चलन घटता जा रहा है जबकि यज्ञोपवीत सनातन धर्म मानने वालों का प्रतीक चिह्न है। उनकी पहचान है। हम कोई आसान उपाय नहीं खोजेंगे तो यज्ञोपवीत परम्परा ही लुप्त हो जाएगी।'

'सामूहिक दीक्षा का प्रचलन पहले भी रहा है। आश्रमों में ऋषि जब बालकों को अपने संरक्षण में लेते थे। उन्हें शिष्य के रूप में स्वीकार करते थे, तब सैंकड़ों छात्रों को एक साथ उपवीत धारण कराया जाता था। हमें उस परंपरा को अपनाने से हिचकना नहीं चाहिए।' आचार्यश्री की इन बातों ने विद्वानों को निरुत्तर कर दिया। उन्हें इस समाधान को काटने के लिए कोई तर्क नहीं सूझ रहा था। इसलिए वे चुप हो गये। उनके चेहरे पर विरोध और द्वेष के भाव साफ झलक रहे थे। चलते चलते आचार्यश्री ने उन्हें इतना और कहा कि आप हमारी पद्धति में कहीं कोई दोष हो तो बताइए। आपके हमारे बीच मतभेद हो सकते हैं लेकिन उद्देश्य दोनों के समान हैं। सनातन धर्म का पुनरुद्धार। धर्म और संस्कृति का उत्थान। आप भी यही चाहते हैं न।'

आचार्यश्री की बात ने तो उन विद्वानों का मर्म छू लिया था। पर वे मन से पूरी तरह अनुकूल नहीं हो पाये थे। उठते उठते उन्होंने कहा, 'उद्देश्य तो सही है लेकिन मार्ग भी शास्त्र सम्मत होना चाहिए। इस बारे में चर्चा के लिए हम शीघ्र ही मिलेंगे।'

गायत्री तपोभूमि की स्थापना के बाद आचार्यश्री ने पहला पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ वाराणसी में किया। यह सन् १९५३ में नवंबर की बात होगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

घोषणा जून में ही कर दी थी। प्राण प्रतिष्ठा समारोह में वाराणसी से आये द्विजेन्द्रनाथ त्रिपाठी ने ही पहल की थी। आगरा, जयपुर और नासिक से भी प्रस्ताव था। लेकिन आचार्यश्री ने आरंभ वाराणसी से किया। वहां के कार्यकर्त्ताओं ने भी आग्रह किया था। त्रिपाठी जी ने कहा था कि आपने वहां मालवीय जी से उपवीत दीक्षा ली है। काशी का अधिकार पहले बनता है।

इस तर्क को आचार्यश्री ने विनोद में लिया। उन्होंने कहा, 'इस न्याय से मुझे दूसरा यज्ञ हिमालय के सिद्धलोक में करना चाहिए। क्योंकि अपनी मार्गदर्शक सत्ता का निवास वहीं है।'

फिर उन्होंने कहा, 'काशी में महायज्ञ का आयोजन एक अलग दृष्टि से महत्वपूर्ण है। वह भारत की सांस्कृतिक राजधानी है। विद्वानों और साधु संतों की इस नगरी में आयोजन का विशेष अर्थ होगा।' दूसरे नगरों में भी यज्ञ आयोजनों की बात स्वीकार कर ली गई।

त्रिपाठीजी ने वाराणसी पहुँचते ही महायज्ञ की तैयारी शुरु कर दी। वाराणसी स्टेशन पर उतरने के बाद वे सिर्फ अपना सामान रखने के लिए घर गये। सामान रखते ही वे मां आनंदमयी के आश्रम गये। आचार्यश्री ने वहां जाने के लिए कहा था। मां उस समय आश्रम में नहीं थीं। वे पश्चिम बंगाल की यात्रा पर गई हुई थीं। संकल्प के अनुसार त्रिपाठीजी ने एक पत्र लिखा और उनके आश्रम में छोड़ा। पत्र में भगवान शिव की नगरी में यज्ञ करने का संकल्प व्यक्त किया था।

विश्वनाथ की नगरी में

आश्रम से निपटते ही त्रिपाठीजी काशी विश्वनाथ मंदिर गये। इसी नाम का एक और मंदिर काशी हिंदू विश्वविद्यालय में भी आकार ले चुका था, इसलिए लोग मूल काशी विश्वनाथ को स्वर्णमंदिर के नाम से याद करने लगे थे। यही नाम प्रसिद्ध हो चला था। त्रिपाठीजी ने शिव की आराधना की। वे शिवलिंग और कूप के बीच में कुछ देर बैठे, शिवस्तोत्र का पाठ करते रहे। पाठ करते हुए उनका चित्त अनायास 'ध्यान' में प्रवेश कर गया। वे देखने लगे कि शिव के विग्रह से एक विराट आकृति प्रकट हुई है। जटाजूट वाली यह आकृति शिव की ही थी। वह आकृति कुपित दिखाई दे रही थी। विग्रह से एक कदम बढ़ाते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ही विस्फोट की सी आवाज हुई। वह आवाज थमी नहीं। निरंतर गूंजने लगी। उस प्रचण्ड कोलाहल में ही आदिनाथ की आकृति नृत्य करने लगी। कोलाहल में भी एक लय थी। कोलाहल के साथ चारों दिशाओं में ज्वालाएं फूट पड़ी और धधकते लगीं। क्रंदन सुनाई देने लगा। फिर कंकाल आकृतियाँ दिखाई दीं। वे शिव के नृत्य में सहभागी बन गई थीं। कुछ देर बाद नृत्य थमा—शिव शांत और प्रसन्न मुद्रा में आये। धीरे-धीरे चारों तरफ शांति हो गई।

त्रिपाठीजी ने इस ध्यान, योगनिद्रा या दिवास्वप्न को आश्चर्य की तरह लिया। समझने के लिए वे कई अटकलें लगाने लगे। लेकिन किसी भी विषय पर मन स्थिर नहीं हुआ। बाद में यथा अवसर इस अनुभूति के बारे में आचार्यश्री से पूछा था। उन्होंने बताया था कि यह वाराणसी के आयोजन को भगवान भूतभावन का आशीर्वाद है। हमारी लोकसाधना सफल होगी। यह अर्थ कहने समझने के लिए है। असल अर्थ यह है कि भगवान शिवशंकर सड़ी गली दुनिया को जलाकर नई दुनिया रचने की लीला कर रहे हैं। शिव का वह नृत्य तांडव—पुराने को नष्ट करने के लिए है। तुमने वह दृश्य देखा, इसका अर्थ यह कि उनकी लीला में तुम भी एक सहचर हो।

महायज्ञ की सूचना देने के आठ दस दिन बाद मां आनन्दमयी अपने आश्रम में आई। त्रिपाठीजी को पता चला तो वे दौड़े हुए से गये। मां से मिलने के लिए श्रद्धालुओं को प्रतीक्षा करना पड़ती थी। संयोग से उस दिन आठ दस लोग ही बाहर बैठे थे लेकिन त्रिपाठी जी को करीब तीन घंटे बैठे रहना पड़ा। मां उस समय समाधि अवस्था में चली गई थीं। समाधि खुली तो उन्होंने वहां नियुक्त साधक से कहा, 'आचार्य श्रीरामजी के शिष्य को बुलाओ'

कक्ष से बाहर जाकर साधक ने इसी संबोधन से पुकारा। त्रिपाठीजी के लिए यह थोड़ा आश्चर्य का विषय था। मथुरा में 'आचार्यश्री' का पट्टाभिषेक होने की बात बहुत प्रचारित नहीं हुई थी। अखबारों में भी नहीं छपी थी। फिर मां तो वैसे भी अखबार आदि नहीं पढ़ती थीं। उन्हें कैसे पता चल गया कि उनके गुरुदेव को 'आचार्यश्री' की प्रतिष्ठित उपाधि से विभूषित किया जा चुका है। त्रिपाठीजी भीतर गये। मां को दूर से ही प्रणाम किया। अधमुंदी आंखों से उन्होंने देखा और कहा बैठ जाओ।

बैठने के बाद मां ने कहा, 'पत्र देख लिया था। विश्वनाथ की नगरी में भगवान स्वयं उस आयोजन में उपस्थित रहेंगे। हम जैसे सेवकों के लिए तो यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संभव ही कहां है कि उस आयोजन से अलग रह सकें।' मां ने अपनी बात जैसे ही पूरी की, त्रिपाठीजी ने कहा, 'मां एक बात बताइए। हम लोग संख्या में बहुत कम हैं। भीतर से विश्वास उभरता है कि भगवान ने हमें माध्यम बनाया है। कहीं हम किसी आवेश में तो नहीं हैं।'

मां ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। वे अस्फुट हंसी हंसकर रह गई। फिर बोली, 'अपने गुरु में श्रद्धा रखो। वह विलक्षण विभूति हैं। जाओ प्रसन्न रहो। तुम्हारे मन में आया था कि उनके पट्टाभिषेक का समाचार मुझे कैसे ज्ञात हो गया? मुझे ही नहीं इस मार्ग पर चल रहे सभी साधु पुरुषों को यह पता है।'

गायत्री महायज्ञ की तिथियां दीवाली बाद की तय हुई। देवोत्थानी एकादशी को हुए समारोह में पांच सात सौ लोगों ने भाग लिया। कारणों की मीमांसा में जाना आवश्यक नहीं है। ये सभी लोग साधक श्रेणी के थे। कोई प्रतिष्ठित विद्वान, संत या नेता आयोजन में नहीं आया। मां आनंदमयी उन दिनों काशी में नहीं थी। उनके नहीं आने को आचार्यश्री ने सहज भाव से लिया। त्रिपाठीजी ने इस ओर ध्यान दिलाया तो वे बोले, 'मां की बात छोड़ो। वे भी भगवान के उसी काम में लगी हुई हैं, जिसमें हम लोग लगे हुए हैं।'

'बाकी लोग भी तुम्हारे काम में सहयोगी बनेंगे लेकिन कुछ समय बाद।' आचार्यश्री के सांत्वना देने पर भी त्रिपाठी जी को संतोष नहीं हुआ। महायज्ञ पांच दिन चला था। कार्तिक पूर्णिमा को पूर्णाहुति हुई। उस दिन कुछ ज्यादा लोग आये। शाम के प्रवचन में उन्होंने कहा, 'हम लोग संख्या को महत्व नहीं दे रहे। इसे भगवान भूतभावन की इच्छा समझना चाहिए। वे चाहें तो पूरी काशी को यहां एकत्रित कर सकते हैं। लेकिन काशी में मुक्ति की कामना लेकर आये लोग ही मुख्यरूप से बस रहे हैं। वे अपना उद्धार करने आये हैं। धर्म और संस्कृति का उद्धार बहुत बड़ी बात है। वह दायित्व भगवान शिव के गण ही पूरा कर सकते हैं। उनके गणों की संख्या थोड़ी ही है।'

महायज्ञ में बारह लोगों ने मंत्रदीक्षा ली। दक्षिणा में सप्ताह में एक दिन का समय और महीने में एक दिन की आय त्रिपुरारि शिव के काम में लगाने का संकल्प लिया। अगले दिन सुबह आचार्यश्री को मथुरा के लिए रवाना होना था। शाम के समय भारत धर्म महामंडल के एक संन्यासी एक विचित्र प्रस्ताव लेकर आये। 'भारत धर्म महामंडल' उन दिनों सनातन धर्म के क्षेत्र में एक ख्यातिलब्ध संस्था थी। बद्रीनाथ में शंकराचार्य मठ उद्धार से लेकर अखाड़ों,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आश्रमों, मंदिरों और धर्मसंस्थाओं के संगठन पक्ष को महामंडल ने अच्छी तरह संवारा था। उनके भवनों का जीर्णोद्धार, विवादों के निपटारे और जनाधार को भी मजबूत किया था।

अनोखा प्रस्ताव

जो संन्यासी प्रस्ताव लेकर आये थे। उनका नाम स्वामी नरहरि आनंद था। अधिकार की दृष्टि से उनका अपना विशेष स्थान नहीं था लेकिन वे महामंडल के प्रमुख संतों के बहुत करीब समझे जाते थे। पूर्णिमा को प्रवचन आदि समाप्त हो गये तो वे आचार्यश्री के पास आये और बिना कोई भूमिका बांधे बोले, 'हमारे महाराजश्री आपसे भेंट करना चाहते हैं। लेकिन वे यहाँ नहीं आएंगे। आपको जगत गंज स्थित महामंडल परिसर में चलने का कष्ट करना होगा।'

आचार्य श्री ने कहा, 'मुझे उनके पास चलने में कोई झिझक नहीं है। लेकिन मुझे सुबह ही मथुरा वापस निकल जाना है।'

स्वामी नरहरि आनंद ने कहा, 'भेंट मध्यरात्रि में भी हो सकती है। अगर ज्यादा हर्ज नहीं हो तो आप अपनी यात्रा एक दिन के लिए स्थगित कर दें।

'ऐसी क्या आवश्यक बात है?' आचार्यश्री ने थोड़े विस्मय से कहा। उत्तर की प्रतीक्षा करते हुए वे संदेश वाहक की ओर देखने लगे। स्वामीजी ने अपनी तरह से विषय की गंभीरता को समझाना चाहा। कहा, 'महाराजश्री संभवतः आपको कोई गुरुतर दायित्व सौपना चाहते हैं।'

'किस तरह का गुरुतर दायित्व, ?' आचार्यश्री ने कहा। स्वामीजी ने इस विषय में अपनी अनभिज्ञता जताई। यह भी कहा कि महाराजश्री ने आगे कोई संकेत नहीं किया है और आपका उनसे मिलना आवश्यक है। सनातन धर्म और संस्कृति की सेवा संरक्षण के लिए यह भेंट बहुत आवश्यक है।

आचार्यश्री को स्वामी की बातों में वजन दिखाई दिया। उन्होंने अपनी सुबह की यात्रा स्थगित कर दी और जगतगंज स्थित महामंडल के कार्यालय में वे स्वामी दयानंद से मिले। औपचारिक कुशलक्षेम के बाद स्वामी जी ने धर्म संस्कृति की वर्तमान स्थिति और उस पर सभी दिशाओं से पड़ रहे दबावों के बारे में बातचीत की।

कुशलक्षेम और पांच सात मिनट देशकाल की बातचीत के बाद स्वामीजी ने पूछा कि आप क्या गृहस्थ रहकर ही धर्म समाज की सेवा करेंगे? पूरे समय इस काम में लगने के लिए गृहस्थाश्रम से विरत होना आवश्यक नहीं है क्या?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्यश्री ने कहा, 'इस समय जैसी स्थितियां हैं, उनमें गृहस्थ धर्म का आश्रय लेना ही उचित है। हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने अपने माध्यम से समाज के सामने एक प्रतिमान रखने का निर्देश किया है। उनकी आज्ञा के अनुसार भी हमें गृहस्थ धर्म का ही पालन करना है।'

स्वामी जी को अच्छी तरह उत्तर मिल गया था कि आचार्यश्री गृहस्थ धर्म का निर्वाह करते हुए ही अपने महत्कार्य में जुटेंगे। फिर भी उन्होंने कहा, 'क्या आपको नहीं लगता कि लौकिक दायित्वों से उपराम हुए बिना धर्म की भलीभांति सेवा नहीं की जा सकती।'

आचार्यश्री ने उत्तर दिया, 'आपकी मान्यता अपने स्थान पर सही है लेकिन संन्यासी बनकर समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। संन्यासी की अपनी सीमाएं हैं। गृहस्थ की साधना ज्यादा चुनौतीपूर्ण है। जीवन के क्षेत्र में सीधे खड़े होकर गृहस्थ को संयम और सहिष्णुता की जो साधना करना पड़ती है, वह संन्यास में सहज संभव नहीं है।

स्वामी दयानन्द ने इस चर्चा को आगे नहीं बढ़ाया। मूल विषय पर आते हुए उन्होंने कहा कि जिस दायित्व की बात आपके सामने आई है, उसके लिए आपको घर गृहस्थी से मुक्त होना आवश्यक है। स्थिति को समझ लीजिए। फिर स्वयं ही निर्णय करना।

आदि शंकराचार्य ने सनातन धर्म की पुनः प्रतिष्ठा के लिए भारत भर में पांच मठों की स्थापना की थी। बहुत से लोग इनकी संख्या चार ही मानते हैं। पुरी में गोवर्धन, द्वारका में शारदा, दक्षिण में श्रृंगेरी और उत्तर में ब्रदीनाथ के पास ज्योतिर्मठ। दक्षिण में एक और मठ है कांची। यहां का प्रतिष्ठान और मठों की तुलना में ज्यादा श्री समृद्धि संपन्न है। मठ की मान्यता है कि अन्य चार मठों में आदि शंकराचार्य ने अपने चार प्रमुख शिष्यों को आचार्य पद सौंपा था। कांची में उन्होंने स्वयं अध्यक्ष का दायित्व संभाला था। दूसरे मठों के आचार्य और विद्वान शंकराचार्य को यहां का अध्यक्ष बनने की बात नहीं मानते। उपलब्ध प्रामाणिक उल्लेखों के अनुसार आचार्य शंकर जीवन के अंतिम काल में हिमालय के गुह्य प्रदेश में चले गये थे।

श्रद्धालुओं के अनुसार वे भगवान शिव के अवतार थे और अपना काम पूरा होने के बाद सशरीर अपने धाम कैलास चले गए थे। इस मान्यता में श्रद्धा भावना का पुट ज्यादा हो सकता है। लक्ष्य यह है कि उत्तराखंड में उन्होंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अंतिम बार केदारनाथ में अपने शिष्यों को संबोधित किया और धर्मक्षेत्र में सौंपा हुआ दायित्व पूरा करने के लिए कहा। हमेशा साथ रहने वाले शिष्यों को अब और आगे नहीं आने देने के लिए कह कर वे हिमालय के गहन क्षेत्र में चले गये।

आचार्य शंकर के स्थापित पांच मठों में से एक बद्रीनाथ के ज्योतिर्मठ या जोशीमठ के बारे में स्वामी दयानंद ने चर्चा छेड़ी। इस मठ के शंकराचार्य स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती का निधन गायत्री तपोभूमि की प्राण प्रतिष्ठा के करीब महीना भर पहले हुआ था। उन्होंने मठ की आचार्य परंपरा को नये सिरे से आरंभ किया था। परंपरा करीब आठ सौ साल पहले से विच्छिन्न थी। चार सौ साल से तो वहां किसी आचार्य का पता भी नहीं चल रहा था। बद्रीनाथ के महन्त ही शांकर मठ की देखभाल करते आ रहे थे।

१९४१-४२ में 'भारत धर्म महामंडल' ने उस जगह का पता लगाया, जहाँ शंकराचार्य के जमाने में मठ रहा होगा। उससे पहले तो शांकर मठ की जगह का भी पता नहीं था। ब्रह्मानन्द सरस्वती और महामण्डल के संस्थापक स्वामी ज्ञानानंद, स्वामी दयानन्द दण्डी स्वामी, स्वामी हरिहरानन्द आदि ने ऐतिहासिक तथ्यों, पौराणिक विवरणों और अन्तर्दृष्टि से उस जगह का पता लगाया।

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती १९४१ में जोशीमठ के शंकराचार्य बने। उनका अभिषेक वाराणसी में हुआ था। बद्रीनाथ में जिस जगह शांकर मठ था, वह तो खण्डहर की तरह था। जहां छत और छाया नाम की कोई चीज ही नहीं थी। स्वामी जी बहुत कम बोलते थे। लोगों से मिलते जुलते भी कम थे। लेकिन उनके प्रभाव से मठ के पास प्रचुर सम्पदा एकत्रित होने लगी। साधन संचय करने के लिए लोक सम्पर्क और योजनाएं जरूरी हैं। स्वामीजी लोगों से न अपनी योजनाओं की चर्चा करते थे न ही आशीर्वाद वरदान देते थे। फिर भी उनके आस-पास लोगों की भीड़ लगी रहती थी। जहाँ भी वह जाते, मिलने और प्रणाम करने वाले कतार लगाये रहते।

स्वामीजी के बारे में यह प्रसिद्ध था कि उन्हें वाणी सिद्ध है। जिसे जो कह दिया वह चरितार्थ होता था। कई लोगों के अपने निजी अनुभव हैं। जिसमें उनके मुँह से आशीर्वाद के दो बोल सुन कर लोग लखपति करोड़पति हो गये। यह एक अलग प्रसंग है।

बारह साल में जोशी मठ की काया पलट हो गई। वहाँ एक भव्य आश्रम बन गया। उसके अन्तर्गत वाराणसी, प्रयाग और जबलपुर आदि स्थानों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर भी आश्रम बने। कहते हैं कि स्वामीजी ने संकल्प लिया और साधन-सम्पदा अपने आप इकट्ठी होती चली गई।

अन्यतम बद्रीनाथ

आदि शंकराचार्य ने जिन चार मठों की स्थापना की उनमें बद्रीनाथ का महत्त्व अन्यतम है। पुरी, द्वारका और शृंगेरी में वे पहले ही मठ स्थापित कर चुके थे। बद्रीनाथ मठ के लिए उनहें संघर्ष करना पड़ा था। लगभग डेढ़ हजार साल पहले बद्रीनाथ मन्दिर की मूर्ति तोड़ कर दुष्टों ने कुण्ड में फेंक दी थी। बद्रीनाथ मन्दिर तब से सूना था। शंकराचार्य जब यहां आये और मठ की स्थिति देखी तो अपनी दिव्य दृष्टि से उस मूर्ति को तलाशा। आभास हुआ कि वह मूर्ति कुण्ड में अब भी सुरक्षित है। उन्होंने डुबकी लगाई। कुंडों में बहुत गहरा पानी था। वे मूर्ति लेकर बाहर निकले। देखा कि मूर्ति खंडित है। उन्होंने उस मूर्ति को गंगा में प्रवाहित कर दिया। यह सोच कर कि खंडित मूर्ति मन्दिर में कैसे लगाई जाएगी या यह असली नहीं होगी। उन्होंने कुण्ड में दोबारा डुबकी लगाई। फिर एक और मूर्ति निकालकर लाए। वह मूर्ति भी खण्डित थी। उसे भी गंगा में प्रवाहित कर दिया। तीसरी बार फिर कूदे। तब भी वही दशा थी।

शंकराचार्य ने किनारे बैठ कर ध्यान लगाया। ध्यानावस्था में भगवान बदरी जैसे आदेश दे रहे थे कि इसी रूप की स्थापना करो। मैं युग बदलने तक इसी रूप में पूजा जाउंगा। आदि शंकराचार्य ने उसी रूप की प्रतिष्ठा की। और सीमा पार से होने वाले विधर्मी आक्रमणों को रोकने के लिए संन्यासी संगठन भी बनाया। वहीं चौथे और आखिरी मठ की स्थापना की।

शांकर मठ के उत्तराधिकारी की परम्परा ज्यादा दिन नहीं चल पायी। पांच सौ वर्षों के भीतर ही यह व्यवस्था छिन्न भिन्न हो गई और मंदिर के महन्तों की देखरेख में शांकर मठ चलने लगा। कोई पांच सौ साल पहले इस परम्परा को पुनः जीवित करने की कोशिश की लेकिन वह कामयाब नहीं हुई।

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती के जमाने में वह व्यवस्था फिर जीवित हुई। इतने समर्थ और महिमावान संन्यासी के लिए यह प्रसिद्ध हो कि वह सिद्ध पुरुष है तो कोई अत्युक्ति नहीं है। स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती की विलक्षणता का एक प्रमाण और है। उनकी शिष्य परम्परा में ऐसे सन्त महात्मा उभर कर आये,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिन्होंने धार्मिक जगत का इतिहास बदल दिया। स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती भागवत के उद्भट विद्वान वक्ता और संगठनकर्त्ता। स्वामी करपात्री जी महाराज। विलक्षण विद्वान और संगठनकर्ता इनका वास्तविक नाम स्वामी हरिनारायणानन्द था। इन्होंने अंजुलि में जितना आ जाए उतना ही भोजन करने का व्रत लिया था। किसी और पात्र (बर्तन) का इस्तेमाल नहीं करते थे। इसीलिए करपात्री के नाम से विख्यात हुए।

राजनीति को प्राचीन परम्परा के अनुसार दिशा देने के लिए इनकी स्थापित 'रामराज्य परिषद' ने अपने समय में काफी काम किया है। वे अपने उद्देश्य में सफल नहीं हुए। लेकिन अस्सी के दशक तक समय को प्रमाणित करने वाली हवाओं में एक नाम उनका भी था। उनकी बनाई 'धर्मसंघ' नामक संस्था ने कई जगह संस्कृत महाविद्यालय और गुरुकुल खोले। इनके अलावा शान्तानन्द सरस्वती, स्वामी कृष्णबोधाश्रम, स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, महर्षि महेश योगी, पथिकजी महाराज जैसे कई नाम हैं, जिन्होंने अपनी तरह से समाज को संस्कारित किया।

स्वामी ब्रह्मानंद और उनके शिष्य साधुओं की विचारधारा से मतभेद हो सकते हैं। लेकिन उनके योगदान को नकारा नहीं जा सकता। स्वामी दयानंद ने पूरा वृत्तांत बताने के बाद कहा कि आप संन्यस्त होकर धर्म प्रतिष्ठानों का दायित्व नहीं संभालेंगे तो स्वामीजी ने जो काम शुरू किया था, वह बीच में ही रह जाएगा।

क्षमा ही करें

आचार्यश्री कुछ देर चुप रहे। स्वामी दयानंद के प्रस्ताव को जैसे वे मन ही मन परख रहे थे। कुछ पल की चुप्पी के बाद वे बोले, 'महाराज हम जो भी काम शुरू करने जा रहे हैं, वह भारत के समस्त साधु संतों और ऋषि मुनियों की देन को अक्षुण्ण रखने के उद्देश्य से है। किसी संस्था या संगठन से जुड़ने का अर्थ हमारी समझ में यह आता है कि अपने आपको वहीं तक सीमित कर लेना। संस्था का कोई दायित्व संभालने के लिए क्षमा ही करें तो अच्छा रहेगा।'

इतना कह कर आचार्य श्री ने अपनी बात पूरी की। यह उनका अंतिम निर्णय था। स्वामी दयानंद ने इसके बाद और आग्रह नहीं किया। सिर्फ इतना ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बोले, 'आपके उत्तर को मैं अस्वीकार के रूप में नहीं देख रहा हूँ। यह और भी व्यापक और महत्तर दायित्व की तैयारी है। हम लोगों को आपसे बड़ी आशाएं हैं। ईश्वर आपको सनातन धर्म की सेवा के लिए चिरायु रखे।'

बातचीत में यह स्पष्ट नहीं हो सका था कि स्वामी दयानंद आचार्यश्री को शांकरमठ का दायित्व सौंपना चाह रहे थे या 'भारत धर्म महामंडल'। चर्चा विस्तार में जाये बिना ही समाप्त हो गई। उस दिन वापसी नहीं हो सकी। दिन में आचार्यश्री ने काशी करवत, विश्वनाथ मंदिर, मणिकर्णिका घाट पर कुछ समय व्यतीत किया। वहां के प्रमुख कार्यकर्त्ता त्रिपाठीजी भी साथ थे। यह मात्र संयोग ही नहीं था कि तीनों स्थानों का संबंध मृत्यु से है। काशी करवत यानी मृत्यु के स्वेच्छया वरण का प्रतीक, काशी विश्वनाथ संहार के, मृत्यु के अधिष्ठाता और मणिकर्णिका घाट जहाँ व्यक्ति के पार्थिव अवशेष समेटे जाते हैं।

मणिकर्णिका से वापसी में आचार्यश्री हनुमान घाट मोहल्ले में विशुद्धानंद कुटीर में भी रुके। कुटीर में तब शांति थी। त्रिपाठीजी भी यहां कभी कभार आया करते थे। उन्होंने पूछा, 'आप इस स्थान को जानते हैं क्या?'

आचार्य श्री ने कहा 'वर्षों पहले आया था तब भारत स्वतंत्र नहीं हुआ था। विशुद्धानंद जी से भेंट हुई थी। उन्होंने अपनी दिव्यशक्ति से भारत माता की प्रतिमा रच कर भेंट की थी। उन सब बातों का कोई अर्थ नहीं है।'

विषय बदल कर वे स्वगत ही बोले बाबा की सिद्धि देख कर यह निष्कर्ष तो पुख्ता होता है कि भगवान की इस सृष्टि में हर समय सभी तत्व हर जगह उपलब्ध है। इसका अर्थ है कि समूची सृष्टि एक ही तत्व से बनी हुई है। प्रकृति जिस तरह एक ही तत्व से विभिन्न पदार्थों की रचना कर लेती है, साधक भी अपने पुण्यबल का उपभोग कर नये पदार्थों की रचना कर सकता है।

स्वामी विशुद्धानंद हिमालय के जिस गुह्यक्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे, वहीं के एक सिद्धयोगी महावतार बाबा के संबंध में विख्यात था कि वे अपने आपको जहां चाहे प्रकट कर सकते हैं। तिरोहित भी हो जाते हैं। त्रिपाठीजी ने उनकी चर्चा छेड़ी लेकिन आचार्यश्री का ध्यान कहीं और था। वे विशुद्ध कुटीर से बाहर आए और वापस गंगा किनारे पहुँचे। वहाँ गमछा बिछाया। पालथी लगाकर बैठे और गंगा की लहरों को देखने लगे।

तीसरे पहर का समय था। मौसम न गरम था न ही ठंडा। गंगा की धारा को छूकर आती हुई हवाएं अपने साथ शीतलता भी लाती थी। खुले में बैठे गंगा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को निहारते हुए आचार्यश्री के चित्त में एक मंत्र उभरा। ब्रह्मा का एक अहोरात्र बीतने पर सृष्टि का भी अंत हो जाता है। उसकी जीवन लीला पूरी हो जाती है। फिर ब्रह्मा भी सो जाते हैं। मनुष्य भी उसी ब्रह्मा की संतान है। उसका भी एक अहोरात्र है—सूर्य उदय होता है तो दिन का आरंभ होता है, अस्त होता है तो अंत समापन। यह विचार सरणि आगे बढ़ती गई और निष्कर्ष उभरा दिन को एक जीवन मानकर जिया जाए तो जीवन ज्यादा पवित्र हो सकता है। रात को विश्राम करते हैं। विश्राम को मृत्यु का प्रतीक मानें। शयन आरंभ हो तो मौत का प्रवेश। उससे पहले अपने आज के—वर्तमान जीवन के—जिये जा चुके दिन की समीक्षा करे। जो गलतियां हुई हैं उनके लिए पश्चाताप करें। हर दिन एक नये जन्म की तरह हो और रात मौत की तरह।

गंगा किनारे लगभग बीस मिनट तक आचार्यश्री बैठे होंगे और उन्होंने लहरों से भी सुना—'हर दिन नया जन्म, हर रात नई मौत।' इस तत्त्वदृष्टि से जीवन को जैसे नया मंत्र मिला।

□

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सात

बलिदानियों की खोज

गायत्री तपोभूमि में निर्माण कार्य चल रहा था। प्राणप्रतिष्ठा समारोह तक मंदिर ही भलीभांति बन पाया था। यज्ञशाला का स्वरूप भर बना था और उसके आसपास पुराने खंडहरनुमा कमरों की मरम्मत हुई थी। एक कामचलाऊ व्यवस्था बन सकी थी। प्राण प्रतिष्ठा समारोह के खर्च के एक-एक पैसे का हिसाब प्रकाशित कर दिया गया था। समारोह में २८५२ रुपए १३ आने (इक्यासी पैसे) खर्च हुए थे। इस समारोह के बाद तपोभूमि के विकास के लिए परिजन खुले हाथों सहयोग देने लगे थे। किस साधक ने क्या सहयोग प्रस्तुत किया है, यह भी घोषित कर दिया जाता। कुछ लोग अपने सहयोग को छुपा कर रखना चाहते थे। उनकी दृष्टि में देने वाले का नाम किसी को पता नहीं चले तो अधिक पुण्यप्रद होता है। उनकी भावना का आदर करते हुए उनका नाम प्रकाशित नहीं किया जाता लेकिन खर्च का व्यौरा तो बताया ही जाता। आचार्यश्री उस दिन तपोभूमि के लिए सहयोग देने वालों की चर्चा कर रहे थे। वहां मौजूद कार्यकर्त्ताओं से आगामी योजनाओं के बारे में चर्चा चल पड़ी और उन्होंने कहा कि आर्थिक सहयोग ही पर्याप्त नहीं है। हमारे काम को एक और तरह की उदारता चाहिए।

वहां मौजूद कार्यकर्त्ताओं की आंखों में उत्सुकता का भाव गहराया। उन्होंने सुना 'ऐसे लोग चाहिए जो अपना पूरा जीवन इस काम में लगा सकें। वे घर परिवार के नहीं रहें। संतानों की चिंता छोड़ें और अपने आपको होम दें।'

आचार्यश्री के ये वचन नरमेध की भूमिका थे। उन्होंने कहा, 'तपोभूमि में हम जल्द ही एक बड़ा महायज्ञ करेंगे। महायज्ञ एक सौ आठ कुंड का होगा। हमारा मन है कि प्रत्येक कुंड में एक व्यक्ति अपना जीवन होमे। अपनी बलि चढ़ाये।'

'यज्ञ में क्या साहब सचमुच लोगों की बलि चढ़ाई जाएगी? उनके सिर काटे जाएगें और रक्त मांस आदि का होम होगा?' एक कार्यकर्त्ता ने भोलेपन से पूछा। उसकी अभिव्यक्ति और भंगिमा में मासूमियत थी। यह प्रश्न और लोगों के मन में भी उठा था। वे पूछ नहीं पाये थे। आचार्य श्री ने कहा, 'हम लोग कोई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तांत्रिक मांत्रिक थोड़े ही हैं कि लोगों का सिर काटकर चढ़ाने लगें। शास्त्रों में जहां नरमेध का उल्लेख आता है, उसमें सिर काटने का अर्थ अपना अहंकार विसर्जित करने से है।'

चर्चा के समय वाराणसी से आये एक परिजन त्रिलोकचंद्र भी उपस्थित थे। आचार्यश्री की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि उन्होंने तुरंत कहा, 'एक बलि हमारी भी स्वीकार कीजिए गुरुदेव।' त्रिलोक चंद्र अपने नाम के आगे कुछ लिखते नहीं थे लेकिन तीन साल पहले तक वे काशी हिंदू विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र पढ़ाते थे। काम और पद के अनुसार उनके नाम के आगे प्रोफेसर लिखा जाना चाहिए था। नौकरी छोड़ते ही उन्होंने प्रोफेसर लिखना बंद कर दिया।

प्राण प्रतिष्ठा समारोह में पहली बार मथुरा आये थे। आते ही उन्होंने तय कर लिया कि विद्या को अब जीविका उपार्जन में तो नहीं लगाना है। समारोह के बाद अब तक तीन चार बार और तपोभूमि आये। साथ में उनकी पत्नी सुशीला देवी भी थीं। दोनों ने अपने आपको नरमेध में यज्ञपशु के रूप में प्रस्तुत किया। उनके उत्साह को देखकर आचार्यश्री ने कहा, 'इतने अधीर मत होओ जोश में आकर नहीं, सोच समझकर, होश के साथ इस तरह के फैसले किये जाने चाहिए।'

त्रिलोक चंद्र ने कहा, 'हम लोग प्राण प्रतिष्ठा समारोह में ही संकल्प कर चुके थे। अपने आपको गायत्री माता के हवाले कर देना है। लगता है अब वह समय आ गया।'

आचार्यश्री ने कहा, 'आपने निश्चय कर लिया तो अच्छा है। अब इसके पूरा होने का उपयुक्त समय भी आने दीजिए। अगले दिनों हम यहां विशद गायत्री महायज्ञ करेंगे। उसमें एक सौ आठ कुंड होंगे। महायज्ञ के समय ही आत्माहुति या नरमेध का अनुष्ठान भी होगा। तब तक अपने उत्सर्ग का अभ्यास करें।'

इस संवाद के कुछ महीने बाद प्रोफेसर त्रिलोकचंद्र की पत्नी सुशीला देवी ने अपने स्वर्ण आभूषण गायत्री तपोभूमि को देने का निश्चय किया। पति ने भी इस भावना को स्वीकार किया और मथुरा की राह पकड़ी। वहां पहुंच कर प्रणाम और कुशलक्षेम के तुरंत बाद उन्होंने अपने आभूषण आचार्यश्री के सामने रख दिये।

सौंपे गये आभूषणों में सुहाग चिह्न के रूप में पहनी जाने वाली चूड़ियां भी थीं। आचार्यश्री ने कहा, 'आप सभी जेवर मत दीजिये। संस्था के लिए इनकी विशेष आवश्यकता नहीं है।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुनकर सुशीला देवी का आंखें भर आई। टप-टप आंसू टपकने लगे। वे स्वगत ही बोली, 'लगता है हमारी भावनाओं में ही खोट है। पिछली बार हम दोनों ने अपने आपको नरमेध के लिए प्रस्तुत किया था। आपने मना कर दिया कि समय आने पर देखेंगे। कहा था कि उत्सर्ग का अभ्यास करो। इस अर्पण का मन हुआ तो वह भी बहाने से मना कर रहे हैं।'

वह रोये चली जा रही थी। आचार्यश्री ने समझाया, 'तुम्हारी त्यागवृत्ति की उपेक्षा नहीं है। हम सिर्फ यह कह रहे हैं कि इन सबकी आवश्यकता नहीं है। रुपये पैसे हों तो उनका उपयोग निर्माण कार्यों में किया जाए। जेवरों का क्या करेंगे? वह भी तुम्हारे मंगल सुहाग चिह्न।'

सुशीला ने कहा, 'इन आभूषणों को बेच कर उनसे मिलने वाले रुपये आपके चरणों में रखते तो अच्छा रहता। फिर तो आप स्वीकार करते।'

'यह बात नहीं है' आचार्यश्री ने कहा, 'पर तुम अपनी प्रिय वस्तुएँ क्यों दे रही हो। क्या वैरागी संन्यासी होना है।'

'मैं बताता हूँ गुरुदेव इसका कारण,' अभी तक चुप बैठे त्रिलोक चंद्र ने कहा। आचार्यश्री ने पति की ओर देखा। त्रिलोक चंद्र ने कहा, 'चार पांच दिन पहले इन्होंने एक सपना देखा। सपने में यह आपको किसी घने जंगल में देखती हैं। वहाँ आप गायत्री माता का मंदिर बनवा रहे हैं। निर्माण का काम रुक सा गया है। साधनों की कमी आड़े आ रही है। तभी इनके पिताश्री प्रकट होते हैं और आदेश देते हैं कि तुम्हारे पास जो कुछ भी है, वह गुरु के काम में लगा दो। उस सुबह से ही यह संकल्प किये हुए है कि सब कुछ मंदिर को समर्पित कर दो।'

आचार्यश्री सुशीला देवी को और फिर उसके पति को देखने लगे। कहा, 'तुम्हारे पिता ने तुम्हें भामाशाह का मार्ग दिखाया है। तुम और कुछ दे दो लेकिन ये चूड़ियां अपने पास रख लो।' सुशीलादेवी को यह निर्देश रास नहीं आया। चेहरे पर असंतोष झलकने लगा। वह सुनकर चुप रही। आचार्यश्री ने बात को वहीं विराम लगाया। कुछ देर रोष असंतोष में चुप बैठे रहकर सुशीला देवी तमक कर बोली, 'बार-बार परीक्षा क्यों लेते हैं गुरुदेव?'

इतना कहते ही उसका गुस्सा रुलाई में फूट पड़ा।'

सुशीला देवी को चुप कराते हुए आचार्य श्री बोले, अच्छा चुप हो जाओ। तुम्हारा दान उत्कट है। तुम्हारी ये चूड़ियाँ मंदिर बनाने के काम में नहीं लगायेगें बल्कि यहां की अधिष्ठातृ शक्ति वेदमाता के श्रृंगार के लिए रखेंगे। विशिष्ट अवसरों पर जब भी उनका शृंगार होगा तो मां इन्हें पहनेंगी।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपनी जमा पूंजी मंदिर के लिए सौंप देने के और भी कई प्रसंग हैं। इससे उलट स्थितियां भी बनी। जगह-जगह जाकर मंदिर के लिए चंदा मांगने और उसे डकार जाने वाले भाई लोग भी सक्रिय हुए। प्राण-प्रतिष्ठा समारोह की गूंज मथुरा के आसपास सुनाई दे रही थी। ग्वालियर, भोपाल, इंदौर, जबलपुर, लखनऊ, कानपुर, पटना, मेरठ, पानीपत, जयपुर आदि शहरों में गायत्री साधक तपोभूमि के लिए अनुदान भेजने लगे थे। लोग सीधे मनीआर्डर करते या आते जाते लोगों के हाथों अपना अनुदान भेज देते। उनके अनुदान की सूचना और रसीद वापसी डाक से भेज दी जाती थी।

पतों की चोरी

सितम्बर १९५४ में मथुरा में नवरात्रि शिविर लगा। वहां जयपुर से आये एक कार्यकर्त्ता मानसिंह ने एक सौ ग्यारह रुपये तपोभूमि कार्यालय में जमा कराये। जमा करने वाले कार्यकर्त्ता ने नाम पता पूछा तो मानसिंह ने मना कर दिया। उन कार्यकर्त्ता ने कहा कि रसीद काटना है। आप नाम पता नहीं बताएगे तो रसीद नहीं कट सकेगी। रसीद नहीं कटेगी तो आचार्यश्री हमें कहेंगे।

मानसिंह ने इस पर बताया कि वे पिछले तीन महीने से अनुदान भेज रहे हैं। जिन सज्जन के हाथों भेजते हैं उन्होंने कभी नाम पता बताने की जिद नहीं की। न ही उसने कभी रसीद लाकर दी। मानसिंह की बात सुनकर नाम पता पूछ रहे कार्यकर्त्ता चौकें। वहाँ मौजूद और लोग भी चौकें। इस संवाद से पता चला कि कोई व्यक्ति मंदिर के नाम पर लोगों से चंदा इकट्ठा कर रहा है।

नवरात्रि शिविर के कुल सवा सौ साधक आये थे। उनके बीच में भी चर्चा हुई। उनमें से छह साधकों ने बताया कि इस तरह का संग्रह उनके शहर में भी हुआ है। ये लोग भिन्न-भिन्न शहरों के थे। सबका अनुभव लगभग एक जैसा था। कोई व्यक्ति अपने आपको गायत्री तपोभूमि का प्रतिनिधि बताता हुआ आया और वहां के लिए दान इकट्ठा कर चला गया। नवरात्रि साधना में आये छह साधकों के साथ निजी तौर पर ऐसी घटना नहीं घटी थी। चार साधकों ने बताया कि उनके परिचित उपासक इस तरह की ठगी के शिकार हुए हैं।

इस शिविर में आचार्यश्री ने घोषित कर दिया कि कोई भी साधक किसी बाहरी प्रतिनिधि को मंदिर के लिए सहयोग अनुदान नहीं दें। किसी को भेजना हो तो डाक से भेजें या अपने यहाँ के परिचित कार्यकर्त्ता के हाथों भिजवायें। अपरिचित प्रतिनिधियों पर भरोसा नहीं करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

छल और ठगी से रोकथाम के लिए एक कदम तो उठा लिया गया लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हो गई। उन दिनों दिल्ली के पास उत्तर प्रदेश के किसी शहर से आये कार्यकर्त्ता अखण्ड ज्योति कार्यालय में काम करते थे। जरूरत पड़ने पर वे तपोभूमि भी आ जाया करते। वहां का हिसाब किताब भी देख लेते। मथुरा आते जाते रहने वाले कई साधकों को वे निजी तौर पर जानते थे। साहित्य में भी थोड़ी बहुत रुचि रखते थे।

पता नहीं मन में पहले से ही इच्छा संजो रखी थी या अचानक नीयत खराब हुई। एक दिन वे अखंड ज्योति के सदस्यों के नाम पते वाला रजिस्टर उठाकर चलते बने। अपने शहर में जा टिके। वे और रजिस्टर दोनों एक साथ गायब हुए थे। इसलिए संदेह उन्हीं पर जाता था। लेकिन आचार्यश्री ने न उस पर शक किया और न ही छानबीन। पुलिस में रिपोर्ट भी नहीं कराई।

स्थानीय कार्यकर्त्ता केशवदेव ने कई बार आग्रह किया लेकिन आचार्यश्री ने हर बार मना ही करते रहे। उनका कहना था कि रजिस्टर को आसानी से कहीं भी छुपाया जा सकता है। जिसने चुराया है, उसने अपने पास तो नहीं ही रखा होगा। रिपोर्ट लिखाने पर पुलिस आयेगी और हमारे निर्दोष कार्यकर्त्ताओं से पूछताछ करेगी। वे व्यर्थ ही परेशान होंगे। पते ही तो खोये हैं। महीने दो महीने में वापस इकट्ठे कर लेंगे।

अखण्ड ज्योति की सदस्य संख्या उन दिनों ज्यादा नहीं थी। लगभग साढ़े चार हजार प्रतियां छपती थीं। इतने ही पते होंगे। पैतालीस सौ लोगों के पते याद रखना किसी के लिए संभव नहीं था। उस महीने की पत्रिका पोस्ट आफिस में पांच सात दिन पहले जा चुकी थी। वहां बिना डिस्पैच हुई पत्रिका के रैपर से पते नोट करना भी संभव नहीं था।

आचार्यश्री ने एक रास्ता निकाला। उन्होंने प्रमुख शहरों और कस्बों के सक्रिय कार्यकर्त्ताओं को पत्र लिखे। उनसे अपने यहाँ के अखंड ज्योति सदस्यों के पते इकट्ठे कर भेजने के लिए कहा। विभिन्न शहरों में सक्रिय सदस्यों की संख्या लगभग चालीस थी। उनके नाम पते आचार्यश्री को जुबानी याद थे। उसी आधार पर पत्र लिखे। पत्र लिखने और वहाँ से उत्तर आने में करीब एक महीना लग गया। इस कसरत में अखंड ज्योति पत्रिका समय पर नहीं भेजी जा सकी। लेकिन महीने डेढ़ महीने के बाद सब ठीक हो गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अब उन रजिस्टर चोर की खबर ली जाये। पत्रिका के तमाम सदस्यों को उन्होंने व्यक्तिगत पत्र लिखा और कहा कि हम एक नया प्रकाशन शुरू कर रहे हैं। मथुरा में आचार्यश्री का काम हम ही देखते संभालते थे। वे मंदिर और पुरोहिताई में व्यस्त हो गये हैं, इसलिए पाठकों के साथ न्याय नहीं कर पायेंगे। आप नये प्रकाशन के लिए अपना चंदा हमारे पते पर भिजवायें। इस पत्र पर पाठकों ने ध्यान नहीं दिया। वह जैसे उन्हें मिला ही नहीं।

निराश होकर उन्होंने विभिन्न शहरों में अपने प्रतिनिधि भेजे। उन्हें पहचान पत्र दिये और लोगों से सहयोग अनुदान देने का अनुरोध किया। उन्होंने स्वयं भी कई शहरों का भ्रमण किया वहां के सक्रिय साधकों से मिले। साधकों से वे परिचित थे ही। उन्हें विश्वास में लेने के लिए उलटी सीधी बातें की और थोड़ी बहुत रकम जुटाई। लेकिन यह ठगी ज्यादा दिन नहीं चल सकी।

मथुरा में कुछ साधकों ने पूछताछ की। आचार्यश्री को पते चोरी जाने की बात बतानी पड़ी और सावधान रहने के लिए भी कहा। अभी तक नहीं बताने की वजह बताई कि उस व्यक्ति से इस तरह की धूर्तता की उम्मीद नहीं थी। तीन चार साल से साथ काम कर रहा था। कभी हेराफेरी करते नहीं देखा।

आचार्यश्री ने उस व्यक्ति के प्रति जरा भी रोष नहीं जताया। कानपुर के साधकों ने उसके खिलाफ पुलिस में रिपोर्ट लिखा दी। हफ्ते दस दिन में ही वह पकड़ा गया। छानबीन से पता चला कि वह सफाई से लोगों को ठगता रहता था। धूर्तता उसकी रग-रग में व्याप्त थी।

आचार्यश्री ने चोरी का मामला आगे नहीं बढ़ने दिया। वह व्यक्ति जल्दी ही छूट गया। छूटते ही बीमार हो गया। जैसे तैसे ठीक तो हो गया लेकिन अस्थमा रोग ने पकड़ लिया। बीमारी की खबर पाकर आचार्यश्री उसे देखने घर तक गये थे। वे बिना किसी सूचना के पहुँचे थे। अचानक सामने खड़ा देखकर वह व्यक्ति बुरी तरह घबरा गया। हाथ जोड़कर माफी मांगने लगा।

आचार्यश्री ने कहा, 'मैं तुम्हें डांटने डपटने या आरोप लगाने नहीं आया हूँ। गलती करना बड़ा अपराध नहीं है, बड़ा अपराध गलती पर गलती करते जाना है। तुम लोगों को धोखा देना छोड़ दो। सब ठीक हो जायगा। मैं यहाँ तुम्हारा कुशलक्षेम जानने आया हूँ। उपचार में कमी मत रखना।'

वह व्यक्ति बिस्तर पर औंधा लेट गया और तकिये में मुँह छुपा कर रोने लगा। आचार्यश्री ने उसका सिर सहलाया। चुप कराने के बाद उपचार के बारे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में हिदायतें देने लगे। चलते चलते उन्होंने जेब से पचास रुपये निकाले और उसके हाथ में थमा दिये। कहा कि ठीक होते ही मथुरा आना । माताजी याद कर रही हैं।

अग्नि स्वरूप तीर्थ

सन् १९५४ में प्रयाग का महाकुंभ था। आचार्यश्री ने वहां जाने का निश्चय किया। साधु संतों के नाम पर अब तक जिस तरह के लोगों से संपर्क होता था उनसे उम्मीद नहीं बंधती थी। अखंड ज्योति संस्थान में अपनों के बीच बातचीत करते हुए उन्होंने कहा था कि धर्मध्वजी और धर्मजीवी गेरुआ वस्त्रधारियों से कोई आशा नहीं है। हजारों लोगों में दो चार मनस्वी प्रतिभाएं मिल जाएं तो मिल जाए, वरना ज्यादातर दान और भिक्षा के सहारे ही हैं।

माताजी ने सिर्फ 'जी' कहकर हामी भरी। वे ऐसे अवसरों पर प्रत्युत्तर कम ही दिया करती थीं। उन्हें आभास था कि बातचीत आगे बढ़ने वाली है। आचार्यश्री ने कहा, 'महाकुंभ का फिर भी महत्त्व है। ऐसे अवसरों पर विरली विभूतियां आती हैं। वे चुपचाप स्नान ध्यान कर चली जाती हैं। जिनके संस्कार होते हैं उनसे मिलती हैं। मैं उनकी बात नहीं कर रहा। मेरा मकसद लौकिक स्तर का ज्यादा है। वहाँ जाकर आयोजन की तकनीक करीब से देखने को मिलेगी। आगे हम लोगों को भी बड़े कार्यक्रम करने हैं।'

वहाँ बैठे कुछ साधकों ने भी चलने की तैयारी दिखाई। आचार्य श्री ने कहा, 'हम लोगों को वहां डेरा नहीं डालना है। और लोग भी चल सकते हैं। आसानी रहेगी। मेले के और पहलुओं का बारीकी से अध्ययन हो सकेगा।'

जिन पहलुओं पर जोर था, उनमें प्रयाग का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व था। वाराणसी को भारत की सांस्कृतिक राजधानी कहते हैं तो प्रयाग को तीर्थराज। काशी में मृत्यु के अधिष्ठाता देव से साक्षात करने के लिए लोग जाते और वहाँ वास करते हैं। प्रयाग में तप अनुष्ठान से अपनी आत्मचेतना को परिमार्जित करने के लिए आते हैं। प्रयाग की ख्याति गंगा यमुना और सरस्वती के संगम के लिए तो है ही, वहाँ होने वाले कल्पवास और साधकों के जप तप के कारण भी है। पूरे प्रयाग क्षेत्र को एक विराट यज्ञशाला कहा गया है। आचार्यश्री ने कहा कि गंगा यमुना की धारा ने प्रयाग को तीन भागों में बांट दिया है। तीनों भाग अग्नि के स्वरूप है। गंगा यमुना के मध्य का भाग गार्हपत्य अग्नि, गंगापार का प्रतिष्ठानपुर झूसी वाला भाग आवहनीय अग्नि और यमुनापार का अलर्कपुर या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अदैल वाला हिस्सा दक्षिणाग्नि कहा जाता है। कहते हैं कि तीनों क्षेत्रों में एक एक रात्रि निवास करने से तीनों अग्नियों की उपासना का फल मिलता है।

गंगा यमुना के बीच गार्हपत्य अग्नि वाला भाग गृहस्थ धर्म का महत्व बताता हुआ सा है। यह आश्रम जिस तरह जीवन के उत्तर (वानप्रस्थ, संन्यास) और पूर्व (ब्रह्मचर्य) के मध्य में स्थित है। उसी तरह गाहर्पत्य अग्नि भी गंगा यमुना के मध्य में है। आवहनीय अग्नि तप तितिक्षा और संन्यास की प्रतीक है। वह अग्नि निवृत्ति मार्ग की ओर ले जाती है। गंगा पार के भाग में साधु संन्यासियों का स्थान है। यमुना के इस पार दक्षिणाग्नि वाले क्षेत्र में सौम्य साधनाएँ होती हैं-कथा कीर्तन सत्संग आदि।

बारह वर्ष में एक बार जब वृहस्पति वृष राशि में और सूर्य मकर राशि में होता है तो भारतीय धर्म की सभी शाखा उपशाखाओं के लोग यहाँ आते हैं। विभिन्न साधना परंपराओं और विद्याधाराओं के लिए किसी समय 'संप्रदाय' शब्द का उद्‌बोधन किया जाता था। अब यह शब्द कट्टरता और संकीर्णता के अर्थ में बदनाम हो गया। जब यह अपने लिए मार्ग चुनने की स्वतंत्रता का प्रतीक होता था तब बहुत सम्मानित था। कुंभ पर्व में सभी संप्रदायों के लोग इकट्ठे होते हैं। परस्पर विचार विनिमय और सत्संग का अच्छा अवसर होता है। कुंभ के समय दान दक्षिणा का महत्त्व भी है। ऐसे प्रसंग भी रहे हैं जब लोगों ने अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। सम्राट हर्षवर्धन के संबंध में प्रसिद्ध रहा है कि वे कुंभ और अर्धकुंभ के समय सर्वस्व दान कर देते थे। अपना कहने लायक अपने पास कुछ नहीं रखते थे। गंगा की धारा में खड़े होकर दिये गये दान के बाद वे अकिंचन हो जाते थे। पहनने के लिए वस्त्र भी मांग कर लेते थे।

अलग अलग तिथियों में पांच लोग प्रयाग पहुँचे। उनके जिम्मे कुंभ के समय आने वाले अखाड़ों, मठों और साधु संतों का विवरण इकट्ठा करना था। ये लोग कुंभ आरंभ होने से करीब एक सप्ताह पहले पहुँच गये थे। रामाज्ञा प्रसाद, प्रो० त्रिलोकचंद्र, केदारनाथ सिंह, श्रीकांत गोयल और बद्रीप्रसाद पहाड़िया थे। पांचों अलग अलग ठहरे थे। आचार्यश्री मकर संक्रांति के दिन पहुँचे। पहले से आये कार्यकर्त्ताओं को सिर्फ पता था कि वे मौनी अमावस्या के आसपास आयेंगे। उन्होंने प्रबंध भी इसी तरह रखा था। आचार्यश्री ने संक्रांति की यात्रा के बारे में कुछ नहीं बताया और स्टेशन से उतर कर सीधे मेला क्षेत्र में गये। दूर तक फैली हुई ठंडी रेत, गंगा के विराट पाट को छूकर आती हुई ठंडी हवाएं और साधु संतों से भरा हुआ मेला क्षेत्र।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्यश्री के पास थोड़ा ही सामान था। झोलानुमा कपड़े के दो थैले। एक थैले में दो जोड़ी कपड़े और कुछ पुस्तकें। दूसरे में दरी, चादर और एक लोटा। सामान का वजन कुल मिलाकर आठ दस सेर रहा होगा। दोनों झोले कंधे से उतार कर वे रेत पर बैठ गये। सामने कुछ संन्यासी धारा की ओर जा रहे थे। कुछ लौट रहे थे। आचार्यश्री इन आते जाते संन्यासियों को चुपचाप देख रहे थे। स्नानार्थियों या स्नान कर लौटे इन लोगों की जमात में उन्हें एक दंपत्ति झगड़ा करते हुए दिखाई दिए। वे जोर जोर से बोल रहे थे। एक दूसरे को भला बुरा कह रहे थे। पत्नी कह रही थी कि वह वेणी दान करके ही दम लेगी। पति इसके लिए मना कर रहा था। उसकी अनुमति के बिना दान का कोई मतलब नही रह जाता, इसलिए वह 'हां' कहने के लिए दबाव डाल रही थी। इजाजत नहीं देने पर वह पति को छोड़ कर चले जाने की धमकी भी दे रही थी।

आचार्यश्री को देखकर वे दोनों ठहर गये थे। पत्नी का नाम दमयंती और पति का नाम तुलाधार था। अर्धनग्न या गेरुआधारी साधुओं की इस भीड़ में उन्हें एक गृहस्थ दिखाई दे गया था। उम्मीद थी कि वह शायद रास्ता निकाल ले। आचार्यश्री ने उन पर विशेष ध्यान नहीं दिया। वे दूसरी ओर देखने लगे। पति-पत्नी उनके पास आ गये ओर अपना विवाद सुलझाने के लिए कहने लगे। सीधे तो नहीं कहा। उनके सामने अपना विवाद दोहरा दिया। आचार्य श्री ने कहा कि 'आप मुझसे क्या मदद चाहते हैं।'

तुलाधार ने कहा 'आप हम दोनों का झगड़ा निपटा दें।' दमयंती का भी यही कहना था। आचार्य श्री ने कहा, 'मैं जो भी समाधान बताऊंगा वह आप दोनों में किसी एक को अच्छा लगेगा तो दूसरे को अपने खिलाफ महसूस होगा। उस हालत में एक और विवाद पैदा हो जाएगा।'

तुलाधार और दमयंती ने कहा कि, 'फैसला किसी के भी पक्ष में हो, आप जो भी कहेंगे उसे दोनों मानेंगे।'

तुलाधार दंपत्ति फैजाबाद के रहने वाले थे। उनके दो बच्चे थे एक लड़का और एक लड़की। वहां व्यवसाय था, अच्छी आमदनी थी। त्रिवेणी स्नान करने आये थे और दमयंती ने रास्ते में ही वेणीदान का निश्चय कर लिया था। वेणीदान अर्थात अपनी चोटी कटवाने का संकल्प। तीर्थराज संगम में मुंडन एक प्रचलित विधान है। तिरुपति के अलावा इस तरह की परिपाटी कहीं और नहीं है। पूजा पाठ के रूप में मुंडन को दूसरे तीर्थों में वर्जित किया गया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हरिद्वार, गया आदि तीर्थों में तर्पण या श्राद्ध के समय इसकी छूट है, स्नान और आराधना के तौर पर मुंडन की साफ मनाही है लेकिन प्रयाग में इसे विशेष पुण्यफल देने वाला कहा गया है।

प्रतीक्षा से समाधान

त्रिवेणी संगम के पास निश्चित स्थान पर यह कृत्य संपन्न होता है। पुरुष पूरे सिर का मुंडन कराते हैं। महिलाएँ सिर्फ अपनी वेणी कटवाती हैं। विधवा स्त्रियां मुंडन कराती हैं। सधवा स्त्रियों के लिए वेणीदान की परिपाटी विशेष कर्मकाण्ड वाली है। वे त्रिवेणी के तट पर संकल्प करती, शरीर पर हल्दी लगाती और त्रिवेणी स्नान के बाद बाहर निकलती है। बाहर आ जाकर पति से वेणीदान की अनुमति लेती हैं। पति उसकी वेणी के छोर पर मंगलद्रव्य बांधता है और कैची या छुरे से वेणी काटकर पत्नी के हाथ में रख देता है। पत्नी उस वेणी को मंगल द्रव्य सहित त्रिवेणी में प्रवाहित कर देती है और बाहर आ जाती है। बाद में वह फिर स्नान करती है।

दमयंती इसी तरह वेणीदान की जिद कर रही थी। तुलाधार उसे मना कर रहा था। उसका कहना था कि वेणी कटवाने से चेहरा फीका पड़ जाएगा। दोनों ने अपना पक्ष रखा। उनकी दलीलें सुनकर आचार्यश्री को हंसी आ गई। दमयंती और तुलाधार उन्हें हंसते देखकर उदास से हो गए। उदास होने के बावजूद वे आचार्यश्री को निहार रहे थे कि कोई फैसला होगा। आचार्यश्री ने उनके भावों को पढ़ा और कहा, 'अभी तुम लोग कोई निर्णय मत लो। महीने भर बाद इस बारे में तय कर लेना। तब तक दोनों में किसी बात को लेकर शायद सहमति बन जाए।'

दोनों को इस उत्तर की आशा नहीं थी। अभी तक उनका अभिमान ही था जो टकरा रहा था। उसे स्थगित कर दिया तो दोनों के चेहरे भी सौम्य मधुरता से खिल उठे। आचार्यश्री ने कहा,'बाल कटाना, मुंडन कराना या वेणीदान करना अपने अहंकार को समर्पित करने जैसा ही है। तुम दोनों लोग मुंडन के लिए झगड़ने के बजाय अपना सिर ही काट कर क्यों नहीं दे देते?'

सुनकर दोनों की सासें खिंच गई। उन्हें लगा कि सामने कोई गृहस्थ व्यक्ति नहीं बल्कि गृहस्थ वेश धारण किये हुए साधु संन्यासी या औघड़ बाबा है। आचार्यश्री ने कहा, 'आप लोगों ने मेरा फैसला मानने का वचन दिया था। इसलिए स्वयं को यज्ञ में दान करना ही पड़ेगा।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इतना सुनकर तुलाधार और दमयंती के पैर तले की जमीन खिसकने लगी। उन्हें डरते देख आचार्यश्री ने कहा, 'भय मत करो। मैं तुम्हें नरमेध के लिए कह रहा हूँ। इसका अर्थ है अपने आपको धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए सौंप देना। तुम्हारे दोनों बच्चे बड़े हो गए हैं, समझदार हैं। साल डेढ़ साल में उनकी ब्याह शादी से निपट जाओ और मथुरा में आकर यज्ञ भगवान के सामने अपने आपको होम दो।'

उन दोनों के चेहरे पर आह्लाद का भाव छाने लगा था। नरमेध के बारे में अभी उनकी समझ पूरी तरह साफ नहीं हुई थी। फिर भी उन्हें संतोष का अनुभव हो रहा था। भीतर से ही प्रेरणा उठी और वे धोती-कुर्ता पहने इस युवा संत के चरणों में लेट गये। कहने लगे कि आप जैसा कहेंगे, वैसा ही करेंगे।

तुलाधार और दमयंती ने महीनों बाद बताया कि आचार्यश्री में संत जैसा कोई बाहरी लक्षण नहीं दिखाई दे रहा था। एक अनजाना आकर्षण उन्हें खींचे जा रहा था। वह आकर्षण अपने किसी बुजुर्ग व्यक्ति के सामने अभिभूत और विनत होने वाले दबाव जैसा भी था। लग रहा था कि आचार्यश्री की बात टाली नहीं जा सकती। पति पत्नी ने दोनों की ओर देखा। एक दूसरे की आंखों में उन्होंने जैसा स्नेह और विश्वास देखा, वह पहली बार अनुभव हो रहा था। तुलाधार ने ही कहा 'आप आदेश देंगे तो हम अपना सर कटाने में भी नहीं हिचकिचाएंगे। अब हम आपके हुए।'

तुलाधार और दमयंती की मृत्यु को आचार्यश्री ने जीवन से भी श्रेष्ठ कहा था। परम जीवन की उपलब्धि, जीवन मृत्यु के चक्र का अतिक्रमण और सीधे मोक्ष की प्राप्ति जैसे विशेषणों से मंडित वह मृत्यु गंगा पार एक संन्यासी के डेरे पर हुई थी। आचार्यश्री से भेंट के लगभग साल भर बाद की घटना है। संन्यासी का नाम आनंद मुनि था। वह चंडी महायज्ञ कर रहा था। महाकुंभ में आये लोगों को आकर्षित करने के लिए उसने महायज्ञ के बारे में कई दावे किये थे। इन दावों में कुंडलिनी जागरण से लेकर निस्संतान दंपत्ति को बच्चे होने और रोजगार व्यवसाय में चार चांद लग जाने जैसी बातें कही गई थीं।

यज्ञ झूंसी में हो रहा था। गांव का प्राचीन नाम प्रतिष्ठानपुर है। लोगों का विश्वास है कि यह वैदिक काल में हुए सम्राट पुरूरवा की राजधानी थी। त्रिवेणी तट पर स्थित पुराने किले के उत्तर में चलने पर एक कुंआ आता है हंसकूप। कुंआ बहुत पुराना है। उसी के पास हंसतीर्थ नाम का मंदिर है। कहते है कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मंदिर का निर्माण कुंडलिनी योग के आधार पर किया गया है। आनंद मुनि ने प्रचारित किया था कि यहाँ किये जा रहे यज्ञ में लोगों को अपार शक्ति मिलेगी। यज्ञ में शामिल होने के लिए उन्होंने याजकों से अच्छी खासी दक्षिणा ली थी और नौ दिन तक विशेष पूजा अनुष्ठान भी कराये थे।

महाकुंभ में भेंट के बाद तुलाधार और दमयंती आचार्यश्री के काम को विस्तार देने में लग गये थे। इस काम को करते हुए ही वे आनंद मुनि के संपर्क में आये। कुंडलिनी जागरण और लौकिक इच्छाओं की पूर्ति के बारे में सुना तो बात गले नहीं उतरी कि तीन चार दिन के आयोजन में भाग ले कर कोई व्यक्ति दिव्यशक्ति प्राप्त कर सकता है। आनंद मुनि के सामने यह शंका रखी भी थी। उन्होंने कह दिया था कि जिसे सिद्धि मिलना है, वह यज्ञ में भी मिलेगी और बिना यज्ञ के भी मिलेगी। सौ लोगों ने भी आयोजन में हिस्सा लिया तो उनमें से दस पांच की मनोकामना स्वाभाविक ढंग से ही पूरी हो जाएगी। यज्ञ याग का सीधे कोई लाभ हो या न हो, उसे श्रेय तो मिल ही जायेगा। हमारा उद्देश्य भी पूरा हो जाएगा।

तुलाधार ने उद्देश्य के बारे में पूछा तो आनंद मुनि ने हलके ढंग से कहा कि अपनी गुड्डी (पतंग) चढ़ाना यानी यश और धन अर्जित करना। तुलाधार ने इस उद्देश्य पर आपत्ति की। कहा कि सचाई के लिए काम करने से भी यश ओर वैभव मिलता है। उसके लिए लोगों को धोखा क्यों दिया जाय? लुभावनी बातों से उन्हें अपनी ओर आकर्षित करना धर्मविरुद्ध है।

जीवन से श्रेष्ठ मोक्ष

आनंद मुनि को ये बातें गले नहीं उतरी थीं। तुलाधार ने इस तरह के यज्ञ का विरोध करने की बात कही। संन्यासी के सामने ही कह दिया कि वे एक बड़ा गायत्री महायज्ञ करके दिखाएंगे। आप देखेंगे कि उसमें ज्यादा लोग भाग ले रहे हैं और सबका कल्याण हो रहा है। दावे, चुनौतियां और संकल्पों का दौर पूरा हुआ। आचार्यश्री से परामर्श किया। उन्होंने अपना आयोजन चंडी महायज्ञ के बाद रखने के लिए कहा। साथ ही यह भी कहा कि आनंद मुनि के आयोजन में भी सहयोग करना है। उसमें भाग लेना और वहाँ आने वालों को यज्ञ का सही अर्थ समझाना। अपनी बात कहते हुए खास ध्यान रखना है कि उसमें आनंद मुनि की आलोचना कभी न हो।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तुलाधार ने आचार्यश्री के निर्देशों का पालन किया। अपने आयोजन की सूचना लोगों को देते हुए आनंद मुनि के कार्यक्रम के लिए भी सहयोग जुटाया। इस अभियान में जब भी मौका मिलता तो वे समझाते कि यज्ञ का अर्थ त्याग, दान और सामूहिक भावनाओं को बढ़ाना है। इन भावों को बढ़ाते ही दिव्य शक्तियों के अनुग्रह अनुदान बरसने लगते हैं। आनंद मुनि ने इन प्रतिपादनों का विरोध नहीं किया। तुलाधार दंपत्ति के प्रयासों से उन्हें लोगों का सहयोग मिल रहा था। यज्ञ की तिथियां निकट आई, आयोजन आरंभ हुआ और करीब पांच सौ लोग उसमें सम्मिलित हुए।

मौनी अमावस्या से तीन दिन पहले पूर्णाहुति होना थी। आनंद मुनि ने इस अवसर पर मेला क्षेत्र के कई दूसरे संतों को बुलाया था। उन्हें निमंत्रण देते घूम रहे तुलाधार गंगा पार बिंदुमाधव के पास जा रहे थे। साथ में उनकी पत्नी भी थी। वहाँ काफी भीड़ थी। कहीं से दो सांड निकल आये और सींग लड़ाने लगे। उनके आपस में भिड़ने से लोगों में भगदड़ मच गई।

तुलाधार ने आव देखा न ताव लाठी लेकर सांड़ों को खदेड़ने लगे। पति को जूझता देख पत्नी भी मैदान में आ गई। वे सांड़ों पर तड़ातड़ डंडे बरसाने लगे। उन पर जल्दी क्या असर होना था, दोनों की धींगा मुश्ती की चपेट में पतिपत्नी आ गये। लगभग रौंदी हुई हालत में उन्हें अस्पताल पहुँचाया गया। दो दिन तक सघन उपचार के बाद उनकी हालत कुछ संभली। चंडी महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई। वे लूली लंगड़ी हालत में उसमें सम्मिलित हुए।

चंडी महायज्ञ संपन्न होने के सप्ताह भर बाद उसी जगह गायत्री महायज्ञ होना था। उसकी तैयारियां हो चुकी थीं। मौनी अमावस्या के दो दिन बाद शुरू होने वाले यज्ञ की पूर्णाहुति वसंत पंचमी के दिन तय हुई थी। तुलाधार दंपत्ति ने चाहा था कि आचार्यश्री इस अवसर पर आयें। ऐसा संयोग नहीं बन सका। गंगा किनारे हुए इस आयोजन में तीन सौ से ज्यादा लोगों ने भाग लिया। सप्ताह भर पहले हुई दुर्घटना में घायल तुलाधार बड़ी मुश्किल से अपने आपको घसीटते हुए से आयोजन स्थल पर भागदौड़ कर रहे थे। यज्ञ को दान, आत्मत्याग और संगति का स्वरूप बताने के लिए वे और भी रूपक गिना रहे थे।

यज्ञ में आनंद मुनि भी आमंत्रित थे। उन्होंने तुलाधार के आयोजन को अपने कार्यक्रम से जोड़ने की कोशिश की। तुलाधार ने कहा, 'नहीं इस आयोजन का उद्देश्य मेरा अपना या आपका या किसी और का नहीं है। वह उद्देश्य उन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गृहस्थ संत के माध्यम से आया है जो मथुरा में विराजमान हैं और जिन्हें बलिदानी साधकों की जरूरत है।'

मंच पर और व्यक्तिगत चर्चाओं में भी उन्होंने यही बात कही। वसंत पंचमी को पूर्णाहुति थी। उस दिन बारह लोगों ने अपने आपको गायत्री उपासना के प्रचार में लगाने का संकल्प लिया। तुलाधार अपनी टूटी फूटी काया लेकर यज्ञ की व्यवस्था कर रहे थे।

पूर्णाहुति के बाद वे कुछ देर के लिए यज्ञशाला के पास बिछे तखत पर बैठे और बैठे ही रह गये। उनका निधन हो गया। दूसरी तरफ उनकी पत्नी दमयंती ने भी उसी क्षण, मुहूर्त में शरीर छोड़ दिया। त्रिवेणी संगम पर पहला गायत्री महायज्ञ करने के बाद दंपत्ति ने जीवन यात्रा को विराम दे दिया। मथुरा में आचार्य श्री को इस घटना की खबर मिली और वे दौड़े चले आये। प्रयाग आकर उन्होंने तुलाधार और दमयंती के लिए शांतियज्ञ कराया।

गंगा के किनारे जिस दिन उन्होंने आचार्यश्री के सामने समर्पण किया था, उस दिन से वे लगातार यज्ञ गायत्री के प्रचार और समाज सुधार के काम में जुट गये थे। अपने संपर्क क्षेत्र में निकल जाना, लोगों से मिलना जुलना और बातचीत से लेकर गोष्ठियों तक उन्हीं बातों पर जोर देना उनकी कार्यशैली बन गया था। वेणीदान के विवाद को महीने भर के लिए स्थगित करना था। वह ऐसा स्थगित हुआ कि बाद में उठा ही नहीं।

एकाध अवसर पर विनोद में आचार्यश्री ने कहा भी कि 'तुम लोगों का वेणीदान का झगड़ा सुलझा या नहीं?' दोनों का उत्तर था कि 'हम दोनों, दान कर चुके। वेणी या केश का नहीं अपने सिर का ही दान कर दिया। शांतियज्ञ के समय आचार्यश्री ने इस विनोद का उल्लेख किया। यह घटना गंगा किनारे अपने आपको समर्पित करने के साल भर बाद की है।

नरमेध का यह पहला संकल्प था। पति पत्नी दोनों ने आचार्यश्री के अभियान में ही पूरे जीवन लगे रहने का संकल्प लिया था और वह उन्होंने निबाहा भी। यह बात अलग है कि नरमेध यज्ञ की तिथियां आते-आते दोनों का निधन हो गया। इसी अवसर पर उन्होंने स्पष्ट किया कि तुलाधार दंपत्ति साधारण आत्मा नहीं थे। वे जीवनमुक्त स्तर के थे। पिछले जन्म में अनजाने में गौवंश के प्रति अपराध हो गया था। उसी का प्रायश्चित करने के लिए आना हुआ था। वह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कषाय धुल गया। यह विधि उनकी अपनी ही चुनी थी, इसलिए कष्ट सहना पड़ा। अब वे मुक्त हुए।

सिद्ध सहयोग का संकेत

१९५४ की उस प्रयाग यात्रा में तुलाधार और दमयंती की गुत्थी सुलझाने के बाद आचार्यश्री त्रिवेणी संगम के किनारे पहुँचे। वहां गंगा की ठंडी रेत पर बीसियों झोपड़ियां बनी हुई थीं। इनमें लोग कल्पवास कर रहे थे। कल्पवास अर्थात माघ के पूरे महीने में व्रत नियमों का पालन करते हुए गंगा किनारे ही रहना। ऐसी ही एक झोपड़ी में कालीनाथ नामक एक संन्यासी मिले। काशी, प्रयाग, अयोध्या, चित्रकूट आदि तीर्थों में रहने का व्रत लिये हुए थे। इन संन्यासी के बारे में विख्यात था कि उनकी कही हुई बात गलत नहीं होती। दूसरे वे मन की बात अनायास ही जान जाते हैं और आगंतुकों के आते ही उसे लिखकर रख देते हैं। ये संन्यासी अपने आपको छुपाए झोपड़ी में कल्पवास कर रहे थे।

कल्पवास में गोदुग्ध पर ही तप कर रहे थे। चारों तीर्थों में निवास करते हुए वे जौ की रोटी, छाछ और दूध पर ही निर्भर रहते थे। इन व्रतों के बारे में सुनकर आचार्यश्री कालीनाथ बाबा के बारे में उत्सुक हुए थे।

सुबह आठ बजे के समय वे बाबा की कुटिया पर पहुँचे। वहां बाहर कोई नहीं था। दरवाजे के पास एक गाय बंधी हुई थी। बाबा ने उसे टाट और कंबल ओढ़ा रखा था। दरवाजा खुला हुआ था। आचार्यश्री अकेले ही थे। उन्होंने खुले दरवाजे पर हलकी सी दस्तक दी और भीतर झांका। झोंपड़ी में एक घुटमुंड संन्यासी आसन पर पालथी मारे बैठे हुए थे। वस्त्र के नाम पर उन्होंने सिर्फ एक कौपीन पहना हुआ था। अच्छी कद काठी के यही संन्यासी बाबा कालीनाथ थे। उनके चेहरे पर स्मित भाव था। आचार्यश्री की आहट पाते ही उन्होंने संकेत से अंदर आ जाने के लिए कहा। वे पास जाकर बैठ गये। बाबा के पास बांई ओर कमंडल रखा था। उन्होंने दायें हाथ की अंगुलियां कमंडल में डाली। उसमें रखे पानी में भिगोई और अपने सिर पर पानी छिड़क लिया। आंखे खोली और आचार्यश्री की ओर देखकर बोले, 'आप कुछ देखने नहीं पास बैठने आये है न। फिर भी कुछ देख ही लीजिये।'

'नहीं महाराज मैं आपके दर्शन के लिए आया हूँ। आपकी विभूति के लिए नहीं।' आचार्यश्री ने कहा। बाबा नहीं माने। कुछ देख ही डालें। कहते कहते उन्होंने पास रखे कागज के टुकड़ों पर पेंसिल से कुछ लिखा। उन्हें मोड़ा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और तकिये के नीचे रख दिया। इसके बाद वे बोले, 'आप जो पत्रिका निकालते हैं, उसमें चित्र के नीचे कुछ पंक्तियां लिखी होती हैं। क्या हैं वे पंक्तियाँ?'

आचार्यश्री ने उन पंक्तियों को पढ़ कर सुनाया। बाबा ने तकिये के नीचे रखा कागज का एक टुकड़ा निकाला और आचार्यश्री की ओर बढ़ाया। उस टुकड़े पर वही पंक्तियाँ लिखी हुई थीं। फिर बाबा ने कहा उपनिषद का कोई मंत्र बताइये जो आपको बहुत प्रिय हो। आचार्यश्री ने वृहद आरण्यक का मंत्र सुनाया-'आत्मा वा अरे द्रष्टव्य श्रोतव्य, ध्यातव्य निदिध्यासतव्य।' उनका कहना था कि बाबा ने तकिये के नीचे रखा एक ओर कागज का टुकड़ा निकाला। उस पर वही मंत्र वाक्य लिखा हुआ था।

दो तीन बातें और हुई। फिर बाबा ने कहा 'गंधी बाबा ने भारत माता की जो मूर्ति दी थी वह कहाँ है? पूजा स्थल में रखी हुई है क्या?' बाबा काशी में स्वामी विशुद्धानंद की दी हुई प्रतिमा का उल्लेख कर रहे थे। आचार्य श्री इस बात से चौंके बिना कहने लगे, 'मैं उसे विसर्जित करना चाहता हूँ।'

'इस बारे में मैं कुछ नहीं कहूँगा,' बाबा ने कहा, 'डेढ़ दो साल बाद तुम लोगों की बलि चढ़ाना चाहते हो। उस अवसर पर होने वाले महायज्ञ में तुम्हारे महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति होगी लेकिन वह बलिदान का आरंभ होगा। आगे सैकड़ों हजारों लोग अपनी बलि देने के लिए आएंगे। उनके आवेग को संभालना।'

उस समय तक आचार्यश्री ने नरमेध यज्ञ की विधिवत घोषणा नहीं की थी। निजी चर्चाओं में वे उल्लेख किया करते थे। इस बार वसंत पंचमी पर घोषणा करने का मन बना लिया था। कालीनाथ बाबा ने उस बारे में बता दिया तो आचार्यश्री को थोड़ा भी आश्चर्य नहीं हुआ। बाबा अपनी बात कह चुके और सामान्य विषयों पर चर्चा होने लगी। परिचय के उसी दौर में आचार्यश्री ने पूछा, 'आपके गुरु कहां निवास करते हैं? उनका पुण्यश्लोक (नाम) क्या है?'

कालीनाथ बाबा सुनकर मुसकराये। उनकी मुस्कराहट अर्थपूर्ण थी। चमकते हुए ललाट पर कुछ रेखाएं उभरी और खिले होंठों से ही उनकी वाणी निकलकर आई, 'जो तुम्हारा गुरु है, वही हमारी भी मार्गदर्शक सत्ता है। उससे संकेत पाकर बहुत से साधक गिरि कंदराओं से निकल कर आये हैं, आगे भी आयेंगे। वे अपने गुरु के महत्कार्य को आगे बढ़ायेंगे। जो उत्तर मैं दे रहा था, वे भी वहीं से आ रहे थे।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आठ

यज्ञेन यज्ञमयजंत

मार्च १९५५ के दिन थे। गुनगुनी धूप और मौसम में सर्दी गरमी का समन्वय। समशीतोष्ण ऋतु में काफी लोग तपोभूमि में ठहरे हुए थे। उनका अनुभव था कि मथुरा में इन दिनों काफी सर्दी रहती है। इसी हिसाब से ओढ़ने बिछाने के वस्त्र लेकर आये थे। उनकी ज्यादा जरूरत नहीं पड़ी। संवत् दो हजार ग्यारह की उस चैत्र नवरात्रि में तपोभूमि आये साधकों की आंतरिक ऊर्जा ही इतनी गरमाहट दे रही थी कि मौसम का ज्यादा असर नहीं हो रहा था।

चैत्र प्रतिपदा को नवरात्रि उपासना आरंभ करने से पहले साधकों ने आचार्यश्री को प्रणाम किया। वे उस दिन सुबह तीन बजे ही तपोभूमि आ गये थे। साढ़े तीन बजे जागरण की घंटी बजी। साधकों ने उठ कर प्रातःस्मरण और प्रणाम का उपक्रम किया। दिनचर्या आरंभ करने की तैयारी में लगभग एक घंटा समय लगा होगा। शुरु दिन करीब अस्सी साधक आये थे। तपोभूमि में मुश्किल से साठ लोगों के ठहरने की व्यवस्था थी। बाकी बीस लोग भी उसी जगह सिकुड़ सिमट कर रहे। अगले दिनों यह संख्या और बढ़नी थी। उनके लिए आसपास की धर्मशालाएँ और चामुंडा देवी की बगीची में व्यवस्था की गई।

उस दिन प्रतिपदा को स्नानादि से निवृत्त होने के बाद प्रणाम करते हुए एक साधक ने पूछा, 'हम लोग समझते थे कि यहाँ काफी सरदी होगी। लेकिन मौसम एकदम बदला हुआ है। मथुरा में प्रवेश से पहले फिर भी तेज जाड़ा लग रहा था। यहाँ आने के बाद कुछ नहीं है।'

आचार्यश्री ने कहा, 'इसका कारण नवरात्रि है। वर्ष में दो नवरात्रियाँ होती हैं- चैत्र और आश्विन। चैत्र मास में गरमी आरंभ होती है और आश्विन में सरदी। दोनों नवरात्रियों को इसीलिए ऋतु संध्या कहा है। यह विज्ञान भारतीय ऋषियों की ही देन है कि यहां परिवर्तन की वजह सूर्य का उत्तरायण या दक्षिणायन होना उतना नहीं है जितना आकाश में चंद्रमा और नक्षत्रों की स्थिति में बदलाव आना। चैत्र का महीना कभी मार्च में आता है और कभी अप्रैल में। बारीकी से देखेंगे तो समझेंगे कि उसी हिसाब से ऋतुएं भी बदलती हैं।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लोग प्रणाम कर रहे थे। आचार्य श्री कहते जा रहे थे कि ऋतुएँ तीन हैं। वर्षा भी एक ऋतु की तरह लगती है लेकिन उष्णता और शीतलता या ताप और शमन की दृष्टि से देखें तो वे दो ही ठहरती हैं। वर्षा सर्दी में भी होती है। अगहन और पौष तथा गर्मी में भी आषाढ़ और सावन में। इसी तरह नवरात्रियां भी तीन हैं, चैत्र, ज्येष्ठ और आश्विन। उनमें महत्वपूर्ण दो ही मानी गई हैं। चैत्र और आश्विन।

गायत्री माता के दर्शन, आरती और प्रात:कालीन जप के बाद भी आचार्यश्री रुके रहे। उन्होंने कहा कि हम लोगों को उठ कर सबसे पहले जप ध्यान आदि से निवृत्त हो जाना चाहिए। प्रणाम अभिवादन का क्रम इसके बाद ही चले तो अच्छा। अगले दिन से आरती और जप का क्रम पहले चला। आचार्यश्री और माताजी भी आरती में सम्मिलित थीं। जप संपन्न होने के बाद संक्षिप्त सा उद्‌बोधन होता। फिर यज्ञ अग्निहोत्र। सुबह दो घंटा समय जप आदि के लिए मिलता। इस अवधि में अनुष्ठान के उपयुक्त जप पूरा नहीं हो पाता था। बाकी रह गया जप दिन में यथासमय पूरा किया जाता।

संवत् २०११ की उस नवरात्रि में सुबह के प्रवचन में साधना संबंधी निर्देश दिये जाते। साधकों की जिज्ञासाओं का समाधान किया जाता। निजी जीवन में आने वाली कठिनाइयों और समस्याओं पर भी चर्चा होती। दिन में महात्मा प्रभु आश्रित, स्वामी प्रेमानंद, गोस्वामी कृष्णवल्लभ और प्रो० त्रिलोकचंद्र के व्याख्यान होते। महात्मा प्रभु आश्रित और स्वामी प्रेमानंद आर्यसमाज की पृष्ठभूमि से आये थे। उनमें भी महात्मा प्रभु आश्रित के उपदेश तत्वज्ञान पर ज्यादा केन्द्रित होते थे। स्वामी प्रेमानंद मूलरूप में भजनोपदेशक थे। वे भजन गाकर और हारमोनियम बजाकर अपनी बात लय के साथ कह लेते थे। स्वामी जी विनोदी स्वभाव के थे। उनकी यह विशेषता प्रवचनों में भी छलकती थी। जब वे मूड में होते तो श्रोता हँसते हँसते लोटपोट हो जाते थे। उस हलके फुलके वातावरण में वे कोई ऐसी महत्वपूर्ण बात कह जाते जो गूढ़, गंभीर वातावरण में भी संभव नहीं होती।

महात्मा प्रभु आश्रित का जोर गायत्री के तत्वज्ञान और साधना पर रहता था। झज्जर (हरियाणा) के इन संत के संबंध में कहा जाता था कि वे गायत्री सिद्ध थे। निराकार उपासना में विश्वास करते थे। कहते है कि साधना के दौरान ही उन्हें सगुण साकार गायत्री के दर्शन हुए। भगवती ने उन्हें गायत्री की कथा कहने का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आदेश दिया। वे निराकार उपासना का मार्ग छोड़कर सगुण साकार की धारा में आये। उनके प्रवचनों में सरलता, अनुभव और सहृदयता का पुट रहता था।

मार्च की उन्हीं नवरात्रियों में तय किया गया कि गायत्री महायज्ञ की शृंखला को गति दी जाए। इस आशय की घोषणा की गई तो महात्मा प्रभु आश्रित ने तुरंत कहा कि मैं भी अपने सभी कार्यक्रम स्थगित कर अगले साल होने जा रहे नरमेध यज्ञ के लिए काम में लगूंगा। स्वामी प्रेमानंद ने मंच पर बैठे-बैठे ही टिप्पणी की इस आयोजन से लोगों का मेध हो न हो, उनकी मेधा अवश्य परिष्कृत हो जाएगी। वहां उपस्थित साधकों ने पूर्ण बलिदानी, समयदानी साधक तैयार करने का व्रत लिया।

नवरात्रि के छह दिन साधना और उत्सव के माहौल में देखते-देखते बीत गये। अंतिम तीन दिनों में प्रवचन, सत्संग और तत्वज्ञान पर चर्चा का क्रम कुछ शिथिल चला। इस अवधि में ब्रजयात्रा का कार्यक्रम बना। सप्तमी को लोग रेल से वृंदावन गये। यों तांगे, बग्घियां, बैलगाड़ी और बस जैसे साधन भी थे। आठ दस किलोमीटर की दूरी कोई मायने नही रखती। एक सुझाव यह भी आया कि पैदल ही वृंदावन की यात्रा की जाए। शोभायात्रा के रूप में लोग कतार बनाकर चलें।

गुरु निंदा के विरुद्ध

आचार्यश्री ने मना कर दिया कि साधकों ने उपवास रखा हुआ है। एक सप्ताह से लोग निराहार हैं या आधा पेट-एकाशन व्रत किये हुए हैं। शरीर कमजोर हुआ होगा। उस हालत में ज्यादा दबाव नहीं देना चाहिए। रेलयात्रा में सुविधा रहेगी। भूतेश्वर स्टेशन से सत्तर, अस्सी साधकों ने एक साथ टिकट लिया और रेल में बैठे। सफर मुश्किल से आधा घंटे में तय हो गया। यह अवधि ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं है। वह दृश्य आकर्षक और मनोरम बन पड़ा था जिसमें एक ही तरह की वेशभूषा पहने, गले में झोला लटकाये और गायत्री चर्चा करते हुए वृंदावन के मंदिरों का दर्शन करते हुए घूम रहे थे।

वृंदावन में सामूहिक यात्रा कर रहे साधकों को लोगों ने कहीं नहीं टोका या पूछा परखा। इक्का दुक्का साधक इस या उस दूकान पर रुक जाते तो उनसे जरूर पूछते कि माजरा क्या है ? तपोभूमि में इससे पहले भी दो नवरात्रियों पर सामूहिक साधना हो चुकी थी। उस समय भी ब्रजदर्शन के लिए लोग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निकले थे। लेकिन इस अनुष्ठान पर यात्रा का अपना अलग ही अनुभव था। नरमेध यज्ञ की तिथियां करीब आ रही थीं। मथुरा वृंदावन और ब्रज के महात्माओं में इसे लेकर चर्चा थी। वृंदावन में यात्रा कर रहे साधकों में दो चार से लोगों ने विचित्र सवाल किये। एक ने पूछा था कि आप लोग सामान्य दिनों में कितना मांस खाते हैं?

साधक ने प्रश्न का आशय पूछा तो प्रतिप्रश्न आया कि नरमेध यज्ञ के समय मनुष्य का मांस खायेंगे क्या? इन दिनों किसका खा रहे हैं? संवाद में स्पष्ट उपहास झलक रहा था। कुछ साधकों से लोगों ने यह भी पूछा कि नरबलि देने के लिए कितने लोग पकड़ कर लायेंगे। इन सवालों का कोई उत्तर नहीं था। उत्तर देने की कोशिश करते तो झगड़ा हो जाता। साधक जब समूह में चल रहे होते तो किसी से प्रश्न करते नहीं बनता था। इक्का दुक्का पड़ रहे साधकों पर लोग कटाक्ष कर देते। साधकों ने इन व्यंग कटाक्षों को चुपचाप सहा। कुछेक अवसरों पर उत्तेजित भी हुए। वे उत्तेजित होते तो आलोचना करने वाले दुबक जाते थे।

वृंदावन में रंगजी मंदिर के सामने से ही कटाक्ष और उसकी प्रतिक्रिया में टकराव की नौबत आ गई। साधक वहाँ से दर्शन करके निकले ही थे कि किसी पंडे ने आचार्यश्री के संबंध में क्षुद्र टिप्पणी कर दी। टिप्पणी शरण बिहारी नामक साधक के कान में पड़ी और सुनते ही वह उत्तेजित हो गया। उसने आव देखा न ताव और पंडे का गिरेबान पकड़ लिया और गरज कर कहा 'अबकी बार बोलना तो।'

पंडे ने फिर वही टिप्पणी दोहरा दी। शरण बिहारी बहुत ताकतवर या दांवपेंच जानने वाले व्यक्ति नहीं थे। गुरु की शान के खिलाफ टिप्पणी सुनकर उनमें न जाने कहां से ताकत आ गई। दोबारा टिप्पणी सुनते ही उसने पंडे को पटखनी दी और मुँह पर तड़ातड़ घूंसे जड़ दिये। पंडा चीखने लगा। मंदिर में दर्शन के लिए आ रहे और बाहर निकल रहे लोग ठिठक कर खड़े हो गये। कुछ ने बीच-बचाव की कोशिश की। मुश्किल से झगड़ा थमा।

झगड़ा तो थम गया लेकिन उस व्यक्ति ने वृंदावन थाने में रिपोर्ट लिखा दी। शरण बिहारी या किसी साधक के खिलाफ नहीं, आचार्यश्री के खिलाफ नामजद रिपोर्ट लिखाई कि उन्होंने मंदिर के पुरोहित पर हमले की नीयत से पच्चीस-तीस लोग भेजे थे। हमला हो भी गया था। यात्रियों ने बीच-बचाव नहीं किया होता तो बलवा हो जाता। मजे की बात यह कि साधक अभी वृंदावन में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ही घूम रहे थे और रिपोर्ट लिखने लिखाने की कार्रवाई हो गई थी। वृंदावन के दरोगा ने आकर मौका मुआयना कर लिया था। गवाही देने वाला कोई नहीं मिला। रंग जी मंदिर में उन दिनों ब्रह्मोत्सव चल रहा था।

घटना की सूचना देने के लिए दारोगा गायत्री तपोभूमि गये। आचार्यश्री ने पूरा वाकया सुना और कहा, 'जिस किसी ने भी यह व्यवहार किया है, मैं उसे समझाऊंगा। माफी मांगने के लिए कहूँगा। आप खुद चाहें तो उस साधक को दंडित कर सकते हैं।'

दरोगा जिसका नाम शिवनाथ सिंह था, यह उत्तर सुनकर विभोर हो गया। उसने कहा कि साधको को दंडित करने की आवश्यकता नहीं है। वहाँ के कुछ पंडे पुजारी दूसरे लोगों का अक्सर विरोध करते हैं। उनकी आदत है। उन साधक के बारे में उन दो चार लोगों के अलावा कोई नागरिक शिकायत करने नहीं आया। कोई गवाह बनने के लिए भी तैयार नहीं हुआ। दरोगा ने अपनी बात यहीं पूरी की। फिर कुछ पल चुप बैठा रहा जैसे कुछ कहना चाहता है लेकिन कह नहीं पा रहा है।

अनमने से बैठे दरोगा से आचार्यश्री ने खुद ही पूछा, 'शिवनाथ सिंह कुछ और कहना है क्या? आप अगर चाहते है कि साधकों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जाए तो मत कीजिए। मैं उन्हें सिर्फ समझाऊंगा।

आचार्यश्री की यह बात सुनकर भी दरोगा कुछ नहीं बोला। किसी अधिकारी या पुलिसकर्मी को इतना संकोची नहीं देखा था। शिवनाथ सिंह को जैसे साहस बटोरना पड़ रहा था। कुछ मिनट बाद वह बोल पाया। उसने कहा, 'आप जिस तरह इन साधकों के गुरुदेव हैं, उसी तरह मेरे भी गुरु हो जाइए न। मैं आपका शिष्य बनना चाहता हूँ।'

आचार्यश्री शिवनाथ सिंह की ओर देखने लगे। उनकी दृष्टि में स्वीकृति का भाव था। उन्होंने कहा कुछ नहीं। उनके देखने भर से शिवनाथ सिंह ने समझ लिया कि उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई है।

बोझ हलका हो जाए

नवरात्रि पूर्णाहुति के दिन संक्षिप्त सा विदाई समारोह हुआ। आचार्य श्री यों प्रतिदिन साधकों को साधना, उपासना का मर्म समझाते हुए व्याख्यान देते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनुष्ठान पूरा होने के दिन कोई विशिष्ट संत भी आ जाया करते थे। उस दिन वृंदावन में गीता आश्रम के हरिहर बाबा आये। मथुरा, वृंदावन से कुछ विद्वानों और सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को भी बुलाया गया था। मंच पर करीब दस लोग बैठे थे। आचार्यश्री के साथ माताजी भी मंच पर थीं।

तपोभूमि के प्रांगण में पचास साठ लोग बैठे थे। यज्ञ पूर्णाहुति और देवदक्षिणा के बाद साधकों और श्रोताओं के यथास्थान बैठ जाने के बाद गायत्री मंत्र का पाठ किया गया। आचार्यश्री समारोह की प्रस्तावना रच ही रहे थे कि मंदिर के पीछे से एक व्यक्ति निकल कर आया। घुटे हुए सिर, कांचदार बटनवाला बंगाली कुर्त्ता, घुटनों तक धोती और कंधे पर गमछा डाले यह व्यक्ति शक्ल सूरत से पंडा पुरोहित लग रहा था। उसके हाथ में दस पंद्रह पन्नों में लिखी हुई कोई कहानी थी। मंच के पास पहुँचकर उसने आचार्यश्री से कुछ कहने के लिए मुँह खोला ही था कि माताजी ने इशारे से उसे अपने पास बुलाया। वह व्यक्ति माताजी के पास गया। नीचे खड़े होकर ही कुछ देर अपनी बात कहता रहा। माताजी गौर से सुन रही थीं। उनके चेहरे पर अप्रसन्नता के भाव आ जा रहे थे। अपनी बात कह चुकने के बाद पंडे ने प्रतिवेदननुमा वह पत्र निकाला और माताजी को सौंप दिया।

आचार्यश्री विदाई समारोह का आरंभ कर चुके थे। स्वामी हरिहरजी ने व्याख्यान शुरू कर दिया तो वे पीछे आकर बैठ गये। उन्होंने पंडे को माताजी से बातचीत करते और कागजों का पुलिंदा देते हुए देख लिया था। आचार्यश्री कुछ पूछें इसके पहले ही माताजी उस पुलिंदे को फाड़ने की मुद्रा में आ गईं। वे फाड़ना शुरू करने ही वाली थीं कि आचार्य श्री ने रोक दिया। कागज अपने पास ले लिये और कहा, 'वह व्यक्ति इतनी निष्ठा और भावना से यह सब लिख कर लाया है। इस तरह अनादर नहीं करना चाहिए।'

माताजी ने कहा, 'मुझे पता है कि इस पुलिंदे में बकवास के सिवा कुछ नहीं लिखा है। वह व्यक्ति आपके नरमेध यज्ञ के बारे में मुझसे अनर्गल बातें कह चुका है। वही बातें पत्र में भी लिखी होंगी। इन्हीं बातों को वह मंच पर चढ़ कर कहना चाह रहा था। मैंने मना कर दिया।'

'अगर यह कोई सभा मंच होता तो हम उसे बोलने का अवसर जरूर देते,' आचार्य श्री ने कहा 'लेकिन यह साधना उपासना का मंच है। फिर भी उस व्यक्ति की बात का तिरस्कार नहीं करना चाहिए।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यह कहते हुए आचार्य श्री ने कागज अपने पास रख लिए। माताजी ने उनकी उपयोगिता के बारे में पूछा तो कहने लगे कि कम से कम इन्हें पढ़ तो लेना ही चाहिए। नहीं पढ़ें तो भी इन पन्नों के पीछे वाले हिस्से को लिखने के काम में लिया जा सकता है। आचार्यश्री की बात सुनकर माताजी के चेहरे पर स्मिति की हलकी सी रेखा खिल गई। उन्होंने कागजों का पुलिंदा वापस ले लिया और सहेज कर रखा।

स्वामी हरिहरजी का प्रवचन समाप्त हुआ। उसके बाद स्वामी प्रेमानंद ने दो भजन गाये। उनके बाद आचार्यश्री ने अपना प्रवचन आरंभ किया। उन्होंने कहा, 'गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ' कहकर प्रवचन आरंभ किया ही था कि कंधे पर गमछा डाले, बंगाली कुर्ता पहने वह व्यक्ति अचानक कहीं से निकल आया और यज्ञशाला के पास खड़ा होकर चीखने चिल्लाने लगा। उसकी फब्तियों में नारेबाजी का स्वर था। उस चिकने और सपाट सिर वाले व्यक्ति को चिल्लाता देख आसपास से दो लोग और निकल आये। वे भी उसके सुर में सुर मिलाने लगे।

आचार्यश्री ने अपना प्रवचन रोक दिया। उन्होंने शोर मचाने वालों से न तो शांत रहने का अनुरोध किया और न ही तपोभूमि के कार्यकर्त्ताओं से उनका प्रतिरोध करने के लिए कहा। विदाई में बैठे दो साधकों ने उठकर उन लोगों को चुप कराने की कोशिश की। आचार्यश्री ने साधकों को उठता देखकर टोका, आप लोग कुछ मत बोलिए। उन्हें अपनी बात कहने दीजिए। भीतर से भरे बैठे हैं। उन्हें खाली हो लेने दीजिए। जी का बोझ हलका हो जाएगा तो अपने आप शांत हो जाएंगे।

अवरोधी निराश हुए

आचार्यश्री की बात सुनकर वहां बैठे साधक हंसने लगे। इससे पहले उनके मन में गुस्सा उबल रहा था। अपने साधना गुरु की बात सुनकर उनका गुस्सा शांत हो गया। उधर चीख चिल्ला रहे लोग भी जैसे समझ गये कि वे सम्मारोह को विफल नहीं कर पायेंगे। उत्तेजना फैलाने और झगड़ा बढ़ाने की जो उम्मीद लेकर वे यहां आये थे, वह कहीं से भी पूरी होती नहीं दिखाई दे रही थी। उन्होंने चुपचाप खिसक लेने में ही भलाई समझी।

उपद्रवियों के जाने के बाद आचार्यश्री ने कहा कि, लोग कितने ही अवरोध खड़े करें, नरमेध यज्ञ होकर रहेगा। हम लोग बार-बार स्पष्ट कर चुके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं और यह आखिरी बार है कि अपने अहंकार, अभिमान का त्याग कर लोकसेवा के लिए आगे आने का नाम ही नरमेध है। अपना सिर काट कर यज्ञ की अग्नि में होमना या शरीर का कोई अंग काट कर देवी देवताओं को चढ़ा देना, अपना रक्त बहाना आसान है। लेकिन अहंकार और अभिमान का विसर्जन कर लोकसेवा में जुट पड़ना कठिन है। नर नारायण की सेवा के लिए अपने आपको समर्पित कर देने का नाम ही नरमेध है।

उन्होंने एक बार फिर याद दिलाया कि साल भर बाद इसी जगह नरमेध यज्ञ संपन्न होगा। चैत्र नवरात्रियां संपन्न होने के बाद गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति। महायज्ञ जो पिछले तीन महीनों से चल रहा है और अगले बीस महीनों तक और चलेगा। चैत्र नवरात्रियों के बाद एकादशी से शुरु होने वाला महायज्ञ चौबीस वर्ष तक चले गायत्री महायज्ञों की पूर्णाहुति के रूप में भी होगा। नियम है कि जितना बड़ा अनुष्ठान किया जाए, उसमें जपे गए मंत्रों का दसवें भाग की आहुतियां भी दी जानी चाहिए। महापुरश्चरण साधना की पूर्णाहुति तो उस महायज्ञ में ही हो जाएगी। पंद्रह माह तक चल रहे यज्ञ आयोजनों की शृंखला का भी एक पड़ाव इस मौके पर आयेगा।

आचार्यश्री ये बातें साधकों और कार्यकर्त्ताओं से समय-समय पर कहते रहे थे। यहाँ इस अवसर पर और कह दी और यह भी कि अगले एक साल तक अपने क्षेत्र में छोटे-छोटे गायत्री यज्ञों का आयोजन करें। उनमें आचार्यश्री हर जगह पहुँचने की कोशिश करेंगे।

पंद्रह महीने तक चलने वाला गायत्री महायज्ञ भी अद्‌भुत और अनुपम था। यज्ञ यों तपोभूमि में ही हो रहा था लेकिन इसमें मथुरा के बाहर जहां तहां बसने वाले परिजन भी भाग ले रहे थे। बहुत सरल विधान था। प्रत्येक साधक को अपने घर में रह कर ही गायत्री उपासना करनी थी। एक माला कम से कम और ज्यादा जितनी भी हो सके। जप संख्या का हिसाब जरूर रखना था। दस माला प्रतिदिन के हिसाब से चौबीस दिन में, पांच माला के हिसाब से अड़तालीस दिन में और दो माला के हिसाब से चार महीने में एक अनुष्ठान पूरा होता था।

एक अनुष्ठान पूरा हो जाने पर साधक महायज्ञ में एक अंश का भागीदार हो जाता। उस भागीदारी के अनुसार साधकों को मथुरा पहुँच कर, तपोभूमि में चलने वाले नित्य महायज्ञ में आहुतियाँ देना था। यह महायज्ञ गायत्री तपोभूमि की यज्ञशाला में चल रहा था। जितने भी साधकों ने गायत्री महासाधना में हिस्सा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिया, वे सवा साल की अवधि में कम से कम एक बार अपने हिस्से का हवन करने मथुरा जरूर आये।

मथुरा के बाहर भी यज्ञों की शृंखला चल पड़ी थी। मार्च १९५५ के बाद बारह महीनों में अठारह जगह गायत्री यज्ञ हुए। आचार्यश्री प्राय: सभी जगह गये। अठारह आयोजनों में से आठ ब्रज प्रदेश में ही हुए थे। आगरा, हाथरस, अलीगढ़, एटा, डीग, भरतपुर, मैनपुरी आदि इलाके ब्रज मंडल में ही आते थे। ब्रजक्षेत्र में आचार्यश्री का जबर्दस्त विरोध था। मार्च १९५५ की नवरात्रियों में अगले वर्ष के यज्ञ कार्यक्रमों की घोषणा हुई। उस घोषणा से पहले नरमेध यज्ञ को लेकर एक उपद्रव होते होते बचा था। घोषणा सुनकर शिविर में आये साधकों ने कहा कि आचार्य श्री को इस क्षेत्र के आयोजनों में अकेले नहीं जाना चाहिए।

कुछ ने कहा कि कार्यक्रम ही बदल दिया जाए। ब्रजक्षेत्र के निहित स्वार्थी तत्व दुश्मन बन रहे हैं तो उन्हें अपने हाल पर छोड़ दिया जाए। इस तरह का अनुरोध करने वालें में मथुरा के रमेशचंद्र अग्रवाल, जालौन के रूपचंद मोहला और रामगंज मंडी के राय नारायण वर्मा मुख्य थे। उन्होंने सलाह दी तो एक साधक दया शंकर उछल पड़े। उन्होंने कहा दुष्टों के भय से कार्यक्रम बदलना हमारी हार होगी। इस तरह घुटने टेकते रहे तो हम क्या खाक परिवर्तन कर सकेंगे। हमें डरना नहीं चाहिए।

रूपचंद मोहला ने कहा, 'जब तक हमारे पास पर्याप्त साधन नहीं हो जाते तब तक चतुराई से काम लेना चाहिए। भगवान कृष्ण ने भी तो एक समय मथुरा छोड़ देने में ही भलाई देखी थी। जब समर्थ हो गये तो उन्हीं ने कंस पर और मथुरा की आसुरी शक्तियों पर आक्रमण किया। उन्हें नेस्तनाबूद कर दिया। यह बहस बहुत देर तक चली। ब्रज के कार्यक्रमों में संशोधन करने और नहीं करने पर काफी तर्क वितर्क हुआ। आखिर में तय हुआ कि जहां जहां विरोध प्रबल हो वहाँ आचार्यजी अकेले नहीं जांएगे। कम से कम चार कार्यकर्त्ता और साथ जाएं। वे लोग यज्ञ आदि की व्यवस्था देखें और आवश्यक हो तो उपद्रवियों को सबक भी सिखायें।

सुखद संयोग की कहना चाहिए कि ब्रजक्षेत्र में मुकाबले की नौबत नहीं आई। धमकियों वाली चिट्ठी पत्री, दूसरों के जरिये सावधान करने, डराने और अफवाहें फैलाने जैसी हरकतें होती रहीं। कोई खुलकर सामने नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आया। ब्रजक्षेत्र के सभी कार्यक्रम बिना वैर विरोध के संपन्न हुए। वृंदावन के एक कार्यक्रम में विचित्र घटना घटी। उसने प्रतिरोध के एक नये तरीके से साक्षात कराया।

आचार्यश्री तब वृंदावन की एक बगीची में यज्ञ संपन्न कराकर लौट रहे थे। बगीची का कोई खास नाम नहीं था। वृंदावन के एक पुराने रईस की बगीची थी। उसके वारिसों में बँटवारे को लेकर झगड़ा चल रहा था। एक पक्ष ने अपना अधिकार सिद्ध करने की भावना से यज्ञ कराया था। उस बगीची के दावेदार सोलहवीं शताब्दी में हुए वैष्णव संत गोस्वामी हितहरिवंश के वंश से संबंध रखते थे। दावेदारों के पूर्वज संभवतः गोस्वामी जी के दूर के रिश्तेदार थे। किशोरीशरण नामक उन सज्जन का मानना था कि बगीची पर अधिकार कराने के लिए गायत्री यज्ञ कराया जाए तो उनकी मनोकामना पूरी होगी। इस कामना के संबंध में उन्होंने आचार्यश्री से कुछ नहीं कहा था। उन्हें डर था कि इस बारे में बताया तो यज्ञ के लिए मना कर दिया जायगा। मन की बात मन में ही छुपा कर उन्होंने यज्ञ करा लिया और रास्ते में बताया। किशोरी शरण उन्हें विदा करने के लिए जा रहे थे और राधा वल्लभ के मंदिर के सामने गुजर रहे थे, तब यह रहस्य प्रकट किया।

दुराव रख कर आयोजन करा लेने से आचार्यश्री क्षुब्ध हुए लेकिन उन्होंने कहा कुछ नहीं। अपने आपसे कहा कि यह व्यक्ति अगर नहीं बताता तो कैसे पता चलता। बात आई गई हो गई। किशोरी शरण में देर से ही सही सच कहने का साहस तो आया। उधर आचार्यश्री से कहते-कहते किशोरी मन ही मन शर्मिंदा भी हो रहा था। स्वीकारोक्ति, झिझक, संकोच और असमंजस की मिली जुली स्थितियों से निकालते हुए आचार्यश्री ने समझाया, 'गायत्री यज्ञ से कोई चमत्कार नहीं हो जाना है कि भाई बंधु अगर ज्यादती कर रहे हैं तो वे तुरंत दौड़े चले आयेंगे। यज्ञ, साधना, उपासना का प्रभाव व्यक्ति के चित्त में सद्बुद्धि जागने के तौर पर ही हुआ समझना चाहिए।'

समझाते हुए वे राधावल्लभ मंदिर के सामने कुछ देर ठिठके। उन्हें कुछ ध्यान आया। पीछे मुड़ कर मंदिर को देखने लगे। मंदिर को देखते ही उन्होंने कहा, सुनो किशोरी इस मंदिर की स्थापना तुम्हारे ही पूर्वजों ने की थी न। उन्होंने अपने समय में नरवाहन नामक डाकू का हृदय परिवर्तन किया था। तुमने अपने घर के लोगों से सुना होगा या हो सकता है कहीं पढ़ा भी हो कि स्वामीजी जब देववन (हित हरिवंश का मूल निवास) से यहां आ रहे थे तो रास्ते में नरवाहन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्री [illegible] अध्यक्ष (ऊपर)
एवं [illegible] पूर्व प्रधानमंत्री
[illegible]

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

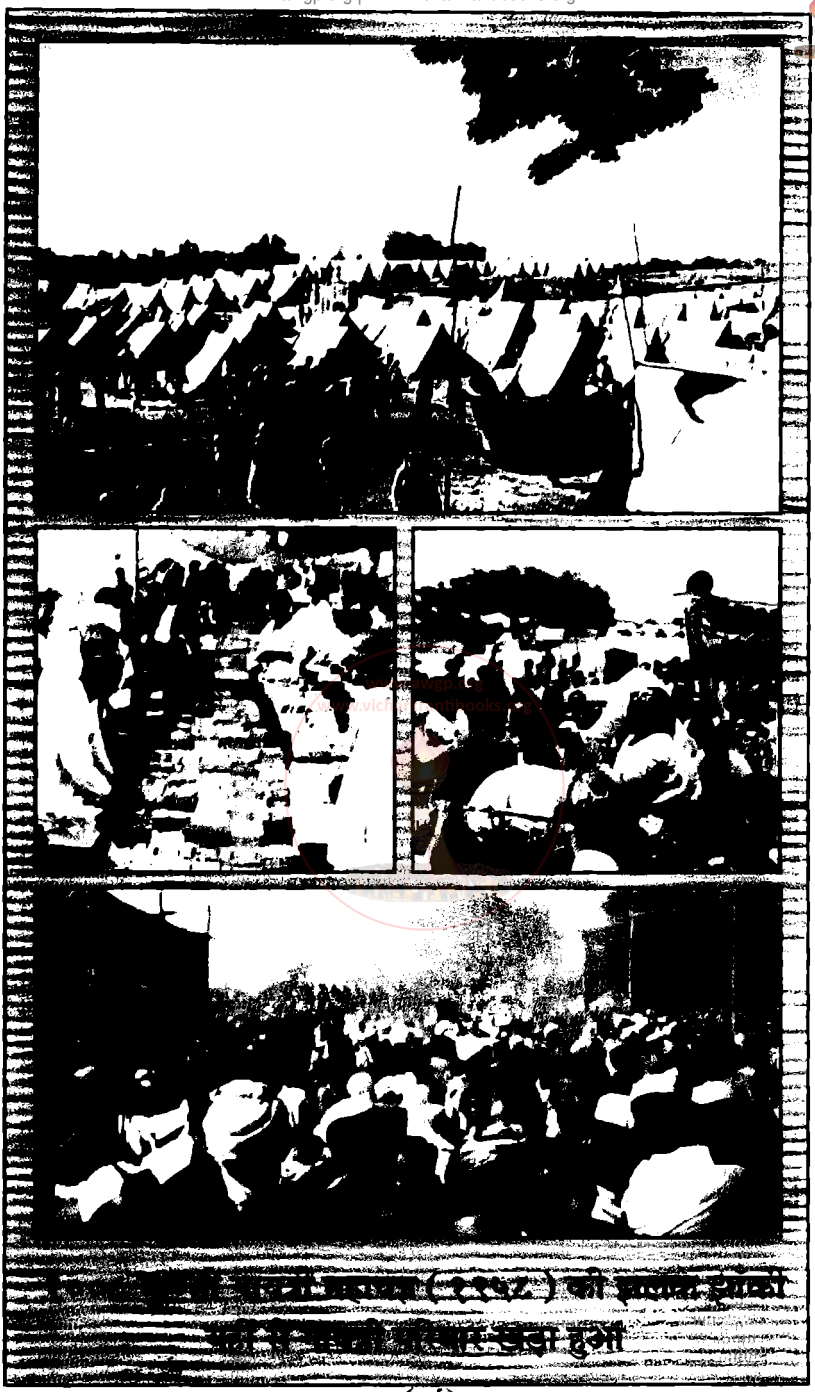

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आराध्य गायत्री माता और प्रतिभा के पास
आत्मार्थी श्री राम शर्मा जी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ने उन्हें रोक लिया था। उसे हाथ में तलवार लिये रास्ता रोके खड़ा देख कर श्री स्वामीजी अपने आराध्य के गीत गाते रहे। नरवाहन पर उनकी आध्यात्मिकता का ऐसा प्रभाव हुआ कि वह तलवार फेंक कर स्वामी जी के चरणों में गिर पड़ा। तुम भी अपनी निष्ठा से डिगो मत। अविचल खड़े रहो।

'आपका संदेश समझ गया श्रद्धेय,' किशोरी कहने लगा। उसके स्वर में पश्चाताप के भाव थे। वह अपने दुराव के बोझ से भी परेशान था। आचार्यश्री के चरणों में झुकने और अपने किये के लिए माफी मांगने लगा। आचार्यश्री ने उसे आश्वस्त किया मन में इतना दबाव मत लाओ। सहज रहो और गायत्री की आराधना करो। तुम्हारे वंशज आराध्य राधावल्लभ भी गायत्री के उपासक थे।

भक्ति ने कमजोर किया?

राधावल्लभ मंदिर के सामने किशोरी को समझाकर आचार्यश्री मथुरा वापस आने लगे। उनके साथ चल रहे रूपचंद मोहला ने कुछ कदम चलते ही पूछा। हम लोग भक्ति के कारण कमजोर तो नहीं हो गये गुरुदेव। अब भी हम आक्रामक का विरोध करने में समर्थ नहीं हैं। ईश्वर से मदद की गुहार करते हैं। यह मंदिर जब तोड़ा गया तो यहां के लोगों ने औरंगजेब की सेनाओं का मुकाबला क्यों नहीं किया?

मुकाबला किया भी हो तो हमें क्या पता? आचार्यश्री ने कहा, 'हमारी जानकारी उस समय के उल्लेखों पर ही निर्भर है न। वे उल्लेख भी तत्कालीन विद्वानों, इतिहासकारों और लेखकों के तैयार कराये हुए हैं। उन लोगों को राज्याश्रय प्राप्त था। वे अपने आश्रयदाता के लिए विजय के गीत ही गायेंगे न।'

'इस बात में ज्यादा दम नहीं है कि हमारे लोगों ने हार मान ली। घुटने टेक दिये या कोई विरोध नहीं किया।' आचार्यश्री मोहला को समझाने लगे, जिस जमाने में राधावल्लभ मंदिर का या दूसरे मंदिरों का ध्वंस हुआ, उस जमाने में साधु संतों ने भी जबर्दस्त टक्कर ली। स्थानीय राजा और सामंत तो हो सकता है अपने राज्य और सत्ता के लिए ही लड़ते रहे हों लेकिन प्रजा ने और साधु संतों ने आस्था की लड़ाई लड़ी। उनके तरीके थोड़े अलग थे।

आचार्यश्री कहे जा रहे थे,'उदाहरण के लिए अठारहवीं शताब्दी के पंद्रह बीस साल गुजरने के बाद औरंगजेब ने अब्दुल नबी नामक कट्टर और क्रूर सामंत को यहां का फौजदार बनाया। नबी ने केशवदेव मंदिर के सामने बने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कटहरे को तुड़वा दिया। बीरसिंह बुंदेला ने भगवान कृष्ण की जन्मभूमि पर मंदिर बनवाया था। उसे भी नबी ने तुड़वा दिया गया। सिकंदर लोदी ने मथुरा में विनाश के बाद वृंदावन में गोविंददेव जी, मदनमोहन, गोपीनाथ जी, राधावल्लभ जी, गोवर्धन के श्रीनाथ जी और व्रज के दूसरे कई मंदिरों को नष्ट किया।'

'जिन दिनों यह तोड़फोड़ चल रही थी उन दिनों औरंगजेब के जमाने में गोकुला जाट ने विद्रोह का बिगुल बजा दिया। इतिहास में इस बगावत या मुकाबले का ज्यादा उल्लेख नहीं मिलता है। बीस हजार सैनिक लेकर गोकुला ने अब्दुल नबी पर आक्रमण किया। नबी ने दिल्ली से और सेना बुला ली थी। कई दिन तक युद्ध चला। गोकुला टिक नहीं पाया। वह वीरगति को प्राप्त हुआ। लेकिन उसके सैनिकों ने नबी को भी नहीं बख्शा। मथुरा के पास एक गांव में लोगों ने नबी को मार दिया।'

वृंदावन से मथुरा तक आचार्यश्री और उनके साथी तांगे से आये थे। रास्ते में बिहारीजी का मंदिर भी था। उस मंदिर के महत्व, वैभव और इतिहास पर भी चर्चा हुई। गायत्री तपोभूमि पहुँचने में करीब आधा घंटा लगा। वृंदावन से मथुरा तक का रास्ता तब पक्का नहीं बना था। इतना खराब भी नहीं था कि वाहन आदि चलने में कठिनाई हो।

चर्चा प्रसंग में परिजनों को बड़ा रस आया था। वृंदावन का यह आयोजन व्रज मंडल में होने वाले कार्यक्रमों में संभवत: पांचवां या छठा था। इसके संपन्न होने के करीब चार महीने बाद किशोरी शरण और उसके कुटुंब के लोग गायत्री तपोभूमि आये। वे अचानक ही आये थे। आचार्यश्री तब तपोभूमि के कार्यालय में बैठे परिजनों से बात कर रहे थे। किशोरी शरण ने अपने आने की कोई सूचना नहीं दी थी। न ही आने के बाद क्षण भर रुकने की जरूरत समझी। तपोभूमि के भीतर पांव रखते ही उसने पूछा, 'गुरुजी कहां हैं?'

किसी ने दफ्तर की ओर इशारा किया। वह इशारा पकड़ कर भागता हुआ सा भीतर गया। आचार्यश्री को बैठा देख उनके चरणों में लोटने लगा। वह कह रहा था, 'आपके आशीर्वाद से समस्या हल हो गई है। हम लोगों ने बगीची के लिए बीच का रास्ता निकाल लिया है। अब कोई मनमुटाव नहीं है।' कहते-कहते उसने पीछे खड़े लोगों की ओर ताका। उनकी आंखों में भी प्रणत भाव था। उन्होंने भी चरण स्पर्श किए और आचार्यश्री का संकेत पाकर वहीं बैठ गये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पंद्रह महीने तक चलने वाले यज्ञ अभियान में हिस्सा लेने के लिए विभिन्न विधि उपविधियां सुझाई गई थीं। इनमें एक तो यह थी कि जब भी कभी मथुरा आना हो तब अपने जप के सौंवे हिस्से के बराबर मथुरा में ही आहुतियां दे ली जाए। दूसरा यह कि जिन्हें अकेले आना कठिन हो वे किसी एक व्यक्ति को अपना प्रतिनिधि बनाकर मथुरा भेजें। वह सबकी ओर से आए। यह भी संभव न हो तो सिर्फ अनुरोध कर दें, उनके लिए तपोभूमि के ही किसी कार्यकर्त्ता द्वारा आहुतियां समर्पित करा दी जाएंगी। कम से कम दस हजार साधकों से आहुतियां दिलाने का संकल्प था।

मथुरा से बाहर यत्र-तत्र होने वाले गायत्री यज्ञों का कार्यक्रम अलग था। गायत्री तपोभूमि में आचार्यश्री प्रतिदिन तड़के पहुँच जाया करते थे। आरती के लिए चार बजे का समय निर्धारित था। नियमित क्रम बनने तक वे चार बजे ही आ जाते! व्यवस्था सुचारु चलने लगी तो कभी कभार देर से भी पहुँचते। जिस दिन नहीं पहुँचते उस दिन लेखन या साधकों के मार्गदर्शन जैसे कामों में व्यस्त रहते।

भैरवी का भाग

सन् १९५५ में नवम्बर के आखिरी दिन रहे होंगे। कार्तिक माह पूरा हो गया था। मार्गशीर्ष चल रहा था। उन दिनों रातें बड़ी होने लगी थीं। सूर्य उदय का समय आगे खिसक गया था। शीतऋतु आरंभ होने पर जैसे वह भी देर से उठता और आता हो। प्रातःकाल की आरती का समय भी तब थोड़ा आगे बढ़ा दिया था। ऋतु परिवर्तन के इस दौर में भी आचार्यश्री नियत समय पर ही उठते। उस दिन सुबह के साढ़े चार पांच बजे का समय रहा होगा। वे लेखन में व्यस्त थे। नीचे किसी ने दरवाजा खटखटाया। यह नई बात नहीं थी। अक्सर ऐसा होता था। तीन चार बजे आने वाली रेलगाड़ियों से कोई परिजन उतरता और सीधे घियामंडी पहुँच जाता था। गायत्री तपोभूमि में तब ठहरने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं थी। आचार्यश्री से थोड़ा प्रगट परिचय रखने वाले लोग सीधे निवास पर ही पहुँच जाते। बहुधा दोनों चिरंजीवों में से कोई दरवाजा खोलता। दोनों सो रहे होते या पढ़ाई कर रहे होते तो आचार्यश्री दरवाजा खोलने आते।

उस दिन आचार्यश्री ने ही दरवाजा खोला। जैसे ही दरवाजा खोला लालटेन की रोशनी आगंतुक के चेहरे पर पड़ी। देखते ही आचार्यश्री ने पहचान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिया, 'अरे भैरवी तुम। आओ अंदर आओ।' कहते हुए उन्होंने भैरवी को अंदर आने के लिए रास्ता दिया। भैरवी उस महिला का मुँह बोला नाम था। मूल नाम कुछ और था। शक्ति की उपासक होने के कारण लोग उसे भैरवी कहते थे। आचार्यश्री से वह सिर्फ एक बार मिली थी-बनारस में। वह मुलाकात संक्षिप्त सी थी और उसमें उल्लेख करने जैसी कोई बातचीत नहीं हुई थी। उस बारे में आचार्यश्री को कुछ खास याद नहीं था। भैरवी को देखकर उन्हें नाम परिचय और भेंट आदि के बारे में याद हो आया।'

भीतर आते ही उन्होने पूछा, 'तुम्हारे पास पता तो था नहीं। घर खोजने में कठिनाई हुई होगी?'

सुनकर भैरवी ने कुछ नहीं कहा। फिर आचार्यश्री ही बोले, 'मुझे लग रहा था कि तुम आजकल में ही आने वाली हो।'

लालटेन की रोशनी में गेरुआ वस्त्र पहने उस संन्यासिनी का चेहरा चमक रहा था। कंधे पर टंगी झोली उतार कर वह कोठरी में फर्श पर ही बैठने लगी। आचार्यश्री ने उसे रोका और आग्रहपूर्वक गादी पर बिठाया। उन दिनों उनके निजी कक्ष में गादी बिछी रहती थी। जहां वे बैठते थे वहां एक छोटा सा आसन और होता था। उसके सामने चौकी रखी होती। उसी पर उनके लिखने पढ़ने का सामान होता था। भैरवी उस चौकी के सामने ही बैठी। वह कुछ बोल नहीं रही थी। आचार्यश्री ने उसकी ओर देखा। भैरवी की आंखों से आंसुओं की धारा बह रही थी।

आचार्यश्री से उसकी दृष्टि क्षण भर के लिए मिली और उसके मुँह से निकला, 'बाबा आपको ढूंढने में मुझे जरा भी कठिनाई नहीं हुई। गुरुवर (दादागुरु) जैसे स्वयं ही मुझे हाथ पकड़कर यहां छोड़ गये। मुझे जगदंबा की कृपा से महीनों पहले बोध हो गया था कि आपसे भेंट होने वाली है। उन्हीं की कृपा से मुझे मालूम हुआ था कि आप एक बड़ा यज्ञ करने वाले हैं। यह यज्ञ आपकी घोर तप साधना का हविष भाग है। उस भाग में मैं भी एक भेंट अर्पित करना चाहती हूँ।

कहते कहते उसने झोली में हाथ डाला। बाहर निकाला तो उसके हाथ में एक बटिया थी। वह बटिया प्रतिमा जैसी थी। प्रतिमा नहीं शालिग्राम शिला दिखाई दी। भैरवी ने आचार्यश्री की चौकी पर उसे दोनों हाथों से रखा जैसे उस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शालिग्राम शिला को स्थापित कर रही हो। चौकी पर रखने के बाद वह बोली 'मुझे यह गुरुवर ने प्रसादरूप में दी थी। अब यह आपको सौंप रही हूँ। इसे वेदमाता के मंदिर में किसी उपयुक्त स्थान पर रख देना। आप जो महायज्ञ करने जा रहे हैं, उसमें भाग लेने वालों की व्यवस्था आसानी से हो जाएगी।' आचार्यश्री कुछ क्षण चुप रहे फिर बोले,' भैरवी इसे अपने पास ही रखो। गुरुदेव ने यह तुम्हें दी है। अच्छा होगा कि महायज्ञ के अवसर पर तुम स्वयं यहां रहो और व्यवस्था में हाथ बटाओ।'

भैरवी कहने लगी, 'मुझे लगता है कि उस आयोजन में भाग लेने के लिए मैं शायद इस धरती पर नहीं रहूँ। यह जीवन पूरा हुआ। चोला अब छूटने वाला है।'

भैरवी यह क्यों भूल जाती हो कि प्रतिमा में प्राणों का संचार उसके उपासक से ही होता है। तुम नहीं रहोगी तो इस शालिग्राम शिला का भी तिरोधान हो जाएगा। आचार्यश्री से यहाँ बातचीत चल रही थी और माताजी इस बीच जलपान ले आई थीं। भैरवी ने उन्हें प्रणाम किया और चौकी पर रखी शालिग्राम शिला उठाई। उसे दूध का नैवेद्य चढ़ाया, प्रणाम किया और धीरे-धीरे दूध पी लिया। दूध पीते हुए उसने माताजी की ओर देखा। पी चुकने के बाद प्रणाम करते हुए कहा, 'जय जगदंबे।'

आचार्यश्री उस दिन भैरवी से देर तक बातें करते रहे थे। साढ़े पांच छह बजे के करीब वे तपोभूमि जाने लगे। भैरवी से कहा, 'आप विश्राम करना चाहें तो यहीं रहें।'

योगिनी ने विश्राम के प्रति अनमना भाव जताया और वह भी तपोभूमि चल दी। दोनों पैदल ही जा रहे थे। भैरवी की आयु पैंतालीस पचास वर्ष के बीच रही होगी लेकिन संयम और साधना का तेज ही था कि वह अपनी आयु से काफी कम लग रही थी। राह चलते आचार्यश्री को लोगों ने प्रणाम किया। प्रणाम करने वाले उनसे परिचित थे। साथ चल रही भैरवी उनके लिए अपरिचित अनजान थी। फिर भी लोगों ने उसे अलग से प्रणाम किया।

बातचीत करते हुए तपोभूमि तक का रास्ता कब कट गया, कुछ पता ही नहीं चला। प्रवेश द्वार पर पहुँचते ही भैरवी ने मंदिर की ओर दंडवत प्रणाम किया। यज्ञशाला के अवकाश को पार करते हुए आदिशक्ति की प्रतिमा पर उसकी दृष्टि पड़ी थी। भगवती के विग्रह में उनकी ठौड़ी पर जड़े हीरे की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चमक, भैरवी की आंखों में कौंध गई अभिभूत होकर वह वहीं से दंडवत करती हुई मंदिर तक गई। भगवती की प्रतिमा के सामने अविचल भाव से देर तक बैठी रही।

सामने यज्ञशाला में उस दिन की पूर्णाहुति हुई। यज्ञपुरुष का स्तवन सुनते ही भैरवी का ध्यान भंग हुआ। वह उठ कर यज्ञशाला में आई। आज्याहुति होम और घृत अवघ्राण उसी ने किया। यज्ञ संपन्न होने के बाद आचार्यश्री कार्यालय में चले गये। वहाँ चार पांच व्यक्तियों से मिले। इतने ही आगंतुक थे। भैरवी भी वहां आकर बैठ गई और अपने आप कहने लगी, 'मेरा असली नाम गिरिजा देवी है। पूर्व आश्रम के संबंध में इससे ज्यादा बताने का निषेध है। मैं आपसे अपनी कुछ जिज्ञासाओं का समाधान चाहती हूँ।'

आचार्यश्री ने कहा, 'मैं विद्वान नहीं हूं। शास्त्रों का मैंने विधिवत अध्ययन नहीं किया है। उस संबंध में कोई प्रश्न हुआ तो तुम्हें निराश होना पड़ेगा। कोई और बात हो तो उत्तर देने की कोशिश करूंगा।'

'आप क्या हैं? यह मैं अच्छी तरह जानती हूँ। बीस बरस पहले मुझे एक संन्यासी ने आपके निवास का पता दिया था और यही समय बताया था कि आप एक विराट धर्म आयोजन करने वाले हैं। आप उसकी तैयारी कर ही चुके हैं।' भैरवी ने कहा। आचार्यश्री उसकी बात सुनते चले जा रहे थे। भैरवी कह रही थी, 'उन्हीं संन्यासी ने जो बाद में मेरे गुरु हुए, यह भी कहा था कि दो हजार तेरह में होने वाले महायज्ञ के बाद उसमें भाग लेने वालों पर नया दायित्व आयेगा। उस दायित्व के बारे में तुम्हें महायज्ञ का ऋषि ही बतायेगा।'

भैरवी कहकर चुप हुई। आचार्यश्री कुछ नहीं बोले। उसने फिर अपनी बात शुरू की, 'मैं आपको बहुत समय से ढूंढ रही थी। अब लगता है कि बीस साल पूरे होने के बाद ही आपके सान्निध्य में आना था। औपचारिक परिचय या भेंट तो बनारस में ही हो गई थी।'

इस भूमिका के बाद भैरवी ने कहा, 'मुझे लगता है कि आप अवतारी पुरुष हैं?'

सुनकर आचार्यश्री हंसे, 'अरे अब कौन है अवतारी। वह पुराण शास्त्रों की बात है। दस या चौबीस अवतार गिनाये गये हैं। वे सब हो चुके। एक कल्कि अवतार बाकी है। शास्त्रों में उसी का जिक्र आता है। उन्हीं के अनुसार कल्कि के अवतार होने में अभी लाखों वर्ष चाहिए।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'जगह-जगह विनोद मत करो बाबा। मैंने भी थोड़े बहुत शास्त्र पढ़े हैं। श्रीमद्भागवत में मुख्य मुख्य चौबीस अवतारों का वर्णन करने के बाद महर्षि वेदव्यास ने भविष्य में और अवतार होने की बात कही है। भगवान बुद्ध ने अपने बारे में तीन बार और जन्म लेने के लिए कहा है। वैष्णव ग्रंथों में चैतन्यदेव के पुनः आने की बात स्पष्ट कही है। रामकृष्ण परमहंस ने कई अवसरों पर कहा है कि जो राम था और जो कृष्ण था, वही इस बार राम और कृष्ण के रूप में सामने आया है। उन्होंने आगे भी आते रहने के लिए आश्वस्त किया है।' स्पष्ट और विश्वास से भरा यह उत्तर सुनकर आचार्यश्री ब्राह्मणी का मुँह देखने लगे। उन्होंने पूछा, 'क्या यह आवश्यक है कि शास्त्रों में और भी अवतारों का उल्लेख आया है तो वह मैं ही होऊं।'

'आपके अनुसार आवश्यक नहीं होगा। लेकिन मैं शिष्य हूँ। मुझे अपने आराध्य में ईश्वर, अवतार, जगन्माता आदि के रूप दिखाई देते हैं तो आप निषेध क्यों करते हैं?' भैरवी ने कहा और उसने उठकर एक बार फिर आचार्यश्री को प्रणाम किया। वह बताने लगी, 'यह शालिग्राम जिस संन्यासी ने दिये थे, वह गृहस्थ योगी थे। गृहस्थ योगी प्रकट रूप में थे। साधना की दृष्टि से तंत्र मार्ग के उपासक थे।'

परिवर्तन के संकेत

उनका नाम था कालीचरण दीक्षित। लोग उन्हें काली पंडित कहते थे। तीनों नवरात्रियों में शक्तिपूजा के साथ वे दुर्गापूजा का आयोजन करते थे। छह दिन तक वे शास्त्रविधि से तंत्र आदि के अनुष्ठान करते। दुर्गासप्तशती, नवार्ण मंत्र, श्रीयंत्र की पूजा और इसी तरह के अनुष्ठानों में उनका पूरा समय बीत जाता। बाकी तीन दिन वे अपनी पत्नी को वस्त्रालंकार से भलीभांति सजाकर वेदी पर बिठाते और उनकी पूजा करते थे।

उनका कहना था कि स्त्रियों के सभी शरीर, जगदंबा के ही भिन्न-भिन्न रूप हैं। उनकी आराधना करते हुए यह भाव रखना चाहिए कि नारी देह में जगन्माता की पालिनी और पोषिणी शक्ति निहित है। वह आह्लादिनी शक्ति से भी भरपूर है। वे कहते थे कि यह मेरी अपनी मान्यता नहीं है। तंत्र शास्त्रों में भी यह वर्णन है कि स्त्रीमात्र में आदिशक्ति स्वयं विद्यमान है। इस तथ्य की अवज्ञा करने वाला तंत्र का साधक हो ही नहीं सकता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

काली पंडित से ही भैरवी ने सुना था कि उसकी भेंट बीस पचीस साल बाद एक ऐसे महात्मा से होगी जो गृहस्थ भी होगा और बैरागी भी, योगी भी होगा और ब्रह्मज्ञानी थी। मंत्र और तंत्र दोनों में उसकी समान गति होगी। आचार्यश्री भैरवी की बातें सुन रहे थे और बीच-बीच में उसे निरुत्साहित भी करते जाते। वे उसकी बातों का मजाक उड़ा देते थे लेकिन संन्यासिनी पर उसका कोई असर नहीं हो रहा था। वह कहे जा रही थी, जिस महात्मा ने यह शालिग्राम शिला दी थी उसने भी कहा था। उन्होंने जो लक्षण बताये थे, वे इन्हीं दिनों चरितार्थ हो रहे हैं।

भैरवी ने जो लक्षण बताये थे उनमें संपत्ति पर समाज का अधिकार मान लेने, दुर्वासा की तपस्थली में गायत्री आश्रम बनने और वहाँ से यज्ञों का सिलसिला शुरु होने की बातें शामिल थीं। संपत्ति पर समाज के अधिकार को उसी साल स्वीकार किया गया था। देश पर राज कर रही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अवाडी अधिवेशन में समाजवादी समाज रचना का लक्ष्य स्वीकार किया था। उसी अधिवेशन में पंडित जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस की अध्यक्षता से अलग हुए थे। पिछले तीन साल से वही कांग्रेस की अध्यक्षता करते आ रहे थे।

भारतीय धर्म के पांच मूलभूत सिद्धांतों को विश्व राजनीति में स्वीकार कर लेने की बात भी थी। उन्नीस सौ चौवन में पंचशील की घोषणा एक ऐतिहासिक क्षण था। भारत और चीन ने इस करार पर दस्तखत किये थे। यह बात अलग है कि चीन ने पांच साल बाद इस करार को तोड़ दिया।

आचार्यश्री ने भैरवी की बातें ध्यान से सुनी और अंत में कहा कि तुम अपने हिसाब से ठीक ही कहती होगी लेकिन आगे बहुत काम करना है। साधना, सिद्धि, संकेत, लक्षण और सूक्ष्म पहचान साधक का नितांत अपना विषय है। हम यहां एक नये समाज की आधार शिला रखने का प्रयास कर रहे हैं। हजारों साधक आवश्यक आत्मिक ऊर्जा जगाने के लिए वर्षों से प्रयत्न कर रहे हैं। चैत्र नवरात्रियों के बाद यहां एक विराट आयोजन होगा। तुम अपना सहयोग किस रूप में दोगी, कह नहीं सकता लेकिन उसमें भागीदार बनना जरूर।

भैरवी ने कहा कि वह आयोजन में सहयोग देने आए सैकड़ों साधकों में एक है। उसकी तरह और भी कई आत्माएं पंद्रह माह से चल रहे गायत्री

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महायज्ञ और चौबीस वर्ष से चल रहे महापुरश्चरण की पूर्णाहुति के लिए काम कर रही हैं। भैरवी ने इतना कह कर आसपास देखा और ऐसी मुद्रा बनाई जैसे कोई रहस्य की बात बता रही हो। उस रहस्य के बारे में जैसे उसे और आचार्यश्री के अलावा किसी और को पता नहीं हो। ढाई साल बाद आपको इस आयोजन से दस गुना बड़ा महायज्ञ और करना है। है न!

कह कर वह आचार्यश्री के चेहरे की ओर देखने लगी जैसे उनकी प्रतिक्रिया जानने की कोशिश कर रही हो। आचार्यश्री के चेहरे पर कोई भाव नहीं दिखाई दे रहा था। उन्होंने भैरवी की बात को सुनकर जैसे चुपचाप अपनी स्मृति में रख लिया था। न तो उसकी पुष्टि की और न ही खंडन। वह कुछ देर और बैठी रही। फिर वहाँ से उठकर चली गई। जाते-जाते उसने कहा कि मैं उस महायज्ञ तक आती जाती रहूंगी। बाद का तो आपको पता ही है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शीश दिए प्रभु मिले

'संध्या वंदन आता है?' आचार्यश्री ने उस युवक से पूछा। वह नरमेध यज्ञ के बारे में स्पष्टीकरण मांगने आया था। उसका नाम था अनंतनारायण शर्मा। उसने उत्तर दिया, 'नहीं आता है।'

'तुमने सच कहा! इसलिए उम्मीद की जा सकती है कि तुम्हारे मन में गुंजाइश है और तुम वस्तुस्थिति समझ सकते हो।' आचार्यश्री ने कहा। वह युवक लड़ने भिड़ने की मुद्रा में आया था। भरतपुर में हो रहे यज्ञ में विघ्न खड़ा करने की मंशा थी। उसके साथ तीन चार युवक और थे। गठा हुआ कसरती शरीर और चेहरे से टपकती हुई उद्दंडता। यज्ञ चल रहा था। आचार्यश्री अपने आसन पर बैठै यज्ञीय कर्मकांडों का संचालन देख रहे थे। पंडित नीलकंठ शास्त्री ब्रह्मा के आसन पर बैठे कर्मकांड करा रहे थे।

उस पंच कुण्डीय महायज्ञ में मुश्किल से पचास साठ लोग रहे होंगे। बड़ी उम्र के लोगों की संख्या ज्यादा थी। आयोजन की तैयारी करते समय प्रतिरोध का मुकाबला करने के बारे में सोचा भी नहीं था। भरतपुर हालांकि ब्रजमंडल का ही हिस्सा था लेकिन मथुरा वृदांवन की तरह यहाँ पुराण पंथी और लकीर के फकीर लोगों का बोलबाला नहीं था। इसलिए उपद्रव या बाधा की आशंका भी नहीं थी। अनंत शर्मा के नेतृत्व में तीन-चार युवक पता नहीं कैसे निकल आये।

आचार्यश्री ने अनंत को रोका। वह नरमेध के खिलाफ नारेबाजी कर रहा था। वह और उसके साथी कोई और उपद्रव खड़ा करते इससे पहले ही आचार्यश्री ने उससे बात की। संध्यावंदन के बारे में पूछने पर उसने मना किया तो आचार्यश्री को उसके भीतर विद्यमान सत्व पर भरोसा हुआ। उन्होंने आगे कहा अभी विरोध करने या लड़ने भिड़ने में कोई सार नहीं है। चाहो तो कोशिश कर सकते हो। हमारा या आयोजन का कुछ भी नहीं बिगाड़ पाओगे। यहाँ बैठे छोटे-छोटे बच्चे तुम लोगों को मारपीट कर भगा सकते हैं। सुनकर अनंत अवाक रह गया। अपनी बात स्पष्ट करते हुए आचार्यश्री ने कहा। यहाँ बैठा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रत्येक व्यक्ति रक्षासूत्र से बंधा हुआ है। देवशक्तियाँ उनकी रक्षा कर रही हैं। उनका कोई कुछ अनिष्ट नहीं कर सकता। चाहो तो कोशिश करके देख लो।

आचार्यश्री चेतावनी, सलाह या चुनौती सी देते हुए कुछ पल के लिए रुके। अनंत शर्मा और उसके साथी खड़े देखते रह गये थे। उनसे कोई उत्तर देते नहीं बन रहा था। आचार्यश्री ने कहा, 'एक सलाह है।' तुम लोग हमारे साथ रहो। नहीं रह सको तो नरमेध की तिथियां तक रुको। इस बीच और संगी साथी जुटाओ। नरमेध के बारे में अपने विचार से उन्हें अवगत कराओ और जब यह आयोजन हो तो उसमें रुकावट डालो। तुम्हें बताया गया है न कि लोगों की बलि दी जायगी। वह बलि मत होने देना।'

अनंत शर्मा और उसके साथी आचार्यश्री की बातों को ध्यान से सुन रहे थे। उनकी भंगिमा और मुद्रा देख कर तो नहीं लग रहा था कि वे आचार्यश्री की बातों को समझ रहे थे। वे चुपचाप मंत्रमुग्ध से उन्हें सुने जा रहे थे। आचार्यश्री अपनी बात कह चुके तो अनंत शर्मा मंत्रविद्ध सा अपनी जगह से आगे बढ़ा और उनके चरणों में झुक गया। आचार्यश्री के पैर छूकर वह बोला, 'मुझे क्षमा करें गुरुदेव। मैं लोगों के बहकावे में आ गया था। मुझे भी गायत्री की दीक्षा दीजिए। संध्या वंदन सिखाइए।'

चरण स्पर्श कर उठते ही उसने कहा था। कुछ पल रुक कर वह फिर बोला, 'मेरा भ्रम दूर हो गया। लोगों ने मुझे बहकाया था। मैं नरमेध यज्ञ के बारे में गलत समझा था। मैं इस यज्ञ में विघ्नकारी नहीं भागीदार बनूंगा।' अनंत शर्मा के साथ वहां आये दूसरे युवकों ने भी अपने मुखिया का अनुकरण किया।

महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति या नरमेध यज्ञ के अनुष्ठान तक दसियों जगह इस तरह की घटनाएं हुई थीं। कुछ लोग विरोध की अपनी जिद पर अड़े रहे और कुछ ने आचार्यश्री के आशय को समझने का खुलापन दिखाया। उनकी बात मानी और विरोध का इरादा छोड़कर सहयोग देने का मन बनाया। विरोध, असहमति और गलतफहमी में फर्क कर आचार्यश्री तीनों पक्षों से संवाद करते थे। जिद्दी विरोध के सामने वे ज्यादा तर्क वितर्क नहीं करते। सिर्फ इतना ही अनुरोध था कि आप हमारे आयोजन में आयें। वहाँ देखें कि क्या हो रहा है? किसी की बलि दी जा रही हो तो रोकें।

असहमति जताने वालों को वे राजी करने का प्रयास नहीं करते थे। उनके सामने अपना पक्ष भर रख देते थे। वे राजी हों तो ठीक और नहीं हों तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ठीक। जिन लोगों के बारे में लगता कि वे गलतफहमी के शिकार हुए हैं, उनके लिए आचार्यश्री जरूर श्रम करते थे। उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत कराने का भरपूर प्रयास करते। अधिकांश मामलों में तो भ्रम का शिकार हुआ व्यक्ति उस जंजाल से निकल आता था।

वह रामनवमी का दिन था। उन्नीस सौ छप्पन के अप्रैल की उन्नीसवीं तारीख थी। भारतीय पंचाग के अनुसार संवत २०१३ के चैत्रमास की शुक्ल पक्ष की नवमी। मथुरा के लोग अपने इष्ट कृष्ण की जन्मस्थली में उनके पूर्व स्वरूप का अवतरण दिवस धूमधाम से मना चुके थे। प्रसाद पंजीरी का वितरण हो चुका था। गायत्री तपोभूमि में भी साधकों ने नवरात्रि अनुष्ठान पूरा किया ही था। वे अनुष्ठान की पूर्णाहुति से निपटे ही थे कि अगले दिन से शुरू होने वाले पूर्णाहुति महायज्ञ की तैयारी में जुट गए। नवरात्रि पुरश्चरण साधना में आये बत्तीस के बत्तीस लोगों ने विश्राम भी नहीं किया और आगंतुकों की व्यवस्था में जुट गये।

कार्यकर्त्ताओं का एक समूह हफ्तों पहले से १०८ कुण्डों की यज्ञशाला और आने वालों को ठहराने के प्रबंध में जुटा हुआ था। तंबू कनात खड़े करने, आगंतुकों के लिए भोजन, पानी और विश्राम आदि की व्यवस्था में करीब दो सप्ताह और लग गये थे। पूर्णाहुति में जिन साधकों को आना था, वे भी गायत्री उपासक ही थे। उन्होंने भी अपने घर में नवरात्रि अनुष्ठान किये थे। तपोभूमि के पूर्णाहुति महायज्ञ में भाग लेने के लिए उन्होंने अनुष्ठान पूर्व संध्या को ही पूरा कर लिया। आने की तैयारी में यह सोचकर जुट गए कि जप का दशांश हवन वहीं कर लेंगे। ऐसे साधक रामनवमी की सुबह से ही आने लगे थे।

सिद्धि से धन

रामनवमी की शाम से ही मथुरा में खासी चहल पहल शुरु हो गई थी। स्टेशन, बस अड्डे और तांगा रिक्शा स्टेण्डों पर धोती कुर्त्ता पहने पुरुषों और सीधे सादे ढंग से साड़ी पहनकर आई स्त्रियों के समूह दिखाई देने लगे थे। अपनी वेशभूषा से ही पहचाने जा रहे ये लोग गायत्री तपोभूमि की ओर जा रहे थे। तपोभूमि और उसके आसपास की जगहें जैसे जयसिंहपुरा, चामुंडा मंदिर, मसानी, गोकर्ण महादेव आदि इन साधकों से भर गईं थीं। शाम ढलते ही बिजली की रोशनी से पूरा इलाका जगमग करने लगा। पर्व त्यौहार के समय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मंदिरों में तो जगमग रोशनी लोग आये दिन देखते ही थे। बाहर मैदान या बस्ती में ऐसी सजावट उनके लिए अनोखी बात थी। कई लोग यह रोशनी देखने के लिए ही बाहर निकल पड़े थे। शहर के लोग बस्ती के साथ यज्ञशाला के भी दर्शन करते गये।

देर रात आचार्यश्री ने उस क्षेत्र का दौरा किया। लोगों के ठहरने की व्यवस्था देखी। आगंतुकों से निजी तौर पर मिले। उनका कुशल क्षेम पूछा। इस संपर्क के दौरान जयसिंहपुरा में एक विचित्र घटना घटी। शिविर में एक महात्मा भी आये हुए थे। उन्होंने अपना परिचय गुप्त रखा। वैसे उनका नाम था स्वामी योगानन्द सरस्वती और उत्तरप्रदेश में अनूपशहर के आसपास आश्रम बना कर रहते थे। वे अपने कामों के बारे में लोगों को प्राय: नहीं ही बताते थे। उस क्षेत्र के समाज सेवी और गायत्री साधक नारायण मुनि से उन्हें मथुरा में हो रहे इस आयोजन के बारे में पता चला। यह भी कि आचार्यश्री ने चौबीस वर्ष तक गायत्री का तप किया है और वे महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति के लिए ही यह आयोजन कर रहे थे।

नारायण मुनि के साथ वे चुपचाप शिविर में ठहरे हुए थे। स्वामी जी को साथ लेकर आये समाजसेवी गायत्री साधक का नाम ही नारायण मुनि था। यह उनका गोत्र नाम था। असल में वे गृहस्थ साधक थे। आचार्यश्री नारायण मुनि को शिष्य भाव से देखते थे। वे भी यही संबंध मानते थे। नारायण मुनि ने स्वामी योगानन्द का परिचय कराया तो वे बोले, 'आपकी महापुरश्चरण साधना के बारे में सुना तो यहां आने से अपने आपको रोक नहीं सका।'

आचार्यश्री ने स्वामी जी को देखा और हंस दिए। स्वामी जी भी हंसे। हंसते हुए आचार्यश्री जैसे कह रहे हों, कि यह औपचारिकता बरतने की जरूरत नहीं है। हम लोग एक दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं। योगानंद जी अनुष्ठान साधना के मर्मज्ञ थे। मंत्र विद्या के मर्मज्ञ होने के साथ वे सिद्ध पुरुष भी थे। किस कामना या आवश्यकता की पूर्ति के लिए कौन सा मंत्र जपना चाहिए, इसका उन्हें आधिकारिक ज्ञान था।

औपचारिकता का पर्दा हट गया था और नारायण मुनि के सामने भी प्रकट हो गया कि दोनों एक दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं। दोनों की भेंट वाराणसी में हुई थी। लेकिन वह कुछ ही मिनट की थी और याद नहीं रह सकी थी। यहां मिलने पर स्मरण हो आया। बाद में गायत्री तपोभूमि का निर्माण कार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शुरु होने पर भी स्वामी योगानन्द ने कुछ सहयोग करना चाहा था। वह सहयोग मंत्र अनुष्ठान के रूप में था। आचार्यश्री ने पत्र लिख कर इस तरह के सहयोग से क्षमा मांग ली थी।

यहाँ दोनों में वार्तालाप शुरु हुआ तो स्वामी योगानन्द ने एक बार फिर कहा, 'आप पर बड़ी जिम्मेदारियाँ आने वाली हैं, उसके लिए विपुल धन चाहिए। मैं आपको एक अनुष्ठान विधि बताता हूँ। इक्कीस दिन की साधना है। उसे कर लिया जाए तो हर तरह के अभाव दूर हो जाएँगे। आवश्यकता स्वत: पूरी होती चलेंगी।'

आचार्यश्री ने कहा, 'मुझे मंत्र विद्या, उसकी सामर्थ्य और आपकी सिद्ध अवस्था पर पूरा विश्वास है। लेकिन मैं सकाम अनुष्ठान नहीं करता।'

स्वामीजी ने समझाने की कोशिश की और बोले कि यह साधना अपने स्वार्थ के लिए तो नहीं ही की जा रही है। आप आगे जो भी कार्यक्रम चलाएंगे वे जनहित में होंगे। उस कार्य के लिए मंत्र अनुष्ठान में कोई दोष नहीं है।

आचार्यश्री ने समाधान किया कि जिस देवकार्य को वे करने जा रहे हैं वह मार्गदर्शक सत्ता का सौंपा हुआ दायित्व है। उन्होंने दायित्व सौंपा है तो व्यवस्था भी वही करेंगे। अपनी तरफ से आतुरता नहीं बरतनी है।

स्वामी जी ने बार-बार मनाने की कोशिश की लेकिन आचार्यश्री ने उस प्रस्ताव पर विचार करने में भी संकोच किया। इस घटना के महीनों बाद पता चला कि नारायण मुनि ने वह विधि समझ ली थी और अपने एक मित्र विनय कुमार को बता दी थी। विनय कुमार बनारस में ही एक छोटा सा उद्योग चलाते थे। संयोग से उसमें घाटा हुआ और विनय बाबू संकट में फंस गये। नारायण मुनि ने स्वामी योगानन्द की बताई विधि से अनुष्ठान कराया। यह अनुष्ठान शिव की प्रसन्नता के लिए था। विधि विधान से पूजा पाठ के बाद इक्कीसवें दिन सफलता के लक्षण दिखाई दिए। अनुष्ठान पूरा होने के एक सप्ताह बाद ही चारों दिशाओं से अयाचित सहयोग बरसने लगा। अकस्मात आया दारिद्र्य दूर कहीं जाता रहा।

यह घटना बाद की है। नारायण मुनि ने इसे लिख कर आचार्यश्री के पास भेजा था। जयसिंहपुरा में हुई उस भेंट के दौरान स्वामी योगानंद ने आचार्यश्री से पूछा, 'नवरात्रि संपन्न होने के बाद दशमी से महायज्ञ आरंभ करने का कारण मैं समझ नहीं पाया हूँ। क्या यह उत्तम नहीं रहता कि यज्ञ नवमी से ही आरंभ होता?'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्यश्री ने कहा कि कारण तो मैं भी नहीं समझ पाया हूँ। इसके पीछे गुरुदेव (दादागुरु) का कोई उद्देश्य होगा। हमने अपनी मार्गदर्शक सत्ता के निर्देश को मानने तक ही अपने आपको सीमित रखा है। उसके विषय में कभी संदेह या प्रश्न नहीं उठाए हैं।

स्वामी योगानंद को जैसे इसी उत्तर की अपेक्षा थी। उन्होंने तपाक से कहा, 'मुझे भी मेरे गुरुदेव ने अपनी बारह वर्ष की साधना के लिए चैत्र शुक्ल दशमी को पूर्णाहुति का निर्देश दिया था। मैंने उनसे पूछ भर लिया था और उन्होंने डांट लगाई थी। फिर कारण भी समझा दिया था कि दीर्घकाल तक चलने वाली साधनाओं के लिए नवरात्रि में पूर्णाहुति नहीं की जाती। नवरात्रि के दिनों में लघु अनुष्ठान, विशिष्ट साधना और तप आदि किए जाते हैं। तांत्रिक अनुष्ठान भी इन दिनों संपन्न किए जाते हैं। ये साधनाएं प्रचंड भी होती हैं और सौम्य भी लेकिन सब उसी अवधि में संपन्न हो जाती हैं। इसलिए बड़ी और दीर्घकाल तक चलने वाली साधनाओं के दशांश हवन स्वतंत्र समय में ही किए जाने चाहिए।'

आचार्यश्री और स्वामी योगानंद में वह संवाद दस पंद्रह मिनट चला होगा। आचार्यश्री वहाँ से निकल कर दूसरे डेरों में ठहरे लोगों से मिलने लगे। देर रात तक उन्होंने लगभग सभी आगंतुकों से मुलाकात कर ली थी। लोगों से मिलते जुलते इतना समय बीत गया कि विश्राम का समय ही नहीं मिला। मुश्किल से आधा घंटे लेट पाये होंगे और देर रात के दो बज गये। सामान्य दिनों की तरह उस दिन भी नींद अपने आप खुल गई थी और रामनवमी की वह पूरी रात जागते हुए बीत गई थी।

तपोभूमि मत जाओ

मथुरा रेलवे स्टेशन पर गायत्री परिवार के लोगों ने सहायता केन्द्र बनाया था। अतिथियों को वे तपोभूमि के बारे में बताते। उद्देश्य यह था कि लोग किसी के बहकावे में न आयें। लेकिन मथुरा के धर्मध्वजी भी कम नहीं थे। पता नहीं कैसे वे ताड़ लेते थे कि यह व्यक्ति या परिवार गायत्री तपोभूमि में ही आया होगा। रेल से उतरते ही वे सम्पर्क कर लेते थे। दरभंगा से आये डॉ० काशीनाथ झा ने तपोभूमि में अपने साथियों को बताया। उन्होंने कहा, 'हम लोग उतरे ही थे कि पंडों ने हमें रोक लिया। कहने लगे, तपोभूमि मत जाओ, वहाँ तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पीने के पानी का भी इन्तजाम नहीं है। हम लोग आश्चर्य में पड़ गये, गुरुजी ने हजारों लोगों को बुलाया है। लेकिन क्या उनका इन्तजाम नहीं हो पाया? कुछ विचार में पड़े ही थे कि पंडे ने कहा, कि आप हमारे यहां पधारिये। नरमेध में जाना हो तो चले जाइयेगा। स्नान-ध्यान हमारे निवास पर ही कीजिए।'

'हम उनके कहने में आकर जाने की तैयारी कर ही रहे थे कि बम्बई से आये कुछ गायत्री भक्तों की आवाजें सुनाई दीं, पंडों से उनकी जोर जोर से बोलचाल हो रही थी। पंडे उन्हें भी बहका रहे थे कि तपोभूमि मत जाओ। वहाँ बहुत अफरा-तफरी मची है। सत्ताईस लोगों की बलि देने का कार्यक्रम है। आये हुए गायत्री भक्त पंडो की इस बात पर प्रतिवाद कर रहे थे। पंडे जिस प्रकार समझा रहे थे उससे भी ज्यादा जोर देकर उन्होंने कहा ठीक है, ठीक है। बलि हो रही है न, हम अपनी बलि देंगे।'

डॉ० झा ने कहा कि उन लोगों को शायद आभास हो गया कि हम लोग भी तपोभूमि जाने के लिए आये हैं। पंडों के बीच में खड़ा देख कर गायत्री भक्तों ने हमसे कहा कि आप इन लोगों के चक्कर में मत आइये। तपोभूमि में किसी तरह की कमी नहीं है और उनके कहने पर हम यहाँ आ गये। यहाँ जाकर जो वातावरण देखा वह अद्‌भुत लगा।

उन्हें और साधकों की तरह बिरला मन्दिर के पास शिविर में जगह मिल गयी। उनके साथ आये दो लोग तो जप आराधना में तल्लीन हो गये। राम प्रसाद विद्यार्थी नामक एक सज्जन भी साथ आये थे। उनकी जप-तप में कोई रुचि नहीं थी। कहने लगे, 'चलो घूम आयें। हम तो घूमने फिरने ही आये हैं।'

उनसे डॉ० झा ने कह दिया कि आप अपनी सुविधानुसार घूमें-फिरें। हम लोग तो यहाँ यज्ञ में भाग लेने आये हैं। यदि मनोरंजन ही मकसद है तो यहीं देखिए कितना सुखद वातावरण है। यहाँ मंत्रों के गूंजते स्वरों में पड़ती हुई आहुतियाँ। स्वाहा होती औषधियों से निकलती और चारों ओर बिखरती सुगन्ध ने वातावरण में देवभूमि का आभास भर दिया था।

लेकिन विद्यार्थी को इन सब चीजों में कोई रस नहीं था। वह तो घूमने फिरने आये थे बल्कि घूमने-फिरने भी क्या आलोचना करने आये थे। वह अपनी इच्छानुसार निकल गये। डॉ० झा आयोजन स्थल पर ही घूमते रहे और वहाँ आये लोगों से मिलते बतियाते रहे। आने वालों में गुजरात, महाराष्ट्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

राजस्थान, पूना, मद्रास, बिहार, उड़ीसा और मध्यप्रदेश, मध्य भारत के लोगों की संख्या अधिक थी। कुछ साधक अफ्रीका से भी आये थे। ज्यादातर लोग सद्गृहस्थ थे। वे अकेले भी नहीं थे। पत्नी, बच्चे, माँ बाप आदि भी साथ आये थे।

शाम को जब विद्यार्थीजी वापिस आये तो उन्होंने डॉ० झा से कहा कि आचार्यश्री कोई बड़े महन्त हैं। यज्ञ करवाना उनका धन्धा है। यज्ञों से ही खाते कमाते हैं। यज्ञ में अगर लाखों रुपये खर्च किये हैं तो लाखों का मुनाफा भी बटोरेंगे।

डॉ० झा ने कहा, 'आचार्यश्री को देखो, तपस्या के कारण उनका शरीर कितना कमजोर हो गया है। हड्डियाँ तक गिनी जा सकती हैं। उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति, धर्मपत्नी के जेवर और बच्चों के जोड़े हुए पैसे गायत्री मिशन को दे दिये हैं। यदि आपको अविश्वास हो तो आप आज ही लौट जाएं। विद्यार्थीजी सोचने लगे। उन्होंने डॉ० झा की दृष्टि से देखा और पाया कि उनकी मान्यता बदल रही है।'

एक सौ आठ कुंडीय गायत्री महायज्ञ के लिए बसे उस नगर को गायत्री नगर नाम दे दिया गया था। सुबह चार बजे शंखनाद हुआ और लोग जागने लगे। कई साधक पहले ही जाग चुके थे। उन्होंने अपने साथियों को जगाया। नित्यकर्मों से निवृत्त हुए और गायत्री तपोभूमि की ओर चल दिए। तपोभूमि के पास दांई ओर उन दिनों बगीची हुआ करती थी। वृक्षों और झाड़ियों का अच्छा झुरमुट था। उस बगीची में और उससे आगे बाहर वाले विस्तार में एक सौ आठ कुंड बनाये गये थे।

सूर्योदय से करीब दो घंटे पहले आचार्यश्री गायत्री तपोभूमि पहुँच गये। वेदमाता की आरती और प्रातःसंध्या के बाद महायज्ञ आरंभ हुआ। यज्ञ आरंभ होने तक माताजी भी पहुँच गई थी। पूर्णाहुति में आये साधकों के लिए भोजन और दैनंदिन जरूरतों की व्यवस्था के लिए अखंड ज्योति संस्थान में ही वे रुक गई थीं। पूर्णाहुति महायज्ञ के पहले सत्र में दोनों बैठे। आचार्यश्री और माताजी ने सुबह-साढ़े नौ बजे तक आहुतियाँ दी। बाकी कुंडों पर चार-चार दंपत्तियों के हिसाब से लोग बैठते थे। सुबह नौ बजे तक चले इस यज्ञ में पांच सौ चालीस दंपत्तियों ने आहुतियाँ दीं। इस सबको आचार्यश्री ने अपने प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त किया था। उन साधकों ने वर्ष भर पहले से गायत्री की विशिष्ट साधना आरंभ की थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्राह्मणत्व का आह्वान

उस दिन का अग्निहोत्र संपन्न होने के बाद आचार्यश्री ने साधकों को संबोधित किया। उस उद्‌बोधन में ब्राह्मण धर्म की व्याख्या और नरमेध के महत्व की चर्चा की। उन्होंने कहा कि हमारे देश की संस्कृति का क्षरण हो रहा है। उसका कारण यही है कि हमारे यहां सच्चे ब्राह्मणों का अभाव हो गया है। पिछले बीस सालों से हम निरंतर अनुभव करते आ रहे हैं कि जब तक ब्राह्मणत्व को अर्जित नहीं कर लेते तब तक भारतीय संस्कृति का उत्थान नहीं किया जा सकता। शंकराचार्य का उदाहरण हमारे सामने है। उन्होंने समाधि नहीं लगाई, उपवास करके शरीर को नहीं सुखाया, आंखे बंद करके निर्जन वन में भगवान का ध्यान नहीं किया बल्कि भारतीय संस्कृति की रक्षा का बीड़ा उठाया। शरीर में गंभीर रोग होते हुए भी वे उत्तर से दक्षिण तक भारतीय संस्कृति का संदेश देते हुए घूमते रहे। ब्राह्मणत्व अर्जित करने का अर्थ है तप और त्याग भरा जीवन।

नरमेध की व्याख्या करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि यह भी ऋषि, ब्राह्मण परम्परा का ही एक अंग है। इसके द्वारा हम अपना सब कुछ, यहाँ तक कि जीवन भी समाज और संस्कृति की सेवा के लिए अर्पित कर देते हैं। यहाँ हो रहे नरमेध में सत्ताईस व्यक्ति अपना सब कुछ देश और समाज की सेवा में न्यौछावर कर देंगे। उनके इस बलिदान को नरमेध का नाम दिया गया है।

दशमी का यज्ञ अग्निहोत्र संपन्न होने के बाद दिया गया यह उद्‌बोधन सुनने वालों की संख्या ज्यादा नहीं थी। मुश्किल से ढाई तीन हजार लोग रहे होंगे। लेकिन संदेश और संकल्प भावी समाज साधना की आधारशिला रखने वाला था।

इक्कीस अप्रैल की शाम को पूर्णाहुति समारोह शुरू हुआ। शाम सात बजे मंगलाचरण और भजन से आरंभ हुए इस कार्यक्रम में स्वामी परमानंद ने एक संदेश दिया। उसके बाद आचार्यश्री का उद्‌बोधन था। चैत्र महीने में शाम को छह साढ़े छह बजे तक खासा अंधेरा हो जाता था। समारोह स्थल चारों तरफ फैली रोशनी से खासा जगमग कर रहा था। आचार्यश्री के परिचयात्मक भाषण के बाद उस समय के लोकसभा अध्यक्ष अनंतशयनम आयंगर ने उद्‌घाटन भाषण दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आयंगर दक्षिण भारत के थे। वे तमिल के साथ अंग्रेजी और दूसरी विदेशी भाषाओं के अच्छे विद्वान थे। हिन्दी भी जानते थे लेकिन बोलने का अभ्यास नहीं था। उन्होंने उद्घाटन के बाद हिन्दी में बोलना शुरू किया। उन्होंने कहा कि मैं यहाँ गायत्री माता के दर्शन करने आया हूँ। गायत्री मंत्र में भगवान को तेजरूप में मान कर केवल अपनी ही नहीं वरन संसार भर की बुद्धि निर्मल और उज्ज्वल करने की प्रार्थना की गई है। जब श्रीकृष्ण से अर्जुन ने पूछा कि मैं भगवान का ज्ञान कैसे प्राप्त करूँ और कैसे उनका ध्यान करूं तो भगवान ने यही कहा कि तुम जहाँ कहीं भी प्रकाश देखो, वहीं समझ लो कि भगवान हैं।

अर्जुन ने कहा कि मैं एक ही स्थान पर भगवान के दर्शन करना चाहता हूँ। तब भगवान ने उसे विराट रूप दिखाया। संसार में जितने भी व्यक्ति हैं, उन सबके सिर भगवान के सिर है। उनके हाथ भगवान के हाथ हैं, उनके पैर भगवान के पैर हैं। इसका अर्थ यह है कि सब जनता मिल कर ही भगवान का रूप है और उसकी सेवा करना ही भगवान की सच्ची पूजा है।

लोकसभा अध्यक्ष ने भारतीय धर्म संस्कृति के आधारभूत सिद्धांतों का संदर्भ दिया और कहा कि हमारे धर्म का सार यह है कि हम सारे संसार को अपना समझें। उसे भगवान का स्वरूप समझ उसकी सेवा में रत रहें। इस तरह की प्रेरणा, शक्ति और बुद्धि गायत्री उपासना से ही मिलती है। सनातन धर्म या भारतीय धर्म के अनुयायी को इस मंत्र का आश्रय लेना ही चाहिए।

अनंतशयनम आयंगर के बाद मथुरा के प्रसिद्ध समाज सेवी लक्ष्मीनारायण आचार्य (वे समारोह के स्वागताध्यक्ष बनाये गये थे) बोले। आचार्यश्री के साथ स्वतंत्रता संग्राम में संघर्ष करते रहे जगन प्रसाद रावत तब उत्तरप्रदेश सरकार में उपमंत्री हो गये थे। वे भी पूर्णाहुति समारोह में आये थे। कृष्णदत्त वाजपेयी, ब्रह्मचारी विश्व कल्याण हितैषी कन्या गुरुकुल की संचालक लक्ष्मी देवी, डॉ० सीताराम कपूर, द्वारकाप्रसाद भार्गव और गीता आश्रम के हरिहर जी के व्याख्यान हुए। व्याख्यानों की शृंखला चैत्र शुक्ल की प्रदोष तिथि को पूरी हुई। उस दिन समापन हुआ था।

लक्ष्मीरमण आचार्य ने स्वागत भाषण में अभियान का परिचय देते हुए पिछले पंद्रह महीनों से चल रही गतिविधियों के बारे में बताया था। उन्होंने कहा था कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए हम भगवान से नित्य प्रार्थना करते हैं कि हमारी बुद्धि निर्मल हो और सुतीक्ष्ण हो। गायत्री तपोभूमि के पिछले पंद्रह महीने से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चल रहे महायज्ञ का उद्देश्य पूरे समाज की बुद्धि को निर्मल बनाना है। इसी उद्देश्य के लिए सवा सौ करोड़ गायत्री जप, सवा सौ लाख आहुतियों का यज्ञ, मंत्रलेखन की स्थापना, पुस्तकालयों की स्थापना और रुद्रयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, सरस्वती यज्ञ, महामृत्यंजय यज्ञ, नवग्रह यज्ञ, पितृ यज्ञ, यजुर्वेद यज्ञ, अथर्ववेद यज्ञ और सामवेद यज्ञ जैसे अग्निहोत्र अनुष्ठानों की शृंखला चली।

उन्होंने कहा कि यज्ञ अभियान का उद्देश्य मनुष्य को अपने कुसंस्कारों से मुक्त करना रहा है। भगवान कृष्ण ने भी अर्जुन को समझाया है कि यज्ञ के लिए किए गए कर्म के अलावा सारे कर्म बंधन है। इसलिए मनुष्य को आसक्ति से रहित होकर कर्म करना चाहिए अर्थात् यज्ञ के लिए कर्म करना चाहिए।

तीनों दिन नरमेध यज्ञ की चर्चा रही। कई बार स्पष्ट किया गया कि नरमेध का अर्थ अपनी निजी इच्छाओं आकांक्षाओं को समाज के हित में छोड़ देना, त्याग करना है। स्वागताध्यक्ष ने अपने उद्‌बोधन में अच्छी तरह स्पष्ट किया कि हमारी संस्कृति और परंपरा में पशुबलि का निषेध तो है ही, हरे भरे वृक्षों को काटना और उन्हें यज्ञ के लिए काम में लाना भी निषिद्ध है। पशु बलि और नरबलि जैसे पाप मध्यकाल में आये अंधकार युग की देन है। उन्हीं दिनों पशुबलि और नरबलि जैसी प्रथाएं आरंभ हुई। यज्ञ आयोजनों में कुसंस्कारों और अंधेरों का आधिपत्य हो गया।

विरोध का अभिवादन

नरमेध और नरबलि का अर्थ स्पष्ट करते हुए यह तथ्य बार-बार समझाया गया था कि दोनों में अंतर है। फिर भी लोग आम साधकों को भरमाने में लगे हुए थे। उनका उद्देश्य शायद इतना ही था कि भगवान कृष्ण की जन्मस्थली में जाग रही चेतना को धूमिल किया जाए। बाधाएं उत्पन्न करने के पीछे इसके सिवा कोई और मकसद हो भी क्या सकता था? पूर्णाहुति महायज्ञ का दूसरा दिन था। आचार्यश्री यज्ञ का संचालन कर रहे थे। पंडित नीलकंठ शास्त्री आयोजन की व्यवस्था देख रहे थे।

पंडितों का एक दल आया और उसने यज्ञशाला में ही नारेबाजी शुरु कर दी। कुछ कार्यकर्त्ता उन्हें रोकने के लिए उठे। यज्ञकुंड में आहुतियां दे रहे ऋत्विज भी उठे। एक बारगी लगा कि विवाद बढ़ जाएगा। आचार्यश्री यह सब चुपचाप देख रहे थे। कुछ देर तक नारेबाजी और साधकों की ओर से दुत्कार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का सिलसिला चलता रहा। विवाद बढ़ता देख आचार्यश्री उठे और उन पंडितों के पास गये। हाथ जोड़ कर उनका अभिवादन करते हुए बोले, 'आप लोग यज्ञशाला के बाहर क्यों खड़े हैं। भीतर आइए न।'

पंडितों ने कहा, 'आयोजन शास्त्र विरुद्ध है हम इसमें कैसे भाग ले सकते हैं।'

आचार्यश्री ने कहा, 'अच्छा यज्ञ में भागीदार मत बनिए। आप प्रवचन पंडाल में विराजिए। आपको यज्ञ के विरोध में जो भी कहना हो वहां मंच से कहिएगा।'

पंडित लोग पंडाल में चले गये। वहां नौ बजे तक बैठे रहे। देर तक बैठना उनके बूते का नहीं था। वे अपना नाम पता और आपत्तियाँ लिख कर दे गए। साथ ही यह भी कह गये कि कल आकर मंच से अपनी बात कहेंगे। लेकिन अगले दिन भी वे समारोह शुरू होने से पहले यज्ञ अग्निहोत्र के समय ही आ गये। वे यज्ञशाला के पास ही बैठ गये। पूर्णाहुति के बाद पंडितों को जब दक्षिणा आदि देकर सम्मानित किया जा रहा था तब वे यज्ञशाला के पास और खिसक कर आ गए। आचार्यश्री को पता नहीं क्या सूझा कि विदाई से पहले उन्होंने पंडितों के नाम पुकारे। उन्हें यज्ञशाला में बुलाया और वहीं शाल, श्रीफल और धोती कुर्त्ता देकर सम्मानित किया। भेंट स्वरूप प्रत्येक को इक्कावन रुपये भी दिए। इस सम्मान से पंडितजन गदगद थे।

नरमेध यज्ञ का विरोध करने और उसके आयोजकों को कोसने आये पंडितगण भावविभोर होकर वापस गये। जाते जाते उन्होंने यज्ञशाला के पास बलियूप से बंधे साधकों को भी देखा। वे सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए अपने आपको समर्पित करने आये थे। उन्हें देखकर पंडितजन भावविभोर से हो गए। चेहरे देख कर लग रहा था कि उनके मन में भी इसी तरह बलियूप से बंधे होने की इच्छा उठ रही है। उस इच्छा के पीछे भले ही कोई स्वार्थ हो, फिर भी उनकी आंखों में ललक थी। सम्मानित होकर बाहर आये पंडित काशीनाथ चतुर्वेदी ने तो कह भी दिया कि इस तरह हम भी नरमेध कर सकें तो कितना अच्छा रहे।

मंच पर विद्वानों और तपस्वियों के व्याख्यान क्रम से चल रहे थे। वे किसी सिद्धान्त की विवेचना करने के बजाय अपना अनुभव ज्यादा बता रहे थे। अनुभूतियों के कारण प्रतिपादन और भी सशक्त बन पड़ता था। पंडित राधेश्याम कथावाचक की अनुभूति ने वहां उपस्थित साधकों को सराबोर सा कर दिया। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के पंडित राधेश्याम की लिखी काव्यात्मक रामकथा घर-घर में पूजी जाती है। उत्तर भारत में भी लोग इसे श्रद्धा और आदर से पढ़ते पाठ करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मंचीय उपयोग के लिए सर्वथा उपयुक्त यह रचना रामलीला कंपनियों और नाट्य प्रयोजनों के लिए रामचरित मानस से भी ज्यादा अपनाई जाती है। इसका रचना वैशिष्ट्य ही शायद वह कारण है जिसने इसे लोगों का कंठहार बनाया।

राधेश्याम के राम

'राधेश्याम रामायण' के नाम से मशहूर यह रचना पंडितजी ने बारह वर्ष की उम्र में लिखना शुरू की थी और अठारहवां साल बीतते बीतते पूरी कर दी थी। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा, 'जिस राधेश्याम रामायण की इतनी प्रशंसा सुनी जाती है, वह बारह साल का बालक लिख सके, यह संभव ही नहीं है। मुझ जैसा अशिक्षित तीसरी चौथी कक्षा का छात्र ऐसा दुस्साहस जुटाये यह तो और भी कठिन है लेकिन यह संभव हुआ है। सचाई यह है कि मैंने इस ग्रंथ को नहीं लिखा। लिखते समय हर पल यह लगता रहा कि कोई शक्ति यह सब करा रही है। इस ग्रंथ को लिखने से पहले मेरे पिताजी ने मुझसे सवालक्ष गायत्री मंत्र का पुरश्चरण कराया था। इसमें उस उपासना के परिणाम स्वरूप ही मैं यह ग्रंथ लिखने में समर्थ हो सका हूँ।'

उन्होंने कहा, 'यहाँ आने का एक कारण और भी था कि जिन श्रीराम की कथा मैंने लिखी है, उन्हीं के नाम वाले आचार्य श्रीराम के दर्शन कर सकूं। दोपहर से आया हूँ और यहाँ का वातावरण देखकर मैं फूला नहीं समा रहा हूँ। चारों तरफ जैसी स्थितियां है, उनमें कोई विद्वान यदि हमें गायत्री उपासना के माध्यम से सुधार की दिशा में ले जाता है तो प्रसन्न होना चाहिए। उस विद्वान का अनुसरण करना चाहिए।'

वहां आये विशिष्ट महात्माओं में बड़ोदरा के संत स्वामी रामकल्याणानंद की आप बीती बहुत अनूठी थी। उन्होंने समारोह के अगले दिन हुए नरमेध यज्ञ में आत्मदान कर दिया था। उन्होंने उपासना के संबंध में अपनी एक अनुभूति सुनाई। स्वामी जी बड़ोदरा के पास एक कुंआ बनाना चाहते थे। उस प्रेरणा को साकार करते हुए काम शुरू किया। काफी कुछ खुदाई हो गई। एक मुकाम पर जाकर एक पत्थर आड़े आ गया। उसे तोड़कर हटाने में काफी जद्दोजहद करना पड़ी। हालांकि पत्थर तोड़ कर हटा दिया गया। पत्थर के जो टुकड़े कुंए के पास गिरे थे उन्हीं में एक टुकड़े पर प्रतिमा जैसी आकृति उभरी हुई थी। यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आश्चर्य जनक था। उससे भी आश्चर्यजनक यह था कि कहीं से एक वृद्ध महिला आकर उस आकृति की पूजा करने लगी। पूजा के बाद उसने माला निकाली और जप के लिए बैठ गई।

स्वामी रामकल्याणानंद भैरव के उपासक थे। लोग उन्हें भैरों बाबा और जागी बाबा कह कर पुकारते थे। उस वृद्ध महिला को एक पाषाणखंड की पूजा करते देख उन्हें गुस्सा आया। उन्होंने वृद्धा से वह जगह छोड़कर जाने के लिए कहा। वृद्धा ने हाथ जोड़कर विनती का भाव दर्शाया जैसे कह रही हो कि कुछ देर के लिए जप तप करने दें। बाबा पर इस अनुनय का कोई असर नहीं हुआ और डांटते हुए से बोले, 'जानती नहीं कि मैं कौन हूँ, एक मिनट में बर्बाद कर दूंगा।'

वृद्धा ने जप बीच में ही छोड़कर कहा, 'कृपा करें महाराज मैं एक माला का जाप करके चली जाउंगी।' उसके स्वर में कातर प्रार्थना थी साथ ही दृढ़ता भी। बाबा इस दृढ़ता के कारण और ज्यादा कुपित हो गये। वृद्धा की उपास्य प्रतिमा का तिरस्कार करने के इरादे से वे आगे बढ़े और लात मारने के लिए पांव उठाया। वे प्रतिमा पर लात जमा पाते इससे पहले ही न जाने क्या हुआ कि उन्होंने जोर का धक्का खाया और लुढ़कते हुए कुंए में जा गिरे। गिरने का वेग इतना प्रबल था जैसे किसी ने उठाकर फेंक दिया हो।

भैरों बाबा ने ही अपना अनुभव सुनाया कि उन्हें बाहर निकाला गया। बाहर निकालने के लिए एक चारपाई रस्सियों से बांधकर कुंए में उतारी गई थी। कुंआ तीस हाथ (लगभग बीस मीटर) गहरा खुद गया था। इतनी गहराई में गिरने पर भी ज्यादा चोट नहीं आई थी। बाबा ने उस वृद्धा को कुंए में उतरते और संभाल कर चारपाई पर लिटाते हुए देखा। वह बाबा के सिर पर हाथ रखे ऊपर तक आती अनुभव हुई।

ऊपर आने के बाद वह न जाने कहां गायब हो गई। बाबा बेहोश हो गये और उसी हालत में अस्पताल लाये गये। तीन सप्ताह तक जीवन और मौत से संघर्ष करने के बाद वे संकट से उबर पाये। अपनी आपबीती सुनाते हुए स्वामी रामकल्याणानंद ने कहा कि इस घटना के बाद उन्होंने अपना मन गायत्री की नियमित उपासना में लगाया। उपचार के तीन सप्ताह में उन्होंने गायत्री मंत्र की स्फुरणा कई तरह से अनुभव की।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नरमेध यज्ञ बलिदान या जलते हुए यज्ञकुंड में अपनी आहुति देना, जीवित जल मरना नहीं है। वह एक संस्कार है, एक व्रत बंधन है, जिसमें व्यक्ति को अपने क्षुद्र अहं का त्याग करना होता है। आचार्यश्री बलियूप से बंधे आत्मदानियों को समझा रहे थे। गायत्री तपोभूमि के प्रांगण में बारह स्तंभ स्थापित किए गए थे। एक स्तंभ से दो-दो, तीन-तीन व्यक्ति बंधे बैठे थे। उनके हाथ कच्चे सूत से बंधे हुए थे। इसी तरह पांव, गर्दन, पीठ और कमर भी बंधी हुई थी।

बलियूपों से बद्ध

सत्ताइस लोगों को बलियूप से बंधकर बैठने के लिए ज्यादा जगह की जरूरत नहीं थी। पर्याप्त स्थान था लेकिन तपोभूमि के बाहर लोगों का हुजूम जमा हुआ था। वे यह जानने के लिए लालायित थे कि जिस आयोजन को लेकर तरह-तरह की चर्चाऐं महीनों से चल रही थी, वह कैसा होता है। आचार्यश्री ने संस्कार आरंभ कराने से पहले संक्षिप्त सा उद्‌बोधन दिया। उन्होंने कहा, 'यह संन्यास की ही एक विधि है, ऐसे व्यक्ति जो गायत्री और यज्ञ को, ज्ञान और त्याग के आदर्श को जन-जन तक पहुँचाने के लिए अपना शेष जीवन लगा देना चाहते हैं, वे यहाँ उपस्थित हुए हैं। आगे इस तरह के उत्सर्ग और भी होंगे। धीरे-धीरे निस्वार्थ समाजसेवियों का, त्यागी तपस्वियों का एक बड़ा समुदाय तैयार होगा। वह सनातन धर्म और संस्कृति के उद्धार के लिए काम करेगा।'

बलियूप से बंधे साधकों को माताजी ने तिलक लगाया। उनके हाथों में अक्षत पुष्प दिये। षट्‌कर्म और आत्मशुद्धि के बाद हेमाद्रि संकल्प हुआ। उसके बाद साधकों के हाथ में कलावा बांधा गया उन्हें एक दंड भी दिया गया। 'व्रतेन दीक्षामाप्नोति' मंत्र से आचार्यश्री कलावा बांध रहे थे और माताजी उनके हाथ में श्रीफल और प्रसाद रखती जा रही थी। अपनी निजी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को तिलाजंलि देकर गायत्री तपोभूमि में निवास करने की ललक इन साधकों में थी जिनके माध्यम से उन्होंने अपनी बलि दी थी, उनके निर्देशों के अनुसार काम करने का उत्साह भी नरमेध के यूपों से बंधे साधकों में था।

'हमें जिस काम में लगाया जाएगा, उसे करेंगे। वह बोझ उठाने का हो, झाड़ू लगाने का या ग्रंथ लिखने और व्याख्यान देने का।' बरेली के बाबू

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अशर्फीलाल ने नरमेध के तुरंत बाद कहा था। अपने गृह नगर में अच्छी वकालत चलती थी। मथुरा आना जाना शुरु हुआ। देखा कि पारिवारिक जिम्मेदारियाँ लगभग पूरी हो गई हैं। बच्चे अपने पैरों पर खड़े हो गये हैं। उन्हें हमारी जरुरत नही है। आचार्यश्री के सान्निध्य में आकर समाज के लिए ही काम करते रहने की उमंग उठी, इस उमंग ने उन्हें आत्मदान के लिए प्रेरित कर दिया। अशर्फीलाल जी को तपोभूमि में चल रहे संस्कृति विद्यालय का दायित्व सौंपा गया था।

कर्नाटक (तब मैसूर) के चौबीस वर्षीय युवक श्री कदम नरमेध से पहले कुछ समय के लिए ही तपोभूमि ठहरे थे। दो साल पहले यहाँ आना हुआ था। तीन चार दिन के प्रवास ने इस तरह मुग्ध कर लिया कि आगे चलकर यहीं बस जाने की ठान ली। श्रीकदम त्रिपाठी परिवार के सदस्य थे। उनके पूर्वज और पिता भी वेदशास्त्रों के विद्वान थे। स्वयं श्रीकदम को वेदों और धर्मशास्त्रों के कई प्रसंग याद थे। सामवेद उन्हें कंठस्थ था।

उत्तरप्रदेश में फतेहपुर के एक जमींदार परिवार से निकले संन्यासी ब्रह्मचारी योगेंद्र ने संस्कृति की साधना में अपने आपको फिर से दीक्षित किया। उन्होंने विधिवत संन्यास लिया था और अरसे तक चित्रकूट के जंगलों में तप तितिक्षा की साधना की थी। गायत्री तपोभूमि में प्राण प्रतिष्ठा के बाद जंगलों मे रहकर तप करने के बजाय तपोभूमि को उनने अपना साधना क्षेत्र चुन लिया।

महात्मा ब्रह्मस्वरूप जी कहा करते थे कि संन्यासी को एक ही जगह टिक कर नही रहना चाहिए। उन्होंने अपनी शरीर यात्रा का शेष समय आचार्यश्री के अनुसार ही व्यतीत करने की ठानी। उन्होंने यह कहते हुए उत्सर्ग किया कि मर्यादा का निर्वाह करते हुए मुझे निरंतर चलते रहना होगा। आप एक जगह रोक कर नही रखेंगे। निरंतर विचरण करते रहने देंगे।

आचार्यश्री ने कहा कि कोई शर्त मत रखिए। जिस समर्पण या त्याग में शर्त होती है। वह अधूरा रहता है। यह सुनते ही महात्मा ब्रह्मस्वरूप ने अपने कान पकड़े और आचार्यश्री के चरणो में झुक कर प्रणाम किया।

बिरंकी(फतेहपुर)के रामलाला, हंसवर (फैजाबाद) के कृपाशंकर त्रिपाठी, ब्रह्मचारी लक्ष्मीनारायण, उरई (जालौन) के बृजनारायण द्विवेदी, छपरा (चंपारन) के उमाकांत झा, आगरा के सीताराम अग्रवाल,बहराइच के भगवती प्रसाद श्रीवास्तव, मालेगाँव (नासिक) के मांगीलाल दामदा जैसे कितने ही नाम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

थे जिन्होंने नरमेध यज्ञ में अपनी आहुति दी। इनमें कुछ नरमेध के कर्मकांडो में सक्रिय भाग नहीं ले सके। मन ही मन वे अपने आपको समाज की वेदी पर उत्सर्ग कर चुके थे।

ब्रह्मचारी लक्ष्मीनारायण साठ वर्ष के साधु थे। लंबी दाढ़ी और जटा जैसे केश रखते थे। मंदिर में भगवती की प्रतिमा के पूजन आराधना और सेवा का दायित्व संभाला था । रात दो बजे उठकर नित्य कर्मो से निवृत्त हो जाते। तैयार होने में उन्हें तीस चालीस मिनट लगते। स्नान आदि से निपट कर मंदिर की सफाई शृंगार आदि कार्यो में लग जाते और पूरे दिन मंदिर परिसर का ध्यान रखते। सेवा पूजा से बचा समय स्वाध्याय में लगाते। उन्होंने अपने आप को बलि के लिए प्रस्तुत किया तो आचार्यश्री ने पीठ थपथपाते हुए कहा था, 'आपका अहं तो पहले ही विसर्जित हो चुका। संस्कार तो अब औपचारिकता मात्र रह गया है।'

अपना निर्णय आप

बयालीस वर्ष की विद्यावती ने नरमेध यज्ञ से पहले ही प्रतिदिन दस लोगों को गायत्री उपासना में प्रवृत्त करने का संकल्प लिया था। इस संकल्प को वे भलीभांति निभाती रहीं। गायत्री तपोभूमि में अपने आपको समर्पित करने तक उन्होंने सात सौ उपासक तैयार कर लिए थे। बिजनौर की निवासी विद्यावती ने अपने गृहनगर में एक यज्ञशाला भी बनवा ली थी। और वहीं यज्ञ याग करने लगी थी। उनकी जागरण यात्रा लुधियाना, पठानकोट, रोहतक और देवबंद तक चली थी।

बिजनौर से ही एक और समर्पण भगनी देवी शर्मा के रूप में आया था। एक सौ आठ कुंडीय पूर्णाहुति महायज्ञ से करीब साल भर पहले उन्होंने अपने क्षेत्र में गायत्री उपासना का प्रचार आरंभ कर दिया था। नरमेध यज्ञ में अपने आपको एक आहुति के रूप में प्रस्तुत किया तो शासकीय सेवा से निवृत्ति ले ली और वेदमाता की सेवा का मार्ग चुना।

नेपाल की रतन कुमारी के मन में भी पारिवारिक दायित्वों से विराम लेने की प्रेरणा जगी। घर में विशेष दायित्व थे भी नहीं। पति ने पहले ही एक विवाह किया हुआ था। धोखा देकर, रतनकुमारी के परिवार वालों से झूठ बोल कर एक और विवाह कर लिया था। रतनकुमारी का मन पहले भी जप तप और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साधना में ही लगता था। लौकिक जीवन में धोखा खाया तो उसे तिलांजलि देने का निश्चय कर लिया। अपनी बेटी मीना को साथ ले कर आई । पूर्णाहुति महायज्ञ के समय हुए नरमेध में तो वे आत्मदान नहीं कर सकी। पिता और भाई ने इसके लिए अनुमति नहीं दी।

वह माताजी के पास गई और कहने लगी कि मुझे आत्मनिर्णय का कोई अधिकार नही है क्या? मेरे पिता और भाई अनुमति नही देते तो मैं क्या अपने संकल्प का गला घोट दूं। कहते कहते रतनकुमारी बिलख उठी। वह विलाप कर रही थी क्या हम स्त्रियों के भाग्य में दूसरों की मनमर्जी झेलना ही लिखा है। पुरुष हमें चाहे जहाँ हांक दे, चाहे जैसा बर्ताव करे। हम उनकी इच्छाओं को ही मानते और गुनते रहें।

रतनकुमारी का यह बिलखना आचार्यश्री भी देख रहे थे। पर वे कुछ बोले नहीं । उसकी बातें सुनकर माताजी की आँखे भी नम हो उठी थी। उन्होंने रतनकुमारी की पीठ पर हाथ रखा और कहा,'रो मत बेटी। तुमने अपने आपको भगवान के मार्ग पर ले जाने का संकल्प लिया है। इस मार्ग पर चलने का निश्चय करने के बाद तो मीरा ने भी रजवाड़े और रनिवास की झूठी मर्यादाओं को तोड़ दिया था। तुम भी वैसा ही करो।'

माताजी ने पूछा, 'क्या अभी और तुरंत ऐसा करने की स्थिति मे हो । अभी बगावत करोगी तो घर के लोग यहाँ बखेड़ा खड़ा कर देंगे। अभी संस्कार नही हो पाया तो कोई बात नही। अभी घर जाओ और अपने पिता आदि को समझाओ। दृढ़ता से कहो। दृढ़ता से कहने पर वे तुम्हारी बात जरुर मान जाएंगे। हम लोग भी उन्हें यहाँ समझाएंगे।'

रतनकुमारी ने वैसा ही किया । उस समय तो वह अपने पिता और भाई के साथ घर चली गई। दो महीने बाद वापस आ गई। वह अपनी बेटी को भी साथ लेती आई थी। तपोभूमि में रहकर अध्ययन करती। कुछ समय तक अध्ययन और अभ्यास करने के बाद वह क्षेत्रों में गायत्री साधना का प्रचार करने जाने लगी, उन्होंने यज्ञ संचालन और व्यवस्था में निपुणता हासिल कर ली थी।

नरमेध यज्ञ में अपनी आहुति देने वाले साधकों का परिचय बहुत विस्तार की अपेक्षा रखता है। इन लोगों ने आगे चल कर तपोभूमि मे रहते हुए या वहाँ से बाहर जा कर भी संस्कृति की जो सेवा की वह अलग विषय है। बहरहाल २४ अप्रैल को हुए इस समर्पण के बाद नरमेध का विरोध करने वालों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के पास कहने के लिए कुछ नहीं था। आर्यसमाज के एक प्रसिद्ध विद्वान उसी दिन शाम आचार्यश्री के पास उनके निवास पर गये। उन विद्वान का विरोध शांत नही हुआ था। बाद में वर्षों तक वे विषवमन करते रहे लेकिन नरमेध के बारे में उनके पास भी आलोचना के लिए कुछ नही था। उन्होंने आचार्यश्री से शांत स्वर में कहा, अगर नरमेध का यही अर्थ है तो हमे उसके विरोध में शक्ति नहीं गवानी चाहिये थी। काश आप हम लोगों को पहले ही सब कुछ स्पष्ट बता देते।

कुंठा और द्वेष से भरी यह विचित्र सराहना सुन कर वहां बैठे लोगो को अटपटा लगा। आचार्य श्री ने उस सराहना का स्वागत किया और कहा 'आपको जब भी लगे कि हम कुछ गलत कर रहे है तो हमें बता दिया करें। अभी आपने हमारा उत्साह बढ़ाया। आगे भी जब जैसा लगे, बताया करें तो हम लोग दूर तक साथ चल सकेगें।' आचार्यश्री ने यह बात सरल सहज भाव से कही थी । पता नही उन सज्जन ने किस रूप से ग्रहण किया लेकिन वहाँ बैठे लोग आचार्यश्री का मुँह ताकते रह गये। उन्हें मालूम था कि यह व्यक्ति मुखर विरोधी है और इस भेंट में भी कुछ न कुछ निंदनीय ढूंढ लेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सविता की विजय यात्रा

राजस्थान के झालरा पाटन गांव से आये कार्यकर्त्ताओं ने अपने यहाँ गायत्री महायज्ञ का तुरंत निर्धारण कर लिया था। जैसे वे पहले ही मुहूर्त निकाल कर आये थे। पूर्णाहुति महायज्ञ संपन्न होने के बाद आचार्यश्री ने क्षेत्रों में महायज्ञों की शृंखला चलाने का आह्वान किया था। अगले दो सालों में १०८ स्थानों पर आयोजन होने थे। वह संदेश पूरा हुआ ही था कि घनश्याम शर्मा ने एक पत्र लिखा और आचार्यश्री के सामने रख दिया। पत्र में अपने यहां अगले महीने गायत्री महायज्ञ का प्रस्ताव था। तिथियां भी लिखी गई थीं २२, २३ और २४ मई। पत्र रख कर वे हाथ जोड़े खड़े हो गए। आचार्यश्री ने पत्र खोलकर देखा और इतना ही कहा, 'महीना भर है। तैयारी के लिए इतना समय कम नहीं रहेगा?

घनश्याम शर्मा ने कहा, 'आपके आशीर्वाद से यह समय पर्याप्त रहेगा। हम लोग आसपास के कस्बों में भी कार्यक्रम रखने की कोशिश करेंगे।'

माताजी भी यह वार्तालाप सुन रही थीं। उन्होंने कहा कुछ नहीं। उनकी दृष्टि समझने में यदि कोई समर्थ होता तो कह सकता था कि उन्होंने स्वीकृति दे दी है। आचार्यश्री ने माताजी की ओर देखा और घनश्याम शर्मा की पीठ थपथपा दी। यह स्वीकृति का सूचक था। घनश्याम शर्मा और उनके साथ खड़े चंदालाल, गोकुल प्रसाद और कृष्ण गोपाल भी आचार्यश्री की स्वीकृति से गदगद हुए। उन्होंने भी आचार्यश्री और माताजी को प्रणाम किया। उस समय इतना ही संवाद हो सका। जाते-जाते प्रणाम करने के लिए खड़े साधकों और कार्यकर्त्ताओं की एक लंबी कतार थी। बातचीत का समय नहीं था।

घनश्याम शर्मा आदि कार्यकर्त्ता तुरंत अपने गृहनगर वापस चले गये। उन्हें अपने यहां के श्रद्धालुओं और पूर्णाहुति महायज्ञ में नहीं पहुँच पाये गायत्री साधकों को नये दायित्व की सूचना देनी थी। २२ से २४ मई तक नौ कुंडीय गायत्री महायज्ञ की रूपरेखा बनाई और दो दिन बाद वापस मथुरा रवाना हो गए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दिल्ली, मुंबई, रेलमार्ग पर स्थित झालरा पाटन कोटा से करीब पैंतालीस किलोमीटर दूर एक छोटा सा कस्बा है। यहां तपोभूमि की स्थापना के समय ही गायत्री परिवार का गठन हो गया था। साधक क्षेत्र में इतना काम कर चुके थे कि उन्हें आयोजन की सफलता को लेकर कोई संदेह नहीं था। मथुरा में हुए एक सौ आठ कुंडीय गायत्री महायज्ञ की व्यवस्था के लिए भी यहाँ से कई कार्यकर्त्ता पहुँचे थे।

झालरा पाटन में हुई बैठक के समय कार्यकर्त्ताओं ने अपने अनुभव पर विश्वास जताया था । दावे के साथ कहा था कि झालरा पाटन में नौ कुंडीय महायज्ञ का प्रबंध करने, यज्ञशाला और प्रवचन पंडाल आदि बनाने के लिए एक सप्ताह का समय पर्याप्त होगा। वह जिम्मेदारी पांच कार्यकर्त्ताओं ने संभाली। उनका साथ देने के लिए आठ दस कार्यकर्त्ता और आगे आए। इस तरह एक अच्छी टीम तैयार हो गई। क्षेत्र के प्रचार और साधन सहयोग जुटाने के लिए भी एक अलग टीम बना ली थी।

मथुरा पहुँचने के बाद आचार्यश्री से भेंट हुई तो बैठक में किए गए निर्धारणों के बारे में बताया। तैयारियों की रूपरेखा और कार्यकर्त्ताओं के बारे में जानकर उन्होंने संतोष व्यक्त किया। उनकी क्षमता को आचार्यश्री ने एक सौ आठ कुंडीय गायत्री महायज्ञ में देखा था। दूसरे पक्षों पर भी आवश्यक परामर्श किया और बोले आयोजन में एक बात का जरूर ध्यान रखना कि हिसाब किताब के मामले में कोई अंगुली न उठा पाए। लोगों के सहयोग से यज्ञ होगा। आयोजन के असली कार्यकर्त्ता वही हैं। उनके सामने आने जाने और पाई पाई का खर्च स्पष्ट रहना चाहिए। हम लोगों ने भी पूर्णाहुति महायज्ञ के समय यही किया था। लोगों के सामने अपनी प्रमाणिकता सिद्ध करो। प्रामाणिक रहो।

कार्यकर्त्ताओं को मथुरा में यज्ञशाला के पास रखे रजिस्टर याद आ गए। महायज्ञ के तीनों दिन उनमें प्रविष्टियाँ दर्ज की जाती थीं। दिन भर का हिसाब किताब शाम के समय लिखा जाता। रसीद कटा कर सहयोग करने वालों की राशि तो हिसाब में आ जाती थी, दानपात्र और चढ़ावे की रकम शाम को ही संभाली जाती। उन सबका हिसाब शाम को ही होता। उसे शाम के समय ही लिखा जाता और सार्वजनिक रजिस्टर में भी अंकित किया जाता।

आखिरी दिन जब पूरे आयोजन का हिसाब हुआ तो पता चला कि सत्रह हजार छह सौ अड़सठ रुपए दान और सहयोग के विभिन्न स्रोतों से आए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं। सभी खर्च हो गये। बल्कि खर्च कुछ ज्यादा ही हुआ। उसका प्रबंध भी हो गया। महायज्ञ में आलोचना करने आये लोगों ने भी हिसाब उलटा पलटा। ऐसे ही आलोचक में एक रामप्रसाद विद्यार्थी भी अभिभूत होकर गए। राम प्रसाद दरभंगा के कार्यकर्त्ता डॉ० काशीनाथ झा के साथ आये थे और कार्यकर्त्ता भी साथ थे। उनका उद्देश्य महायज्ञ और पूर्णाहुति समारोह में शामिल होना था जबकि विद्यार्थी सिर्फ घूमने फिरने के इरादे से ही आए थे। लगे हाथों अपने मित्रों की मान्यताओं और विश्वासों की खाल उधेड़ना भी मकसद रहा होगा। तभी तो वे मथुरा में आकर महायज्ञ के कार्यक्रम देखने के बजाय यहां वहां घूमते रहे।

समापन के दिन उन्होंने महायज्ञ के हिसाब का रजिस्टर देखा। और भी कई लोगों ने देखा परखा और अपने ढंग से प्रतिक्रिया की। इन विद्यार्थी महोदय की प्रतिक्रिया लिखित थी और वह स्थानीय अखबारों में भी छपी थी। 'अमर उजाला' के संवाददाता से विद्यार्थी ने कहा था, 'करीब छह हजार लोग एक सप्ताह की अवधि में आये होंगे। औसतन एक हजार व्यक्ति प्रतिदिन। उनके रहने, खाने, ठहरने और यहीं घूमने फिरने में औसतन तीन रुपये प्रतिदिन तो खर्च हुए ही होंगे। ज्यादा भी हो सकते हैं। यहाँ रखा गया हिसाब किताब देखकर मन उम्मीद और उत्साह से भर उठा।'

उस प्रसंग को याद करते हुए झालरा पाटन के कार्यकर्त्ताओं ने कहा कि पाई-पाई का हिसाब रखा जाएगा। आयोजन के दिनों में अपने ऊपर जो भी खर्च होगा वह हम स्वयं वहन करेंगे। प्रबंध समिति के लोग भी अपने या आयोजन के निमित्त किए गए अपने लिए किसी भी खर्च को महायज्ञ के हिसाब में नहीं लिखेंगे। आचार्यश्री के सामने महायज्ञ का संकल्प करते हुए उन्होंने कलावा बंधाया और विदा ली।

भीड़ नहीं संस्कार

झालरा पाटन में हुआ गायत्री महायज्ञ उन आयोजनों की एक कड़ी था जो अगले दो सालों में जगह-जगह होने थे। चंद्रभागा नदी के तट पर मई के चौथे सप्ताह में तीन दिन तक लोगों का तांता लगा रहा। यज्ञ स्थल बस्ती से कुछ दूर था। कस्बे की आबादी भी ज्यादा नहीं थी। पांच सात हजार लोगों से ज्यादा की बस्ती नहीं थी। फिर उतरते हुए वैशाख के गर्म दिन। रामगंज मंडी में किसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ने आचार्यश्री से कहा 'आपने यहाँ आने के लिए गलत समय चुना है। पत्थरों की बस्ती है। जेठ वैशाख में धरती दिन रात तपती हैं। क्वार कार्तिक या फागुन और चैत्र के दिन चुनते तो ज्यादा अच्छा रहता। उस समय बड़ी संख्या में लोग सुनने के लिए आते। यज्ञ में भी भाग लेते।'

यह सवाल राह चलते किया गया था। तब आचार्यश्री रामगंज मंडी में एक गोष्ठी को संबोधित कर पैदल ही लौट रहे थे। उनके साथ कुछ कार्यकर्त्ता भी थे। सवाल सुकेत में ही पढ़ा रहे एक अध्यापक का था। आचार्यश्री कुछ बोलें कि उनका ध्यान सामने से आ रही एक स्त्री पर गया। वह सिर पर तीन घड़े उठाये आ रही थी। बांए हाथ में भी एक घड़ा बगल में दबा रखा था और दाहिने हाथ से साथ चल रही सात आठ साल की एक लड़की का हाथ थाम रखा था। सिर पर और हाथ में उसने जो घड़े उठाये हुए थे वे पानी से भरे हुए थे।

उस स्त्री को देखकर आचार्यश्री ने सलाह दे रहे व्यक्ति से कहा, 'इस बहिन को देख रहे हो। किस कठिनाई से पानी ले जा रही है। थोड़ा भी ध्यान बटा तो घड़े तुरंत गिर सकते थे और पानी फैल सकता है। मां बेटी को भी चोट लग सकती है।'

उस व्यक्ति ने हामी भरी। हां भरते हुए वह अपना प्रश्न या सलाह भूल गया था। आचार्यश्री ने कहा फिर भी उसे यह सब करना होता है। धूप हो या वर्षा इस तरह पानी लाना ही पड़ता है। यहां काम कर रहे गायत्री साधकों को भी कष्ट और असुविधाओं के बावजूद इस तरह का आयोजन आवश्यक लगा क्योंकि क्षेत्र में सद्भावनाओं का अकाल है। चेतना पथराई हुई है और अनास्था ने लोगों के मन प्राण बुरी तरह तपा दिया है।

कुछ रुक कर आचार्यश्री ने कहा कि, 'तुम पूछोगे झालरा पाटन के यज्ञ में लोग नहीं आयेंगे। जिन्हें आना है वे तो आयेंगे ही। हमारा मकसद भीड़ इकट्ठी करना नहीं है। गिने चुने लोग ही यज्ञ में शामिल होंगे। शायद तीन सौ लोग। इन लोगों ने कई दिनों से विधि विधान के अनुसार बताई गई उपासना की है। निश्चित अनुशासन में रहे हैं। आयोजन उन लोगों के आत्मतेज को प्रखर बनाने के लिए है।'

इतना लंबा समाधान सुनकर वह व्यक्ति प्रफुल्लित हो उठा। आचार्यश्री ने कहा कि मैंने कुछ विस्तार से ही कहा है लेकिन यह मत समझना कि सिर्फ आपके लिए कहा है। यहां चल रहे और साथियों ने भी बात सुनी है। उनके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिए भी है कि आयोजन का उद्देश्य लोगों की भीड़ इकट्ठी करना नहीं होता। जो लोग आ जाते हैं उनको संस्कारित करना होता है। साथ चल रहे कार्यकर्त्ताओं से बातचीत करते हुए आचार्यश्री ने झालरा पाटन की राह पकड़ी।

झालरा पाटन यज्ञ में भाग लेने वालों ने नौ दिन का गायत्री अनुष्ठान किया था। यह अनुष्ठान नवरात्रि साधना से अलग था। मथुरा में हुए पूर्णाहुति समारोह के बाद ही अनुष्ठान के संकल्प हुए थे और आठ दस दिन में ही तीन सौ साधकों ने तैयारी कर ली। संकल्प लेने वालों में पाटन, बारा, जुल्मी, सुकेत आदि गांवों के लोग भी थे। चंद्रभागा में अच्छा पानी भरा हुआ था।

चंबल की यह सहायक नदी गर्मी में भी नहीं सूखती थी। उसके किनारे बसे करीब बीस कुटियाएँ तैयार की गई थीं। एक कुटी में चार या पांच साधकों के हिसाब से अगले दिन के यज्ञ अग्निहोत्र में भाग लेने वालों के लिए ठहरने की व्यवस्था थी। अनुष्ठान करने वाले कुछ साधक अपनी बारी का इंतजार करते हुए अपने घरों में भी ठहरे थे।

२२ मई की शाम को आचार्यश्री झालरा पाटन पहुँचे। उनके ठहरने की व्यवस्था शहर में की गई। आचार्यश्री ने यज्ञ स्थल पर ही ठहरना चाहा, जहाँ गायत्री साधक और याजक ठहरे हुए थे। उनका कहना था कि आयोजन स्थल का प्राकृतिक आकर्षण खींच ही रहा है। उससे भी ज्यादा साधकों का सान्निध्य आकर्षित कर रहा है। उनके साथ रहेंगे, बैठेंगे और संवाद करेंगे तो सुखकर होगा।

आयोजन स्थल पर मुकाम रखते हुए आचार्यश्री ने महायज्ञ में आये साधकों के साथ उनके गांवों की भी यात्रा की। तीन चार दिन के प्रवास और कार्यकर्त्ताओं के संपर्क का परिणाम रामगंजमंडी में ही एक विराट गायत्री महायज्ञ के संकल्प के रूप में सामने आया। उससे पहले गायत्री मंत्र का सामूहिक अनुष्ठान किया जाना था। जप की संख्या चौबीस करोड़ नियत हुई। तिथियां निर्धारित हुई। शरदपूर्णिमा-आश्विन मास की पूर्णमासी।

उस संकल्प के साथ सुकेत, वनवास, जुल्फी और चेयर में भी चौबीस हजार आहुतियों वाले यज्ञ का निश्चय किया। झालरा पाटन में हुए यज्ञ के समय आसपास के गांव से लोग आते और उन्हीं में से कोई प्रभावशाली व्यक्ति उठता और अपने यहां भी यज्ञ का संकल्प कर लेता। संकल्प की एक ही विधि थी। वह याजक उठकर आचार्यश्री के पास जाता अपने यहाँ आयोजन का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रस्ताव रखता। आचार्यश्री उस याजक से तैयारियों के बारे में कुछ पूछते और संतुष्ट होने के बाद संकल्पबद्ध कर देते। उसके हाथ में कलावा बांध देते।

संकल्पों की झड़ी लगते देखकर झालरापाटन स्कूल के प्रधानाचार्य नारायण सिंह ने पूछा, 'पूज्यवर जितने भी लोग संकल्प ले रहे हैं, उन सबके बारे में आपको विश्वास है कि वे अपने यहां आयोजन भी करेंगे।'

आचार्यश्री ने कहा, 'जो लोग भी संकल्प कर रहे हैं, आयोजन के लिए ही कर रहे हैं। सिर्फ दिखाने के लिए तो नहीं कर रहे।'

'इस बात की क्या गारंटी है कि संकल्प लेकर गये लोग अपने यहाँ आयोजन करेंगे ही। वे मुकर भी तो सकते हैं।' नारायणसिंह ने कहा। इस पर आचार्यश्री का उत्तर था, 'ऐसे लोगों की संख्या आधा प्रतिशत से भी कम है। वे यज्ञ भगवान की साक्षी में संकल्प लेकर जा रहे हैं। लोग कोर्ट कचहरी में कोई बात कह कर मुकर सकते हैं लेकिन यज्ञ के माहौल में या गंगा और गाय की सौगंध खाकर की गई प्रतिज्ञा अधूरी नहीं छोड़ते।'

डगर-डगर में यज्ञ

झालरा पाटन से शुरू हुई यज्ञ शृंखला के सोलह सप्ताह के भीतर ही एक सौ आठ जगह गायत्री महायज्ञों का संकल्प पूरा हो गया। सभी में तो आचार्यश्री का जाना नहीं हुआ, पर जहां नहीं जाना हुआ, उनके प्रभाव को सूक्ष्म उपस्थिति को अनुभव किया। तपोभूमि कार्यालय में जितने प्रस्ताव आये थे, उनके अनुसार चौबीस करोड़ गायत्री जप और चौबीस लाख आहुतियों के संकल्प पूरे हो रहे थे। उस उत्साह को देखते हुए आचार्यश्री ने कहा कि यह महायज्ञ पूर्णाहुति का उत्तरार्ध है। तीर्थयात्रा से लौटने पर लोग जैसे अपने घरों पर ब्राह्मण भोजन, हवन, कथा आदि कराते हैं उसी तरह एक सौ आठ कुंडीय महायज्ञ में भाग लेने आये लोग उस आयोजन की अग्निशिखा अपने यहां भी प्रदीप्त कर रहे हैं।

पूर्णाहुति महायज्ञ के बाद जगह जगह हुए आयोजनों में उत्साह के कई रंग दिखाई दिए। मध्यप्रदेश के भिंड कस्बे में हुआ गायत्री महायज्ञ वहां के लोगों के लिए अनूठा अनुभव था। वहां २४ हजार आहुतियों का यज्ञ हुआ। उस आयोजन के संपन्न होते ही स्थानीय निवासियों ने कहा कि महीने में एक बार तो इस तरह के कार्यक्रम होने ही चाहिए। इकलेरा गांव में यज्ञ के समय वर्षा होने लगी। यज्ञ में शामिल लोग बारिश से बचने के बजाय खुश होते हुए भीगते रहे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

घरों में दुबके बैठे लोग भी निकल निकल आये। इतने लोगों के यज्ञ में शामिल होने जैसी स्थिति तो नहीं थी। उन्होंने यज्ञशाला की परिक्रमा में ही संतोष किया।

पाँच कुडों की यज्ञशाला ज्यादा बड़ी नहीं थी। परिक्रमा के लिए वह जगह कम पड़ने लगी। वर्षा के कारण लोगों में इतना उत्साह उमड़ने का रहस्य बाद में पता चला। पाँच सात साल पहले इकलेरा के एक बुजुर्ग पंडित विष्णु प्रसाद ने शरीर छोड़ते समय कहा था कि कुछ समय बाद यहाँ मथुरा वृंदावन का एक महात्मा आकर यज्ञ करायेगा। यज्ञ में गायत्री मंत्र की आहुतियाँ होंगी। यज्ञ चल ही रहा होगा कि वर्षा होने लगेगी। जब वर्षा होने लगे तो समझना कि इकलेरा की खुशहाली लौट आई है। महायज्ञ में वर्षा होने लगी तो लोगों को पंडित विष्णु प्रसाद की वह बात याद आ गई।

झांसी में चिदे लुटेरे की बगिया में नौ कुंडीय गायत्री महायज्ञ हुआ। वहाँ चौबीस हजार आहुतियों का संकल्प था। लोगों का उत्साह इस कदर उमड़ा कि आहुतियों की संख्या दो गुनी बढ़ानी पड़ी। दिगोडा (टीकमगढ़) के यज्ञ में भी आहुतियों की संख्या चौबीस से चालीस हजार करनी पड़ी। जोधपुर में गायत्री जयंती से ज्येष्ठ पूर्णिमा तक महायज्ञ चला। सात दिन तक चले इस महायज्ञ के बाद सप्ताह में एक बार आयोजन का क्रम शुरू हो गया।

टाटानगर (जमशेदपुर) में नौ वेदियों पर चौबीस हजार आहुतियाँ दी गईं। साधकों ने मिलजुल कर चौबीस लाख मंत्र जप किया था। कार्यकर्त्ताओं को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि चार मन (लगभग १२५ किलोग्राम) अनाज का उपयोग भंडारा या प्रसाद के लिए किया गया था। इतने अनाज से बना भोजन डेढ़ हजार लोगों ने किया। डेढ़ हजार लोगों में प्रसाद के तौर पर ही बांटा जाए तो एक व्यक्ति के हिस्से में सौ ग्राम से ज्यादा भोजन नहीं आता। कार्यकर्त्ताओं ने आचार्यश्री से यह बात कही। कहते हुए वे कौतूहल के भाव से देख रहे थे। आचार्यश्री ने कहा, इसमें कोई चमत्कार नहीं है। लोगों ने प्रसाद समझ कर ही भोजन किया होगा। श्रद्धालुजन भंडारे आदि का भोजन नहीं करते। फिर हो सकता है यज्ञ में आने वालों ने उपवास कर रखा हो। उन्होंने भोजन किया ही न हो।

आयोजन से मथुरा वापस लौटते समय ऋषिकेश के स्वामी अखंडानंद ने आचार्यश्री से चर्चा छेड़ी। जोधपुर के लोगों को हुए अनुभव के बारे में उन्होंने कहा कि यज्ञ आयोजनों में यह संभव है। निश्चित संभव है कि उस समय की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गई व्यवस्था अक्षयपात्र की तरह फलीभूत हो जाए और थोड़े से साधन भी हजारों लोगों को तृप्त करने में समर्थ हो जाए।

आचार्यश्री ने कहा मैं भी मानता हूँ स्वामीजी। लेकिन मैं इस तरह की बातों को स्थापित करने के पक्ष में नहीं हूँ। ऐसी मान्यताओं से लोगों में पुरुषार्थ की भावना कम होगी। ऐसी मान्यताओं को बढ़ावा दिया या समर्थन किया तो यज्ञ का मूलभाव गुम हो जाएगा।

मल्लेश्वरम (बंगलूर) में हुआ यज्ञ मथुरा से गये पुरोहितों को भी वर्षों तक याद रहा। यहां एक जगह महायज्ञ हुआ। उसमें जितने लोगों ने भाग लिया सबने एक एक आयोजन का संकल्प और लिया। करीब ढाई सौ लोगों ने आहुतियाँ दी थीं। उतने ही व्यक्तियों ने एक एक कुंड की व्यवस्था का जिम्मा लिया और आने वाले दिनों में पचास महायज्ञों का इंतजाम कर लिया। पांच साल के लिए आयोजनों की अच्छी शृंखला बन गई थी।

बिजनौर के हंसपुरा, सौराष्ट्र में खेरासा, ओडिशा में खरियार, बिलासपुर में बम्हनीबंजर मुजफ्फर नगर में टोडा कल्याणपुर, बांदा-राजापुर, बुलंदशहर, सेंधवा (निमाड़) जैसे नगरों और गांवों की संख्या बहुत लंबी है। उन सबके विवरण में जाने के बजाय यह जान लेना ही पर्याप्त होगा कि यज्ञ आंदोलन आरंभ हुआ। गंगोत्री से निकली एक छोटी सी धारा के रूप में बहती हुई गंगा की तरह मथुरा के पूर्णाहुति महायज्ञ में उठी यज्ञशिखाएँ दिगदिगंत में फैलने लगी। वह प्रवाह अपने तमाम ओर छोर पार करने के लिए उमंग उठा-बह चला।

रामनाथ की नगरी में

दक्षिण भारत में हुए यज्ञ आयोजनों में रामेश्वरम का कार्यक्रम ज्यादा बड़ा नहीं था। मुश्किल से ढाई तीन हजार लोग आये होंगे। लेकिन इसकी तैयारियों से लेकर संपन्न होने तक की मात्रा अनुभवों से समृद्ध थी। रामझरोखा मार्ग पर कई पीढ़ियों से रह रहे जोधपुर के ज्वालादत्त बंगला मथुरा के पूर्णाहुति समारोह में आये थे। उन्होंने रामेश्वर के पांच कुंडीय गायत्री महायज्ञ का संकल्प लिया था। संकल्प लेने से पहले आचार्यश्री ने पूछा, 'रामेश्वरम में ब्राह्मणों और पंडों का बड़ा वर्चस्व है। उनमें बहुत से लकीर के फकीर हैं। वे अड़चन तो नहीं डालेंगे।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बंगला इस बात का निश्चित उत्तर नहीं दे पाये थे। संशय में थे कि विरोध होगा या नहीं। आचार्यश्री ने पूछा, 'विरोध तो होगा ही। वहां के पंडितों ने भगवान राम का भी विरोध किया था। सारी जगती जब रावण वध और लंका विजय के लिए भगवान की जय-जयकार कर रही थी तो रामेश्वर के विद्वान उन्हें ब्रह्महत्या का दोषी बता रहे थे।'

आचार्यश्री का आशय भगवान राम की वापसी के समय हुई एक घटना था। पुराण प्रसिद्ध है कि जब वे रावण का वध कर लौट रहे थे तो कुछ समय के लिए रामेश्वरम रुके। यहाँ के विद्वान पंडितों ने उनकी सराहना के बजाय उन्हें ब्रह्महत्या का दोषी बताया। उनके अनुसार रावण एक विद्वान कर्मकांडी और तपस्वी ब्राह्मण था। उसमें यज्ञ, दान, तप और ज्ञान के चारों गुण थे, जो एक ब्राह्मण में होना चाहिए। युद्ध में ही सही, उसका वध पातक ही था। रामेश्वरम के ब्राह्मणों ने इस पाप का प्रायश्चित भी बताया था। उस विधान के अनुसार राम ने वहाँ शिवलिंग की स्थापना की। यह स्थापना भारत भर में स्थापित द्वादश ज्योर्तिलिंगों में एक गिनी जाती है।

रामेश्वरम में ज्योर्तिलिंगों की स्थापना वाले प्रसंग का ध्यान आते ही आचार्यश्री ने ज्वालादत्त से कहा, 'तुम्हारे मन में संकल्प का उदय हुआ है तो उसे पूरा करो। अगर कोई निंदा, भर्त्सना या पाप का आरोप लगता है तो उसका भी निवारण किया जाएगा।'

कह कर आचार्यश्री ने ज्वालादत्त के हाथ में कलावा बांध दिया। तिथियां तय हुई। दीपावली से पूर्व दशमी एकादशी और द्वादशी की। पूर्णाहुति महायज्ञ के वर्ष में ९ से ११ अक्टूबर को निश्चित हुए रामेश्वरम यज्ञ से करीब दो महीने पहले आचार्यश्री ने रामेश्वर के लिए रवाना हुए। यात्रा का उद्देश्य वहाँ होने वाले आयोजन की तैयारी देखना और वातावरण को समझना था। उन दिनों मथुरा से रामेश्वर के लिए पर्याप्त साधन उपलब्ध नहीं थे। तब ग्रांड ट्रक एक्सप्रेस (जीटी) गाड़ी ही सहज थी। यह चेन्नई तक जाती थी। मथुरा से चेन्नई तक की लगभग दो हजार किलोमीटर तय करने में गाड़ी पचास घंटे से ज्यादा समय लेती थी। पचास घंटे यानी दो दिन और तीन रात।

पंद्रह सोलह साल पहले आचार्यश्री ने इस क्षेत्र की यात्रा की थी। तब से अब तक स्थितियां काफी बदल गईं हैं। उस समय वे अलग-अलग समय में महात्माओं से मिलने या अरविंद आश्रम, रमण आश्रम, कांची और तिरुपति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आदि तीर्थों में गये थे। तब की यात्रा किसी तलाश में थी। अब उस क्षेत्र में किसी सूत्रपात के लिए जाना था। उस समय के पांच राज्यों-मध्य भारत, सेंट्रल प्राविंस (सीपी) महाराष्ट्र और मद्रास की यह यात्रा मौसम और सहयात्रियों के लिहाज से हर मायने में परिवर्तनशील थी। चार छह घंटे के अंतराल से हालात बदलते रहने वाले थे।

लकड़ी के फट्टों से बनी तीसरे दर्ज की सीटें ही उस जमाने में हुआ करती थीं। यात्रियों की भीड़भाड़ भी तब ज्यादा नहीं होती थी। लंबी दूरी के यात्री तो बहुत ही कम होते थे। मथुरा स्टेशन पर गाड़ी में सवार होने के बाद आचार्यश्री ने ऊपर की बर्थ पर एक चादर बिछा ली। सामान रखा और लेट गये। गाड़ी रात में करीब नौ बजे रवाना हुई थी। यह समय उनके विश्राम का होता था। यात्रा के लिए सामान कुछ खास नहीं था। तीन जोड़ी धोती कुर्ते और अंतर्वस्त्र। कुछ पुस्तकें और सत्तू के अलावा भुना हुआ दलिया। बिस्तर के नाम पर एक दरी, चादर और तकिया। मौसम समशीतोष्ण ही था इसलिए ज्यादा वस्त्रों की जरूरत नहीं थी। रात आराम से कट गई। आचार्यश्री घर जैसी गाढ़ी नींद में सोये थे। रात में कौन किस स्टेशन से चढ़ा और कब उतरा इसका ध्यान नहीं था। कपड़े जिस लोहे के बक्से में थे, वह सिरहाने रखा था सुबह उठे तब गाड़ी भोपाल स्टेशन पर ठहरी हुई थी।

अशोक का संबोधि क्षेत्र

भोपाल में कुछ यात्री डिब्बे में चढ़े। उनमें एक बौद्ध भिक्षु भी था। पीले वस्त्र पहने उस भिक्षु के चेहरे पर शांति की आभा चमक रही थी जैसे वह अभी ध्यान से उठकर आया हो। वह भिक्षु आचार्यश्री के पास ही बैठ गया। सामने सीट पर दो लोग पहले से बैठे थे। भिक्षु को अपनी सीट पर बैठने और संभलने में कुछ क्षण लगे। सामान जमा कर वह इत्मीनान से बैठ गया तो उसने आचार्यश्री की ओर देखा। दोनों की नजरें मिली और भिक्षु ने तत्क्षण उन्हें हाथ जोड़कर झुककर नमस्कार किया। प्रणत श्रद्धा में किये गये इस नमस्कार का उत्तर आचार्यश्री ने भी झुककर दिया और बोले 'मैं श्रीराम शर्मा हूँ। मथुरा का निवासी और कर्म से पुरोहित।'

भिक्षु ने कहा 'मैं भिक्षु धर्मकीर्ति। भगवान बुद्ध के बताये मार्ग पर चलने की कोशिश कर रहा हूँ। अपना कोई निश्चित ठिकाना नहीं है। बुद्ध ने कहा था कि चलते रहो। भिक्षु को भी चलते रहना चाहिए।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लेकिन बौद्ध धर्म में तो मठों, संघारामों और बिहारों की भरमार है। चलते रहने का संदेश कम ही भिक्षु ग्रहण कर पाते हैं। कहते कहते आचार्यश्री चुप हो गये। भिक्षु धर्मकीर्ति उनके मुँह की ओर देख रहा था। आचार्यश्री ने फिर कहा, 'सभी धर्मों और साधन परंपराओं में समय और स्थिति के अनुसार संशोधन सामंजस्य की गुंजाइश रहती है। भगवान बुद्ध ने भी किसी भिक्षु को एक जगह ज्यादा नहीं रुकने का निर्देश दिया था। आचार्य शंकर ने भी संन्यासी को एक गांव में दूसरा सूर्योदय देखने से मना किया था। लेकिन परंपराओं में तत्काल या कुछ समय बाद बिहार और आश्रम बनाने की व्यवस्था करनी पड़ी।'

आचार्यश्री की बात सुनकर भिक्षु ने कहा, 'मैंने आपका पूर्व पक्ष भी समझा और उत्तर पक्ष भी। मैं आपकी विद्या और मेधा को फिर प्रणाम करता हूँ। मुझे लगता है कि आप श्री रामेश्वरम जा रहे हैं। मुझे भी वहां तक जाना है। वहाँ से सिंहल द्वीप जाऊंगा।'

भिक्षु धर्मकीर्ति ने अपने मूल निवास और पूर्व जीवन के बारे में कुछ नहीं बताया था। वह सांची से आ रहा था। सांची जहां सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म की दीक्षा ली थी और उसके बाद भारत भर में स्तूपों की स्थापना का अभियान चलाया। देश भर में बनवाये चौरासी हजार स्तूपों में आठ सांची में ही थे। उनमें तीन स्तूप ही टूटीफूटी हालत में हैं। धर्मकीर्ति और आचार्यश्री में सांची की चर्चा छिड़ गई। भिक्षु ने पूछा, 'आप कभी सांची गये है?'

'हां', आचार्यश्री ने कहा, 'बीस बाइस साल पहले गया था लेकिन एक दिन ही रुक पाया। मुझे लगा कि सांची को समझने के लिए एक दिन कम है। कम से कम पांच सात दिन रुकना चाहिए या इससे ज्यादा।'

भिक्षु ने कहा, 'पांच सात वर्ष रुकें तो भी कम होगा। सांची चमत्कारों से परिपूर्ण तीर्थ है। वह भगवान बुद्ध के लिए समर्पित है लेकिन वहां उन की कोई मूर्ति नहीं है। सिर्फ प्रतीकों से ही बुद्ध की जीवन गाथा समझाई गई है।

सांची का बृहत स्तूप वहां का मुख्य आकर्षण है। सोलह मीटर ऊंचे और सैंतीस मीटर व्यास वाले इस भव्य और विराट स्तूप का निर्धारण अशोक के समय से शुरु हुआ था। अशोक उसे पूरा नहीं करा पाया। उसके बाद पाटलिपुत्र के सिहासन पर बैठे उनके उत्तराधिकारी ने इसे पूरा कराया। भिक्षु धर्मकीर्ति ने पूछा, 'भगवान बुद्ध के संदेश को विश्वभर में फैला देने वाले सम्राट अशोक से क्या यह चूक हुई होगी कि वे प्रतिमा स्थापित करना ही भूल जाए।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'यह चूक नहीं, विशेष सावधानी थी। ध्यान के गहन तल को छू लेने वाले सिद्ध साधक ही इस तरह की व्यवस्था कर सकते थे। जिन सिद्ध साधकों ने स्तूप का स्वरूप निश्चित किया उन्होंने अनुभव किया होगा कि प्रतिमा तो एक तरह के लोगों को ही अपने भीतर की यात्रा करा सकेगी। यहां आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की चेतना के स्तर भिन्न भिन्न होंगे। उन्हें आगे की यात्रा के लिए प्रेरित करने वाले बिंब भी अलग अलग होने चाहिए। एक ही तत्व या बिंब सबके लिए उपयोगी नहीं हो सकता। इसलिए सांची के स्तूप में अलग-अलग प्रतीक अपनाये गये।'

यह सब कहते हुए आचार्यश्री के मानस पटल पर पहले की गई यात्रा के बिंब उभर कर आ रहे थे। उन बिंबों में कमल, पीपल, गाय और चक्र के माध्यम से बुद्ध के जन्म,ज्ञान प्राप्ति और धर्मोपदेश के दृश्यों को दर्शाया गया था। एक जगह पैरों की छाप अंकित थी। वह बुद्ध के निर्वाण का संकेत था। इन छापों की याद आते ही आचार्यश्री को लगा कि भगवान बुद्ध अपना पंचभौतिक शरीर छोड़कर जा रहे हैं। ज्योति बुझ रही है और उसके स्थान पर एक नई दीपशिखा का उदय हो रहा है।

स्तूप में प्रवेश के लिए चार तोरण द्वार हैं। पश्चिमी द्वार पर बुद्ध के पिछले सात जन्मों की कथा है। कहीं वृक्ष में बुद्ध की झलक दिखती है तो कभी अश्व में। यहाँ दर्शाये गये बिंबों में बुद्ध को दैत्यगण तरह तरह से प्रलोभन दे रहे हैं। उन प्रलोभनों को ठुकराये जाते हुए दिखाया गया है। दक्षिण द्वार पर खचित पत्थरों में बुद्ध के जन्म की झांकी है। इसी द्वार के पास भग्न अवस्था में सिंहमूर्ति भी है। सारनाथ में भी इसी तरह की मूर्ति है। भारत का राष्ट्रीय चिह्न इसी मूर्ति को बनाया गया है पूर्व द्वार पर राजकुमार गौतम के महाभिनिष्क्रमण और सिद्धार्थ को संबोधि मिलने के दृश्य हैं। उत्तर में आम्रवृक्ष के नीचे भगवान बुद्ध धर्म का उपदेश दे रहे हैं।

भिक्षु धर्मकीर्ति और आचार्यश्री में जो संवाद चल रहा था, उसका सार यह था कि इन चित्रों या दृश्यों को एकाग्रचित्त होकर देखने के बाद चेतना के तार झंकृत होते ही हैं। किसी के तार कमल को देखकर झंकृत हो जाएंगे तो किसी के पीपल को देख कर। पैरों की छाप देख कर भी किसी की चेतना में सोये हुए संस्कार जाग सकते हैं कि अंतर्यात्रा पर रवाना होना है। उत्तर दिशा में एक दृश्य है। उसमें भगवान बुद्ध आम्रवृक्ष के नीचे बैठे उपदेश दे रहे हैं। उनके चरणों से प्रकाश पुंज निकल रहा है और सिर से जल की अजस्र धारा प्रवाहित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हो रही है-जैसे भगवान शंकर के माथे से गंगाजल प्रवाहित हो रहा है। पैरों से प्रकाश-ऊर्जा और माथे से शीतलता का प्रवाह दर्शाता है कि अध्यात्म मार्ग में ऊर्जा की ऊष्मा के साथ शांति और शीतलता भी चाहिए।

इन चर्चाओं में पूरा दिन व्यतीत हो गया। रास्ते में कई यात्री आये और अपने गंतव्य स्टेशनों पर पहुँच कर उतरे होंगे। उनमें कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने संवाद में हिस्सा लिया। एक यात्री का प्रश्न था कि साधना के क्षेत्र में अपने ही प्रयत्नों से प्रगति होनी है तो मार्गदर्शक या बुद्ध पुरुषों की क्या आवश्यकता है। व्यक्ति प्रगति तो अपने ही प्रयत्नों से करता है।

'मार्गदर्शक की भूमिका एक दीपक की तरह होती है। उसके प्रकाश में आगे की राह दिखाई देती है।' आचार्यश्री ने कहा। फिर वे बोले, 'वह अभिभावक और उपचारक की तरह भी होता है। अंगुली पकड़कर चलना सिखाता है और औषधि अनुपान देकर निरोग बनाता है। तीनों ही स्थितियों में व्यक्ति को स्वयं ही चलना होता है।'

ऐसा नहीं था कि सभी यात्रियों के प्रश्नों का उत्तर दिया हो। बहुत से लोग बातचीत सुनकर उपेक्षा भाव दर्शाते हुए और कई चर्चा का आस्वाद लेते हुए गये। आचार्यश्री और भिक्षु धर्मकीर्ति के संवाद अपनी तरह चल रहे थे। विजयवाड़ा स्टेशन आते तक शाम हो गई थी। भिक्षु ने कहा अब ध्यान का समय हो गया है। करीब चालीस मिनट बाद ध्यान पूरा हुआ तो भिक्षु ने कहा कि आज अद्‌भुत शांति का अनुभव हुआ।

यज्ञ के विरुद्ध धरना

रामेश्वरम में ज्वालादत्त स्टेशन तक नहीं पहुँच पाये थे। वे तो काफी उत्साहित थे लेकिन आचार्यश्री ने ही मना कर दिया था। पता नहीं किस गाड़ी से आना हो। उस जमाने में मद्रास (अब चेन्नई) से धनुष्कोटि तक दक्षिण रेलवे की एक गाड़ी आती थी। इस रेल में चढ़ने पर बीच के एक स्टेशन पांबन पर उतरना होता था। कुछ गाड़ियां सीधे रामेश्वरम तक भी जाती थीं। पर उनके चलने और पहुँचने का समय निर्धारित नहीं था। गाड़ियां तब भी लेट होती थीं इसलिए भी आचार्यश्री ने मनाकर दिया था। सामान ज्यादा नहीं था। एक हाथ में छोटा सा बक्सा और दरी चादर की गठरी बगल में दबाये वे सीतातीर्थ के पास ज्वालादत्त के निवास पर आ गये। स्टेशन पर उन्हें कुछ पंडों ने घेरने की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कोशिश की थी। लेकिन बात बनी नहीं। आचार्यश्री की सादगी को उन्होंने दैन्य माना और समझा कि इस ब्राह्मण को यजमान बनाने से कुछ हासिल नहीं होगा।

ज्वालादत्त ने बताया कि यहाँ गायत्री महायज्ञ का विरोध है। पंडे पुरोहितों ने अभियान सा छेड़ रखा है। विद्वान, शास्त्री और धर्माचार्य भी इसके विरोध में हैं। आचार्यश्री ने पूछा कि विरोध किस स्तर का है। ज्वालादत्त ने दो तीन घटनाएं सुनाई। धमकी भरे पत्र लिखने और चेतावनी देने जैसी बातें तो आम थी। ज्वालादत्त ने बताया कि आप पर यानी आचार्यश्री पर हमला भी किया जा सकता है।

तैयारी के दौरान अब तक सामान्य विरोध तो खूब देखा गया था। इस तरह का विरोध पहली बार अनुभव हो रहा था। एक स्थान पर पंडों ने प्रचारकों को घेर लिया। कहने लगे धर्मविरुद्ध बातें नहीं होने देंगे। गायत्री मंत्र का उच्चारण सार्वजनिक रूप से नहीं किया जाना चाहिए। वह जिस तिस के कानों में नहीं पड़े। जोर से बोल कर किया गया जप शास्त्र मर्यादा का उल्लंघन है। उनकी आपत्ति यह थी कि गायत्री मंत्र का उपदेश हर किसी को नहीं दिया जा सकता।

ज्वालादत्त ने पूर्व की विरोध की ये घटनाएं सुनाई तो आचार्यश्री ने कहा कि गायत्री माता परीक्षा ले रही हैं। हम लोग उसमें उत्तीर्ण भी हो रहे हैं। यहाँ का यज्ञ सफल होगा। उन्होंने इस समय की यात्रा को प्रचारित नहीं करने के लिए कहा था। सिर्फ कार्यकर्त्ताओं से ही मिलना था और रामेश्वरम के तीर्थभाव को समझना था। कहते हैं रामेश्वर किसी जमाने में जमीन से मिला हुआ था। प्रकृति में हुए उलटफेर के कारण अंतद्वीप का मध्य भाग दब गया और वहाँ समुद्र आ गया। अब वह करीब अठारह किलोमीटर लम्बा और ग्यारह किलोमीटर चौड़ा एक छोटा सा द्वीप है।

भगवान राम ने लंका पर आक्रमण के समय यही से एक सेतु बनाया था। समुद्र में तैरते पत्थरों से बने पुल पर अपार वानर सेना के उस पार जाने की घटना पुराण प्रसिद्ध है। उस पुल के अवशेष अब भी देखे जा सकते हैं। कहते है कि सेतु सौ योजन (करीब एक हजार दो सौ अस्सी किलोमीटर लंबा था।) लंका विजय के बाद राम जब वापस लौटे तो उन्होंने धनुष की नोक से सेतु तोड़ दिया। जिस जगह सेतु तोड़ा वह तीर्थ धनुष्कोटि के नाम से विख्यात है। रामेश्वरम से यह जगह करीब तेईस किलोमीटर दूर है। इस तीर्थ में विभीषण राम की शरण में आये थे। दोनों की जहां भेंट हुई थी वहाँ विभीषण का एक मंदिर भी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रामेश्वरम में अनुग्रह

रामेश्वरम पहुँच कर आचार्यश्री ने कुछ देर विश्राम किया और ज्वालादत्त को साथ लेकर लक्ष्मणतीर्थ गये। रामेश्वरम मंदिर के लिए जाते हुए यह तीर्थ रास्ते में आता है। सड़क के दांई ओर विशाल सरोवर बना हुआ है। चारों ओर पक्की सीढ़ियां और बीच में एक मंडप। आचार्यश्री कुछ देर के लिए सीढ़ियों पर बैठे। उनके बैठने के स्थान से नीचे वाली सीढ़ी पर ज्वालादत्त बैठ गये। आचार्यश्री सरोवर के जल को निहार रहे थे। कुछ लोग सरोवर में स्नान कर उत्तर दिशा में बने शिवमंदिर की ओर जा रहे थे। कहते हैं कि इस मंदिर या यहां के शिवविग्रह की स्थापना लक्ष्मण ने की थी। वहाँ दर्शन कर निकलते हुए लोग पास ही बने मंडप में मुंडन आदि कराते और श्राद्ध तर्पण में लग जाते। वे श्राद्ध तर्पण के बाद लक्ष्मणेश्वर मंदिर का दर्शन करते थे।

'मनुष्य तो एक स्वतंत्र इकाई है ना। फिर उसे हर घड़ी अपने पूर्वजों को क्यों याद रखना चाहिए आचार्यश्री?' सीढ़ियों पर बैठे आचार्यश्री के सामने दक्षिण भारतीय शैली की धोती बांधे एक तमिल ब्राह्मण ने पूछा। वह अचानक ही आ गया था। आचार्यश्री के रामेश्वरम में आने का किसी को पता नहीं था। उस ब्राह्मण को किसने सूचना दी होगी। ज्वालादत्त और आचार्यश्री दोनों सोच रहे थे।

आचार्यश्री ने उसके प्रश्न का उत्तर दिया, 'मनुष्य की स्वतंत्रता उसके अणु रूप में है। सृष्टि के विराट परिकर और अपने पूर्वजों की परंपरा में ही वह स्वतंत्र है। स्वतंत्रता और आलंबन दोनों ही पर्याय हैं। एक परंपरा का अंग होने के नाते उसे अपने पूर्वजों का भी स्मरण करना चाहिए।'

उत्तर देने के बाद भी आचार्यश्री उस ब्राह्मण के बारे में सोच रहे थे कि कहां देखा होगा। उनके कौतूहल का समाधान पंडित ने ही किया। वह बोला, 'आश्चर्य मत करो। मैं आपसे करीब एक वर्ष पहले मथुरा में मिला था। तब आप वहाँ पूर्णाहुति महायज्ञ करा रहे थे। उस समय हम लोगों की बातचीत नहीं हो पाई थी। तब भी मैं आपसे यही प्रश्न करना चाहता था।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'मैंने जो उत्तर दिया वह यथोचित है या नहीं?' आचार्यश्री ने कहा। उस पर ब्राह्मण जिसका नाम रामलिंगम था, बोला, 'मैं तो मान लूंगा कि आपने सही उत्तर दिया है लेकिन यहाँ जो लोग आपका विरोध करने पर उतारू हैं, उनका समाधान कैसे करेंगे?'

'मैं उनके सामने अपना पक्ष रखने की कोशिश करूंगा।' आचार्यश्री ने कहा। रामलिंगम का कहना था कि, 'अपना पक्ष रखने का लाभ तो तब होगा न जब वे समझने के लिए तैयार हों। उनका उद्देश्य तो आपका यज्ञ किसी भी कीमत पर नहीं होने देना है।'

'उन लोगों ने क्या तय किया है, वे जाने। हमने यज्ञ भगवान की साक्षी में संकल्प किया है कि उनकी एक आराधना यहाँ भी करेंगे। देव और ऋषि सत्ताओं के सामने लिए गए संकल्प को अधूरा तो नहीं छोड़ा जा सकता।' आचार्यश्री के इस उत्तर पर रामलिंगम ने ताली बजाई। वह कहने लगा, 'जो प्रश्न मैंने आरंभ में किया था वही गायत्री महायज्ञ से विरोध रखने वाले भी करते हैं। वे आपके किसी तर्क को स्वीकार नहीं करेंगे।'

'फिर हम उन्हें समझाने के श्रम से भी बच जायेंगे। यह तो और अच्छा रहेगा?' आचार्यश्री ने कहा। इस पर रामलिंगम का कहना था कि वे इस पर भी यज्ञ करने से तो रोकेंगे ही सही।

आचार्यश्री ने कहा 'रोकते रहें। हम अपने संकल्प को पूरा करने से पीछे नहीं हटेंगे।'

'अगर वे लोग आपके जान माल को नुकसान पहुँचाए तो भी अपना संकल्प नहीं बदलेंगे।' रामलिंगम ने कहा। आचार्यश्री का उत्तर 'नहीं' ही था। इस पर रामलिंगम ताली बजाकर झूम सा उठा। उसने कहा, 'तब तो मैं आपके साथ हूँ। मैं शास्त्र से ही नहीं शस्त्र से भी उनका मुकाबला कर सकता हूँ। पलिलकोल पेरूयाल मंदिर के पास एक अखाड़ा चलाता हूँ। अठारह युवक रामदूत हनुमान की साक्षी में बल की उपासना करते हैं। मुझे आप जैसे वीर पुरुष का साथ देने में, गर्व का अनुभव होगा।'

ज्वालादत्त ने उस ब्राह्मण का परिचय और पता ठिकाना लिया। उसके बाद आचार्यश्री ने सरोवर में स्नान किया। कहते हैं कि लंकाविजय से लौटकर भगवान श्रीराम ने पहले इसी सरोवर में स्नान किया था। इसलिए रामेश्वरम की यात्रा करने वाले बटुक भी मंदिर में दर्शन के लिए जाने से पहले यहाँ स्नान करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रामेश्वरम मंदिर भारत के पांच प्रमुख मंदिरों में तीसरा सबसे बड़ा मंदिर है। लगभग चौवन मीटर ऊंचे गोपुरम से मंदिर में प्रवेश होता है। समुद्र के किनारे करीब बीस बीघे जमीन पर बना यह मंदिर साढ़े तीन सौ साल पुराना है। ज्वालादत्त के साथ चलते हुए मंदिर के संबंध में प्रचलित जनश्रुतियों की चर्चा चल पड़ी। कुछ किंवदंतियों के अनुसार लंकाविजय पर जाने से पहले राम ने यहाँ शिवलिंग की स्थापना की थी। कुछ स्थापनाओं के अनुसार विजय से लौटते हुए।

उपासना में अभेद

आचार्यश्री का कहना था कि दोनों उल्लेखों में भेद है लेकिन इससे अंतर नहीं पड़ता। दोनों ही उल्लेख शिव और राम की उपासना में अभेद को दर्शाते हैं। विजय के बाद रामेश्वर की स्थापना ज्यादा युक्तिसंगत है। युद्ध के बाद भगवान राम गंधमादन पर्वत तक आते हैं। उनका स्वागत करने के लिए वहां ऋषि मुनि इकट्ठे हुए हैं। उन्हीं में कोई मुनि रावण वध के लिए राम की निंदा करते हैं। उनका कहना था कि रावण कितना ही दुराचारी हो, पर था तो ब्राह्मण ही। उसका वध नहीं किया जाना चाहिए था। उसे पकड़ लिया जाना था। कारावास में बंदी बना लेते। वहीं पड़ा रहने देते। उसका वध अनुचित था। राम पर ब्रह्महत्या का दोष लगा है। उसका प्रायश्चित किए बिना राम का कलुष नहीं मिटेगा।

प्रायश्चित के रूप में शिवलिंग की स्थापना और पूजा अर्चना की व्यवस्था दी गई। शिवमूर्ति लाने के लिए हनुमान को कैलास पर्वत भेजा गया। चर्चा करते करते आचार्यश्री बोले देखो हनुमान को शिव का अवतार माना गया है। वे राम की आराधना कर रहे हैं। राम शिव की अर्चना के लिए उन्हीं के अवतार को कैलाश भेज रहे हैं। है न भक्ति की विभिन्न धाराओं का समन्वय। कहते कहते आचार्यश्री माधवतीर्थ के पास रुके। रुके क्या उन्हें जैसे किसी ने बरबस ही रोक दिया। मंदिर के पश्चिम द्वार से प्रवेश करने पर यह तीर्थ ठीक सामने पड़ता है, यहां एक सरोवर है। उसमें स्नान मार्जन कर सेतु माधव के मंदिर में दर्शन करते हुए आगे बढ़ना होता है।

सरोवर के पास रुककर वे कहने लगे, 'समन्वय ही मूल बात नहीं है। असल बात और है। राम मर्यादा पुरुषोत्तम थे। उन्हें मर्यादा या परंपरा के साथ न्याय और औचित्य की स्थापना भी करनी थी। न्याय की प्रतिष्ठा के लिए रावण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का वध किया और मर्यादा का निर्वाह करते हुए प्रायश्चित भी किया। नई परंपराओं की स्थापना का अधिकार उन्हीं विभूतियों को है, जो पुरानी और प्रचलित परंपराओं का आदर करते हैं।'

'क्या गायत्री महायज्ञ का विरोध करने वाले लोग भी किन्हीं परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं?' ज्वालादत्त ने पूछा। आचार्यश्री ने कहा कि वे सिर्फ हठधर्मिता बरत रहे हैं। वरना गायत्री मंत्र पहले सभी का आराध्य उपास्य था। इसकी उपासना किये बिना कोई शास्त्र और साधना का आरंभ कर ही नहीं सकता था।

सेतु माधव के मंदिर में दर्शन करते हुए आचार्यश्री माधव तीर्थ के पास आये। रामेश्वर की विशेषता है कि यहां बाइस जगह स्नान, आचमन, मार्जन आदि की व्यवस्था है। यात्री सभी तीर्थों में स्नान करते हैं। अपने साथ लोग रस्सी बाल्टी लेकर चलते हैं और हर तीर्थ से जल निकाल कर स्नान करते जाते हैं। मंदिर परिकर के बाहर भी दो तीर्थ हैं। उन सबके दर्शन और मार्जन करते हुए आचार्यश्री सभा मंडप के पास पहुँचे। सभा मंडप के उत्तर में विश्वनाथ मंदिर है, यहां हनुमान जी का लाया हुआ शिवलिंग है। इसीलिए नाम हनुमदीश्वर है। कथा प्रसिद्ध है कि लंका से वापसी के समय भगवान राम ने यहां शिवलिंग की स्थापना और पूजा अर्चना का निश्चय किया । उस संकल्प को पूरा करने के लिए कैलास पर्वत से विग्रह लाने का निश्चय हुआ।

वहां से शिवलिंग लाने में देर हुई। सुबह होने लगी। इधर पूजा अर्चना का मुहूर्त निकला जा रहा था। मुहूर्त चूक नहीं जाए, इसके लिए सीता ने बालू से शिवमूर्ति का निर्माण किया। उसमें प्राणप्रतिष्ठा और पूजा उपचार के कर्मकांड आरंभ हुए। यह प्रक्रिया आरंभ हुई ही थी कि हनुमान कैलास से शिवलिंग लेकर आ गये। पूजा उपचार चलते तक उनके लाए हुए विग्रह को एक ओर स्थापित कर दिया गया। बाद में उस विग्रह में भी प्राण प्रतिष्ठा हुई। वह स्थापना विश्वनाथ या हनुमदीश्वर महादेव के नाम से प्रसिद्ध है। लोगों का विश्वास है कि हनुमदीश्वर के दर्शन किए बिना रामेश्वर मंदिर की पूजा सफल नहीं होती।

विश्वनाथ मंदिर से निकल कर आचार्यश्री मुख्य मंदिर की ओर गये। मंदिर के सामने छड़ों का घेरा लगा हुआ था ताकि दर्शन में किसी तरह की अव्यवस्था न हो। उस समय ज्यादा लोगों की भीड़ नहीं थी। तीन द्वार पार कर लोग आसानी से मंदिर के भीतर पहुंच रहे थे। आचार्यश्री छड़ों के घेरे के पास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ही ठहर गये और मुख्य द्वार को गौर से देखने लगे। विख्यात है कि रामेश्वर मंदिर में हरिद्वार से लाया गंगा जल ही चढ़ाया जाता है। यह भी कि शिवलिंग पर कोई व्यक्ति अपने हाथों से स्वयं जल नहीं चढ़ा सकता। उसे गंगाजल पुजारी को सौंप देना पड़ता है।

भगवान ने नहीं रोका

मंदिर के बाहर एक कुष्ठ रोगी घूम रहा था। वह अंदर जाना चाहता था लेकिन कुछ लोग उसे मना कर रहे थे। आचार्यश्री को यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने हस्तक्षेप करना चाहा। ज्वालादत्त ने रोका कि यहाँ लोग पहचान लेंगे तो यज्ञ में कठिनाई होगी। जो विरोध यज्ञ के समय होना है, वह बाधा अभी ही खड़ी हो जाएगी। आचार्यश्री ने ज्वालादत्त से कहा कि फिक्र न करो। पहचाने जाने का डर नहीं है और पहचान लिए गए तो भी कोई हर्ज नहीं है। जिस देवस्थान की प्राणप्रतिष्ठा में रीछ वानरों ने भाग लिया था, उसमें एक मनुष्य भाग नहीं ले सकता। भगवान क्या सोचते होंगे?

वे कुष्ठ रोगी को रोक रहे स्वयंसेवकों के पास गये और बोले, 'आप इन्हें क्यों रोकते हैं भैया। ऐसे लोगों को भगवान के घर में भी रोका जाएगा तो इनके लिए ठौर ठिकाना कहाँ होगा।'

'कुष्ठ रोग मनुष्य के अपने पापों का दंड है, 'एक स्वयंसेवक ने कहा, 'यह संक्रामक रोग भी है। किसी और को नहीं लग जाए, इसलिए भी रोका हुआ है।'

'आपकी पहली बात का जवाब तो यह है कि भगवान को ही रोकना होता तो वे इसके मन में दर्शन की इच्छा ही नहीं उठने देते।' आचार्यश्री ने कहा, 'दूसरे कौन जानता है कि इस रूप में भगवान स्वयं ही न आये हो। गोस्वामी जी (तुलसीदास) महाराज का वह किस्सा आपने भी सुना होगा कि उनकी कथा सुनने के लिए एक कोढ़ी आया था। लोग उसे दुरदुरा रहे थे। गोस्वामी जी ने उन्हें पहचाना कि यह तो हनुमानजी हैं। उन्होंने प्रकट तो नहीं किया लेकिन श्रोताओं को मना कर दिया। वे तर्क करने लगे तो डपट दिया कि भगवान राम की कथा पतित पावन है। उसमें सभी का अधिकार है। कोई पात्र कुपात्र नहीं है।'

स्वयंसेवकों ने ध्यान से सुना। उत्तर भारत से आए धोती कुर्ता पहने एक ब्राह्मण तरुण के संदेश को उन्होंने माना भी और कुष्ठ रोगी के सामने से हट गये। आचार्यश्री भी मंदिर का वैभव और सौंदर्य देखने में मगन हो गये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ज्वालादत्त से उन्होंने पूछा कि यहाँ हरिद्वार के गंगाजल से ही अभिषेक की परंपरा क्यों है? कहीं और का जल क्यों नहीं लिया जाता?'

ज्वालादत्त के पास इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं था। वह चुपचाप रहा। पीछे से किसी ने उत्तर दिया, 'हरिद्वार उत्तराखंड का प्रवेश द्वार है। उससे आगे का पूरा क्षेत्र भगवान शिव का है। गंगा भगवान विष्णु के पैरों से निकली है और शिव की जटा में समाई है। विष्णु और शिव भक्ति का कितना सुंदर समन्वय है हरिद्वार में अर्थात जहां से भगवान की लीलाभूमि आरंभ होती है, वहीं से गंगाजल लेकर त्रिलोकीनाथ का अभिषेक।'

आवाज परिचित लगी। पीछे मुड़कर देखा तो वही कुष्ठ रोगी बोल रहा था, जिसके लिए उन्होंने पैरवी की थी। गंगोत्री या गंगा के किसी और पड़ाव से लाए जल का भी अभिषेक होता है। लेकिन जो महत्त्व हरिद्वार के गंगाजल का है, वह अन्यत्र से लाये जल का नहीं है। आचार्यश्री जहाँ खड़े थे वहाँ से भीतर का दृश्य साफ दिखाई दे रहा था। वे तन्मयता से देख रहे थे। लोग पुजारी के हाथों में गंगाजल और कुछ सिक्के रखते। बाद में पता चला कि दी जाने वाली रकम दो रुपए है। गंगाजल से अभिषेक करने वालों को यह शुल्क देना पड़ता है। माला और फूल आदि चढ़ाने का कोई शुल्क नहीं लिया जाता।

गंगाजल अभिषेक के लिए दो रुपए की रकम उन दिनों कुछ कम नहीं होती थी। एक मन (सैतीस किलोग्राम) अनाज इतनी रकम में आ जाता था। इस हिसाब से गंगाजल अभिषेक खर्चीला ही पड़ता था। दूध से अभिषेक करने के लिए डेढ़ रुपया, नारियल चढ़ाने के लिए चार आना (पच्चीस पैसे) अष्टोत्तरर्चन के लिए सवा पांच आना (इकतीस पैसे) और सहस्रार्चन के तीन रुपए दक्षिणा नियत थी। इसे शुल्क भी कहा जाता था। शुल्क इसलिए कि इस रकम को विग्रह पर अर्पित नहीं किया जाता। राशि मंदिर के कार्यालय में जमा कराना होती थी। वहां से रसीद दी जाती। उसके बाद पूजा अभिषेक की अनुमति दी जाती।

भगवान की पूजा के लिए भी पैसों की जरूरत होती है। जितनी ऊंची पूजा कराओ, उतने ज्यादा पैसे दो, कहता हुआ एक श्रद्धालु मंदिर से बाहर निकल रहा था। वह कोढ़ी अपनी जगह पर ही खड़ा हुआ था। उसने यात्री की यह टिप्पणी सुन ली और स्वगत ही बोल उठा, 'जेब से जब तक कुछ रकम नहीं निकलती तब तक वस्तु का मूल्य पता नहीं चलता। आज पैसा ही सबसे मूल्यवान है। इसलिए दक्षिणा में वही चढ़ाया जाता है। किसी समय रक्त का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मूल्य था। युद्ध में धन और साधनों से ज्यादा रक्त और बल का महत्त्व था तब लोग देवी देवताओं को रक्त चढ़ाते थे। वह बलि का युग था।'

कोढ़ी की यह बात सुनकर श्रद्धालु चौंका। आचार्यश्री और ज्वालादत्त भी इन बातों को सुन रहे थे। आचार्यश्री ने कहा, 'तंत्र साधना के जमाने में लोग अन्यान्य कारणों से भी बलि देते थे। वह विद्या गुह्य थी। सार्वजनिक नहीं की जाती थी। अधिकारी साधकों को ही बताई जाती थी। विद्या सबको बताई जाने लगी तो अनर्थ हुआ।'

'क्या देवी देवता पशु या मनुष्य का रक्त पीकर प्रसन्न होते हैं?' उसी कोढ़ी ने पूछा, 'नहीं। देवता तो दूध नैवेद्य और प्रसाद पाकर भी प्रसन्न नहीं होते। हम अपने पास जो श्रेष्ठ और मूल्यवान है, उसी को समर्पित करते हैं।'

रामेश्वर का विग्रह बहुत पुराना है। मंदिर भले ही साढ़े तीन सौ साल पहले बना हो, शिव का अर्चा विग्रह तो काफी पुराना-जनश्रुतियों के अनुसार त्रेतायुग का यानी हजारों साल पहले का है। मंदिर के पास ही एक बाग पर आचार्यश्री की दृष्टि गई। यह बाग हनुमान मंदिर के पास है। हनुमदीश्वर या विश्वनाथ के पास बने मंदिर के बारे में लोगों का विश्वास है कि हिमालय से लौटकर यहाँ स्थापना के बाद हनुमान जी अपने एक अंश से यहाँ भी विराज गये थे। उनकी जीवंत और जागृत उपस्थिति यहाँ अनुभव की जा सकती है।

गायत्री के तीन रूप

हनुमान मंदिर के सामने बाग में सावित्री तीर्थ, गायत्री तीर्थ और महालक्ष्मी तीर्थ है। आचार्यश्री इन तीर्थों का अवलोकन करते हुए रामेश्वर मंदिर की पौड़ी से वापस लौट कर आये। तीर्थों को देखकर उन्होंने कहा, 'ये रामेश्वर की प्राचीन पुरातनता के प्रमाण हैं। सावित्री और गायत्री को तो एक दूसरे का पर्याय समझा ही जाता है-महालक्ष्मी उन दोनों का सेतु है। सावित्री अर्थात लौकिक सत्ता और गायत्री अर्थात आत्मिक चेतना। मूल चेतना एक ही है। समझने के लिए उनको अलग अलग रूपों में बँटा देखते हैं तो वे सावित्री और गायत्री के रूप में समझे जाते हैं। महालक्ष्मी उस एक तत्त्व का ही वैभव पक्ष है।

बहुत से यात्री रामेश्वर यात्रा में पहले दिन समुद्र स्नान ही करते हैं, कोई यात्रा करता हुआ जा रहा था। उसके साथी ने कहा, 'हम लोगों के पास इतना समय कहाँ है? आचमन मार्जन से ही काम चलाना चाहिए। भाग्य में हुआ तो आगे कभी आएंगे और पूरा दिन समुद्र स्नान करेंगे-यहाँ के चौबीसों तीर्थ नहाएंगे।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उनकी बातचीत में चौबीस का संदर्भ सुनते ही आचार्यश्री ने ज्वालादत्त को संबोधित किया कि सभी तीर्थ गायत्री की एक एक शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। भगवान ने इन शक्तियों का आह्वान लंका विजय से पूर्व किया होगा।

चर्चा करते हुए आचार्यश्री और ज्वालादत्त रामेश्वर या रामनाथलिंगम के दर्शन के लिए चल दिए। ज्यादा भीड़ नहीं थी। जगमोहन के छड़ के घेरे के पास दो छोटे-छोटे मंदिर हैं। एक में गंधमादनेश्वर शिवलिंग है- इसकी स्थापना महर्षि अगस्त्य ने कराई थी। कहते हैं कि यह रामेश्वर की स्थापना से पहले भी था। दूसरे छोटे मंदिर में अनादिसिद्ध स्वयंभूलिंग है। महर्षि अगस्त्य ने इसकी भी पूजा अर्जना की थी और यह गंधमादनेश्वर से भी पहले विद्यमान था। इसे अगस्त्येश्वर कहते हैं।

आचार्यश्री ने जिस समय रामेश्वर के दर्शन किये तब मंदिर में रजत रथोत्सव चल रहा था। रामेश्वर उत्सवधर्मी मंदिर है। प्रतिदिन हर घड़ी कोई न कोई उत्सव चलता ही रहता है। रजत रथ महोत्सव में रामेश्वर की उत्सव मूर्ति मंदिर से बाहर निकाली जा रही थी। शिव पार्वती, नंदी, कार्तिकेय और गणेश के विग्रह को चांदी के रथ में बिठाकर बाहर निकाला जा रहा था। पत्र पुष्पों से सजे रथ और आभूषणों से सज्जित शिव पार्वती प्रतिमा मनोहारी लग रही थी। आचार्यश्री ने उस यात्रा को कुछ क्षण के लिए निहारा और भीतर चले गये। अभिषेक के लिए मंदिर कार्यालय से गंगाजल पहले ही ले लिया था।

शेषनाग के फणों जैसे बने छत्र के नीचे भूतभावन रामेश्वर की छवि निहारते अभिषेक कराते और भी लोग वहाँ उपस्थित थे। आचार्यश्री ने भी कार्यालय से लिया हुआ गंगाजल आगे बढ़ाया और मंदिर के पुजारियों को सौंप दिया।

गंगाजल सौंपते हुए वे ज्योतिर्लिंग को एकाग्रचित्त होकर देख ही रहे थे कि गर्भगृह से किसी पुजारी ने संकेत किया। आचार्यश्री ने उस संकेत को देखा अनदेखा कर दिया। कोई जान पहचान नहीं थी। इस धाम में पहली बार आना हुआ था। इसलिए भी अपने बुलाये जाने का ख्याल नहीं था। वे चुपचाप खड़े रहे। पुजारी ने कहा, 'आप से ही कह रहा हूँ बंधु। खद्दरधारी बंधु।'

दर्शनार्थियों में किसी और ने खादी के वस्त्र नहीं पहने थे। इशारा आचार्यश्री की ओर ही था इसलिए अब बोध हुआ कि उन्हें ही बुलाया जा रहा है। इंगित को समझकर वे आगे गये। पुजारी ने गर्भगृह का द्वार खोल दिया और भीतर आने के लिए इशारा किया। लाया हुआ गंगाजल पुजारी जी ने आचार्यश्री को वापस करते हुए कहा कि वे स्वयं ही अभिषक करें। यह एक अपवाद था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पास ही खड़े एक पुजारी ने अपने साथी की ओर आश्चर्य से देखा। उसकी दृष्टि में आपत्ति का भाव था। उस पुजारी ने कहा, 'यह कोई सामान्य व्यक्ति नहीं है। इसके माथे पर देखो चंद्रमा दिखाई देता है।'

पुजारी ने आचार्यश्री के माथे पर गौर से देखा। लगा कि उसका साथी सही कह रहा है तो पूछा, 'इसका क्या अर्थ है'?

उसी पुजारी ने कहा, 'चंद्रमा किस देव के सिर पर है?'

'महादेव शंकर के,' उत्तर था। 'लेकिन उनकी जटा में चंद्रमा है। तुम्हारे इस यजमान के तो भृकुटि मध्य में दिखाई दे रहा है।

'यह शिव का विशेष गण हो सकता है। मैं कोई कारण नहीं बता सकता। लेकिन मुझे रामेश्वर महादेव सतत यह प्रेरणा दे रहे हैं कि यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है।' उस पुजारी ने कहा।

पास ही खड़े आचार्यश्री यह सब सुन रहे थे। उन्होंने कहा, 'मैं साधारण व्यक्ति ही हूँ महाराज। जो चिह्न आप देख रहे हैं, वह किसी भी व्यक्ति के माथे पर हो सकता है। ध्यान करने वाले साधकों के कपाल पर तो यह सहज ही आ जाता है।'

'ठीक है। ठीक है।' उस पुजारी ने कहा, 'आप अपने हाथों से ही ज्योतिर्लिंग का अभिषेक कीजिए।'

आचार्यश्री ने तांबे के पात्र में भरा गंगाजल रामेश्वर पर चढ़ाना आरंभ किया। तैलधारा की तरह जल प्रवाहित हो रहा था। किसी भी पल में क्षीण या स्थूल नहीं हो पाया था। उनका ध्यान ज्योतिर्लिंग पर केन्द्रित था। दृष्टि वहीं टिकी हुई थी। तैलधारा की तरह अनवरत बह रहे जल को देखते देखते आचार्य के मानस पटल पर एक दृश्य उभरने लगा।

अतीत में निर्जन

समय का कोई पता नहीं चल रहा है। आसपास कैसा वातावरण है, उसका भी कोई बोध नहीं रहा। देश और काल का अतिक्रमण करते हुए कोई अनुभव हो रहा है। दृश्य उभर रहा है। जंगल है। बहुत घना नहीं है, अत्यंत विरल भी नहीं है। उस जंगल में समुद्र की तरंगों की आवाजें आ रही थीं। लहरों की गूंज का स्वर ऊंचा नहीं था। लहरें बहुत शांत संगीत की सी ध्वनि करती उठ रहीं थीं। सामने ही ज्योतिर्लिंग है। वहाँ मंदिर या छत जैसी कोई रचना नहीं थी। आचार्यश्री अपने आपको विग्रह के पास खड़ा देख रहे हैं। जिस रूप में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अभी है, उससे भिन्न चेहरे पर घनी दाढ़ी मूछें हैं। सिर पर जटाएं और वेश भी संन्यासी का। गेरुआ वस्त्र पहने वे शिव की आराधना कर रहे हैं।'

देखते ही देखते दिन बीत जाता है। कई दिन बीत गये। हफ्तों और महीनों बीत गये। सेवा करते करते संन्यासी के मन में वहां एक कुटिया बनाने का विचार आता है। वह कुटिया बनाने लगते हैं। ज्योतिर्लिंग पर छाया के लिए बनी छोटी सी कुटिया के बाद एक झोपड़ी बनाई। उसमें संन्यासी ध्यान करते और ज्योतिर्लिंग के दर्शन के लिए आने जाने वालों को उपदेश देते दिखाई देते हैं। धीरे-धीरे वहाँ आठ दस साधक इकट्ठे हो गये हैं। निवास करने लगे हैं और संन्यासी के सान्निध्य में साधना करने लगे हैं।

'अभिषेक संपन्न हुआ महात्मन,' उसी पुजारी की आवाज सुनाई दी और आचार्यश्री उस दृश्य से वापस लौटे। संन्यासी के साथ तादात्म्य इतना जुड़ गया था कि उन्हें अपने आप में लौटने में कुछ समय लगा। अभिषेक के बाद प्रसाद आदि लेकर वे वापस लौटे। उनके मन में रामेश्वर का इतिहास जानने की इच्छा प्रबल हो उठी थी। वे मंदिर के कार्यालय में जाने, पुस्तकालय खंगालने या अधिकारी विद्वानों से मिलने के बारे में विचार करने लगे। इस संकल्प विकल्प के साथ वे मंदिर की परिक्रमा करने लगे।'

परिक्रमा मार्ग के दांई ओर पर्वतवाहिनी का मंदिर है। यहां पार्वती की भव्य प्रतिमा स्थित है। पर्वतवाहिनी पार्वती का ही दूसरा नाम है। मंदिर के पास ही एक शयन मंदिर है। निशीथ आरती के बाद भगवान रामेश्वर की उत्सव मूर्ति यहाँ लाई जाती है। आचार्यश्री जब इस मंदिर में दर्शन कर रहे थे तो वहाँ के अर्चक से अनायास ही चर्चा चल पड़ी। मंदिर के प्रारंभिक इतिहास के बारे में पूछा। उसने बताया कि शास्त्रों में रामेश्वर ज्योतिर्लिंग के वन में ही मिलने का उल्लेख आता है। वह खुले आकाश के नीचे स्थित था। किसी संत ने वहाँ सबसे पहले छाया की। उसके दसियों या सैकड़ों साल बाद राजाओं, नरेशों ने मंदिर बनवाया। कालांतर में वह मंदिर विस्तार लेता गया।

रामझरोखा में आहुतियां

रामेश्वरम का यज्ञ तैयारियों और व्यवस्थाओं की दृष्टि से समग्र था। आचार्यश्री की यात्रा के बाद और भी लोग ज्वालादत्त के साथ आ गये थे। इनमें एक राम झरोखा से आए एक वैष्णव साधु राघवदास भी थे। राघवदास बल के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उपासक थे—उनके आराध्य हनुमान थे। उनके गाये भजनों में हनुमान को कई बार राम से भी श्रेष्ठ निरूपित किया जाता था। दुनिया भगवान राम के बिना नहीं चलती और राम को अगर कोई पहल करना हो तो वे हनुमान को ही आगे करते हैं। रामेश्वर मंदिर के कुछ पुरोहित साधु राघवदास की आलोचना करते थे। साधु बाबा को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था।

इन्हीं राघवदास का मानना था कि गायत्री हनुमान की प्रथम आराध्य थी। उन्हीं के अनुग्रह से हनुमान को अपने इष्ट राम का पता चला था। जब उन्हें पता चला कि रामेश्वरम में गायत्री महायज्ञ की योजना बन रही है तो वे आगे आये। उन्होंने कहा कि राम का बोध कराने वाली गायत्री का अग्निहोत्र आराधन उन्हीं के स्थान पर होना चाहिए। जिस जगह यज्ञ हो रहा था वह राम झरोखा कहा जाता है। राम झरोखा हनुमान का स्थान माना जाता है। पुराणों के अनुसार कलियुग से पहले यहां एक विशाल पर्वत था। गंधमादन। पुराण प्रसिद्ध इस पर्वत पर देवता निवास करते थे। महर्षि अगस्त्य ने यहीं अपना आश्रम बनाया हुआ था।

पौराणिक उल्लेखों के अनुसार कलियुग शुरू हुआ तो गंधमादन पर्वत पाताल में चला गया। प्रकृति विज्ञानियों के अनुसार किसी जमाने में यहाँ भूकंप आया और पर्वत छिन्न-भिन्न हो गया। इस क्षेत्र में आये भौगौलिक परिवर्तन के कारण सिर्फ टीला ही रह गया। रामायण और अन्य रामकथाओं में इसी पर्वत पर राम की सेनाओं के इकट्ठे होने का उल्लेख है। अब तो उस जगह एक मामूली टीला है। उस पर ऊपर तक जाने की सीढ़ियां बनी हैं। मंदिर में भगवान के चरण चिह्न हैं। कहते हैं कि इसी टीले पर चढ़ कर हनुमान ने लंका की दूरी का अनुमान लगाया था। लंका आक्रमण के समय भगवान ने यहीं बैठकर अपने सेनापतियों से लंका पर आक्रमण की योजना बनाई थी।

साधु राघवदास के पास आठ दस शिष्यों का अच्छा समूह था। राम झरोखे में यज्ञ का निर्धारण होने के बाद वह पूरी टीम काम में लग गई। रामेश्वर के और साधक पहले से ही काम कर रहे थे। मिले जुले प्रयत्नों से गायत्री महायज्ञ संपन्न हो गया। तीन दिन के कार्यक्रम में दो ढाई हजार लोगों की संख्या ज्यादा नहीं होती। संख्या कम ही थी लेकिन महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि रामेश्वर के विद्वज्जन अपनी तरह से अलग ही ढंग का और आक्रामक सा विरोध कर रहे थे।

स्त्रियों और शूद्रों को गायत्री का अधिकार देने, मंत्र का जोर से उच्चारण करने और स्थानीय पंडितों को यज्ञ में नहीं बुलाने जैसे मुद्दे भी शामिल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

थे। इन बातों का यथोचित समाधान कर दिया गया। पंडितों ने इस बात पर बवाल मचाया कि उन्हें राम को भी आरोपों के घेरे में खड़ा करने वाला बता दिया। यह आरोप लंका विजय के बाद भगवान के वापस आने और ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त होने के लिए प्रायश्चित करने की व्यवस्था को लेकर था। व्यवस्था उस समय के आचार्यों ने ही दी थी।

आचार्यश्री ने अपनी ओर से लाख सफाई दी कि वह टिप्पणी वर्तमान आचार्यों को लेकर नहीं थी। उस समय के शास्त्रीय उल्लेखों का ही वर्णन किया था। पंडितों ने इस तर्क को नहीं माना था। वे कह रहे थे कि आचार्यश्री अपनी बात के लिए अफसोस जताएं तभी कोई रास्ता निकल सकता है। वरना वे महायज्ञ में बाधा उत्पन्न करेंगे।

इन संवादों का जिक्र चलने पर साधु राघवदास ने चुटकी ली। कहा कि उस जमाने में भी यहाँ के पंडितों ने एक धर्मसम्मत काम को पाप बताया था। अब एक ऊटपटांग बहाने वे यज्ञ का विरोध कर रहे हैं। आचरण तो उनका वही है।

कहते कहते बाबा आवेश में आ गये। उन्होंने आचार्यश्री से कहा, 'आप परवाह मत कीजिए। ये लोग यज्ञ में विघ्न उत्पन्न करेंगे तो हमारी सेना उन्हें देख लेगी। हनुमान बाबा के यह सेवक किस दिन काम आएंगे।'

आचार्यश्री ने कहा कि हमें झगड़ा नहीं करना है। बातचीत से ही समाधान निकल आए तो अच्छा। वे पंडितों की शर्त के अनुसार अपनी नहीं कही हुई बातों के लिए क्षोभ व्यक्त करने को तैयार हो गये थे। आपत्ति करने वालों को इस तरह का संदेश भिजवाया गया। उन्हें लगा कि दबाव काम कर रहा है। अगली शर्त यह जोड़ दी कि यज्ञ का संचालन भी हमें ही सौंपा जाए। जिस तरह हम लोग कहें, उसी के अनुसार व्यवस्था की जाए।

आचार्यश्री को लगा कि क्षोभ जताने से समाधान नहीं होने वाला। स्थानीय पंडित पूरे आयोजन पर ही अधिकार करना चाहते हैं। यह कहें कि उसे अपने निहित स्वार्थ के लिए उपयोग करना चाहते हैं। उन्होंने उत्तर भिजवाया कि अब कोई समझौता नहीं होगा।

पंडितों ने धमकी दी कि वे यज्ञ का सक्रिय विरोध करेंगे। साधु राघवदास के शिष्यों ने अपनी तैयारी की खबर भिजवा दी थी। यह संकेत कर दिया था कि किसी तरह का उपद्रव किया तो उसका प्रतिकार होगा। पंडितों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पास मुकाबला करने की सामर्थ्य नहीं थी। उन्हें राघवदास के चेलों के बारे में अच्छी तरह मालूम था कि मुकाबला हुआ तो वे लोग उन्नीस ही ठहरेंगे। उन्होंने दूसरा रास्ता अपनाया। यज्ञस्थल के बाहर सत्याग्रह की धमकी दी। कहा कि जितने दिन यज्ञ चलेगा उतने दिन तक आयोजन स्थल के बाहर धरना देकर बैठेंगे।

कहे अनुसार वे लोग धरना देकर बैठे भी। उस समय साधु राघवदास ने एक विचित्र समाधान निकाला। धरना देने के समय तक उन्होंने कोई पहल नहीं की। विरोध करने वालों ने अपना शामियाना लगा लिया था। उसके नीचे विष्णु स्वरूप शर्मा, बोधलिंगम, रामस्वामी शास्त्री और गौरांगप्रभु ने उपवास शुरु किया। जहाँ ये लोग बैठे थे उसके पीछे बैनर पर लिखा हुआ था, 'शास्त्र विरुद्ध और धर्मविरुद्ध महायज्ञ के आयोजन के विरोध में।'

विरोध के विरोध में

पंडितजनों ने विरोध शुरु किया ही था कि साधु राघवदास के शिष्य आ गये। उन्होंने हाथ से पोस्टर थाम रखे थे। उन पर लिखा था कुछ विद्वानों द्वारा महायज्ञ में विघ्न उपस्थित करने के विरोध में। साथ ही यह अनुरोध भी कि वे आयोजन में शामिल हों। यज्ञ में आने वाले लोग दोनों खेमों में जा रहे थे। राघवदास के खेमें में बैठे लोग सिर्फ यही अनुरोध कर रहे थे कि भगवान का नाम जहाँ भी लिया जा रहा हो धर्मप्रेमियों को उसमें भाग लेना चाहिए। सामने बैठे पंडितजन महायज्ञ में चलें या उसके दोष बताए। दोष बताना है तो उसके लिए भी वहां तो जाना ही पड़ेगा। जो भी गलती होगी हम सुधार लेंगे। वे चले तो सही।

इस खेमें में गये लोग अंध विरोध कर रहे पंडितों तक संदेश पहुँचाने लगे। शुरु में तो लोगों ने संदेश पहुँचाने तक ही सीमित रखा। दोपहर बाद यज्ञ में चलने के लिए अनुरोध सा करने लगे। कोई असर नहीं हुआ तो दबाव भी बनाने लगे। अगले दिन लोगों ने इतना ज्यादा कहा सुना कि दोपहर होने तक विरोध जता रहे पंडित अपना तंबू समेट कर चलते बने।

जिस जगह गायत्री मंत्र के खुल कर उच्चारण करने का विरोध हो रहा था वहाँ बत्तीस लोगों ने दीक्षा ली। आचार्यश्री का मानना था कि दीक्षा मंत्र एक ही है। आरंभ से गायत्री मंत्र का ही उपदेश दिया जाता रहा। इसलिए गायत्री मंत्र को गुरु मंत्र भी कहते हैं। दूसरे संप्रदायों या साधना परंपराओं में अपने-अपने मंत्र देना आरंभ किया। लेकिन गायत्री मंत्र की उपासना फिर भी सभी धाराओं में जारी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रही। उपनयन या यज्ञोपवीत के समय आचार्य गायत्री मंत्र की ही दीक्षा देता है। आचार्यश्री ने यज्ञ में इस बात को कई उदाहरणों और प्रमाणों से समझाया।

आयोजन तीन दिन चला। तीनों दिन रामेश्वरम के स्थानीय लोग आये। तीर्थयात्री भी आये गये। लेकिन यज्ञ की असल भागीदारी तो स्थानीय लोगों की ही रही। कई तो ऐसे थे जिनका उपनयन संस्कार यथा समय हो गया था, लेकिन उन्होंने गायत्री मंत्र की दीक्षा के उद्देश्य से एक बार फिर संस्कार कराया।

उस दिन महायज्ञ की पूर्णाहुति थी। आहुतियां पूरी हो चुकी थी। कर्मकाण्ड भी संपन्न हो गया। उसके बाद स्वयंसेवक यज्ञशाला में बिखरा हुआ सामान समेटने लगे थे। इन सब बातों से विरत हुए से आचार्यश्री अपने आसन पर बैठे थे। वे समूह की ओर निहार रहे थे। बैठे-बैठे उन्हें विचित्र अनुभूति हुई। अनुभूति के अलावा शास्त्रों में पढ़े हुए प्रसंग की अनुस्मृति भी कह सकते हैं। लगा कि भगवान राम अपनी जीती हुई सेना के साथ वापस लौट रहे हैं। यह बोध भी बराबर बना हुआ है कि भगवान राम, लक्ष्मण और सीता सहित हनुमान आदि पुष्पक विमान से वापस लौटे थे। लेकिन मन ही तो था। अपने आप दृश्यों का संयोजन कर रहा था।

वानर यूथपतियों और सैनिकों की वापसी के साथ प्रतीत हो रहा था कि राम अपने दरबार (लक्ष्मण, सीता और हनुमान) सहित गंधमादन पर्वत पर आये हुए हैं। वे महायज्ञ के बारे में जिज्ञासा कर रहे हैं। आचार्यश्री उन जिज्ञासाओं के उत्तर दे रहे हैं। भावबोध की यह स्थिति देर तक बनी रहती है। फिर मन में एक प्रेरणा उभर रही है। प्रेरणा कहें या विश्वास कि अभी मंजिल बहुत दूर है। श्रीराम को भी आसुरी आतंक समाप्त करने के लिए चौदह वर्ष लगे थे। इस बीच उन्हें कितनी ही आपदाओं विपदाओं का सामना करना पड़ा था।

इन विचारों या भावों को उठते उतरते देख आचार्यश्री देर तक बैठे रहे। ज्वालादत्त ने पास आकर कहा कि गुरुदेव यहाँ का काम सिमट चुका है अब हम वापस रामेश्वर चले। दोनों में यह वार्त्तालाप चल रहा था कि साधु राघवदास भी वहां आ गये। कागजों का एक बड़ा पुलिंदा वे हाथ में लिए हुए थे। उन्होंने कहा कि ये संकल्प पत्र हैं। यज्ञ में आने वालों ने इनमें अपनी भावनाएँ लिखी हैं।

आचार्यश्री ने पूछा, 'इन्हें पढ़ कर देखा है लोगों ने किस तरह की बातें कही हैं।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बाबा ने कहा, 'सारे पत्र तो नहीं देखे। कुछ ही पढ़े हैं। लोगों ने अपनी तकलीफें लिखी हैं। मनौती मानी है। कुछ ने अपने यहाँ भी इस तरह के कार्यक्रम रखने की इच्छा जताई है।'

आचार्यश्री ने कहा, 'हमारे जाने के बाद आप यहां गायत्री के प्रचार का काम देखते रहें। कोई कठिनाई हो और स्वयं उसका निराकरण नहीं कर सकें तो बताइएगा।'

साधु राघवदास ने अपना दांया हाथ आगे बढ़ाया। यह संकेत कलावा बांधने के लिए था। इस बात का सूचक कि जो दायित्व सौंपा गया है, उसे पूरा करने के लिए स्वयं को वचनबद्ध कर लिया है। यह जिम्मेदारी ओढ़ता हूँ और पूरी करूंगा। आचार्यश्री ने बाबा के हाथों में कलावा बांधा और माथे पर तिलक लगाया। साधु आचार्यश्री को प्रणाम करने के लिए झुके। आचार्यश्री उस समय ज्वालादत्त की ओर देख रहे थे। उनके चेहरे पर असंतोष के भाव दिखाई दे रहे थे। उन्हें राघवदास को यह जिम्मेदारी सौंपने पर जैसे शिकायत थी। आचार्यश्री ने उनके भावों को ताड़ा और कहा कि आपको मथुरा आना है। वहां आकर बड़ी जिम्मेदारी संभालनी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बारह

संघर्ष और चुनौती

रामेश्वरम का महायज्ञ संपन्न करा कर लौटने के बाद की बात है। गीताप्रेस गोरखपुर के संस्थापक और कल्याण के संपादक हनुमान प्रसाद पोद्दार मथुरा आये हुए थे। वे श्रीकृष्ण जन्मस्थान में प्राय: आया करते थे। इस बार जब आना हुआ तो उन्होंने आचार्यश्री को भी जन्मस्थान में आमंत्रित किया। यह भी कहलवाया कि वे स्वयं भी घियामंडी या तपोभूमि आ सकते हैं। श्रीकृष्ण जन्मस्थान में रास उत्सव चल रहा है। और संत महात्मा भी आये हुए हैं। सबसे मिलना हो जाएगा और संतों में राधाबाबा, बालकृष्णदास जी महाराज, ठाकुर जी, गिरिधारी बाबा और स्वामी अखंडानंद जी आदि थे। आचार्यश्री ने पोद्दारजी का निमंत्रण स्वीकार किया और यथासमय उनके पास पहुँचे।

पोद्दारजी मंदिर के सामने प्रांगण में बैठे थे। सर्दी का अच्छा मौसम था। धूप खिली हुई थी। दोपहर शुरू होने वाली थी पर उस धूप में बैठना सुहा रहा था। आचार्यश्री ने पोद्दारजी को देखते ही हाथ जोड़कर नमस्कार किया। उन पर निगाह पड़ते ही भगवत गीता का संदेश जन-जन तक पहुँचाने वाले गोरखपुर के वह संत उठ खड़े हुए। उन्होंने अपनी मंडली से बाहर आकर आचार्यश्री का स्वागत किया और उनके दोनों हाथ थामकर अपने पास बिठा लिया।

मंडली में और लोग भी बैठे थे। दो तीन संतों के अलावा बाकी श्रद्धालुजन थे। किसी आध्यात्मिक विषय पर चर्चा चल रही थी। पोद्दारजी ने वहाँ बैठे श्रद्धालुओं को आचार्यश्री का परिचय कराया। स्थानीय लोगों ने अभिवादन करते हुए यह भी कहा कि वे आचार्यश्री को भलीभांति जानते हैं। उन्होंने गायत्री और यज्ञ को घर-घर पहुँचाने के लिए अथक प्रयत्न किये हैं।

श्रद्धालुओं और जिज्ञासुओं में कुछ देर तक चर्चा चलती रही। पंद्रह बीस मिनट में वह सत्संग चर्चा पूरी हो गई। लोग उठ कर चले गये। फिर वहाँ पोद्दारजी, आचार्यश्री और बालकृष्णदास महाराज ही रह गये। तीनों में चर्चा चल पड़ी। इन्हीं में एक विषय स्त्रियों और शूद्रों को भी गायत्री मंत्र का अधिकार भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

था। पोद्दार जी ने कहा, 'आपके इस कार्यक्रम से संत जन कुछ खिन्न हैं। जहां तक हरिजनों या शूद्रों को भगवान की भक्ति से वंचित करने का अधिकार है, हमारे किसी भी शास्त्र ने इसका निषेध नहीं किया है, न ही किसी संत ने मना किया है।'

आचार्यश्री ने कहा, 'हमारा मानना है कि श्रुति में स्त्रियों या शूद्रों को गायत्री मंत्र के अधिकार से भी वंचित नहीं किया है। मध्यकाल में लोगों पर तरह तरह के प्रतिबंध लगाये गये। उन्हीं दिनों इन दो वर्गों के खिलाफ [illegible] का विष भी फैला।'

पोद्दार जी ने कहा, 'शूद्रों या स्त्रियों के प्रति घृणा और अत्याचार का भाव कभी नहीं रहा। उन्हें हमेशा अपने परिवार का अंग समझा जाता रहा है। स्त्रियों के लिए तो भगवान तक ने भी कहा है कि जहां स्त्रियों का आदर होता है, वहां देवता निवास करते हैं। अत्यंजों को भी भगवान के शरीर का ही एक अंग माना गया है। शरीर के सभी अंगों का समान महत्त्व है। सभी की व्यवस्था की जाती है लेकिन उन अंगों के प्रति व्यवहार में थोड़ा भेद तो रहता ही है। हाथों से आप भगवान के मंदिर में दीपक जला सकते हैं, लेकिन अपने पैरों से किसी भी प्रतिमा, प्रतीक या पूजा की वस्तु का स्पर्श नहीं कराया जाता।'

आचार्य श्री ने कहा, 'हम वर्ण व्यवस्था को मानते हैं लेकिन शुद्ध, सात्विक रूप में। शास्त्रों में आचार को प्रथम धर्म माना है। उसी आधार पर वर्णों का निर्धारण किया गया है।'

विषय लंबा खिंचने लगा तो आचार्यश्री ने कहा कि आप एक और ढंग से सोचें। आने वाले समय में दुनिया छोटी और करीब आने वाली है। लोग तेज गति से चलने वाले वाहनों में यात्रा करेंगे, यहां से वहाँ जाएंगे, संचार माध्यमों का विस्तार होगा। हम स्वेच्छा से इस परिवर्त्तन या सुधार को नहीं स्वीकारेंगे तो भी बदलाव तो आएगा ही। अच्छा यही है कि उस परिवर्त्तन को स्वीकार किया जाए।

पोद्दार जी को साबरमती आश्रम में महात्मा गांधी से हुई भेंट याद हो आई। वहां चर्चा मुख्य रूप से हरिजन उद्धार पर ही केन्द्रित थी। उन्होंने गांधी जी से कहा था, 'बापू हिंदू समाज वर्ण व्यवस्था पर टिका हुआ है। आप जिस तरह आंदोलन चला रहे हैं, उसमें वर्ण व्यवस्था लड़खड़ा जाएगी।'

गांधीजी ने कहा था कि वे वर्णव्यवस्था के विरोधी नहीं हैं। जोर देकर वे बोले थे कि 'मैं वर्ण व्यवस्था को मानता हूँ। जो समाज या सभ्यताएँ इस व्यवस्था को चार वर्णों की तरह नहीं मानती, वे दूसरे रूप में मानती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बुद्धिजीवी, शासक, व्यापारी और मजदूर। हिंदू धर्म के मूल सिद्धांतों में मेरी आस्था अगाध है। मैं उनका उल्लंघन नहीं करता। मेरा आशय सिर्फ छुआछूत और भेदभाव मिटाना है।'

गीताप्रेस के संस्थापक बापू की इस दलील से सहमत नहीं हुए थे। यहाँ आचार्यश्री से भी मतभेद रहे। बातों ही बातों में उन्होंने कह दिया था कि थोड़ा सा संशोधन कर दिया जाए तो गायत्री महाविज्ञान को अपने यहाँ से यानी गीताप्रेस से प्रकाशित करना चाहेंगे। आचार्यश्री ने विनय के साथ मना करते हुए कहा, कि भविष्य में आप पर बड़ी जिम्मेदारी आने वाली है। गीता और रामायण के प्रति जनमानस में जो भूख जागेगी, उसी में आपके दिन रात एक हो जाएंगे।

असहमति लेकिन अभिवादन

संस्थान का काम कुछ इस दिशा में बढ़ रहा था। आचार्यश्री की बात सुन कर पोद्दार जी कुछ गदगद हुए। फिर आगे की योजनाओं पर चर्चा चल पड़ी। आचार्यश्री ने बताया कि अगले साल जून में गायत्री परिवार सम्मेलन करने का इरादा है। तैयारियां चल रही हैं। देश भर से प्रतिनिधि आएंगे। उस सम्मेलन में तय किया जाएगा कि समाज सुधार या आध्यात्मिकता को बढ़ावा देने के लिए क्या कदम उठाये जाएँ? अभी जगह-जगह गायत्री यज्ञों के आयोजन चल रहे हैं।

पोद्दारजी ने सुनकर प्रसन्नता व्यक्त की। वे गायत्री और यज्ञ के सार्वजनिक प्रचार से सहमत नहीं थे। फिर भी उन्होंने खुले मन से स्वीकार किया कि एक बड़ा काम हो रहा है। उन्होंने कहा भी, 'स्वामी दयानंद जी ने जिस तरह मूर्तिपूजा और तीर्थ यात्रा आदि का खंडन किया। उससे हम सहमत नही हैं। लेकिन उन्होंने वैदिक धर्म की रक्षा के लिए जो काम किया, उसके कारण वह वंदनीय हैं। प्राचीन काल में भी कई साधना संप्रदाय एक दूसरे के विरोध में थे। उनकी असहमतियां अथवा मतभेद अपनी जगह हैं लेकिन वे सभी हिंदूधर्म के उपवन का ही एक हिस्सा हैं। हम आपके उद्देश्य की सराहना करते हैं। हमारे योग्य जो भी सेवा हो बताइगा।'

बातचीत पूरी होते होते आचार्यश्री के मन में एक विचार आया था। पोद्दारजी जब स्वामी दयानंद और उनके द्वारा वेदों के उद्धार की चर्चा कर रहे थे तो यह विचार बिजली की तरह कौंधा था। आर्ष साहित्य के बारे में उनके मन में गायत्री तपोभूमि की स्थापना के समय से ही उथल पुथल मची हुई थी। वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वेद उपनिषदों के लोकोपयोगी संस्करण प्रकाशित करना या कराना चाहते थे। प्रकाशन का उद्देश्य अपनी संस्कृति, परंपरा और तत्त्वज्ञान से लोगों को परिचित कराना था। उस समय आर्ष साहित्य जिस रूप में उपलब्ध था उसे संपन्न लोग ही खरीद सकते थे। व्याख्या और अनुवाद की दृष्टि से वे इतने कठिन थे कि विशिष्ट विद्वान ही समझ पाए।

पोद्दार जी के पास से लौटते हुए उनके मन में विचार आया था कि उनसे इस दिशा में पहल करने के लिए कहें। उन्हें अपने प्रकाशन तंत्र के जरिए आर्ष साहित्य को जनसुलभ कराने का सुझाव दें। यह बात आगे कभी यथा अवसर करने का निश्चय करते हुए वे गायत्री परिवार सम्मेलन के बारे में सोचने लगे। इसे होने में छह सात महीने ही बाकी थे। आर्ष साहित्य को जनसुलभ कराने के पीछे एक मंतव्य यह भी था कि लोग अपने शास्त्रों और संदर्भों के संपर्क में आएगे तो वे निहित स्वार्थी धर्मध्वजियों के बहकावे में नहीं आएंगे।

सम्मेलन से पहले कई जगह छोटे-बड़े यज्ञ आयोजन हुए। इनमें ज्यादातर जगहों पर बाधाओं का सामना करना पड़ा। उनसे निपटने के लिए जहां जैसी स्थितियां हुई, वैसे उपाय करने पड़े। मध्य प्रदेश में सतना के पास एक कस्बा है बागौद। गायत्री परिवार सम्मेलन की तैयारियों के दौरान वहां के कार्यकर्त्ता डॉ० रतन सक्सेना ने नौ कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया। गैर ब्राह्मणों के गायत्री महायज्ञ में सम्मिलित करने का यहाँ भी विरोध हुआ। विरोध इतना जबर्दस्त था कि शामियाने वालों ने भी करार तोड़ दिया और सही के पैसे वापस कर दिए।

वहाँ के पंडितों, पुरोहितों ने लोगों को बुरी तरह बहकाया था कि कोई साथ आने के लिए तैयार ही नहीं हुआ। उन्होंने समझाया था कि गायत्री ब्राह्मणों की देवी है, ब्रह्मशक्ति है। दूसरे वर्ण के लोग उसका जप नहीं कर सकते। करेंगे तो विनाश हो जाएगा। गायत्री यज्ञ में स्त्रियों को भी भाग नहीं लेना चाहिए। यह महापाप है। यहाँ होने वाले यज्ञ में शामिल की जाएगी। इन पापों का दंड पूरे गांव को भुगतना पड़ेगा।

ब्राह्मणशाही की इस मुहिम का जवाब गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता अपनी तरह से दे रहे थे। वेदशास्त्र, प्राचीन परंपरा, स्त्री-पुरुष सभी ईश्वर की संतान हैं जैसे तर्कों से वे अपनी बात कह रहे थे। लोगों को ये बातें समझ भी आ रही थी और वे रुढ़िवादियों से तर्क भी करने लगते। उस वर्ग के लोगों ने देखा कि लोग वाद-विवाद करने लगे हैं तो उन्होंने पैतरा बदला। वे अपनी बात को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तर्क और प्रमाण से सिद्ध करने के बजाय जिद पर आ गए। लोगों को डराने लगे कि अगर उनकी बात नहीं मानी गई तो वे गांव में होने वाले किसी भी धार्मिक कार्यक्रम में हिस्सा नहीं लेंगे। व्याह, शादी, नामकरण, उपनयन, और कथा भागवत जैसे कर्मकांड अनुष्ठान नहीं कराएंगे। ग्राम समाज से किसी तरह का संबंध नहीं रखेंगे।

मंदिर, पूजापाठ, कथा संस्कार और पर्व त्यौहारों में शामिल नहीं होने की धमकी ने असर किया। यज्ञ की तैयारियों के ठीक कुछ समय पहले लोगों ने अपना सहयोग वापस ले लिया।

बहिष्कार के बावजूद

डॉ० रतन और दूसरे कार्यकर्त्ता आचार्यश्री के पास गये। उन्हें सब हाल सुनाया। आचार्यश्री ने कहा कि ये कठिनाइयां तो आनी ही थीं। अपने भीतर साहस जुटाओ और पहल करो। इस मार्ग पर थोड़ी भी सफलता मिली तो बहुत समझना। उसी में संतोष करना। बगौद के कार्यकर्त्ता वापस आ गये। यज्ञ के लिए लोगों ने थोड़े बहुत रुपये जमा किये थे। उन्होंने बाकी सहयोग तो वापस ले लिया, यह दान वापस लेने की बात नहीं सोची। उस रकम में अपने पास से और रुपए मिलाए और कपास की बिनाई करने वाले चरखा मालिकों से जूट की बोरियाँ खरीदीं। ये बोरियां फटी पुरानी हालत में थीं। बांस-बल्ली बेचने वाली टालों से कुछ खंभे और बांस किराए पर लिए। उससे यज्ञशाला के ऊपर छाया की। ईंट, गारा जुटाया। उससे यज्ञकुंड बनाये। तैयारी टूटी फूटी ही थी। आयोजन में लोग भी नहीं आ रहे थे।

आचार्यश्री के पहुँचने तक डॉ० रतन सक्सेना और उनके परिवार के लोग ही आहुति देने वालों की सूची में थे। नौ कुंडों पर मुश्किल से बारह पंद्रह लोग बैठे थे। आचार्यश्री और उनके साथ मथुरा से आए शास्त्री जी ने कर्मकांड का संचालन किया। पंद्रह बीस लोगों ने मिलकर यज्ञ कार्य प्रारंभ किया। आहुतियां भले ही कम दी गईं। लेकिन कार्यक्रम तीनों दिन चला। आचार्यश्री ने व्यवस्था दी कि शेष आहुतियाँ अगले आयोजनों में पूरी कर ली जाए।

पहले दिन गांव वालों ने यज्ञ का पूरी तरह बहिष्कार किया। आयोजन स्थल की तरफ किसी ने देखा तक नहीं। बिना माइक के मंत्रोच्चार हो रहा था। किसी को सुनाई नहीं दिया। यज्ञ में पड़ रही आहुतियों और उनसे उठने वाली सुगंध ने लोगों का ध्यान खींचा। लेकिन वे पंडितों के डर से बाहर नहीं निकले।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दूसरे दिन बच्चे और किशोर यज्ञशाला के आसपास आए। वे सिर्फ कौतूहलवश आये थे। बाद में गांव के कुछ सयाने लोग भी बाहर निकले। उन्होंने यज्ञ दूर से ही देखा। उसमें भाग नहीं लिया। यज्ञ का संचालन कर रहे शास्त्रीजी ने कहा कि जो लोग यज्ञशाला की परिक्रमा कर लेंगे उन्हें भी आहुति देने का पुण्य मिलेगा। चार-पांच लोग यह बात सुन कर आगे आये। उन्होंने यज्ञशाला की परिक्रमा की। इस आयोजन में प्रवचन आदि कार्यक्रम नहीं हो पाए। बागौद के कार्यकर्त्ता फिर भी प्रफुल्लित थे। उन्हें प्रबल विरोध और अवरोध में भी टिके रहने और कार्यक्रम संपन्न कर लेने का संतोष था।

उत्तर प्रदेश के खीरी, लखीमपुर में अलग तरह की चुनौती का सामना करना पड़ा। खीरी लखीमपुर जिला मुख्यालय है। वहां से सात किलोमीटर दूर एक वन्य क्षेत्र में पांच कुंडीय गायत्री महायज्ञ किया गया। पहले यह आयोजन बस्ती में ही रखा गया था लेकिन स्थानीय लोगों ने बाधाएं खड़ी कीं। जन सामान्य इस आयोजन के विरोध में नहीं था, पंडित, पुरोहित किस्म के लोग ही ज्यादा खिलाफ थे। उन्होंने आयोजन को राजनैतिक रंग देने की कोशिश भी की। कहा कि यज्ञ कराने वाले आचार्यजी कांग्रेसी कार्यकर्त्ता रहे हैं। कांग्रेस हिंदुओं की विरोधी है। हिंदुओं को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए तरह तरह के चक्र चला रही है। हरिजनों का मंदिर प्रवेश, विधवा विवाह, तलाक कानून और अस्पृश्यता निवारण संबंधी प्रयत्नों को तब सवर्णों का एक वर्ग हिन्दू विरोधी मानता था।

उन दिनों लखीमपुर में रामराज्य परिषद जैसे राजनैतिक दल तक सक्रिय थे। उनका असर तो नहीं था लेकिन वे अपने रुढ़िवादी विचारों के कारण चर्चा में जरूर रहते थे। कुछ सवर्णों को अपने पक्ष में तैयार कर लेते थे। उन लोगों के साथ आने की वजह भी उनके रुढ़िवादी आग्रह ही थे। इन सब लोगों ने गायत्री मंत्र और यज्ञ के प्रचार को धर्म विरोधी, धर्म नष्ट करने वाली चाल बताया। उस विरोध के साथ राजनैतिक कारण और जुड़ गये। लोगों ने बस्ती में आयोजन के लिए जगह उपलब्ध कराने में भी बाधा खड़ी की।

बस्ती में कहीं जगह नहीं मिली तो संकल्प करने वाले प्रतिनिधि चंदगीराम ने अपने खेत में यज्ञ का निश्चय किया। वहीं तैयारियां की-व्यवस्था हुई। पांच कुंड बनाये गये। उस पर राम परिवार के सदस्य ही बैठे। आचार्यश्री लखीमपुर आये तो उन्हें यज्ञस्थल तक ले जाने के लिए वाहन की व्यवस्था नहीं हो सकीं। चंदगीराम ने खेतीबाड़ी के काम आने वाली बैलगाड़ी में ही गादी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बिछाई। तकिया लगाया और जो साधन थे, उन्हीं में सुविधा बनाने की कोशिश की। आचार्यश्री बैलगाड़ी में बैठकर यज्ञस्थल तक गये। वहाँ स्वयं यज्ञ का संचालन किया और कार्यकर्त्ताओं या कार्यकर्त्ता के परिवार की पीठ थपथपाई।

इसी तरह की एक और कठिनाई फतेहपुर जिले के एक गांव महिपुर में भी आई थी। लेकिन वहां विरोध ज्यादा प्रबल नहीं था। साधनों की कमी आ रही थी। चांदपुर का नजदीकी रेलवे स्टेशन बिंदकी तीस किलोमीटर दूर पड़ता था। आचार्यश्री को वहाँ से यज्ञस्थल तक लाने के लिए एक जीप की व्यवस्था की गई। लेकिन जीप खराब हो गई। स्टेशन पर उसे ठीक करने का कोई उपाय नहीं बन पाया। आयोजकों के पास साधनों की बेहद कमी थी। तत्काल वे बैलगाड़ी का ही इंतजाम कर पाये और आचार्यश्री उसी में बैठ कर आयोजन स्थल तक पहुँच पाये।

सम्मेलन की तैयारी

अखंड ज्योति कार्यालय में काम कर रहे दीनदयाल ने उस दिन बारह सौ लोगों के नाम पतों की सूची लाकर सामने रखी। गायत्री परिवार सम्मेलन में बुलाये जाने वाले कार्यकर्त्ताओं के बारे में तय किया जाना था। बारह सौ लोगों की सूची में प्रत्येक व्यक्ति के सामने उसके कृतित्व का विवरण भी लिखा था। कृतित्व में आंदोलन से जुड़े होने की अवधि और अपने क्षेत्र में गायत्री परिवार के लिए किए कामों का ब्यौरा भी था। इन विवरणों में कराये गये यज्ञ, सत्कार्य, पर्व, त्यौहार और समाज सुधार के कार्यक्रम भी शामिल थे।

आचार्यश्री ने सूची को बारीकी से देखा। देखने के बाद उन्होंने दीनदयाल को बुलाया और कहा कि इन कार्यकर्त्ताओं के परिचय पत्र भी निकालें। परिचय पत्र में उन लोगों के घर परिवार, व्यावसायिक जीवन और साधना उपासना की जानकारी भी थी। आचार्यश्री ने सरसरी तौर पर उन ब्यौरों को देखा और मार्कंडेय मुनि को बुलवाया। वे गायत्री तपोभूमि में रहते थे। उन्हें बुला कर दीनदयाल और दो तीन कार्यकर्त्ताओं को अपने सामने बिठाया।

चार पांच लोगों की इस वार्ता में माताजी भी आमंत्रित की गईं। आचार्यश्री कहने लगे कि हमें गायत्री परिवार सम्मेलन में सधे और तपे हुए कार्यकर्त्ताओं को बुलाना है। एक सूची यह है। सौ दो सौ लोगों के नाम और जुड़ सकते हैं। इन सभी कार्यकर्त्ताओं को पत्र लिखे जाएं और उनकी साधना उपासना के बारे में पूछा जाए। सम्मेलन में आमंत्रित परिजनों की एक मुख्य कसौटी यह भी होगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

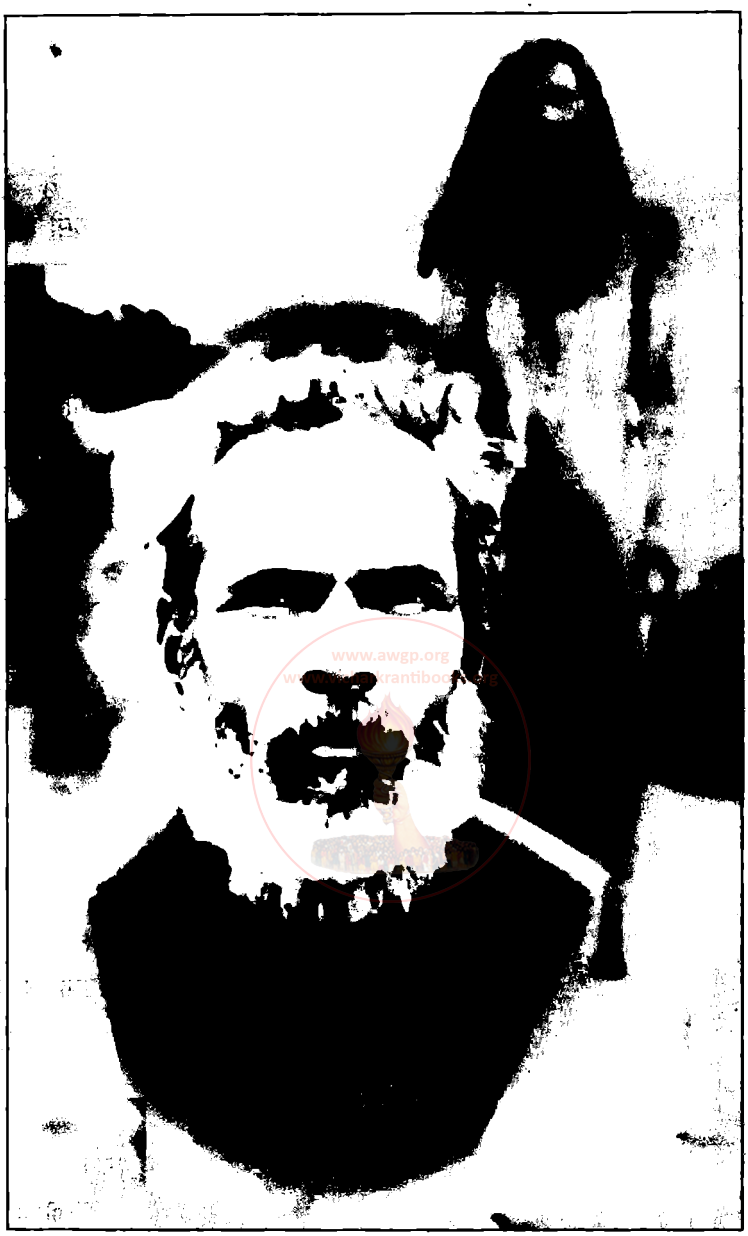

सूक्ष्म शरीरधारी गुरुसत्ता के सान्निध्य में आचार्यश्री

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

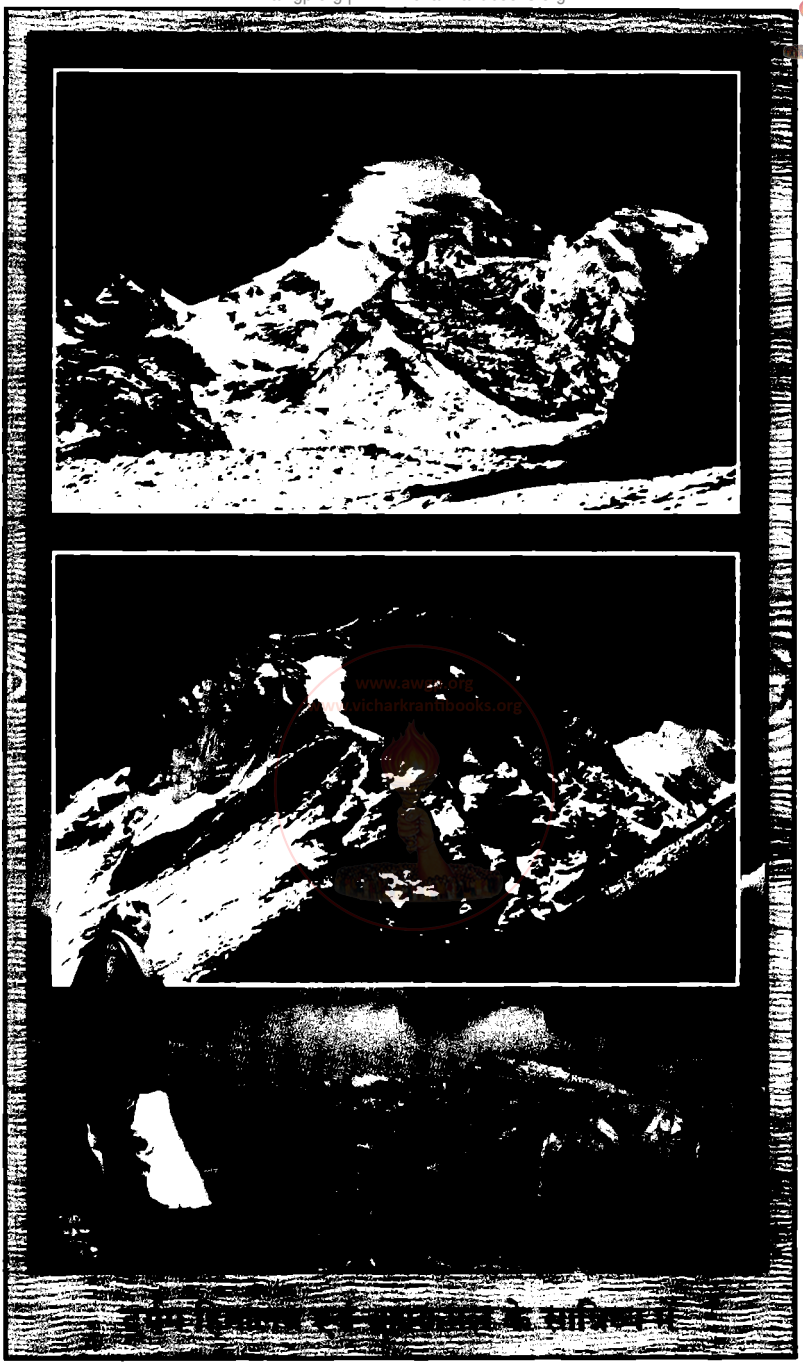

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुनसान के सहचर आचार्यश्री

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपनी एकान्त तप-साधना में निरत आचार्यश्री

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मार्कंडेय ने कहा, 'हमारे कार्यकर्त्ता उपासक भी है साहब। सभी परिजन नियमित गायत्री उपासना भी करते हैं। जो सूची तैयार है और आप जिन लोगों के नाम शामिल करना चाहते हैं, उन्हें भी पत्र लिखवा दें।'

आचार्यश्री ने कहा, 'सामान्य और नियमित उपासना करने वालों की संख्या हजारों में होगी। विवरण आने के बाद उनकी आंतरिक गहराई को पकड़ा जा सकेगा।' कहते कहते आचार्यश्री रुक गए। उनका ध्यान माताजी की ओर चला गया था। यह संवाद सुन कर उन्हें हंसी आ गई थी। हंसी की आवाज नहीं आई। उनका चेहरा देख कर अनुभव किया जा सकता था जैसे वे संवाद की नाटकीयता पर हंस रही हैं।

आचार्यश्री ने उस हंसी को समझा और कहा कि आंतरिक स्थिति को जानने के लिए हमें पत्राचार की आवश्यकता नहीं है। फिर भी एक औपचारिकता तो बरतनी ही है। अपने संगी साथियों को संगठन की बारीकियां समझानी हों तो ये औपचारिकताएं भी पूरी करनी होंगी। आध्यात्मिक संगठन का काम बाहरी सक्रियता पर ही निर्भर नहीं करता। उसके लिए आंतरिक अनुशासन और आत्मिक संतुलन भी चाहिए।

आमंत्रित कार्यकर्त्ताओं को लिखे जाने वाले पत्र का मजमून लिखाने के साथ वह बैठक पूरी हुई। पत्र में पूछा गया था कि उन लोगों ने कितने अनुष्ठान किए हैं, दोनों नवरात्रियों में कब से व्रत उपवास और विशिष्ट साधना कर रहे हैं, इन साधनाओं में उन्हें कोई विशेष आध्यात्मिक अनुभूति हुई है क्या? उस अनुभूति का विवरण भी मंगाया गया था। आचार्यश्री का कहना था कि इन विवरणों के बाद साधकों की आंतरिक स्थिति का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है। आसानी से लगाने का अर्थ सम्मेलन की व्यवस्था में लगे केन्द्रीय कार्यकर्त्ता, उनके व्यवहार, उनकी रुचि और क्षमता के बारे में स्पष्ट हो सकेंगे। सम्मेलन छह दिन तक चलना था। आचार्यश्री के अनुसार इस अवधि में कराये गये अभ्यास परिवार की भावी संभावनाएँ रचेंगे।

भागो नहीं निभाओ

गायत्री परिवार सम्मेलन की तिथियां करीब आ रही थीं। महीना भर रहा होगा कि बिलासपुर से इक्कीस वर्ष का एक युवक तपोभूमि आया। सुबह का वक्त रहा होगा। प्रबंधकों से अनुमति लेकर वह आश्रम में ठहर गया। उसने अपना मंतव्य नहीं बताया। आचार्यश्री उस दिन कुछ देर से आए। सम्मेलन की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तैयारियों में पिछली रात साढ़े बारह बज गये थे। सुबह थोड़ा सा विलंब हुआ। जब वे आये तब यज्ञ पूर्णाहुति चल रही थी। आरती और जयघोष के बाद प्रणाम आदि का क्रम चला। नए आये परिजनों ने अपना परिचय दिया और आने का प्रयोजन बताया। उसी क्रम में युवक की बारी आई तो उसने कहा कि सबके सामने नहीं बताएगा। अकेले में अपनी बात कहेगा।

आचार्यश्री ने युवक से कुछ देर रुकने के लिए कहा और मंदिर के प्रांगण में दूसरे लोगों से मिलने लगे। पचीस तीस मिनट में सभी आगंतुक मिल लिए तो उस युवक को लेकर आचार्यश्री परामर्श कक्ष में गये। वहां उसके कंधे पर हाथ रखा और कुशल क्षेम पूछने लगे। युवक का नाम जानकी लाल था। उसने बी०काम० पास कर लिया था। जिस जमाने में आठवीं दसवीं पास युवक पढ़े लिखे समझे जाते थे, उस जमाने में बी०काम० पास होना बहुत मायने रखता था।

जानकी लाल ने बताया कि दीन दुनिया में उसका मन नहीं लगता है। वह स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानंद, स्वामी शिवानंद, प्रभुदत्त ब्रह्मचारी और स्वामी अखंडानंद की पुस्तकें पढ़ता रहता था। आध्यात्मिक साहित्य का अध्ययन करते हुए उसके मन में वैराग्य का भाव जगा। जानकी लाल के पिता की कपड़ों की दुकान थी। वहाँ मुनीम का काम कर रहे सज्जन से कहा कि वह वृंदावन जाना चाहता है। कुछ दिन वहीं रहेगा।

मुनीम जी जानकी लाल के रुझान से परिचित थे। उन्हें चिंता हुई। इकलौती संतान हैं। वह चला गया तो मालिक घर सूना हो जाएगा। उससे भी बड़ा खतरा यह था कि बाबा लोग उसे फुसला कर न जाने क्या ऐंठते रहेंगे। मुनीम जी 'अखंड ज्योति' पढ़ते रहते थे। वे आचार्यश्री के बारे में जानते भी थे। विश्वास की दृष्टि से वे नारायण स्वामी मत के अनुयायी थे। गायत्री परिवार का सदस्य बनने में उन्हें हिचक थी लेकिन इस परिवार के प्रति उनके मन में लगाव था। उन्होंने जानकी लाल से कहा कि वृंदावन में कोई ठीक जगह या आश्रम मुझे दिखाई नहीं देता। वृंदावन रोड पर गायत्री तपोभूमि है। वहाँ जाना। वहां कुछ ज्ञान ध्यान समझ में आएगा।

सुझाव जानकी लाल को जंच गया। एक दिन वह बिना बताए, चुपचाप बिलासपुर से निकल गया। मथुरा पहुँच गया। आचार्यश्री से मिला और उन्हें सारा वृतांत सुनाया। कहने लगा कि अब कहीं नहीं जाउंगा। यहीं रहूँगा। आचार्यश्री ने उसकी बात सुनकर यज्ञशाला के पास खड़े कार्यकर्त्ता गोविंद को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बुलाया। उससे रोली और कलावा मंगाया। जानकी लाल को कलावा बांधा, तिलक लगाया और तुलसी की माला गले में डाल दी। कहा तुम्हें संन्यासी होने की जरूरत नहीं है। घर में रहकर ही संन्यास की साधना करना। इतना कहने के बाद आचार्यश्री ने पहला निर्देश यह दिया कि अपने घर के लोगों को यहाँ आने की खबर दो। यहाँ जब तक मन करे रहो और फिर घर वापस लौट जाओ। जानकी लाल ने अपने पिता को टेलीग्राम से खबर दी। उसके साथ पत्र भी लिखा।

जानकी लाल ने आचार्यश्री से बातचीत के दौरान यह भी कहा कि तपोभूमि में नरमेध का प्रचलन है। दो साल पहले यहां कुछ कार्यकर्त्ताओं ने आत्मबलि दी थी—अपने आपको समाज सेवा के लिए अर्पित किया था। उसी परंपरा में अपने आपको भी शामिल करना है। आचार्यश्री ने समझाया कि घर से भाग कर समाज सेवा में लगने का हौसला दिखाया तो जा सकता है, निभाया नहीं जा सकता।

उस युवक ने कहा कि घर परिवार के लिए कमाने और जोड़ने में अपना जीवन बर्बाद नहीं करना है। उसे भगवान की सेवा में लगाना है। वह बार-बार इसी तरह के तर्क दिए जा रहा था। घर में रुकना क्षुद्र स्वार्थ है, अपने आपको बांधना है, भगवान के दिए हुए जीवन को कायरता के कारण संकुचित करना है। जानकी लाल ये दलीलें अविराम देता जा रहा था। कहीं रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था। जब वह अपनी बात कह चुका तो आचार्यश्री ने कहा कि जिस घर को चार दीवारी में बंधना और संकुचित होना बताते हो, वहां से चोरों की तरह निकल भागना डरपोक होना नहीं है क्या? घर परिवार अगर संकीर्ण दायरा है तो उसे पूरा कर जिम्मेदारियाँ निभाकर निकलना ही वीरता है।

बात युवक को समझ में आ गई। मैदान जीतना है तो उससे भागना बहादुरी नहीं है। वहाँ रहते हुए लड़ना ही शौर्य है। यह समझ आ गया तो उसी के अंतस से उत्तर आया कि घर परिवार के लोगों को बता कर आश्रम का अतिक्रमण करना है। अतिक्रमण यानी गृहस्थी में प्रवेश किए बिना सीधे वानप्रस्थ में जाना है। यह बात गले उतरने के बाद वह अपने अभिभावकों को सूचना देने के लिए राजी हुआ। सूचना भेज दी गई। घर के लोग यथा समय पहुँच गये। उन्होंने भगवान का शुक्र मनाया कि युवक किन्हीं गलत हाथों में पड़ने से रह गया। मथुरा वृंदावन में किन्हीं साधु बाबाओं से टकरा जाता और उन्हीं के यहां रहने लगता तो क्या होगा?

गायत्री सम्मेलन के लिए ज्यादा तैयारियां नहीं करना पड़ी। जिन लोगों को सम्मेलन में बुलाने के लिए पत्र लिखे थे, उनमें से नब्बे प्रतिशत ने आने की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वीकृति दी। हारी बीमारी या घरेलू समस्याओं के कारण नहीं आ सकने वालों की संख्या चार पांच प्रतिशत से ज्यादा नहीं थी। जिन तिथियों में सम्मेलन होना था। उनसे करीब महीने भर पहले तपोभूमि में सांस्कृतिक शिक्षण शिविर चल रहा था। लगभग पचास कार्यकर्त्ता इस शिविर में भी शामिल थे। इन लोगों ने भी गायत्री परिवार सम्मेलन में सम्मिलित होने का निश्चय कर लिया।

संवत् २०१४ की गायत्री जयंती को गायत्री तपोभूमि में अपूर्व दृश्य उपस्थित हो रहा था। उस दिन पहले से चले आ रहे संस्कृति शिविर का समापन भी था। सम्मेलन आरंभ होने से पहले पिछले शिविर में आये साधकों की विदाई हुई। लगभग सभी शिविरार्थियों ने इसमें शामिल होने की ठान रखी थी। वे रुके भी। नए साधकों के आने के बाद संख्या और बढ़ने लगी। छह जून की रात तक लोगों का आना लगा रहा। करीब पांच सौ कार्यकर्त्ता आ गये। गायत्री जयंती की सुबह चार बजे उठने की घंटी बजी। कार्यकर्त्ता उठ गए और एक घंटे में स्नानादि से निवृत्त होकर मंदिर के सामने प्रांगण में जप आदि के लिए बैठे। उसके बाद आरती और यज्ञ हवन।

यज्ञ हवन पूरा होने के बाद करीब साढ़े आठ बजे यज्ञ सम्मेलन शुरू हुआ। आचार्यश्री और माताजी ने कार्यकर्त्ताओं का अभिवादन किया और उन्हें ही बोलने या चर्चा शुरु करने के लिए कहा। सम्मेलन की कार्रवाई गायत्री मंत्र के जप और आचार्यश्री के प्रारंभिक उद्‌बोधन से हुई थी। उन्होंने अपने संदेश में सम्मेलन का उद्देश्य बताया था। कार्यकर्त्ता इसके बाद बारी-बारी से बोलने लगे।

काम ही जवाब है

रामेश्वरम से आये कार्यकर्त्ता, ज्वालादत्त ने वहां हुए गायत्री महायज्ञ के बाद की रिपोर्ट दी। उसका सार यह था कि आचार्यश्री के सान्निध्य में हुए आयोजन के बाद भी निहित स्वार्थों का विरोध जारी है। गायत्री उपासकों की संख्या बढ़ी है और विरोधियों की भी। विरोधियों की परवाह किए बिना कार्यकर्त्ता अपने काम में लगे हुए हैं। वे विरोधियों को मुंह भी नहीं लगाते और उनकी आलोचनाओं या अवरोधों से प्रभावित भी नहीं होते।

मोरबी से आये कार्यकर्त्ता करुणाशंकर ने पूछा था कि आप इस विरोध का सामना कैसे करते हैं। इस पर ज्वालादत्त ने प्रतिकार का तरीका ठीक इन्हीं शब्दों में बताया था कि किसी को जवाब नहीं देते। उनकी बातों का खंडन भी नहीं करते। सिर्फ अपना काम करते चलते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और कार्यकर्ताओं ने भी इस बारे में पूछा परखा। आचार्यश्री ने ज्वालादत्त के तरीके को सही और व्यावहारिक बताया। सौम्य और सात्विक प्रतिकार एक ही है कि कोई प्रतिकार नहीं किया जाए। उन्होंने एक प्रसंग सुनाया। भगवान बुद्ध का एक भिक्षु असभ्य लोगों की बस्ती में धर्मप्रचार के लिए जाने लगा। बुद्ध ने उसे रोका और पूछा, 'तुम वहां के लोगों को सह नही पाओगे। वे बहुत असभ्य हैं और तुम्हारी बात सुनने की अपेक्षा तुम्हारी हंसी उड़ाएंगे। तुम क्या करोगे।'

भिक्षु ने कहा कि कोई बात नहीं भगवन्। मैं उन्हें धन्यवाद दूंगा कि वे हंसी ही उड़ा रहे हैं, मुझे गालियां तो नहीं दे रहे। बुद्ध ने कहा कि अगर वे गालियां देंगे तो। इस पर भिक्षु ने कहा फिर भी संतोष है कि वे मुझे मार नहीं रहे। बुद्ध ने कहा कि अगर मारने लगे तो? भिक्षु ने फिर भी संतोष जताया कि गनीमत है कि वे मेरी जान नहीं ले रहे। वे मुझे जान से भी मार सकते हैं। बुद्ध ने कहा कि वे तुम्हारी हत्या भी कर सकते हैं। भिक्षु ने उसी धीर गंभीर स्वर में उत्तर दिया कि फिर भी मैं उनका आभारी होउगा कि उन्होंने मुझे रोग, शोक और संतापों से भरे इस संसार से छुटकारा दिला दिया।

आचार्यश्री ने यह प्रसंग सुनाते हुए कहा कि भगवान् बुद्ध ने इस भिक्षु को आशीर्वाद दिया। उसे धर्म प्रचारक की कसौटी पर खरा बताया। हम समाज में परिवर्तन और परिष्कार का कोई भी संदेश लेकर जाते हैं तो उसका विरोध स्वाभाविक है। प्रचलनों के विरुद्ध होने से लोग उपहास करते, हंसी उड़ाते और निंदा मारपीट तक करते हैं। कार्यकर्त्ता को इन सबसे अविचल रहते हुए अपने आंतरिक सत्य पर दृढ़ रहना चाहिए।

आचार्यश्री ने कहा, 'संत एकनाथ का प्रसंग भी कार्यकर्त्ताओं को ध्यान में रखना चाहिए। वे हरिद्वार से गंगाजल लेकर रामेश्वरम के लिए चले। कंधे पर वहंगी उठा रखी थी। रामेश्वरम तक की यात्रा निरापद संपन्न कर ली। वहां पहुंचे तो देखा मंदिर के बाहर एक गधा बेहोश पड़ा हुआ है। लगता था मरने के करीब है। लोग उसे अनदेखा कर दायें बायें से निकल जाते थे। किसी ने उसकी सुध नहीं ली। संत एकनाथ उसे देख कर रुके और वहंगी में रखे कलश से गंगाजल निकाल कर उसके मुंह में डाला। आसपास से निकलते लोग संत एकनाथ को ऐसा करते देख कर रुक गये।'

रुक गये लोगों में से एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने संत से पूछा, 'बाबा आप क्या कर रहे हैं? जो गंगा जल भगवान् शिव पर चढ़ाने के लिए आप इतनी दूर से श्रद्धापूर्वक लाये थे, वह इस गधे के मुंह में डाल दिया। क्यों?'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संत ने कहा कि इस गधे में भी भगवान शिव का ही अंश है। इस जल से मैंने उन्हीं की सेवा की है। लोग उनका यह तर्क सुनकर हंसने लगे। संत पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। काफी देर तक लोग उनकी ठिठौली करते रहे। कहते हैं तभी वहां एक गम्भीर वाणी गूंजी कि एकनाथ ठीक कर रहा है। लोग यह वाणी सुनकर स्तब्ध रह गये। उससे भी ज्यादा स्तब्ध तो यह देखकर हुए कि कुछ पल पहले जिस जगह गधा बेहोश पड़ा था वहाँ कुछ भी नहीं था। लोगों ने समझा कि यह भगवान शिव की ही कोई लीला है। सन्त एकनाथ वहां से चुपचाप रामेश्वरम् मन्दिर की ओर चल दिये। यह घटना सुनाकर आचार्यश्री ने कहा, 'हमारा काम ही हमारा जवाब है।'

अभाव में भी आवश्यक

जोधपुर से आये कुछ कार्यकर्त्ताओं ने समस्या रखी कि उनके इलाके में अक्सर अकाल पड़ता है। गायें कम दूध देती हैं। घी की समस्या है। यज्ञ में घी का काफी प्रयोग होता है। वहाँ के ब्राह्मण विद्वान आपत्ति करते हैं। यह विलासिता है। इस बारे में और भी कार्यकर्त्ताओं की राय ली गई। कार्यकर्त्ताओं ने यज्ञों में सादगी और मितव्ययता पर जोर दिया। मतभेद भी सामने आए। जैसे कहा गया कि कितनी ही गरीबी और कंगाली हो, पूजा, पाठ, दान, दक्षिणा में कमी नहीं आनी चाहिए। व्यक्ति के अपने पास जो उपलब्ध हैं, उसमें से श्रेष्ठतम ही वह भगवान को समर्पित करता है। गांव में अगर कोई इमारत भव्य है तो वह मंदिर ही है। वहां के तमाम मकान कच्चे पक्के और टूटे-फूटे होंगें, मंदिर की इमारत उन मकानों से श्रेष्ठ ही होगी। झोपड़ी और कच्चे मकान में रहने वाला व्यक्ति भी आलीशान मंदिर की कामना करता है। इसलिए धर्म-कर्म में ज्यादा खर्च हो तो हर्ज नहीं है।

आचार्यश्री ने व्यवस्था दी कि यज्ञ को जन जन तक पहुंचाना है। उसका स्वरूप ऐसा रहे कि सामान्य स्थिति के लोग भी उसमें सम्मिलित हो सकें। यज्ञ आयोजन छोटा हो या बड़ा, उसमें घी और अनाज का उपयोग संयम से ही किया जाए। अनाज की जगह औषधियों की आहुति देनी चाहिए। औषधियां जंगल में मिलने वाली वनस्पतियों से तैयार की जा सकती हैं और घी का उपयोग स्विष्टकृत होम के समय ही किया जाए। एक आहुति पूर्णाहुति के समय भी दी जा सकती है। घी का इसमें ज्यादा उपयोग नहीं करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सम्मेलन में दाल चावल और रोटी शाक का इन्तजाम था। सब लोग एक पंक्ति में बैठकर भोजन करते। किसी को पता नहीं होता कि कौन किस जाति का है। तले हुए भोजन में तो छूत-छात का ज्यादा महत्त्व नहीं होता लेकिन कच्चे पकवान का लोग ज्यादा ख्याल करते थे। कुछ प्रतिनिधियों ने इस स्थिति की तरफ ध्यान दिलाया।

आचार्यश्री ने इस आपत्ति का उत्तर दिया। गायत्री का जप करने से पहले सभी व्यक्ति शूद्र होते हैं। यज्ञोपवीत संस्कार के बाद व्यक्ति गायत्री का जप करने लगता है तो द्विज बन जाता है। द्विजों में कोई जाति भेद नहीं है। यहाँ सभी लोग एक पंक्ति में बैठकर भोजन करें। यह भोजन प्रसाद है। प्रसाद देने में कोई ऊँच-नीच नहीं रखनी चाहिए।

छः दिन तक चले सम्मेलन में कई तरह के निर्धारण किये गये। उनमें एक यह था कि ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान के अन्तर्गत चल रहे जप, पाठ, मंत्रलेखन और आहुतियों की संख्या पांच गुना बढ़ा दी जाए। तब चौबीस लाख गायत्री मंत्र का जाप, चालीसा के चौबीस हजार पाठ, चौबीस हजार मंत्र लेखन और चौबीस हजार आहुतियों का हवन प्रतिदिन चल रहा था। इस संख्या का पांच गुना बढ़ा देने के बाद प्रतिदिन सवा करोड़ जप, सवा लाख पाठ, सवा लाख मंत्र लेखन एवं सवा लाख आहुतियों का हवन निर्धारित किया गया। वहाँ आये पांच सौ कार्यकर्त्ताओं ने अपने-अपने क्षेत्रों में इस मुहिम को मुस्तैदी से चलाने का संकल्प लिया।

समाज सुधार के कुछ कार्यक्रम तय हुए। इनमें दहेज प्रथा और बाल विवाह को रोकने पर खास जोर दिया। दहेज के मामले में विचार करते हुए जाम नगर के प्रतिनिधि जसवन्त भाई ने कहा कि दहेज के रूप में ही तो बेटी बाप की जायदाद से अपना हिस्सा ले जाती है। यदि इस प्रथा का विरोध करेंगे तो पिता के घर में बेटी का क्या वजूद रह जाएगा?

उदयपुर के हीरासिंह कठोथिया ने अपना सुझाव दिया कि बेटी को भी तो बाप की जायदाद में हक मांग लेना चाहिए। पंजाब के ग्यारसी खन्ना ने कहा कि बेटी अगर हिस्सा मांगेगी तो बड़ी समस्या हो जाएगी। जमीन जायदाद तो अपनी जगह ही कायम रहती है। बेटी की शादी दो सौ पांच सौ किलोमीटर दूर हुई तो वह जमीन के टुकड़े को कैसे सँभालेगी। इन पहलुओं को सुन कर आचार्यश्री ने कहा कि एक बुराई को इसलिए नहीं चलने दिया जा सकता कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उससे कुछ दूसरी समस्याएं खड़ी होंगी। नशा छोड़ने के बाद सिर और पेट में दर्द भी होता है और शरीर कमजोर भी महसूस होता है। इन लक्षणों का इलाज किया जाए, न कि नशे का समर्थन किया जाए। दहेज प्रथा बन्द करने से दूसरी कोई व्यावहारिक समस्याएँ खड़ी होती हैं तो उनका समाधान करना चाहिए। रोग या समस्या सहन नहीं करना चाहिए।

दहेज प्रथा और बाल विवाह को मुख्य सामाजिक बुराई समझा गया। पशु बलि, पर्दाप्रथा, मृत्युभोज, जुए जैसी सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए भी संकल्प लेने की जरूरत है। सभी कार्यकर्त्ता यदि सप्ताह में एक दिन नियमित रूप से आस-पास के क्षेत्र में इन बुराइयों को छोड़ने के लिए लोगों को समझाने निकलें तो निश्चित ही एक बुराई को खत्म किया जा सकता है। वह दिन रविवार भी हो सकता है। उस दिन इन बुराइयों को छोड़ कर सत्प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने पर जोर देना चाहिए। बुराई छोड़ने वालों से कहा जाए कि उस दिन एक अच्छाई, अच्छी आदत भी अपनाएं।

चर्चा परामर्श का क्रम छह दिन तक चला। साधकों और कार्यकर्त्ताओं ने अपने कार्यक्षेत्र में आने वाली समस्याओं, खट्टे-मीठे अनुभवों और उनसे निजात पाने के तौर तरीकों को आपस में कहा सुना। एक दूसरे के अनुभवों से सीखा समझा भी।

साधनों की चिंता

गोष्ठियों में विभिन्न मुद्दों पर चर्चा के समय किसी ने कहा कि हमारे संगठन में संपन्नों और श्रीमंत लोगों की कमी है। उस कारण साधनों का अभाव आड़े आता है। जयपुर के पास लुंगा गांव से आये कार्यकर्त्ता ने सलाह दी कि संपन्न लोगों से संपर्क करना चाहिए। अपने कार्यक्रमों और योजनाओं की जानकारी उन्हें देना चाहिए। उन्हें प्रभावित कर गायत्री परिवार से जोड़ना चाहिए। कार्यकर्त्ताओं में विचार विमर्श चल रहा था।

श्रीमंतों को प्रभावित करने के लिए तरह-तरह की योजनाएँ बन रहीं थीं। आचार्यश्री के सामने यह विषय आया तो उन्होंने अलग तरह के निर्देश दिये। कहा कि हमें प्रभावित करने के उद्देश्य से संपन्न और प्रभावशाली लोगों के पास नहीं जाना चाहिए। उन्हें अपने उद्देश्य के बारे में बताना चाहिए, कार्यक्रम समझाना चाहिए। इसके बाद अपनी उनकी आंतरिक प्रेरणा हो तो वे सहयोग दें। नहीं दें तो कोई बात नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किन्हीं कार्यकर्त्ता ने पूछा कि फिर साधनों की व्यवस्था कैसे होगी? आचार्यश्री ने कहा कि भगवान राम ने समुद्र पर सेतु बांधा था तो उनके साथ संपन्न या श्रीमंत लोग कहां थे? रीछ वानरों के सहयोग से ही पुल बनाया था और उन्हीं के सहयोग से लंका पर विजय प्राप्त की थी। भगवान कृष्ण ने गोवर्धन धारण किया तो बड़े-बड़े इंजीनियर और राजा महाराजाओं का सहयोग नहीं लिया था। मामूली ग्वालबालों की मदद से ही गोवर्धन उठाया था। अपनी लाठियों और लुकटिया टिका कर उन्होंने भगवान कृष्ण से सहयोग किया था। भगवान बुद्ध के धर्मसंघ में शुरु से साधारण भिक्षु और संन्यासी ही शामिल हुए थे। सम्राट अशोक, हर्ष, कनिष्क आदि सम्राटों का सहयोग बहुत बाद में जाकर मिला था। लोगों को यह मान कर चलना चाहिए कि अपने हृदय की शक्ति से ही काम कर रहे हैं। श्रद्धा और निष्ठा हमारा संबल है। इसी के सहारे हम सक्रिय होंगे और परमात्मा की शक्तियां हमारे लिए साधन सहयोग जुटाती चलेंगी।

रीछ वानरों, ग्वाल बालों और सामान्य परिवारों से आये धर्मप्रचारकों के उदाहरण ने साधकों को प्रेरित किया। १२ जून १९५७ को सम्मेलन में आये कार्यकर्त्ताओं ने विदा ली। जाते-जाते वे अपने यहां गायत्री परिवार का स्थानीय संगठन बनाने औरे सत्प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने, बुराइयों, दुष्प्रवृत्तियों और कुरीतियों के साथ अनीति अनय को निरस्त करने का संकल्प लेते हुए वापस लौटे। विदाई के समय आचार्यश्री ने संकेत भर किया था कि अगले दिनों विश्व को गंभीर चुनौतियों का सामना करना है। समाज में विग्रह, अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं पर युद्ध और संघर्ष के साथ प्राकृतिक आपदाओं की भरमार होने वाली है।

विपत्तियां मनुष्य को अपने कृत्यों का दंड देने के लिए हैं। ये परिवर्तन की सूचक भी हैं। इस (बीसवीं) सदी के अंत तक संसार और सभ्यता का स्वरूप आमूलचूल बदल जाएगा। विपत्तियाँ उस परिवर्तन की प्रसव पीड़ा के रूप में हैं। कुछ कार्यकर्त्ताओं ने पूछा कि चारों तरफ से विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ने वाला है तो मनुष्य का मनोबल उसमें स्थिर रह पायेगा या नहीं। उसे सुरक्षित रखने के लिए भी क्या कोई उपाय किये जाने चाहिए। आचार्यश्री ने कहा कि आध्यात्मिक उपाय ही लोगों को सुरक्षा प्रदान करेंगे।

अखबारों में उन दिनों ज्योतिषियों और भविष्य वक्ताओं के कुछ बयान आने लगे थे। इनमें पांच साल बाद आठ ग्रहों के एक ही राशि में आ जाने से तबाही आ जाने के संकेत किए गए थे। कहा गया था कि तीन चौथाई दुनिया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अष्टग्रही योग के कारण नष्ट हो जाएगी। ज्योतिषियों की एक राष्ट्रीय संस्था ने संयुक्त घोषणा की कि १६ जनवरी से १२ फरवरी १९६२ के बीच का समय मनुष्य जाति के लिए अत्यंत भयंकर होगा। उस अवधि में युद्ध, रोग, महामारियों, और बाढ़, भूकंप, अकाल आदि दैवी विपत्तियों के कारण मनुष्य जाति गहरे संकट में फंस जाएगी। कम से कम एक चौथाई आबादी नष्ट हो जाएगी।

विनाश का कारण आठ ग्रहों का एक ही राशि में आ जाना बताया गया था। राज ज्योतिषी पंडित कृष्णमुरारी मिश्र ने ज्योतिर्विदों का प्रतिनिधित्व करते हुए कहा कि सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि और केतु एक ही राशि मकर में स्थित होंगे। नवां ग्रह राहु उससे सातवीं राशि में होगा और इस कारण मकर को देख रहा होगा। प्रकारांतर से वह भी इस राशि को प्रभावित कर रहा होगा। यों भी कह सकते हैं कि सभी ग्रह मकर राशि को प्रभावित कर रहे होंगे।

ज्योतिषियों ने यह भी कहा कि इन ग्रहों का एक ही राशि में होना भयंकर दुर्भाग्य का सूचक है। महाभारत युद्ध के समय सिर्फ सात ग्रह एक राशि में आये थे। उस कारण जो उथल पुथल हुई थी उसने प्रलय का सा दृश्य उपस्थित कर दिया था। महाभारत के बाद संसार का स्वरूप ही बदल गया। पांच साल बाद आठ ग्रह एक ही राशि में आ रहे हैं। उससे तो भारी उथल पुथल हो जाएगा।

गायत्री परिवार सम्मेलन में विदाई के समय चलते चलते इन भविष्य कथनों की चर्चा हुई। १२ जून की पूर्णिमा थी। श्रद्धालु महिलाएँ उस दिन देश भर में 'वट सावित्री' का व्रत रख रही थीं और पूजा आदि कर रही थीं। कुछ अखबारों ने उस दिन अष्टग्रही योग पर विशेष सामग्री प्रकाशित की थी। इसलिए भी चर्चा उभरी। आचार्यश्री ने विदाई संदेश में इन भविष्य वाणियों का उल्लेख किया। कहा कि संसार पर विपत्ति के बादल मंडरा रहे हैं। यह बात सही है लेकिन जगन्नियंता अपनी जगती को यूं ही असुरक्षित नहीं छोड़ रहा है। विपत्तियों से बचाव के उपाय भी वही रचेगा और सुझाएगा। हम लोगों को उसकी योजनाओं में सहयोगी, भागीदार भर बनना है। इस बीच कुछ ऐसे उपाय भी कर लेने हैं जिनसे अपनी आत्मचेतना बलवान बने। आध्यात्मिक दृष्टि से हम सुदृढ़ हों।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आग्नेय आराधन

संवत् दो हजार चौदह की आषाढ़ की अंतिम तिथि थी—गुरु पूर्णिमा का दिन। वर्षा ऋतु अपना वेग पकड़ने लगी थी। इन दिनों के बारे में कवियों ने गाया है कि वर्षा वयः संधि पार करने लगती है। आकाश में रह-रह कर बादल छाने और कुछ देर बरस कर छितराने लगते हैं। उनके बरसने का समय भी इन्हीं दिनों तिल तिल बढ़ने लगता है और सावन भादों की मूसलाधार वर्षा का दौर शुरू होता है। आषाढ़ की जिस तिथि को चंद्रमा अपनी सोलहों कलाएं बिखेरता है, उसी तिथि को भगवान वेदव्यास का अवतरण माना गया है। भगवान वेदव्यास, जिन्होंने यहां वहां बिखरे करीब चौबीस हजार मंत्रों को संकलित संपादित और संहिताबद्ध किया। उन्हीं के पुण्य प्रताप से ऋषि मुनियों द्वारा अनुभूत आध्यात्मिक सत्य ऋक, यजु, साम और अथर्व के नाम से चारों वेदों के रूप में प्रत्यक्ष देखे जा सकते हैं। भगवान वेदव्यास नहीं होते तो वेदमंत्रों का नाम ही सिर्फ़ सुनाई देता। वैदिक वाङ्मय ही क्यों, पुराण, महाभारत और भागवत शास्त्र का अवगाहन भी भगवान वेदव्यास के कृपा प्रसाद से ही संभव हो पा रहा है। उन्हीं वेदव्यास की अवतरण तिथि आषाढ़ पूर्णिमा के दिन मनाई जाती है। वर्षा आषाढ़ के उतरते दिनों में अपना वैभव प्रकट करने लगती है। हो सकता है इसी प्रतीक से समझाने की चेष्टा की गई हो कि धर्म और अध्यात्म भी जीवन में प्रकट होने लगे तो जीवन में भी उतरते आषाढ़ और शुरू होते सावन जैसा नैसर्गिक वैभव छाने लगे।

भगवान वेदव्यास के अवतरण दिवस को शिष्य समुदाय अपने गुरु की आराधना का अवसर भी मानते हैं। साधक जिस साधना परंपरा और विद्याधारा का अनुयायी होता है, उसके मार्गदर्शक की पूजा अर्चना करते हैं। आचार्यश्री ने नित्य की भांति उस दिन भी उपासना के समय अपनी मार्गदर्शक सत्ता का स्मरण किया और अखण्ड दीपक के सामने बैठ गये। संध्यावंदन, जप और ध्यान धारणा का क्रम नित्य की भांति आरंभ हुआ और चेतना परम सत्ता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

से तादात्म्य हो गई। समाधि की प्रगाढ़ अवस्था में चित्त और चेतना का लय हो जाता है। ध्यान समाधि के बाद वे व्यवहार जगत में वापस आये। उस समय आचार्यश्री का चेहरा प्राची से उगते सूरज की तरह कुंदन वर्ण का हो रहा था। शरीर के आसपास जैसे दिव्य ऊर्जा का विकिरण हो रहा था। वे विसर्जन और प्रणाम के बाद आसन छोड़ कर उठने ही वाले थे कि अंत:क्षेत्र में स्फुरणा जगी। अभी उठना नहीं है।

स्फुरणा के तत्क्षण बाद निर्देश सुनाई दिया 'यज्ञ करो' 'महायज्ञ करो'। गायत्री तपोभूमि में, गायत्री परिवार की शाखाओं में और स्वतंत्र रूप से भी जहां तहां यज्ञ तो हो ही रहे थे। निर्देश का आशय स्पष्ट नहीं हुआ। आवाज मार्गदर्शक सत्ता की थी। यह स्पष्ट प्रतिभासित हो रहा था। आशय का असमंजस कुछ ही पल रहा होगा कि उसी सत्ता का निर्देश गूंजा यज्ञ में एक हजार कुंड होना चाहिए। दिव्य संभावनाओं को प्रकट करने के लिए लोक में तप का जो मंथन चल रहा है, उसकी पूर्णाहुति भी सहस्र शीर्ष पुरुष की आग्नेय आराधना के साथ संपन्न हो।

यह निर्देश सुना और मन मस्तिष्क उसे पूरा करने के सरंजाम सोचने में जुट गये। उपासना कक्ष में बैठे-बैठे ही निर्धारण हो गया कि ब्रह्मास्त्र साधना में सम्मिलित सभी साधक महायज्ञ में भाग लेंगे। सभी को आमंत्रित किया जाए। उन्हें औपचारिक निमंत्रण जब देना है तब दिया जाएगा। देवसत्ताओं को अभी और आज ही निमंत्रित किया जाना चाहिए। मन उस समय साधन व्यवस्थाओं की चिंता नहीं कर रहा था। देवसत्ताओं, ऋषियों और जप-तप में निरत सिद्ध साधकों को आमंत्रित करने के लिए उधेड़बुन में लगा था।

सहस्त्रांशु साधना में भाग ले रहे साधकों के लिए तो तय ही था कि वे महायज्ञ में आयेंगे उन साधकों के लिए भीतर ही भीतर सोच विचार शुरु हुआ, जो विभिन्न साधना परंपराओं में दीक्षित थे और अपने-अपने क्षेत्र में निवास या प्रब्रज्या कर रहे थे। उनकी खोजबीन, संपर्क और आमंत्रण एक बड़ा दायित्व था। इस संबंध में भीतर ही भीतर चिंतन चल रहा था। किसी तरह की चिंता नहीं थी। निर्देश मार्गदर्शक सत्ता से आये हैं, इसलिए कोई दुविधा भी नहीं थी।

उपासना कक्ष से बाहर आये तो माताजी सामने मिली। उन्हें सूचना दी कि अगले वर्ष कार्तिक पूर्णिमा पर मथुरा में सहस्र कुंडीय गायत्री महायज्ञ होना है। माताजी ने इस संकल्प को चुपचाप सुन लिया। और अपने पक्ष के कार्यों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बारे में सोचने लगी। आचार्यश्री ने कहा, 'कुछ सोचने समझने या चिंता करने की जरूरत नहीं है। यह दायित्व नहीं है, यंत्र की भांति हम लोगों की नियुक्ति भर है। व्यवस्था और संयोजन अपनी मार्गदर्शक सत्ता ही करेगी।'

इतना कहते हुए आचार्यश्री ने माताजी को उपासना कक्ष में आने का संकेत किया। वे उनके पीछे-पीछे चलीं। भीतर अखंड दीपक की साक्षी में, अपनी इष्ट आराध्य की उपस्थिति में माताजी के हाथ में कलावा बांधा, चंदन का टीका लगाया। माताजी ने भी आचार्यश्री को इसी तरह सहस्रकुंडीय महायज्ञ के व्रतबंध में बांधा। उस समय उपासना कक्ष में स्पष्ट ध्वनि तो नहीं आ रही थी लेकिन मन में, चित्त चेतना में वंशी की धुन सुनाई दे रही थी। धुन मानो कह रही हो कि अपने आपको नियंता के होठों पर रखी बांस की खाली पोंगरी की तरह बना लेना है, उसमें अपनी कोई ग्रंथि नहीं है। वह जिन अधरों पर रखी है। उससे निकली हुई ध्वनि को अपने भीतर से बहने देना है। फिर स्वर माधुरी तो अपने आप गूंजती रहेगी।

गुरुसत्ता का निर्देश

सुबह के छह बज गये थे। बाहर कुछ बूंदाबांदी हो रही थी। इस तिथि के बाद ही मथुरा वृंदावन में झूलों और घटाओं के उत्सव शुरू हो जाते हैं। पूरे सावन महीने द्वारकाधीश के मंदिर में, बांके बिहारी के मंदिर में और गोविंद देव, राधा दामोदर के मंदिर में तरह-तरह की घटाएं और झांकियां सजी होती हैं। लोग अपने गृह मंदिरों में भी इस तरह की झांकियां सजाते हैं। शिव के उपासक सावन के व्रत की तैयारी करते हैं। स्नान और व्रत अनुष्ठान आषाढ़ पूर्णिमा को ही शुरू हो जाते हैं। बाहर हो रही बूंदाबांदी के साथ सावन के उत्सव की तैयारी का कलरव भी सुनाई दे रहा था।

बरसती हुई बदलियों और सावन की तैयारियों में जुट रहे लोगों का उल्लास देखते हुए आचार्यश्री और माताजी बाहर आये। रिक्शे में बैठे और गायत्री तपोभूमि रवाना हो गये। तपोभूमि में नियमित गायत्री यज्ञ चल रहा था। उसकी पूर्णाहुति में सम्मिलित हुए, आरती उद्घोष के बाद बाहर से आये साधक और कार्यकर्त्ता मंदिर के सामने पंक्ति बनाकर बैठ गये। गुरुपूर्णिमा के कारण उस दिन आश्रम में आने वाले अभ्यागतों की संख्या काफी बढ़ गई थी। पंद्रह बीस साधक कार्यकर्त्ता वैसे भी निवास करते थे। उस दिन संख्या दो सौ के आसपास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हो गई थी। तपोभूमि का विस्तार हो गया था। दो साल पहले नई जमीन खरीदी थी। उसमें कार्यालय और आगंतुकों के आवास की व्यवस्था की गई थी। गुरुपूर्णिमा के दिन आये साधकों के लिए यह विस्तार भी कम पड़ रहा था। मंदिर में-गायत्री के विग्रह के सामने चबूतरे पर पर्व देवता के पूजन उपचार की व्यवस्था की गई थी। आचार्यश्री और माताजी आसन पर बैठे। गुरुदेव का आचार्यश्री की मार्गदर्शक सत्ता का हाथ से बनाया हुआ चित्र, कलश, उस पर नारियल और पूजा सामग्री से सजी हुई चौकी आदि वस्तुएं इस तरह रखी हुई थी कि प्रांगण में बैठे कार्यकर्त्ता भी उनका अवलोकन करते रह सकें।

मार्गदर्शक सत्ता के विधिवत पूजन अर्चन और सुमनांजलि अर्पित करने के बाद आचार्यश्री ने वहां आए साधकों को संबोधित किया। सहस्त्रांशु जप, यज्ञ, पाठ और नित्य हवन के बाद अगले दिनों आने वाले परिवर्तनों का संकेत उनके उद्‌बोधन में था। इस उद्‌बोधन में ही घोषणा की गई कि अगले वर्ष कार्तिक पूर्णिमा पर सहस्र कुंडीय गायत्री महायज्ञ होना है। वहां आये साधकों ने घोषणा को आश्चर्य की तरह सुना। महीने भर पहले गायत्री परिवार सम्मेलन हुआ है। उसके नियमित और सामूहिक रूप से चलने वाले जपयज्ञ के साथ यज्ञ हवन का विधान भी चल रहा था। सहस्रकुंडीय गायत्री महायज्ञ के विराट आयोजन का प्रयोजन और उद्देश्य समझने के लिए वहां आये साधक माथापच्ची कर रहे थे।

एक साधक से रहा न गया। उसने पूछ ही लिया, 'गुरुदेव! इस आयोजन का क्या उद्देश्य है?'

आचार्यश्री ने कहा, 'हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने इसके लिए निर्देश दिया है। हम उनसे उद्देश्य और विधान नहीं पूछते। उन्होंने आदेश दिया हमने स्वीकार कर लिया।'

फिर कुछ रुक कर वे बोले, 'भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है न कि परमात्मा ने सृष्टि के साथ यज्ञ की रचना भी की और कहा कि इससे देवशक्तियां पोषण प्राप्त करेंगी। देवशक्तियां यज्ञ से पुष्ट होकर मनुष्य का पोषण करेंगी। इस प्रकार परस्पर सहयोग से दोनों एक दूसरे की उन्नति करेंगे।'

उद्धृत करने के बाद आचार्यश्री ने कहा कि महायज्ञ में दैवीशक्तियों का आह्वान होगा। वे आयोजन में उपस्थित होंगी। ऋषियों, संतों, तपस्वियों को भी आमंत्रित किया जाना है। हमारे सामने और समाज में विचरण कर रहे साधु संत तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आएंगे ही, निर्जन एकांत कंदराओं में और पुण्य स्थानों पर अकेले तप कर रही विभूतियां भी महायज्ञ में बुलाई जानी हैं। उनकी उपस्थिति ज्यादा महत्त्वपूर्ण है।'

माताजी यह सब चुपचाप सुन रही थीं। चेहर पर प्रसन्नता थी। आचार्यश्री जब यज्ञ की सूचना दे रहे थे तो साधक उन्हें मौन देख रहे थे। लेकिन उनका मौन आचार्यश्री की वाणी से समवेत था। एकाग्र और तन्मय भाव से सुन रहे साधकों ने अनुभव किया कि माताजी भी बोल रही हैं। वे बैठे। कुछ सोचती हुई सी लग रही थीं। आचार्यश्री अपनी बात लगभग कह चुके तो उन्होंने माताजी की ओर देखा। जैसे उन्हें वैखरी वाणी से कुछ कहने का निर्देश मिल रहा हो।

माताजी ने आचार्यश्री की ओर दृष्टि निक्षेप किया। फिर मार्गदर्शक सत्ता की छवि को निहारा और साधकों से कहने लगी, 'इस महायज्ञ में सामान्य साधकों और सिद्धपुरुषों की सशरीर उपस्थिति रहेगी। उन्हें निमंत्रण देने और आने ठहराने की व्यवस्था ऋषि सत्ताएँ ही करेंगी। उन आगंतुकों के अलावा ऐसी सिद्ध विभूतियां भी पधारेंगी जिनकी उपस्थिति आयोजन को सफल बनाएगी। साधक मन:स्थिति के लोग उनकी उपस्थिति को प्रत्यक्ष अनुभव कर सकेंगे।'

सामने बैठे एक साधक ने पूछा, 'माताजी क्या यह आयोजन १९६२ में आने वाले विनाश को टालने के लिए है।' साधक के स्वर में उत्तेजना और चिंता दोनों थी। माताजी ने कहा, 'वह विनाश तो वैसे ही स्थगित हो जाने वाला है। उलट फेर होगा लेकिन वह प्रक्रिया महीने भर में ही नहीं हो जाएगी। विनाश और परिवर्त्तन की प्रक्रिया अगले कई वर्षों तक, संभवत: इस सदी के अंत और नई सदी के कुछ वर्षों तक चलेगी। महीने भर में सब कुछ तहस नहस हो जाने की आशंका से किसी को भयभीत नहीं होना चाहिए।'

प्रांगण में जिस समय यह चर्चा चल रही थी तब किसी पक्षी के पंख फड़फड़ाने की आवाज आई। आवाज बहुत तेज थी। लोगों का ध्यान उस ओर गया। देखा सफेद रंग का एक पक्षी मंदिर के शिखर और यज्ञशाला के बीच उड़ने लगा है। वह किस दिशा से आया, किसी को नहीं मालूम। लोगों ने उसकी पंखध्वनि भर सुनी। किसी साधक ने लगभग चीखते हुए से कहा, 'गायत्री माता का वाहन है। वे हमें आशीर्वाद देने के लिए अपने वाहन पर आई हैं।'

लोग उस दिशा में देखने लगे। अपने भार के कारण पक्षी ऊंचाई तक नहीं उड़ पा रहा था। दो तीन बार उड़ कर वह यज्ञशाला की मुंडेर पर बैठ गया। उसका मुंह मंदिर की ओर था, जैसे देवप्रतिमा को निहार रहा हो। लोगों ने उस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पक्षी का अभिवादन किया। आचार्यश्री और माताजी ने इस घटना पर कोई टिप्पणी नहीं की। वहां आये लोगों को आश्चर्य हो रहा था कि आसपास कोई सरोवर या झील नहीं है। यह हंस कहां से आया होगा?

उत्तरकाशी में एक चिंतन

आषाढ़ पूर्णिमा के ही दिन सुबह के समय हिमालय के हृदय प्रदेश में एक और विमर्श चल रहा था। उत्तरकाशी में वरणा नदी के पास बने एक छोटे से आश्रम में स्वामी विशुद्धानंद अपने शिष्यों से चर्चा कर रहे थे। वे बता रहे थे कि मथुरा में निवास कर रहे एक गृहस्थ संत अगले दिनों प्रचंड तप अनुष्ठान करने वाले हैं। यह तप अनुष्ठान वैयक्तिक स्तर का नहीं होगा। हजारों लोग इसमें भाग लेंगे। उस संत ने जितने बड़े तप अनुष्ठान का बीड़ा उठाया है, वह अकेले अपने लिए किया होता तो शायद वह संसार का सबसे बड़ा तपस्वी हो सकता था। लेकिन नहीं, यह संकल्प सर्व के लिए है। इसलिए हर किसी को उसमें सहयोग देना चाहिए। अपनी साधना का एक अंश उस प्रयोजन के लिए समर्पित करना चाहिए।

आश्रम में पांच सात शिष्य और बैठे हुए थे। उन्हीं ने पूछा कि यह अनुष्ठान किस तरह का है और हम उसमें कैसे सहयोग दे सकते हैं? स्वामी जी ने कहा, 'अनुष्ठान का एक बड़ा भाग तो पूरा हो चुका है। कुछ और शेष रह गया है। वह अगले पंद्रह सोलह महीनों में पूरा हो जाएगा। उसके बाद वह संत एक बड़ा महायज्ञ करेगा। इस तरह का महायज्ञ कभी कभार ही होता है। संभवतः सैंकड़ों वर्षों के अंतराल में। उद्देश्य वातावरण में शुभ शक्तियों का पोषण करना है, इसलिए अशुभ शक्तियां प्रतिरोध अवश्य करेंगी।'

इतना कहकर स्वामी जी चुप हुए। कुछ पल रुक कर उन्होंने रामकृपाल ब्रह्मचारी की ओर देखा और कहा कि तुम मथुरा जाकर उन महात्मा को मेरा सन्देश दो। उनसे कहना कि महायज्ञ होने तक विशेष सावधान रहें। उन पर आसुरी शक्तियां हमला कर सकती हैं। कहते कहते स्वामी जी रुके। फिर स्वगत ही कहने लगे कि उनकी जो मार्गदर्शक सत्ता उन्हें इस महत्कार्य में नियोजित कर रही है, उसने भी उन्हें सावधान किया होगा। सावधान ही क्या किया होगा? वह उनके संरक्षण की व्यवस्था भी कर रही होगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

फिर उन्होंने अपने स्वगत संदेश की दिशा बदली और कहा, 'नहीं हम लोगों का भी कुछ कर्त्तव्य बनता है। अपने मोक्ष के लिए जितने लोग तप कर रहे हैं उन्हें भी विनाश को टालने के लिए प्रयत्न कर रहे महात्मा के साथ खड़े होना चाहिए।' स्वामी जी के मुँह से निकल रहे ये कथन सहज ही सुने जा सकते थे। वे किसी को संबोधित नहीं कर रहे थे। अपने आप से ही कह सुन रहे थे। फिर उनके स्वगत कथन भी बंद हो गए और वे चुपचाप बैठ गए।

कोई आधी घड़ी तक चुप बैठे रहे होंगे। इस बीच उनकी आंखें मुंदी हुई थीं और वे ध्यान लगाते से प्रतीत हो रहे थे। आधी घड़ी के अंतराल में उन्होंने दो तीन बार आंखें खोल कर सामने बैठे शिष्यों को निहारा। यह निहारना सिर्फ एक पल के लिए था। जिन साधकों की ओर निहारा था उन्हें विचित्र सा अनुभव हुआ। लगा जैसे बिना कहे ही उन्हें कोई दायित्व सौंप दिया गया है। उनसे उठ कर कहीं जाने के लिए कहा गया है। कहां जाना है? यह स्पष्ट नहीं हो रहा, लेकिन जाना है यह तय है।

साधक इस ऊहापोह में ही थे कि स्वामीजी ने आंखें खोली और बिना कोई भूमिका बांधे आसपास के क्षेत्रों में जाने के लिए कहा। इस क्षेत्र में तप कर रहे साधकों से मिलने और उन्हें मथुरा में होने जा रहे महायज्ञ में सहयोग का सन्देश भी कहलाया। यह संदेश अपनी साधना का एक अंश उस महत्कार्य को सफल बनाने के लिए समर्पित करने का था।

जरूरत समझाते हुए उन्होंने कहा कि वह संत जो तप और महायज्ञ कर रहे हैं, उससे आसुरी शक्तियाँ क्षीण होंगी। दिव्य शक्तियों को उस आयोजन से पोषण मिलेगा। स्वाभाविक ही वे आसुरी शक्तियां प्रतिरोध के लिए आक्रमण करेगीं। वह तपस्वी संत अपने अनुष्ठान आयोजन के एक अंश से भी इन हमलों का सामना कर सकता है लेकिन जिन लोगों के कल्याण के लिए यह आयोजन हो रहा है, उनका भी कुछ धर्मकर्त्तव्य बनता है।

एक साधक ने पूछा कि प्रभु आप प्राचीन काल में भी इस तरह के अनुष्ठानों और यज्ञ प्रयोगों की बात कर रहे हैं। ऐसा कोई एकाध प्रसंग हमें भी बताइए। सुनकर महात्मा विशुद्धानंद ने विश्वामित्र प्रसंग का उल्लेख किया। लोगों की स्मृति या अभिज्ञान में उपलब्ध यह सबसे ज्वलंत उदाहरण है। गायत्री मंत्र के दृष्टा इस ऋषि ने त्रेतायुग में आसुरी शक्तियों को निष्प्रभावी करने के लिए कई आध्यात्मिक प्रयोग किए थे। उन्हें विफल करने के लिए ताड़का, मारीच,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुबाहु आदि राक्षसों ने आक्रमण का मोर्चा संभाला था। उनके पैदा किये व्यवधानों के कारण विश्वामित्र के लिए यज्ञ करना कठिन हो गया। अंततः उन्हें राम और कृष्ण को यज्ञरक्षा के लिए लाना पड़ा।

'मथुरा में चल रहा ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान विश्वामित्र द्वारा किये गये अनुष्ठान से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।' स्वामीजी ने कहा कि एक अर्थ में वह विशेष ही है क्योंकि त्रेतायुग में हुए उस अनुष्ठान का विस्तार क्षेत्र विशेष तक ही था। मथुरा का यह आयोजन साधकों के एक विराट समूह द्वारा संपन्न किए गए २४ करोड़ मंत्र जप, २४ लाख आहुतियों और २४ लाख पाठों में संपन्न हो रहा है। दोनों अनुष्ठानों का मूल आधार गायत्री महामंत्र ही रहा है।

गायत्री महामंत्र के ऋषि विश्वामित्र हैं। उन्होंने अपना जीवन गायत्री के अनुसंधान में ही लगाया। उनके प्रयोगों का एक मात्र माध्यम और आधार यह महामंत्र ही था। मथुरा में गायत्री तपोभूमि में यज्ञ याग कर रहा वह तपस्वी उसी तरह के प्रयोगों में लगा हुआ है। त्रेतायुग में रावण का आतंक एकदेशीय था। विश्वामित्र ने भी उसी स्तर का प्रयोग किया। अब असुरता किसी देश विदेश में नहीं सारे विश्व ब्रह्मांड में लोकमानस में व्याप्त हो रही है। उसका निवारण उपाय भी उसी क्षेत्र में होना चाहिए। आचार्यश्री वही कर रहे हैं। स्वामी विशुद्धानंद ने अपने उद्‌बोधन में आखिरी वाक्य में अभीष्ट तपस्वी का नाम लिया था। इससे पहले वे सर्वनाम से ही संबोधित कर रहे थे।

अपने शिष्यों को आचार्यश्री के साधना पुरुषार्थ के बारे में स्वामी जी ने विस्तार से बताया। यह भी कि दो साल पहले उन्होंने सवा वर्ष की अवधि में १२५ करोड़ गायत्री जप, १२५ लाख आहुतियों के हवन करने के अलावा बड़ी संख्या में लोगों को गायत्री मंत्र की दीक्षाएं दी हैं। हजारों लोगों को गायत्री उपासना में नियुक्त किया। उस महा अभियान से जो ऊर्जा उत्पन्न हुई और आसुरी शक्तियां आक्रामक होने लगीं तो उनके उत्पात से बचाव के लिए आचार्यश्री को रक्षक साधक नियुक्त करने पड़े। तब वह आयोजन सकुशल संपन्न हो सका। वर्तमान आयोजन उस अनुष्ठान की तुलना में सौ गुना बड़ा है। आसुरी शक्तियों के उत्पात भी उसकी तुलना में कई गुना ज्यादा हो सकते हैं।

स्वामीजी ने भी इस अनुष्ठान को ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान की संज्ञा दी। पिछले साल प्रतिदिन २४ लाख जप और २४ हजार आहुतियों का प्रतिदिन का संकल्प था। अभी यह सवा करोड़ और सवा लाख का चल रहा है। अगले साल २४

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करोड़ जप और २४ लाख आहुतियों का हो जाएगा। इसी अवधि में असुरता का आक्रमण भी हो सकता है। यह आक्रमण आचार्यश्री के शरीर में कोई कठिन रोग उत्पन्न होने, दुर्घटना घटने या किसी दुष्ट व्यक्ति द्वारा आक्रमण करने के अलावा उनके विरुद्ध निंदा अभियान चलाने के रूप में भी हो सकता है। साधकों और आचार्यश्री के सहयोगियों में आलस्य प्रमाद छा जाने या उनके विरोधी हो जाने के रूप में भी व्यवधान उत्पन्न हो सकता है।

संदेश को लिपिबद्ध कर स्वामी जी ने उन साधक को आचार्यश्री के पास भेज दिया। अपने एक संन्यासी शिष्य चिदानंद को उत्तरकाशी के पास एक कुटिया में तप कर रहे स्वामी ज्ञानानंद के यहां भेजा। डोंडीताल के पास एक कुटिया में अवधूत योगी रहते थे। हरसिल, धराली और जांगला आदि क्षेत्रों में भी स्वामी जी ने अपने शिष्यों को भेजा। शिष्यों को विभिन्न दिशाओं में नियुक्त करने के बाद स्वामी विशुद्धानंद वहां आए साधकों से फिर चर्चा करने लगे। उन्होंने कहा कि आचार्यश्री को अन्य साधकों या सिद्धों के संरक्षण की आवश्यकता नहीं है। वे स्वयं समर्थ है फिर भी इस कार्य में गृहस्थ उपासक और हिमालय के सिद्ध संत भी उनका सहयोग करेंगे।

एक साधक ने पूछा कि महान आत्माएं अपने अनुष्ठान को अकेले ही संपन्न नहीं कर सकती क्या? स्वामी जी ने कहा, 'कर सकती हैं लेकिन ऋषियों और साधकों की भागीदारी भी होनी चाहिए। उनमें भी दायित्व की भावना आती है। रीछ वानरों के बिना भी राम लंका को जीतने में सक्षम थे और ग्वालबालों के बिना भी कृष्ण गोवर्धन उठा सकते हैं। सामान्य जनों में दायित्व का भाव आना भी एक महत्त्वपूर्ण कार्य है।'

साधन भी और साधक भी

सहस्र कुंडीय गायत्री महायज्ञ का संदेश और सहयोग का आह्वान लेकर गायत्री परिवार के साधक पहुँच रहे थे। उन कार्यकर्त्ताओं को क्षेत्र में भेजने से पहले १९५७ की आश्विन नवरात्रियों में कार्यकर्त्ताओं का एक विशेष सम्मेलन बुलाया गया। यों लोग पहले भी आते और परामर्श आदि करते रहे थे। निजी चर्चाओं और चार छह लोगों की गोष्ठियों में इस बात पर जोर दिया जाता था कि साधन सहयोग जुटाने पर तो ध्यान दिया ही जाए, अधिक से अधिक लोग इस कार्यक्रम में भाग लें, इस तरह की व्यवस्था भी की जाए। इस संबंध में व्यापक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विचार विमर्श के लिए नवरात्रियों में साधकों को आमंत्रित किया गया।

२४ सितम्बर से हुए इस आयोजन में करीब ढाई सौ साधक आये। आने के इच्छुक साधकों की संख्या तो ज्यादा थी। उनकी छंटनी की गई और साधना उपासना के क्षेत्र में जो लोग उत्साह ले रहे थे, उन्हें ही नवरात्रि में खासतौर पर बुलाया गया। नौ दिन तक नवरात्रि अनुष्ठान का साधना क्रम चला। आखिरी तीन दिनों में महायज्ञ की व्यवस्था को लेकर विमर्श और निरीक्षण के लिए काम हुआ। महायज्ञ के लिए विपुल साधन और सामग्री चाहिए। कम से कम एक कुंड के लिए सौ रुपए के खर्च का अनुमान लगायें तो भी सहस्रकुंडीय यज्ञ के लिए एक लाख रुपये से ज्यादा की रकम चाहिए। यह राशि आहुतियों और पंडितों के खर्च के लिए ही थी। आवास की व्यवस्था, जमीन का किराया, वहां यज्ञशाला बनाने, स्वयंसेवकों की नियुक्ति करने और वहाँ काम करने वाले साधकों के लिए भोजन पानी की व्यवस्था में इससे पांच गुना ज्यादा रकम की जरूरत पड़ेगी।

आचार्यश्री ने कहना शुरु किया कि महायज्ञ की व्यवस्था साधकों के अपने ही प्रयास और सहयोग से हो तो अच्छा है। इसके लिए हमें किसी के आगे हाथ नहीं पसारना पड़े। अपने आप सहयोग देने के लिए आगे आयें तो अच्छा है। मिल जुल कर जो थोड़ा अन्न जल जमा होगा, उसी से सादे सात्विक भोजन का प्रबंध कर लिया जाएगा। साधक आहुतियों में काम आने वाली सामग्री का प्रबंध भी स्वयं कर लें। आहुतियों में होमे जाने वाले हवन का प्रबंध भी स्वयं ही करें।

घी गाय के दूध से बना ही होना चाहिए। साधन सामग्री के प्रबंध के साथ हवन कुंड खोदने, यज्ञशालायें बनाने, भोजन पकाने और कुंओं से पानी भरने, सफाई करने आदि काम भी धर्मसेवकों को ही पूरे करना चाहिए। महायज्ञ के खर्च की व्यवस्था दस पंद्रह उद्योगपति मिलकर आराम से कर सकते थे। उनके सहयोग का स्वागत करना तय हुआ, लेकिन निर्भरता अपने ही साधन पुरुषार्थ पर रखी गई। आचार्यश्री ने यहाँ एक व्यवस्था दी कि जो लोग यज्ञ में भाग लें, वे परिक्रमा आदि तक ही अपने आपको सीमित न कर लें। भागीदारी का वह भी एक स्वरूप है। उसका असली संदेश अपने आचरण व्यवहार में एक अच्छाई अपनाना और एक दोष का त्याग करना माना जाए। दक्षिणा के तौर पर आर्थिक सहयोग के साथ प्रतिदिन थोड़ा समय लोकसेवा के कामों में लगाने का संकल्प भी किया जाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गायत्री मंदिर के सामने बैठकर साधक जप करते थे। तीन दिन तक चले विचार विमर्श का सार बताने के बाद साधक ने उठ कर कहा, 'सहयोग की न्यूनतम मर्यादा तो तय होनी चाहिए।'

आचार्यश्री ने तुरन्त कहा कि न्यूनतम की कोई सीमा तय नहीं की जा सकती। लोग रुपये पैसे, पाई, कौड़ी कुछ भी सहयोग कर सकते हैं। मर्यादा तय करने के बाद ऐसे बहुत से लोगों को निराश होना पड़ेगा, जिनकी हैसियत उसके अनुसार नहीं है।

सीताराम शरण नामक एक साधक यह सुनते ही उठे। वह खेतिहर मजदूर थे। मध्यप्रदेश के किसी गांव में रहते थे। प्रतिदिन छह आना (लगभग ३७ पैसे) उनकी आमदनी थी। कभी नियमित मजदूरी मिलती तो कभी कई दिन का नागा हो जाता था। कभी कुछ ज्यादा मजदूरी भी मिल जाती थी। महीने में औसतन दस रुपया आय होती थी। उन्होंने कहा कि मैं अपनी ओर से एक छोटा सा व्रत लेना चाहता हूँ। साधकों का ध्यान सीताराम शरण की ओर गया। सब उसकी ओर देखने लगे। सीताराम शरण ने कहा, 'मैं अपनी आमदनी का दसवां हिस्सा महायज्ञ के लिए निकालूंगा।'

व्रत के बारे में बताने से पहले वह अपनी आर्थिक स्थिति के बारे में बता चुका था। आचार्यश्री ने कहा कि यह बहुत ज्यादा होगा। इतनी रकम निकालने से कठिनाई होगी। एक पैसा रोज काफी होगा।

कलकत्ता से आए ब्रजवल्लभदास भी वहीं बैठे थे। उनका रुई का कारोबार था। व्यवसाय अच्छा चल रहा था। उन्होंने उठकर कहा कि गुरुदेव मैं पांच सौ रुपए प्रतिमाह अर्पित करूंगा। आचार्यश्री ने कहा, 'ब्रज सेठ तुम्हारे हिसाब से यह बहुत कम है। तुम्हें अपना अनुदान बढ़ाना चाहिए।'

बिरजू सेठ ने अनुदान की रकम सात सौ रुपए प्रतिमास बढ़ाने की घोषणा की। वहाँ मौजूद और साधकों ने भी अपनी अपनी तरह से सहयोग अनुदान का संकल्प लिया। इस विमर्श के बाद सहस्रकुंडीय गायत्री महायज्ञ का संदेश व्यापक क्षेत्र में पहुँचाने के उपायों पर विचार होने लगा।

स्थिति और वय से परे

उन दिनों वृंदावन में एक संन्यासी भागवत का अंग्रेजी अनुवाद करने में लगे हुए थे। लेखन के साथ वे 'बैक टू गाडहेड' नामक पत्रिका भी प्रकाशित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर रहे थे। यह पत्रिका दिल्ली में छपती थी। इसके लिए उन्हें अक्सर दिल्ली आना जाना पड़ता था। रोज ही चक्कर लग जाता। वे सुबह की ट्रेन पकड़ते। दस ग्यारह बजे के आसपास दिल्ली पहुँचते और दिन भर छपाई संबंधी काम संभालने के बाद वापस वृंदावन आ जाते। आने जाने में उन्हें सात आठ घंटे का समय लग जाता था। उचित तो यह था कि वे दिल्ली में ही मुकाम बना लेते। लेकिन उनका संन्यासी मन वृंदावन छोड़ने के लिए किसी तरह भी तैयार नहीं होता।

उन संन्यासी का नाम स्वामी भक्तिवेदांत था। पिछली सदी के आठवें दशक में कृष्ण भक्ति का दुनिया भर में प्रचार करने और लाखों यूरोपीय लोगों को संकीर्तन में लगाने वाले इस संन्यासी को अविराम संघर्ष करना पड़ा था। पूर्व आश्रम में अभय नाम के इन महापुरुष को मार्गदर्शक सत्ता ने संन्यास का मार्ग अपनाने का निर्देश दिया था। एक सपना उन्हें बचपन से बार-बार आता रहता था। उस काल में उनके गुरु भक्ति सिद्धान्त सरस्वती उन्हें पुकारते और संन्यास ग्रहण करने के लिए कहते थे। उस समय तक अभय को अपने गुरु से साक्षात्कार नहीं हुआ था।

बहुत बाद में जाकर कलकत्ता में उनकी अपने गुरु से भेंट हुई। वहां भी उन्होंने संन्यासी बनने के लिए कहा। इसके साथ ही आदेश भी कि उपयुक्त समय आने पर पश्चिमी देशों में जाओ और वहां कृष्ण भावना का प्रचार करो। पचास साल आयु के बीत जाने के बाद वे भागवत के अंग्रेजी अनुवाद में जुटे थे। अपने गुरु के संदेश को अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगों में पहुँचाने के लिए वे एक पत्रिका प्रकाशित करने लगे थे। पचास वर्ष पार कर लेने और कुछ समय तक वानप्रस्थ रहने के बाद उन्होंने संन्यास लिया। गुरु ने जिस उपयुक्त समय के लिए कहा था, उसका बोध भी उन्हीं ने कराया था।

इन संन्यासी के बारे में किसी साधक ने आचार्यश्री से चर्चा छेड़ी। वह साधक स्वामी भक्तिवेदांत का जैसे परिचय दे रहे थे। आचार्यश्री को स्वामी जी के बारे में पहले से पता था। कुछ माह पहले आचार्यश्री और स्वामी भक्ति वेदांत मिले थे। स्वामीजी ने आचार्यश्री से अखंड ज्योति पत्रिका और उसकी व्यवस्था के बारे में पूछा था। हुआ यह था कि भक्तिवेदांत स्वामी 'बैक टु गाडहेड' का प्रकाशन अपनी जमा पूंजी लगा कर करते थे। उसे छपवाने के लिए दिल्ली आते जाते। पत्रिका तैयार हो जाती तो वे उसे भक्तों में बांट देते। लोग उस पत्रिका की कीमत भी देते थे लेकिन भक्तिवेदांत स्वामी इसकी अपेक्षा नहीं रखते। जो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मूल्य देकर पत्रिका लेते थे, उन्हें भी आदर से देते और जो एक पाई भी नहीं चुकाते उन्हें भी देते या डाक से भेजते थे। इस व्यवस्था के कारण जमा पूंजी जल्दी ही चुकने लगी। करीब साल भर में ही वह खर्च हो गई।

लोगों से दान या सहयोग इतना नहीं मिलता था कि पत्रिका को देर तक चलाया जा सके। जिस मुद्रक के यहां पत्रिका छपती थी, उसने भी हाथ जोड़ लिए। कहा कि पुण्य परमार्थ और अपनेपन के नाते कुछ रियायत की जा सकती है, लेकिन छपाई का खर्च वह खुद नहीं उठा सकता। भक्तिवेदांत स्वामी से आचार्यश्री की भेंट वृंदावन में ही हुई थी। संदर्भ कोई और था लेकिन चर्चा हुई तो पत्रिका का प्रसंग भी आ गया। आचार्यश्री ने संकेत किया कि पत्रिका नि:शुल्क वितरित नहीं करते तो अच्छा रहता। बिना मूल्य चुकाये हीरा भी मिलता हो तो लोग उसका मान नहीं करते। एक न्यूनतम शुल्क रखें। उससे पत्रिका का आर्थिक आधार भी तैयार होगा और खरीदने वाले लोग भी उसे पढ़ेंगे।

साधक जब भक्तिवेदान्त स्वामी के बारे में बता रहा था तो आचार्यश्री को उनसे हुई भेंट की याद आ गई। उन्होंने कहा कि भक्तिवेदांत स्वामी उच्चकोटि के संत हैं। वे पश्चिमी देशों में संकीर्तन और भगवद्भक्ति का प्रचार करेंगे। चोटी रखाए, जनेऊ पहने गोरे कृष्ण भक्त भारत आएंगे तो यहाँ भी लोगों में भक्तिभाव की लहर आएगी। उन्होंने स्वामी विवेकानंद का उदाहरण दिया। भारत में रहते हुए ही स्वामी विवेकानंद ने अद्वैत वेदांत का घूम-घूम कर प्रचार किया। उनकी शिक्षाओं को किसी ने ध्यान से नहीं सुना। स्वामीजी के गुरुभाई संन्यासीजन भी तप साधना के लिए अलग अलग दिशाओं में चले गये। बाद में स्वामीजी के अमेरिका से लौटने के बाद रामकृष्ण संघ की स्थापना हुई।

अमेरिका प्रवास से पहले भारत में रहते हुए स्वामीजी को धीरे धीरे सहयोग मिलने लगा था। लेकिन वह पर्याप्त नहीं था। शिकागो में हुए विश्व धर्म सम्मेलन में उनके व्याख्यानों की धूम मचने लगी तो भारत में भी उनके संदेश को-उनके महत्व को समझा गया।

उस साधक ने पूछा कि हम भारतवासियों को अपनी महिमा का बोध क्यों नहीं होता? आचार्यश्री ने उसकी बात बीच में ही रोकते हुए कहा हीन भावना का शिकार होने की जरूरत नहीं है। सदियों से हमारा देश विदेशी आक्रमणों का शिकार होता रहा है। कम से कम एक हजार साल से यहाँ बाहर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के लोग आते, हमला करते और लूटपाट मचा कर वापस चले जाते या यहाँ राज करते रहे हैं। हजार साल की गुलामी और उत्पीड़न सहकर भी हमारी संस्कृति बची रही। यहां के लोगों ने अपना मूल स्वरूप नहीं खोया। कोई बात तो है जो हमारी हस्ती तमाम आंधी तूफानों के बावजूद बची रही है। रही बात विदेशों में मान्यता मिलने के बाद यहाँ प्रतिष्ठा मिली तो इसे स्वाभाविक दोष के रूप में लेना चाहिए। एक समय आयेगा जब हमें अपने आत्मगौरव का बोध स्वयं ही होगा। हम किसी की मान्यता के मोहताज नहीं होंगे।

घर से मंदिर में

भक्तिवेदांत स्वामी और आचार्यश्री में निरंतर संपर्क था। वृंदावन की एक कोठरी में रहना छोड़कर राधा दामोदर मंदिर में आकर रहने लगे थे। एक संन्यासी को किसी मकान में रहने के बजाय मंदिर या आश्रम में रहना चाहिए। यूं तो वृंदावन के हर घर को मंदिर की संज्ञा दी जाती है। घर-घर में मंदिर हैं। भक्तिवेदांत स्वामी जब आवास बदलने की सूचना दे रहे थे तो आचार्यश्री ने कहा था कि वृंदावन में सोलह हजार मंदिर हैं महाराज। ये मंदिर लोगों ने घरों में ही बनाये हुए हैं। फिर आप जहां भी रहें वही मंदिर है। स्वामी जी ने हामी भरी और कहा कि राधा दामोदर मंदिर में जाने का एक विशेष उद्देश्य है। वह जीव गोस्वामी प्रभु के उपास्यदेव हैं। उनकी समाधि भी है वहां। उनका संसर्ग मिलेगा। कितना मधुर रहेगा। कहते कहते भक्तिवेदांत स्वामी की आंखे मुंदने लगी थीं जैसे वे जीव गोस्वामी के सामने ही बैठे हों। वे कुछ देर के लिए मौन भी हो गए। जैसे समाधि की अवस्था में पहुंच गए है।

फिर वे सहज स्थिति में आये तो कहने लगे आचार्य प्रवर भागवत शास्त्र से आपका भी तो संबंध रहा है। आपके पूर्वज इस महान ग्रंथ का प्रवचन करते रहे हैं। आप भी कुछ कहिए न। कहते कहते भक्तिवेदांत स्वामी भावविह्वल होने लगे। आचार्यश्री ने कहा 'भगवान ने प्रत्येक व्यक्ति को विशिष्ट दायित्व दिए हैं। जिस शास्त्र के व्याख्या विस्तार का संदेश आपके गुरुदेव ने दिया है, उसी शास्त्र के बीज मंत्र की आराधना हम लोग कर रहे हैं। अपनी संस्कृति और धर्म परंपरा की सेवा में और लोग भी लगे हैं। आप निश्चिंत होकर अपना काम करें।'

स्वामी जी राधा दामोदर मंदिर में कुछ ही समय तक रहे थे। वे भागवत को निष्कलंक वैदिक शास्त्र कहते थे और मानते थे कि यही एक मात्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रामाणिक वैष्णव ग्रंथ है। उनकी इस मान्यता को संत समाज अपने साधन मार्ग में दृढ़ निष्ठा के रूप में देखते थे। स्वामी जी भागवत की कोई नई व्याख्या लिखने की योजना पर काम नहीं कर रहे थे। उनका उद्देश्य पूर्ववर्ती वैष्णव आचार्यों की लिखी व्याख्याओं का समन्वय करते हुए, उनका अंग्रेजी अनुवाद करना था। इस काम के लिए वृंदावन की तुलना में दिल्ली उपयुक्त स्थान था। वहां छपाई और कागज आदि की सुलभ व्यवस्था थी। संदर्भ और प्रमाण जुटाने के लिए अच्छे पुस्तकालय भी थे। कालांतर में स्वामी भक्तिवेदांत दिल्ली चले गये। वहां चांदनी चौक क्षेत्र की एक घनी आबादी वाली बस्ती छीपीवाड़ा में रहने लगे। यहां भी उन्हें राधाकृष्ण मंदिर के परिसर में एक कमरा मिल गया था। वहां जाने से पहले भक्तिवेदांत स्वामी आचार्यश्री से मिले थे। दोनों ने अपनी अगली योजनाओं पर देर तक चर्चा की थी। भक्ति वेदांत स्वामी बाद में भी वृंदावन आते जाते, लेकिन उनका ज्यादातर समय दिल्ली में ही बीत रहा था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मंथन और निर्धारण

सहस्रकुंडीय महायज्ञ में अभी साल सवा साल बाकी था। यज्ञ में उन्हीं लोगों के लिए आहुतियां देने की व्यवस्था की गई थी जो सहस्रांशु जप साधना में भी शामिल थे। लेकिन उस अवसर पर होने वाले सामान्य कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए खुला आह्वान किया जाना था। यह आह्वान व्यापक क्षेत्र में पहुँचाने के लिए अगले बारह महीनों में चौबीस जगह गायत्री महायज्ञ और सम्मेलन करना तय हुआ। गायत्री परिवार सम्मेलन में आयोजन लगभग सभी प्रांतों में होना थे लेकिन आधे से ज्यादा उत्तर भारत में निश्चित हुए थे। कारण कि उत्तर भारत में ही तब तक गायत्री परिवार की शाखाएँ ज्यादा गठित हुई थीं।

आचार्य श्री मानते थे कि दक्षिण में भी इसी तरह परिवर्तन का संदेश पहुंचना चाहिए। वरिष्ठ कार्यकर्त्ता सत्यभक्त ने उस दिन बातो-बातों में कहा कि उत्तर भारत में आंदोलन का जितना विस्तार हो गया वह पर्याप्त है। दक्षिण में आयोजन नहीं हो पा रहे हैं तो उसकी ज्यादा चिन्ता नहीं करना चाहिए। जिस समय उन्होंने दक्षिण भारत में प्रचार को लेकर टिप्पणी की, उस समय तपोभूमि में और कार्यकर्त्ता भी थे। उन्होंने इस टिप्पणी या परामर्श पर आपत्ति की। नरोत्तम शर्मा नामक एक कार्यकर्त्ता ने कहा कि क्या हमें हाथ पर हाथ धरे बैठ जाना चाहिए। आंदोलन पूरे भारत में नहीं फैलेगा तो हम सिमटे सिकुड़े ही रह जाएंगे।

और कार्यकर्त्ता कुछ कहते इससे पहले ही आचार्यश्री ने हस्तक्षेप किया। उन्होंने कहा कि पंडित जी का आशय प्रचार रोक देने से नहीं है। वे सिर्फ यह कह रहे हैं कि हमें अभी सहस्रकुंडीय महायज्ञ पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। उसी गोष्ठी में आचार्यश्री ने कहा कि जिन इलाकों में महायज्ञ और सम्मेलन नहीं हो पा रहे हैं, वहां तीर्थयात्रा का आयोजन किया जाए। पंडित जी का भी यही मानना है। बल्कि यह सुझाव उन्हीं की तरफ से आया है। आचार्यश्री सत्यभक्त को पंडितजी कहकर बुलाते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नरोत्तम शर्मा समेत मार्कंडेय, बद्री प्रसाद पहाड़िया, बिहारीलाल, शंभू सिंह आदि कार्यकर्त्ता सत्यभक्त की ओर देखने लगे। उनकी मुखमुद्रा ऐसी थी जैसे पूछ रहे हों कि इसका स्वरूप क्या होगा? बिहारी लाल ने पूछ ही दिया, 'तीर्थों में पहले ही धार्मिकता का माहौल होता है। वहां प्रचार करने का क्या लाभ? दूसरे वे हैं भी कितने। छोटे-बड़े तीर्थों की संख्या मुश्किल से सौ डेढ़ सौ होगी।'

तीर्थयात्रा का अर्थ कुछ खास प्रसिद्ध जगहों की यात्रा करना नहीं है, सत्यभक्त ने कहा। बिहारी लाल ने आचार्यश्री से पूछा था लेकिन आचार्यश्री ने इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए सत्यभक्त से कहा था। उनका संकेत पाकर ही सत्यभक्त अपनी बात कहने लगे थे। उन्होंने कहा कि तीर्थयात्रा का उद्देश्य पुण्य लाभ करना है। अपने आपको पवित्र करने और समाज में पवित्रता का भाव बढ़ाने के लिए ही चार धाम, सात पुरी, शक्तिपीठ और देवस्थानों की यात्रा की जाती है। आचार्यश्री जिस यात्रा का निर्देश दे रहे है, वह अपने आसपास के क्षेत्रों की ही धर्मप्रचार यात्रा होगी। जरूरी नहीं कि किसी स्थान विशेष को ही केन्द्र बनाया जाए। इसे चाहे तो परिक्रमा भी कह सकते हैं। मंदिर या तीर्थ के चारों ओर जिस पवित्र भाव से परिक्रमा करते हैं, उस भाव से अपने क्षेत्र की यात्रा करें और उन भावों को भी फैलाए। यह काम हो सके तो मानना चाहिए कि हमारा उद्देश्य पूरा हो गया।

उस गोष्ठी में माताजी भी थीं। चर्चा को चुपचाप सुन रही थीं। यात्रा या परिक्रमा के स्वरूप पर बात आगे बढ़ी तो कहा गया कि यात्रा के समय कुछ साहित्य भी रखना चाहिए। वहां मौजूद साधक अपने सुझाव दे रहे थे। एक सदस्य सुझाव देता तो दूसरा कोई उसकी कठिनाई की चर्चा छेड़ देता। देर तक यात्रा का स्वरूप उभरता दिखाई नहीं दिया। माताजी ने मौन तोड़ा और कहा 'साहब (आचार्यश्री) एक यात्रा का आयोजन कर ही लिया जाए। उसमें और साधकों को भी शामिल कर लें । यात्रा के अनुभव से कठिनाइयां भी पता चल जाएगी और कुछ अभ्यास भी हो जाएगा।'

आचार्यश्री ने इस सुझाव का स्वागत किया। कहा कि दूर न जाकर व्रज के ही किसी क्षेत्र की परिक्रमा कर लें। दो तीन दिन में यह हो जाएगी। प्रयोग में यहां मौजूद सदस्यों के अलावा और लोगों को भी आमंत्रित किया जा सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वे साधक अपने यहां धर्मयात्रा का आयोजन करें। उसी गोष्ठी या विमर्श में महावन की यात्रा का निश्चय हुआ।

महावन। प्राचीन विख्यात नाम गोकुल। सावन मास की सप्तमी तिथि थी। मथुरा से लगभग चौदह किलोमीटर दूर एक छोटा सा गांव। गोवर्धन जाते हुए यह गांव रास्ते में आता है। मुश्किल से दो हजार लोग बसते होंगे। यात्रा के लिए तब बैलगाड़ी, तांगा और छकड़ा जैसे वाहन मिलते थे। लोग साइकिलों से भी यात्रा करते थे और चहल कदमी करते हुए पैदल भी जाया जा सकता था। आठ तीर्थयात्री जुटे थे। एक स्वयं आचार्यश्री। दो तांगों का प्रबंध किया गया। सुबह पांच बजे यात्रा शुरू हुई। इस यात्रा में नरोत्तम शर्मा, यशोवर्धन, अग्निमित्र, जमुना प्रसाद गुप्ता, आनंद कुमार, आनंदी लाल चैनपुरिया और श्याम सुंदर शामिल हुए थे। सभी यात्रियों ने ब्रजक्षेत्र की पहचान जताने वाला तनीदार कुर्ता और धोती पहली हुई थी।

मथुरा और गोकुल के बीच में एक गांव आता है रावल गांव। यात्री दल ने पहला पड़ाव यहां किया। कहते हैं कि इस गांव में कृष्ण प्रिया राधा का जन्म हुआ। उनके पिता राजा वृषभानु की अपनी राजधानी बरसाना में थी। बरसाना यहाँ से करीब तीस किलोमीटर दूर है। राधा का पालन पोषण बरसाना में हुआ। उनकी लीलाएँ अपने पैतृक ग्राम और क्षेत्र में ही केन्द्रित रहीं। इसलिए बरसाना को ज्यादा महत्त्व मिला। बहुत कम लोग जानते हैं कि वे रावल गांव में जन्मी थीं। इसलिए यात्री यहां आते भी कम हैं।

रावल गांव में राधाकृष्ण का एक मंदिर है। छोटे बड़े और भी कई मंदिर हैं, लेकिन गोकुल वल्लभ संप्रदाय के लोग इसे ही प्रमुख मानते हैं। यात्री दल ने पहला पड़ाव मंदिर के पास ही रखा। वहां करीब एक घंटे तक रुके। आगंतुकों को कुछ देर देखते रहने के बाद उन्होंने संकीर्तन शुरु किया। हरि हरि बोल की धुन गाते हुए ये लोग मंदिर आने वालों को नमस्कार भी करते जाते थे। अभिवादन करते देख चार छह लोग रुके। यात्रियों को देखने लगे।

आचार्यश्री ने उन्हें रुका देख चर्चा छेड़ी। कहा, 'यह मंदिर राधारानी का जन्मस्थान है। भगवान कृष्ण के हृदय में निवास करने वाली उनकी लीला सहचरीजी के जन्म स्थान की यह दशा देखी नहीं जाती।

वहां खड़े ग्रामीण अवाक से देखने लगे। किसी को कुछ सूझा नहीं कि क्या उत्तर दें। एक ने साहस बटोरा और जवाब दिया कि हमारे पास साधन नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं। आप लोग समर्थ हैं। स्वयं कोई हल ढूंढ़िये। आचार्यश्री ने कहा, 'हम लोग साधन संपन्न नहीं है। अपनी आराध्या की मान प्रतिष्ठा के लिए साधनों की आवश्यकता नहीं है। मन में श्रद्धा भावना हो तो साधन भी जुट ही जाते हैं। इंद्र के कोप से बचने के लिए ग्वाल बालों ने गोवर्धन धारण किया था या नहीं।'

वहां खड़े ग्रामीणों में से एक ने उपहास के भाव में कहा, 'ग्वाल बालों ने गोवर्धन नहीं उठाया था, भगवान कृष्ण ने उठाया अपनी कानी अंगुली पर।' आचार्यश्री ने इस उपहास की परवाह नहीं की। उन्होंने कहा कि ग्वाल बाल तैयार नहीं होते तो भगवान कृष्ण कदाचित ही तैयार होते। उन्होंने गांव वालों को उनका दायित्व पहले ही बता दिया था। वचन भी ले लिया था कि वे भगवान के संकल्पों को समझेंगे, उन्हें पूरा करेंगे।

कुछ देर रुक कर आचार्यश्री ने कहा, 'मनुष्य तो निमित्त मात्र होता है। वह निमित्त बनने को तैयार हो जाए तो भगवान की क्रियाशक्ति सब काम करा लेती है।' उनके इस परामर्श को सुनकर उपहास करने वाले ग्रामीण ने भी गरदन हिलाई और ग्रामीण भी सकारात्मक दिखाई दिए। वहीं उन्होंने संकल्प लिया कि मंदिर की मरम्मत कराएंगे। यात्री दल ने गांव में फेरी लगाई। रावल गांव से बाहर निकलते ही एक बंगाली महिला मिली। वह खंजरी बजा रही थी और हरि नाम का संकीर्तन कर रही थी। यात्री दल को देख कर वह रुक गई और बोली, 'आप लोग भागवत सुनने जा रहे हैं क्या? अपने तांगे में मुझे भी स्थान दीजिए।'

शास्त्र और गुरु

कहते हुए वह पीछे वाले तांगे की तरफ बढ़ गई। उसमें चार साधक बैठे थे। महिला ने यह भी नहीं बताया कि भागवत कहां हो रही है? आचार्यश्री और अन्य सदस्यों ने उसका स्वागत किया। वह अपने आप ही बोली कि मेरा नाम मीरा है। नदिया की रहने वाली हूँ। बचपन से ही विधवा हो गई थी। घर के लोग यहाँ छोड़ गये। राधाकृष्ण के सिवा कोई चारा नहीं। शुरु में बहुत डर लगता था। आत्महत्या करने की इच्छा भी होती थी। दो तीन बार कोशिश की लेकिन राधारानी ने बचा लिया। मीरा कहे चली जा रही थी। आनंद कुमार, चैनपुरिया, जमुना प्रसाद और नरोत्तम शर्मा उसकी बात को ध्यान से सुन रहे थे। उन्हें लग रहा था कि मीरा जो कह रही है, उसका एक एक शब्द सही है। बात ज्यादा गंभीर हुई जा रही थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नरोत्तम शर्मा ने रुख बदलने के लिए कहा, 'मीरा तुम राधा की भक्ति करती हो लेकिन भागवत में तो राधा का कहीं नाम भी नहीं है। किस राधा की पूजा करती हो।'

'मुझे नहीं मालूम रे बाबा,' मीरा ने चौंकते हुए से कहा, उसी लहजे में वह आगे कहने लगी, 'शास्त्रों की बातें हम नहीं जानती। हमें गुरुजी ने मार्ग बताया। उन्होंने राधा कृष्ण की आराधना सिखाई और उससे जीने का सहारा मिला।'

गुरुजी से आशय गोमती नामक एक संन्यासी महिला से था। वह भी मीरा की तरह ब्रज क्षेत्र में आकर बसी थी या यों कहें कि लाकर छोड़ दी गई थी। ब्रज में लाकर छोड़ते वक्त गोमती की उम्र बारह तेरह साल थी। लेकिन घर वालों ने उसे विधवा होने के कारण यहां नहीं भेजा था। चार पांच वर्ष की उम्र में ही कृष्ण भक्ति के मार्ग पर चल पड़ी थी। कहती थी कि उसे भगवान कृष्ण के दर्शन होते हैं। घर के लोग उसके भक्तिभाव से परेशान थे। बहुत समझाया बुझाया। डांटा डपटा और कभी कभार प्रताड़ित भी किया लेकिन उसका भक्ति भाव छूटा नहीं।

उसे विश्वास के आधार पर ही चुनौती दी जाने लगी कि भक्त बनती हो तो कोई चमत्कार दिखाओ। चुनौती के जवाब में उसने कहा कि कृष्ण की बनाई हुई यह दुनिया क्या कम बड़ा चमत्कार है। विवाह हुआ। गृहस्थ जीवन में भी वही भक्तिभाव छाया रहा। ससुराल वालों ने कुछ समय तक सहन किया। निबाहा। सात आठ महीने बाद वे गोमती को मायके छोड़ गये। मायके वालों ने उसे वृंदावन ले जाकर छोड़ दिया। गोमती वृंदावन से बरसाना आ गई और कुटिया बनाकर रहने लगी। चौरासी खंभा मंदिर के पास वह पांच छह वर्ष रही।

मीरा अपने गुरु को याद कर रही थी तब नरोत्तम शर्मा ने पूछा कि तुम्हारे गुरु का आश्रम तो अब भी होगा। सुनकर मीरा हंसी। कहने लगी कि जब नंदरायजी का भवन नहीं रहा तो हमारे गुरु की कुटिया कहां सुरक्षित रहेगी, उनका आश्रम हमारे हृदय में है। फिर उसने स्वगत ही बताया कि उनके भवन के पास ही भागवत हो रही है। तीस पैंतीस मिनट दौड़ने के बाद महावन आ गया। मीरा को चौरासी खंभा मंदिर के पास उतार कर आठों यात्री भी वहीं रुके। मंदिर देखने लगे। आचार्यश्री ने कहा कि कभी यहां नंदरायजी का भवन था। नंदराय यानी भगवान कृष्ण के अभिभावक पिता। वसुदेव भगवान कृष्ण को सीधे यहीं लाये थे। लोगों का ऐसा विश्वास है। मंदिर में काफी लोग आ जा रहे थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महावन या गोकुल की आबादी ज्यादा नहीं है। जितने घर हैं, उनसे ज्यादा मंदिर और सरोवर हैं। अब तो पचास प्रतिशत सरोवर, कूप और कुंड सूख गए। देवालयों का अस्तित्व भी खंडहर में बदल गया। उन स्थानों का जिक्र करते हुए आचार्यश्री साथ आये साधकों को लेकर ब्रह्मांडघाट, विष्णुकुंड, नंदकूप, चिंताहरण, सरस्वती कुंड, कर्णकूप, नारद स्थान, पूतना पातन आदि स्थानों पर गये। लगभग सभी स्थानों पर श्रद्धालु जमा थे। कहीं पांच सात तो कहीं आठ दस। उन लोगों से चर्चा शुरु होती। कुशल क्षेम पूछते। ब्रजक्षेत्र की स्थिति के बारे में उनकी प्रतिक्रिया जानते और अपने सांस्कृतिक गौरव को वापस अर्जित करने का भाव जगाते।

अपनी गौरव गरिमा को कैसे वापस लायें, क्या करें आदि जिज्ञासाओं से गुजरते हुए आचार्यश्री मथुरा में होने वाले सहस्रकुंडीय गायत्री महायज्ञ की सूचना देने लगते। उस आयोजन में आने के लिए निमंत्रित करते। अनुरोध करते कि यज्ञ में आहुति देने के लिए स्वयं भी नियमित गायत्री जप करें। एक माला, दो माला, पांच, सात या दस माला। जैसी स्थिति हो उतना जप करें। अपना नाम पता गायत्री तपोभूमि मथुरा में लिखा दें। जरूरी नहीं कि अभी ही संकल्प किया जाए। घर लौट कर भी संकल्प भेजा जा सकता है। इतना कह कर साथ लाया परिपत्र बांट देते।

साथ चल रहे साधक दो तीन अवसरों पर तो देखते रहे। फिर उन्होंने भी स्वतंत्र रूप से संपर्क आरंभ कर दिया। लोगों से बात करते, जिज्ञासा जगाने, कसक उत्पन्न करने और महायज्ञ की सूचना देने का अभ्यास दो दिन में ही प्रगाढ़ हो गया। तपोभूमि लौटते हुए आठों साधकों का मुखमंडल आत्म विश्वास से दमक रहा था।

तीर्थराज पुष्कर

प्रयाग की तरह पुष्कर के साथ भी 'राज' शब्द लगता है, पुष्कर राज। सहस्रकुंडीय महायज्ञ से पहले जिन चौबीस स्थानों पर गायत्री यज्ञ और सम्मेलन होने थे, उनमें पुष्कर भी एक था। उन पांच स्थानों में तो अन्यतम ही कह सकते हैं, जहां आचार्यश्री को जाना था। राजस्थान के तमाम कार्यकर्त्ताओं को यहां बुलाया गया था। अन्यतम इसलिए भी कि भारत में ब्रह्मा का एक मात्र मंदिर यहीं है। पौराणिक आख्यानों के अनुसार इसी स्थान पर गायत्री का प्रादुर्भाव हुआ। ब्रह्मा के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मंदिर से कुछ हट कर पहाड़ी की चोटी पर उनका मंदिर है। सरोवर के एक पार्श्व में सावित्री का मंदिर है। गायत्री आदिशक्ति का अध्यात्म पक्ष और सावित्री उसी महाशक्ति के लौकिक का अधिष्ठान। बीच में सृजन के अधिष्ठाता देव ब्रह्मा।

संवत दो हजार सोलह की कार्तिक पूर्णिमा से तीन चार दिन पहले आचार्यश्री यहां पहुँचे। तब पुष्कर का प्रसिद्ध कार्तिक मेला भी चल रहा था। सैकड़ों लोग यज्ञ सम्मेलन में भाग लेने आये थे। सहस्त्रकुंडीय महायज्ञ के लिए साधक सहयोगी तैयार करने का संकल्प लेना भी आयोजन में सम्मिलित होने का एक उद्देश्य था। आचार्यश्री का सान्निध्य तो एक विशिष्ट कारण था ही।

पांच सात प्रमुख कार्यकर्ता आठ दस दिन पहले ही पुष्कर पहुँच गये। आचार्यश्री ने आते ही लगभग दो घंटे तक उनसे तैयारियों के संबंध में बातचीत की। कुछ देर विश्राम के बाद वे पुष्कर तीर्थ का अवलोकन करते निकले। आचार्यश्री का मत था कि अजमेर से पुष्कर के बीच दस ग्यारह किलोमीटर का जो रास्ता है उसे पैदल ही पार किया जाय। पहाड़ी को नाग पर्वत कहते हैं। समय और स्थिति को देखते हुए वह विचार स्थगित कर दिया। पहाड़ी योग की धारणा के अनुसार तीर्थ का मेरुदंड है। जिस स्थापना के कारण तीर्थ का नाम 'पुष्कर' पड़ा, वह मेरुदंड कमल के ऊपर खिला सहस्त्रदल कमल है। पद्मपुराण में ब्रह्मा के हाथ से कमल का फूल गिरने, वहां सरोवर बन जाने और उसी स्थान को यहां के लिए चुन लेने की घटना का यौगिक अर्थ है।

इलाका सूखा है। पानी कम बरसता है लेकिन तीनों सरोवर लबालब भरे थे। तीनों सरोवरों में प्रमुख प्रधान के किनारे आचार्यश्री रुके। वे घुटनों घुटनों गहरे पानी तक गये और आचमन आदि कर वापस आ गये। कुछ देर के लिए सरोवर के किनारे चुपचाप बैठ गए। साथ आये कार्यकर्त्ताओं ने उनसे कुछ कहना चाहा। आचार्यश्री ने उन्हें चुप रहने का संकेत किया। पुष्कर का मेला शुरु हो गया था और लोगों की चहल पहल बढ़ने लगी थी। वे सरोवर तक भी आते। लेकिन आचार्यश्री जिस स्थान पर बैठे थे, वहां एकांत था। इक्का दुक्का लोग ही वहां आ जा रहे थे। वे भी चुपचाप स्नान आचमन आदि कर चले जाते। किसी को कुछ कह नहीं रहे थे।

आचार्यश्री देर तक सरोवर के किनारे बैठे रहे। वे बीच-बीच में सामने ब्रह्मा के मंदिर की ओर देख लेते। ब्रह्मा का मंदिर ऊंचाई पर स्थित था। मंदिर के संबंध में पौराणिक आख्यान है कि इस क्षेत्र में वज्रनाभ नामक राक्षस रहता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

था। उसके आतंक को समाप्त करने के लिए ब्रह्मा ने यज्ञ करने की ठानी। पौराणिक उल्लेखों के अनुसार असुरों का संहार करके ही उन्हें नष्ट किया जाता है। ब्रह्मा ने यज्ञ का निश्चय किया। वे कमल लेकर इस क्षेत्र में यज्ञ के लिए आये। वज्रनाभ ने इस अनुष्ठान में बाधा डालने की कोशिश की। ब्रह्मा ने उसे सावधान किया, चेतावनी दी और समझाया भी सही। लेकिन वज्रनाभ पर इसका कोई असर नहीं हुआ। वह उत्पात मचाता ही रहा। ब्रह्मा ऋत्विज की भूमिका छोड़कर उठे। उन्होंने अपने हाथ के कमल एक ओर रखे और वज्रनाभ को मार दिया।

उनके हाथ में तीन कमल थे। बड़ा फूल जिस स्थान पर गिरा, वहाँ ज्येष्ठ पुष्कर सरोवर बना। बाकी दो पद्मस्थानों पर बूढ़ा और छोटा पुष्कर बना। तीनों सरोवर इसी नाम से पुकारे जाते हैं। ज्येष्ठ पुष्कर के किनारे बैठ कर आचार्यश्री के मानस में यह वृत्तांत उभर रहा था। कुछ देर बैठे रहने के बाद वे उठे। कुछ ही कदम पर क्षेत्र के कार्यकर्त्ता भी चुपचाप बैठे थे। वे भी उठ कर साथ हो लिए। आचार्यश्री बिना कुछ कहे ब्रह्माजी के मंदिर की ओर बढ़ने लगे। वे चुपचाप चले जा रहे थे। साधक कुछ कहना चाहते थे। लेकिन आचार्यश्री ने चुप्पी साध रखी थी। उनके मौन को देखकर साधकों को अपनी इच्छा दबानी पड़ रही थी।

मंदिर की सीढ़ियां चढ़ गये। भीतर प्रवेश किया। वहां देव दर्शन के समय भी वे चुप ही रहे। ब्रह्मा के विग्रह को प्रणाम करते हुए उनके दांई और स्थित सावित्री का दर्शन किया। उसके बाद बांई दिशा में स्थित गायत्री के विग्रह को गौर से देख रहे थे तो एक विचित्र घटना घटी। लगभग विलाप सी करती हुई एक महिला उनके पास आई और चीखने चिल्लाने लगी। वह क्या कह रही थी, कुछ समझ नहीं आ रहा था। आचार्यश्री उसे निरीह भाव से देखने लगे। चीखती चिल्लाती आई महिला कहीं हमला न कर दे, इस डर से साथ आये कार्यकर्ताओं ने आचार्यश्री के आसपास घेरा बना लिया। महिला का विक्षिप्त विलाप रोकने के लिए वे पूछने लगे कि क्या हुआ माई? क्या चाहती हो?

साधकों की बात वह समझ नहीं पा रही थी। उसका रोना धोना और चीखना चिल्लाना भी किसी को समझ नहीं आ रहा था। बहरहाल वह चिल्लाये जा रही थी। बीच में कुछ आक्रामक भी दिखाई देने लगती। कुछ ही मिनट यह दृश्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चला। शोरगुल सुनकर महंत के कार्यालय से कुछ कार्यकर्ता निकल कर आये। उन्होंने उस महिला को संभाला। संभालते हुए वे बता भी रहे थे कि यह पागल नहीं है और न ही किसी को परेशान करती है। कभी कभार इस पर दौरा पड़ता है।

विक्षिप्त सुनंदा

आचार्यश्री ने उसके बारे में जानना चाहा। मंदिर के कार्यकर्ता विशेष जानकारी नहीं दे सके। प्रबंधकों ने बताया कि उस महिला का नाम सुनंदा है। लोग उसे राजमाता कहते हैं। वह आबू के पास किसी जागीरदार घराने की कुलीन महिला है। विक्षिप्तप्राय अवस्था में भी उसकी राजसी ठसक दिखाई देती थी। उसके कपड़े साफ सुथरे थे। विलाप करते हुए वह रोष भी जता रही थी लेकिन उसकी भाषा में मर्यादा थी। उसने अपशब्दों का कहीं प्रयोग नहीं किया था।

सुनंदा नामक उस महिला के साथ एक त्रासदी हुई थी। अपने परिवार में रहते हुए उसने किसी तांत्रिक के कहने पर गायत्री उपासना आरंभ की थी। विधिवत उपासना आरंभ करने के बाद तांत्रिक ने उसे वाममार्गी दीक्षा दे दी। सुनंदा के मन में अपने परिवार पर वर्चस्व प्राप्त करने की दुर्बलता आ गई थी। वह निस्संतान थी, इसलिए भी शंका रहती थी कि घर परिवार पर उसका नियंत्रण नहीं है। उसकी उपेक्षा हो रही है। तांत्रिक ने इसका लाभ उठाते हुए सुनंदा को वाममार्गी जाल जंजाल में उलझाया। एक बार वह फिसली तो गिरती ही चली गई।

दो साल पहले सूर्यग्रहण की रात को उसने तांत्रिक के कहने पर कोई हवन किया। हवन पूरा हुआ और उसके साथ ही मानसिक संतुलन भी गड़बड़ा गया। उसके बाद विक्षिप्त सी वह पुष्कर आ गई। यहीं रहने लगी। ब्रह्मा के मंदिर में रोज दर्शन करने आती है। मंदिर की दोनों दिशाओं में विद्यमान सावित्री और गायत्री के मंदिरों में भी नियमित दर्शन करने जाती है। सुनंदा के परिवार वाले ही उसकी देखभाल करते हैं। पुष्कर में रहने की व्यवस्था वही करते हैं। नौकर चाकर रखे हुए हैं और परिवार का कोई न कोई सदस्य भी नियमित रूप से यहां आता रहता है।

साथ आये साधकों ने प्रबंधकों को आचार्यश्री का परिचय दिया। उपद्रव की सूचना सुनंदा के भतीजे को मिल गई थी। वह मंदिर चला आया था

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और अपनी काकी (चाची) के व्यवहार के लिए आचार्यश्री से क्षमा मांगने लगा था। उस युवक का नाम था प्रताप सिंह। परिचय पाने के बाद आचार्यश्री ने कहा कि प्रयत्न करो तो तुम्हारी काकी साहब स्वस्थ हो सकती हैं। पूछने पर उपाय भी बताया कि यहाँ हो रहे गायत्री महायज्ञ में उन्हें बिठाओ और नियमित रूप से गायत्री की उपासना करने दो। चालीस दिन में वह पूर्ण स्वस्थ हो जाएगी।

प्रताप सिंह आसानी से तैयार नहीं हुआ। पुष्कर में गायत्री और सावित्री की कथाएं बड़ी विचित्र हैं। समझ में नहीं आती। फिर इसकी आराधना ने ही तो काकी साहब का दिमाग खराब किया। हम जोखिम नहीं ले सकते। आचार्यश्री ने निर्णय प्रताप सिंह पर ही छोड़ते हुए समझाया कि गायत्री आद्यशक्ति हैं। वेदमाता हैं। उसकी उपासना में अनिष्ट का कोई भय नहीं हैं। औषधियां रोगी को जीवन देती हैं लेकिन उन्हें तैयार करने की विधि विषाक्त हो तो वैद्य को भी कुष्ठरोगी बना देती हैं।

समझाने से प्रताप सिंह पर थोड़ा असर हुआ। आचार्यश्री ने कहा हजारों लाखों लोग गायत्री की उपासना करते हैं। किसी का अनिष्ट नहीं हुआ। तुम्हारी काकी साहब से ही भगवती को क्या बैर था? इन बातों ने प्रतापसिंह का मन बदल दिया। आचार्यश्री ने प्रयोग के तौर पर सुझाव दिया कि सामने गायत्री मंदिर है। वह भारत में मौजूद इक्कावन शक्तिपीठों में है। सती की दोनों कलाइयां (मणिबंध) यहां गिरी थीं। जाओ। श्रद्धा से वहां तुम खुद अपनी काकी मां की कलाई में रक्षा सूत्र बांधकर आओ। देखो सुधार के लक्षण तुरंत दिखाई देने लगेंगे। प्रताप सिंह को थोड़ा भरोसा बना। उसने गायत्री मंदिर में रक्षासूत्र बांध कर लाने के बाद सुनंदा को यज्ञ में शामिल करने का भी निश्चय कर लिया। आचार्यश्री के शिविर का पता ठिकाना भी उसने पूछ लिया था।

ब्रह्मा मंदिर से उतर कर आचार्यश्री सरोवर के दूसरी ओर स्थित सावित्री के मंदिर में गये। रास्ते में किसी कार्यकर्ता ने आकर बताया कि अजमेर से पंडित जयदेव शर्मा भी यज्ञ में आने वाले हैं। वे आर्यसमाजी थे। उन्होंने वेदों का अनुवाद किया था। अनुवाद सुबोध था। कोई भी अध्ययनशील व्यक्ति उस आधार पर वैदिक वाङ्मय में प्रवेश कर सकता था। आचार्यश्री ने उन्हें सम्मान सहित आने देने की बात कही। थोड़ा सा विनोद भी किया कि कहीं शास्त्रार्थ करने तो नहीं आ रहे।

सावित्री मंदिर दूर था। करीब दो मील चलना पड़ा। इसमें एक तिहाई रास्ता तो रेतीला था। बाकी चढ़ाई थी। मंदिर तक जाने के लिए सीढ़ियां बनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हुई थीं। सीढ़ियों की हालत खस्ता थी लेकिन उन्हें चढ़ते हुए सुखद लगता था। पुष्कर के सरोवर मंदिर और धर्मशालाओं का विहंगम दृश्य दिखाई देता था। इस रेतीले रेगिस्तान में झीलों के कारण हरियाली भी थी। देखकर मन प्रसन्न हो उठता। आचार्यश्री इन दृश्यों का आनंद लेते हुए चल ही रहे थे कि ऊपर से कुछ युवा हंसी ठिठौली करते हुए आते दिखाई दिए। वे जोर जोर से बातचीत कर रहे थे। उनके स्वर में उपहास का भाव था। शुरू में उनके शोर शराबे पर ध्यान नहीं गया। कुछ शब्द कानों में पड़े तो लगा कि वे मंदिर की व्यवस्था पर कोई टिप्पणी कर रहे हैं।

महिलाएं ही अधिकारी

आचार्यश्री ने उनकी बातों पर थोड़ा गौर किया। उन्हें ध्यान देते देख किसी साधक ने पूछ ही लिया कि मंदिर में क्या हुआ। लड़कों ने हैरानी जताई कि अजीब मंदिर है। कई देव स्थान देखे। देवियों के मंदिर भी। कई जगह औरतों को पूजा करने की मनाही है। कई जगह नहीं भी है। पुरुषों के लिए कहीं मनाही नहीं है। यहां पुरुषों को पूजा का अधिकार नहीं है। सिर्फ महिलाएं ही पूजा कर सकती हैं। कहते कहते युवक ठठा कर हंस दिए। आगे से पूछ कर मंदिर जाया करेंगे। उन्हीं में से एक युवक ने कहा और सारे युवक फिर खिलखिलाए। ठहाका मारते हुए वे सीढ़ियां उतर गये।

मंदिर में सावित्री की तेजोमय प्रतिमा के दर्शन हुए। वहां पूजा और आंतरिक व्यवस्था पर महिलाओं का ही अधिकार है। एक साधक ने इस व्यवस्था पर टिप्पणी की। कहा, क्या इसलिए कि सावित्री सती थी और वह सत्यवान के अलावा किसी की छाया भी नहीं पड़ने दे सकती थी। आचार्यश्री ने इस टिप्पणी का कोई उत्तर नहीं दिया। वे चुप ही रहे। साधकों का यह दल अपने मार्गदर्शक के साथ फिर चुपचाप ऊपर चढ़ता गया।

कीरत राम सीढ़ियां गिनता हुआ आ रहा था। उसने मंदिर के द्वार में प्रवेश करते ही कहा तीन सौ साठ सीढ़ियां हैं। एक और साथी ने कहा वर्ष में तीन सौ साठ दिनों की तरह। हर दिन के लिए एक सीढ़ी। सावित्री है भी सूर्य भगवान की पुत्री। इन चर्चाओं में आचार्यश्री रुचि नहीं ले रहे थे। वे चुपचाप प्रतिमा का दर्शन कर रहे थे। प्रतिमा तेजोमयी थी। कुछ क्षण गौर से देखने के बाद उन्हें लगा कि प्रतिमा का पूजा विधान संभवतः लुप्त हो गया है। लुप्त नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हुआ है तो भी किंचित क्षेपक आ गये हैं। वे प्रतिमा के सामने कुछ देर ध्यानस्थ हो कर बैठे। साथ आए साधक भी आसन लगा कर जप करने लगे। इस बीच कुछ महिलाएँ मंदिर में आई और पूजा कर चली गई।

आचार्यश्री वाराहघाट के पास वेरीवालों की धर्मशाला में ठहरे थे। ठहरने की व्यवस्था उत्तम नहीं थी, लेकिन यहाँ से प्रमुख स्थान नजदीक ही थे। जैसे बदरीनारायण का मंदिर पास ही है। कपालेश्वर, रंगजी और वाराह मंदिर भी समीप है। सावित्री मंदिर की अंतर्कथा पर भी यहाँ चर्चा हुई। चर्चा बहुत सामान्य किस्म की थी। अजमेर से आये पंडित जयदेव शर्मा के किसी शिष्य ने छेड़ी थी। उसका कहना था कि पौराणिक देवी देवता भी सामान्य मनुष्यों की तरह रूठते और बदला लेते थे।

कथा है कि ब्रह्मा ने यज्ञ का निश्चय किया। तैयारियां हो गई। वे यज्ञशाला में आकर बैठ गये और उनकी पत्नी सावित्री सजने धजने में ही लगी रही। ब्रह्मा ने बार बार सूचना भेजी। उनका शृंगार पूरा नहीं हो रहा था। देर होने लगी तो ब्रह्मा ने एक ग्वाले की लड़की गायत्री को अर्धांगिनी के स्थान पर बिठाया और यज्ञ आरंभ कर दिया। इसी बीच सावित्री भी आ गई। उन्होंने अपने स्थान पर गायत्री को बैठे देखा तो रुष्ट होकर सामने वाली पहाड़ी पर चली गई। वहां उन्होंने दूसरा यज्ञ किया। कहते कहते पंडितजी के साथ आये आर्यसमाजी विद्वान हंस दिए। कहने लगे बताओ यह भी कोई धर्मप्रसंग है।

पंडित जयदेव शर्मा ने उन विद्वान को चुप कराया। कहा कि हम आचार्यश्री से मिलने आये हैं। उनके अतिथि हैं। किन्हीं प्रतीकों का उपहास नही उड़ायें तो अच्छा है। आचार्यश्री ने इस उपहास पर ध्यान नहीं दिया। बाद में उन्होंने सम्मेलन के समय पौराणिक संदर्भ का उल्लेख अवश्य किया। कहा कि इन प्रतीकों में आध्यात्मिक अर्थ निहित हैं। साधना आरंभ करें तो अपने मार्ग के सारे प्रतीक खुलते चले जाते हैं। पंडित जयदेव शर्मा से चर्चा करते हुए भी आचार्यश्री ने यही मंतव्य रखा था। कहा था कि आदिशक्ति को लौकिक उदाहरणों से नहीं समझा जा सकता। थाली में दिखाये गये सूर्य के प्रतिबिंब की तरह इन रूपकों से सिर्फ एक झलक भर मिल सकती है।

अगले दिन प्रताप सिंह अपनी काकी सुनंदा को लेकर बेरीवालों के मुकाम पर आ गया था। कहने लगा रक्षासूत्र बांधने के तुरंत बाद तो कोई असर नहीं दिखाई दिया, लेकिन रात में काकी साहब चैन की नींद सोई हैं। और दिनों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में वे गाढ़ी नीद नहीं सो पाती। रात में पांच छह बार जागती है लेकिन आज वे एक बार भी नहीं उठी। सुबह जागी तो स्नानादि से निवृत्त होकर कुछ देर जप ध्यान भी किया। सुनंदा भी साथ आई थी। उसने आचार्यश्री को प्रणाम किया। कुछ देर सामान्य रही। फिर अनर्गल बातें करने लगी। प्रतापसिंह जो अभी तक आश्वस्त दिखाई दे रहा था, विचलित सा हुआ। उसके मुंह से हठात निकला, 'यह क्या?'

आचार्यश्री ने कहा, 'परेशान होने की जरूरत नहीं है। रात में आई गाढ़ी नींद अच्छा संकेत है। तुम लोग यज्ञ में आने की तैयारी करो। काकी मां को जरूर बिठाना। गायत्री माता ने उन्हें अपनी शरण में ले लिया है।'

सारनाथ से संवाद

जिन चार और स्थानों पर आचार्यश्री गये थे उनमें चित्रकूट, सारनाथ, द्वारिका और कुरुक्षेत्र थे। चित्रकूट में मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और दक्षिण पूर्वी उत्तरप्रदेश के कार्यकर्त्ता आए। सारनाथ में उत्तरप्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल के, द्वारिका में गुजरात के और कुरुक्षेत्र में पंजाब, दिल्ली तथा पश्चिमी उत्तरप्रदेश के कार्यकर्त्ता सम्मिलित हुए। संख्या की दृष्टि से लोगों की संख्या कहीं भी बहुत ज्यादा नहीं थी। दो सौ से सात आठ सौ तक लोग हुआ करते थे। इन्हें समारोह के बजाय सम्मेलन ही कहा गया था। सम्मेलन यानी जहां समान विचार और उद्देश्य के लोग मिल बैठ कर किसी विषय पर विचार विमर्श कर सकें।

वाराणसी में अपने विश्वासों और परंपराओं के प्रति जबर्दस्त आग्रह है। एक हद तक उस आग्रह को कट्टरपंथी भी कहा जा सकता है लेकिन सारनाथ में वैसी बात नहीं है। वहां के वातावरण में खुलापन था। आज भी है। अब वहां बौद्ध धर्म की प्रचार और शिक्षण परक गतिविधियां जोर-शोर से चल रही हैं। उस समय भी करुणा, विवेक और संगठन की प्रवृत्तियां मुखर थीं। वहां के वातावरण में बुद्धि, विवेक, धर्मनिष्ठा और सामंजस्य की तरंगे ही होंगी कि सम्मेलन में करीब सात सौ लोग आये। उत्तर प्रदेश और बिहार से आये इन कार्यकर्त्ताओं ने सहस्रकुंडीय महायज्ञ के लिए पांच हजार साधक तैयार करने का संकल्प लिया था। आचार्यश्री को सारनाथ के वातावरण में गूंज रही संगठन की तरंगों ने ज्यादा मुग्ध किया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वाराणसी से करीब आठ किलोमीटर दूर सारनाथ आते हुए आचार्यश्री ने इस तीर्थ की पृष्ठभूमि का अच्छा अनुशीलन कर लिया था। ईसा के छह सौ वर्ष पहले से आरंभ बारहवीं शताब्दी तक सारनाथ शिक्षा और संस्कार का केन्द्र रहा था। उसकी ख्याति दुनिया भर में फैली हुई थी। ऋषि आश्रमों की बहुलता के कारण इस जगह को कभी ऋषिपत्तन कहा जाता था। बीहड़ वन थे। वनों में ऋषिकुमार और कन्याएं स्वतंत्र विचरण करते थे। यहां किसी तरह का प्रतिबंध नहीं था। इन वनों में सिंहों की बहुलता थी लेकिन मृग उनसे भी ज्यादा थे। मृगों के कारण ही यह स्थान विख्यात हुआ था। उन्हीं का एक नाम सारंग भी है। कहते हैं इसीलिए तीर्थ का नाम सारंग नाथ और बाद में सारनाथ पड़ा।

बस से उतरते ही आचार्यश्री चौखंडी स्तूप गये। छोटे से पहाड़ी टीले पर ईंटों से बने स्तूप की स्थिति अच्छी नहीं थी। वह जगह जगह से उखड़ रहा था। आचार्यश्री जब स्तूप के पास गये तो राह चलते लोगों की टिप्पणियां सुनाई दी। ये टिप्पणियां भगवान बुद्ध और उनके प्रवर्तित धर्म के संबंध में थी। आचार्यश्री को ये टिप्पणियां अच्छी नहीं लगीं लेकिन उन्होंने किसी का प्रतिकार नहीं किया। कहते हैं कि जिस जगह चौखंडी स्तूप बना है, उसी जगह के पास पुराने शिष्यों ने बुद्ध की अभ्यर्थना की थी। ये शिष्य बुद्ध का साथ छोड़कर चले गये थे और बाद में सारनाथ में आकर मिल गये थे और उनके संरक्षण, सान्निध्य में रहने का निश्चय किया था।

टिप्पणी करने वाला कोई संन्यासी ही था। आचार्यश्री स्वयं कोई प्रतिक्रिया नहीं करते लेकिन संन्यासी ने उन्हें ही लक्ष्य करके कहा था। उसने कहा था कि इन जैसे लोगों ने यज्ञ का वितंडावाद खड़ा कर दिया था। लोग दुनियादारी और धर्म ध्यान को भूल कर स्वाहा स्वाहा करते हुए ही वक्त कटी कर रहे थे। इसीलिए भगवान बुद्ध की हवा चली।

वह संन्यासी अपने किसी संगी से कह रहा था। कहते हुए वह आचार्यश्री की ओर भी संकेत करता जाता था। उसने फिर कहा। जगदगुरु शंकराचार्य ने बुद्ध का जवाब दिया। कांटे को कांटे से निकाला। तर्क का उत्तर तर्क से ही दिया और बौद्ध धर्म को भारत से निष्कासित कर दिया। वे लोग ज्ञान ध्यान की बातों में उलझने लगे थे। आचार्यश्री उधर सारनाथ की आत्मा से संवाद में व्यस्त थे। बुद्ध ने जिस मार्ग का उपदेश दिया, उसे सुनने के लिए बारह लोग आये थे। वे भी देर तक साथ नहीं रहे। जल्दी ही चले गये। उनके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मार्ग पर चलने वाले एक बार फिर जुटने लगे और संख्या साठ के आसपास तक पहुँची। ये शिष्य पहली बार सारनाथ में एकत्रित हुए थे। यहीं संघ का गठन हुआ और बुद्ध के शिष्य देश देशांतर में धर्म का प्रचार करने के लिए निकले। स्तूप का अवलोकन कर ही रहे थे कि परिसर में एक भिक्षु ने प्रवेश किया। उसने धोती कुर्ता पहने तपःकाय तरुण को देखा तो न जाने क्या सोचकर नमस्कार कर उठा। भिक्षु कहने लगा, 'आपको कहीं देखा है।'

आचार्यश्री ने उत्तर में 'शायद' और 'क्षमा करें याद नहीं आ रहा' कहते हुए भिक्षु का परिचय पूछा। भिक्षु महाबोधि सोसायटी का सदस्य था। सोसायटी यहां बौद्ध विहारों के जीर्णोद्धार और रखरखाव का काम देख रही थी। भिक्षु का नाम संघसेन था। वह मूलबंध कोढी विहार से आया था। सोसायटी ने करीब पचीस साल पहले इस बिहार की सुध ली थी और उसे खंडहर में से निकाल कर रमणीय बना दिया था।

संघ सेन को भी आचार्यश्री की धुंधली सी याद थी। थोड़ा कुरदने पर ध्यान आ गया कि उन्हें वाराणसी में देखा था। वहीं किसी संस्कार आयोजन में मुलाकात हुई थी। दोनों भेंट को याद करने और आगामी योजनाओं के बारे में जानने पूछने लगे। दोनों बातचीत कर रहे थे कि टीका टिप्पणी करने वाले संन्यासी फिर इधर आ निकले। आचार्यश्री और संघसेन को चर्चा करते देख उनमें से वाचाल देख रहे संन्यासी ने फिर कटाक्ष किया, 'अरे इस ढोंगी ने अपने विरोधी को भी पटा लिया।'

संघसेन को यह अच्छा नहीं लगा। वह समझ गया कि बाबा लोग आचार्यश्री को देर से परेशान कर रहे हैं। उसने संन्यासी को चुनौती दी। पूछा कि किसे ढोंगी कह रहे हो। संन्यासी ने इस चुनौती का तल्ख उत्तर दिया और दोनों के लिए अपशब्दों का प्रयोग करने लगा। संघसेन से भी यह बर्दाश्त नहीं हुआ और बात बढ़ गई। दोनों गुत्थमगुत्था हो गए। संघसेन भारी पड़ता था। उसने संन्यासी की जम कर धुनाई कर दी। मार खाते खाते वह बेदम होकर गिर गया। संघसेन ने इस दुर्दशा पर संतोष जताया। आचार्यश्री ने कुछ नहीं कहा। संघसेन ने उनसे मूलगंध चलने के लिए कहा तो वे बोले पहले इस बाबा को अस्पताल तो भिजवा दें। यहां पता नहीं कब तक पड़ा रहेगा।

सुनकर चकित रह गया संघसेन। कहने लगा कि यह व्यक्ति कुछ देर पहले तक आपको बुरी तरह गालियां दे रहा था। आप इसी की सेवा सुश्रुषा का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विचार कर रहे हैं। लेकिन वह भी ज्यादा देर तक चुप नहीं रह सका। आचार्यश्री की ओर टकटकी लगा कर कुछ पल देखता रहा। फिर उसने अपने आपको सहयोग के लिए तैयार किया। दोनों मिलकर संन्यासी को अस्पताल तक ले गये।

उनमें से किसी को यह ख्याल नहीं आया था कि चिकित्सा अधिकारी ने चोट का कारण पूछा तो क्या जवाब देंगे? संयोग से किसी ने पूछा भी नहीं। संन्यासी को अस्पताल में भरती कर लिया गया। दो तीन दिन यथोचित उपचार के बाद उसकी छुट्टी हुई तो वह आचार्यश्री को ढूंढ़ता हुआ आया। उस समय सम्मेलन चल रहा था। आचार्यश्री कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहे थे। उनकी बात पूरी हुई तो संन्यासी हाथ जोड़कर उनके आगे खड़ा हो गया। अपने व्यवहार के लिए क्षमा मांगने लगा। उसे आचार्यश्री और संघसेन की उदारता के बारे में पता चल गया था। संघसेन भी वहां मौजूद था।

धर्म चक्र प्रवर्तन

सम्मेलन में संघसेन ने एक रूपक का उल्लेख किया। उसका निरूपण यह था कि मथुरा में हो रहा सहस्रकुंडीय महायज्ञ धर्मचक्र प्रवर्तन जैसी प्रक्रिया है। सारनाथ में 'धर्मराजिक' नामक एक स्तूप है। इसे सम्राट अशोक ने बनवाया था। कालांतर में इतिहास की धूल इस पर जमा हो गई और लोग इसे भुलाने लगे। अब महाबोधि सोसायटी ने इसकी सुधि ली है। उसे संवारना शुरु किया। संघसेन ने कहा कि मथुरा का सहस्रकुंडीय महायज्ञ धर्मचक्र प्रवर्तन के स्तर का ही आयोजन है। उसमें कितने लोग इकट्ठे होते हैं। यह ज्यादा महत्व की बात नहीं है। हजार दस हजार भी हो सकते हैं और लाख पचास हजार भी। महत्वपूर्ण यह है कि इस आयोजन से सूक्ष्मजगत में अभूतपूर्व बदलाव आना शुरु होंगे। उसी तरह जैसे धर्मराजिक स्तूप वाले स्थान पर भगवान बुद्ध की धर्मदेशना ने जगत में परिवर्तन की एक तरंग उत्पन्न की थी।

कहते हैं कि आषाढ़ पूर्णिमा को भगवान बुद्ध ने इसी जगह पर पहला धर्मोपदेश दिया था। अब यहां भगवान बुद्ध की जीवन लीलाओं से संबंधित कई झांकियां सजी हुई हैं। जापानी कलाकारों ने सारनाथ के विहारों में बुद्ध के जीवन प्रसंगों को आकर्षक और सजीव रूप में उत्कीर्ण किया है। चीना मंदिर, धार्मिक स्तूप और अन्य स्थान भी बुद्ध के जीवन प्रसंगों से भरे पड़े हैं। संघसेन ने कहा कि हम लोग भगवान बुद्ध को किसी नए धर्म का प्रवर्तक नहीं मानते।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उनके उपदेशों में सनातन धर्म की व्याख्या ही मिलती है। उनके उपदेश पदों में जगह जगह 'एस्स धम्मो सनंतनो' (यह सनातन धर्म है) की घोषणा है। इसलिए जो लोग बौद्ध धर्म को अलग देखते हैं, वे गलती करते हैं। प्राचीन धर्म में कषाय कल्मष आ जाने से भगवान को उसका परिष्कार करना पड़ा और धर्मचक्र प्रवर्तित हुआ। अगले वर्ष दीपावली बाद हो रहे महायज्ञ को भी ऐसे ही प्रवर्तन के रूप में देखा जाएगा।

सम्मेलन संपन्न होने के बाद आचार्यश्री मथुरा लौटे तो पता चला कि आबू से आये प्रतापसिंह अपनी काकी मां सुनंदा और परिजनों के साथ तपोभूमि में ठहरे हुए हैं। आचार्यश्री के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे। अगली सुबह आचार्यश्री तपोभूमि गये तो सुनंदा के व्यवहार को देखकर कोई कल्पना नहीं कर सकता था कि यह कुछ सप्ताह पहले पुष्कर में उपद्रव उत्पात मचाती रही होगी। सुनंदा और प्रतापसिंह गदगद होकर धन्यवाद जता रहे थे। सुनंदा ने तो यहां तक कहा कि वह शेष जीवन भगवत्सेवा में ही व्यतीत करना चाहती है। आचार्यश्री ने उसे अपने क्षेत्र में ही भगवान का काम करते रहने के लिए कहा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महायज्ञ का प्रत्यक्ष और परोक्ष

बिरला मंदिर से आगे काफी जगह खाली पड़ी थी। रह-रहकर वहीं यज्ञशाला बनाने का विचार आ रहा था। लेकिन वहां खेत थे। बरसात अभी खत्म नहीं हुई थी। कुछ खेतों में फसलें कट रहीं थीं। इसलिए पहली बार में वह विचार स्थगित करना पड़ा। जमना पार दुर्वासा ऋषि के मंदिर के आसपास, कृष्णा नगर में, फिर तपोभूमि के सामने चामुंडा मंदिर के पास और खेतों की खाली पड़ी जगह पर ध्यान गया। इन जगहों के प्रबंधकों और खेतों के मालिकों से जगहें खाली कराने का विचार आया। उन लोगों से बातचीत भी चलाई लेकिन बात नहीं बनी। आचार्यश्री का मन तपोभूमि और वृंदावन के बीच ही कहीं यज्ञ करवाने का था।

निगाहें घूम फिर कर जयसिंहपुरा से आगे की जगह पर ही टिकी। वहाँ जैसा खुला मैदान दूसरी जगह नहीं था, जो गायत्री तपोभूमि के पास भी पड़ता हो। बिरला मन्दिर से सटी हुई कुछ जगहें ट्रस्ट की थीं और बाकी किसानों की। आखिरकार वहीं पर सहस्रकुण्डीय यज्ञ किया जाना तय किया गया। ज्येष्ठ शुक्ल दशमी (गायत्री जयन्ती) को वहाँ भूमिपूजन हुआ। उन खेत मालिकों को दशहरे के आसपास अपनी फसलें काट लेने और खेत खाली कर देने का अनुरोध किया। खेती का जो नुकसान होता उसकी भरपाई तपोभूमि की तरफ से करने का भरोसा दिया।

एक हजार चौबीस कुण्डों के लिए कम से कम एक फर्लांग लम्बी और उतनी ही चौड़ी जगह चाहिए थी। यज्ञ में आने वालों को ठहराने व भोजन आदि के लिए इससे करीब तीन गुना जगह की और जरूरत थी। वह इन्तजाम हो गया तो दशहरे के बाद महायज्ञ नगर बसना शुरु हुआ। दशहरे से दीवाली तक उत्सव का दौर होता है। लोग इन दिनों अपने घर गाँव से कम ही निकलते हैं। अब से पचास साल पहले तो लोग घर के होकर ही रह जाते थे। दीवाली

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की तैयारी में घर-दूकान सजाने कारोबार सँभालने और अगले साल की रूप-रेखा बनाने में मस्त हो जाते थे। लेकिन करीब नब्बे लोग अपने घर परिवार की चिन्ता छोड़ मथुरा आये हुए थे। उनके जिम्मे यज्ञ शाला, सभामण्डप, आठ उपनगर और प्रदर्शनी वगैरह लगाने की जिम्मेदारी थी।

शरद-पूर्णिमा का दिन। वृंदावन रोड पर बिरला मन्दिर के आगे सभामण्डप की जगह पर सफाई चल रही थी। शाम को पाँच या छः बजे का समय रहा होगा। आचार्यश्री वहाँ की व्यवस्था देखते और कार्यकर्त्ताओं को जरूरी निर्देश देते हुए खड़े थे। वृंदावन की तरफ से एक ताँगा दौड़ता हुआ आ रहा था। कच्ची पक्की सड़क पर घोड़े की टाप दूर तक गूंजती हुई सुनाई देती थी। ताँगा बड़ी तेजी से दौड़ता हुआ आया और सभा मण्डप वाले कोण पर आकर रुक गया। उसमें से एक धवल वस्त्र पहने महिला उतरी और आचार्यश्री के पास आकर रुकी। उन्हें प्रणाम किया और हाथ जोड़कर खड़ी हो गयी। आचार्यश्री उसकी ओर देखने लगे, जैसे पहचानने की कोशिश कर रहे हों। उनके असमंजस को महिला ने समझा और अपना परिचय देते हुए बोली मैं माँ आनन्दमयी के आश्रम से आई हूँ और माँ ने आपके लिए संदेश भेजा है। आचार्यश्री उसकी बात गौर से सुन रहे थे। दृष्टि से ही जैसे पूछा हो 'क्या संदेश भेजा है।'

उस महिला ने कहा, 'आप जो महायज्ञ सम्पन्न कराने जा रहे हैं उसमें मां भी सम्मिलित होना चाहती हैं लेकिन एक साधक के स्तर पर। वे मंच पर या ख्यात-नामा व्यक्ति की तरह न आयेगी, न ही परिचय देंगी।' आनन्दमयी आश्रम की उस विदुषी ने यह भी कहा कि मां को आपके काशी आयोजन में नहीं पहुँच पाने का अफसोस है। उन्होंने इस आयोजन के लिए अपनी भेंट भिजवाई है। कहते हुए उसने एक सौ एक रुपये निकाले और आचार्यश्री की ओर बढ़ा दिये। उन्होंने वह रुपये हाथ में लिए। माथे से लगाये और पास ही खड़े मार्कंडेय को थमा दिये। कहा, 'इनकी रसीद दे दो।'

जहां सभामण्डप बनना था वहीं पास में प्रदर्शनी की व्यवस्था भी करनी थी। बाजार और विश्राम के लिए खाली जगह का इन्तजाम भी किया था। उस सबके लिए जरूरी निर्देश देकर वृंदावन रोड की दांयी ओर पूरब दिशा की ओर यज्ञशाला बननी थी। आठ-आठ कुण्डों की (१२८) एक सौ अठ्ठाइस यज्ञशालाएं कुल मिलाकर एक हजार चौबीस कुण्ड। यज्ञशाला जहां बननी थीं वहां पर यज्ञ के ब्रह्मा और आचार्य के बैठने का स्थान निश्चित किया तो मन्दिर का ध्यान आया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्यश्री ने कहा, 'महायज्ञ नगर की अपनी स्वतन्त्र सत्ता होगी। यहाँ पर माँ का एक अस्थाई मन्दिर भी बनना है। मार्कण्डेय ने पूछा कि किस जगह बनायेंगे।

आचार्यश्री कहा, 'अभी तय करते हैं और वे एक सौ अठ्ठाइस यज्ञशालाओं के लिए जगह नापने में लग गये। यह काम कोई कार्यकर्त्ता भी कर सकता था लेकिन आचार्यश्री के अनुसार यह निर्धारण सामान्य नहीं था। उनके साथ व्यवस्था में लगे कार्यकर्त्ता सत्यनारायण सिंह ने कहा भी 'गुरुदेव आप विश्राम कीजिए। आपको सुबह जल्दी भी उठना होता है।'

आचार्यश्री ने कहा 'यहां होना विश्राम से ज्यादा आवश्यक है।'

अलग-अलग यज्ञशालाओं का निर्धारण करते समय साथ चल रहे कार्यकर्त्ताओं ने वह जरूरत महसूस भी की।

एक एक यज्ञशाला के समय आचार्यश्री बताते जाते थे कि यहाँ की व्यवस्था अमुक तपस्वी देखेंगे। हर एक यज्ञशाला के लिए अलग-अलग योगी तपस्वियों की नियुक्ति जैसे कर दी गई थी। बाईसवीं यज्ञशाला के पास पहुँच कर वे रुके और कहा 'यहाँ पर तुंगभद्रा नदी के किनारे तपस्यारत साधु तुलाराम सूक्ष्म रूप से उपस्थित रहेंगे। बंगलौर से आये कार्यकर्त्ता मुद्गल साथ ही चल रहे थे। वे चौंके। उन्होंने तुरन्त टोका, लेकिन गुरुदेव, साधु तुलाराम पच्चीस साल पहले ही शरीर छोड़ चुके हैं! वे कैसे यह व्यवस्था देखेंगे?'

आचार्य श्री ने कहा 'उन्होंने पंचभौतिक शरीर छोड़ा है। सूक्ष्म शरीर से वे अपनी कुटिया में अब भी तपस्या करते हैं और वे यहाँ आकर अपना दायित्व निभायेंगे।'

जगह नापने के इसी दौर में एक यज्ञशाला के पास अचानक कहीं से कपिला गाय आ गई। उसके सींग लाल रंग से रंगे हुए थे और सींग के सिरों पर पीतल की टोपियाँ लगी हुई थीं। किसी ने नहीं देखा कि वह गाय कहां से आयी। खिलती हुई चांदनी रात में कोई गो-पालक अपनी गाय को इस तरह खुला घूमने देगा, यह भी संभव नहीं। आचार्यश्री ने उस गाय की ओर इशारा करते हुए कहा, यह बहनजी इस यज्ञशाला की व्यवस्था संभालेंगी। मार्कंडेय ने कहा 'गुरुदेव गाय कैसे व्यवस्था देखेगी?'

शरद पूर्णिमा पर चयन

आचार्य श्री ने कहा, 'इसे साधारण गाय मत समझना। इसमें ऋषि आत्मा है। उत्तरकाशी के पास सूक्ष्म शरीर से तपस्या कर रही एक साध्वी गाय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का रूप धारण कर यहाँ आई है।' वे कुछ और कहते इससे पहले ही कपिला गाय नैऋत्य कोण पर आकर खड़ी हो गई। आचार्यश्री ने कहा 'देखो उसने अपनी जगह अभी से सँभाल ली।'

शास्त्र की मर्यादा के अनुसार नैऋत्य कोण यज्ञ की संरक्षक देव सत्ता का स्थान है। उस यज्ञशाला से आगे बढ़ने के बाद भी गाय वहीं खड़ी थी। दूसरी या तीसरी यज्ञशाला का निर्धारण किया जा रहा था तब मार्कंडेय ने कपिला गाय की ओर देखा गाय वहां नहीं थी। दूर-दूर तक उसका कोई चिह्न भी नहीं दिखाई दे रहा था। न ही इस बीच गाय के गले मे बँधी घंटियों की आवाज या पदचाप सुनाई दी थी।

देर रात तक यज्ञशालाओं के निर्धारण का काम काफी कुछ हो गया था। आचार्यश्री ब्रह्मा और यज्ञाचार्य के लिए निश्चित किये स्थान के बीच में बैठे। कोई आधी रात का वक्त हो गया था। शरद पूर्णिमा का चांद अपनी सोलह कलाओं से चांदनी बखेर रहा था। पास किसी गांव से मधुर संगीत की लहरियाँ आ रहीं थीं। गांव वालों ने शरद रास-लीला का आयोजन किया था। गीतों के बोल साफ नहीं सुनाई दे रहे थे। लग रहा था कि यमुना के तट पर कदम के पीछे छुपे श्रीकृष्ण को ढूंढती हुई राधा थक गई थी तो कृष्ण स्वयं पेड़ की ओट से बाहर आ गये और राधा को मनाने लगे। खोजने लगें तो साधक का पुरुषार्थ असमर्थ है। खोजते खोजते थक जाओ तो परमात्मा जैसे स्वयं को प्रकट करते हैं। लेकिन राधा और कृष्ण के सम्बन्धों में भक्ति मार्ग के साधकों ने इतना ही नहीं माना है। राधा भगवान श्रीकृष्ण की आह्लादिनी शक्ति और श्रीकृष्ण उस शक्ति के नायक। दोनों में अभेद सम्बन्ध। शक्ति जैसे परमात्मा से रूठी हो और परमात्मा उसे मना रहे हैं।

श्रीकृष्ण ने उस मनुहार में बंसी की धुन छेड़ी और सारा जगत उल्लास से सराबोर हो गया। रास का यही भाव वहाँ गूंज रही स्वर लहरियों में व्यक्त हो रहा था। बोल भले ही समझ न आ रहे हों लेकिन यह भाव यज्ञ स्थल पर मौजूद कार्यकर्त्ताओं के मन में जगे। आचार्यश्री अपने स्थान से उठे और उन्होंने कहा, मार्कंडेय तुम तो बड़े विद्वान हो, भागवत, श्रीकृष्ण की लीलाओं का गायन करता है, उसमें तो कहीं राधा का नाम नहीं आया। बाद में राधा कहाँ से आई?'

मार्कंडेय ने कहा, 'पता नहीं गुरुदेव। मैं तो आपकी ही बात गुनता रहता हूँ। भागवत गायत्री मंत्र का ही व्याख्या विस्तार है। श्रीकृष्ण का वर्णन तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक ही स्कन्ध में आया है बाकी ग्यारह स्कन्ध तो दसों अवतारों और ऋषियों की गाथा गाते हैं।'

आचार्यश्री ने जैसे मार्कंडेय की बात सुनी ही नहीं। वे बोले, 'हो सकता है भागवत में गायत्री ही राधा का पर्याय है।' कहते हुए वह उठ गये और कुछ तलाशने से लगे। कुछ झुककर टटोलते हुए से पाँच सात मिनट घूमते रहे और एक जगह रुककर अचानक बोल उठे, 'गायत्री मंदिर यहाँ बनायेंगे।' उस समय आसमान में चाँद ठीक मध्य में था। अपनी अमृत बरसाने वाली किरणें बिखेर रहा था। लोगों ने गाय के दूध में बनी हुई खीर को झांकना शुरु कर दिया था जो छतों पर रखी हुई थी। ब्रज के मन्दिरों में श्रीकृष्ण की आरती में घण्टे घडियाल बजने लगे थे। आचार्यश्री ने कहा, 'शरद पूर्णिमा पर लोग पूरी रात चांदनी में सोते हैं। चांदनी और चांद जैसे अभिन्न हैं उसी प्रकार राधा और कृष्ण भी। एक का उल्लेख करते ही दूसरा बिना कुछ कहे प्रस्तुत है। वहां मौजूद लोग उनकी बातों को गौर से सुन रहे थे।'

आचार्यश्री ने जिस स्थान को गायत्री मंदिर के लिए चुना था वहाँ एक चादर बिछाई और सुखासन से बैठ गये। करीब पौन-घंटे अविचल बैठे रहने के बाद वह वहाँ से उठे और पास ही बिछी चारपाई पर लेट गये। और लोग भी जैसी व्यवस्था बनी आराम करने लगे।

यही है शक्तिपीठ

भूमि पूजन और समिधा चयन की प्रक्रिया संपन्न हुए एक अवधि बीत गई थी। अब यज्ञ की तैयारियां चल रही थी। मुश्किल से बीस बाइस दिन बचे थे। तब ब्रजभूमि दीपावली की तैयारियों में डूबी थी और तपोभूमि में आए कार्यकर्त्ता दीपावली के पंद्रह दिन बाद होने जा रहे विराट यज्ञ उत्सव में व्यस्त थे। गायत्री उपासकों से महायज्ञ के लिए न्यूनतम पांच समिधा और एक छटांक घी लाने अथवा किसी आने-जाने वाले के साथ भिजवाने के लिए कहा गया था। इनके आने का क्रम चैत्र नवरात्रि संवत् २०१५ से ही आरंभ हो चुका था। साथ ही घी भी एक छटाक से एक पाव-आधा सेर आता जा रहा था।

आने वाले साधक यह सामग्री गायत्री मंदिर में समर्पित करते उन्हें महायज्ञ के भंडार में रख दिया जाता। सुबह कार्यकर्त्ताओं की गोष्ठी हुआ करती थी। उसमें लोग पिछले दिन के काम का ब्यौरा और आज की तैयारियों के बारे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में चर्चा करते। यह गोष्ठी आचार्यश्री के सान्निध्य में ही होती। कभी कभार माताजी भी आ जाया करती थीं। उस दिन आचार्यश्री अखंड ज्योति संस्थान से आए ही थे कि तपोभूमि में पहले से प्रतीक्षा कर रहा एक अघोरी साधु उनके सामने आया। पूछने पर उसने अपना नाम नहीं बताया। कहा कि साधु का कोई नाम धाम नही होता। साधक का तो और भी नहीं। वह सिर्फ गुरु और साधना संप्रदाय से पहचाना जाता है। उस साधु का उत्तर सुनकर आचार्यश्री ने आगे और नहीं पूछा। सिर्फ उसकी आवश्यकता के बारे में उत्सुकता जताई।

साधु ने बताया कि वह तीर्थयात्रा के लिए यहां नहीं आया है। मथुरा वृंदावन की यात्रा का उद्देश्य यहां स्थित शक्तिपीठ की शोध करना है। वह शोध अभी पूरी नहीं हुई थी। साधु ने आचार्यश्री से निवेदन किया कि उस शोध में सहायता करें। अपने बारे में उसने सिर्फ इतना ही कहा कि वह बाबा कीनाराम की परंपरा से है। उस परंपरा के किसी विख्यात नाम से अभी तक संपर्क नहीं हुआ है। जिन गुरु से दीक्षा ली थी उनका तिरोधान हो चुका है।

आचार्यश्री ने सहज भाव से पूछा-'मथुरा तो वैष्णव तीर्थ है। यहाँ श्रीराधा और रुक्मिणी या लक्ष्मी आदि शक्तियों की आराधना होती है। वह भी श्री भगवान के साथ।'

साधु ने कहा, 'मेरी परीक्षा मत लीजिए पूज्यवर। आप सब जानते हैं। वृंदावन के आसपास किसी स्थान पर सती के केश कपाल गिरे थे। वहाँ भगवती के उमारूप की आराधना होती है और भगवान भूतेश के रूप में वहां भैरव का प्रतिनिधित्व करते हैं।'

आचार्यश्री ने कहा, 'हां। ऐसे शक्तिपीठ के बारे में लोग चर्चा तो करते हैं। सामने भूतेश्वर मंदिर है-उसके पास ही चामुंडा मंदिर है। लोगों की मान्यता है कि वह देवी के प्रसिद्ध स्थानों में एक है।'

'सुनकर साधु को संतोष नहीं हुआ। कहने लगा कि मैं वहां हो आया हूं। स्थान मनोरम है। लोग वहां बैठकर आराधना कर सकते हैं। करते भी हैं लेकिन मुझे नहीं लगता कि वहां सती के केश गिरे होंगे। गुरुदेव कहते है कि वह जगह कहीं और होगी। उनका संदेश अंतस्तल में सुनाई देता है। अभी तक मथुरा वृंदावन में जिन स्थानों की भी यात्रा की, कहीं भी शक्तिपीठ जैसी अनुभूति नहीं हुई।'

साधु अपनी कहे जा रहा था। बात पूरी कहने के बाद ही वह चुप हुआ। फिर आचार्यश्री ने कहा, 'महाराज आप यहां कुछ दिन रुकें। देवोत्थान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एकादशी से यहां सहस्रकुंडीय गायत्री महायज्ञ होने जा रहा है। उस अवसर पर जगह-जगह से ज्ञात अज्ञात साधु संत और सिद्ध पुरुष यहां आएंगे। वे शायद आपकी जिज्ञासा का समाधान कर सकें।'

'लेकिन मुझे लगता है कि समाधान अभी मेरे ही सामने विद्यमान है और वह आप हैं।' कहते कहते साधु ने झुककर प्रणाम करने की चेष्टा की। आचार्यश्री ने उसे रोक दिया। कहने लगे कि फिर भी आप दो सप्ताह इस क्षेत्र की और यात्रा करें। तीर्थ सेवन के लिए ही सही, इस क्षेत्र में रहें। देवोत्थान एकादशी के आसपास आपकी खोज पूरी होने लगेगी।

आचार्यश्री जब यह कह रहे थे तो पास ही खड़े कुछ कार्यकर्त्ता आश्चर्य से उन्हें देख रहे थे। साधु के वहां से हटने के बाद जबलपुर के दानाभाई ने कहा भी कि आप बता सकते है तो अभी ही क्यों नहीं बता देते गुरुदेव। हम लोगों को भी लाभ होगा। आचार्यश्री ने उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया और प्रांगण में प्रतीक्षा कर रहे कार्यकर्त्ताओं के बीच चले गए।

गायत्री मंत्र के उच्चारण के साथ उस दिन की गोष्ठी आरंभ हुई। उस दिन की गोष्ठी में जोधपुर के पास किसी गांव से आए ठाकुर रतनसिंह लोगों के आकर्षण का केन्द्र थे। वे घोड़े पर चढ़कर यहां तक आए थे। जोधपुर से मथुरा तक की दूरी उन्होंने रास्ते में प्रचार करते हुए तय की थी। पीले रंग का साफा बांधे और धोती कमीज पहने रतनसिंह हाथ में पीले रंग की ध्वजा लिए घोड़े पर सवार रहते। रास्ते में जो भी गांव पड़ता उसकी सीमा में प्रवेश करते ही शंख बजाते। शंख ध्वनि सुनकर लोग इकट्ठे होने लगते।

वे घोड़े की पीठ से नीचे उतरते और लोगों से जयघोष कराते। फिर वे लोगों को मथुरा में हो रहे महायज्ञ की जानकारी देते। उन्हें गायत्री उपासना, यज्ञ और मथुरा आयोजन के चरितनायक के बारे में बताते। कहते कि जमाना बदलने वाला है। नया युग आने वाला है, उसमें लोग ज्यादा खुशहाल और नीति न्याय का पालन करने वाले होंगे। उस नए युग का स्वागत करने के लिए ही यह विराट आयोजन हो रहा है। एक हजार कुंडों का विशाल महायज्ञ। इस तरह का महायज्ञ पहले कभी नहीं हुआ, न ही आगे होने की संभावना है।

हिसाब नहीं रखा

बातें सुनकर लोग रतन सिंह से पूछते कि उस आयोजन में पुण्य लाभ लेने के लिए हमें क्या करना चाहिए? उत्तर में ठाकुर रतनसिंह बताते कि गायत्री

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मंत्र का जप करें। नेक काम करें, लोगों को नेक सलाह दें और जरूरतमंदों की सेवा सहायता करें। इस तरह उन्होंने करीब चार सौ मील (लगभग ६०० किलोमीटर की) दूरी तय की। रतन सिंह जब यह सब बता रहे थे तो किसी कार्यकर्त्ता ने पूछा कि कितने लोगों को गायत्री उपासना करना सिखाया? जिन लोगों ने संकल्प लिया वे उसे पूरा करेंगे ही सही, इसकी क्या गारंटी है। रतन सिंह ने कहा कि इसका कोई हिसाब नहीं रखा है। मेरा काम गुरुदेव का संदेश लोगों को सुनाना था सो सुना दिया। कितने लोगों ने उसे अपनाया, इसकी जानकारी रखने में कोई सार नहीं लगा।

उसी दिन विभिन्न क्षेत्रों से आ रहे कार्यकर्त्ताओं की यात्रा का जिक्र भी आया। जैसी सूचनाएं मिल रही थीं, उनके अनुसार बताया गया कि लोग रास्ते में कैसे कैसे प्रयत्न करते हुए आ रहे हैं। इटावा से महावीर सिंह और रामकुमार मिश्रा साइकिल लेकर निकले थे। इटावा से मथुरा की दूरी ज्यादा नहीं थी, मुश्किल से तीन सौ किलोमीटर का सफर था। किसी भी वाहन से एक दिन में पूरी की जा सकती थी, लेकिन वे करीब एक सप्ताह पहले आयोजन की तिथि से एक महीना पहले निकले थे। दस बारह किलोमीटर प्रतिदिन चलते और रास्ते में पड़ने वाले गांवों में लोगों को आयोजन के बारे में बताते।

सौराष्ट्र में धांगध्रा नामक गांव से पुरुषोत्तम दास सेनी और मूलजी भाई पटेल ने तो और भी कमाल किया था। वे यज्ञ से चार महीना पहले ही निकल पड़े। धांगध्रा से मथुरा करीब छह सौ मील (लगभग ९०० किलोमीटर) दूर है। दोनों कार्यकर्त्ता साइकिल पर ही निकले थे और गायत्री यज्ञ का संदेश गुनाते हुए आ रहे थे। रास्ते से उनकी खबरें नियमित आ रही थीं।

महायज्ञ की व्यवस्था में जनसंपर्क का काम देख रहे कार्यकर्त्ता ने बताया कि सोनी और पटेल प्रतिदिन आठ दस किलोमीटर साइकिल से चलते हैं। जहाँ भी रुकते वहां सभा करते। लोगों को गायत्री यज्ञ आंदोलन के बारे में बताते। रात में जहां विश्राम करते वहां सुबह यज्ञ करते। यज्ञ में भाग लेने के लिए लोगों को पूर्व संध्या के समय ही निमंत्रित कर लेते। जहां भी विश्राम किया, वहां हर दिन दस बारह लोगों ने यज्ञ में भाग लिया। कुछ ने आहुतियां दी तो कुछ ने जप और कीर्तन से ही संतोष कर लिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देवोत्थान एकादशी का दिन। प्रचलित कैलेण्डर के अनुसार सन् १९५८ में नवम्बर महीने की २२ वीं तारीख। ब्राह्ममुहूर्त में चार बजे का समय। गायत्री तपोभूमि में पीले वस्त्र पहने महिलाएँ दो-दो की कतार में खड़ी थीं। प्रांगण से शुरु होकर कतार जयसिंहपुरा तक पहुँच गई थी। यह कलश यात्रा की तैयारी थी। सबसे आगे माताजी थीं। उन्होंने गायत्री मंदिर के सामने प्रांगण में रखे कलशों में से एक उठाया और शिरोधार्य किया। जिस समय उन्होंने कलश उठाया, उस समय वातावरण में वेदमंत्रों की ध्वनि गूंज रही थी। कलश उठाते ही वहां उपस्थित परिजनों ने जयघोष किया। माताजी के कलश उठा कर आगे चलते ही पीछे खड़ी महिलाओं ने कलश धारण किए और यमुना के तट की ओर बढ़ चलीं। कलश भरने के लिए विश्राम घाट चुना था। गीत गाते गायत्री मंत्र का संकीर्तन करते और जयघोष से दिशाओं को गुंजाते हुए कार्यकर्त्ता भी साथ चल रहे थे।

यमुना की स्थापना

मथुरा में लोग जल्दी ही जाग जाते हैं। उस दिन कलश यात्रा की सूचना पूरे शहर को थी, इसलिए सबेरा और भी जल्दी हो गया था। कलशयात्रा देखने के लिए लोग घरों से बाहर आ गये थे। कई ऊपरी मंजिलों से भी झांक रहे थे। कलश यात्रा संपन्न होने में डेढ़ दो घंटे समय लगा। वापसी में यात्रा यज्ञ नगर पहुँची। वहां बनी भव्य यज्ञशाला में यमुना के पावन जल से भरे कलशों की स्थापना की गई।

यजमान का दायित्व संभाले आचार्यश्री ने कर्मकाण्ड संपन्न कराने के लिए आचार्य और ब्रह्मा का वरण किया। आचार्य का दायित्व पंडित बलदेव शास्त्री को सौंपा गया था। योगेन्द्र ब्रह्मचारी उनके सहायक अथवा उपाध्याय बनाये गये थे। ब्रह्मा के रूप में शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में समर्पित विद्वान पंडित हरिदत्त शर्मा का चयन किया गया। उनके सहयोगी के रूप में उत्तरकाशी से आए स्वामी अभेदानंद का चुनाव किया गया था। स्वामी उनका उपनाम था। आश्रम धर्म की मर्यादा के अनुसार वे गृहस्थ ही थे। ब्रह्मा अथवा उनके सहयोगी के रूप में कर्मकाण्डी ब्राह्मण का ही चुनाव किया जाता है।

कलश स्थापना के तुरंत बाद दीपपूजन, गणेश गौरी पूजन, षोडषोपचार, नवग्रह स्थापना और देवपूजन आदि क्रियाकृत्य संपन्न हुए। प्रारंभिक उपचारों के बाद सर्वतोभद्र चक्र के निर्माण का समय आया। यज्ञशाला में जहां ब्रह्मा का स्थान नियत था और यज्ञदेवता की प्रतिष्ठा की गई थी, वहां बना सर्वतोभद्र चक्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आकर्षण का केन्द्र बना हुआ था। सर्वतोभद्र बनाने के लिए योगेन्द्र ब्रह्मचारी ने तीन दिन तक उस स्थल का निरीक्षण और मंथन किया था। आचार्य बलदेव शास्त्री सर्वतोभद्र की स्थापना और प्राण प्रतिष्ठा के बाद अपने निश्चित स्थान पर बैठ गए। संचालन का काम योगेन्द्र ब्रह्मचारी ने ही संभाला। वे युवा थे और आवाज में गर्जना थी। कदाचित बिजली चली जाए तो भी उनकी आवाज यज्ञ में भाग ले रहे सभी लोगों को स्पष्ट सुनाई दे सकती थी। प्रत्यक्ष और सक्रिय संचालन का काम वही संभाल रहे थे।

जिस समय सर्वतोभद्र चक्र की रचना हो ही रही थी। उस समय आचार्य बलदेव को विचित्र अनुभव हुआ। वे अपने आसन पर बैठे थे और चक्र का निर्माण होते देख रहे थे। अठारह कोष्ठक लंबाई में और अठारह चौड़ाई में बनाये जा चुके थे। कोष्ठक बनाने के लिए चांदी और तांबे की चद्दरों का उपयोग किया गया था। सोने की चद्दरें चक्र के मध्य में स्थित अष्टदल कमल के लिए थी। चार-चार कोष्ठकों की लंबाई चौड़ाई में जब अष्टदल कमल बन रहा था तो आचार्य बलदेव को अनुभव हुआ कि मौसम बदल रहा है।

कार्तिक मास में तापमान के हिसाब से मौसम सामान्य ही रहता है— न ज्यादा सर्दी और न गर्मी। लेकिन शास्त्री जी को लगा कि जैसे शीतलहर आ गई है। हवा का तेज झोंका आया जैसे बर्फ को छूकर आ रहा हो। शास्त्रीजी को कंपकंपी आ गई। उधर सर्वतोभद्र का निर्माण करा रहे योगेन्द्र ब्रह्मचारी ने भी शायद ठंड का अनुभव किया। उन्होंने दौड़कर अपना शाल उठा लिया और कस कर ओढ़ लिया। यज्ञशाला में काम कर रहे अन्य होताओं, साधकों और कार्यकर्त्ताओं ने भी सिहरन महसूस की लेकिन शास्त्री जी को ज्यादा जीवंत अनुभव हो रहे थे।

अदृश्य उपस्थिति

कंपकंपी सी महसूस करते हुए शास्त्रीजी ने आंखें मूंद ली। यो कहें कि उनकी आंखें अपने आप मुंद गईं और होंठ गायत्री मंत्र का उच्चारण करने लगे। मुंह से आवाज नहीं आ रही थी। सर्दी के अचानक आए झोंके के बाद सहज होने में उन्हें पांच सात मिनट लगे। सहज होने के बाद उन्होंने आंखे खोली। सब कुछ पूर्ववत था लेकिन उन्हें अनुभूति हो रही थी। लग रहा था कि आयोजन स्थल पर कुछ लोग आ गये है। वे यज्ञशाला के भीतर हैं। उनकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उपस्थिति का आभास हो रहा है। उस आभास को टटोलने के लिए उन्होंने चारों तरफ नजरें दौड़ाई। कहीं कुछ नहीं दिखाई दिया। फिर उनकी दृष्टि सर्वतोभद्र चक्र के आसपास घूमी।

उन्होंने देखा कि श्वेत धवल केश और दाढ़ी वाले कुछ संन्यासी चक्र के पास खड़े आपस में कुछ कह रहे हैं। फिर वे बिखर गए और चक्र को घेर कर खड़े हो गए। उन्होंने आकाश की ओर हाथ उठाये और मंत्रों का पाठ करने लगे। शास्त्रीजी को मंत्र साफ सुनाई दे रहे थे। सुनते ही वे समझ गए कि आगंतुक संन्यासी चक्र बन जाने के बाद देवताओं की स्थापना और पूजा के बाद पढ़े जाने वाले मंत्रों का पाठ कर रहे हैं।

संन्यासी सामान्य नहीं दिखाई दे रहे थे। उनकी आकृति, वेश विन्यास और हावभाव के साथ मंत्रों के उच्चारण की शैली बता रही थी कि वे दूर कहीं से आए हैं। यह भी कि वे अपने बीच के नहीं हैं—अतीत में लुप्त हो चुकी किसी परंपरा या शैली का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं अथवा भविष्य के किसी प्रवाह का सूत्रपात कर रहे हैं। एक बारगी इच्छा हुई कि इन संन्यासियों को टोका जाए। यज्ञाचार्य की अनुमति के बिना सर्वतोभद्र के पास तक पहुँचने का साहस कैसे किया? फिर अपने आप ही इच्छा दब गई।

कहें या न कहें कि ऊहापोह चल रही थी कि शास्त्री जी ने देखा आचार्यश्री यज्ञशाला की ओर ही आ रहे हैं। आते हुए उन्होंने सर्वतोभद्र की ओर देखा। प्रणाम करने के लिए हाथ उठाये और आगे बढ़ते रहे। शास्त्री जी ने आचार्यश्री को प्रणाम करते हुए देख लिया था। भावभंगिमा से वे समझ गए थे कि जो दृश्य स्वयं को दिखाई दे रहा है, उसे आचार्यश्री भी अनुभव कर रहे हैं। आचार्यश्री ने जिन्हें प्रणाम किया था, उनकी ओर देखा तो शास्त्री जी ने पाया कि मंत्रपाठ पूरा हो चुका।

इस बीच सर्वतोभद्र का निर्माण पूरा हो गया था और पुरोहित उसकी स्थापना, प्रतिष्ठा आदि कर्मकाण्डों में व्यस्त हो गए थे। अशरीरी से दिखाई दे रहे संन्यासी तब तक सर्वतोभद्र के पास से हट गए थे। वे यज्ञशाला में निरीक्षण करते दिखाई दे रहे थे। फिर वे अदृश्य भी हो गए। आचार्यश्री तब तक शास्त्रीजी के पास आ गए थे। शास्त्री जी ने उनकी ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा। आचार्यश्री ने उनके मूक प्रश्न को समझा और अपने आप ही कहा कि आपको इस तरह के कई दृश्य दिखाई देंगे। अनुभूतियां भी होंगी। इस तरह के क्षण कुछ ही लोगों के जीवन में आते हैं और वह भी बहुत कम।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शास्त्री जी ने पूछा कि ये दिव्य शरीरधारी से दिख रहे संन्यासीगण कौन थे? आचार्यश्री ने उनका समाधान किया कि जो मार्गदर्शक सत्ता इस आयोजन की सूत्रधार है, उन्हीं की भेजी हुई विभूतियां हैं। इनका अनुभव हर किसी को नहीं होगा। लेकिन आयोजन की सफलता इन्हीं पर निर्भर है। कहते हुए आचार्यश्री सर्वतोभद्र की व्यवस्था देखने लगे। शास्त्री जी भी उनके साथ-साथ चल पड़े थे।

जैसे तैसे पहुंचे

करीब एक वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली यज्ञशाला एक सौ अठ्ठाइस हिस्सों में बंटी हुई थी। हर हिस्से में आठ-आठ यज्ञकुण्ड थे। यह भी कह सकते हैं कि पूरी यज्ञशाला १२८ छोटी छोटी यज्ञशालाओं की समूह थी। नियमानुसार यज्ञशाला में एक दिन पहले लिपाई पुताई होती है। २१ नवम्बर की सुबह से करीब तीस महिलाएँ इस काम में लगीं। कुछ पुरुष कार्यकर्त्ता और बालकों ने भी उनका हाथ बंटाया।

दोपहर तक वे अविराम लगे रहे। किसी को भोजन आदि की सुध नहीं थी। इस काम की देखभाल करती हुई माताजी भी यज्ञशाला में ही थीं। दोपहर दो-ढाई बजे उन्होंने महिलाओं से पूछा कि भोजन किया है या नहीं? उत्तर था कि जरूरत नहीं है। अभी काफी काम बाकी है। उसे पूरा करके ही भोजन पर ध्यान देंगे। अविराम लगे रहने से तीसरा पहर बीतते-बीतते लिपाई का काम पूरा हो गया। शाम तक एक सौ अठ्ठाइस यज्ञशालाओं के पुनरीक्षण का काम भी संपन्न हो गया।

सूरज ढलने के बाद यज्ञशाला के पास बने प्रवचन पंडाल में परिचय गोष्ठी हुई। उसमें आचार्यश्री और माताजी भी थे। गोष्ठी में सामान्य परिचय और आयोजन की विधि व्यवस्था के अलावा जगह-जगह से आए कार्यकर्त्ताओं ने अपना परिचय दिया। उस शाम को कई ऐसे साधक लोगों की जानकारी में आए जिन्होंने कठिनाइयां सहते हुए यहां तक की यात्रा पूरी की थी। कठिनाइयां रास्ते की थी और उनका चुनाव उन्होंनें स्वयं ही किया था। इन तौर तरीकों के चुनाव का उद्देश्य रास्ते में पड़ने वाली बस्तियों में आयोजन का संदेश पहुँचाना मात्र था।

सौराष्ट्र के लीमड़ी से शशिकांत और ऋषिकेश नामक दो युवक छह सौ मील की यात्रा साइकिल से पूरी करते हुए आए थे। उसी क्षेत्र में लाखनका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नामक गांव के पुरुषोत्तमदास पोपटलाल सोनी और मूलजी नरसी पटेल भी साइकिल से आए। इटावा से महावीरसिंह और उनके साथी रतन मिश्रा ने भी साइकिल से रास्ता तय किया। रास्ता कुछ इस तरह बनाया कि एक सौ आठ बस्तियों में पहुँचा जा सके। इतने गांवों में उन्होंने ढाई हजार लोगों से बातचीत की। उन्हें यज्ञ और गायत्री परिवार के बारे में बताया। रायपुर से आठ युवक यज्ञ का संदेश सुनाते हुए साइकिल से मथुरा तक पहुँचे थे। उन्होंने साइकिल के हैंडल पर पीले झंडे लगा लिए थे। खुद उन्होंने भी पीला कुर्ता पहना हुआ था। धोती का रंग जरूर सफेद था।

सिसौली (राजस्थान) से आये अजयदत्त ने सबका ध्यान खींचा। उनकी उम्र तो साठ वर्ष से ज्यादा थी ही, वे नेत्रहीन भी थे। सिसौली से मथुरा की दूरी करीब चार सौ मील है। वहां से सीधे ट्रेन और बस भी नहीं थी। अजयदत्त ने यह यात्रा टुकड़ों में की। कभी रेल में सवार हुए तो कभी बस में। चाहते तो वह तीन चार जगह गाड़ियां बदलकर भी आ सकते थे लेकिन उन्हें टुकड़ों-टुकड़ों में आना ज्यादा अच्छा लगा। इससे ज्यादा जगह रुकने और लोगों सं संपर्क करने का अवसर मिलता दिखाई दे रहा था। उस अवसर का उन्होंने उपयोग किया।

गोष्ठी में ही लोगों ने एक दूसरे को बताया कि अगले दिनों बड़ी संख्या में साधक यहां पहुंचने वाले हैं। प्रत्येक कार्यकर्त्ता अपने यहां उमड़ रहे उत्साह की जानकारी दे रहा था। ग्वालियर के महेशचंद्र शर्मा ने बताया कि जिस गाड़ी से वे रवाना हुए थे, उसी से मथुरा आने के लिए बीस लोग और तैयार थे। गाड़ी ठसाठस भरी हुई थी, इसलिए वे चढ़ नहीं पाए। कोटा के अमरपाल और भोपाल के माधव मुकुंद ने भी इसी तरह की सूचनाएँ दीं।

महेशचंद्र शर्मा और कोटा के अमरपाल अगले दो दिन तक अपने साथियों का इंतजार करते रहे। वे नहीं पहुँच पाए। पहुँचते तो अपने क्षेत्र के दूसरे कार्यकर्त्ताओं के साथ ही ठहरते। कोटा के कार्यकर्त्ताओं को ठहराने के लिए वसिष्ठ नगर में व्यवस्था की गई थी। ग्वालियर, मुरैना और मध्यप्रदेश के साधकों को पतंजलि नगर में ठहराया गया था। यह बस्ती जयसिंहपुरा गांव से वृंदावन की ओर चलते हुए बांई ओर थी। कन्हैयालाल वैद्य इस नगर के प्रबंधक संचालक थे और वे सूचना देते रहे कि कोटा से ज्यादा लोग नहीं आ पा रहे थे। जिन कार्यकर्त्ताओं के पहुँचने की सूचना है, वे तार और टेलीफोन से बता रहे है कि रेलगाड़ी में जगह नहीं मिल पा रही है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस तरह की सूचनाओं की बाढ़ सी आ जाने के कारण कन्हैया लाल खीझ भी जाते थे। एकाध बार उन्होंने नगर में ही होने वाली सायंकालीन गोष्ठी में कह भी दिया कि लोग खुद ही आने से कतरा रहे हैं और रेल मोटर नहीं मिलने का बहाना कर रहे हैं। दूसरे लोग भी तो आये हैं या नहीं। साधनों का ऐसा अभाव रहा होता तो ये लोग कैसे आए होते। वैद्य जी की इस टिप्पणी की सूचना आचार्यश्री के पास पहुँची थी और सुन कर वे हंस दिए थे। कहा था कि वैद्य जी के अपने क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं से बड़ी संख्या में आने की अपेक्षा है। यह अपेक्षा और उत्साह ही खीझ के रूप में व्यक्त हो रहा है।

बस्तियों में बसा यज्ञ नगर

गायत्री तपोभूमि में वृंदावन रोड पर स्थित प्रेम महाविद्यालय का इलाका यज्ञ नगर के रूप में बस गया था। पूरे इलाके को आठ हिस्सों में बांट दिया था। हर हिस्से को नगर का नाम दिया था और प्रत्येक नगर में क्षेत्र विशेष के लोगों को ठहराने की व्यवस्था की गई थी। यह विभाजन उस नगर में खानपान की सुविधा और विचार विनिमय की संभावनाओं को ध्यान में रखकर किया गया। आठ बस्तियों में नारद नगर वृंदावन रोड स्थित कोठी में था। हमीरपुर के जागीरदार बजरंग वल्लभसिंह इस नगर की व्यवस्था देख रहे थे। यहां मध्यप्रदेश से आए कार्यकर्त्ताओं के ठहरने का प्रबंध था।

व्यास नगर तपोभूमि से आगे चलने पर जयसिंहपुरा गांव के बाहर था। पतंजलि नगर के ठीक सामने बनाए इस नगर में सौराष्ट्र, मुंबई, बिहार, उड़ीसा और केरल के साधकों को ठहराने का प्रबंध था। अहमदाबाद के मणिभाई पटेल इस नगर की व्यवस्था संभाल रहे थे। पतंजलि नगर में राजस्थान के कार्यकर्त्ता ठहराए जा रहे थे। रामस्वरूप गंधी इस नगर के व्यवस्थापक थे। उनका इत्र फुलेल और धूपबत्ती अगरबत्ती का कारोबार था। पूरा नगर उनकी लाई धूप बत्तियों और सुगंधों से महकता रहता था।

यज्ञशाला के पास बसाये विश्वामित्र नगर में उत्तरप्रदेश के साधक ठहरे थे। काशी के एक युवा कार्यकर्त्ता जितेन्द्र वीर इस नगर के व्यवस्थापक थे। इसी तरह भरद्वाज नगर में असम, आन्ध्रप्रदेश, दिल्ली और पंजाब से आए कार्यकर्त्ताओं को ठहराया जा रहा था।

इन छह नगरों के अलावा दो बस्तियां और बसाई गई थीं। उनके साधु, संन्यासियों, विशिष्ट उपासकों, कार्यकर्त्ताओं और यज्ञ के संचालन में लगे पुरोहितों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विद्वानों को ही ठहराया गया। दधीच नगर साधु महात्माओं के लिए बना था तो याज्ञवल्क्य नगर में यज्ञ की व्यवस्था और संचालन में लगे कार्यकर्त्ताओं, पुरोहितों के लिए। इन नगरों में यज्ञ आरंभ होने के दो दिन पहले तक साधक उपासक आ गये थे। गायत्री तपोभूमि में बने स्वागत कक्ष में ठहराने और जिम्मेदारियां बांटने के लिए परामर्श मार्गदर्शन का क्रम चल रहा था।

यों कार्यकर्त्ताओं को जो स्वीकृति पत्र भेजे गए थे, उन पर ठहरने की व्यवस्था के बारे में आवश्यक जानकारी दे दी गई थी। उनके क्षेत्र के लिए बने नगर और यात्रा के समय आवश्यक वस्त्र आदि के निर्देश पत्र में ही लिख दिए गए थे। फिर भी तपोभूमि में स्वागत और मार्गदर्शन की अतिरिक्त व्यवस्था की गई। अगले दिन तपोभूमि से स्वागत कक्ष हटाना पड़ा क्योंकि वहां आगंतुकों का दबाव बढ़ने लगा था। २२ नवम्बर को प्रभातफेरी और कलश यात्रा संपन्न होने के बाद गायत्री तपोभूमि में उपासकों और श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ने लगा था।

कार्तिक शुक्ल एकादशी के दिन सुबह चार बजे का समय होगा। आचार्यश्री तब यज्ञशाला में पहुँच गये थे। तीन घंटे पहले ही वे यहां से गए थे। रात में सोना नहीं हो पाया था। यहां से जाने के बाद वे यज्ञ नगर के दूसरे प्रबंध देखते रहे थे और फिर यज्ञशाला में लौट आए थे। बीच में एकाध घंटे के लिए अखंड ज्योति संस्थान अवश्य गए थे। स्नानादि से निवृत्त होकर वहां से वापस आ गए थे। इधर यज्ञशाला के प्रबंधक रामलाल जी रात भर नहीं सो पाए थे। वे एकादशी लगते ही यज्ञकुंडों पर समिधा, हवन सामग्री और पंचपात्र आदि उपकरण रखवाने में व्यस्त हो गए थे। उनके साथ सत्रह कार्यकर्त्ता और इस काम में लगे थे।

अनाम साधु का उल्लास

आचार्यश्री ने यज्ञशाला में प्रवेश किया तो उन्होंने कुंडों पर की गई व्यवस्था के बारे में बताया। वे यज्ञशाला की व्यवस्था के बारे में बता ही रहे थे कि महायज्ञ की प्रारंभिक तिथियों में आचार्यश्री से मिलने आया साधु आता दिखाई दिया। आते ही उसने आचार्यश्री से बड़े आवेग के साथ कहा, 'मुझे शक्तिपीठ का पता चल गया है प्रभु। वह स्थान यही है। सती के केश कलाप इसी स्थान पर गिरे थे।'

साधु उत्साह में अनवरत बोले जा रहा था। आचार्यश्री उसकी ओर टकटकी लगाकर देख और सुन रहे थे। साधु आगे क्या कहता है? यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जानने की भी उन्हें उत्सुकता थी। इस बीच यज्ञशाला की व्यवस्था देख रहे रामलाल ने कहा, 'बाबा अभी हमें अपना काम कर लेने दो। फिर अपनी खोज के बारे में बताना।'

आचार्यश्री ने रामलाल को रोका और साधु से अपनी बात जारी रखने के लिए कहा। पूछा भी, 'यही स्थान से आपका क्या आशय है। वृंदावन में तो शक्तिपीठ है ही सही।'

साधु ने कहा, 'मेरा आशय इस क्षेत्र से है। यह क्षेत्र यानी जिस जगह आप इतना विराट आयोजन कर रहे हैं। उस बिंदु की पहचान भी हो गई है, जहाँ शक्ति के केश कपाल गिरे थे।'

कुछ रुक कर साधु ने कहा, 'जिस जगह आपने आदिशक्ति की स्थापना की है वही तीसरा शक्तिपीठ है। मैं किसी सुने सुनाये आधार पर नहीं कह रहा।'

'आपके कथन की साक्षी क्या है?' आचार्यश्री ने कहा,। इस पर साधु ने उत्तर दिया कि जिस समय सर्वतोभद्र मंडल का निर्माण हो रहा था, उस समय मैने कई ऋषिसत्ताओं को यहाँ देखा है। देवसत्ताओं का आह्वान करते हुए वे जिन मंत्रों का पाठ कर रहे थे उनमें शक्तिपीठ की आराधना वाले मंत्र भी थे। वे भद्र के पास खड़े होकर गायत्री तपोभूमि की ओर संकेत करते जाते थे। शक्ति का आह्वान जैसे उसी दिशा से कर रहे हों।

साधु अपनी बात कहे जा रहा था और आचार्यश्री उसकी बात सुन कर उसकी बात की पुष्टि करती हुई सी दृष्टि से देख रहे थे। उन्होंने कहा, 'आपने सही कहा है महात्मन। आपने जब पूछा था तब भी मैं यह बात कह सकता था लेकिन मैंने यही उचित समझा कि आप स्वयं ही अनुभव करें। इस आयोजन में दैवी और ऋषि सत्ताओं की उपस्थिति के और भी प्रमाण मिलने वाले हैं।'

यह प्रसंग घटे देर नहीं हुई थी कि याज्ञिकों ने आना शुरु कर दिया। आहुति देने वाले याजक अपने अपने स्थान पर बैठ गये। सेठ बिशनचंद इस अवसर पर आए हुए थे। सेठजी संसद सदस्य थे। वे कर्म से राजनीति में होते हुए भी मन और लक्ष्य से संस्कृति और समाज में ज्यादा रमे हुए थे। पिछले पचीस तीस वर्षों से उन्होंने समाज सुधार के क्षेत्र में काफी काम किया था। उन्होंने यज्ञस्थल पर बने अस्थाई गायत्री मंदिर में दीपक जलाया, पूजा की और 'यज्ञेन यज्ञमयजंत देवा' शीर्षक मंत्र से आराधना की। प्रतीकात्मक रूप से यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महायज्ञ का उद्घाटन आरंभ था। इसके बाद वे मंच पर आ गये। वहां गायत्री परिवार के कुलपति आचार्यश्री और महायज्ञ के ब्रह्मा पंडित हरिदत्त शर्मा भी उपस्थित थे। उनके अलावा क्षेत्र के कुछ अन्य प्रतिष्ठित जन भी मंच पर थे।

आचार्यश्री और सेठ विशनचंद के अलावा वहां आए विशिष्ट अतिथि आयोजन के संबंध में अपने विचार व्यक्त कर चुके तो ब्रह्मा की बारी आई। उन्होंने गायत्री मंत्र के संबंध में कुछ मूलभूत बातों का उल्लेख करते हुए होताओं को यज्ञ आरंभ करने का निर्देश दिया। आचार्यश्री ने इससे पहले महायज्ञ की व्यवस्था, उसमें मिल रहे लोगों के सहयोग और आ रही बाधाओं के बारे में बताया था। उन्होंने कहा कि आयोजन की व्यवस्था धन संपदा के भरोसे नहीं, त्याग बलिदान और परस्पर सहयोग के आधार पर हुई है।

दूसरी विशेषता उन्होंने यह बतायी कि यज्ञ में भाग लेने वाले साधकों को आहुतियां देने और परिक्रमा कर लेने तक ही सीमित नहीं मान लिया गया। इस तरह की भागीदारी तो आरंभ है। असल भागीदारी इसके बाद शुरु होगी। जिसमें वे अपने क्षेत्र में ज्ञान और चरित्र का आलोक जगाते हुए सक्रिय होंगे। वे अपने संपर्क क्षेत्र में तो यह सब करायेंगे ही, समाज में फैली बुराइयों और कुरीतियों को दूर करने के लिए भी संघर्ष करते रहेंगे।

याजक के हित आयोजन

सेठ विशनचंद ने इस बात को महत्त्व दिया कि आयोजन के छोटे बड़े सभी काम याजकों ने अपने हाथ में लिए हैं। यज्ञ अनुष्ठानों और पूजापाठ आदि में पंडित पुरोहितों का अनावश्यक दखल रहता है। वे ही मंत्रों का उच्चारण करते, कर्मकाण्ड कराते और लोगों से सिर्फ अपनी नकल करते चलने के लिए कहते हैं। आयोजन के बीच बीच में दक्षिणा और दान के लिए कुछ न कुछ रखवाते रहते हैं। पुरोहितों पर ही निर्भर हो जाने का परिणाम यह हुआ कि लोग इन आयोजनों का महत्त्व और रहस्य भूल गए। फिर उनका महत्त्व भी बिसराने लगे और अब कठपुतली की तरह मात्र उसका अनुसरण करते हैं। सेठ जी ने कहा कि इस आयोजन और इसके बाद शुरु होने वाली यज्ञ कार्यक्रमों की शृंखला से एक नया सूत्रपात होगा। लोग कर्मकांडों और रीतिरिवाजों का रहस्य समझ सकेंगे।

गायत्री तपोभूमि को इक्यावन शक्तिपीठों में से एक अनुभव करने वाला साधु भी मंच के आसपास ही मंडरा रहा था। उसके हावभाव से यह नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लग रहा था कि वह बोलने के लिए उत्सुक है। बल्कि वह यज्ञशाला के ठीक सामने खड़े होकर एक विहंगम दृश्य देखना चाह रहा था। एक सौ अठ्ठाइस यज्ञशालाओं के आसपास सजाये गए जवारों के साथ-साथ हरे भरे पौधे लहलहा रहे थे। उन्होंने परिदृश्य को आश्रम जैसा रंग दे दिया था। साधु उस हरियाली को देखकर हर्षित हो रहा था।

पंडित हरिदत्त शर्मा अपना व्याख्यान शुरु करने ही वाले थे कि आचार्यश्री ने बोलने का उपक्रम किया। वे वक्ता के स्थान पर आए और बिना कोई भूमिका बांधे कहने लगे, 'यहाँ कई साधकों को तरह-तरह की अनुभूतियां होंगी। बहुतों को नहीं भी हो सकती हैं। उन अनुभूतियों का संबंध किसी की आत्मिक स्थिति के श्रेष्ठ या कम श्रेष्ठ होने से नहीं है। आप लोग सिर्फ इतनी सावधानी और संयम बरतें कि अपनी अनुभूतियों के बारे में किसी को बताएँ नहीं। उन्हें चर्चा का विषय नहीं बनने दें।'

आचार्यश्री इतना कहकर वक्ता के स्थान से उठ गए। उनके स्थान पर पंडित हरिदत्त शर्मा आए और गायत्री मंत्र का मर्म महत्त्व बताने लगे। पंडित जी कानपुर में दयानंद एंग्लो वैदिक महाविद्यालय में संस्कृत के प्राध्यापक थे। आर्यसमाज की शिक्षण संस्था से जुड़े होने के कारण महायज्ञ में उनका आना चुनौतीपूर्ण था। ऐसे महायज्ञ में उनका आना तो और भी कठिन था, जिसमें गायत्री के साकार स्वरूप की आराधना हो रही हो। उन्होंने आर्यसमाज के अति कट्टरपंथी आग्रह को एक तरफ रखते हुए कहा कि गायत्री का मंदिर व्रजभूमि में ही रखे जाने के पीछे एक उद्देश्य है। पौराणिक दृष्टि से ही नहीं, वैदिक दृष्टि से भी यह महत्त्वपूर्ण है।

पंडितजी ने कहा कि आचार्यश्री ने गायत्री के 'ग' की व्याख्या करते हुए उसे गोलोक का प्रतीक बताया है। इस अक्षर का दूसरा अर्थ 'गवि' भी है। 'गवि' का अर्थ है जहां गायें भ्रमण करती और मुक्त पुरुष विचरण करते हैं। दूसरा अक्षर 'य' का अर्थ है 'यमश्वसा' यह यमुना का ही एक नाम है। अनेक तीर्थों और नगरों में भ्रमण करते हुए यमुना मथुरा तक आई है। यमुनोत्री के बाद उसका पूजनीय और दर्शनीय रूप सिर्फ यहीं दिखाई देता है। अंतिम अक्षर 'त्री' का आशय तीर या तट से भी है। इस दृष्टि से मथुरा वृंदावन के बीच यमुना तट पर यज्ञशाला का निर्माण वैदिक, पौराणिक और सामाजिक तीनों ही दृष्टियों से उपयुक्त है।''

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्मा के प्रवचन के बाद दो तीन विशिष्ट व्यक्तियों ने और अपने विचार रखे। उसके बाद पंडित हरिदत्त शर्मा का निर्देश मिलते ही यज्ञीय कार्यक्रम आरंभ हो गया। आचार्यश्री मंच से उतर कर यज्ञकुंड के पास गए। निर्देश पाकर अन्य होताओं ने भी इस विधान का अनुकरण किया। यज्ञ कुंड के पास पहुंच कर आचार्यश्री ने उसे मंत्र से अभिषिक्त किया। जल से अभिसिंचित करने के बाद उन्होंने कुंड के बीच में स्वस्तिक बनाया। उस पर अक्षत, पुष्प और चंदन समर्पित किए।

यज्ञकुंड का भीतरी पूजन चल रहा था और पंडित हरिदत्त शर्मा समझा रहे थे कि यज्ञकुंड मात्र गह्वर या गड्ढा नहीं है। यह यज्ञ भगवान की स्थापना के लिए बनाया गया देवमंदिर है। इस उपक्रम के बाद यज्ञकुंड के बाहर स्थित तीन मेखलाओं का पूजन किया गया। ये मेखलाएं क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु और महेश का प्रतिनिधित्व करती है। यह उपचार चल ही रहा था कि यज्ञ के ब्रह्मा पंडित हरिदत्त शर्मा के मुंह से अनायास ही ये वाक्य निकलने लगे। ब्रह्मा, विष्णु और महेश का यह पूजन ब्रह्मा की तरह सत्प्रवृत्तियों का सृजन, विष्णु की तरह सद्भावनाओं का अभिवर्धन और शिव की तरह दुष्ट दुष्प्रवृत्तियों का संहार करेगा।

समिधाधान, अग्निप्रदीपन आदि कर्मकाण्ड आरंभ होने में अभी कुछ देर थी। उससे पहले यज्ञ आराधन का क्रम कुशकंडिका तक पहुँचा था। कुंड स्थापन और मेखलापूजन की तरह यह उपचार भी महत्त्वपूर्ण है। पंडित हरिदत्त शर्मा ने समझाया कि यज्ञ को सफल बनाने के लिए कुशों का उपयोग आवश्यक है। आकाश में जब बादल गरजते हैं और बिजली कड़कती है तभी पृथ्वी पर कुशा नामक घास उगती और बढ़ती है। मेघ गर्जन और तड़ित प्रवाह के समय सोम तत्त्व की वृष्टि होती है। वह सोम कुशा को संस्कारित कर देता है। सोम संस्कार के कारण कुशा यज्ञ अग्नि से उद्भूत अग्नि को शांत करती है।

आचार्यश्री जब 'कुश कंडिका' विधान संपन्न करा रहे थे तो पास ही खड़े कोई विद्वान इस प्रक्रिया का मर्म बता रहे थे। वे कह रहे थे कि जो कुशा का चयन सफलता पूर्वक कर लेता है वही कुशल है। कुशल शब्द बना इसी धातु से है। उस यज्ञ कुंड के पास बैठे यजमान ने कुछ कहना चाहा। आचार्यश्री ने उसे चुप रहने का संकेत किया। बाद में पता चला कि वह यज्ञस्थल पर बने गायत्री मंदिर के बारे में कुछ कहने जा रहा था। उसकी बात आंतरिक अनुभूति से संबंध रखती थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दोपहर बाद के प्रवचन में आचार्यश्री ने कुशाओं के विज्ञान और प्रतिमा रहस्य का विवेचन किया। कुशाओं के बारे में उन्होंने कहा कि यज्ञ के सान्निध्य में रहने पर, यज्ञ आराधन करते समय याजक में अपूर्व आत्मिक ऊर्जा जागृत होती है। उसके क्षरण और अग्नि में स्वाहा होने से रोकने के लिए कुश का प्रयोग किया जाता है। कुश के साथ आसन, जल प्रसेचन आदि कर्म भी यज्ञ और चेतना के संयोग से उत्पन्न होने वाले ऊर्जा के प्रचंड वेग को सन्तुलित करने के लिए है।

प्रारंभिक उपचार संपन्न हो गये। इनके चलते रहने तक यज्ञ नगर में भीनी भीनी सुगंध महक रही थी। यज्ञशाला के आसपास बसे नगरों और उनमें ठहरे साधकों के कारण वातावरण थोड़ा दूषित भी हुआ था। स्वच्छता और सफाई की कितनी ही व्यवस्था की जाए लेकिन लोगों के स्नानादि से निवृत्त होते समय किंचित मलीनता तो फैलती ही है। उससे दुर्गंध उठना भी स्वाभाविक है। लेकिन यज्ञनगर में व्याप्त हो रही सुगंध उस सबको तिरोहित कर रही थी।

कुछ लोगों का मानना था कि आयोजन स्थल पर विशाल परिमाण में जो हवन सामग्री संचित रखी हुई है, उसी के कारण सुगंध फैल रही है। दूसरे साधकों का अनुभव था कि जिस जगह यज्ञ सामग्री थी, वहां उस तरह की सुगंध का चिह्न भी नहीं था। यह सुगंध कमल, चंपा और चमेली के फूलों से आने वाली महक की तरह थी। योगशास्त्रों के अनुसार यह आंतरिक ऊर्जा केन्द्रों के खिलने और प्रस्फुटित होने से आती है। इसका सिर्फ अनुभव किया जा सकता है।

प्रदीपन के लिए अग्नि गायत्री तपोभूमि की यज्ञशाला से लाई गई थी। यज्ञ आचार्य, ब्रह्मा और वहां आए सिद्ध संतों ने मंत्र बल का उपयोग कर स्वयं भी यज्ञ अग्नि प्रकट की थी। अग्नि स्थापन के बाद गायत्री स्तवन के बारह मंत्रों से आराधन आरंभ किया गया। उस समय सुबह के सात बजे थे। जिस समय स्तवन पढ़ा जा रहा था तो लगा कि सविता देव पूर्ण प्रखरता से व्यक्त हो रहे हैं। उनका प्रकाश और ताप औसत प्रातःकाल से ज्यादा ही तेज अनुभव हो रहा था।

ललिता सखी या मीरा

अग्नि प्रदीपन के बाद आचार्यश्री अपने लिए बनाए विशेष प्रकोष्ठ में चले गए। यह चारों ओर से खुला था। दस वर्गगज के घेरे में बनी इस कुटिया में भीतर एक तख्त बिछा हुआ था। बाहर एक कुर्सी रखी थी। आचार्यश्री प्रायः

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

खड़े रह कर ही आगंतुकों से मिल रहे थे, उनसे कुशलक्षेम पूछ रहे थे और कुछ लोगों को उनकी आवश्यकता के अनुसार परामर्श भी दे रहे थे।

यज्ञ की पहली पारी में करीब आठ हजार लोगों ने आहुतियां दी। कई पारियां संपन्न हुईं। पारी पूरी होने के बाद भोजन आदि का क्रम यथावत चलता रहा, लेकिन लोग आचार्यश्री से मिलने के लिए भी बहुत उत्सुक थे। शुरु दिन डेढ़ सौ से ज्यादा साधक मिले। उनमें कई ने अपने अनुभव सुनाने की अनुनय की। आचार्यश्री ने कहा कि सुनाने की अपेक्षा अनुभूतियां लिख कर दे दी जाय। समय मिलते ही पढ़ लेंगे और यथोचित परामर्श भी दे देंगे। यहां साधकों को अपनी कठिनाइयों और समस्याओं के बारे में ही बताना चाहिए।

आगंतुकों में एक शरदचंद्र शर्मा थे। महायज्ञ में आने से पहले वे मथुरा की यात्रा कर आए थे। निंबार्क संप्रदाय के अनुयायी होने के नाते वे ललिता संगम की यात्रा करते हुए आए थे। यह तीर्थ राधाकुंड के नाम से प्रसिद्ध है। कुंड के बारे में मान्यता है कि इसमें नाभि या कंठ तक डूबे रहकर 'राधा कृपा कटाक्ष स्तोत्र' का पाठ किया जाए तो वाणी समर्थ हो जाती है और भक्ति की आकांक्षा हो तो वह पूरी होती है। साधक की पात्रता और आंतरिक स्थिति के अनुसार राधा के दर्शन भी होते हैं।

शरद शर्मा वहां की यात्रा कर लौटे तो विचित्र मनःस्थिति में थे। उन्हें राधा कुंड के पास नाचती हुई एक महिला मिली थी। उसने अपना नाम मीरा बताया था और पूछा था कि क्या शरद बाबू श्रीराधा के दर्शन करना चाहते हो। शरद के मुंह से अनायास ही 'हां' निकला था लेकिन वह असमंजस में भी था कि किस अपरिचित महिला के सामने अपने भीतर के भाव कह दिए। इस विक्षोभ में वह राधाकुंड में स्नान कर निकला ही था कि एक वैष्णव भक्त दिखाई दिया। उन्होंने भी इसी तरह का सवाल पूछा। शरद को और अटपटा लगा। लेकिन उसने भक्त से इस तरह के सवाल का कारण पूछ ही लिया। यह भी कि पहले भी एक महिला यह सवाल पूछ चुकी है। सुनकर वह भक्त चहक उठा। कहने लगा कि तुम बड़भागी हो। वह मीरा है। बहुत कम लोगों को उसके दर्शन होते हैं।

शरद को यह पहेली समझ में नहीं आई। किसी महिला को मीरा बताने और श्रीराधा के दर्शन के बारे में पूछने की गुत्थी सुलझ नहीं रही थी। उन्होंने आचार्यश्री से इस गुत्थी के बारे में पूछा। कोई और अवसर होता तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शायद आचार्यश्री बाद के लिए कह देते लेकिन शरद बहुत क्षुब्ध दिखाई दिए। आचार्य श्री ने समाधान सुझाया। कहा कि उच्च आंतरिक स्थिति में पहुँचे लोगों को इस तरह के अनुभव होते रहे हैं। और लोगों ने भी बताया है। यदाकदा किसी को दिखाई देने वाली वह नारी वास्तव में अशरीरी मीरा ही है।

शरद चौंके, 'तो क्या मीरा को मोक्ष नहीं मिला गुरुदेव? वह अब भी गोलोकधाम के लिए भटक रही है।'

आचार्यश्री ने कहा, 'नहीं। यह बात नहीं है। वैष्णव साधुओं की मान्यता है कि मीरा कोई मानवी सत्ता नहीं है। वह श्रीराधा की आठ सखियों में से एक थी। कृष्णावतार के समय वे श्रीराधा की ललिता सखी थीं। मान्यता है कि राधा के सान्निध्य में रहने के कारण उन्हें भी भगवान कृष्ण का अनुराग मिला था, लेकिन वे सालोक्य मुक्ति प्राप्त नहीं कर पाई थीं। वही ललिता सखी मध्यकाल में मीरा के रूप में अवतरित हुई।'

शरद ने पूछा कि किसी पुस्तक या शास्त्र में यह नहीं लिखा है। आप किस आधार पर कहते हैं? आचार्यश्री का इस पर उत्तर था कि संत और भक्त परंपरा की बहुत सी बातें कहीं लिपिबद्ध नहीं की गई हैं। वे केवल वाचिक परंपरा से ही जानने समझने में आती हैं। फिर अपने अनुभव का भी तो प्रमाण है।

यह सुनकर शरद का समाधान हो गया। आचार्यश्री की ओर कुछ पल निहार कर वह बोला ललिता जी भी गायत्री के किसी न किसी रूप का प्रतिनिधित्व करती होंगी। उसकी बात का आचार्यश्री ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे स्नेहिल दृष्टि से उसकी ओर देखते रहे। शरद उन्हें देखकर चुप रह गया। उससे कुछ कहते नहीं बना। फिर भी उसके चेहरे पर संतोष का भाव था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

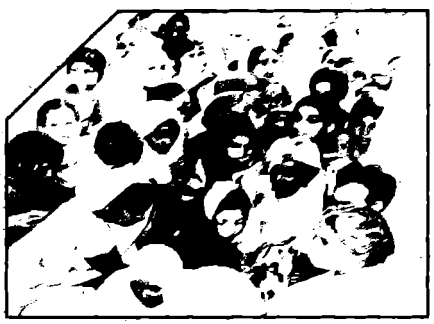

आत्मीयता के विस्तार ने खड़ा किया बृहद परिवार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(xv)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भिन्न-भिन्न मुद्रायें परिचय देती हैं
युगऋषि के प्रखर चिन्तन की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संस्कारों का आवेग

यज्ञ नगर के बाहर कुछ लोग पर्चे बांट रहे थे। उनमें सहस्रकुंडीय गायत्री महायज्ञ को धर्म विरुद्ध बताया गया था। जिन मुद्दों को उछाला गया था, उनमें गायत्री मंत्र का जोर से उच्चारण करने, हवन कुंडों पर स्त्रियों को बिठाने और शुक्र ग्रह के अस्त होने की बात कही गई थी। मुद्दे वही पुराने थे। इनमें शुक्र के अस्त होने पर यज्ञ करने को शास्त्र विरुद्ध बताते हुए लोगों से अपील की गई थी कि वे महायज्ञ में नहीं जायें। इससे पाप लगेगा।

आचार्यश्री ने इन आक्षेपों का जवाब देना आवश्यक नहीं समझा। उनकी ओर से योगेन्द्र ब्रह्मचारी ने एक बार मंच से इतना भर कहा कि शुक्र ग्रह के अस्त होने पर यज्ञ, महायज्ञ नहीं करने की मर्यादा सिर्फ सकाम अनुष्ठानों में है। वर्षा के लिए, दुर्भिक्ष निवारण के लिए अथवा राष्ट्र पर आए किसी भीषण संकट के लिए आयोजन किया जा रहा हो तो इस निषेध पर ध्यान नहीं देना चाहिए। यह यज्ञ तो विश्व कल्याण के लिए है-आध्यात्मिक मंगल के लिए है। इसलिए किसी ग्रह के उदय अस्त की चिंता आवश्यक नहीं है। विरोधियों ने शुक्र अस्त होने की अवस्था में यज्ञ को आपदाएं बुलाने वाला बता दिया था। यज्ञ याग आदि में भाग लेने वालों को यह सामान्य ज्ञान तो होता ही है कि शुक्र अस्त होता है तो पुण्य अनुष्ठान नहीं किए जाते। विवाह, प्राण प्रतिष्ठा और मुहूर्त आदि आयोजन नहीं होते। इस तर्क ने लोगों को थोड़ा परेशान किया।

कार्तिक शुक्ल की त्रयोदशी तिथि के दिन आचार्यश्री को स्वयं सामने आना पड़ा। उन्होंने कहा कि कार्तिक शुक्ल एकादशी को सोए हुए देवता जाग जाते हैं। इस तिथि को देवोत्थान एकादशी कहते हैं। फिर उनकी आराधना के लिए शुक्र या शनि का क्या विचार करना? दूसरे यह भी विचार करना चाहिए कि और ग्रह उदय की स्थिति में हों या अस्त अवस्था में उनका अधिपति सूर्य-सविता देवता तो जाग्रत, उदित और प्रखर है। कोई ग्रह उदित रहे या अस्त, उससे सविता देवता के उपासकों को कोई असर नहीं पड़ता।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसी मंच पर स्वामी प्रेमानंद भी थे। उन्होंने चुटकी ली 'भई मथुरा वालों के ऐसे प्रचार पर ध्यान मत देना। यहां भगवान कृष्ण को भी कारावास में डाल देने वाले लोग राज करते रहे हैं। कई लोग तो इसे कृष्ण के बजाए कंस की नगरी कहते है। कंस के जमाने में लोगों ने कृष्ण को भी यहां टिकने नहीं दिया था।'

अपने कटाक्ष को हलका करते हुए उन्होंने कहा 'लेकिन यह भक्तों, श्रद्धालुओं और सरल हृदय लोगों की नगरी भी है। वे इस तरह के आक्षेपों पर ध्यान नहीं देते। कंस की राजधानी होते हुए भी लोग इसे भगवान कृष्ण की जन्मस्थली होने के कारण याद करते हैं।'

विशेष आलोचना और पर्चेबाजी के बावजूद श्रद्धालुओं का सैलाब-सा उमड़ पड़ा था। उससे आलोचकों, विरोधियों के कलेजे पर सांप लोटने लगा। कुछ लोग थे जो बीच का रास्ता तलाश रहे थे। उस समुदाय के कुछ प्रतिनिधि आचार्यश्री से मिले। व्यवस्था और श्रद्धालुओं से मिलने में आचार्यश्री यद्यपि व्यस्त थे, फिर भी उन्होंने विरोधियों के लिए समय निकाला। प्रवचन का समय दोपहर दो बजे से होता था। सुबह का समय यज्ञ अग्निहोत्र के लिए सुरक्षित था। अग्निहोत्र करीब ग्यारह बजे तक चलते। आचार्यश्री ने उन लोगों को अपनी कुटिया में बुलाया। ऐसा समय रखा कि ज्यादा भीड़भाड़ न हो। विरोधियों को शिविर में देख लेने के बाद कुछ अप्रिय घट जाने की आशंका थी। लोग उन्हें यहां आया देखते तो स्वाभाविक ही आपत्ति करते।

अपेक्षाकृत शांत और एकांत समय में प्रतिनिधिगण आचार्यश्री से मिले। उनमें एक का नाम था मधुर बाबू। कुशलक्षेम की औपचारिकता पूरी होते ही उन्होंने कहा कि आपके आयोजन से हम लोगों को विरोध नहीं है। तीर्थ पुरोहितों को भय है कि आपके कारण उनका रोजगार चौपट हो जाएगा। आप कुछ आश्वस्त करें तो उन्हें थोड़ा चैन मिले। मधुर बाबू के कहने के ढंग में शालीनता थी। करीने से अपनी बात कहने के बाद वे आचार्यश्री की ओर देखने लगे। आचार्यश्री के चेहरे पर असहमति या विरोध का कोई भाव नहीं था। उन्होंने मधुर बाबू से कहा, 'आपकी चिंता से हम लोग अवगत हैं लेकिन आप निश्चित मानिए कि तीर्थ पुरोहितों से हमारी कोई प्रतिद्वन्द्विता नहीं है। हम या हमारे लोग उनके व्यवसाय को चौपट करने का इरादा नहीं रखते। बल्कि स्थिति उलटी है। हमारे प्रयत्नों से मथुरा में यात्रियों की संख्या बढ़ेगी। इससे उनका कारोबार और अच्छी तरह चलेगा।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मधुर बाबू ने स्थानीय तीर्थ पुरोहितों का मन खोलते हुए कहा, 'यही तो वे नहीं चाहते। आपके अनुयायी यहां आयेंगे। वे स्वयं ही मंदिरों और घाटों की यात्रा करेंगे। यहां वहां टीका टिप्पणी भी करेंगे। दूसरे लोग भी उनकी देखादेखी पुरोहितों की आलोचना करेंगे। पंडों पुरोहितों को डर है कि इससे उन्हें नुकसान होगा।'

आचार्यश्री ने अब स्थानीय पुरोहितों का मन अच्छी तरह समझ लिया था। समझ तो वे पहले ही गये थे, पंडे पुरोहितों का मन अब खुलकर सामने आ गया था। उन्होंने मधुर बाबू से कहा, 'हमारे लोग किसी भी यात्री को घाटों और मंदिरों पर दक्षिणा देने या चढ़ावा चढ़ाने से नहीं रोकते। लेकिन वे जबर्दस्ती वाले चढ़ावे और लूटपाट की श्रेणी में आने वाले दान को चुपचाप देखते नहीं रहेंगे। उसका विरोध करेंगे। कोई भी समझदार व्यक्ति इस तरह की दान दक्षिणा का विरोध ही करेगा।'

चर्चा काफी देर तक चली। मधुर बाबू और साथ आए प्रतिनिधि लगभग संतुष्ट होकर गये। मन में थोड़ा मलाल यही रहा कि पंडों पुरोहितों को आयोजन में घुसने की छूट नहीं मिल सकी। वे आचार्यश्री की ओर से यह संदेश लेकर गए कि यज्ञ आयोजन में सहयोग करने वाले पुरोहितों का सम्मान किया जाएगा। पूर्णाहुति के बाद समापन अवसर पर उन्हें दक्षिणा भी भेंट की जाएगी।

दोपहर तक यज्ञ अग्निहोत्र का कार्यक्रम चलता था और उसके बाद प्रवचन, गोष्ठी, विमर्श आदि का क्रम चलता। बिहारी लाल शास्त्री, भूदत्त ब्रह्मचारी, आनंद भिक्षु और पूर्णचंद्र एडवोकेट आदि विद्वानों ने आयोजन के सामाजिक पक्ष पर ज्यादा जोर दिया। विरोध और निंदा आलोचना का सिलसिला पूरी तरह बंद नहीं हुआ था। हाँ, धरना प्रदर्शन आदि बंद हो गए थे।

द्वारका से मिले निर्देश

जगह-जगह से आये साधक अपनी अनुभूतियां सुनाना चाहते थे। द्वारका से आये स्वामी नारायणानंद ने आरंभ कर दिया था। उन्हीं के कारण साधकों का उत्साह बढ़ा था। स्वामी नारायणानंद ने कहा था कि वे यहां आने से पहले रणछोड़राय के मंदिर में गये थे। द्वारका का मुख्य मंदिर यहीं है। इसे द्वारकाधीश

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का मंदिर भी कहते हैं। उन्होंने कहा कि मंदिर के भीतर रणछोड़राय की श्यामवर्ण चतुर्भुज मूर्ति का दर्शन कर रहे थे तो उन्हें भावावेश हुआ। पहले भी कई बार मंदिर गये हैं। तरह-तरह की अनुभूतियां हुई हैं, लेकिन यह अनुभव अनूठा था।

स्वामी जी को लगा कि रणछोड़राय जी की प्रतिमा से प्रकाश की एक किरण निकली है और उनके आगे एक दिव्य देहधारी आकृति बन गई है। वह आकृति स्वामी जी के आगे आगे चली जैसे उनका मार्गदर्शन कर रही हो। वह ज्योति गोमती की ओर छप्पन सीढ़ियां उतरती हुई संगमघाट की ओर बढ़ी। संगम घाट पर गोमती समुद्र में मिलती है। वहां संगम नारायण का मंदिर है। ज्योति संगम नारायण के पास से निकलते हुए गोमती के किनारे आगे बढ़ी। स्वामी नारायणानंद भी उसका अनुगमन करते हुए चल रहे थे। ज्योति निष्पाप सरोवर के पास पहुंची और वहां कुछ देर के लिए रुक गई। यह सरोवर समुद्र के खारे पानी से भरा रहता है। स्वामी जी ने ज्योति का संकेत समझा और सरोवर में स्नान किया। उसके बाद गोमती में स्नान किया। उस स्नान के बाद नदी तट पर स्थित लौ के आकार की वह ज्योति एक लपट में बदल गई।

स्वामीजी स्तब्ध से देख रहे थे। यह सब देखते हुए न डर लग रहा था और न ही रोमांच हो रहा था। वे उत्सुकता से अगले क्षण की घटनाओं का इंतजार कर रहे थे। कुछ देर ध्यानस्थ से खड़े रहने के बाद उन्होंने देखा वह ज्योति आकार ले रही है। धीरे-धीरे स्पष्ट होता गया कि प्रकाश एक आकार ले रहा है। वह एक प्रतिमा के रूप में बदल गया। प्रतिमा रणछोड़ राय की थी। श्यामवर्ण चतुर्भुज मूर्ति जैसे जीवंत रूप ले गई थी। स्वामी जी को लगा कि साक्षात भगवान कृष्ण चतुर्भुज विष्णु का रूप धारण किए प्रकट हो गए हैं। उनसे कुछ कह रहे हैं। जो कहा वह सिर्फ अंतरात्मा में ही गूंजा। लगा कि मथुरा जाने का निर्देश दिया जा रहा है। रणछोड़राय जैसे आश्वस्त कर रहे है कि वे स्वयं भी वहां उपस्थित रहेंगे।

स्वामी जी ने कहा कि भगवान आप तो सदा ही और सब जगह रहते हैं। यह विशेष प्रलोभन क्यों? अपनी तरह से स्वामी जी ने चुहल की थी। उधर से उत्तर आया, 'सही है कि मैं सर्वत्र और सभी कालों में हूँ। लेकिन मथुरा में उन दिनों साधकों की आत्मिक संवेदना ज्यादा प्रगाढ़ होगी। उस मनःस्थिति में परमात्म चेतना का अनुभव सुगमता से किया जा सकेगा।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वामी जी ने बताया कि यहां आने के बाद उन्होंने आचार्यश्री से इस अनुभव के बारे में बताया। प्रभु से हुए इस संवाद के बारे में भी कहा था। आचार्यश्री ने कहा था कि इन दिनों साधकों की ग्रहणशीलता बढ़ गई है। उन्हें आध्यात्मिक सत्य ज्यादा अच्छी तरह अनुभव हो सकते हैं।

अवधूत से छुटकारा

ओंकारेश्वर के पास से आये सदानंद त्रिपाठी ने अपना अनुभव सुनाया। कहने लगे नर्मदा की परिक्रमा के दौरान एक पट्टी ऐसी भी आती है जहाँ कोई सामान लेकर चलना खतरे से खाली नहीं है। आठ दस मील लंबी इस पट्टी में कुछ कबीलाई लोग रहते हैं। वे जरायम पेशा हैं और उस क्षेत्र से गुजरने वाले लोगों को लूटमार मचाए बिना नहीं गुजरने देते। भेड़ाघाट से कुछ ही आगे आने पर नर्मदा के तट पर एक संन्यासी दिखाई दिया। वह संन्यासी नर्मदा स्नान कर निकल रहा था। संन्यासी ने पूछा, 'गुरु की खोज में निकले हो क्या? जिस गुरु को आप तलाश रहे है, मैं भी उन्हीं का शिष्य हूँ।'

सदानंद उस संन्यासी की बात का जवाब दिए बिना उसकी ओर देख रहा था। उस संन्यासी ने कहा कि मेरे और आपके गुरु का नाम स्वामी ओंकारानंद है। उन्होंने मुझे आपको लिवाने भिजवाया है। सदानंद ने पूछा कि आश्रम कितनी दूर है तो संन्यासी ने कहा यहां से बीस बाईस कोस दूर है। शाम तक वहां पहुंच जाना है।

जिस समय संवाद चल रहा था, उस समय दोपहर ढल रही थी। शाम तक इतनी दूरी तय करना कठिन था। कठिन ही क्या असंभव सा था। उस संन्यासी ने सदानंद के असमंजस को समझा। उसने कहा चिंता न करो। हम समय पर पहुंच जाएंगे। स्वामी ओंकारानंद अवधूत हैं। हम उसी परंपरा में दीक्षित हैं। सदानंद को अवधूत शब्द सुनकर अटपटा सा लग रहा था। वह मानता था कि इस श्रेणी के साधु संन्यासी दुनियादारी के लायक नहीं होते। उनके पास कुछ सिद्धियां होती हैं लेकिन साधनपथ पर सहायक नहीं होती।

सदानंद ने अपना अनुभव बताया कि अवधूत शब्द सुनते ही शरीर में झुरझुरी सी आ गई। पत्ते की तरह कांपने लगा। ऐसी घबड़ाहट होने लगी कि मन करने लगा उलटे पांव लौट जाए। यह विचार आया ही था कि संन्यासी ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसका हाथ पकड़ लिया। कहने लगा कि तुम वापस जाने की सोच रहे थे। मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। तुम्हें अवधूत बाबा तक पहुँचाना मेरी जिम्मेदारी है। उस जिम्मेदारी को पूरा किए बिना मैं यहां से हटूंगा नहीं। यह कहकर वह संन्यासी धसीटने सा लगा। सदानंद वैसे हट्टाकट्टा नौजवान था। संन्यासी उसकी तुलना में काफी बुजुर्ग था। शरीर में जान भी नहीं थी लेकिन उसके व्यक्तित्व में वशीभूत कर लेने वाली शक्ति थी। सदानंद को लगा कि वह अवश हो गया है और चाह कर भी हाथ नहीं छुड़ा पा रहा है फिर लगा कि धीरे-धीरे चेतना लुप्त होती जा रही है।

होश आया तो देखा कि वह शिला पर बैठा है। सामने कुछ कुटियाएं बनी हुई हैं। एक कुटिया के सामने सफेद जटाओं वाले एक संन्यासी दिगंबर अवस्था में बैठे हैं। उनके सामने कुछ संन्यासी मृगछाला बिछाए बैठे हैं। सबसे बुजुर्ग दिखाई दे रहे संन्यासी ही संभवत: ओंकारानंद थे। उन्होंने सदानंद को इशारे से अपने पास बुलाया। सदानंद पास जाते हुए डर रहा था। वह मन ही मन गायत्री मंत्र का जप करने लगा। वह जप करते हुए उस आश्रमनुमा जगह पर बैठे दिगंबर संन्यासियों को भी देखता जा रहा था। स्वामी ओंकारानंद ने सदानंद को बैठ जाने का आदेश दिया। सदानंद के बैठते ही ओंकारानंद ने कहा, 'मैंने तुम्हें विशेष उद्देश्य से बुलाया है। मैं यहाँ तुम्हें अघोर साधना में दीक्षित करूंगा।'

सदानंद ने कहा, 'लेकिन मैं इस साधना में दीक्षित नहीं होना चाहता। मुझे क्षमा करें।'

स्वामी ओंकारानंद ने कहा, 'तुम दीक्षित होना चाहो या नहीं, मुझे तुम्हें दीक्षित करना ही है। तुमने पिछले जन्मों में मेरी बहुत सेवा की है और उसका ऋण मुझे उतारना ही है।'

कहते कहते स्वामी ओंकारानंद अचानक चुप हो गये। उनकी चुप्पी में स्तब्ध होने का भाव था, जैसे अचानक कोई बात याद आ गई हो। उन्होंने चर्चा का रुख बदला और कहा, 'अरे तुम्हारा चतुर्विंश लक्ष अनुष्ठान पूरा हो गया। तुम अब भी गायत्री मंत्र का जप कर रहे थे। यह संख्या पूरी होने के बाद मैं तुम्हारी सहमति होने पर ही दीक्षित कर पाउंगा। ओंकारानंद यह कहने के बाद देर तक स्तब्ध से बैठे रहे। फिर उन्होंने उसी संन्यासी को बुलाया और कहा कि इसे जहां से लाए हो वहीं छोड़ आओ। यह अपने स्वरूप को जान गया है। अब हम इसे अपने मार्ग पर दीक्षित नहीं कर सकते।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संन्यासी ने अपने गुरु के आदेश का पालन किया और सदानंद को नर्मदा के तट पर ले जाकर छोड़ दिया। वापसी में भी समय का बोध नहीं हुआ था। लगा कि कुछ ही पल बीते होंगे। सदानंद ने गोष्ठी में साथियों से कहा कि यहां आने पर आचार्यश्री को इस घटना के बारे में बताया था। साथियों ने उत्सुकता से पूछा फिर गुरुदेव ने क्या कहा? सदानंद ने कहा कि गुरुदेव ने कुछ नहीं कहा। वे सुनकर चुप रह गए। इस घटना का रहस्य बताने के लिए कहा तो मुस्करा कर रह गये। सदानंद के अनुभव का निचोड़ यह था कि गायत्री साधना ने उसे दिगंबर अवधूत अघोरी के चंगुल में फंसने से बचा लिया।

इसलिए विवाह करो

महायज्ञ में आये कुछ व्यक्ति सिद्ध, साधक स्तर के थे। उनमें एक अजितनाथ ने गोष्ठी में अद्‌भुत संस्मरण सुनाया। अजितनाथ का मन गीता, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और योग वासिष्ठ आदि वेदांत शास्त्रों के अध्ययन में खूब लगता। वे इसी में मगन रहते थे। अपने लिए जैसे तय कर चुके थे कि घर गृहस्थी के झंझट में नहीं पड़ना है। संन्यास लेकर चुपचाप आत्मविकास करते रहना है। गायत्री साधना करते हुए उन्हें किसी भी व्यक्ति के भूत, वर्तमान और भविष्य का आभास होने लगा था। भविष्य के आभास को तो किसी ने परखा नहीं था लेकिन अतीत और वर्तमान के बारे में कई लोगों के बारे में उन्होंने सही-सही जानकारी दी। सिद्धि की कसौटी पर खरा उतरने से उनका संकल्प और प्रगाढ़ हुआ। उन्होंने निश्चय सा कर लिया कि घर गृहस्थी नहीं बसाएंगे। अपने मार्गदर्शक के बताये मार्ग पर चुपचाप चलते रहेंगे।

पिछले दिनों अजितनाथ का विवाह तय हो गया। वह मना नहीं करें, इसके लिए माता-पिता ने आचार्यश्री से पहले ही पूछ लिया था। पुत्र के विवाह की अनुमति मिल गई थी। जब अजितनाथ को सूचना दी तो वे चौंके और कहने लगे कि गुरुदेव (आचार्यश्री) से पूछे बिना विवाह नहीं करना है। उन्हें उम्मीद थी कि गुरुदेव उनके संकल्प का समर्थन करेंगे। माता पिता ने बताया कि गुरुदेव से वे पूछ चुके हैं तो सहसा उन्हें विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि आप लोगों की बातों का मुझे भरोसा नहीं है। घर में बहू लाने के लिए आप लोगों ने गुरुदेव के सामने अपने ढंग से बात रखी होगी।

चर्चा के दौरान अजितनाथ के सामने उस कन्या की तस्वीर रखी गई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तस्वीर देखते ही अजित चौंके। उन्होंने आँखें बंद की और कोई अज्ञात रहस्य पता लगने जैसा भाव व्यक्त किया। माँ ने पूछा कि क्या बात है तो अजित ने कहा यह लड़की बहू बनकर आई तो मेरे साधना मार्ग में बहुत विघ्न करेगी। पिछले जन्म में यह एक व्याध परिवार में जन्मी थी। ऐसे परिवार में जिसे गांव में कोई रहने नहीं देता था। घर के लोगों को अजितनाथ के दिव्य बोध की क्षमता का पता था। वे भी थोड़ा हिचकिचाए लेकिन कन्या पक्ष को वचन दे चुके थे। कहने लगे अब कुछ नहीं हो सकता। अजितनाथ ने कहा वे स्वयं गुरुदेव से पूछेंगे और उनसे अपनी बात मनवाएंगे। बाद में अजित को खुद अपनी बात पर हंसी आई कि गुरुदेव से अपनी बात मनवाने की बात कैसे कह दी।

खैर वे मथुरा गये। तब सहस्रकुंडीय गायत्री महायज्ञ की तैयारियां चल रहीं थीं। अजितनाथ ने गुरुदेव के सामने अपनी समस्या रखी। आचार्यश्री ने शिष्य की बात ध्यान से सुनी। उन्हें पता था कि अजित को अतीन्द्रिय बोध होता है। आचार्यश्री ने आंखें बंद कीं। कुछ सोचते रहे और बोले, 'फिर भी तुम्हें उस कन्या से विवाह कर लेना चाहिए। कोई और लड़की होती तो मैं तुम्हें ब्रह्मचारी रहने की अनुमति दे देता। लेकिन यह कन्या तुम्हें साधना में सहायता देने के लिए आ रही है। यह योगी है।'

अजित अपने गुरु की बात चुपचाप सुन रहा था। मन के प्रतिकूल निर्देश मिलने से चेहरे पर अप्रिय भाव आ जा रहे थे। आचार्यश्री ने उसके भावों का उतार चढ़ाव देखा और कहा, 'बेटा तुम्हारे मन में पिछले जन्म की बात घर कर गई है। वह निम्न या अछूत कुल में थी इसलिए उसे अधम मान रहे हो। लेकिन यह भी तो सोचो कि तुम पिछले जन्म में उच्च कुल में जन्मे थे और वह निम्न कुल में। निम्न कुल में जन्म लेकर भी वह इस जन्म में एक संस्कारी परिवार में जन्मी। तुम पिछले जन्म में उच्च कुल में थे और इस जन्म में भी। वह कन्या इस जन्म में उच्च कुल में आई और तुम्हारे जैसा पति पा रही है तो बताओ किसके संस्कार महान हैं।'

आचार्यश्री ने इस तरह समझाने के बाद उलाहना दिया। कहा कि तुम तो भगवद्गीता पढ़ते रहते हो। उसमें क्या यह नहीं पढ़ा कि इस जन्म में योगी से कोई त्रुटि हो जाए और वह अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सके तो भी उसकी साधना का नाश नहीं होता। अगले जन्म में वह योगियों और श्रीमानों के परिवारों में जन्म लेता है। उलाहना देने के बाद आचार्यश्री ने निर्देश दिया कि फिर भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नहीं समझ आ रहा हो तो समर्पण भाव से मेरी बात मानो और उसी कन्या से विवाह करो। वह तुम्हारे लिए बहुत सहयोगी सिद्ध होगी। साधना के मार्ग पर तुम्हारे लिए उत्प्रेरक का काम करेगी।

पुरी से आए अक्षय महापात्र वर्षों से आचार्यश्री का स्मरण करते हुए साधना कर रहे थे। अक्षय ने उन्हें पहली बार गोवर्धन मठ में देखा था। उन दिनों आचार्यश्री पुरी की यात्रा पर थे। शंकराचार्य स्वामी भारतीकृष्ण तीर्थ से भेंट के समय अक्षय ने उन्हें देखा था। प्रणाम के बाद आत्म-निवेदन भी किया था। अक्षय ने उन्हें मन ही मन अपना गुरु मान लिया था। तब से अब तक कई बार स्वप्न सान्निध्य और आत्मिक अनुभूतियां हुई। उनके विस्तार में न जाकर अक्षय ने बताया कि सहस्त्रकुंडीय महायज्ञ की सूचना मिलते ही यहां तुरंत आने के लिए मन छटपटा उठा। पिछले चालीस दिन से यहाँ है। उस समय ज्यादा साधक यहां नहीं आये थे। आचार्यश्री के पास आते समय मन में शंका थी कि पता नहीं मुझे पहचानेंगे और स्वीकार करेंगे या नहीं? शंका उठते ही तिरोहित हो जाती कि यह संदेह नहीं उठना चाहिए। गुरुदेव (आचार्यश्री) पहचान लेंगे। और नहीं पहचाने भी तो अपना परिचय देने में संकोच नहीं किया जाना चाहिए।

अक्षय ने बताया कि इसी ऊहापोह में वे मथुरा स्टेशन पर उतरे। वहां से तपोभूमि आये और तपोभूमि में प्रवेश किया ही था कि यज्ञशाला के पास गुरुदेव के दर्शन हो गए। उन्हें प्रणाम किया। गुरुदेव ने देखते ही कहा, 'तुम आ गये अक्षय मैं चाह ही रहा था कि तुम यहां डेढ़ महीने पहले आ जाओ। यहां तुम्हें भोजन व्यवस्था में हाथ बटाना है। 'जगन्नाथ के भात' की तरह यहां भी 'गायत्री माता के प्रसाद' की व्यवस्था करनी है। उस व्यवस्था में तुम्हें भी लगना है'।

सुनकर अक्षय को जैसे परम आनंद मिल गया। आचार्यश्री के मुंह से अपना नाम सुनकर ही वह मुदित मगन हो गया था। यह अनुभव सुनाते अक्षय भावविभोर हो उठा। उसका गला भर आने लगा था।

अनुनय को आदेश

गुवाहाटी से आये अनुनय का मन था कि अब मथुरा छोड़कर कहीं नहीं जाना है। यहीं मां की सेवा करते हुए जीवन बिता देना है। अनुनय का पूरा नाम अनुनय उमानंद बन्द्योपाध्याय था। उमानंद उसके पिता का नाम था लेकिन वह इस संबोधन में ब्रह्मपुत्र नदी के मध्य में बने एक टापू पर बने शिवमंदिर के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अधिष्ठाता देव से ज्यादा तदात्म्य अनुभव करता था। उस टापू का नाम भी उमानंद है और वहां स्थापित महादेव की ख्याति भी इसी नाम से है।

कामाख्यादेवी के दर्शन के लिए जाते समय इस विग्रह के भी दर्शन करने होते है। उमानंद को कामाख्या शक्तिपीठ का भैरव समझा जाता है। अनुनय बचपन से ही कामाख्या के दर्शन, पूजन अर्चन के लिए जाता रहा। अपनी आराध्य देवी के पास जाने से पहले भैरव के पास भी जाता ही। पिछली गुरु पूर्णिमा को दर्शन के लिए गया तो मन में तरंग उठी कि दीपावली से शक्ति साधना के लिए एक अनुष्ठान आरंभ करना है। मन में यह भाव लिए हुए भैरव के सामने बैठा ही था कि लगा जैसे उमानंद स्वयं पूछ रहे हों कि साधना कहां करनी है? उस प्रश्न के उत्तर में निवेदन किया कि कामाख्या देवी के संरक्षण में, उन्हीं के अंचल में।

भैरव ने प्रेरणा जगाई कि दीपावली पर ब्रह्मपुत्र के नहीं यमुना के तट पर जाकर संकल्प करे। साधना भी वहीं आरंभ हो सके तो अच्छा। अनुनय को कुछ समझ नहीं आया। आगे भैरव का उद्‌बोधन था कि मथुरा वृंदावन के बीच में उन दिनों एक विराट आयोजन होना है। वह आयोजन विश्व वसुधा के कल्याण के लिए होगा और समस्त दैवी अनुग्रह उन दिनों वहां उपलब्ध रहेंगे। अनुनय का मन हुआ कि कामाख्या देवी के बारे में पूछे। वे भी वहीं रहेगी क्या? भैरव ने बिना पूछे ही जैसे कहा, 'महाशक्ति सर्वव्यापी और सर्वकालिक है। तुम्हारे समझने के लिए इतना ही पर्याप्त है कि उन दिनो सभी देवसत्ताएं वहीं विद्यमान रहेंगी। उनके सान्निध्य में साधना अनुष्ठान आरंभ करो तो ज्यादा श्रेयस्कर होगा।'

यह प्रेरणा थी या आदेश, कुछ स्पष्ट नहीं हो रहा था लेकिन निश्चय उसी क्षण कर लिया कि मथुरा जाना था। वहां से उठकर अनुनय कामाख्या की ओर बढ़ा। मंदिर के पास स्थित सरोवर में उतर कर आचमन किया और अर्घ्य चढ़ाया। इसके बाद शक्तिपीठ में प्रवेश किया।

मंदिर में प्रवेश करते ही विचित्र स्फुरणाएं जाग रही थीं। कोई साधक अपने साथी से चर्चा करते हुए निकला कि दीवाली बाद मथुरा में सहस्रकुंडीय गायत्री महायज्ञ होने वाला है। दुनिया भर से लोग वहां पहुंचेंगे वहां चलना चाहिए। अनुनय को न जाने क्यों लगा कि जैसे यह संवाद उसे सुनाने के लिए ही किया गया है। भगवती स्तोत्र का पाठ करते हुए अनुनय ने इस प्रतिक्रिया को झटक दिया। उसके मन में भैरव की प्रेरणाएं फिर हिलोरे लेने लगी थीं और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्तोत्र पूरा होते होते जैसे भगवती ने आदेश दे दिया था कि दीपावली पर मथुरा में ही रहना है। वहां रहना और महायज्ञ में भाग लेना भी एक बड़ा अनुष्ठान है।

अनुनय ने दीपावली से पहले ही वहां जाने का निश्चय कर लिया। आश्विन नवरात्रि संपन्न होने तक चार साधकों को और तैयार कर लिया था। उनमें से एक ने कहा था कि मथुरा चलें तो रास्ते में पड़ने वाले वाराणसी, प्रयाग, गया आदि तीर्थों की भी यात्रा कर लें। अनुनय ने कहा कि पहले मथुरा ही पहुंचना है। कहीं रुकना होगा तो वापसी में देखा जाएगा। अनुनय के साथ आये अन्य साधक उन दिनों यज्ञ नगर की स्वच्छता सेवा में लगे हुए थे। अनुनय ने अपने लिए भी यही काम चुना था।

साधना का नया संकल्प

गोष्ठी में अनुभव और विचार सुनाने का क्रम इसी तरह चलता रहा। उधर महायज्ञ में अग्निहोत्र और आराधना का क्रम पूरे वेग से चल रहा था। यज्ञशाला में आहुतियां देने वालों की संख्या बढ़ने लगी। होताओं के लिए सहस्त्रांशु साधना की न्यूनतम कसौटी तय की गई थी। वर्ष भर तक जिन्होंने यह साधना की थी वही आहुतियां दे पा रहे थे। फिर भी लोगों का आग्रह था कि उन्हें यज्ञ करने दिया जाए। सहस्त्रांशु साधना अगले दिनों पूरी कर लेंगे। कुछ लोग तो कार्तिक पूर्णिमा से ही साधना पूरी करने का संकल्प जताने लगे थे। उन्हें कहा गया कि थोड़ा धीरज रखें। आचार्यश्री ही इस संबंध में निर्णय लेंगे। उनका ज्यादातर समय वहां आये साधकों से मिलने में व्यतीत होता था। माताजी भी प्राय: साथ रहती। आगंतुकों और मुलाकातियों का मन कुछ देर बातचीत के लिए भी होता। इसलिए सहस्त्रांशु साधना से पहले यज्ञ करने का निर्णय अगले दिन पर छोड़ दिया गया। आहुति नहीं दे सकने वाले श्रद्धालु यज्ञशाला की परिक्रमा कर रहे थे।

परिक्रमा करते हुए लोगों के जैसे कन्धे छिल रहे थे। किसी ने ग्यारह, किसी ने चौबीस, किसी-किसी ने एक सौ आठ परिक्रमा करने का संकल्प लिया था। ब्रह्मा के आसन के पीछे से गायत्री माता को प्रणाम करते हुए परिक्रमा शुरु होती थी। एक परिक्रमा पूरी होने पर लोग अपनी झोली में से एक साबुत सुपारी निकालते और आरम्भ बिन्दु पर रख देते। जिसके मन में जितनी परिक्रमा करने का संकल्प था, वह उतनी ही सुपारी गिन कर झोली में रख लेता। झोली में सुपारी खत्म होने पर परिक्रमा पूरी हुई मान ली जाती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुछ लोग दण्डौती परिक्रमा कर रहे थे। पहले यह लोग पैदल परिक्रमा करने वालों के साथ ही चल रहे थे। लेकिन पैदल परिक्रमा करने वालों की संख्या बढ़ती गई। पैदल चलने वालों के पाँव इन लोगों की पीठ पर पड़ने लगते थे। इन लोगों की कतार अलग करनी पड़ी। सत्तर वर्ष की एक महिला परिक्रमा करते हुए गिर पड़ी। बुरी तरह थक गई थी। उठी और एक कार्यकर्त्ता से लाठी माँगने लगी। ताकि उसके सहारे परिक्रमा पूरी कर सके। कार्यकर्त्ता ने कहा, 'माताजी अभी आप रहने दीजिए थक गई हैं। थोड़ा आराम कर लीजिए। शाम को परिक्रमा पूरी कर लेना, तब कम भीड़ होगी।'

उस महिला ने कार्यकर्त्ता की बात सुनी अनसुनी कर दी। आखिरकार लाठी उपलब्ध करवानी पड़ी। वह महिला लाठी के सहारे धीरे-धीरे फिर परिक्रमा पर चल पड़ी।

यज्ञशाला का विस्तार बहुत बड़े क्षेत्र में था। एक परिक्रमा करने में बीस मिनट के आस-पास समय लगता था। जिन्हें एक सौ आठ परिक्रमा करनी होती उन्हें छत्तीस घंटे के लगभग समय लगता। इतनी परिक्रमा का संकल्प कम ही लोगों ने किया था। सात-आठ लोग ही यह संकल्प पूरा कर पाये। बाकी थक हार कर बीच में बैठ गए। महायज्ञ पूरा होने के बाद उन्होंने आचार्यश्री से अपने इस अधूरे रह गये संकल्प की बात कही। वहां से समाधान था कि अगले दिनों कुछ और स्थानों पर भी ऐसे आयोजन होना है। वहां अपने संकल्प पूरे कर लेना।

आचार्यश्री और माताजी यज्ञशाला के पास ही चारों दिन उपलब्ध रहे। यज्ञशाला से थोड़ी दूर हट कर छोटी सी एक पर्णकुटीर बनाई गई थी। आचार्यश्री और माताजी उसी में निवास करते, विश्राम और भोजन के समय वहाँ रहते, बाकी समय यज्ञशाला के पास बने एक छोटे से बाड़े में खड़े रहते थे। जब भी कोई मिलने आता दोनों हाथ जोड़कर उसका अभिवादन करते। अकसर ऐसे मौके भी आये जब आधा पौन घंटे तक वे लगातार हाथ जोड़े खड़े रहे। क्योंकि मुलाकातियों का तांता लगा रहता था। लोग उनके चरण स्पर्श करने पास जाते और वापस आ जाते। उस अवधि में पाँव छूने पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

प्रदोष के दिन साधकों का आग्रह बढ़ा कि सहस्त्रांशु साधना के बारे में आचार्यश्री अपना निर्णय बतायें। निर्णय के बारे में एक ही अपेक्षा कि वह सकारात्मक होगा। उस दिन मथुरा वृंदावन की परिक्रमा करने वाले श्रद्धालुओं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की संख्या काफी बढ़ गई थी। देवोत्थानी एकादशी के दिन लोग मथुरा वृंदावन की सम्मिलित परिक्रमा करते हैं। लोग परिक्रमा से निवृत्त हो चुके थे। इसलिए भी आग्रह ज्यादा था। आचार्यश्री ने प्रदोष की संध्या को निर्णय दिया कि अगले दिनों सहस्त्रांशु साधना करने वाले लोग पूर्णाहुति के दिन यज्ञ में बैठ सकते हैं। वे उसी दिन अपनी साधना भी आरंभ कर दें।

आगे क्या करें?

प्रवचन पंडाल में जब यह घोषणा की गई तो श्रद्धालुओं ने करतल ध्वनि से इसका स्वागत किया। प्रवचन पूरा होते ही लोग स्वागत कार्यालय में अपना नाम लिखाने लगे। उस दिन प्रवचन पंडाल में आचार्यश्री ने आगामी कार्यक्रमों की घोषणा की। यह घोषणा अनौपचारिक ही थी। यों भी कहा जा सकता है कि गायत्री परिवार की रीति-नीति के लिए निर्देश दिया गया। विरोध और आलोचना का समाहार कर देने पर भी वह सिलसिला बंद नहीं हुआ था। कुछ निहित स्वार्थी इसे एक नया संप्रदाय बनाने के रूप में देख रहे थे। बाहर धरना प्रदर्शन जैसी कोशिशें भी चल रहीं थीं। महायज्ञ में उपस्थित लोगों की संख्या और उनका उत्साह देख कर किसी ने इस तरह का दुस्साहस हालांकि किया नहीं था।

'आलोचना और वैर विरोध की कोई परवाह नहीं है। यह किसी भी काम के जीवंत और युगीन होने का परिचायक है। जो लोग कुप्रचार से बहकावे में आ जाते हैं, उन्हीं की परवाह की जा रही है।' आचार्यश्री ने अपना संदेश इन्हीं शब्दों से शुरु किया और कहा कि कुछ लोग इसे पैर पुजवाने और धन कमाने के एक नये ढंग के रूप में देख रहे हैं। हमें उनके बारे में कुछ नहीं कहना। क्योंकि आये दिन इस तरह के काम यहां होते रहते हैं। हमारे गायत्री परिवार के सदस्य वस्तुस्थिति से अच्छी तरह परिचित हैं कि हमारा उद्देश्य क्या है?'

'हम अपने समाज के नैतिक और सांस्कृतिक उत्थान के लिए समर्पित हैं। भारत ने दुनिया को हमेशा प्रकाश दिया है। बीच की कुछ शताब्दियों को मध्यकाल के अंधकार युग को छोड़ दें तो मनुष्य जाति भारत की ओर हमेशा निहारती रही है। अंतर्दृष्टि रखने वाले लोग अब भी देखते है कि मनुष्य को आध्यात्मिक उँचाइयों तक पहुँचाने वाला प्रकाश इसी देश से आएगा।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गायत्री परिवार के बारे में आचार्यश्री ने कहा कि यह अभियान नैतिक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उत्कर्ष के लिए है। व्यक्ति और समाज को पीछे घसीटने वाले तमाम कारणों से संघर्ष किया जाएगा। व्यक्ति में घर कर चुकी दुष्प्रवृत्तियों और समाज में घुसी बैठी कुरीतियों को दूर करने का आह्वान आचार्यश्री ने पूरे आवेग और आवेश से किया। उन्होंने दो पदों का उपयोग किया। कहा कि 'मनुष्य में देवत्व का उदय' और 'धरती पर स्वर्ग का अवतरण' हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

कुरीतियों से संघर्ष के पहले चरण का आह्वान उन्हीं के शब्दों में, 'जब हमारा संगठन मजबूत हो जाएगा तो दहेज, मृत्युभोज, नशा, क्रूरता आदि कुरीतियों के खिलाफ जमकर संघर्ष छेड़ेंगे। अभी परसों ही तपोभूमि में एक विवाह संपन्न हुआ है। उसमें दहेज को पूरी तरह तिलांजलि दी गई। वह विवाह समाज के सामने किए गए संकल्प और संबंध से ज्यादा आत्मिक और घनिष्ठ है। आगे चलकर इस तरह के आदर्श विवाहों का प्रचलन देश भर में फैलाना है।'

आंदोलन के लिए साधन कहां से आएंगे? इस प्रश्न का उत्तर भी आचार्यश्री ने अपने संदेश में दिया था। उन्होंने कहा, 'हमने अपने कार्यक्रम और गायत्री परिवार के प्रचार के लिए कभी किसी से चंदा नहीं मांगा। न हमारे प्रतिनिधि ही किसी के द्वार पर रसीद बहियां लेकर गये। इस समय भी यज्ञ में बड़ी संख्या में लोग आये हुए हैं। एकादशी पर भी हजारों लोग मथुरा वृंदावन की परिक्रमा कर रहे हैं। कितने ही मित्र सलाह देने लगे कि महायज्ञ और आंदोलन के लिए सहायता मांगना उचित और आवश्यक है। पर हम आपसे रुपये पैसे जैसी छोटी चीजें नहीं मांगना चाहते। गायत्री माता और यज्ञ भगवान कोई बड़ी ओर बढ़िया चीज चाहते हैं। वह चीज है आपका समय, श्रम, मनोयोग और प्रतिभा। आप गायत्री माता और यज्ञ पिता के चरणों में यही अर्पित कीजिए। गायत्री माता और यज्ञ भगवान को अपने परिवार का सदस्य समझें और उनके लिए अपनी कमाई का एक अंश लगाते रहें।'

आयोजन के विरोध और अवरोध का भी उन्होंने अपने संदेश में उल्लेख किया। परिवार के कार्यकर्त्ताओं से उन्होंने समय और धीरज बरतने के लिए कहा। उनकी सलाह थी कि चुपचाप काम करते रहने से बैर विरोध अपने आप निष्क्रिय हो जाएगा।

अगले दिन के उद्‌बोधन में उन्होंने परिजनों से कहा था कि असुरता से लोहा लेना कोई हंसी खेल नहीं है। प्राचीन काल में भी सत्य के मार्ग पर चलने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वाले ऋषि मुनियों को असुरता के बड़े-बड़े प्रहार सहना पड़ते थे। आज भी उसकी पुनरावृत्ति होगी। यह स्वाभाविक है। विघ्नसंतोषी लोगों के माध्यम से असुरता जितना बन पड़ेगी उतना अवरोध पैदा करेगी। महायज्ञ में उस आक्रमण के कुछ दांवपेच आप लोग देख चुके हैं।

आश्रम धर्म की दीक्षा

आचार्यश्री ने अपने संदेश में जिस विवाह की बात कही थी वह सदानंद त्रिपाठी का था। सदानंद ने कार्यकर्त्ता गोष्ठी में अपना अनुभव सुनाया था पर विवाह की बात छुपा ले गया था। इसका कारण सिर्फ संकोच ही था। यज्ञशाला में जब उसके विवाह की घोषणा की गई तो लोग ठिठक कर खड़े हो गये। विवाह से संकोच और आचार्यश्री द्वारा समझाने का उल्लेख घोषणा में नहीं किया गया था। वधू शालिनी और सदानंद ने यज्ञ की साक्षी में संकल्प पाणिग्रहण, सप्तपदी, प्रतिज्ञा, प्रदक्षिणा आदि उपक्रम संपन्न किए। पंडित नीलकंठ शास्त्री यह संस्कार करा रहे थे। वे मंत्रों की व्याख्या और संदेश भी स्पष्ट करते जा रहे थे। सुनने वालों को इस संस्कार से विवाह और गृहस्थ आश्रम का मर्म समझ में आता जा रहा था। संस्कार के रहस्य और संदेश को जानने के बाद कुछ युवकों ने इसी पद्धति से विवाह कराने का निश्चय जताया। उनसे सिर्फ यह प्रतिज्ञा कराई गई कि विवाह में दहेज नहीं लेंगे।

गृहस्थ आश्रम को नया अर्थ देने के बाद अगले दिन वानप्रस्थ परंपरा का पुनर्जीवन हुआ था। यह चतुर्दशी के दिन सुबह की घटना है। राजस्थान में करवाड़ (कोटा) के शंभूसिंह, झांसी के बालकृष्ण, बरेली के चमनलाल और बानपुर (झांसी) के गिरिजा सहाय ने वानप्रस्थ लिया। पिछले दिन गृहस्थ में प्रवेश का अर्थ और संदेश लोगों ने समझा तो अगले दिन पूरे समाज को ही अपनी गृहस्थी बना लेने का संस्कार देखा। आचार्यश्री ने इस संस्कार को आत्म बलिदान का नाम दिया था।

शंभूसिंह पिछले सात साल से अपने क्षेत्र में गायत्री परिवार का प्रचार कर रहे थे। उनके परिचय में बताया गया कि तीन साल पहले अपने आपको समाज के लिए समर्पित करने का मन बनाया। मन बनाने के साथ उन्होंने औसत स्तर का जीवन व्यतीत करने का निश्चय किया। शंभूसिंह रामगंज मंडी (राजस्थान) के हाई स्कूल में अध्यापक थे। नौकरी से मिलने वाले वेतन और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पैतृक संपत्ति से होने वाली आय में निर्वाह मात्र ही अपने लिए रख कर बाकी सब समाज के काम में लगा देने का अभ्यास किया।

झांसी के बालकृष्ण व्यवसाय से सरकारी नौकरी में थे। सेंट्रल रेलवे में नौकरी करते हुए जो समय मिलता, उसे झांसी में लक्ष्मी व्यायाम मंदिर चलाने में लगाते। चार पांच साल से क्षेत्र में गायत्री और यज्ञ के प्रचार में लगे हुए थे। पिछले साल झांसी और बुंदेलखंड के ग्रामीण इलाकों में साइकिल से घूमे और लोगों को उपासना सिखाई। सहस्रकुंडीय गायत्री महायज्ञ की घोषणा हुई तो तैयारियों में जुटने के लिए छुट्टी ले ली। उन्हीं दिनों विचार आया कि परिवार के गुजारे के लिए ज्यादा चिंता की जरूरत नहीं है। पैतृक संपदा के रूप में इतना कुछ जमा है कि उससे होने वाले उपार्जन के सहारे जीविका चलाई जा सकती है। उन्होंने नौकरी छोड़कर वानप्रस्थ लेने का निश्चय किया। उम्र सिर्फ बत्तीस वर्ष की ही थी।

बरेली के चमनलाल चार साल पहले गायत्री परिवार के संपर्क में आये थे। संपर्क में आते ही उन्होंने और उनकी पत्नी ने नियम बना लिया कि नौकरी और घरेलू कामकाज से जो समय बचेगा उसे गायत्री परिवार के प्रचार में लगाएंगे। दफ्तर से छुट्टी मिलते ही चमनलाल घर लौटने पर कुछ देर रुक कर ज्ञानयज्ञ अभियान के लिए निकल जाते। पति पत्नी ने संकल्प लिया था कि एक व्यक्ति को जब तक गायत्री उपासना नहीं सिखा देंगे तब तक शाम का भोजन नहीं करेंगे। उन्होंने अपने लिए साथी चुने और क्षेत्र में करीब डेढ़ हजार लोगों को गायत्री परिवार का सदस्य बनाया। सहस्रकुंडीय महायज्ञ शुरू होने के छह महीने पहले उन्होंने कामकाज से छुट्टी ले ली थी और आयोजन की तैयारियों मे लग गये थे।

झांसी और आसपास के लोग कंधे पर झोला लटकाये एक युवक गिरिजासहाय को अच्छी तरह पहचानने लगे थे। वह नाम उनके परिवार के सदस्य जैसा था। किसी भी तरह की समस्या या जरूरत हो, वे हर आवश्यक सूचना और समाधान के लिए एक पुस्तक लिए तैयार रहते थे। झांसी के ही एक अन्य युवक बालकृष्ण के साथ वे भी साइकिल लेकर निकल पड़ते। कभी एक ही दिशा में तो कभी अलग अलग गांवों और कस्बों में गायत्री का प्रचार करने लगते। उन्होंने भी छह सात महीने से मथुरा में तपोभूमि को ही अपना घर बनाया हुआ था। महायज्ञ के समय निश्चय किया कि अब समाज के लिए ही काम करेंगे।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निवृत्ति और मुक्ति

'वानप्रस्थ कोई बंधन नहीं है। वह निवृत्ति है। आसक्ति और प्रलोभनों से मुक्ति।' आचार्यश्री ने कहा था। उस गोष्ठी में चारों समर्पित कार्यकर्त्ताओं के अलावा और भी कई लोग एकत्रित थे। चर्चा का स्वरूप गोष्ठी जैसा था। आचार्यश्री साधकों से कह रहे थे' वानप्रस्थ का अर्थ है वन की ओर मुंह करना। घर परिवार, व्यवसाय, धन, यश आदि ओढ़ी हुई जिम्मेदारियों और मानसिक बाधाओं से मुक्त होकर प्रकृति के खुले आंगन में जाना। अपने आत्मा का विस्तार करना।'

एक साधक ने पूछा था कि बलिदान की यह परंपरा क्या आगे भी चलेगी? या इन चार लोगों के साथ पूरी हो गई थी। प्रश्न सुनकर आचार्यश्री हंसे। उन्होंने कहा, 'यह न तो आरंभ है और न अंत। प्राचीनकाल में लोग ब्रह्मचर्य और गृहस्थ के बाद वानप्रस्थी बनते थे। बीच में यह परंपरा लुप्त हो गई। छिटपुट रूप में बीचबीच में वानप्रस्थ होने लगे। अब आगे इस संस्कार की बड़ी जरूरत पड़ेगी। बड़ी संख्या में वानप्रस्थी चाहिए। वानप्रस्थी यानी जो अपने समाज और धर्म संस्कृति के लिए ज्यादा से ज्यादा समय दे सकें'।

कुछ क्षण रुक कर आचार्यश्री ने इस संस्कार के बारे में कहा, 'मैं इसे एक नये अर्थ में भी ग्रहण कर रहा हूँ। वानप्रस्थ या समाज के लिए अपने आपको सौंप देना कोई बंधन नहीं है। जो लोग बाद में अनुभव करें कि यह धर्म निभ नहीं रहा तो वे कोई और विकल्प भी चुन सकते हैं। थाईलैण्ड और बर्मा में सावधि भिक्षुओं की तरह वर्ष, दो वर्ष या तीन चार साल तक समाज का काम करके वापस अपनी दुनिया में जा सकते हैं। कुछ लोग संकल्प करके ही कुछ समय के लिए भिक्षु धर्म अंगीकार करते हैं। आगे चलकर हम भी सावधिक वानप्रस्थों को आंदोलन में प्रवेश देंगे। बल्कि इस तरह के अंशदानी समयदानी कार्यकर्त्ता चुनेंगे।

सहस्रकुंडीय महायज्ञ में आयोजन स्थल पर मेला सा लग गया था। यज्ञशाला और यज्ञनगर में यद्यपि साधकों को ही प्रवेश दिया गया था। सामान्य यात्री फिर भी इकट्ठे हो गये थे। कुछ तो इन दिनों चल रही मथुरा वृंदावन की परिक्रमा में आये थे। वे भी दर्शन परिक्रमा और पुण्य आयोजन में जैसी भी बन पड़े भागीदारी से वंचित नहीं रहना चाहते थे। कई लोग इस अवसर पर अपना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रोजगार चलाने के उद्देश्य से आ गये थे। उनके कारण आयोजन में लोकरुचि के प्रसंग भी जुड़ गये।

महायज्ञ की रिपोर्टिंग तैयार करते हुए एक पत्रकार ने लिखा था 'होली दरवाजे और विश्रामघाट से लेकर प्रेम महाविद्यालय तक हमेशा भीड़भाड़ बनी रहती। कोई व्यक्ति तेजी से निकलना चाहे तो कठिन था। रिक्शे, तांगों की गति पैदल चलने वालों से भी धीमी हो गई थी। मथुरा के स्थानीय लोग बड़ी संख्या में यज्ञ के दर्शन करने पहुँचते, आसपास की झांकियां लेते तो बाहर से आये श्रद्धालु मंदिरों और घाटों को देखने नगर में आते। लोगों की इस आवाजाही से व्यापारियों को तो लाभ हुआ ही रिक्शे तांगेवालों ने भी अच्छी कमाई की। वे चालीस पचास रुपए रोज कमा लेते। दीवाली बाद ठंड शुरु हो जाती है। मौसम बदला और लोग सर्दी के मारे ठिठुरने लगे तो यज्ञनगर के आसपास चाय और चाट पकौड़ी की दूकानें खुल गईं। कपड़ों और मालाओं के अलावा बर्तन बेचने वालों ने भी डेरा जमा लिया।

गंगा स्नान या माघ मेला जैसा दृश्य बन गया। कुछ मांगने वालों ने लक्ष्मी नारायण, राधाकृष्ण या काली देवी की मूर्तियां रखकर मांगना शुरु कर दिया। पांच पैर वाली गाय दिखाकर जोगी भीख मांग रहे थे। साधु शीर्षासन भी लगाये हुए थे। धूनी रमाए साधुओं की तो जैसे भरमार हो गई थी। एक महात्मा जी बबूल के कांटे बिछाकर सो गये और उनके साथी आने जाने वालों से चढ़ावा चढ़ाने का अनुरोध करते। महायज्ञ के पुनीत और उद्देश्यपूर्ण वातावरण से अलग यह संसार बाहरी दुनिया की एक झलक दे रहा था। उस संवाददाता ने किसी को कहते सुना कि गायत्री माता के इस आयोजन में शिवजी की बारात के सदस्य भी आये हैं।

संगठन परिवार की तरह

पचीस नवंबर की शाम को आचार्यश्री ने महायज्ञ समारोह में आए लोगों को निर्णायक संदेश दिया। अगले दिन पूर्णाहुति होना थी। उस दिन प्रवचन, संपर्क और गोष्ठी आदि के लिए समय नही मिलना था। पहले सत्र में पूर्णाहुति। उसके बाद कन्या भोज, शोभा यात्रा और देवशक्तियों के विसर्जन जैसे कार्यक्रम और कर्मकांड होने थे। आचार्यश्री का संदेश साधकों को भाव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विभोर कर गया था। उसमें यहाँ से अपने क्षेत्र में जाकर यज्ञ और संदर्भ के प्रचार का आह्वावान था। यह भी कि सभी साधक नियमित रूप से साधना करें। अपने आसपास के लोगों को भी प्रेरित करें ओर स्थानीय संगठन बनाए। संगठन का स्वरूप परिवार जैसा होना चाहिए। सभी सदस्यों के अधिकार जहां समान हो। व्यवस्था बनाने के लिए पहल करने के तौर पर किसी एक सदस्य को कार्यवाहक बना दिया जाए।

विदाई अगले दिन होना थी। लेकिन आचार्यश्री का प्रवचन सुनकर लोगों को लग रहा था जैसे उन्हें अभी ही विदा किया जा रहा हो। पाँच दिन तक एक ही जगह, एक ही भावभूमि में और एक ही जीवन शैली अपनाते हुए साधकों में अद्धैत एकात्म की सिद्धि हो गई थी। उद्‌बोधन सुनकर लगा कि अब अलग अलग होने का समय आ गया है। वे विचलित हुए।

पिछले दिन आत्म बलिदान या वानप्रस्थ संस्कार के बारे में आलोचकों ने कुछ आपत्तियां की थी। उनका उल्लेख करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि वे सभी उत्तर देने योग्य नहीं है ज्यादातर आपत्तियों के उत्तर तो उन प्रश्नों और आलोचनाओं में ही निहित है। जिस प्रश्न का उत्तर दिया जाना अभीष्ट है, वह यह कि वानप्रस्थ लेने वाले चारों आत्मदानी युवावस्था में है। उन्हें गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किए अभी कुछ ही वर्ष हुए है। वानप्रस्थ तो पचास वर्ष की आयु के बाद लेना चाहिए। वह अभी ही क्यों दिया जा रहा है?

आचार्य श्री ने कहा कि आपत्ति तर्कयुक्त है, लेकिन जब वृद्ध और निवृत्तमान हुए लोग वानप्रस्थ का साहस नहीं कर पा रहें हैं तो युवकों को ही आगे आना चाहिए। वे सपत्नीक समाज का काम करने के लिए घर गृहस्थी और चूल्हें चौकें से मुक्त हो कर निकले। बुजर्गो को यह राह दिखाने के लिए हमने युवकों को आत्मदान करने की अनुमति दी है।

विदाई की पूर्व संध्या के बाद विश्वामित्र, वसिष्ठ, विश्वामित्र और याज्ञवल्क्य आदि नगरों में ठहरे साधक एक दूसरे के शिविरों में गये। उनमे से कुछ ने विचित्र अनुभव सुनाये। याज्ञवल्क्य नगर प्रधान यज्ञ शाला के आसपास बना हुआ था। इसमें महायज्ञ के कार्यकर्त्ताओं और विसिष्ठ उपासना में लगे साधकों को ठहराया गया था। यज्ञशाला में हवनकुंडों पर समिधा और हवन सामग्री पहुँचाने का काम देख रहे रविशंकर शुक्ल को विचित्र अनुभूति हुई थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन्होंने बताया कि सभी कुंडों पर हवन सामग्री समय पर पहुँचती रहे इसकी व्यवस्था के साथ अतिरिक्त सामग्री जमा नहीं होने देने की सावधानी भी बरतना थी, चिंता हो रही थी कि दोनों में ताल मेल कैसे बनेगा।

आयोजन से पहले हुई गोष्ठियों में आचार्यश्री के सामने यह समस्या रखी गई थी। उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा कि 'निमित्त मात्र भव' तुम तो माध्यम मात्र हो। व्यवस्था देव शक्तियों और ऋषि सत्ताओं को ही करनी है। आचार्यश्री के इस आश्वासन के बाद रविशंकर की चिंता का दंश कुछ कम हुआ। लेकिन रह रहकर फिर भी शंकाएं मन में उठने लगती थी। यज्ञ आरंभ होने के एक दिन पहले वे गायत्री तपोभूमि के पास बने मंडप में गये। वहाँ हवन सामग्री की बोरियों को संभालने के लिए भीतर घुसे ही थे कि देखा एक युवा साधु भंडार में बहुत सी बोरियों को गिनता हुआ सा आ रहा है।

रविशंकर को आशंका हुई कि यह चोरी के इरादे से अंदर आया है। उन्होंने रोकना चाहा। कुछ कहने ही वाले थे कि उस साधु ने स्वयं ही मुड़कर देखा और नाम लेकर पुकारा, 'रविशंकर जी, आप की सहायता के लिए ऋषियों ने मुझे यहाँ भेजा है। मेरी तरह और भी संन्यासी आये है। वे भी आपका हाथ बटाएंगे।

अपना नाम सुनकर रविशंकर साधु का मुँह देखते रह गये। फिर भी अचानक विश्वास नहीं हुआ। रविशंकर ने कहा कि सूक्ष्म सत्ताओं ने यदि आपकी नियुक्ति की है तो आप सूक्ष्म स्तर पर ही सक्रिय रहें। यहाँ प्रकट हो कर व्यवधान क्यों कर रहे है?

प्रकट मत होइए

रविशंकर का इतना कहना था कि साधु ठठा कर हंस उठा। कहने लगा सुरक्षा की चिंता हो रही है, भंडार के प्रवेश की और देखो। रविशंकर ने भंडार के द्वार की ओर देखा। वहाँ दो युवा साधु पहरा दे रहे थे। आश्चर्य की बात थी कि उनके शरीर का ऊपर का हिस्सा ही दिखाई दे रहा था। धड़ से नीचे पैर नहीं दिखाई दे रहे थे। उनका अर्द्धशरीर चलता फिरता दिखाई दे रहा था। रविशंकर ने बताया कि इस घटना के बाद उन्हें यज्ञशाला में कुछ अपरिचित संन्यासी कई बार दिखाई दिए। वे समिधा, हवन सामग्री और घी आदि वितरित करते दिखाई दे रहे थे। उन कुंडों के आसपास ऐसे संन्यासी अकसर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दिखाई दिए जहाँ कोई कार्यकर्त्ता नहीं होता। उनके हाथों में सामग्री से भरी टोकरी रहती थी। रविशंकर ने कुछ स्थानों पर उन साधुओं से संपर्क करना चाहा पर वे सफल नहीं हो सके।

जयसिंह पुरा गाँव के बाहर बसे व्यास नगर में ठहरे बल्लभगढ़ के हरगोविन्द सिंह की आप बीती भी कम रोमांचक नहीं थी। महायज्ञ में आने के पंद्रह दिन पहले उनके घर में चोरी हो गई थी। चोरों ने घर से नकदी और जेवर जो कुछ भी था सब चुरा लिया। पुलिस में रिपोर्ट लिखाई। खोजबीन चली लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। महायज्ञ आरंभ होने के तीन दिन पहले से आये हर गोविन्दसिंह ने आचार्यश्री के सामने अपनी व्यथा कही। उन्होंने कहा कि हम लोगों की जो चीजें चली गई, उसका विशेष दु:ख नहीं हैं किन्तु कन्या के गहनों के लिए मुझे भारी दु:ख है। उसका विवाह माघ महीने में होना है और मेरी सामर्थ्य नहीं है कि दोबारा बनवा सकूं। नहीं दे पाने की स्थिति में हमें जीवन भर निंदा लांछन और लड़की को अपमान सहना होगा। आचार्यश्री ने कहा लेकिन मुझे दु:ख का कोई कारण नहीं दिखाई देता। यहाँ आये हो भगवती के काम से आये हो। वही तुम्हारी चिंता का निवारण करेगी। यहाँ आने से तुम्हें आनन्द ही होगा।

हरगोविन्द सिंह ने बताया कि कल ही बल्लभगढ़ से बच्चे आये है। उन्होंने बताया कि गहने मिल गये है। चोरों ने माल अपने एक संबंधी के पास रख दिया था। उस के बेटे को परसों रात किसी जंतु ने काट लिया। देखते ही देखते उस लड़के का हाथ बुरी तरह सूज गया। लड़का तकलीफ से छटपटाने लगा। झाड़ फूंक की गई। दवादारु और टोना टोटका भी करके देख लिया किन्तु किसी भी तरह आराम नहीं हुआ। हार कर बल्लभगढ़ के पास एक देवीपीठ में ले गये। वहाँ के पुजारी को आवेश आता था। उसने कहा तुम्हारे यहाँ एक उपासक के गहने रखे हुए है। देवी माँ के कोप से ही यह हुआ है। तुरंत आभूषण वापस करे। सुनकर उस व्यक्ति ने अपने संबंधी पर दबाव डाला और सारे गहने वापस कराये। इसके बाद ही लड़का ठीक हो सका। हरगोविन्द सिंह ने यह अनुभव बहुत उत्साह से सुनाया था।

उन्होंने अपनी बात पूरी की ही थी कि व्यास नगर में ठहरा एक साधु अपना चिमटा लेकर हरगोविंद सिंह की तरफ दौड़ा। वह गुस्से में था। कह रहा था कि पामर कहीं के। अपने स्त्री बच्चों के लिए जगज्जननी को दुख दे रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गहने बनवाये तो खुद उनकी संभाल कर। नहीं संभाल सका तो यहां आकर अपनी विपदा गाने की क्या आवश्यकता थी। चुप करके बल्लभगढ़ में ही करताल बजाता। उस कुपित संन्यासी को मुश्किल से रोका जा सका था। अनुनय विनय के बाद उस साधु ने अपने आपको नियंत्रित किया। शांत होते-होते उसने कहा, जानते नहीं हो। जो भी व्यक्ति इष्ट आराध्य से अपनी व्यथा कहता और उनके निवारण का अनुरोध करता है, वह अपने पुण्य खो देता है। हरगोविंदसिंह ने क्षमा मांगी।

मिला जुला रंगमंच

यज्ञनगर में आये साधकों को अपनी कष्ट कठिनाइयों को दूर होने से लेकर अंतर्जगत की यात्रा करने के कितने ही अनुभव हुए थे। उनमें से कुछ का ही आदान प्रदान किया जा सका। लोग डरते सकुचाते कहते और कहते कहते चुप हो जाते थे। पूर्णाहुति की पूर्व रात्रि थी। उस दिन वृहस्पति ने विशाखा नक्षत्र में प्रवेश किया। आकाश में जिस समय यह घटना घट रही थी, उसी समय यज्ञनगर में रंगमंच पर एक नाटिका अभिनीत की जा रही थी। उसमें राधाकृष्ण के दिव्य भावों का निरूपण किया गया था। इस नाटक में विशाखा राधा की सखी का नाम था। विशाखा भी भगवान कृष्ण के प्रति उतनी ही अनुरक्त है लेकिन उसे उनका सान्निध्य नहीं मिल पाता। नाटिका में दर्शाया गया था कि ईश्वर का सान्निध्य प्रत्यक्ष मिले या न मिले, स्थूल रूप में उनका अनुभव हो या न हो, वे सदा उपलब्ध हैं। रासलीला के इस मर्म को नाटिका में भलीभांति व्यक्त किया गया था।

कार्यक्रम शाम को आठ बजे के आसपास आरंभ हुआ। धीरे-धीरे रात बढ़ने लगी और गहराती गई। उस समय लीला देख रहे लोग भी उठ उठ कर चले गये थे। सुबह पूर्णाहुति और कलश यात्रा में सम्मिलित होने के लिए सो जाने की जल्दी थी। अभिनय कर रहे कलाकार भी सुनाने लगे थे और उसे विराम देने की तैयारी कर रहे थे। अचानक कलाकारों और सामने बैठे दर्शकों ने अनुभव किया कि चंद्रमा की किरणे शीतल हो गई हैं और चारों तरफ दूधिया चांदनी फैलती प्रगाढ़ होती जा रही है। कार्तिक माह की अंतिम तिथियों में भी शरद पूर्णिमा जैसी कला निखरने लगी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उस आलोक के विस्तीर्ण होते ही वहां बैठे साधकों को लगा कि चारों ओर से संन्यासी आ रहे हैं। तरह तरह के संन्यासी। जटाजूट वाले, घुटे हुए सिर वाले दंडी संन्यासी, अवधूत, बाघंबर पहने संन्यासी। उनके साथ योगिनियां भी हैं। योगिनियों ने सफेद वस्त्र पहने हुए हैं। उनके वस्त्र चमकदार नहीं है, आंखों को चौंधियाते नहीं है बल्कि शीतलता देते हैं। उनकी संख्या पैंतीस चालीस के आसपास रही होगी। इन तापस विभूतियों को पहले किसी ने नहीं देखा था। कम से कम रासलीला मंच के सामने बैठे लोगों में से तो किसी ने नहीं। उन विभूतियों के आते ही लगा कि वातावरण बदल गया है। जिस भाव से लोग अभी तक कार्यक्रम का आनंद ले रहे थे, वह तिरोहित हो गया। उसका स्थान उत्सुकता और रोमांच ने ले लिया। एक स्वस्थ और प्रेरित करता हुआ रोमांच।

मंच के पास बैठे एक संन्यासी ने कहा, 'हम लोग अपने काम से अभी निवृत्त हुए है। ध्यान अभी अभी पूरा किया है। आज आयोजन का अंतिम दिन है इसलिए उत्सव में हम भी भाग लेना चाहते हैं।' संन्यासी के इस कथन का किसी ने उत्तर नहीं दिया। वहां उपस्थित साधकों से कोई उत्तर देते नहीं बन पड़ा। उसी संन्यासी ने फिर कहा, 'यदि आप अपना कार्यक्रम संपन्न कर चुकें तो हमें अवसर दें। हमारे साधन और आयोजन का आप भी आनंद उठायें। अथवा आप ही अपना कार्यक्रम आगे चलने दें।'

रास नृत्य का संचालन कर रहे साधक बांके बिहारीदास ने थोड़ा साहस किया और कहा कि महात्मन हम लोग थक चुके हैं। आप आज्ञा देंगे तो हम फिर से प्रयत्न करेंगे लेकिन आपका उत्सव हमने कभी नहीं देखा है। आज हमारा सौभाग्य फलित होने दें। बांकेबिहारीदास ने चतुराई से काम लिया था। उसने वहां मौजूद लोगों की दुविधा भी दूर कर दी थी और साधुओं को भी भय प्रस्तुत कर दिया था। तापस विभूतियों समेत वहां सौ से ज्यादा लोग नहीं थे। यह वार्तालाप चलते चलते उनमें भी कुछ उठ कर चलने लगे थे। बांकेबिहारी ने अपनी बात कही तो जाने के लिए तैयार हुए लोग वापस बैठ गये।'

उन साधुओं ने बांकेबिहारी दास का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और कुछ उठकर मंच की ओर जाने लगे सामने बैठे साधकों ने उन्हें मंच की ओर जाते भर देखा। उसके बाद क्या हुआ, स्पष्ट कहने की स्थिति में कोई नहीं था। मंच पर जो उत्सव हुआ उसके आनंद में या कहें कि उस लोक में साधक पूरी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तरह डूब गये। दिखाई दिया कि काफी ऊंची तक पहाड़ी है। करीब दो सौ फुट ऊंची। वह पहाड़ी वृंदावन की ओर चौथाई मील तक फैलती चली गई है। पहाड़ी पर चार छोटे-छोटे शिखर हैं। उस यज्ञनगर में बने रंगमंच पर इस दृश्यावलि के लिए स्थान नहीं था लेकिन वहां बैठे साधकों ने प्रत्यक्ष या मनोलोक में उस दृश्य को अनुभव किया।

उस पहाड़ी के सामने वृंदावन की ओर से आती हुई एक ओर पहाड़ी दिखाई देती है। इन दोनों के बीच में एक तंग घाटी है। दूर से देखने पर लगता है जैसे प्रकृति ने एक विशाल नाव की रचना कर दी है। बरसाना से आये एक यात्री ने इस दृश्य को देखते ही कहा यह तो सांकरी खोर है। यहीं श्यामसुंदर ने गोपियों को घेरा था। टिहरी से आये सुमनकांत के मुंह से निकला यह तो शिवालिक है। लगता है अभी वहां के जंगलों में विचरण करने हाथी आ जाएंगे। एक साधक ने उस जगह को बूढ़ा बदरी बताया और किसी और ने कहा कि यह ओंकार मांधाता तो नहीं है।

कुछ क्षण तक प्रतिक्रिया करने के बाद लोग चुप हो गये। अनुभव हो रहा था कि संन्यासी गण उस पहाड़ी पर चढ़ गये हैं और वहां मौजूद मंदिरों में पूजा अर्चना करने लगे हैं। घंटा निनाद सुनाई दे रहा है। उसी पहाड़ी पर आश्रमों का आभास भी हो रहा था। आश्रमों में स्थित कुटियाओं के भीतर और बाहर आसन पर बैठे साधक ध्यान जप आदि से निवृत्त हो गये हैं और उठ रहे हैं। वातावरण में औपनिषदीय संगीत गूंज रहा है-

'धृतात्पर मंडामिवाति सूक्ष्म ज्ञात्वा शिवं सर्वभूतेषु गूढ़म.....।' श्वेताश्वर उपनिषद के इस और दूसरे मंत्रों में ब्रह्मविद्या की मीमांसा चल रही है। सामने बैठे साधकों में इक्का दुक्का लोगों को ही संस्कृत का विशेष ज्ञान रहा होगा। ऐसा ज्ञान जो इन मंत्रों का अर्थ समझा सकें लेकिन मंत्रों का भाव वहां बैठे सभी साधकों ने समझ लिया।'

कुल चौदह मंत्रों का गायन हुआ। उन मंत्रों में आत्मज्ञान, साधना, जीवन, जगत और कारण की मीमांसा की गई थी। मंच पर उपस्थित तापस, विभूतियों ने इन मंत्रों के साथ मुद्रा और भाव भंगिमाए भी बनाई। उस प्रस्तुतीकरण में नृत्य और संगीत का अद्‌भुत समन्वय था। किसी ने कोई वाद्ययंत्र नहीं लिया हुआ था लेकिन वहां बैठे लोगों को संगीत का पूरा आस्वाद मिल रहा था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हिमालय की उपत्यका में मंत्र साधना और तप के इस उत्सव ने लोगों को अभिभूत किया। करीब पौन घंटे तक कार्यक्रम चलता रहा। कार्यक्रम रुक गया, तब वहाँ बैठे लोगों को सुध आई। तापस विभूतियां जिस तरह आई और बैठी थी वैसी ही वापस बैठ गईं। वहां बैठे लोगों को मंच पर दिखाई दिए और अनुभव हुए दृश्यों में कोई विलक्षणता अब भी नहीं लग रही थी। सब सहज स्वाभाविक लग रहा था।

बैठ जाओ गंगा माता

तापस विभूतियों के उस समूह में शामिल एक योगिनी अपने स्थान से उठी। उसने हाथ ऊपर उठाये और ताड़ासन की मुद्रा बनाई। फिर हाथ नीचे कर लिए और कहने लगी एकादशी से अब तक चले इस महायज्ञ में आप लोगों की तरह सूक्ष्म सत्ताएं भी भागीदार रही हैं। इस तरह कोई भी अनुष्ठान उनकी भागीदारी के बिना पूरे नहीं होते। उनकी उपस्थिति, महायज्ञ और आप लोगों की विशिष्ट साधना मथुरा को अगले कई वर्षों तक जीवंत तीर्थ बनाए रखेगी।

'बैठ जाओ गंगा माता', उन साधुओं में से एक ने कहा आप जो कर रही है वह पर्याप्त है, साधु ने अपना परिचय नहीं दिया। गंगा माता के बारे में कुछ शब्द कहें। उनका कहना था कि गंगा माता अर्थात यह साध्वी स्वामी रामकृष्ण परमहंस के समय से यहां निवास कर रही है। तब यह शरीर धारिणी थी। अब सूक्ष्म देहधारी है। यह परिचय सुनकर लोग चौकें। किसी को पहले कहीं पढ़ा हुआ प्रसंग याद आया कि करीब नब्बे वर्ष पहले स्वामी रामकृष्ण परमहंस यहां आये थे। वृंदावन की यात्रा के समय वे गंगा माता से मिले थे। तब उस साध्वी की आयु साठ वर्ष रही होगी। उन्हें देखकर रामकृष्ण इतने अभिभूत हुए थे कि उन्हें फिर कहीं और नहीं जाने और वृंदावन में ही बस जाने की इच्छा होने लगी थी। गंगा माता ने रामकृष्ण परमहंस को दुलारी कहकर पुकारा था। रामकृष्ण परमहंस के यहीं बस जाने के निश्चय से साथ आये भक्त और दक्षिणेश्वर के पुजारी चिंतित हो गये थे। कहते हैं गंगा माता ने ही उन्हें वापस जाने के लिए प्रेरित किया था।

तापस विभूतियों की इस मंडली में कई विलक्षण, कालजयी और सिद्ध संत थे। उस महारास का आनंद उठाने वाले साधकों को बाद में तरह तरह की स्फुरणाएं हुई। किसी को लगा था कि वह चैतन्य महाप्रभु के साथ हैं तौ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किसी को रामकृष्ण परमहंस की अनुभूति हुई थी। कबीर, तुलसी, रामदास, तैलंग स्वामी, गोविंदपाद, आनंद और रमण जैसी विभूतियों की झलक भी उन विभूतियों में अनुभव की। कालांतर में दोबारा मथुरा आने पर कुछ साधकों ने इन अनुभवों के बारे मे आचार्यश्री को बताया। उन्होंने साधकों का समाधान किया कि उनके अनुभव उनकी अपनी आत्मिक स्थिति के अनुसार थे। उनके बारे में कोई वक्तव्य नहीं दिया जाना चाहिए। इतना जरूर सही है कि महायज्ञ में सत्ता के सभी अंग, रूप और स्तर सम्मिलित हुए थे।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आर्ष वाङ्मय का संधान

कार्तिक पूर्णिमा को पूर्णाहुति के बाद कन्याभोज और बाद की शोभायात्रा महीनों तक चर्चा में रही। कन्याभोज में चौबीस सौ से ज्यादा लड़कियों को आमंत्रित किया गया था। अविवाहित और सोलह वर्ष से कम उम्र की लड़कियों को कन्या की श्रेणी में समझा जाता है। आचार्यश्री ने उन्हें तो आमंत्रित किया ही, उनके साथ बड़ी उम्र की अविवाहित लड़कियों और उनकी माताओं को भी बुलाया। उनकी संख्या आमंत्रित चौबीस सौ कन्याओं से अलग थी। भोजन में विशेष व्यजंन नहीं बने थे, जिनकी चर्चा हो। खीर, पूड़ी, सब्जी, रायता और चना हलवा का सामान्य भोजन ही था। चर्चा इस बात की होती रही कि भोज में शामिल कन्याओं को दक्षिणा में एक एक सिक्का और गायत्री साहित्य भेंट किया।

सिक्का तो समझ में आता है लेकिन साहित्य की शुरुआत नई है। मथुरा के तीर्थ पुरोहित कह रहे थे। किसी की टिप्पणी थी कि गायत्री वाले श्रीराम के बारे में लोग गलत फहमी में थे। सोच रहे थे अन्नी दुअन्नी (छह पैसे-बारह पैसे) में लड़कियों को निपटा देंगे लेकिन कलदार (चांदी का एक रुपया) सिक्का निकाल दिया। किसी की राय थी कि गायत्री माता ने सोने चांदी की वर्षा करा दी होगी। किसी की टिप्पणी थी कि गायत्री माता खुश होती हैं तो किसी को अशर्फियों का घड़ा नहीं दे देती। बल्कि उसकी चेतना में ऐसा प्रकाश उत्पन्न करती है कि वह सफल होता चला जाता है। यह टिप्पणी करने वाले आचार्यश्री को उद्धृत कर रहे थे।

ब्रह्मदक्षिणा के रूप में 'गायत्री चालीसा,' गायत्री की दिव्य शक्तियाँ, 'सहस्र नाम', 'गायत्री उपासना कैसे करें' और 'संक्षिप्त रामायण' पुस्तकें दी गई थी। कन्याओं के लिए यह साहित्य चांदी के कलदार सिक्के से ज्यादा महत्वपूर्ण था। कन्याभोज के बाद निकले जुलूस के बारे में मथुरा वालों की राय थी कि अपने जीवन काल में वे पहली बार इस तरह का समारोह देख रहे हैं। यह राय व्यक्त करने वालों में सत्तर पार कर चुके लोग भी थे। मुंबई से आये पत्रकार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सीताराम रात्ती ने अपने रिपोर्ट में लिखा था कि जुलूस के आगे भगवान कृष्ण, देवर्षि नारद, राजा हरिश्चन्द्र, भगवान बुद्ध, महात्मा गांधी, महर्षि दयानन्द आदि के दर्शनीय चित्र झांकियां सजाकर निकाले गये थे। गायत्री मंत्र से युक्त यज्ञ भगवान का रथ जुलूस के मध्य में चल रहा था। यज्ञ भगवान के रथ में गायत्री मंत्र की हस्तलिखित पुस्तकें और गायत्री का भव्य चित्र था। दस सफेद अश्व इस रथ को खींच रहे थे। इस रथ के पीछे आचार्यश्री पैदल चल रहे थे। उनके बाद गायत्री परिवार की शाखाओं के उपासक झंडे और बैनर लिए चल रहे थे। पीछे महिलाओं की कतार थी। वह कतार एक फर्लांग दूर तक चली गई थी। जुलुस ने पाँच मील के घेरे में नगर परिव्रज्या की। करीब दो बजे आरंभ हुआ यह जुलुस शाम को नौ बजे वापस तपोभूमि पहुँचा।

सहस्र कुंडीय महायज्ञ के इस तरह के वृतांत पत्र पत्रिकाओं में महीनों तक छपते रहे। जिस अंश का यहाँ उल्लेख किया गया, वह गायत्री तपोभूमि के कार्यकर्त्ता जनवरी १९५९ में बसंत के आसपास जाड़े की धूप सेंकते हुए पढ़ रहे थे। अखबारों और पत्रिकाओं को उलटने पलटने के साथ हफ्ते दस दिन से चल रहे कामकाज की समीक्षा भी चल रही थी। यज्ञशाला के पास टाट पट्टी बिछी थी। कुछ कार्यकर्त्ताओं ने चटाई और दरी मिला कर बिछा ली थी। वहाँ बैठे कार्यकर्त्ताओं और साधकों में ललितपुर(झांसी)के सत्यप्रकाश शर्मा, डॉ. चमनलाल, रामनारायण अग्रवाल, द्रौपदी देवी, चंपारन के उमाकांत झा, मालेगांव (नासिक) के मांगीलाल दामया भी शामिल थे।

रामनारायण अग्रवाल आकाशवाणी में काम करते थे। वे दिल्ली में ब्रजभाषा के कार्यक्रमों के प्रभारी थे। द्रौपदी देवी मथुरा में ही सक्रिय थी। पूर्णाहुति के दिन शोभायात्रा की वापसी के समय उन्होंने आचार्यश्री और उनके विराट गायत्री परिवार की तपोभूमि में भव्य अगवानी की थी। उमाकान्त झा ने वानप्रस्थ ले लिया था। घर परिवार की जिम्मेदारी अपने युवा लड़कों पर छोड़कर वे चंपारन में ही घर से अलग रहने लगे थे। जिस जगह वे रहते थे, वह उन्हीं की पैतृक संपत्ति का हिस्सा थी। वहाँ उन्होंने अपने लिए एक छोटी सी कुटिया बनवा ली थी। मालेगांव के मांगीलाल दायका वस्त्र व्यवसायी थे और मथुरा आने की तैयारी कर रहे थे।

इन सभी कार्यकत्ताओं में चर्चा चल रही थी कि गायत्री मंदिर में घंटी बजने की आवाज आई। पाँच बजे जिस लय से घंटी बजी थी, उससे इन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कार्यकर्त्ताओं को कुछ आभास हुआ। उन्होंने मंदिर की सीढ़ियों पर ध्यान से देखा। आचार्यश्री गायत्री माता को प्रणाम कर रहे थे। जिन कार्यकर्त्ताओं के हाथ में घड़ी थी उन्होंने कलाई उठा कर देखा। ठीक आठ बज रहे थे।

आचार्यश्री को मंदिर में देखकर सभी कार्यकर्त्ता अपनी जगह से उठ गये। वे मंदिर की ओर बढ़े। आचार्यश्री सीढ़ियाँ उतरकर मंदिर की परिक्रमा लगाने लगे थे। उपस्थित लोगों में से कुछ ने उनका अनुकरण किया। वे भी परिक्रमा करने लगे आचार्यश्री ने यह कृत्य पूरा कर लिया तो वे मंदिर के सामने आंगन में आ गये। वहां कार्यकर्त्ताओं ने बारी बारी से प्रणाम किया। उन्होंने प्रणाम करते हुए उठ रहे साधकों की पीठ थपथपाई और कुशल क्षेम पूछा। यह उपक्रम पूरा होने के बाद उन्होंने एक कार्यकर्त्ता से पूछा, 'कौशिक क्या रिपोर्ट है? उपाध्याय लोग क्या कर रहे है?'

कौशिक नामक कार्यकर्त्ता ने कहा कि आठ सौ बयालीस उपाध्याय हो गए। कल शाम तक अठारह का संकल्प और आया। बीस जगह नई शाखाएं भी बन गई है। उपाध्यायों का चयन महायज्ञ के समय किया गया था। उन्हें अपने क्षेत्र में ब्रह्म विद्यालयों में गायत्री तपोभूमि से प्रकाशित साहित्य का अध्ययन करना कराना था। उपाध्याय विद्यालय में शिक्षक और संचालक दोनों ही बनाये गये थे। करीब आठ सौ पचास उपाध्याय में कई ऐसे थे, जो सप्ताह में एक दिन की आय इसी काम में लगाने वाले थे।

कौशिक ने ही बताया कि बारह सौ जगहों से गायत्री यज्ञों के संकल्प आ चुके है। इनमें आठ सौ पांच कुंडीय, दो सौ बत्तीस नौ कुंडीय, एक सौ आठ इक्कीस कुंडीय और बाकी इकावन कुंडी हैं। इकावन कुंडीय गायत्री महायज्ञों में से कुछ अपना विस्तार एक सौ एक कुंडीय तक ले जाने के बारे में भी सोच रहे हैं। आचार्यश्री यह विवरण ध्यान से सुन रहे थे । बीच बीच में कुछ पूछते भी जाते। गायत्री परिवार की अब तक की स्थिति जान लेने के बाद उन्होंने कहना शुरु किया कि इन आयोजनों के लिए हमें साहित्य की जरुरत पड़ेगी। उसकी छपाई का सरंजाम जुटाना चाहिए। कुछ कार्यकर्त्ता भी चाहिए। कोटा से रामचरण महेन्द्र को कुछ समय के लिए पुनः बुला लेते हैं। पहले भी वे उपसंपादक रह चुके हैं। सत्यभक्तजी तो यहां हैं ही। संपादन आदि के लिए पर्याप्त है। प्रकाशन मुद्रण से जुड़ा कोई व्यक्ति भी होना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्यश्री कहते चले जा रहे थे। व्यवस्था की बात पूरी करने के बाद उन्होंने साहित्य की चर्चा को फिर उठाया । कहने लगे विचार प्रधान साहित्य ही काफी नहीं है। कहानियों और गीतों कविताओं का भी महत्व है । इस विधा को ज्यादा आसानी से ग्रहण करने वालों का भी एक वर्ग है और हां, एक बात और, गायत्री हमारी इष्ट उपास्य है। वह वेदमाता है, वैदिक वांङ्मय गायत्री मंत्र की व्याख्या में ही लिखा गया है। हमें इस साहित्य का भी प्रबंध करना चाहिए। गायत्री महायज्ञों और ब्रह्म विद्यालयों में इस विषय पर भी कुछ सामग्री रहे।

अभी हमारे पास इस विषय पर बीस बाईस पुस्तकें है। एक कार्यकर्त्ता ने कहा। वह साहित्य केन्द्र का दायित्व संभालता था। वेदों की स्वर्णिम सूक्तियाँ, सूक्त संहिता, गायत्री योग, गायत्री तंत्र, गायत्री रहस्य, मंत्रार्थ, यज्ञ विधान, स्तोत्रम आदि पुस्तकें उस कार्यकर्त्ता ने गिना दी थी।

आचार्यश्री ने कहा, 'तुम ठीक कहते हो लेकिन इतने साहित्य से ही काम नहीं चलेगा।' वहाँ उपस्थित कार्यकर्त्ता इन पुस्तकों को प्रचुर मात्रा में पहले से ही तैयार रखने की योजना बनाने लगे।

उस वसंत का संदेश

आचार्यश्री की लोकयात्रा का वह सैतालीसवां वर्ष था। आध्यात्मिक जन्मदिन के रूप में समझें तो तैतीसवां जन्मदिन। संवत दो हजार सोलह की वसंत पंचमी की गायत्री तपोभूमि में अड़तालीस दीपक जलाये गये। अड़तालीसवां दीपक कुछ बड़े आकार का था। यह लोकयात्रा के चल रहे वर्ष का प्रतीक था। उस दिन अखण्ड ज्योति संस्थान में सुबह से ही प्रणाम करने और बधाई देने वालों का तांता लग गया था। सुबह छह बजे आचार्यश्री अपने कक्ष से बाहर आये। उन्होंने ताई जी के चरण छुए। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी ताईजी ने अब तक जी लिए वर्षों के बराबर रूपये आशीर्वाद स्वरूप दिए। पास ही माताजी खड़ी थी उन्होंने तिलक लगाया और प्रणाम किया।

गायत्री परिवार के सदस्य भी तब तक प्रणाम करने के लिए निकट आ गए थे। उनमें से किसी ने पूछा कि इस वर्ष का विशेष संदेश क्या है? यह बात आचार्यश्री के कानों तक भी पहुंची। उत्तर में उन्होंने सिर्फ स्मित भाव से उसकी ओर देखा ही। कहा कुछ नहीं और गायत्री तपोभूमि पहुंचने के लिए सीढ़ियां उतर गये। साथ में दस बारह कार्यकर्त्ता भी थे। वे भी आचार्यश्री के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साथ हो लिए एक छोटा सा समूह पैदल चलता हुआ दिखाई देने लगा। राह में कुछ परिचित स्थानीय लोग मिले। उनमें से बहुतों को पता था कि आज आचार्यश्री का जन्मदिन है। उन्होंने अभिवादन किया।

गायत्री तपोभूमि में भी करीब पचास कार्यकर्त्ता प्रतीक्षा कर रहे थे। गायत्री माता को प्रणाम और नित्य चलने वाले हवन में भाग लेने के बाद आचार्यश्री मंदिर की सीढ़ियों पर आ कर बैठ गये। प्रणाम आदि का क्रम संपन्न होने के बाद उन्होने कहा, 'लौकिक वस्तुओं को जानने के लिए जिस प्रकार नेत्रों की उपयोगिता है उसी प्रकार लोकोत्तर अस्तित्व को जानने के लिए वेदों की आवश्यकता है। हमारे गुरुदेव ने इस वर्ष वैदिक वाङ्मय को जनसुलभ कराने का निर्देश दिया है। उन्होंने हमें आश्वासन भी दिया है कि यह कार्य अधिक से अधिक दो वर्ष में संपन्न हो जाएगा।

कठिनाइयां कम नहीं है। वेदों का संहिता भाग कहीं एक जगह उपलब्ध नहीं है। उसकी शोध, परख और निर्धारण एक चुनौती है। यह चुनौती हम सबको स्वीकार है और नियत अवधि के भीतर चारों वेद, एक सौ आठ उपनिषद, छहों दर्शन, अठारह पुराण, बीस स्मृतियाँ और चौबीस गीताओं को सर्व सुलभ कराया जा सकेगा। जिस मार्गदर्शक सत्ता ने यह आदेश दिया है, वही योगक्षेम का वरण भी करेगी। इसलिए हममें से किसी को भी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। न ही यह सोचना है कि आर्ष साहित्य के अनुसंधान और प्रकाशन में व्यस्त हो जाने से गायत्री परिवार के कार्यक्रम में रुकावट आएगी।'

गायत्री महाविद्या, उसकी उपासना और तत्वदर्शन पर छोटी बड़ी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी थीं। उन्हें एक स्थान पर संकलित और संपादित कर तीन खंडों में 'गायत्री महाविज्ञान' भी इन्हीं दिनों प्रकाशित हुआ था। गायत्री के व्याख्या विस्तार या उसके उपवन अरण्य वैदिक संहिताओं को सुलभ कराने का काम गायत्री परिवार की सामान्य और विशेष गतिविधियों में अवरोध नहीं लाएगा बल्कि उन्हें गतिमान ही करेंगा।

वसंत पर्व के संदेश के रूप में आचार्यश्री ने इतना ही कहा और सीढ़ियों पर से उठ गये। उस दिन गायत्री परिवार के सदस्य उनके चरणों में चढ़ाने के लिए आम के फूल और पत्ते लेकर आये थे। आचार्यश्री ने उन फूलों को एक और रख देने के लिए कहा। साधकों ने असमंजस भाव से देखा तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कहने लगे कि इस बार फूलों को यहीं रहने दीजिए। उनके निर्देश का पालन करते करते एक साधक की अंजलि से छिटक कर कुछ फूल गिर गए थे। आचार्यश्री ने उन्हें उठा कर सीढ़ियों के पास बनी वेदी पर रख दिया।

आचार्यश्री उन साधकों के असमजंस को समझते हुए भी चुप थे। वे वेदों की महत्ता के बारे में ही कह रहे थे, 'लोग समझते है न कि ईश्वर की सत्ता को नहीं मानने वाला नास्तिक है। वस्तुत:ऐसा है नहीं। वेदों की प्रमाणिकता नहीं मानने वाला व्यक्ति नास्तिक है।'

कुछ रुके, प्रणाम करने वाले साधकों को मंगल वाक्य कहे और फिर बोले,' 'अपने भीतर दिव्य चेतना के प्रकाश में ऋषियों ने जिन तत्वों को अनुभव किया और कहने की कोशिश की वही वेद है। पारपंरिक भाषा में उस संवेदना को प्रतिभा चक्षु कहते है। गलत नहीं कहा है कि धनधान्य से भरी पूरी पृथ्वी का दान किया जाए और उससे जो पुण्यफल मिलता है उसी के बराबर पुण्य वेदों के अध्ययन से मिलता है।'

'गायत्री को वेदमाता सिर्फ महिमा बताने के लिए ही नहीं कहा है। इसकी उपासना वेदों में प्रवेश का मार्ग खोलती है। उपासना के बाद अध्ययन नहीं किया जाए तो वह दिव्य कोष के द्वार पर खड़े होने के समान है। कुछ पाने के लिए भीतर प्रवेश करना ही होगा।' आचार्यश्री ने कहा। उनके कहे हुए को साधक नोट भी करते जा रहे थे।

एक अघोषित निर्धारण

वसंत पंचमी की उस शाम आचार्यश्री तपोभूमि से लौटै थे। शाम का अर्थ है छह बजे। शाम का भोजन वे चार बजे के आसपास ही कर लिया करते थे और उसके बाद एक बार गायत्री तपोभूमि जाते। वहां संध्या आरती के बाद वापस आते लेकिन उस दिन कुछ जल्दी वापस आ गये। परामर्श कक्ष में माताजी को बुलाया और कहने लगे करीब दो वर्ष के लिए पत्रिकाओं का संपादन और तपोभूमि आदि की व्यवस्था तुम्हें ही संभालना है।

सुनकर माताजी अवाक् देखती रह गईं। वसंत पर्व के सभी निर्धारण सुबह ही घोषित कर दिए जाते थे। यह कोई अकस्मात निर्णय था क्या? माताजी के मन में ऊहापोह चल रही थी लेकिन वे कुछ कह नहीं पा रही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

थीं। आचार्यश्री ने उनके भीतर चल रहे द्वन्द्व को समझा और कहा कि निर्धारण सुबह ही हो चुका था। परम पूज्य गुरुदेव से इसके लिए निर्देश मिल गया था लेकिन इसका संबंध तुमसे ज्यादा है, इसलिए पहले तुम्हें ही बताया। और लोगों को बाद में बता दिया जाएगा।

आचार्यश्री ने कहा तो माताजी का संकोच खुला। वे कहने लगीं कि मुझे संपादन और व्यवस्था का कोई अनुभव नहीं है। मैं सिर्फ परिवार को, यहां आने वाले बच्चों और साधकों को भोजन करा सकती हूँ। उनकी देखभाल कर सकती हूँ लेकिन संपादन और संगठन के काम नये हैं। आपका आदेश है तो यह दायित्व भी निभ ही जाएंगे।

आचार्यश्री ने माताजी से अगली व्यवस्था के बारे में कहा, 'संपादन और व्यवस्था का काम अभी से अभ्यास में लाना शुरू करो। कुछ माह तक मैं स्वयं बताता रहूँगा। उसके बाद पूरी व्यवस्था तुम्हें ही संभालनी है।'

माताजी ने नहीं पूछा कि कुछ माह तक ही अभ्यास कराने और आगे से सारी व्यवस्थाएं खुद देखने का क्या अर्थ है? आचार्यश्री की भविष्य में क्या योजना है। वे समझ रही थी कि आर्ष वाङ्मय के शोध, संधान और संपादन प्रकाशन का काम किया जाना है। शायद इसीलिए आचार्यश्री अपने आपको नियमित कामों से थोड़ा अलग रखने के लिए सोच रहे होंगे। वे कारणों का अनुमान लगा रही थीं कि आचार्यश्री ने कहा आगामी बसंत तक हम यहाँ से चले जाएंगे। लगभग एक वर्ष के लिए अपनी मार्गदर्शक सत्ता के सान्निध्य में, उनकी तपस्थली में रहना है। वहाँ क्या करेंगे- हमें इस बारे में कुछ नहीं मालूम।

'साहब' माताजी ने इस चर्चा में पहली बार प्रश्नवाची भाव व्यक्त किया, 'आप अज्ञातवास चले जाएंगे तो यहां आर्ष साहित्य का काम कौन देखेगा? आपने सुबह इसकी घोषणा भी कर दी है।'

'उस घोषणा के लिए भी गुरुदेव ने ही कहा था और अज्ञातवास पर निकलने का निर्देश भी उन्हीं की ओर से आया है। दोनों काम कैसे होंगे, हमें यह चिंता नहीं करनी चाहिए।' कह कर आचार्यश्री ने इस विषय को विराम दिया और अखंड ज्योति में प्रकाशित होने के लिए माताजी से इस वसंत का संदेश लिखाने लगे। यह संदेश पत्रिका के आगामी अंक में छपने वाला था।

आर्ष वाङ्मय को जन सुलभ कराने की आवश्यकता पर भी माताजी ने इसी दिन एक पत्र लिखा। यों इस आवश्यकता के बारे में आचार्यश्री अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्याख्यानों में पहले भी जोर देते रहे थे। लेकिन विधिवत घोषणा और समयबद्ध योजना का निर्धारण पहली बार किया गया था। तपोभूमि आए साधकों में भी इस योजना की चर्चा थी और अखंड ज्योति संस्थान में भी उसी के बारे में बातें हो रही थीं। संपादन और संगठन का काम माताजी द्वारा संभालने और आचार्यश्री के अज्ञातवास पर जाने की चर्चा माताजी और आचार्यश्री तक ही सीमित रही।

उस दिन आचार्यश्री देर रात तक पढ़ते रहे। आर्ष वाङ्मय के लिए आवश्यक संदर्भ और कुछ पुस्तकें शाम को ही मंगा ली थीं। गायत्री तपोभूमि के पुस्तकालय में तद्विषयक सामग्री मिल गई थी। वह अपर्याप्त लगी तो आर्यसमाज के पुस्तकालय और होली दरवाजे क्षेत्र में स्थित सरस्वती पुस्तकालय से भी कुछ ग्रंथ मंगाए। इन संदर्भ सामग्री के आधार पर आर्ष वाङ्मय की योजना को रात में ही निश्चित करना था। इन संदर्भों का अवलोकन करते हुए कुछ विकट कठिनाइयाँ सामने दिखाई दी। इनमें मुख्य यह थी कि वैदिक वाङ्मय संपूर्ण रूप से कहीं उपलब्ध नहीं था।

पहली कठिनाई यह थी कि वेदों की एक हजार से ज्यादा शाखाएं हैं। इनमें सामवेद की सर्वाधिक हैं। आचार्यश्री ने पतंजलि के संदर्भ को देखा तो पाया कि ऋग्वेद की इक्कीस, यजुर्वेद की एक सौ एक, सामवेद की एक हजार और अथर्ववेद की नौ शाखाएँ हैं। इन शाखाओं में गिनी चुनी ही उपलब्ध हैं। स्वयंसिद्ध तथ्य है कि जितनी शाखाएँ होंगी उतनी ही संहिताएँ, उतने ही ब्राह्मण, उतने ही आरण्यक और उपनिषद होने चाहिए। अध्येता अपनी शाखा के अलग अलग ग्रंथ अलग ही रखते हैं और उन्हीं के अनुसार कर्मकाण्ड अनुष्ठान आदि करते हैं। इस दृष्टि से प्रत्येक शाखा में संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद श्रौत और गृह्यसूत्र अलग और विशिष्ट होना चाहिए लेकिन इन दिनों बहुतेरी शाखाओं के कुछ ही ग्रंथ मिलते हैं। उदाहरण के लिए किसी शाखा की अपनी संहिता है तो दूसरे का ब्राह्मण ग्रंथ है। किसी का अपना ब्राह्मण ग्रंथ है तो किसी का सूत्र।

ऋग्वेद में सबसे ज्यादा मंत्र हैं। उसकी इक्कीस शाखाओं में शाकल और शांखायन ही उपलब्ध हैं। यजुर्वेद की एक सौ एक शाखाओं में छह ही मिलती हैं। तैत्तिरीय, मैत्रायणीय, कठ, कपिष्ठल, माध्यंदिनीय और कण्व। सामवेद की एक हजार शाखाओं में से कौथुम और जैमिनीय ही मिलती हैं। अथर्ववेद की नौ शाखाओं में से केवल दो ही उपलब्ध हैं—शौनक और पैप्पलाद।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ग्यारह सौ इकतीस शाखाओं में सिर्फ नौ शाखाएँ और उनमें भी अध्ययन शैली सिर्फ छह की ही मिलती है। ऋग्वेद में केवल शाकल, यजुर्वेद में तैत्तिरीय, काण्व और माध्यंदिनीय, सामवेद में कौथुम और अथर्ववेद में केवल शौनक। इस अवलोकन में यह निष्कर्ष भी निकला कि अन्य शाखाओं के कुछ और ग्रंथ भी होंगे लेकिन उनमें से कई के नाम ही पता नहीं हैं।

मंत्र और मर्म भी

आधुनिक विद्वानों की मान्यता है कि वेदों का मंत्र भाग यज्ञ अग्निहोत्र के समय पढ़े या गाये जाने वाले शब्दों का समूह मात्र है। ब्राह्मण भाग में उन मंत्रों के प्रयोग की विधि कथा या आख्यायिका द्वारा बताई गई है। आख्यायिका के अलावा अनुष्ठान के प्रयोग की पद्धति का विश्लेषण भी है। आधुनिक ही नहीं कई प्राचीन विद्वानों की मान्यता में भी वैदिक वाङ्मय यज्ञयाग का विधि विधान बताने और देव शक्तियों का आराधन करने वाला दिव्य साहित्य ही है। आचार्यश्री का अंत:करण इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं था। उनके मन में रह-रह कर स्फुरणा जाग रही थी कि आर्ष वाङ्मय में जीवन और जगत के गूढ़ रहस्यों का निरूपण किया गया है। वेदों की जो ग्यारह सौ इकतीस शाखाएँ मिलती हैं, वे उनके अध्ययन और अनुशीलन की ही पद्धतियां हैं। वाङ्मय या मंत्र भाग कहीं लुप्त नहीं हुआ है। उसके अंश जहाँ तहाँ बिखरे हुए हैं। उन्हें संकलित ही करना है।

वैदिक वाङ्मय का तत्त्वदर्शन जिस भाग में मिलता है, वह उपनिषदों के रूप में ज्यादा सुलभ है। आचार्य शंकर ने उन पर भाष्य लिख कर विद्या अनुरागी साधकों पर अनुग्रह किया। बोधगम्य होने के कारण यह साधना स्वाध्याय की वैदिक परंपरा से बाहर के लोगों को भी ज्यादा रुचिकर लगा। इस भाग (उपनिषद्) के बारे में भी कुछ संशय है। उपनिषद के रूप में जितने ग्रंथ उपलब्ध है, उनमें से ईशावास्य, बृहदारण्यक, तैत्तिरीय और छांदोग्य आदि को छोड़ कर किसी के भी संबंध में निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि वे वेद की किसी शाखा में उपलब्ध हैं।

रह-रह कर तरंग उठती थी कि उपनिषदों की संख्या एक सौ आठ है। लेकिन उपलब्ध संदर्भों में यह संख्या पंद्रह से ज्यादा प्रमाणित नहीं हो रही थी। ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुंडक, मांडूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, श्वेताश्वतर, छांदोग्य,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बृहदारण्यक उपनिषद की प्रामाणिकता तो असंदिग्ध है। शंकराचार्य के भाष्य इनके पक्ष में प्रबल प्रमाण हैं। कौषितकी ब्राह्मण, कैवल्य, गायत्री रहस्य, याज्ञवल्क्य आदि के संबंध में भी कुछ प्रमाण वचन मिलते हैं। इनके बाद दो सौ से अधिक नाम और मिलते हैं। उनमें कितने वेदों की शाखाओं के भाग हैं और कितने ग्रंथ तत्त्वज्ञान का स्वतंत्र निरूपण करते हुए लिखे गए हैं, इसकी कोई कसौटी नहीं है। दो सौ चालीस उपनिषदों में प्राय: सभी वैदिक परंपरा का निर्वाह करते हैं। उनकी शैली और शब्द योजना में भिन्नता हो सकती है लेकिन सभी में आत्मतत्त्व का निरूपण किया गया है। इस विस्तार में से एक सौ आठ को चुनना कठिन काम था। उनके पाठ जुटाना तो अलग और ज्यादा बड़ी चुनौती थी।

दर्शन शास्त्र, स्मृतियाँ और पुराण आदि ग्रंथों के संबंध में भी उलझी और जटिल सूचनाएं मिली। उन संदर्भो की छानबीन करते हुए आचार्यश्री ने कई बार अनुभव किया कि यह काम दो वर्ष में तो क्या दो जन्मों में भी कठिन है। जब भी यह विचार आता, उसका विलोम स्वर भी तत्क्षण अंतरंग में उभरता कि आर्ष वांङ्मय को जन सुलभ कराना कितना ही कठिन है। लेकिन वह समय पर पूरा हो जाएगा। कैसे होगा? इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता था। उस अनुत्तरित स्थिति में कुछ पल के लिए मन व्यग्र हो जाता। कभी व्यग्र होते और कभी अपने आप ही आश्वस्त हो जाते। आचार्यश्री ने लगभग चार घंटे तक उपलब्ध संदर्भ खंगाल लिए। आर्ष वाङ्मय के स्वरूप पर एक रूपरेखा भी तैयार की और उसके बाद वसंत पंचमी के उस दिन का समापन किया।

उस रात आचार्यश्री की आंख कई बार खुली। मन में आर्ष वाङ्मय या किसी और विषय पर चिंता नहीं थी। उस संबंध में मन पूरी तरह आश्वस्त था। नींद उचटने का कोई कारण समझ नहीं आता था। लगता था जैसे कोई जगा देता है या अपने भीतर ही पुकार उठती है और वह जगा देती है। उस स्फुरणा को समझने के लिए मन में ही कुछ उद्रेक आते हैं और चित्त फिर शांत हो जाता है। वापस सो जाते हैं। वह रात लगभग जागते हुए ही बीत रही थी। वसंत की वह पंचमी तिथि रात्रि में भी व्याप्त थी। इस तरह की निशीथ व्यापिनी तिथि को योग ज्योतिष में विशिष्ट महत्त्व दिया गया है। आचार्यश्री ने आती और उचटती नींद को इस रूप में समझा कि मार्गदर्शक सत्ता से अभी कुछ संकेत और आने है। यह भाव उठते ही उन्होंने बिस्तर छोड़ दिया। घड़ी में देखा दो बज रहे थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वर्षों से चले आ रहे अभ्यास के अनुसार भी यह उठ जाने का समय था। उठकर वे स्नानादि से निवृत्त हुए और साधना कक्ष की ओर चल दिए।

गायत्री की छवि के सामने ध्यान धारणा करते हुए आचार्यश्री को प्रतीत हुआ जैसे कोई गा रहा है। ध्वनि थोड़ी स्पष्ट हुई और स्पष्ट हुआ कि जो गान चल रहा है वह ऋग्वेद के ही मंत्र हैं, फिर बादलों के छंटने पर अनायास ही प्रखर होने वाले प्रकाश की तरह यह बोध हुआ कि गाये जा रहे मंत्र ऋग्वेद के दशम मंडल में श्रद्धासूक्त के हैं। मंत्रों में श्रद्धा से निवेदन किया गया है। 'श्रद्धाग्निः समीध्यते, श्रद्धया इयते रवि.....' अर्थात श्रद्धा से ही अग्निहोत्र की अग्नि दीप्त होती है। उसी में हवि का भाग समर्पित होता है। हम उस श्रद्धा की स्तुति कर रहे हैं जो ऐश्वर्य के मस्तक पर विराज रहे हैं। हे श्रद्धा तुम देने वाले को देय वस्तु का दान करो और उसकी अभिलषित वस्तु भी दो। भोग और योग में से जिस किसी की भी प्राप्ति के लिए लोग आराधन करते हैं, श्रद्धा तुम उन्हें वही देती हो। हम तीनों कालों में श्रद्धा का ही आराधन करते हैं।

श्रद्धा की अभ्यर्थना में गाये जा रहे इन मंत्रों का स्वर अपूर्व आनंद दे रहा था। ध्यान और जप का क्रम पूरा हुआ तब भी श्रद्धासूक्त की गूंज सुनाई दे रही थी। जप, ध्यान का समापन करते हुए आचार्यश्री उठने ही वाले थे कि उन्हें लगा जैसे पीछे कोई खड़ा है। साधना के समय कक्ष में आचार्यश्री अकेले ही होते थे। पहले से नियत होता तो माताजी ही आवश्यक होने पर साधना कक्ष में आती थीं। इस बार ऐसा कुछ भी निश्चित नहीं था, अतः उनके आने का प्रश्न ही नहीं था। फिर आगंतुक की पदचाप तो सुनाई देती।

कहीं कोई भ्रम तो नहीं है, यह जानने के लिए आचार्यश्री ने पीछे मुड़ कर देखना चाहा। उन्होंने देखा दाहिनी ओर एक कृष्णवर्ण का पुरुष खड़ा है। सिर पर घने श्वेत बाल हैं। वस्त्र के रूप में सिर्फ एक धोती पहनी हुई है और हाथ में माला है। आकृति जरा भी नयनाभिराम नहीं है। सामान्य स्थिति में यह आकृति किसी के सामने अचानक आ जाए तो वह भयभीत हो सकता है। लेकिन उस पुरुष के व्यक्तित्व में इतना तेज और ओज था कि वह सम्मोहित करता हुआ लग रहा था। प्रणाम करने का मन हुआ और आचार्यश्री हाथ जोड़ कर उस आकृति के सामने नत मस्तक हो गए।

उस आकृति के हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में उठ गये। आशीर्वाद के साथ ही उस ऋषितुल्य आकृति ने कहा, 'आर्ष वाङ्मय को लेकर चिंतित हो वत्स!'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यह वाक्य सुनते ही आचार्यश्री के मन में यह बोध जन्मा कि यह ऋषि आत्मा भगवान वेदव्यास ही हैं। उस बोध की पुष्टि के लिए उन्होने निवेदन किया। उस निवेदन में विनम्र जिज्ञासा भी थी कि मैं भगवान व्यास के चरणों में ही प्रणाम कर रहा हूँ। ऋषि आत्मा ने स्वीकार में सिर हिलाया। फिर कहा, 'चिंता मत करो पुत्र। आर्ष वाङ्मय की परंपरा को अक्षुण्ण रखने की आवश्यकता सदैव रही है। जिस युग में इस वाणी को ग्रहण करने योग्य आत्माएं पृथ्वी पर आती हैं, तब उनके लिए इसे व्यक्त करने वाले प्रयत्न भी होते हैं। किसी काल में उस तरह की आत्मा पृथ्वी पर कम होती हैं तो परमात्मा की वाणी अपने इस रूप में लुप्त भी होने लगती है। तुम्हारी मार्गदर्शक सत्ता ने तुम्हें परमात्मा के विश्वास को अनुभव करने कराने का निर्देश दिया तो उसे निश्चिंत भाव से ग्रहण करो।

व्यास का आश्वासन

वेदव्यास की वाणी आचार्यश्री को संबोधित कर रही थी। वे उन्हें सुन रहे थे और रोमांचित भी हो रहे थे। आचार्यश्री को उनके बारे में पहले सुना और पढ़ा गया विवरण ध्यान आ रहा था। महर्षि पाराशर के पुत्र कृष्ण द्वैपायन जन्म लेने के तुरंत बाद तपस्या के लिए चले गये थे। महाभारत में उनका विस्तृत उल्लेख मिलता है। आचार्यश्री की स्मृति में वह सब उभर ही रहा था कि भगवान वेदव्यास ने कहा 'अपनी स्मृति को संभालने की चेष्टा मत करो पुत्र। तुम्हारी मार्गदर्शक सत्ता ने तुम्हें जो दायित्व सौंपा है, वह तुम्हें अकेले ही पूरा नहीं करना है। ऋषि और यति स्तर की कई आत्माएं इसे पूरा करेंगी। स्थूल जगत में तुम उनका प्रतिनिधित्व भर कर रहे हो। उस कार्य का संचालन संपादन और निर्वाह तो हिमालय में तप कर रही आत्माएं करती ही रहेंगी।'

उसी दिव्य चेतना से व्यक्त हुआ कि उनसे पहले महर्षि अंगिरा ने आदि युग से चले आ रहे परमेश्वर के विश्वास में से भौतिक उपयोग में आ रहे छंदों का संग्रह किया। यह संग्रह छांदस, आंगिरस या अथर्ववेद कहलाया। उसके अध्ययन अनुशीलन की परंपरा क्षीण होने लगी तो वेदव्यास ने उसमें से ऋचाओं, गायन योग्य मंत्रों और मंत्र भाग को अलग अलग किया। इस विभाजन या संपादन से ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद का स्वरूप निश्चित हुआ।

भगवान वेदव्यास की उपस्थिति को आचार्यश्री प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे थे। उन्हें अपने अनुभव और संवेदन पर संदेह भी होता लेकिन वह तुरंत ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तिरोहित हो जाता। तीसरी बार उन्हें संदेह हुआ तो ऋषि सत्ता ने निवारण करते हुए कहा, यह कार्य एक ही चरण में पूरा नहीं हो जाना है। अभी वेदवाणी का बोधगम्य अर्थ ही किया जाना है। चौबीस वर्ष बाद तुम्हारे ही माध्यम से वेदवाणी का सूक्ष्म अर्थ उद्घाटित होगा। कारण अर्थ उसके भी उपरांत। वह अध्येताओं के चित्त में ही प्रकट होगा।

यह दृश्य कुछ ही क्षणों तक विद्यमान रहा। दृश्य का तिरोधान होने के बाद आचार्यश्री साधना कक्ष से बाहर आये। बाहर आते तक उन्होंने एक निश्चय कर लिया था। साधना से निकल कर वे अध्ययन के बाहर आये और पत्र लिखने लगे। चार पांच पत्र लिखे होंगे कि ताईजी द्वारकाधीश का प्रसाद लेकर आ गईं। आचार्यश्री ने प्रसाद लिया और ताईजी को सरल भाव से बताया इन नवरात्रियों में विद्वानों का स्वागत करने की तैयारी रखनी है। नवरात्रियों का अर्थ अप्रैल में आने वाले साधना पर्व से था। आचार्यश्री उस अवसर पर वैदिक विद्वानों की गोष्ठी बुला रहे थे।

९ अप्रैल १९५९ से शुरु हुए साधना सत्र के साथ वह गोष्ठी आरंभ हुई। चौबीस हजार मंत्र जप का लघु अनुष्ठान करने वाले साधक गायत्री तपोभूमि में ठहरे थे और वेदशास्त्रों पर अधिकार रखने वाले विद्वान अखंड ज्योति संस्थान में। उनके लिए पहले श्रीकृष्ण जन्मस्थान में व्यवस्था की गई थी। आवास आदि की व्यवस्था हुई थी कि मथुरा के कुछ पंडितों ने प्रवाद फैलाना शुरू कर दिया। वे कहने लगे थे कि श्रीराम शर्मा ने गायत्री का दुरुपयोग तो किया ही है, वे वेदशास्त्रों का नाश करने पर भी तुल गए हैं।

अपनी बात कहने के लिए वे 'कल्याण' पत्रिका के संपादक हनुमान प्रसाद पोद्दार के पास भी चले गये। पोद्दार जी के मन में सनातन धर्म के प्रति दृढ़ अनुराग था। वे शास्त्रों में पूर्ण निष्ठा रखते थे लेकिन उनकी भी मान्यता थी कि वेद शास्त्रों का अध्ययन हर किसी को नहीं करने देना चाहिए। लेकिन उन्होंने आचार्यश्री को रोकने से मना कर दिया। कहा कि वे विवेकी पुरुष हैं। जो कुछ कर रहे हैं, उसका महत्व समझते हैं।

आचार्यश्री को यह बात पता चली तो उन्होंने श्रीकृष्ण जन्मस्थान में गोष्ठी का विचार स्वयं ही स्थगित कर दिया। वे जानते थे कि पोद्दारजी ने संकोच में आकर ही गोष्ठी को स्वीकृति दी है। फिर यह विचार भी आया कि वहां सार्वजनिक स्थान पर संगोष्ठी करेंगे तो निहित स्वार्थी लोग विघ्न डालने से बाज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नहीं आएंगे। अपने निवास पर गोष्ठी करने से कुछ तो सुरक्षा होगी ही। इस विचार से उन्होंने वैदिक विद्वानों को अखण्ड ज्योति संस्थान में ही ठहराने का मन बनाया और वैसी व्यवस्था भी की।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की सुबह तक बारह विद्वान विभिन्न स्थानों से आ गये थे। इनमें नदिया से नीरजाकांत चौधरी, काशी से विजयानंद त्रिपाठी, पूना से मनोहर नरहरि, स्वामी सत्यदेव परिव्राजक, नासिक से लक्ष्मण राव गर्दे, प्रयाग से दीनानाथ शर्मा ने आर्ष साहित्य पर शोधपूर्ण आलेख भी लिखे थे। अपने क्षेत्र और विषय में उन्हें बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त थी।

आगंतुक विद्वान कर्मकांडी थे। नियमित संध्यावंदन, अग्निहोत्र, दान दक्षिणा आदि के बिना अन्न-जल ग्रहण नहीं करते थे। पहली गोष्ठी में वेदाध्ययन की आवश्यकता और स्वरूप पर चर्चा चली। मनोहर नरहरि ने स्थापना दी कि वैदिक वाङ्मय समग्र रूप में उपलब्ध नहीं हैं, फिर भी वह आंशिक रूप से प्रचलित है। आचार्य कुमारिल भट्ट ने व्यवस्था दी थी कि कदाचित वेदों का नियमित अध्ययन नहीं हो सके तो संध्यावंदन के रूप में ही वह कृत्य संपन्न हुआ मान लिया जाय। उनका यह भी कहना था कि संध्या में प्रयुक्त वैदिक मंत्र और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह कि गायत्री मंत्र वेद पाठ की आवश्यकता पूरी करता है।

जहां भी संहिता मिली

विजयानंद त्रिपाठी ने इसकी पुष्टि की और कहा कि गायत्री को वेदमाता कहने का एक प्रबल कारण यह भी है। आचार्यश्री का कहना था कि यह पाठ, जप या उपासना आध्यात्मिक व्यायाम है। इसे अध्ययन की श्रेणी में नहीं रख सकते। वेदों का अध्ययन करने के लिए आवश्यक है कि उनका संहिता भाग सुलभ हो। हम सब लोग यहां इस दिशा में कुछ करने की योजना बनाने के लिए एकत्रित हुए हैं। इस के बाद विमर्श का क्रम चल पड़ा। इन विद्वानों ने अपनी जानकारी के अनुसार जो सूची तैयार की उसमें छियासी स्थानों का उल्लेख आया जहां वैदिक वाङ्मय के विभिन्न अंग उपलब्ध थे। मैसूर, मुंबई, लाहौर, पूना, वाराणसी, मंगलोर, तिरुपति, कलकत्ता, मद्रास (अब चेन्नई) त्रिवेंद्रम, बडोदरा, मुजफ्फरपुर आदि स्थानों पर वैदिक साहित्य के उपलब्ध होने की बात कही। इंग्लैण्ड, अमेरिका और जर्मनी में भी कुछ अंश थे लेकिन उनके स्रोत स्थानों के बारे में कोई विशेष जानकारी नहीं थी। अजमेर, नदिया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और रामेश्वरम में कुछ विद्वानों के पास यह साहित्य वाचिक रूप में उपलब्ध था। वहाँ जाकर उन विद्वानों से सुनने और सुन कर लिखने का दायित्व किसी सुयोग्य व्यक्ति को सौंपा जाना चाहिए।

नासिक से आए लक्ष्मणराव और प्रयाग के दीनानाथ शर्मा ने इस काम के लिए स्वयं को प्रस्तुत किया। मथुरा के एक विद्वान विट्ठल चतुर्वेदी ने भी उत्साह दर्शाया। चतुर्वेदी मथुरा में तीर्थ पुरोहित होते हैं। इस वर्ग के लोग प्राय: आचार्यश्री के घोर आलोचक रहे हैं। विट्ठल चतुर्वेदी उन लोगों से अलग थे। वे आचार्यश्री के महत्कार्य को समझते थे और उनका समर्थन सहयोग भी करते थे। उनके समुदाय में कुछ लोग इस कारण उनके विरोधी हो गये थे लेकिन उन्होंने चिंता नहीं की। अजमेर में पंडित जयदेव शर्मा भी वैदिक साहित्य का संकलन, संपादन कर रहे थे।

विमर्श का सार यह निकला कि वैदिक वाङ्मय लुप्त नहीं है। उसकी शाखाएं और अध्ययन की पद्धतियां भले ही नहीं मिल रही हों लेकिन मंत्र भाग समग्र रूप में उपलब्ध थे। शंकर पांडुरंग शास्त्री ने सायण भाष्य के साथ अथर्ववेद का विशुद्ध संस्करण तैयार किया था। उन्होंने ऋग्वेद की व्याख्या भी शुरू की थी लोकमान्य तिलक का 'ओरायन' और 'आर्कटिक होम इन वेदाज' सत्यव्रत सामश्रमी द्वारा संपादित 'साम संहिता' और 'सामगान', तिलक विद्यापीठ पूना से प्रकाशित ऋग्वेद का सायण भाष्य और बंबई से मैक्समूलर के प्रख्यात संस्करण भी यहां वहां ढूंढने से मिल जाते लग रहे थे। इस संगोष्ठी में कुछ मजेदार चर्चाएँ भी रहीं।

स्वाधीनता संग्राम के दिनों में सशस्त्र क्रांति के पक्षधर और स्वयं भी क्रांतिकारी रहे सत्यभक्त तब तपोभूमि में आकर रहने लगे थे। संपादन और अनुसंधान के क्षेत्र में उनकी प्रतिभा बेजोड़ थी। कुछ चर्चाओं में वे भी शामिल थे। परामर्श के समय किसी विद्वान ने कहा कि जर्मन में सुनते हैं वेदों की बड़ी मान्यता है। वहां का शासक हिटलर हमारे वेदों का अध्ययन कर महाबली हो गया था। अमेरिका, रूप और ब्रिटेन को थरथरा देने वाली शक्ति प्राप्त कर वह इस युग का देवता बन गया। क्या हम भी इतने महान और शक्तिशाली राष्ट्र बन सकते हैं।

बात सुन कर कुछ विद्वान चौके। कुछ की राय में यह कल्पना और कोरा महिमा वाद था। सत्यभक्त ने कहा, 'वेदों को भारत से चुरा ले जाने और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उनके आधार पर शस्त्रास्त्र बना लेने की बात हमारे ही पोंगा पंडितों की फैलाई हुई है। हिटलर को वेद तो क्या संस्कृत का ज्ञान भी नहीं था।'

सुनकर उन्ही विद्वान से कहा कि फिर हिटलर ने हमारे स्वस्तिक को अपना राष्ट्रीय चिह्न कैसे बना लिया? सत्यभक्त ने फिर चुटकी ली, 'वह स्वस्तिक नहीं ईसाइयत के क्रासचिह्न का तांत्रिक रूप है। उसे स्वस्तिक मत मानिये। और अगर आप हिटलर को वेदों का मर्मज्ञ ही मानना चाहें तो मानिये। कम से कम उसे देवता मत मानिए। रावण भी वेदों का विद्वान था। उसने वेद भाष्य लिखे हैं फिर भी वह आसुरी भाव के कारण राक्षस कहा गया।'

सत्यभक्त ने आगे कहा कि, 'इसमें कोई संदेह नहीं है वेदों में शक्ति साधना के रहस्य छुपे हुए हैं। उनका उपयोग कर कोई भी शक्ति संपन्न बन सकता है। देवता भी और दानव भी।'

यह चर्चा चल ही रही थी कि माताजी आ गईं। उन्होंने सत्यभक्त की बात स्पष्ट सुन ली थी। वे आई थीं विद्वानों के भोजन आदि की व्यवस्था पूछने। उस संबंध में पूछने से पहले उन्होंने चर्चित प्रसंग के संदर्भ में ही प्रश्न किया, 'सुनते हैं कि दुनिया के किसी भी धर्मशास्त्र में चोरों और दुष्टों के लिए प्रार्थना नहीं है लेकिन वेदों में है। कुछ मंत्रों में चोर अपने दुष्कर्म की सफलता के लिए देवों से प्रार्थना करता है। एक मंत्र में प्रतिद्वन्द्वी के सिर के सौ टुकड़े होने की कामना की गई है। ऐसा क्यों है?'

पंडित राम संजीवन ने इसका उत्तर देने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि आर्ष वाङ्मय में सभी स्थिति और स्तर के लोगों की कामनाओं का प्रतिनिधित्व है। ईश्वर जितना हमारा है उतना ही चोर डाकू और लुटेरों का भी तो है। वे अपने देव से प्रार्थना क्यों नहीं करें? वे प्रार्थना कर सकते हैं। इसलिए उनकी भावनाओं को ऋषियों ने छंद बद्ध किया। पंडितजी के इस समाधान पर माताजी ने ही सवाल किया, 'अगर वेदमंत्र ऋषियों द्वारा की गई रचना है तो हम उसे साक्षात ईश्वर की वाणी, परमात्मा का निश्वास कैसे कहते हैं। ऋषियों के रचे हुए छंद कहने से तो यह स्थापना कमजोर होने लगती है।'

आचार्यश्री इस संवाद को चुपचाप सुन रहे थे। उन्होंने दूसरा पक्ष उद्घाटित करते हुए कहा, 'दुष्ट कर्म करने वालों की प्रार्थना को इसलिए महत्त्व दिया गया कि परमात्मा उनके चित्त में भी प्रकट होता है। उनकी वासना थोड़ी मैली हो सकती है जैसे गंदगी में दिखाई देता हुआ सूर्य का बिंब। वह बिंब भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मलीन और धुंधला होता है। उसे ध्यान में रखते हुए जल का शोधन किया जाए तो बिंब उज्ज्वल होने लगता है। इसी तरह दुष्टजनों के आत्मशोधन का उपाय किया जा सके तो वे भी अपना उद्धार करने में प्रवृत्त हो सकते हैं।' आचार्यश्री ने यह उत्तर देते हुए वहां उपस्थित विद्वानों की ओर निहारा। इस उत्तर के बाद वे पर्याप्त संतुष्ट दिखाई दे रहे थे।

वैदिक विद्वानों की यह गोष्ठी, तीन दिन तक चली। गोष्ठी से वेदभाष्यों के संबंध में विभिन्न दृष्टिकोण सामने आये। परामर्श का सार यह था कि अभी वेदों के गूढ़ और सूक्ष्म अर्थों को प्रकट नहीं किया जाए। प्रचलित भाष्य परंपरा की दो शैलियां हैं, एक सायण की और दूसरी स्वामी दयानंद की। बाकी शैलियां इन्हीं दो परंपराओं की समवर्ती हैं। सायण की परंपरा का अनुकरण करें तो देवताओं की स्तुति ही वेदों का प्रधान विषय है। स्वामी दयानंद ने वेदों में नीति, अर्थ, उद्योग, व्यवस्था और पद्धतियों का उद्घाटन किया है। यह परंपरा सायण की शैली का ही विकास है। लेकिन स्वामी दयानंद वेदों पर समग्र भाष्य नहीं लिख पाये थे। उन्होंने दिशा निर्देश ही दिया। दयानंद के बाद एक पद्धति महायोगी अरविंद ने भी विकसित की। वह पद्धति सृष्टि में विद्यमान गूढ़ तत्वों का उद्घाटन करती हुई है। आचार्यश्री को ही निश्चित करना था कि इनमें किस पद्धति का चुनाव किया जाना है।

दक्षिण में संपर्क

मथुरा आये विद्वानों से विमर्श के बाद आचार्यश्री को लगा कि उन लोगों से भी संपर्क करना चाहिए जो मथुरा नहीं आ सके हैं। उन विद्वानों से मिलने के लिए यात्रा का एक कार्यक्रम बनाया। इस यात्रा में चित्रकूट, नासिक, पुरी, मल्लिकार्जुन, धनुष्कोटि, श्रृंगेरी, कांची आदि स्थान शामिल थे। यात्रा में बीस से अधिक विद्वानों से संपर्क हुआ। उनसे संपर्क और विचार विमर्श के बाद वैदिक वाङ्मय की वर्तमान स्थिति का लगभग निश्चित अनुमान लगा।

कांची में स्वामी रंगनाथानंद एक वैदिक विद्यालय चलाते थे। उसमें सिर्फ बारह विद्यार्थी ही पढ़ रहे थे। विद्यार्थियों की संख्या कम थी लेकिन उनके विद्यालय की विद्वत समाज में अच्छी प्रतिष्ठा थी। दक्षिण भारती जिन गिने चुने व्यक्तियों को वेदों का संहिता पाठ कंठस्थ था और जो उनके गायन को विधि विधान सहित जानते थे उनमें रंगनाथानंद का नाम अग्रणी था। उन्हें न केवल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वेदमंत्रों का संहिता भाग कंठस्थ था बल्कि वे पाठ और गायन के विधिविधान पर भी अधिकार रखते थे।

स्वामी रंगनाथानंद से चर्चा के दौरान आचार्यश्री ने पूछा, 'ऋषियों के संबंध में जो विवरण मिलते हैं, उनमें विरोध क्यों है? इतनी अधिक विसंगतियां हैं कि उनका इतिवृत्त ही कहीं स्पष्ट नहीं मिलता।'

स्वामीजी का कहना था कि हमारे पूर्वजों ने इतिहास लिखने को ज्यादा महत्त्व नहीं दिया। इतिहास घटनाओं और राजवंशों के चरित वर्णन के सिवा कुछ नहीं है। हमारे पूर्वजों ने घटनाओं का इतिवृत्त लिखने के स्थान पर उनमें निहित सत्य को समझने की चेष्टा अधिक की। उस सत्य को व्यक्त करने में घटनाओं और स्थितियों का जितना उल्लेख आ गया, उतना आ गया। उन्होंने इसमें अधिक या कम की चिंता नहीं की।

लेकिन इन असंगतियों को कैसे समझा जाए कि वही वेदव्यास चारों वेदों का संकलन भी करते हैं, महाभारत भी लिखते हैं और भागवत पुराण आदि ग्रंथ भी। यही नहीं वे महाभारत में कई अवसरों पर निर्णायक स्थिति में होते हैं। क्या ये सभी व्यक्तित्व एक ही हैं? आचार्यश्री ने पूछा। उनके मन में संदेह नहीं था बल्कि वे सिर्फ तार्किक समाधान ही ढूंढ़ रहे थे।

स्वामी रंगनाथानंद ने कहा, 'शास्त्रों में उल्लेख आया है कि वेदव्यास चिरंजीव हैं। सात अमर विभूतियों में एक वे भी हैं। इसलिए उनके किसी भी अवसर पर आ जाने या उपस्थित रहने में कोई संदेह ही नहीं उठना चाहिए।'

आचार्यश्री ने कहा कि मान लिया। लेकिन विश्वामित्र एक अवसर पर गायत्री मंत्र के द्रष्टा भी है। वसिष्ठ से उनकी प्रतिस्पर्धा चलती है और वही विश्वामित्र सातवें अवतार भगवान राम को धनुर्विद्या भी सिखा रहे हैं। वेद वाणी के प्रकट होने और रामराज्य के समय में हजारों वर्षों का अंतराल है। विश्वामित्र तो चिरंजीव नहीं हैं।

स्वामी रंगनाथानंद ने इन उलझनों से बचने की सलाह दी। उनके अनुसार इन वर्णनों को इतिहास की तरह नहीं अनुभव की तरह देखना चाहिए। शास्त्रवचनों के संबंध में न तर्क किया जाए और न ही प्रश्न उठाये जाएं। आचार्यश्री को उनकी यह बात गले नहीं उतरी। उन्होंने बातचीत को वहीं विराम दिया और उनसे वेदमंत्रों का पाठ सुनने लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्यश्री वहां तीन दिन रुके। इस अवधि में उन्होंने अब तक की यात्रा में मिल सके मंत्र भाग की शुद्धता के संबंध में स्वामी जी से परामर्श किया। मंत्रों के स्वरूप पर विमर्श के साथ भागवत के इस अंश पर भी लंबी चर्चा हुई जिसमें चारों वेदों के विषयों पर सूक्ष्म निर्देश दिया गया है। होता, उद्गाता, अध्वर्यु और ब्रह्मा के रूप में चार ऋत्विजों की आवश्यकता, उनके विशिष्ट दायित्व और पारिभाषिक पदों के अर्थ में समय अनुसार आये परिवर्तनों पर दोनों विद्वानों में चर्चा चलती रही।

तंत्र पर आधारित तीर्थ

तीन दिन के प्रवास में आचार्यश्री अंतिम दिन कामांक्षी देवी के मंदिर गये। यों वे पहले दिन भी गये थे लेकिन इस बार के दर्शन में ज्यादा समय लगा। मंदिर में घूमते हुए उन्हें इस शक्तिपीठ की स्थिति का बार बार अनुभव हो रहा था। उल्लेखनीय है कि कामाक्षी या कामकोटि में जितने भी मंदिर और देवालय हैं सबके मुख कामाक्षी मंदिर की ओर ही हैं। उन मंदिरों के विग्रहों की शोभायात्रा जब भी निकलती है तब वे शक्तिपीठ की प्रदक्षिणा करते हुए घुमाये जाते हैं। इस मंदिर के संबंध में यह भी विख्यात है कि उसकी स्थापना आचार्य शंकर ने की थी। मंदिर के वास्तु में योग और तंत्र साधना का समान रूप से ध्यान रखा गया था। लोगों की मान्यता है कि श्रद्धा निष्ठा से मंदिर में दर्शन आराधन के लिए जाने वालों को निश्चित रूप से आत्मिक लाभ होता है। लाभ तो सभी देवस्थानों पर होता है। यहाँ के संबंध में विख्यात है कि आत्मिक स्थिति में परिवर्तन तुरंत अनुभव होने लगते हैं।

आचार्यश्री कामाक्षी मंदिर से निकल कर दक्षिण पूर्व में स्थित वामन मंदिर के पास आये। वहां विष्णु के वामन अवतार की लगभग पंद्रह फुट ऊंची प्रतिमा थी। वामन का एक पांव उठा हुआ था। वह पांव तीनों लोकों को मापने के लिए उठा रखा था। उसके नीचे राजा बलि का मस्तक था। आचार्यश्री मंदिर में गये तो पुजारी ने एक लंबा बांस ऊंचा किया। बांस के सिर पर मशाल जल रही थी। उस मशाल की रोशनी में ही विग्रह के श्रीमुख के दर्शन किए जा सकते थे। आचार्यश्री उस विग्रह के सामने पहुँचे ही थे कि वहां पहले से उपस्थित एक साध्वी ने उनकी ओर परिचित भाव से देखा। आचार्यश्री ने विशेष ध्यान नहीं दिया। वामन के दर्शन कर मंदिर से बाहर आ रहे थे कि साध्वी ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नाम लेकर पुकारा। आचार्यश्री रुक गये तो वह साध्वी सामने आई। कहने लगी कि पहले कभी हमारी भेंट नहीं हुई लेकिन मैं आपको भलीभांति जानती हूँ।

आचार्यश्री ने उस साध्वी को प्रणाम किया। उसने अपना परिचय दिया। अपना नाम अमृता बताया और कहा कि पालार नदी के तट पर एक योगी आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैं उन्हीं का संदेश लेकर यहाँ आई हूं। इस सूचना पर आचार्यश्री थोड़ा चौंके। वे कांची में किसी योगी को नहीं जानते थे। उनकी यात्रा का कार्यक्रम किसी को मालूम नहीं था। वैदिक वांङ्मय के अनुसंधान के लिए वे नितांत वैयक्तिक रूप से निकले थे। अपने आने की सूचना पर उन्हें आश्चर्य नहीं हुआ। योगीजन अपनी प्रतिभा से किसी के भी आगमन और स्थिति का सहज अनुमान लगा लेते हैं। उन्होंने साध्वी से पूछा, 'यदि उन्होंने मुझे बुलाने के लिए भेजा है तो यह भी बताइए देवी कि उनके आमंत्रण का अभिप्राय क्या है?'

'अभिप्राय मुझे पता नहीं है।' अमृता ने कहा, 'वे मेरे गुरुदेव हैं। मुझे सिर्फ इतना ही मालूम है कि आप किसी महत्कार्य में लगे हैं और वे उस काम में आपका हाथ बटाना चाहते हैं।' आचार्यश्री ने अमृता की बात पर ज्यादा सोच विचार नहीं किया। उन्होंने चलने की हामी भर दी। अमृता ने यह भी नहीं पूछा कि कब चलना चाहेंगे। अपने साथ चलने का संकेत भी नहीं दिया और उस जगह से चल दी। आचार्यश्री भी उसके साथ चल दिए।

करीब ढाई मील चलने के बाद उन्होंने देखा कि नदी के किनारे तीन कुटियाएं बनी हुई हैं। कुटियाओं के आसपास कुछ हरियाली उगाई हुई है। कांची में पानी की कमी थी। अभी ज्यादा गर्मी पड़ना शुरू नहीं हुई थी लेकिन कुंओं का पानी सूखने लगा था। पालना नदी में भी घुटनों घुटनों पानी था। तीन कुटियाओं और एक छप्पर वाले उस आश्रम में पांच सात व्यक्ति और थे। आश्रम में भांति-भांति के पक्षी कलरव कर रहे थे।

पीपल के वृक्ष के नीचे बने एक चबूतरे पर बैठे योगी को देखकर आचार्यश्री ने प्रणाम किया। योगी ने प्रणाम के उत्तर में स्वयं भी प्रणाम किया और आसन छोड़कर उठ गये। कुशलक्षेम पूछने के बाद यहां बुलाने का मंतव्य, आचार्यश्री की इस यात्रा के उद्देश्य और वेदों के संबंध में अब तक किए गए प्रयासों पर चर्चा होती रही।

उन योगी का नाम श्रीमन था। उन्होंने स्वयं नहीं बताया था। अमृता या आश्रम में विद्यमान किसी अन्य शिष्य से भी नहीं मालूम हुआ। जिस वृक्ष के नीचे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वे बैठे थे और आचार्यश्री से बात कर रहे थे, वहीं एक तोता उड़ता हुआ आया था। उसने चहकते हुए कहा था, 'प्रणाम श्रीमन। मेरे प्रणाम स्वीकार करें अतिथि।'

तोते को इस तरह अभिवादन करते देख आचार्यश्री को अच्छा लगा था। उन्होंने पूछा कि तोता क्या पाला हुआ है। उन योगी ने उत्तर दिया कि सभी पक्षी प्रेम से आमंत्रित हैं। उसी नाते यहां आए हैं। हमने किसी भी पक्षी या पशु को पाला या किन्हीं बंधनों में बांधा नहीं है। आचार्यश्री ने कहा, 'इतना शिष्ट शुक पहले कभी नहीं देखा। बिना अभ्यास कराये वह कैसे सीख गया। आश्चर्य है।'

यहाँ आने वाले साधकों को देखकर यह तोता ही नहीं और पक्षी भी शिष्ट और विनम्र व्यवहार करते हैं। उन योगी ने कहा। फिर वे बोले, नए आगंतुकों को मेरा परिचय तो ये पक्षी ही दे देते हैं। योगी के इस कथन से आचार्यश्री को पता लगा कि उनका नाम श्रीमन है। उन्होने पूछ कर पुष्टि भी की। योगी श्रीमन ने उन्हें अपनी और साधकों की कुटिया दिखाई। आसपास का क्षेत्र घुमाया और इस बीच चर्चाएं भी करते रहे। दो ढाई घंटे तक भ्रमण और वार्तालाप चलते रहने के बाद श्रीमन ने आचार्यश्री को अपनी कुटिया में बिठाया।

इस पूरे समय में अमृता एकाध बार ही दिखाई दी थी। अपने काम में व्यस्त थी। पेड़ पौधों को सींच रही थी और वहां विचर रहे पशुओं को चारा पानी दे रही थी। बिना पूछे ही श्रीमन ने उसके बारे में बताया कि वह एक सिद्ध साधक की पुत्री है। उसके पिता गृहस्थ योगी थे। अमृता को जन्म देने के बाद उसकी मां चल बसी। पिता ने ही उसका पालन किया। यह आश्रम या साधना स्थली उन्हीं की विकसित की हुई है। श्रीमन इस आश्रम में आये तो अमृता को जीवन संगिनी बनाने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने विवाह कर लिया। समाज के सामने अब भी पति पत्नी ही हैं लेकिन उनका दाम्पत्य सामान्य पति पत्नियों की तरह नहीं है। दोनों ने ब्रह्मचर्य से रहते हुए वैदिक धर्म और साधना परंपरा की आराधना का संकल्प लिया। अपने आपको इसी के लिए समर्पित कर दिया।

योगी श्रीमन ने यह जानकारी कुटिया के भीतर बैठ कर ही दी थी। आचार्यश्री अपने बारे में बताने लगे तो उन्होने कहा कि यह आवश्यक नहीं है। उस बारे में पहले से ही सब मालुम है। श्रीमन ने लकड़ी के संदूक में रखी एक पुस्तक निकाली। पुस्तक काफी पुरानी थी। उसके पन्ने जीर्ण हो चुके थे। वह सहेज कर रखी हुई थी। उसके पन्ने अलग अलग थे। उन पन्नों को पलटते हुए श्रीमन एक स्थान पर रुके। वहां से आठ दस पन्ने निकाले और उन्हें पढ़ने के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिए कहा। इन पत्रों को आचार्यश्री ने पढ़ना शुरू किया तो विस्मित हो गए। संक्षेप में उनका अब तक का इतिवृत्त लिखा हुआ था। उसमें आचार्यश्री के यहां आने की बात भी थी। आचार्यश्री ने पूछा कि आगे के बारे में कुछ क्यों नहीं लिखा हुआ है। योगी ने कहा कि भविष्य कई बातों पर निर्भर करता है। वह ब्रह्मा के सिवा किसी को नहीं मालूम। फिर आप तो अपने गुरु के हाथों में यंत्र मात्र हैं। जैसा उपयुक्त समझेंगे वह घुमाएंगे।

धरोहर सौंपी

श्रीमन ने बताया कि पिछले बारह वर्ष से वे यह आश्रम छोड़कर कहीं नहीं गये हैं। इसकी आवश्यकता भी नहीं हुई। यहां आने वाले साधक सब व्यवस्थाएं कर जाते हैं। उन साधकों की देखभाल के अलावा बाहर से थोड़ी बहुत आवश्यक लगने वाली व्यवस्था अमृता ही कर लेती है। श्रीमन और आचार्यश्री दक्षिण भारत की आर्ष गरिमा और सांस्कृतिक वैभव के अलावा दूसरे विषयों पर देर तक चर्चा करते रहें। चलते समय श्रीमन ने उन्हें वेदों के संहिता भाग के कुछ अंश भेंट किए। भेंट करते हुए उन्होंने कहा कि गुरुदेव ने उपयुक्त व्यक्ति के आने पर इन्हें सौंप देने के लिए कहा था। आप इधर आए तो संकेत मिलने लगे और अपने गुरु के सौंपे दायित्व को इस तरह पूरा कर दिया।

स्वामी रंगनाथानंद से हुई चर्चा का प्रसंग भी चला। योगी श्रीमन ने उस रहस्य को जानने की उत्कंठा जताई। आचार्यश्री ने बताया कि कामकोटि मठ आते हुए इसका समाधान हो गया। वेदव्यास, विश्वामित्र, वसिष्ठ आदि नाम किन्हीं व्यक्तियों के नहीं हैं। ये ऋषिसत्ताओं के लिए प्रयुक्त किए गए संबोधन हैं। इनके रहस्य को साधना में गति होते हुए ही समझा जा सकता है। उन्होंने कहा कि वेदव्यास सहित सात विभूतियों के चिरंजीव होने का उल्लेख आता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे शरीर से जीवित है। शरीर मरण धर्मा है। उसका जन्म हुआ तो मृत्यु भी निश्चित है। राम, कृष्ण और बुद्ध जैसी अवतारी सत्ताएं अमर नहीं हो सकीं तो वेदव्यास, हनुमान, विभीषण, अश्वत्थामा आदि शरीर से अमर कैसे हो सके हैं। उनके अमर होने का भाव यही है कि वे जिस आध्यात्मिक सत्य का प्रतिनिधित्व करते हैं उसे व्यक्त करने वाली प्रवृत्तियां निरंतर चलती रहेंगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मथुरा में वेदों के प्रकाशन की व्यवस्था बन गई थी। अगस्त १९५९ तक ऋग्वेद के तीन भाग और यजुर्वेद-सामवेद के एक-एक भाग प्रकाशित हो गये थे। वैदिक विद्वानों से विमर्श के लिए आचार्यश्री बीच-बीच में प्रवास पर जाते थे। मथुरा में रहते तक उनका अधिकांश समय इस वाङ्मय के संकलन संपादन में ही व्यतीत होता। पत्रिकाओं और साहित्य के संपादन का दायित्व माताजी निभाने लगी थीं। पत्रिका में संपादक के रूप में उनका नाम देने का निश्चय हुआ। यह बात छिड़ी ही थी कि माताजी ने संकोच किया। उन्होंने कहा कि साहब आपके सामने मुझे अपने आपको कहीं भी व्यक्त नहीं करना है। मुझे आपके शिष्य अनुयायी की तरह ही काम करने दीजिए। नाम से दूर ही रखिए।

'यह क्यों सोचती हो कि इससे ख्याति मिलेगी,' आचार्यश्री ने विनोद किया। उस समय वैदिक वांड्मय के काम में लगे कुछ कार्यकर्त्ता भी वहां थे। आचार्यश्री ने कहा, 'संपादक को प्रसिद्धि नहीं मिलती। वह तो अखबार में जो कुछ होता है उसके लिए जिम्मेदार है। पत्रिका में कभी कोई गलती हुई तो उसके लिए किसी को कोर्ट कचहरी तो जाना ही पड़ेगा न।'

विनोद में छुपे निर्देश को माताजी ने समझा और उन्होंने अपने गुरुदेव की व्यवस्था में किसी भी तरह का संकोच नहीं करने का निश्चय कर लिया। उसी अवसर पर वाराणसी के पंडित भुवन मोहन के पास वेदों का अध्ययन करने गये किशोरीदास आये। तपोभूमि में वे मुश्किल से दो घंटा पहले आये थे। वहां सामान रखकर तुरंत आचार्यश्री के पास आ गये थे। उन्होंने बताया कि पंडित भुवन मोहन दीक्षा लिए बिना वेद नहीं पढ़ाएंगे। उन्होंने पढ़े हुए वेद को कहीं प्रकट नहीं करने का प्रतिबंध मानने के लिए भी कहा है। उस स्थिति में अध्ययन की कोई उपयोगिता नहीं रह जाएगी।

आचार्यश्री ने कहा कि तुम उन्हें गुरु मानकर अध्ययन शुरू कर दो। उन्हें गुरु मान लेने से तुम्हारे विकास में बाधा नहीं आएगी। दत्तात्रेय ने भी तो चौबीस गुरु बनाये थे। इस समय वैदिक विद्याओं में प्रवेश और गति आवश्यक है। आचार्यश्री के निर्देश पर किशोरीदास ने पूछा कि उनके लगाये प्रतिबंध का क्या होगा? प्रतिबंध तोड़ा तो वह अपराध नहीं होगा क्या?

'इतनी दूर की क्यों सोचते हो? अभी वेद पढ़ो।' आचार्यश्री ने कहा। उन्होंने किशोरी की ओर देखा। वह उदास सा लग रहा था। आचार्यश्री ने उसको उदास देखा तो कहने लगे कि अभी से अपराध बोध हो रहा है तो एक बात

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ध्यान रखो। कुमारिल भट्ट ने वैदिक धर्म की रक्षा के लिए बौद्ध विहार में बौद्ध भिक्षु से शिक्षा ली थी। बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन किया था। उस अध्ययन के आधार पर ही बौद्ध मत में आ गई जड़ता और मतवाद का खंडन किया था। फिर गुरु के प्रति हुए अपराध का प्रायश्चित भी किया थ। बहुत चिंतित हो तो अपने लिए भी ऐसा मार्ग सोच सकते हो। लेकिन निश्चिंत रहो, तुम्हारे सामने किसी प्रकार की दुविधा आएगी नहीं।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सिद्ध लोक में प्रवेश

अक्टूबर १९५९ से अखंड ज्योति और साहित्य के संपादन का दायित्व माताजी संभालने लगीं थी। यह दायित्व पूरी तरह वही निभा रहीं थीं। इस बीच आचार्यश्री दक्षिण भारत का एक दौरा करके आ गए थे। आचार्यश्री अभी कुछ महीने मथुरा ही थे लेकिन उन्होंने व्यवस्था से अपने आपको अलग कर लिया था। अधिक समय वे आर्ष साहित्य के अनुवाद, संपादन और प्रकाशन की व्यवस्था में लगा रहे थे। १९६० की वसंत पंचमी से पहले की कोई तिथि थी। भूदान आंदोलन के प्रणेता और पूरे देश की पैदल यात्रा पर निकले आचार्य विनोबा भावे का एक प्रतिनिधि आचार्यश्री के पास आया। वह संदेश लाया था कि विनोबाजी उनसे भेंट करना चाहते हैं। वे पदयात्रा पर हैं इसलिए स्वयं चलकर मथुरा तक नहीं आ सकते। आप ही उनसे मिलने चलें तो बेहतर होगा।

विनोबा जी उस समय हिमालय की यात्रा संपन्न कर पंजाब में गये थे। पंजाब की यात्रा वे पहले भी कर चुके थे। यह दोबारा प्रवेश था। यहां से उत्तरप्रदेश होते हुए वे मध्यप्रदेश के लिए निकलने वाले थे। विनोबा जब कश्मीर में थे तभी उन्हें मशहूर डाकू मानसिंह के पुत्र तहसीलदार सिंह का एक पत्र मिला था। तहसीलदार सिंह तब इलाहाबाद की नैनी जेल में था। उसे फांसी की सजा सुनाई जा चुकी थी। तहसीलदार सिंह ने किसी के हाथों विनोबा तक यह पत्र पहुँचाया था कि वह मरने से पहले विनोबा के दर्शन करना चाहता है। विनोबा ने अपने प्रतिनिधि यदुनाथसिंह को बातचीत के लिए भेजा। यदुनाथ सिंह नैनी गये। वहाँ और डाकुओं से भेंट हुई। उनसे मिलने के बाद यदुनाथ चंबल के बीहड़ों में गये। वहां डाकुओं ने उनके सामने प्रस्ताव रखा कि विनोबा यदि इस क्षेत्र की यात्रा करें तो कई बागी (डाकू) आत्म-समर्पण कर सकते हैं।

नैनी और चंबल की यात्रा कर लौटे यदुनाथ सिंह से पूरा वृत्तांत सुना और विनोबा इस की संभावनाओं पर विचार करने लगे। उन्हें हृदय परिवर्तन के मंत्र से डाकू समस्या का समाधान दिखाई देने लगा। इसी क्रम में वे समाज के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रहे मनस्वी व्यक्तियों से मिल रहे थे। उनसे विचार विमर्श भी करना चाहते थे। विनोबाजी उत्तरप्रदेश होते हुए मध्यप्रदेश की यात्रा पर जाने वाले थे। उत्तर प्रदेश की यात्रा में मथुरा और आगरा भी उनकी सूची में था। विनोबाजी को यह पता लग गया था कि आचार्यश्री वसंत पंचमी के बाद अज्ञातवास पर जाने वाले हैं, इसलिए उन्होंने पंजाब में ही भेंट का कार्यक्रम बना लिया। आचार्यश्री को बुलाने के लिए अपना प्रतिनिधि भेज दिया।

आचार्यश्री ने विनोबा के निमंत्रण को तुरंत स्वीकार कर लिया। यह भी नहीं पूछा कि भेंट में किस विषय पर चर्चा होनी है। दिसम्बर अंत की किसी तारीख को वे करनाल के लिए रवाना हुए। यह इलाका इन दिनों हरयाणा में आता है लेकिन तब यह पंजाब का ही हिस्सा था। विनोबा इसी क्षेत्र की पदयात्रा कर रहे थे। आचार्यश्री से विनोबा की भेंट रास्ते में ही हुई। वे पिछला पड़ाव रीठापुर छोड़ चुके थे और करनाल से कुछ ही मील दूर किसी गांव की यात्रा पर थे। आचार्यश्री पदयात्रा में शामिल हो गये। दोपहर करीब ग्यारह बजे बाबा ने एक स्थान पर पड़ाव लगाया। सामूहिक प्रार्थना के बाद वे पंचायत घर के एक कमरे में चले गये। यह उनके विश्राम का समय था। उन्होंने आचार्यश्री को भी उसी कक्ष में बुलाया और चर्चा करने लगे। आचार्यश्री ने बहुतेरा कहा कि आप आराम करें, बाद में बात हो जाएगी। बाबा कहने लगे कि आराम का अर्थ शरीर को थोड़ा ढीला छोड़ देना है, सो जाना नहीं और अपने प्रिय विषयों पर चर्चा करने से मन मस्तिष्क को भी आराम मिलता है। इससे हम थकते नहीं हैं।

बातचीत शुरू हुई तो विनोबा भावे यदुनाथ सिंह की चंबल यात्रा, वहां के डाकुओं की पेशकश और उस क्षेत्र के इतिहास भूगोल की चर्चा करने लगे। आचार्यश्री ने भी बीच में अपनी बात कही। विनोबा कह रहे थे कि डाकुओं को सुधरने का अवसर देना चाहिए। वे हथियार रखते हैं और नेक चलनी का भरोसा देते हैं तो अब तक के अपराधों के लिए उन्हें मामूली दंड दिया जाए। जिनके खिलाफ बटमारी और छोटी मोटी डकैती के अपराध हैं, उन्हें माफ कर दिया जाए।

आचार्यश्री को संदेह था कि राज्य सरकार या प्रशासन इस तरह क्षमादान करेगा। विनोबा ने कहा कि सरकार और प्रशासन से निवेदन किया जा सकता था। उनका कहना था कि कोई भी व्यक्ति जन्म से डाकू नहीं होता। यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो शोषण, कंजूसी, क्रूरता और संवेदनहीनता का परिणाम है। यदि हम डाकुओं के साथ प्रेम का व्यवहार करें, उनके प्रति दया और क्षमा का भाव रखें और सामाजिक जीवन में समरस होने के लिए तैयार करें तो समस्या आसानी से हल हो सकती है। इस चर्चा में आचार्यश्री ने क्षमादान से असहमति ज़ताई। उनका कहना था कि जिसने अपराध किया है, उसे दंड मिलना ही चाहिए। यह भी ठीक है कि दंड नहीं चाहने वाला व्यक्ति स्वयं प्रायश्चित करे लेकिन समाज के प्रति अपराध करने वाले को क्षमा नहीं किया जाए।।

उनका कहना था कि अपराध को क्षमा कर देने से एक गलत परिपाटी जन्म लेगी। माफी मांगकर छूट जाएंगे, यह सोचकर दूसरे लोग अपराध में भी प्रवृत्त हो सकते हैं। विनोबा का कहना था कि आप आचार्य हैं, आपको विदित होगा कि प्राचीनकाल में भी हृदय परिवर्तन के बाद क्षमा का विधान रहा था। बाल्मीकि और अंगुलिमाल इसके सबसे बड़े उदाहरण हैं।

क्षमादान का दोष

आचार्यश्री ने कहा कि वे घटनाएँ अपवाद थीं। इसके अतिरिक्त उन्होंने बाद में घनघोर प्रायश्चित भी किया था। डाकुओं को क्षमा के बाद हम तो उन्हें सम्मानित जीवन का अवसर दे रहे प्रतीत होते हैं। सुनकर विनोबा चुप रहे। उन्होंने बताया कि सम्पूर्णानंद जी और (कैलाशनाथ) काटजू ने इस विचार को बहुत पसंद किया है।

संपूर्णानंद तब उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री थे और कैलाशनाथ काटजू मध्यप्रदेश के। दस्यु समस्या मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश दोनों प्रांतों की समस्या थी। दोनों को लग रहा था कि विनोबा के प्रयत्नों से इस समस्या के समाधान में कुछ सहायता ही मिलेगी। पूरी तरह हल नहीं हुई तो कुछ अंकुश तो लगेगा ही। विनोबा ने दूसरे राजनेताओं के मत से भी आचार्यश्री को अवगत कराया। आचार्यश्री ने कहा कि भगवान करे इन उद्देश्यों की प्राप्ति हो। आपके प्रयत्न महान हैं। संत महात्माओं के स्वभाव के अनुरूप ही हैं। लेकिन इन प्रयत्नों की सफलता में कुछ खतरे भी हैं। क्षमा मिल जाने के बाद डाकू रहेंगे तो ग्राम समाज में ही। उनका रौब दाब भी रहेगा। आपको क्या यह नहीं लगता कि न्यायिक प्रक्रिया पूरी किए बिना वे सामान्य नागरिक की तरह स्वीकार कर लिए गए तो भविष्य में उनका राजनैतिक उपयोग भी हो सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पूछने पर आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि राजनैतिक उपयोग से आशय चुनाव आदि के समय बागियों के रौब दाब का इस्तेमाल है। लोगों को अपने पक्ष में वोट डलवाने के लिए उनकी स्थिति का उपयोग किया जा सकता है। विनोबा ने इस आशंका को सही माना। लेकिन मैं इस आधार पर क्षमादान को स्थगित करने के पक्ष में नहीं हूँ। साथ ही यह भी कहा कि किसी भी सत्कार्य के साथ कुछ न कुछ अनिष्ट आशंकाएँ भी जुड़ी ही होती हैं। आचार्यश्री ने उनके आत्मसमर्पण अभियान के लिए एक बार फिर अपनी शुभकामनाएं दीं। विचार विमर्श का क्रम समाप्त हुआ। उस क्रम को पूरा करने से पहले विनोबा ने बागियों के लिए दंड और प्रायश्चित का समन्वित सूत्र निकाला।

आचार्यश्री से देर तक वे गायत्री परिवार, सहस्त्रकुंडीय महायज्ञ, आश्रम और वेद उपनिषदों के अनुवाद प्रकाशन आदि कामों के बारे में चर्चा करते रहे। उन्होंने कहा भी कि वेदादि शास्त्र पूरे हो जाएं तो उनका एक सैट मेरे लिए सुरक्षित रखियेगा। उसकी पेशगी अभी रख लें। कहते हुए उन्होंने अपने एक कार्यकर्त्ता को बुलाया। उससे इकावन रुपए लाने के लिए कहा। आचार्यश्री ने कहा इसकी आवश्यकता नहीं है। वेद उपनिषदों की प्रति हम लोग अपनी ओर से आपको भेंट करेंगे। उसे गायत्री माता के प्रसाद के रूप में स्वीकार कीजिएगा। आचार्यश्री उस यात्रा में कुछ देर साथ रहे फिर जिस तरह आये थे, उसी तरह मथुरा के लिए वापस रवाना हो गए।

आचार्यश्री ने अज्ञातवास के लिए जिस तिथि को प्रस्थान किया उसकी घोषणा नहीं की थी। मथुरा से रवाना होने की बात कई लोगों को पता थी। उसके बाद हरिद्वार ऋषिकेश तक की सूचना भी संबंधित परिजनों को प्राय: थी ही। उसे हिमालय की यात्रा की पूर्व पीठिका कह सकते हैं लेकिन अज्ञातवास में उसे भी नहीं गिना जाता। यात्रा आरंभ होती है ऋषिकेश से आगे बढ़ने पर। उसके बाद लोगों को उतना ही पता है जितना आचार्यश्री ने बताया। आचार्यश्री के साधक परिकर का इससे आगे संपर्क नहीं रह गया था। जानकारी भी उतनी ही मिलती थी जितनी आचार्यश्री ने स्वयं बताई।

आमतौर पर लोग गंगोत्री भी होते हुए यमुनोत्री की यात्रा करते हैं। आचार्यश्री ने पहले यमुनोत्री की यात्रा की। उसके बाद उत्तरकाशी होते हुए गंगोत्री, फिर गोमुख और उसके बाद हिमालय के हृदय प्रदेश में जाने का क्रम बनाया। उन्हें गोमुख तक की यात्रा का ही मार्ग मालूम था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यमुनोत्तरी के उस क्षेत्र में एक छोटा सा झरना है। उस झरने का जल पर्याप्त शीतल है। उज्ज्वल हिम के रंग का वह जल गंगा की उपस्थिति दर्शाता है। इस झरने के बारे में किंवदन्ती है कि महर्षि असित के लिए गंगा ने अपने आपको स्वयं यहां प्रकट किया था। अति प्राचीन काल में महर्षि असित यहां, यमुनोत्तरी में आश्रम बनाकर रहते थे। वे प्रतिदिन स्नान के लिए गंगोत्री जाते। स्नान के बाद वापस यहां आश्रम में आ जाते और शेष दिन पूजा आराधना करते रहते। यमुनोत्तरी से गंगोत्री की दूरी करीब चालीस किलोमीटर दूर है। इतनी दूर आने और जाने की बात पर किसी को सहसा विश्वास नहीं भी हो सकता है। लेकिन कहते है कि असित ऋषि प्रतिदिन इतनी दूर आते और वापस जाते थे। संभव है उन्होंने कोई छोटा रास्ता तलाश रखा हो कि उस कारण ज्यादा देर नहीं होती हो।

यमुनोत्री में गंगाजल

यमुनोत्तरी में पूजा पाठ कर रहे एक स्वामी योगानंद ने इस अंतर्कथा का खुलासा किया। कथा के अनुसार महर्षि असित वृद्ध हो गये तो इतनी दूर आना जाना उनके लिए कठिन हो गया। उन्हें आने में कठिनाई होते देख गंगा ने स्वयं अपने आपको यहां प्रकट कर दिया। गंगा के उज्ज्वल पानी का वह झरना आज भी बह रहा है। झरने में स्नान कर रहे कुछ लोगों ने इस कथा पर संदेह किया। योगानंद ने उन्हें समझाया कि तप से सब कुछ संभव है बच्चा। निष्ठापूर्वक आराधना की जाए तो आराध्य अपने नियम बदल सकता है। पचास साठ किलोमीटर आने जाने की बात पर भी योगानंद ने समझाया कि पंद्रह बीस किलोमीटर तो आज भी लोग आसानी से चल सकते हैं। यातायात के साधन सुलभ हो जाने के बाद तथा जीवन शैली बदल जाने के कारण भी लोगों की चलने फिरने की आदत बदली है। भविष्य में लोग पांच सात किलोमीटर भी शायद ही चल पाएं।

आचार्यश्री ने इस चर्चा में एक स्पष्टीकरण और किया। उन्होंने कहा कि चित्रकूट, मंदाकिनी और कामदगिरी की यात्रा करें तो देखेंगे कि भगवान राम जहां विश्राम करते थे, सीता रसोई वहां से आठ दस मील दूर है। स्फटिक शिला भी इतनी ही दूर। मीलों और कोसों दूर तक चलने का अभ्यास प्राचीनकाल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में रहा है। अब भी गांवों में या आदिवासी इलाकों में लोग मीलों पैदल चलते ही हैं।

यमुनोत्तरी में जगह जगह गरम और ठंडे पानी के कुंड हैं। कुछ कुंडों का पानी इतना गरम है कि लोग चावल, आलू आदि कपड़े में बांधकर उनमें डाल देते हैं और कुछ देर बाद निकालते हैं तो वे पके हुए मिलते हैं। कालिंदीगिरी से पिघल कर गिरता हुआ जल कई धाराओं में गिरता है। कालिंद पर्वत से निकलने के कारण ही यमुना को कालिंदी कहते हैं। पानी बहुत ठंडा है। अप्रैल-मई के महीने में भी वहां इतनी ज्यादा सर्दी थी कि झरनों का पानी कई बार जमता और पिघलता था। यमुनोतरी का क्षेत्र बहुत संकीर्ण है। शिखर पर भी वह चारों ओर की ऊंचाई से इस तरह घिरा हुआ है कि कोई बड़ा भवन नहीं बनाया जा सकता। यमुना का मंदिर भी बहुत छोटा बना हुआ है। वहां स्नान, पूजा करने के बाद आचार्यश्री ने उत्तरकाशी की राह पकड़ी।

उत्तरकाशी से डोडी, मनेली, गंगनानी, मरवाड़ी, सुक्की, हरसिल, चराली और भैरवघाटी होते हुए गंगोत्री तक की यात्रा भी काफी रोमांचक थी। आचार्यश्री इन यात्राओं का वृत्तांत डायरी के रूप में लिख रहे थे। यथा अवसर उन्होंने लिखकर माताजी के पास भी भेजा। ये अनुभव बाद में 'सुनसान के सहचर' शीर्षक से पुस्तक रूप में भी प्रकाशित हुए। गोमुख तक की यात्रा में प्राकृतिक कठिनाइयां ज्यादा थी। निपट प्रकृति के सान्निध्य में संपन्न होने वाली इस यात्रा में जो कष्टकर अनुभव हुए उनमें पीली मक्खियों का हमला विकट था।

सुक्की चट्टी से थोड़ा आगे बढ़े होंगे कि सेवार के पेड़ों पर भिनभिनाती पीली मक्खियां टूट पड़ी। आचार्यश्री के साथ यात्रियों का एक दल था। दल में आठ दस सदस्य थे। मक्खियां बुरी तरह यात्रियों के शरीर से चिपट गईं। इस बुरी तरह की छुड़ाए नहीं छूटती थीं। हाथ से और कपड़ों से उन्हें हटाने, भगाने की कोशिश की लेकिन कोई असर नहीं हुआ। बचाव के लिए खुद भागने का रास्ता अपनाया। गिरते पड़ते आधा मील भागे तब कहीं उनकी पहुंच से दूर निकले। पीली मक्खियों ने यात्रियों को जहां तहां डस लिया था। उस कारण सूजन आ गई थी। कई दिन तक दर्द होता रहा।

रास्ते में यात्री मिलते रहे। कुछ आगे निकल जाते, कुछ पीछे छूट जाते। गंगोत्री तक पहुँचते हुए सिर्फ छह यात्री रह गये थे। अगले दिन भोजवासा होते हुए गोमुख की यात्रा पर निकलना था। छहों यात्रियों के मन में अगले पड़ावों को लेकर जबर्दस्त कौतूहल था। उस आतुर कौतूहल के चलते वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भोजवासा में विद्यमान निसर्ग के वैभव को अनदेखा सा कर रहे थे। आचार्यश्री ने अपनी डायरी में लिखा, 'सामने पर्वत पर दृष्टि डाली तो ऐसा लगा मानो हिमगिरि स्वयं अपने हाथों भगवान शंकर को जल का अभिषेक करता हुआ पूजा कर रहा है। दृश्य बड़ा ही अलौकिक था। बहुत ऊपर से एक पतली सी जलधारा नीचे गिर रही थी। नीचे प्रकृति के निर्मित बड़े शिवलिंग थे, धारा उन्हीं पर गिर रही थी। सूर्य की किरणें उन छींटों पर पड़ कर उन्हें सात रंगों के इंद्रधनुष जैसा बना देती थी। लगता था साक्षात शिव विराजमान हैं। उनके शीश पर आसपास से गंगा गिर रही है और देवता सात रंग के पुष्पों की वर्षा कर रहे हैं। दृश्य इतना मोहक था कि देखते हुए मन नहीं अघाता था। उस अलौकिक दृश्य को तब तक वैसे ही देखता रहा जब तक कि अंधेरे ने पटाक्षेप नहीं कर दिया।

गंगोतरी तक रास्ता आराम से कट गया। पथरीली सड़कें और बर्फीले माहौल के कारण होने वाली सामान्य कठिनाइयों के अलावा यात्रा सुविधा से ही हो गई। भटवाड़ी अथवा भास्कर प्रयाग के आगे का वर्णन आचार्यश्री ने अपनी डायरी में इस तरह लिखा है, 'सात-पांच की भीड़ में हंसते बोलते आसानी से रास्ता कट जाता है पर अकेले चलना बहुत कठिन है। इस कठिनाई में मील के पत्थर बहुत काम के साबित होते हैं। भटवाड़ी चट्टी से गंगोत्री तक की यात्रा के बीच मील के पत्थर तो नहीं गड़े थे पर पहाड़ों की दीवार पर सफेदी पोतकर लाल अक्षरों से जहां तहां संकेत जरूर लिखे हुए थे। जैसे एक स्थान पर लिखा था २५/७, इसका अर्थ है कि आप धरासू से २५ मील ७ फर्लांग आ गए हैं। पिछली चट्टी पर कौन सा मील आगे पड़ेगा यह जानकारी नक्शे के आधार पर थी ही। उस आधार पर मंजिल का पता चलता रहता था।'

भगीरथ शिला पर तप

समुद्र से दस हजार फुट की ऊंचाई पर गंगोत्री में ज्यादा रुकना नहीं हुआ। लोग प्राय: यहीं से वापस चले जाते हैं। अठारह मील आगे गोमुख जाने का साहस उन दिनों हर कोई नहीं जुटा पाता था। इसलिए यहां करीब चालीस फुट चौड़ी धारा में स्नान कर, मंदिर में दर्शन कर और गंगाजल लेकर वापस चले जाते हैं। देवदारू और चीड़ के वृक्षों से घिरी गंगा की धारा मुश्किल से तीन फुट गहरी है। उसी में स्नान आचमन कर आचार्यश्री ने गोमुख की दिशा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पकड़ी। अभी तक साथ चल रहे यात्री यहीं से वापस चले गये। उन्होंने सूर्यकुंड, विष्णुकुंड और ब्रह्मकुंड आदि तक आचार्यश्री का साथ दिया। भगीरथ शिला पर पिंडदान किया। कहते हैं कि इसी शिला पर भगीरथ ने तप किया था। उनके तप से प्रसन्न होकर गंगा स्वर्ग से उतर कर पृथ्वी पर आईं थीं। जिस स्थान पर उसका अवतरण हुआ वह गौरीकुंड के नाम से जाना जाता है।

पहाड़ी चट्टान को तोड़ती, कलरव करती गंगा जब प्रबल वेग से नीचे उतरती है। गंगा यहीं से उच्छवास भरती हुई आगे बढ़ती है। भागीरथ शिला के पास गंगा मंदिर में पूजन अर्चन कर आचार्यश्री गोमुख की ओर आगे बढ़े। अब तक की यात्रा पैदल ही संपन्न हो रही थी। आचार्यश्री ने अपनी डायरी में लिखा 'लगातार की यात्रा से पैरों में छाले हो गए थे। ध्यान से देखा तो दोनों पावों में आठ दस छाले हो गये थे। कपड़े का नया जूता पहना था। सोचा था कि उससे कठिन रास्ते में मदद मिलेगी पर उसने भी दो जगह काट लिया। इन छाले और जख्मों में जो कच्चे थे वे सफेद और जिनमें पानी पड़ गया था वे पीले हो गये थे। छाले चलने में दर्द करते थे।'

'गुरु पूर्णिमा तक हर हालत में नियत स्थान पर पहुँचना है। पैर अभी से दांत दिखाएंगे तो कैसे बात बनेगी। लंगड़ा लंगड़ा कर कल तो किसी तरह चल लिया पर आज मुश्किल पड़ती है। दो तीन छाले जो फूट गए, वे जख्म बनते जा रहे हैं। बढ़ गए तो चलना कठिन हो जाएगा और नहीं चला जा सका तो नियत समय पर, नियत स्थान पर पहुँचना कैसे संभव होगा। इस चिंता ने दिन भर परेशान रखा। नंगे पैर चलना और भी कठिन है। रास्ते में ऐसी पथरीली कंकड़ियां बिछी हुई हैं कि वे जहाँ पैर में गड़ जाती हैं, कांटे की तरह दर्द करती हैं। एक उपाय करना पड़ा। आधी धोती फाड़ कर दो टुकड़े कर लिए और उन्हें पैरों से बांध लिया। जूते उतारकर थैले में रख लिए।'

रास्ते में होने वाली तमाम कठिनाइयां सह ली। उनके बारे में मन सोचता और इस आशा से शांत हो जाता कि गोमुख पहुंचना है। वहां से आगे की यात्रा और भी रोमांचकारी होगी। गोमुख तक के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों के बारे में किंचित आभास भी था। इसलिए रोमांच और कौतूहल के मिले जुले भाव थे। इस आशा में रास्ता आराम से कट गया। चारों ओर बर्फ देखते-देखते दूरी का आभास नहीं हुआ। गुरु विष्णुदास की कुटिया में पहुँच गए तब प्रतीत हुआ कि ज्ञात यात्रा की पहली कठिन मंजिल पा ली गई हैं। गुरु विष्णुदास वर्षों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

से इस क्षेत्र में रह रहे थे। वे बीमार रहने लगे थे। उनके शिष्य लाल बाबा ने काम संभाल लिया था। लाल बाबा गोमुख के पास आश्रम की योजना भी बनाये हुए थे। साधन जुटाने के लिए कभी कभार मैदान में जाते थे। उससे आश्रम लायक धन इकट्ठा नहीं हो रहा था। जिस जगह लाल बाबा का कुटियानुमा आश्रम है वहां से करीब हजार फुट नीचे छोटी सी हिमनद है-ग्लेशियर है।

लाल बाबा के यहाँ से निवृत्त होकर आचार्यश्री गोमुख की ओर उतरने लगे। उतरना चढ़ने से ज्यादा खतरनाक था। दो कदम आगे बढ़ते ही पत्थर मिट्टी की बारिश होने लगती थी। हाथ में एक छोटी सी लाठी लेकर आचार्यश्री धीरे-धीरे नीचे उतरे। चारों ओर बर्फ बिखरी हुई थी। पता नहीं कहां पग रखा जाए और बर्फ के नीचे ढके खड्ड में जा गिरें। इसलिए लाठी से अच्छी तरह दबा धंसा कर ही आगे बढ़ा जा रहा था। नीचे उतर कर आचार्यश्री करीब एक घंटे तक बर्फ की चादर पर विचरण करते रहे। वहां स्नान भी किया। गंगा की धारा छोटी थी लेकिन उसका वेग प्रचंड था। धारा के आसपास चारों ओर शिलाखण्ड बिखरे पड़े थे। आचार्यश्री लंबे लंबे डग भरते हुए टहलने लगे। प्रकृति के सौंदर्य को निहारते हुए वे अपने आप में खोये निर्द्वन्द्व भाव से चहलकदमी कर रहे थे। इस बीच किसी की आवाज आई कि जरा संभल कर। जहां तहां निकल रहे नुकीले पत्थरों से छू मत जाना, चोट लग सकती है। पत्थर कच्चे थे। आचार्यश्री ने सुनकर पर्वत की ओर देखा। वहां से छोटे-छोटे पत्थर गिर रहे थे।

आवाज जिस दिशा से आ रही थी, उस ओर देखा तो पाया कि वहां एक संन्यासी खड़ा है। उसी ने बताया सामने ही तुम्हारा अभीष्ट तीर्थ है। वहां आचमन करो और आगे बढ़ो। आचार्यश्री ने गोमुख की ओर देखा। फिर मुड़कर संन्यासी की ओर देखा तो पाया कि वह वहां नहीं था। आचार्यश्री को अपनी पिछली यात्रा का स्मरण हो आया। गोमुख के पास पहुँचने पर तब भी इसी तरह के अनुभव आए थे। आचार्यश्री ने अपनी डायरी में लिखा कि जिस हिमस्तूप (ग्लेशियर) से गंगा की छोटी सी धारा निकली है, वह नीले रंग की है।

गंगा माता का यह उद्गम हिम से ढके गिरि शृंगों के कारण बहुत ही शोभनीय प्रतीत होता है। धारा का दर्शन एक साधारण से झरने के रूप में होता है। वह है तो पतली-सी ही पर वेग बहुत है। कहते है कि यह धारा कैलास से शिवजी की जटाओं से आती है। कैलास से गंगोत्री तक का सैकड़ों मील का रास्ता गंगा भीतर ही भीतर पार करती है और उसे करोड़ों टन ग्लेशियर का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दबाव सहन करना पड़ता है। इसी से धारा इतनी तीव्र निकली है। जो हो, भावुक हृदय के लिए यह धारा ऐसी ही लगती है मानो माता की छाती से दूध की धारा निकली हो। उसका पान करते हुए माता की गोदी में निमग्न हो जाने की ऐसी ही हूक उठती है जैसी गंगा लहरी के रचयिता जगन्नाथ मिश्र के मन में उठी थी।

गोमुख शब्द सुनकर लगता है जैसे उस स्थान पर गाय के मुख जैसी कोई आकृति होगी। इस आकृति या स्रोत से गंगा निकलती होगी ऐसा कुछ नहीं है। एक छोटा सा स्रोत है, उससे दूधिल फेन जैसी वेग से एक जलधारा उछलती हुई निकलती है। यह जलधारा ही बहती हुई आगे चलकर नदी रूप धारण करती है। इस जलधारा के या गोमुख के पास बैठकर आचार्यश्री ध्यानस्थ से देखते रहे। बैठे हुए मन में न जाने क्या विचार आ रहे थे। कितना समय बीत गया, कुछ पता नहीं चला। ध्यान भंग हुआ वहाँ आये तीन यात्रियों की बातचीत से। उनमें एक संन्यासी दिखाई पड़ता था।

तीनों ने गोमुख को ध्यान से देखा और हैरानी जताते हुए एक दूसरे से पूछने लगे कि गाय का मुँह कहां है। वे समझ रहे थे कि गोमुख का अर्थ है गाय के मुँह वाली आकृति। उसके कहीं दर्शन नहीं हुए तो एक युवक ने कहा, असल जगह कहीं और होगी। दूसरे ने अपना अलग ही अनुमान जताया। कहा कि जगह तो यही होगी, लोगों को भरमाने के लिए गोमुख नाम दे दिया लगता है। साथ आए संन्यासी ने कहा, 'यह पंडितजी ध्यान लगा कर बैठे हैं, उन्हीं से पूछते हैं।'

पंडितजी से आशय था आचार्यश्री। वह आचार्यश्री के पास गये जो गंगा के उद्गम पर टक-टकी लगाये बैठे थे। पास पहुँच कर युवक न पूछा, 'पंडित जी यहाँ गोमुख कहाँ हैं?'

आचार्यश्री ने कहा, 'शायद पहले कभी रहा हो या नहीं भी रहा हो। गोमुख का आशय कुछ और है। गो कहते है प्राण को। प्राण यानी प्रचंड आध्यात्मिक ऊर्जा। यह जो धारा निकल रही है। इसमें से दिव्य शक्ति लिए हुए जल प्रवाहित हो रहा है।' यात्रियों को संतोष हुआ। वे कुछ देर ठहरे। फिर लौटने की हड़बड़ी करने लगे। गोमुख से आठ मील पहले तक रुकने या आराम करने की कोई जगह नहीं थी। लोग थक जाते तो बीच में वैसे ही जहां-तहां सुस्ता लेते थे। रास्तें में कई जगह बड़े पत्थर निकले हुए थे। जो छाया का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

काम देते थे। लोग सुबह भोजवासा से चलते गोमुख के दर्शन करते और वापस लौटने की जल्दी में रहते। आठ मील आना और आठ मील वापस जाना। सोलह मील की पहाड़ी यात्रा के लिए एक दिन का समय रुकने और ठहरने के लिए पर्याप्त नहीं होता था। भोजवासा में भी आराम करने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं थी। यात्री इन परिस्थितियों से अच्छी तरह से वाकिफ थे। इसीलिए जाने की हड़बड़ी में थे। उन्होंने देखा आचार्यश्री बहुत शांत बैठे हैं। उन्हें उनकी तरह कोई जल्दी नहीं थी। युवक ने उनसे पूछ ही लिया कि कहाँ ठहरे हुए हैं। आचार्यश्री ने कहा, 'यहीं-कहीं' उन्होंने पूछा, 'कहाँ' ? आचार्यश्री ने गंगा के उस पार एक कुटिया की ओर इशारा किया। वह कुटिया अनायास ही दिखाई दे गई थी। युवक ने कहा, 'लेकिन वहाँ तो कोई दिखाई नहीं दे रहा।'

आचार्यश्री ने कोई उत्तर नहीं दिया। संकेत स्पष्ट था कि उन्हें बातचीत में कोई दिलचस्पी नहीं है। यात्री उस संकेत को समझ कर वापस लौट गये।

उदासीन बाबा की कुटी

जिस कुटिया की ओर उन्होंने इशारा किया था, उसमें उदासीन नाम के एक बाबा रहते थे। उनके समय में इक्का दुक्का यात्रियों को आश्रय मिल जाता था। वैसे भी गोमुख तक कभी कभार ही कोई यात्री रूकते थे। दो-चार दिन में एकाध। आश्विन से चैत्र तक बर्फ गिरने और घन-घोर वर्षा होने के कारण रास्ते बन्द रहते हैं। छः-सात महीनों में मुश्किल से दो-तीन लोग प्रतिदिन गोमुख तक पहुँचते थे। उनके लिए उदासीन बाबा की कुटिया में गुजारा हो जाता था। बाबा का निधन होने के कारण कुटिया अस्त-व्यस्त हो गई।

यात्रियों के जाने के बाद आचार्यश्री धारा पार कर उस कुटिया में पहुँच गये थे। उसी दिन शाम की बात है। सूरज ढलने के बाद अंधेरा धीरे-धीरे गोमुख पर उतरने लगा। दिन में भी वातावरण शान्त था। पक्षियों की चहचहाहट और जंगली जानवरों की भगदड़ की आवाजें उनकी चीख-पुकार गोमुख के आस-पास कभी कभार कोलाहल का माहौल रचती थी। शाम होते ही पक्षियों ने अपने घोंसले में डेरा जमाया। थोड़ा बहुत चहचहाने के बाद चुप हो गये। दौड़ने भागने वाले जंगली जानवरों ने भी अपने ठिकानों में शरण ली। इसके बाद गोमुख के आस-पास नीरव शान्ति पसर गई। गोमुख से बहने वाली धारा और हवाओं की सांय सांय ही सुनाई देती रही।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वह कृष्ण पक्ष की अंधेरी रात थी। शायद दशमी तिथि, अभी भी चांदनी का कहीं नामों-निशान नहीं था। आसमान साफ था। खुले आकाश में हजारों लाखों तारे टिम-टिमा रहे थे। तारों की रोशनी लाखों मील की यात्रा कर धरती को छूती हुई सी फैल रही थी। धरती पर जहाँ-तहाँ चमकते जुगनू और आकाश में तारे। आँखे इतनी सी रोशनी में आस-पास की चीजों को देखने लगीं।

आचार्यश्री कुटिया में चुपचाप बैठे थे। नींद नहीं आ रही थी। रात कोई साढ़े दस या ग्यारह बजे का समय होगा। वह निकल कर बाहर आये और गोमुख की धारा को निहारने लगे। मन हुआ कि बैठ जाएं। आसन जमा कर पालथी लगाकर बैठ गये। धारा को निहारते-निहारते लगा कि दिखाई देना बन्द हो रहा है। दृष्टि जल पर टिकी हुई हैं लेकिन मानस पटल पर कोई और ही चित्र उभर रहे हैं। उस बिम्बों में एक दृश्य किसी तरुण संन्यासी का था। लग रहा था कि जिस गुफा से वह संन्यासी निकला है, उसी के पीछे धारा बहती चली गई।

आचार्यश्री ने उस संन्यासी को पहचानने की कोशिश की। फिर खुद ही अनुमान लगाया कि वह हो न हो भगीरथ ही है जिन्होंने अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए प्रचंड तप किया था और भगवती गंगा से याचना की थी कि वह धरती पर आयें। यहाँ आकर ऋषि के शाप से नष्ट हुए सगर पुत्रों का उद्धार करें। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर गंगा धरती पर आई। वह न केवल सगर पुत्रों बल्कि आने वाली कई पीढ़ियों के लिए भी मोक्ष का द्वार खोल गई।

पहले पढ़े हुए पौराणिक वृतांतों के जीवन्त हो उठने की इस भावभूमि से उभर कर आचार्यश्री सचेत हुए। सोचने लगे की कहाँ कल्पनाओं में खो गया। हजारों लाखों वर्ष पहले हुए या नहीं हुए, लेकिन विख्यात राजा भगीरथ की स्मृति ने आलोड़ित कर दिया।

वह फिर धारा को निहारने लगे। मन फिर कहीं भाव भूमि में न खो जाए, इसके लिए वे उठकर खड़े हो गये और टहलने लगे। धारा के किनारे वह कुछ कदम चले ही होंगे कि एक पदचाप पास आते हुई सुनाई दी। यह किसी मनुष्य के पाँव की ध्वनि थी। अपनी ही तरह कोई खोजी साधक या भूला भटका व्यक्ति होगा यह विचार आया। वह ठहर गये। पदचाप निकट आती गई। उस दिशा में देखा। तारों की रोशनी में कुछ ज्यादा साफ नहीं दिखाई दे रहा था। कुछ पल बीते होंगे। एक मानव आकृति के दर्शन हो गये। शुरू में कुछ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

धुँधली, फिर धीरे-धीरे साफ होती हुई। वह कोई योगी यति लग रहे थे। प्रथम दृष्टि में उस आकृति के सम्बन्ध में कुछ अनुमान लगाना कठिन था।

साफ दिखाई देने लगे उस योगी की जटाएँ पिंडलियों को छूती हुई लगती थी। आयु चालीस वर्ष के आस-पास होगी लेकिन शरीर बहुत सधा और संतुलित था। वह कोई तपस्वी थे लेकिन तपस्या का प्रभाव शरीर के कमजोर होने के रूप में कहीं नहीं दिखाई दे रहा था। उनके आने पर ऐसा लगा था कि जैसे कोई पवन का झोंका आया हो। इतना स्फूर्तिवान व्यक्तित्व था। चेहरे पर हड्डियाँ उभरी हुई थीं। चमकती हुई आँखे। उन्नत ललाट। लम्बे कान। उनके लम्बे कानों को देखकर भगवान गौतम बुद्ध की स्मृति उभरने लगी। उनकी तस्वीरों में उन्हीं के चित्रित लम्बे कान याद में आने लगे। वस्त्र के नाम पर उन्होंने कमर में एक साधारण कपड़ा लपेटा हुआ था। गोमुख की उन ठंडी हड्डियों को चीर देने वाली हवाओं में भी प्राय: दिगम्बर उस विभूति को आचार्यश्री ने प्रणाम किया। आश्चर्य की बात थी कि लम्बी जटाएं होते हुए भी उस योगी के मुंह पर मूंछ और दाढ़ी नहीं थी।

आचार्यश्री के प्रणाम को स्वीकार करते हुए योगी के हाथ अभय मुद्रा में ऊपर उठे। आचार्यश्री ने कहा, 'आप इस कुटिया में विराजिए। मुझे अपनी सेवा का अवसर दें।'

उस विभूति ने अनुरोध को जैसे सुना ही नहीं। कहने लगे, 'मैं आपका अभिवादन करने के लिए यहाँ आया हूँ। आगे जिस क्षेत्र में आपको जाना है, वहाँ सामान्य व्यक्तियों का पहुँचना असंभव है। जिस सत्ता ने आपको यहाँ बुलाया है, मैं भी उसी सत्ता का एक विनम्र शिष्य हूँ। उन योगी ने अपना परिचय नहीं दिया। पूछने पर कहने लगे गुरु भाई होना पर्याप्त नहीं है क्या? कुछ साधक मुझे उदासीन बाबा कहते हैं।

आचार्यश्री ने कहा इस कुटिया में आपका ही निवास था। उन योगी ने कहा हिमालय का मूल क्षेत्र असल में यहाँ से आरंभ होता है। इससे आगे जाना बहुत कठिन है। पुराणों में पढ़ा होगा कि सिद्ध योगी सद्गुरु अभी हैं। पर कलियुग के प्रभाव से हिमालय के किसी गुप्त स्थान में अब भी रहते हैं। वह क्षेत्र यहाँ से आरंभ होता है।

सुमेरु पर्वत या हिमालय पर हृदय-प्रदेश इसी क्षेत्र से आगे हैं। वह करीब तीस किलोमीटर लम्बा चौड़ा है। गोमुख से बद्रीनाथ जाना हो तो करीब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ढाई सौ मील की दूरी तय करनी पड़ती है। यहां से एक सीधा मार्ग भी है जो मात्र पच्चीस मील लंबा है। किंतु दुर्गम क्षेत्र है।

गोमुख से रवाना होना था। स्फुरणा जगी कि किसी प्रकार संभव हो सके तो इस क्षेत्र के दर्शन करने चाहिए। भावना धीरे-धीरे प्रबल होती जाती थी। लेकिन इसका उपाय नहीं दिखाई दे रहा था। उन विभूति ने ही बताया था कि पच्चीस-तीस मील लम्बे-चौड़े इस क्षेत्र को पार किया जा सके तो बद्रीनाथ और केदारनाथ इसके बिल्कुल नीचे ही सटे हुए हैं। ऊँचाई की अधिकता और पर्वतों के ऊबड़-खाबड़ होने के कारण चलने लायक मार्ग न मिलना और अत्यधिक शीत और बर्फ के जमे रहना। इन कारणों से लम्बा रास्ता तय कर पहुँचना पड़ता है। रास्ते में जल-छाया, भोजन, ईंधन आदि की व्यवस्था नहीं होने जैसे भी कई कारण है, जिससे यह क्षेत्र मनुष्य की पहुँच के बाहर हो गया।

कई साल पहले स्विट्जरलैण्ड के एक पर्वतारोही दल ने इस रास्ते पर चलने की कोशिश की थी। उसे काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। शिवलिंग पर चढ़ते हुए दल के एक कुली का पांव टूट गया था। और एक आरोही केदारनाथ शिखर पर चढ़ते हुए अपने पांव गंवा बैठा था। वह बर्फ की गहरी दरारों में फंस गया था। फिर भी उस दल ने रास्ता पार कर लिया। सुनते हैं कि उसके बाद बर्फीले रास्तों पर चलने के अभ्यस्त महात्माओं के दो एक दल भी तीस मील के उस छोटे मार्ग को पार कर बद्रीनाथ के दर्शन कर आ चुके हैं। उन योगी ने कहा कि दूसरे लोग इस मार्ग को पार कर चुके हैं तो तुम क्यों नहीं कर सकते। आचार्यश्री ने कहा, 'उन जैसी सामर्थ्य और शक्ति अपने पास नहीं है।' ऐसे क्षेत्र में चलने का अभ्यास और अनुभव भी नहीं है। कहकर कुछ क्षण रुके और उन योगी की ओर देखने लगे।

आचार्यश्री के मन में आया कि एक बार मार्ग की दूरी और कठिनाइयों के बारे में पूछ लें फिर कुछ सोच कर वे चुप रह गये। उन्हें करीब तीस साल पहले की यात्रा का स्मरण हो गया। तब भी गोमुख से इस प्रदेश की यात्रा आरंभ की थी और भीतर ही भीतर मन अकुला रहा था। मार्गदर्शक के भेजे प्रतिनिधि या मार्गदर्शक की याद आ गई। उनके कारण नितांत दुर्गम या कहें कि अगम्य प्रदेशों की यात्रा कितनी आसानी से संपन्न हो गई थी। वे चुप रहे। उन्होंने यह चिंता भी नहीं की कि जिस मार्ग पर चल रहे है वह लंबा है या छोटा, सुगम है या दुर्गम।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सतत लेखनी की साधना में निरत
युग नायक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारा युग निर्माण सत्संकल्प

१. हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।

२. शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।

३. मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।

४. इंद्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम का सतत अभ्यास करेंगे।

५. अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।

६. मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।

७. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।

८. चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।

९. अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।

१०. मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।

११. दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करेंगे, जो हमें अपने लिए पसंद नहीं।

१२. नर-नारी के प्रति परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।

१३. संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।

१४. परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।

१५. सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।

१६. राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रांत, संप्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।

१७. मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है-इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनाएँगे, तो युग अवश्य बदलेगा।

१८. हम बदलेंगे-युग बदलेगा, हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

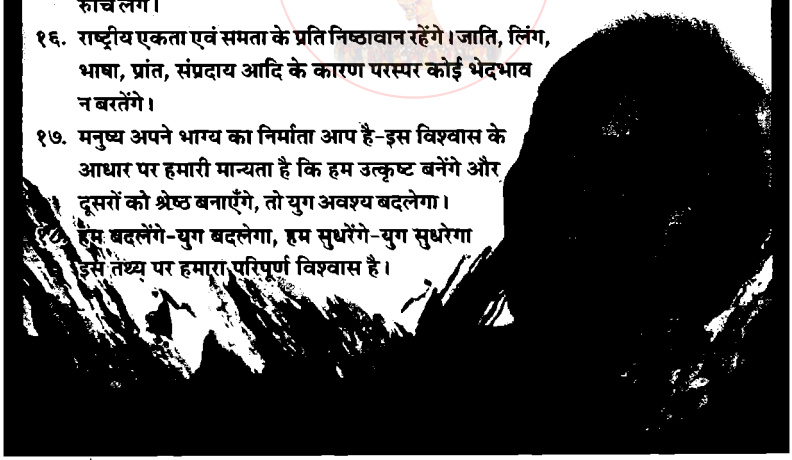

युग निर्माण योजना एवं नवयुग के घोषणा-पत्र की घोषणा (१९६२)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्थान-स्थान पर आयोजित छोटे-छोटे यज्ञ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'यहां तक आने में आपको बहुत कष्ट हुआ है?' चलते-चलते योगी ने आचार्यश्री के पाँवों की ओर देखा उनमें अब भी पट्टियाँ बंधी हुई थी। आचार्यश्री का ध्यान भी अपने पांवों की ओर गया। योगी ने एक झुरमुट से कुछ पत्तियां तोड़ी। उन्हें हथेली की दोनों गुद्दियों के बीच रखकर दबाया। पत्तियों में से रस चुहचुहा उठा। उस रस को आचार्यश्री के पांवों पर मल दिया। जादू जैसा असर हुआ। मलते ही पीड़ा काफी कुछ शांत हो गई थी। योगी ने कुछ पत्तियां और तोड़ी उन्हें आचार्यश्री को दिया और कहा कि थोड़ी देर बाद उन्हें फिर मल लेना है।

बद्रीनाथ अत्यंत निकट

योगी उन्हें गोमुख के हिम प्रवाह से दाहिनी ओर ले जा रहा था। चारों ओर बर्फ और कहीं-कहीं झाड़ियों के सिवा कुछ नहीं दिखाई देता था। दो ढाई मील चले होंगे कि योगी ने कहा कि चढ़ाई पार कर दूसरी ओर जाएं तो बद्रीनाथ सिर्फ आठ मील दूर है। इस रास्ते पर जाने से फूलों की घाटी भी मिलेगी। फूलों की घाटी अर्थात त्रेतायुग में परशुराम द्वारा इस हिम आच्छादित क्षेत्र में उगाये गये तरह-तरह के पुष्प पादप। संत महात्मा अपने प्रवचनों में बताते हैं कि परशुराम ने धनुष यज्ञ के समय भगवान राम के अवतारी स्वरूप को पहचान लिया तो अपना काम समाप्त समझा। उनसे कहा कि अब मुझे अपने दायित्वों से अवकाश दें। राम ने उन्हें हिमालय में तप के लिये भेज दिया। परशुराम ने जहां तपश्चर्या की वह मार्ग दुर्गम तो होगा ही वह इस रास्ते से चलने को तैयार हो गये । मन में फिर सवाल उठा। चल भी दिये तो रास्ता कौन दिखाएगा। इतनी सर्दी को शरीर कैसे सहन करेगा। चलने, सोने और खाने पीने की क्या व्यवस्था होगी?

मन ने फिर डराया। ऋषिकेश से यहाँ तक आने में एक सौ सत्तर मील चले नौ हजार फुट की ऊँचाई चढ़े। पाँव में जान नहीं रह गई थी। आगे बारह मील के भीतर नौ हजार फुट और चढ़ना पड़ेगा। इतनी सामर्थ्य अपने पांव में है क्या? मन की दूसरी परत यह कहती थी कि अब धरती के स्वर्ग के बिल्कुल किनारे पर आ गये, भीतर प्रवेश करने का लाभ भी लेना चाहिए। गंगा तट से प्यासे लौटने में क्या समझदारी है। एक पुराना श्लोक याद हो आया। उसका अर्थ है गोमुख से आगे के पर्वत बहुत ऊंचे और भारी बर्फ से ढके हुए हैं। परशुराम ने यहां भांति-भांति के फूलों को भी विकसित किया। फूलों की वही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

असंख्य जातियां हेमकुंड और बद्रीनाथ के बीच व्यापक क्षेत्र में फैली हुई है। योगी ने बताया कि उस पार फूलों की घाटी है और बदरीनाथ, जोशीमठ, पंचशिला आदि तीर्थ है। यह विवरण सुनने के बाद आचार्यश्री से रहा नहीं गया। उन्होंने पूछ लिया कि क्या हम लोग उसी क्षेत्र में चल रहे हैं।

योगी ने कहा, 'नहीं। हम लोग सुमेरु पर्वत पर चल रहे है। सुमेरु जहाँ चक्रवर्ती सम्राटों को अपना नाम लिखने का अवसर दिया जाता है।' आचार्यश्री योगी की बात को चुपचाप सुनते हुए चल रहे थे। तरह-तरह के फूल और रंग बिरंगे पक्षी रास्ते में दिखाई देने लगे। दो ढाई मील तक सिर्फ सफेद दिखाई देने वाला बर्फीली चोटियाँ रंग बिरंगे परिधान पहने दिखाई देने लगी थी। आचार्यश्री के मन में विचार आ और जा रहे थे कि पुराणों में जिसे इन्द्रलोक का अविचल पर्वत कहा है या जिसकी मथानी बनाकर कर देवों और दानवों ने समुद्र मंथन किया था, क्या यही वह सुमेरु पर्वत है। ऊपर चोटी पर पहुँच कर उनके विचारों का क्रम रुका। योगी ने एक वृक्ष के नीचे बैठ जाने के लिए कहा और चला गया। आचार्यश्री के मन में आया कि यह योगी संभवतः अब नहीं आएगा। यह विचार आया ही था कि योगी ने पलट कर देखा और कहा, 'तुम ठीक ही सोच रहे हो। मेरा काम पूरा हुआ। यहाँ से आगे तुम्हें गुरुदेव ही मार्ग दिखाएंगे।'

आचार्यश्री अवश से देखते रहे उनके लिए यह क्षेत्र सर्वथा अनजाना था। इस बारे में कहीं कुछ पढ़ा भी नहीं था। सुना भी पहली ही बार था कि गोमुख से आगे सुमेरु पर्वत है। उस पर्वत से इन्द्रलोक तक जाने का मार्ग खुलता है यही सब सोचते हुए उनकी पलके मुंदने लगीं। शरीर थक गया था। उन्हें नींद सी आने लगी थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जहां न पहुंचे काया

सुमेरु पर्वत, पौराणिक संदर्भों के अनुसार वह है, जिसे मथानी बनाकर समुद्र मंथन हुआ था। देवलोक का मार्ग भी यहां से आरंभ हुआ मानते है। इस तरह के उल्लेखों में आचार्यश्री का मन ज्यादा नहीं रमा। वह योगी जा चुका था और सुमेरु के संबंध में दिया गया उसका वक्तव्य भी आचार्यश्री के मन से बाहर निकल गया था। वे शिला पर देर तक बैठे रहे। चारों ओर फैला प्रकृति का सौंदर्य निहारते रहे। उठकर चहलकदमी करने लगे। अभी तक योगी का साथ था। अकेलापन का ज्यादा अनुभव नहीं रहा था। योगी ने रास्ते में कुछेक बार ही बात की थी। फिर भी उसकी उपस्थिति प्रतीत तो होती थी। अब नितांत अकेलापन था। आचार्यश्री उठे और चलने लगे।

पहाड़ी के उतार पर एक झोंपड़ी दिखाई दी। अभी कोई प्रेरणा नहीं आ रही थी कि किस दिशा में जाना है। इसलिए ठौर ठिकाने के लिहाज से झोंपड़ी ने आकर्षित किया। पास जाकर देखा तो पाया कि जब तक आगे बढ़ने का संकेत न मिले तब तक के लिए यह सही ठिकाना है। वस्त्र, लोटा और दरी आदि के जो उपकरण साथ थे, उन्हें झोपड़ी में रख दिया और आसपास के दृश्यों के निरीक्षण के लिए निकल पड़े। भांति-भांति के फूल, बर्फ से ढकी चोटियां और यहां वहां बहते झरने। कुटिया के पास भी एक झरना बह रहा था। आचार्यश्री उसके किनारे बैठ धारा को निहारते रहे। शाम हो गई और लगा कि अब सो जाना चाहिए तो कुटिया के भीतर आ गये। संध्या पूजा से निवृत्त होकर बिस्तर लगाया और सोने की कोशिश करने लगे।

नींद नहीं आ रही थी। आगे क्या होगा का प्रश्न मुंह बाये खड़ा था। अपनी मार्गदर्शक सत्ता के कारण मन में निश्चिंत और आश्वस्त भाव तो था लेकिन एकांत का अभ्यास नहीं होने से कुछ बेचैनी और ऊब थी। वही नहीं सोने दे रही थी। रात गहराती जा रही थी और नींद थी कि आने का नाम नहीं ले रही थी। करवटें बदलते रहने के स्थान पर यह उचित समझा कि बाहर आकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रकृति से संवाद किया जाए। वे बाहर आ गये। झरने के पास एक शिलाखंड पर बैठ गये। वहां से प्रवाह देखने लगे। उनकी दृष्टि झरने के दूसरी ओर पालथी मारे बैठे एक युवा साधक पर पड़ी।

दृष्टि जाते ही साधक ने आंखें खोली और आचार्यश्री को निहारा जैसे वह उनके देखने की प्रतीक्षा कर रहा था। उठ कर वह आचार्यश्री के पास आया। झरने में घुटने घुटने पानी बह रहा था। उसे पार करने में कोई कठिनाई नहीं आई। साधक पास आया और उसने आचार्यश्री को प्रणाम किया। उसके प्रणाम करते ही आचार्यश्री की स्मृति में जैसे एक पहचान कौंधी। उन्हें साधक के बारे में कुछ याद आया। उसका अतीत चलचित्र की भांति घूम गया। लगा कि साधक ने किसी समय उनके सान्निध्य में साधना आरंभ की थी और संन्यासी बनकर दूर चला गया था। स्मृति पर थोड़ा जोर दिया तो याद आया कि दीक्षा देने का स्थान वाराणसी ही था। साधक प्रणाम करते हुए आचार्यश्री के चेहरे की ओर देखे जा रहा था। आचार्यश्री ने कहा, 'अरे निखिल। यहां क्या कर रहा है?

निखिल ने कहा, 'आपकी आज्ञा के बिना तो मैं हिल भी नहीं सकता गुरुदेव। आप ऐसे क्यों पूछते हैं कि मैं यहां क्या कर रहा हूँ?'

आचार्यश्री ने कहा, 'तुम जिन सिद्धियों को प्राप्त करने के लिए इधर आये थे, वे मिली या नहीं।'

इस प्रश्न पर निखिल ने फिर हैरानी जताई। फिर अपने आप सहज हो गया। आचार्यश्री ने कहा, 'अपने शरीर को स्फटिक की तरह निर्मल करके बताओ तो ज़रा।'

निखिल ने आंखें बंद की। कुछ देर बैठ कर ध्यान किया और प्रतीत होने लगा कि उसका शरीर शीशे के रूप में परिणित होता जा रहा है। कुछ ही देर में उसके आरपार दिखाई देने लगा है। उसके पीछे झरना और वृक्ष पादप आदि दिखाई दे रहे थे।

पारदर्शी होते होते उसका शरीर वायुभूत होने लगा। जैसे वह अदृश्य हो रहा हो। उसका आकार घटने लगा और कुछ ही क्षणों में वह पूरी तरह अदृश्य हो गया। ऐसा लगा जैसे निखिल उस स्थान से दूर चला गया है। कुछ पल बीते होंगे कि उसकी आवाज सुनाई दी। निखिल कहे जा रहा था कि मैं इस समय पृथ्वी से लगभग चार मील ऊपर चल रहा हूँ। जिस जगह मैं हूं, वहां नीचे गंगोत्री बह रही है। वहां स्नान कर गोमुख की ओर जा रहा हूं। इन संवादों में से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वाक्यों के बीच थोड़ा-थोड़ा अंतराल था। उससे लग रहा था कि निखिल अपनी यात्रा का वृत्तांत उसी समय सुनाता जा रहा था। कुछ पल बाद फिर आवाज गूंजी। 'अब मैं गोमुख पर नीचे उतर रहा हूँ।' उसका जल अपनी अंजुली में भर रहा हूँ। श्रीचरणों में अर्पित करने के लिए।'

कुछ ही मिनट बीते होंगे कि निखिल आचार्यश्री के सामने उसी शिला पर उतरता दिखाई दिया। वह किसी ऊंचे स्थान से उतरने की तरह शिला पर प्रकट हुआ था। वहां आते ही आगे बढ़ा और अंजुलि में भरा गोमुख का जल आचार्यश्री के चरणों में चढ़ा कर नतमस्तक खड़ा हो गया। आचार्यश्री ने उसका कंधा थपथपाया और कहा, इसे अपने मार्ग की सफलता मत मानना। इस तरह के चमत्कार ऐंद्रजालिक हैं। स्वयं को परमात्मा की सेवा में लगा सको तो अपने आपको ज्यादा कृतकृत्य अनुभव करोगे।

तपोवन का मार्ग

निखिल ने कहा, 'आप ही बताइए गुरुदेव कि मुझे क्या करना चाहिए?'

आचार्यश्री ने कहा, 'तुम जितनी जल्दी हो सके यह क्षेत्र छोड़ दो। समाज में जाओ। वहां निर्मल, निश्छल और ऊर्जावान आत्माओं की बड़ी जरूरत है। तुम्हारे भीतर इस तरह की क्षमता है और तुम उसे मानवीय चेतना के उत्कर्ष में लगाओ। वहीं तुम्हारी एकांत साधना होगी।'

सुमेरु पर्वत के उस क्षेत्र में दो दिन रहने के बाद आचार्यश्री ने तपोवन की राह पकड़ी। जिस मार्ग पर वह चल रहे थे, उसमें इक्का, दुक्का यात्री ही दिखाई दिए। वहां से निकलते समय निखिल ने बताया था कि इस मार्ग से जाने पर कठिनाइयां बहुत हैं। उन्हें पार पा लिया जाए तो सबसे कम समय में और कम दूरी में तपोवन पहुंचा जा सकता है। उन्हें गुरुपूर्णिमा तक अपनी मार्गदर्शक सत्ता के पास पहुंचना था। इसलिए जल्दी थी।

सुमेरु पर्वत से तपोवन आते हुए रास्ते में आये उस पड़ाव के बारे में विशेष पता नहीं था। आचार्यश्री ने उन दिनों डायरी नहीं लिखी। संभवत: पादुकेश्वर नाम रहा होगा। स्थानीय लोग उसे पांडुक्या कह रहे थे। उस बस्ती में सात परिवार थे। ढलान पर बनी झोपड़ियों में बर्फीली हवाओं और तूफानों से बचाव नहीं हो पाता था। पक्के मकान बनाये नहीं जा सकते थे क्योंकि पत्थर चुनने पर खतरा ही था। कच्चे पहाड़ से मिट्टी या चट्टान किसी भी समय खिसक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सकती थी। उससे मकान ध्वस्त होने में जरा भी देर नहीं लगती।

पांडुक्या पहुँचे तो तीसरे ढलान पर बनी झोपड़ी से एक वृद्ध निकल कर आया। उसने मामूली वस्त्र पहने हुए थे। आचार्यश्री ने उसे देख कर नमस्कार के लिए हाथ जोड़े। वृद्ध ने आगे बढ़ कर स्वागत किया। साल छह महीने में एकाध साधु संन्यासी इस क्षेत्र में निकल आता है। सैलानी कहें तो वही और बाहरी व्यक्ति कहें तो वही। उनके अलावा किसी का आना-जाना नहीं था। वृद्ध ने आचार्यश्री को आया देखा तो प्रसन्नता व्यक्त की। इस क्षेत्र के लोग बाहरी जगत के संपर्क में कम ही आते हैं। उनकी संस्कृति, भाषा और व्यवहार नागरिक या ग्रामीण क्षेत्रों से सर्वथा अलग होते हैं। भाषा समझना भी कठिन है। उस वृद्ध ने आचार्यश्री का अभिवादन करते हुए शुद्ध प्रांजल हिंदी में संबोधित किया, 'स्वागत है महाभाग।'

फिर स्वगत ही अपना परिचय दिया, 'मैं चालीस वर्ष से यहां रह रहा हूँ। मेरे साथ एक साधक और है। जगन्नाथ स्वामी। उनके अलावा पांच परिवार और हैं। उस वृद्ध ने अपना नाम महावीर योगी बताया। उसकी भाषा, भंगिमा और उच्चारण में आकर्षण था। आचार्यश्री उसकी बात सुनने लगे। योगी ने उन्हें अपनी कुटिया में आमंत्रित किया। बैठने के लिए स्थान बताया और उस निर्जन में जो भी फल आदि उपलब्ध थे उनसे स्वागत किया। आवभगत करते हुए वह बात भी करता जा रहा था। उसने कहा, 'मनुष्य के भीतर जब कुंडलिनी जागृत होने लगती है तो उसका वास्तविक जीवन आरंभ होता है। उससे पहले का जीवन नारकीय और पाशविक ही कहना चाहिए।'

'शास्त्रों में चौरासी लाख योनियों का उल्लेख आया है। आवश्यक नहीं कि आत्मा इन शरीरों की यात्रा करते हुए ही मनुष्य शरीर धारण करे। शरीर मनुष्य का रहते हुए भी आत्मा पशुयोनियों में जी रही हो सकती है। उदाहरण के लिए मनुष्य योनि में जन्म लेने के बाद भी कितने ही व्यक्ति व्यर्थ की चिंताए और जिम्मेदारियां ढोते हुए जीवन यात्रा पूरी कर लेते हैं। सुबह उठना, खाना, पीना और रोजमर्रा के काम निपटाते हुए शाम को कल की तरह ही सो जाना। ऐसे लोगों का जीवन आलस्य और प्रमाद में ही कटता है। उस जीवन को गधे की योनि कहा जा सकता है। कुत्ते, बिल्ली, चूहे आदि प्राणियों के लक्षण जिस व्यक्ति में प्रकट होते दिखाई दें, उसे उन्हीं योनियों में मानना चाहिए।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'कुंडलिनी का स्पंदन होने के बाद मनुष्य को सात जन्म और लेना होते है', उस योगी ने कहा, 'यह अधिकतम यात्रा है। गुरु का अनुग्रह हो जाए तो स्पंदन आरंभ होने के बाद अगले जन्म में ही निर्वाण पाया जा सकता है सात जन्म पूरे करना आवश्यक नही है। लेकिन सामान्य स्थिति में साधकों को सात शरीर बदलना ही पड़ते हैं।'

सात जन्मों में साक्षात

महावीर योगी ने कहा कि उनका अपना जीवन छठी आवृत्ति है। पांच जीवन जी चुके है। इस जीवन के बाद अभी एक यात्रा और करनी है। योगी ने सात जीवन को सात चक्रों की यात्रा कहा था। सातों जन्मों की विवेचना करते हुए योगी ने बताया कि स्पंदन और संकल्प जागृत होने के बाद साधक दूसरा जन्म लेता है तो उसके स्वभाव में करुणा और सहृदयता के गुण ज्यादा विकसित हुए होते हैं। वह लौकिक संबंधों में गुरु को सबसे ज्यादा स्थान देता है। साधन और गुरु कृपा के प्रभाव से वह स्वाधिष्ठान तक की यात्रा तो कर लेता है, लेकिन वहां वह स्थिर नहीं रह पाता। ऐसा भी होता है कि परिस्थितियों या अपनी आदतों के कारण वह पीछे की ओर खींचा जाने लगता है और वापस पिछली अवस्था में पहुंच जाता है।

तीसरा जीवन अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। इसमें व्यक्ति को गुरु की कृपा का प्रत्यक्ष अनुभव है। वह सामान्य श्रेणी के लोगों से अधिक मानवीय और करुणावान होता है। पूर्वाभास और अतीन्द्रिय दर्शन जैसी क्षमताएँ उसमें विकसित हो जाती हैं। वह संपर्क में आने वाले अन्य व्यक्तियों को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। चौथे जीवन में ये क्षमताएँ प्रखर हो उठती हैं। लोग ऐसे व्यक्तित्व के सान्निध्य में प्रसन्नता अनुभव करने लगते हैं। वे ज्यादा से ज्यादा उसके सान्निध्य में रहना चाहते हैं। उससे मार्गदर्शन लेते हैं।

महावीर योगी ने अपने बारे में बताया कि पांचवी भूमिका में पहुंचे हैं। इस भूमिका में साधक के चेहरे के आसपास एक आभामंडल दिखाई देता है। ऐसे साधक की वाणी सुनकर मन को शांति और संतोष की अनुभूति होती है। ऐसा व्यक्ति गृहस्थ होते हुए भी योगी ओर योगी होते हुए भी गृहस्थ होता है। उस व्यक्ति के जीवन में लोभ, वासना का आवेग कदापि नहीं होता है। कहकर महावीर योगी चुप हो गये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्यश्री उसकी और प्रतीक्षाभाव से देखते रहे। वे सोच रहे थे कि महावीर योगी आगे के जीवन या कुंडलिनी साधना के अगले पड़ावों के बारे में बताएंगे। वे इसीलिए चुपचाप देख रहे थे। महावीर योगी ने उनके मनोभावों को समझा और कहा कि पांचवी भूमिका से आगे की यात्रा मैंने नहीं की है। इसलिए उस यात्रा के बारे में विशेष कुछ नहीं कह सकता। शास्त्रों में पढ़ा भी है और योगी यतिजनों के मुंह से सुना भी है लेकिन जब तक उस यात्रा का अनुभव नहीं हो जाता, तब तक कुछ कहना उचित नहीं है।

कहकर योगी चुप हो गए। आचार्यश्री ने इसके बाद कुछ नहीं पूछा। दोनों शायद एक दूसरे के शुरू होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। योगी ने ही शुरुआत की, 'आप मुझसे भी आगे की भूमिका में पहुंचे हुए हैं।'

आचार्यश्री कुछ कहें इससे पहले ही उन्होंने प्रमाण प्रस्तुत करने की कोशिश की, 'आप गृहस्थ हैं। एक महत्कार्य का आपने संकल्प लिया हुआ है। उस दायित्व को देखते हुए किसी भी व्यक्ति को एक दिन भी इधर उधर नहीं होना चाहिए लेकिन आप निस्पृह भाव से हिमालय में विचरण कर रहे हैं यह निस्पृह भाव छठवें जीवन से कम में नहीं आता।'

अपनी साधना के बारे में महावीर योगी ने बताया कि गुरु इसी क्षेत्र में रहते हैं। उनसे भेंट भी यहीं हुई थी। पांडुक्या के पास एक सिद्ध गुफा है। साधना की धुन मन में बसाये हुए वे आये ही थे कि यहां गुफा के पास उनके दर्शन हुए। उनका नाम कृष्णानंद था। उन्होंने योगी के बचपन का स्मरण कराया। कहा, 'जब तुम हाईस्कूल के छात्र थे, तब मैंने तुम्हें देखा था। मैंने तुम्हें पहचान भी लिया था। तुम पिछले जन्मों में मेरे पुत्र थे। इस जन्म में मैंने गृहस्थ बसाया ही नहीं इसलिए तुम्हें संतान रूप में नहीं पा सका। लेकिन शिष्य भी संतान की तरह होता है। मैंने तुम्हें चुन लिया है।' उसके बाद गुरुदेव ने मुझे इसी क्षेत्र में रहने का आदेश दिया। तबसे अब तक इसी क्षेत्र में निवास कर रहा हूँ।

महावीर योगी ने बताया कि गुरु के स्नेह भरे शब्दों ने उनका हृदय विगलित कर दिया था। लगा कि मन पर से एक बोझ उतर गया है। उन्हें पिता के रूप में देखकर जैसे चारों ओर से आश्वस्त हो गया लेकिन उस घटना को चालीस वर्ष हो गये। बाद में गुरुदेव से एक बार भी मुलाकात नहीं हुई। यद्यपि उनसे नहीं मिल पाने की स्थिति कभी अखरी नहीं। उनका मार्गदर्शन सदा मिलता रहा–प्रतिक्षण।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्यश्री ने भी अपनी मार्गदर्शक सत्ता के बारे में किंचित चर्चा की। उन्होंने भी कहा कि प्रत्यक्ष रूप में गुरुदेव के सान्निध्य में दो दिन से ज्यादा रहना नहीं हुआ लेकिन उनका सूक्ष्म सान्निध्य हमेशा मिलता रहा है। इस चर्चा के बाद महावीर योगी ने तपोवन तक के रास्ते के बारे में काफी कुछ बताया। आचार्यश्री अपने निर्दिष्ट पथ पर चल दिए।

गुरुभाई का सान्निध्य

उस योगी को आचार्यश्री ने वीरभद्र नाम दिया था। नाम इसलिए देना पड़ा कि वह अपना कोई परिचय नहीं दे रहा था। पूछने पर यही कहता था कि गुरुदेव ने यहां भेजा है। अपने साथ लिवा लाने के लिए। इस बार वे नंदनवन में नहीं हैं। पिछली बार मार्गदर्शक सत्ता के जिस प्रतिनिधि ने मार्गदर्शन दिया था उसका नाम वीरभद्र ही था। पिछली यात्रा में जिस वीरभद्र का सान्निध्य मिला था, वह मौन ही रहा था। उसे वीरभद्र के रूप में ही पहचाना था। अभी आए गुरुभाई को भी आचार्यश्री ने इसी नाम से पुकारा। उसी से पता चला कि गुरुदेव कैलास मानसरोवर के मार्ग में मिलेंगे। उससे बातचीत करते हुए आचार्यश्री को लग रहा था कि रास्ते में गुरुभाई से हिमालय के बारे में कई नई जानकारियाँ मिल सकती हैं। आचार्यश्री ने जब पहली बार वीरभद्र कहकर पुकारा तो उसने प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा। आचार्यश्री ने कहा, 'मैं गुरुदेव को भगवान शंकर के रूप में देख रहा हूँ। आप उनके गण या संदेशवाहक हैं। भगवान शंकर के गण तो वीरभद्र ही कहे जाते हैं न।'

सुनकर योगी चुप रह गए। योगी तपोवन से ही साथ हो लिया था। उसके आने से पहले संकेत आने लगे थे कि आगे का मार्ग दुर्गम है। मई, जून के महीने थे। मौसम थोड़ा सुहाना और शीतोष्ण हुआ था। मैदान जैसी गर्मी तो नहीं थी लेकिन हिमालय में रहने वाली शीतकाल जैसी सर्दी भी नहीं थी। उस समय चारों ओर हरियाली छाई हुई थी। आचार्यश्री के मन में इच्छा जागने लगी कि कुछ दिन यहां रहा जाए। योगी ने उसे निरस्त किया और कहा नंदन वन में ज्यादा समय लगेगा। आचार्यश्री ने उस योगी से अपने बारे में कुछ बताते चलने का अनुरोध किया। आशय यह था कि इससे रास्ता आसानी से कट जाएगा। वीरभद्र ने स्पष्ट मना कर दिया कि अपना जैसा कुछ रहा नहीं है। उसके बारे में बताने लायक भी कुछ नहीं है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्यश्री ने कहा, 'अपने निज के बारे में भले ही न बतायें। गुरुदेव के सान्निध्य में हुए लाभ और अनुभूतियों के बारे मे ही बताते चलें। मुझे उनका प्रत्यक्ष सान्निध्य दो तीन दिन के लिए ही मिला है। आप बड़भागी हैं। आपको उनका सान्निध्य प्राय: मिलता रहता है।' योगी ने आचार्यश्री की बात का खंडन किया। हिमालय के सिद्ध क्षेत्र में रहने से साधना में थोड़ी अनुकूलता रहती है। संसार क्षेत्र जैसे व्यवधान इधर नहीं आते। यहां के सिद्ध वातावरण का लाभ भी मिलता है लेकिन प्रत्यक्ष सान्निध्य जैसे मोह से बचना पड़ता है। योगी का आशय था कि गुरुदेव का सान्निध्य उन्हें भी यहां बहुत सुलभ नहीं रहा है।

आचार्यश्री ने कहा कि गुरुदेव का संदेशवाहक बनकर आप बहुत सौभाग्यशाली सिद्ध हुए हैं। योगी ने कहा कि इस तरह तो श्रीराम तुम मेरी और मुझ जैसे हजारों शिष्यों की तुलना में लाख गुना ज्यादा सौभाग्यशाली हो। तुम्हें तो गुरुदेव ने लाखों, करोड़ों लोगों के लिए अपना संदेशवाहक चुना है। आचार्यश्री के पास वीरभद्र के इस उत्तर का कोई प्रत्युत्तर नहीं था।

सुमेरू पर्वत की सीमा पार हो चुकी थी। वरुण वन शुरू हो गया था। वहां की मिट्टी नम थी, कहीं कहीं इतनी गीली कि कीचड़ सी लगने लगती थी लेकिन इस वन में वनस्पतियां बहुत थीं। देखकर आचार्यश्री को नंदनवन याद हो आया। चौखंबा शिखर दूर से ही दिखाई दिया। कहते हैं कि पांडवों ने यहीं से स्वर्गारोहण किया था। इसी तरह का एक शिखर तिब्बत के पास भी है। योगी ने बताया कि हिमालय में इस तरह के शिखर सरोवर और पर्वतों की भरमार है।

योगी के साथ चलते हुए शाम ढलने लगी। तपोवन की सीमा जहाँ समाप्त होती थी वहीं गौरी सरोवर था। मान्यता है कि पार्वती यहां सरोवर रूप में बिराजती हैं। पर्वत को शिव का रूप मानते हैं। गंगा ग्लेशियर के सहारे-सहारे आगे बढ़े। कुछ मील चलने पर एक झील दिखाई दी। उस झील किनारे दो संन्यासी ध्यान लगाए बैठे थे। वस्त्र के नाम पर उन्होंने विचित्र तरह का कौपीन पहना हुआ थे। वह पत्तों और वृक्ष की छालों से बना था। कारीगरी इतनी बारीक थी कि तपस्वियों को उसके लिए समय निकालने की बात नहीं सोची जा सकती थी। इस तरह के वस्त्र किन्हीं श्रद्धालुओं या आसपास कोई बस्ती हो तो वहां के लोगों ने ही दिए होंगे। चौखंभा शिखर के पास से गुजरते हुए दूर कुछ झोपड़ियां दिखाई दीं। समतल मैदान वहां नहीं था। झोपड़ियां बनाने के लिए समतल मैदान का उपयोग किया गया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'किसी समय यहां एक बड़ा गांव था सैकड़ों साल पहले। तब यहां सिद्ध साधक रहते थे। अब उनके वंशज रहते थे।' साथ चल रहे योगी ने बताया कि इस गांव में होते हुए चलना चाहिए। उस गांव का नाम था 'कलाप'। यह नाम क्यों पड़ा? आचार्यश्री के मन में प्रश्न तो उठा लेकिन उसमें ज्यादा उलझे नहीं। योगी ने कह दिया था कि गांव हजारों वर्ष पुराना है। महाभारत के समय भी यहां सिद्ध पुरुषों का वास था। धृतराष्ट्र ने इसी क्षेत्र में आकर उग्र तप किया था और परमधाम गए थे। भागवत में यहाँ सिद्धों, ऋषियों और तापस महात्माओं के सत्र लगने का उल्लेख आता है।

योगी के साथ आचार्यश्री ने कलाप ग्राम में प्रवेश किया। वे सीमा पर ही थे कि तीव्र प्रकाश की अनुभूति हुई। दिन का समय था। सूर्य का प्रकाश होना स्वाभाविक ही था लेकिन दिखाई दे रहा प्रकाश आभायुक्त था जैसे किसी स्वर्ण नगरी में पहुंच गए हों। गांव में प्रवेश करते ही वल्कल पहने योगी, कौपीन धारण किए बटुक और घुटे हुए सिर के संन्यासी दिखाई दिए थे। ये सभी लोग स्वस्थ थे। प्रत्येक की आयु में बाल, युवा और वृद्ध जैसा अंतर था लेकिन शरीर सभी के सक्रिय और सक्षम थे।

कलाप का अद्भुत लोक

गांव में गुलाब की भीनी-भीनी सुगंध व्याप्त थी। लगता था जैसे किसी उद्यान में आ गए हों। जहां तहां सुगंधित फूलों के पौधे लगे थे। झाड़ियां भी थीं और क्यारियां भी। उपवननुमा इस बस्ती में कहीं कहीं हवन कुंड बने थे। कुछ संन्यासियों को एक जगह बैठा देखकर योगी और आचार्यश्री रुके। सबसे बुजुर्ग दिखाई दे रहे उन संन्यासियों में से एक ने हाथ उठाकर आचार्यश्री को आशीर्वाद दिया।

उस संन्यासी का नाम सत्यानंद था। अपने बारे में वे बताने लगे कि पिछले साठ वर्षों से यहां निवास कर रहा हूँ। महायोगी त्र्यंबक बाबा ने मुझे यहां दीक्षा दी थी और साधन मार्ग की शेष यात्रा यहीं पूरी करने के लिए कहा था। तब से कलाप ग्राम छोड़कर कहीं और जाना नहीं हुआ।' अपनी बात बीच में रोककर सत्यानंद आचार्यश्री से पूछने लगे, 'तुमने भागवत शास्त्र में कलाप ग्राम का उल्लेख पढ़ा है न।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्यश्री ने सिर हिलाकर हां कहा। सत्यानंद फिर कहने लगे। उसके दशम स्कंध में नारद आदि ऋषियों के यहां आने और सृष्टि के बारे में विचार करने का उल्लेख आता है। पृथ्वी पर जब भी कोई संकट आता है या बड़े परिवर्तन आते हैं तो सिद्ध संत यहां मिल बैठते और सूक्ष्म जगत में संतुलन लाने के लिए विचार करते हैं।

सत्यानंद ने कहा, 'यह अकेला स्थान नहीं है। अवलोकित क्षेत्र, सिद्धाश्रम, ज्ञानगंज, कैलास और संबोधि भूमि इसी तरह के केन्द्र हैं। इनके अलावा और क्षेत्र भी होंगे। उनके संबंध में मुझे विशेष जानकारी नहीं है। 'अपने गुरु त्र्यंबक बाबा के बारे में सत्यानंद ने बताया कि उनके कई नाम हैं। महामुनि बाबा, महायोगी, शिवबाबा। प्रसिद्ध योगी श्यामाचरण लाहिड़ी ने उनके लिए 'महावतार बाबा' का श्रद्धा पद चुना। अब वे इसी नाम से जाने जाते हैं। सन् १९४६ में सर्वसाधारण के सामने उनका थोड़ा सा परिचय आया। सत्यानंद को अपने गुरु के संबंध में अलग ही तरह का अनुभव हुआ था।

सत्यानंद को बचपन से ही धुन सवार थी कि जीवन को परमसत्य की खोज में ही व्यतीत करना है। परंपरा के अनुसार आयु के तेरहवें वर्ष मे यज्ञोपवीत हुआ और तभी से नियमित संध्या गायत्री का जप और पूजा पाठ करने लगा। यज्ञोपवीत संस्कार के डेढ़ साल बाद उन्हें मलेरिया बुखार हुआ। उस समय मलेरिया का कोई इलाज ढूंढा नहीं जा सका था। सत्यानंद की हालत दिनोदिन खराब होती गई। डॉक्टर ने बचने की उम्मीद छोड़ दी। कह दिया कि रोगी जो भी खाना चाहे, खाने दें। जैसे रहना चाहे रहने दें। परहेज और इलाज से कोई फायदा नहीं होगा। घर के लोग रोने पीटने लगे। सत्यानंद तब अर्धचेतन अवस्था में थे। वे भी अपने जीवन से निराश हो गए थे। सिरहाने बैठी मां भगवद्गीता का पाठ सुनाने लगी। उस अवस्था में ही सत्यानंद ने अनुभव किया कि एक कन्या सिरहाने बैठी है और कह रही है कि आप चिंता न करें आपका मृत्यु योग टल गया है।

कन्या सत्यानंद के सिर पर हाथ भी फेरती जा रही थी। उसके हाथ फेरने के कुछ क्षण बाद ही बुखार उतरने लगा घरवालों के चेहरे पर प्रसन्नता खिलने लगी। तीन दिन में ज्वर पूरी तरह ठीक हो गया। डाक्टरों ने देखा तो उन्हें भी आश्चर्य हुआ। सत्यानंद को बाद में बोध हुआ कि रुग्ण अवस्था में उन्हें दर्शन देने और ढाढ़स बंधाने वाली शक्ति कोई और नहीं स्वयं वेदमाता गायत्री

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ही थी। इस घटना के बाद सत्यानंद ने आगे पढ़ना छोड़ दिया उस वर्ष की परीक्षा भी नहीं दी। विद्यालय या शिक्षा अधिकारियों की ओर से कोई रुकावट नहीं थी। सत्यानंद का मन ही नहीं हुआ कि परीक्षा दें। वैराग्य जाग गया और सात आठ महीने बाद हिमालय की ओर निकल गये। त्र्यंबक बाबा ने यहीं दर्शन दिए। उन्हीं के दिए संकेतों के आधार पर कलाप ग्राम पहुँचे और इसे अपनी साधना भूमि बनाया।

बस्ती में शान्ति व्याप्त थी। लेकिन वह शांति सन्नाटे का प्रतिरूप नहीं थी। उसमें उल्लास का पुट था। गांव में पैंतीस-चालीस कुटियाएं थीं। प्रत्येक कुटिया में एक साधक परिवार था। परिवार का अर्थ गुरु और उनके शिष्य से है। सत्यानंद ने स्वयं कहा और भागवत का उल्लेख भी किया। द्वापर के अंत में आसुरी आतंक बढ़ने लगा और सत्ता की होड़ में नीति अनीति, पुण्य पाप, धर्म अधर्म का भेद भुलाया जाने लगा। स्वार्थ और आपाधापी ने मनुष्य को नरपिशाच बना दिया तो कलाप ग्राम में मुनियों का सत्र आयोजित हुआ। उसमें नारद, व्यास, मैत्रेय, जमदग्नि, गौतम आदि ऋषियों ने अपने समय की समस्याओं पर गहन विचार किया। पृथ्वी पर ईश्वरीय चेतना से हस्तक्षेप की रूपरेखा बनाई और सृष्टि का संरक्षण, पोषण करने वाली दिव्य चेतना को स्थूल रूप में व्यक्त होने के लिए मनाया गया।

सत्यानंद ने कहा कि कृष्णावतार या उनसे भी पहले राम, परशुराम आदि अवतारों को सृष्टि में संतुलन के लिए दैवी हस्तक्षेप के रूप में ही समझना चाहिए। ऐसा हस्तक्षेप जिसे ऋषिस्तर की चेतनाएं आमंत्रित करती हैं। उस चर्चा के बाद योगी और आचार्यश्री कलाप ग्राम से बाहर निकले और आगे की यात्रा पर निकल पड़े। यह यात्रा पैदल ही हो रही थी। कहीं ऊंची चढ़ाई चढ़ना होती तो कहीं उतार होता। खड्ड खाइयों से बचने के लिए पर्याप्त सावधानी आवश्यक थी। आचार्यश्री को इसकी चिंता नहीं थी। मार्गदर्शक सत्ता के भेजे हुए प्रतिनिधि के लिए हिमालय के ये अगम्य क्षेत्र सुपरिचित से थे।

गौरीशंकर के पास पहुँचते-पहुँचते चारों ओर बर्फ ही बर्फ दिखाई देने लगी। वृक्ष वनस्पति या जीवजंतु का कहीं नामनिशान नहीं था। योगी ने एकाध स्थान पर सावधान किया कि संभल कर चलना। यहां बर्फ पर पांव फिसल सकता है। आचार्यश्री ने विनोद किया कि गुरुदेव के संरक्षण में यात्रा हो रही हो, आप जैसा सिद्ध संन्यासी साथ में हो तो फिसलने का भी क्या भय है? कदाचित कोई पांव उलटा सीधा पड़ गया तो आप संभाल ही लेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

योगी ने इस विनोद को आगे बढ़ाया, 'अगर तुम्हारी बात का सचमुच यही आशय है तो यह भी ध्यान रखना चाहिए कि गुरुदेव पांव की हड्डी को चटखने की अनुमति भी दे देंगे।' एक स्थान पर बर्फ की बनी हुई गुफा दिखाई दी। उसमें से हर हर महादेव की ध्वनि आ रही थी। यह ध्वनि जप साधना में लगे किसी साधक के मुंह से निकली हुई आवाज नहीं थी। लग रहा था जैसे कोई स्नान कर रहा हो। आचार्यश्री ने विस्मित होते हुए कहा, 'इस गुफा में भी कोई झरना है क्या? लगता है कोई तपस्वी स्नान कर रहा हो।'

उत्तर मिला 'नहीं। कोई तपस्वी नहीं बल्कि तपोनिष्ठ विभूति है बाबा कीनाराम। प्रत्यक्ष जगत से उपराम होने के बाद इसी सिद्ध क्षेत्र में रमण कर रहे हैं।'

बाबा कीनाराम के बारे में आचार्यश्री ने अच्छी तरह पढ़ा हुआ था। इस संत ने औघड़ संप्रदाय का प्रवर्तन भले ही न किया हो लेकिन अपनी परंपरा में उनकी ख्याति सबसे ज्यादा है। जन्म उनका लगभग चार सौ साल पहले हुआ था। तंत्र और योग मार्ग के सिद्ध साधकों में लगभग प्रत्येक ने उनसे कभी न कभी मार्गदर्शन पाया था। चार सौ वर्ष पूर्व उनका जन्म और जीवन भी असाधारण ही था। औघड़पन उनमें बचपन से ही था और मर्यादा पुरुषोत्तम राम के प्रति भक्ति भी।

उनके संबंध में कई चमत्कारी घटनाएँ प्रसिद्ध हैं। इनमें कई अतिरंजित भी होंगी लेकिन लोग उन्हें बहुत श्रद्धा से स्मरण करते हैं। बचपन की एक घटना तो यही विख्यात है कि उन्हें अपनी पत्नी के निधन का तत्क्षण पता चल गया था। उन दिनों छोटी उम्र में विवाह हो जाना आम बात थी। बारह वर्ष की उम्र में ही उनका विवाह हो गया और तीन साल बाद गौने की तिथि तय हो गई।

सिद्ध शिष्य

यात्रा के एक दिन पहले कीनाराम ने अपनी मां से दूध और भात मांगा। मां ने मना किया कि दूध भात नहीं, दही भात खा लो। कीनाराम नहीं माने। मां को लाचारी से दूध भात ही देना पड़ा। अगले दिन जब गौने के लिए रवाना होने लगे तो खबर आई कि पत्नी का निधन हो गया है। मां रोने लगी और कीनाराम को कोसते हुए कहा, 'मैं समझ गई थी कि कोई न कोई अशुभ होना ही है। यात्रा के समय कोई दूध-भात खाता है क्या?'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कीनाराम ने कहा, नहीं माँ मैने तुम्हारी बहू के मरने के बाद ही दूध भात खाया। विश्वास नहीं हो तो किसी से पूछ लो। वह कल शाम को ही मर गई थी। मैंने तो रात को दूध भात खाया है। 'मां के माध्यम से यह बात पूरे गांव में फैल गई थी। लोगों को भी आश्चर्य हुआ कि कीनाराम को आखिर इस बात की जानकारी कैसे हुई।'

इस घटना के कुछ दिन बाद ही पुर्नविवाह की बात चलने लगी लेकिन कीनाराम ने इनकार कर दिया। घर के लोगों का दबाव फिर बढ़ता ही गया। इन दबावों से पिंड छुड़ाने के लिए कीनाराम घर से निकल गये। घूमते घामते गाजीपुर आए। उन दिनों गाजीपुर में रामानुजी सम्प्रदाय के अनुयायी सन्त शिवराम रहते थे। कीनाराम ने उनसे कहा कि आपके पास रहने और साधना करने की इच्छा थी। शिवराम जी ने उन्हें अपने यहां रख लिया। गुरु की सेवा के बाद जितना समय मिलता था वे उतनी देर भजन करते और मस्त रहते। एक दिन उन्होंने दीक्षा देने के लिए कहा पर शिवराम जी ने उसे टाल दिया। कुछ दिन बाद फिर अनुरोध किया। शिवराम जी ने फिर टाल दिया। कीनाराम बराबर याद दिलाते रहे। अन्ततः कई महीनों बाद परीक्षा लेने पर शिवराम ने कहा 'कीनाराम चलो गंगा तट पर तुम्हें दीक्षा देते हैं।'

गुरु का आदेश पाते ही कीनाराम प्रसन्न मन उनके साथ चल दिए। रास्ते में अपना आसन, कमण्डल कीनाराम को देते हुए उन्होंने कहा 'तुम यह सब लेकर घाट पर चलो, मैं आता हूँ।'

गुरुदेव की सामग्री लेकर कीनाराम घाट पर आकर बैठ गया। थोड़ी देर बाद उन्होंने महसूस किया कि गंगा की लहरें उनके पैरों पर आकर टकरा रही है। कीनाराम ने आचमन किया और कुछ ऊपर जाकर बैठ गए। थोड़ी देर बाद फिर वैसा ही हुआ। कीनाराम फिर उठे और काफी ऊपर जाकर बैठे। वहां भी गंगा आकर उनके पैरों से टकराने लगी। इस घटना को देखकर वह हक्के बक्के रह गए। उनके पीछे बाबा शिवराम मौन खड़े यह दृश्य देख रहे थे। उन्हें लगा कि कीनाराम अवश्य ही असाधारण व्यक्ति है। यह विलक्षण घटना थी। स्नान करने के बाद बाबा शिवराम कीनाराम को लेकर मन्दिर में गए और वहीं दीक्षा दी। दीक्षा ग्रहण करने के बाद कीनाराम प्रचंड रूप से जप साधना में लग गए। गुरु प्रेरणा से वे फिर स्वतंत्र घूमने लगे। समय आने पर हिमालय आ गए।

□

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरुर्देवो महेश्वरः

उस गांव का नाम था गरव्यांग। प्राचीन काल में संभवतः गर्वांग या गौरांक रहा होगा। आचार्यश्री ने अनुमान लगाया कि गौरांक ही ज्यादा सही है। गौरांक अर्थात् गौरी का अंक, गौरी यानी पार्वती और उनका अंक अर्थात गोद। पार्वती की गोद में बसे गांव का वैभव वर्णनातीत ही होना चाहिए। लेकिन गरव्यांग को देख कर ऐसा कुछ नहीं लगता था। पुराने मकान खंडहर बन चुके थे। जमीन जगह-जगह धंस रही थी। साथ चल रहे योगी ने बताया कि प्राचीनकाल में यह गांव योग विभूतियों से संपन्न था। सैकड़ों साधक यहां रहते थे। बाद में गांव उजड़ने लगा।

उजड़ने का कारण? वीरभद्र बताने लगे कि भूमि स्खलन के कारण इस क्षेत्र में गांव बसते उजड़ते रहते हैं। आचार्यश्री ने कहा कि लेकिन इस गांव के साथ यह बात नहीं रही होगी। यहां जब सैकड़ों योगी और साधक निवास करते थे तो उनके पुण्य प्रताप से ही गांव का संरक्षण हो जाना चाहिए था। प्रकृति की बाधाओं और बंधनों का अतिक्रमण करने में लगे योगी यति अपनी साधना स्थली को नहीं बचा पाए। इसका कोई कारण समझ में नहीं आया। योगी ने आचार्यश्री के मन में चल रही इस उथल पुथल को शायद समझ लिया था। उसने स्पष्ट किया कि साधना स्थली सामान्य ग्रामों या बस्तियों की तरह नहीं होती। शिखर पर स्थित हो जाने के बाद वहां बने रहने के लिए भारी सावधानियां रखनी पड़ती हैं।

इन मार्गों पर चलते हुए आचार्यश्री के मन में यह सवाल भी उठा कि पिछली बार तो गुरुदेव के दर्शन नंदनवन से कुछ आगे आते ही हो गये थे। इस बार घुमावदार रास्तों से और बस्तियों, आश्रमों से होते हुए गुजरना पड़ रहा है। इस प्रश्न का उत्तर भी अंतःक्षेत्र में ही उभर रहा था। तब उनका प्रतिनिधि यह गुरु भाई साथ नहीं था। इस क्षेत्र का परिचय कराने के उद्देश्य से ही गुरुदेव ने इसे यहां वहां से लाने का निर्देश दिया होगा। गुरुभाई चुपचाप साथ चल रहा था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्यश्री को ध्यान आया कि गुरुभाई ने कुछ दूर पहले से वाणी को नियंत्रित कर लिया है। वह अपेक्षाकृत कम बोल रहा है। करीब आधा घंटा चलने के बाद योगी ने हाथ से रुकने का संकेत किया। फिर एक स्वच्छ शिला देखकर उस पर बैठने के लिए कहा। स्वयं सामने रखी शिला की ओर देखा और बिना कुछ कहे दूसरी दिशा में चला गया। कुछ ही मिनट बाद वह वापस आ गया। वापसी के समय उसके हाथ में कोई फल जैसी वस्तु थी। उसे आचार्यश्री के सामने बढ़ाया और कहा कि इसे खालो। बहुत देर से कुछ नहीं खाया है। भूख लग रही होगी।

साथी के याद दिलाते ही आचार्यश्री को क्षुधा का अनुभव हुआ। याद आया कि कलाप ग्राम पहुँचने से पहले ही कुछ कंदमूल लिए थे। वे जो खाद्य दे रहे थे, वह भी कंद ही था। उसे देखते ही पिछले आहार का ध्यान आया। वह आहार लेने के बाद आचार्यश्री को अभी तक भूख नहीं लगी थी। थकान का अनुभव नहीं हुआ था और न ही प्यास लगी थी। गुरुभाई ने सेव के आकार का वह कंद देने के बाद कहा, 'अब मैं यहां से विदा लूंगा। गुरुदेव स्वयं आगे का मार्ग दिखाएंगे।'

सुनकर मन में उल्लास फूटा। उत्सुकता भरा रोमांच हुआ। तीस पैंतीस वर्ष पहले इसी क्षेत्र में उनके साथ कुछ समय व्यतीत किया था। वीरभद्र ने आचार्यश्री से एक बार फिर आहार लेने के लिए कहा और स्वयं भी उसी तरह का कंद खाने लगा। आहार ग्रहण कर लेने के बाद दोनों ने थोड़ा जल पिया। गुरुभाई ने पूछा, 'मन में कोई संदेह या प्रश्न तो नहीं उठ रहे हैं न।'

अपने प्रश्न पर फिर वह हंस भी दिया। 'तुम तो पहले भी यहां आ चुके हो। याद होगा कि सामान्य लोग यहां तक नहीं पहुँच सकते। अच्छे से अच्छा पर्वतारोही या हिमनिद्रा का अभ्यस्त कोई प्राणी भी। यहां के वातावरण को सह पाना किसी के लिए भी संभव नहीं है। मैं वायुमंडल और जीवित रहने के लिए उपयुक्त परिस्थितियों की ही बात नहीं कर रहा। यहां व्याप्त आध्यात्मिक तरंगे भी लोगों को आने से रोकती हैं। उनके लिए बाड़ सी लगा देती हैं।'

साथी ने बताया कि इस क्षेत्र में अकेले ही गुरुदेव की प्रतीक्षा करनी है। इस खाद्य के अलावा कुछ नहीं लेना है। गुरुदेव आदेश दें तभी कुछ ग्रहण करना है। कहते हुए उसने साथ लाए कंद सौंप दिए। वे मात्रा में थोड़े ही थे। आचार्यश्री ने उन्हें शिला के पास ही रख लिया। जब गुरुदेव का वीरभद्र जाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लगा तो उसने उठ कर आचार्यश्री को प्रणाम किया। चलते चलते कहा कि अगर मन हो तो आसपास के क्षेत्र में भ्रमण कर सकते हो। अकेले या गुरुदेव के निर्देश के बिना योजन भर क्षेत्र से बाहर नहीं निकलना है।

कालीपद के जाने के बाद आचार्यश्री कुछ देर बैठे रहे। मन में तरंग उठी कि बहुत दिनों से डायरी नहीं लिखी है। तरंग उठते ही हाथ अनायास कागज कलम तलाशने के लिए सामान की तरफ बढ़े। तभी डायरी लिखने पर प्रतिबंध की बात भी याद आ गई और वे स्थिर होकर बैठ गए। शिला पर ही उन्होंने आसन लगाया और ध्यान में प्रवेश किया। मन समय और क्षेत्र स्थिति का अतिक्रमण कर गया। प्रतीत होने लगा कि तीस बत्तीस वर्ष पहले का समय जीवंत हो उठा है। गुरुदेव इस स्थान पर आने से पहले ही मिल गए थे। नंदनवन में ही उनका सान्निध्य प्राप्त हो गया था और वे अपने संरक्षण में ही इस क्षेत्र तक लाए थे।

नंदनवन तक उनके एक अन्य गण ने मार्गदर्शन किया था। नाम था उसका वीरभद्र। कालीपद के लिए भी आचार्यश्री ने बीच बीच में यही संबोधन प्रयुक्त किया था। पूरी यात्रा चुपचाप ही संपन्न हुई थी। समय भी ज्यादा नहीं लगा था। जिस टीले पर उनसे भेंट हुई थी वह भी दिखाई दिया। वहां व्याप्त दिव्य सुगंध, उस सुगंध और सुषमा के बीच प्रकट हुए गुरुदेव। उनके साथ एक गुफा में प्रवेश। वहां अपने लिए धूनी और उसके पास स्थित शिला। गुरुदेव के हाथों मिला संजीवनी रस और वह रस पी लेने के बाद आ गई योगनिद्रा। योगनिद्रा से जागने के बाद गुरुदेव का नहीं दिखाई देना। फिर गुफा से बाहर निकलना और वहां एक युवा संन्यासी का मिलना। उसके द्वारा नंदनवन का परिचय और वीरभद्र द्वारा दिए गए आहार जैसा ही कोई कंद दिए जाने के दृश्य मानसपटल पर उभर आए।

तापस वृक्ष की छाया

उन्हें याद आया कि पिछली यात्रा में जिस गुफा के भीतर गुरुदेव ने संजीवनी रस पिलाया था वह यहीं कहीं होना चाहिए। वे शिला से उठे और पहाड़ी से नीचे की ओर उतरने लगे। आगे बढ़े तो पाया कि घाटी में सघन छायादार वृक्ष लगे हुए हैं। हिमालय की यात्रा करते हुए कई सप्ताह हो गए थे। कहीं भी इतने सघन छायादार वृक्ष नहीं दिखाई दिए थे। टहलते हुए वे सोचते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रहे कि पिछली बार जब इस क्षेत्र में आना हुआ था तो इस तरह के वृक्ष नहीं थे। संभव है इस अंतराल में उग आये हों या उस शिला से पहाड़ी की दूसरी दिशा में आ गए हों। एक वृक्ष के नीचे कुछ देर के लिए रुकने का मन हुआ। रुके तो इच्छा जगी कि यहां कुछ देर बैठा जाए। छाया के लिए वृक्ष का आश्रय लेने की आवश्यकता नहीं थी।

सविता देव अपनी पूरी प्रखरता से आकाश में चमक रहे थे। उनकी किरणों में आंच तो थी लेकिन ताप नहीं था। ताप था भी तो वह चारों ओर फैली बर्फ के कारण अनुभव नहीं हो रहा था। आचार्यश्री सहज भाव से पेड़ की छाया में गये और उसके तने, शाखाओं, टहनियों और पत्रों को निहारने लगे। प्रतीत हुआ कि यह कोई ऋषि आत्मा है या सदियों से तप कर रहा तपस्वी। वृक्ष इतना जीवंत लग रहा था कि जैसे अभी ही बोल उठेगा। राम-राम जपते हुए रत्नाकर का शरीर जिस तरह दीमकों का घर हो गया था और वे वाल्मिकी बन गए थे, उसी तरह जैसे कोई तापस यहां वृक्ष रूप हो गया था।

कुछ देर उस तापस वृक्ष के पास बैठकर आचार्यश्री आगे बढ़े। घाटी की सुषमा को निरखते हुए वे आगे तक चलते रहे। डेढ़ दो फर्लांग चलने के बाद एक और स्मृति ताजा हो आई। वह झील आ गई थी जहां पिछली यात्रा में सिद्ध, तापसों से भेंट हुई थी और अपनी मार्गदर्शक सत्ता के साथ ब्रह्मकमल गंध का आस्वाद लिया था। इस बार इतना ही अंतर था कि गुरुदेव साथ नहीं थे। आगे की यात्रा अकेले ही संपन्न करना थी। खिले हुए ब्रह्मकमल के पास तक स्वयं ही गए। उसका स्पर्श किया और अनुभव हुआ कि शरीर बहुत हलका हो गया है। मार्ग पर पग बढ़ाते है तो लगता है जैसे जरा भी श्रम नहीं करना पड़ता। इच्छा मात्र से कदम उठ जाते थे।

आगे बढ़ने का मन हुआ लेकिन कालीपद का दिया हुआ निर्देश याद आ गया। योजन भर क्षेत्र से ज्यादा आगे नहीं जाना है। गुरुदेव के साथ या उनका निर्देश मिलने पर ही आगे बढ़ना है। उस प्रतिबंध को याद कर आचार्यश्री वापस झील के किनारे आ गए। वहां बैठकर खिले हुए कमलों को निहारने लगे। कितनी देर तक बैठे निहारते रहे कुछ पता नहीं लगा। लगा कि चेतना कमल से तदाकार हो गई है। पिछली यात्रा में इसी झील से गुरुदेव ने ब्रह्मकमल का चयन किया था। उसी तरह के कमल इस बार भी दिखाई दे रहे थे। उन्हें देखते देखते लगा कि एक सुंदर सुगंधित पुष्प अपने स्थान से ऊपर उठा और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हवा में तैरता हुआ सा निकट आ गया। अत्यंत निकट-हृदय को स्पर्श करता हुआ प्रतीत हुआ। प्रतीति प्रत्यक्ष अनुभव जैसी थी। क्षण भर में ही यह भी लगने लगा कि वह आत्मसात हो गया है। इस प्रतीति के क्षण भर बाद ही लगा कि अपना आपा ही कमल का रूप लेता जा रहा है। अंतराल के कुछ क्षणों में यह भी लग रहा था कि चारों ओर कमल ही कमल हैं-ब्रह्मकमल। दिव्य गंध और शोभा सुंदरता से युक्त ब्रह्मकमल ही ब्रह्मकमल।

ब्रह्मकमल रूप हो गई उस चेतना को सहज स्थिति में आने में समय लगा। वह परिचित और प्रतीक्षित पुकार सुनाई नहीं देती तो आचार्यश्री झील के पास पता नहीं कब तक बैठे रहते। झील, ब्रह्मकमल और दसों दिशाओं में विस्तीर्ण दिखाई दे रहे देवात्मा हिमालय में चित्त रमा हुआ था कि गुरुदेव की पुकार सुनाई दी। उन्होंने नाम लेकर पुकारा था। साथ ही उठने के लिए भी कहा था। चित्रलिखित से बैठे आचार्यश्री के शरीर में जैसे विद्युत तरंगें दौड़ गई। पुकार सुनते ही वे तत्क्षण स्फूर्त हुए और उठकर मार्गदर्शक सत्ता के चरणों में झुक गये। गुरुदेव ने उन्हें अपने साथ चलने का संकेत किया। आचार्यश्री चुपचाप उनका अनुगमन करने लगे।

अनुग्रह के लिए तप

मार्गदर्शक सत्ता ने सावधान किया कि यहां से जो भी शक्तियां अर्जित हों, उन्हें अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए प्रयोग में नहीं लाना है। ये सिर्फ उन लोगों का कर्मबंध काटने के लिए होंगी जिनकी चेतना में दैवी उभार आया है और जो अगले दिनों संपन्न होने जा रही युग प्रत्यावर्तन प्रक्रिया में सहयोगी भूमिका निभा सकते हैं। इन शक्तियों का उपयोग उनके लिए उन्हें बिना बताए करना है।

गुरुदेव के साथ चलते हुए शरीर पूरी तरह निर्भार लग रहा था। रुई के नर्म गोलों से भी कम हलका। सांसों की गरमाहट जैसे साधारण ताप की अनुभूति हो रही थी। चलते चलते यह भी अनुभव हुआ कि शरीर का अस्तित्व जैसे एक लौ के समान है। चलती फिरती लौ, मार्गदर्शक सत्ता, प्रकाशपुंज की तरह अनुभव हो रही थी। उनका स्वरूप मानव आकृति के रूप में दिखाई दे रहा था लेकिन वह देह अस्थि चर्म से नहीं शुद्ध प्रकाश से बनी प्रतीत हो रही थी। अपने संबंध में सिर्फ आभास ही था कि शरीर नीली लौ की भांति है। उसका स्पर्श किया जा सकता था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्यश्री ने अपनी जागृत स्थिति को अनुभव करने के लिए दो तीन बार स्वयं को सहला कर भी देखा था। सामान्य स्थिति में स्पर्श का जैसा अनुभव होता था वैसा ही इस बार भी लगा। शरीर हल्का हो तो पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति का उतना प्रभाव नहीं पड़ता। उसे वेधकर इच्छित गति से आसानी से यात्रा की जा सकती है। उस नियम के अतिक्रमण का ही परिणाम था कि यात्रा सहज हो रही थी। बीच में कहीं रुके तो भले ही थोड़ा समय लगा अन्यथा आधा घंटे के भीतर ही सौ मील से ज्यादा क्षेत्र की यात्रा हो गई।

पिछली यात्रा में यह क्षेत्र सर्वथा निर्जन दिखाई दिया था। साधकों और यतियों की उपस्थिति के संकेत तो मिले थे लेकिन किसी से भेंट नहीं हुई थी। इस बार की यात्रा में कहीं कहीं यति योगी दिखाई दिए थे। आचार्यश्री के मन में तरंग उठी कि ये लोग संसार में रह कर भी साधना कर सकते हैं। वहां साधना करें तो ज्यादा पुरुषार्थ होगा। यहां एकांत, निर्जन और अपने जैसे ही अकिंचन अपरिग्रही लोगों के बीच साधना की क्या चुनौती? कहीं कोई प्रलोभन ही नही है तो परीक्षा कहां से होगी?

गुरुदेव ने जैसे उनकी तरंग को पकड़ लिया था। कहा कुछ नहीं सिर्फ एक बार दृष्टि भर डाली और आचार्यश्री के मन में समाधान स्वयं ही संप्रेषित हो गया। उत्तर आया था कि इन सिद्ध यतियों को अपने लिए साधना की आवश्यकता नहीं है। वे स्वयं तो मोक्ष के द्वार तक पहुँच गए हैं। जगत के कल्याण के लिए यहां अनेक विध तप अनुष्ठान कर रहे हैं।

आचार्यश्री ने अपनी मार्गदर्शक सत्ता को श्रद्धाभाव से निहारा। गुरुदेव ने उन्हें देखकर बैठ जाने का संकेत किया। आचार्यश्री नीचे जमीन पर बैठ गए। गुरुदेव भी उनके सामने ही बैठे। आचार्यश्री को संकोच हुआ। आसपास देखा कोई उच्चासन दिखाई नहीं दिया कि गुरुदेव के लिए वह प्रस्तुत करें। कंधे पर रखा अंगवस्त्र उतारा और बिछाते हुए गुरुदेव से उस पर बैठ जाने का अनुरोध किया। शिष्य का मन रखने के लिए गुरुदेव उठे और यह कहते हुए उस पर बैठ गए कि गुरु और शिष्य में कोई अंतर नहीं है। सिर्फ कक्षा ही अलग है। गुरु जिस वृक्ष का पका हुआ फल है शिष्य उसी वृक्ष की कच्ची और हरी टहनी है। दोनों एक ही सत्ता के समतुल्य अंग हैं।

गुरुदेव का यह उद्‌बोधन सुनकर आचार्यश्री ने कहा यह वक्तव्य आपकी ओर से आया है। आप आराध्य हैं, स्वयं कह सकते हैं लेकिन मैं शिष्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के अधिकार से ही बोल सकता हूँ। वह यह कि मुझे श्रीचरणों में बना रहने दें। आचार्यश्री की इस विनय पर गुरुदेव ने विशेष ध्यान नहीं दिया और सामने पूर्व दिशा की ओर इंगित किया। देखा, जिधर संकेत किया था उस घाटी में कई तापस जप, तप और ध्यान में लगे हुए थे। क्षेत्र में चौबीस यज्ञकुंड बने थे। उनमें से यज्ञधूम्र उठ रहा था। अग्निशिखाएं उठ रहीं थीं जैसे अभी कुछ क्षण पहले ही साधक अग्निहोत्र कर उठे हों। अग्निशिखाएं स्वर्णिम आभा लिए हुए थीं। उन पर नील आभा छाई हुई थी। कुछ कुंडों पर अब भी आहुतियां दी जा रहीं थीं।

आहुतियां देते या जप तप करते हुए जो संन्यासी दिखाई दिए उनमें कई नए थे। यद्यपि वे सभी उम्र और देह स्थिति वाले थे। शरीर की अवस्था देखकर वे तीस वर्ष से अस्सी वर्ष की उम्र के बीच के लगते थे। आचार्यश्री ने नए दिखाई दिए संन्यासियों को पहचाना और याद करने लगे कि उन्हें लौकिक क्षेत्र में कहां देखा है। एक संन्यासी के बारे में याद आया कि उनसे रामेश्वरम में भेंट हुई है। अब से पंद्रह बीस साल पहले। तब वे गायत्री महायज्ञ के सिलसिले में वहां गए थे। स्थानीय लोगों का विरोध बढ़ने पर वे आचार्यश्री के पक्ष में लोगों को संगठित करने आए थे। उन्हीं के कारण स्थानीय पुरातन-पंथी पंडितों को बाहुबल से हस्तक्षेप करने की हिम्मत नहीं हो पाई थी। अपनी ओर आचार्यश्री को देखते हुए उस योगी ने भी देखा लेकिन वह सिर्फ एक दृष्टि निक्षेप था। अगले ही पल वे अग्निहोत्र कर्म में लग गए। गुरुदेव ने आचार्यश्री की ओर देखा और कहने लगे, 'हाँ यह वही साधक है जिसने रामेश्वरम् में तुम्हारी मदद की थी। और भी लोगों को देखोगे तो पहचानोगे या आगे कभी तुम्हारे सामने या तुम्हारे किसी काम में यह लोग मदद करने आएगें।'

यज्ञ कर रहे उन ऋषियों में कुछ को सहस्र कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के समय देखा था। समय का कोई अनुमान नहीं लगाया जा सकता था। करीब एक घंटा ही बीता होगा कि पूर्व दिशा में स्वर्णिम प्रकाश दिखाई देने लगा था। सविता देव उज्ज्वल धवल बर्फ पर अपनी किरणें बिखेरते हुए ऊपर क्षितिज पर चढ़ रहे थे। आचार्यश्री ने उठकर सविता देव को प्रणाम किया। गुरुदेव की वंदना की। प्रणाम और वंदना करते हुए आचार्यश्री उठकर खड़े हो गए थे। गुरुदेव ने कुछ निकट आने और बैठ जाने का संकेत किया।

आचार्यश्री बैठ गए थे तो गुरुदेव ने अपना दाहिना हाथ उठाया और उसका अंगूठा धीरे से उनकी भवों के मध्य लगाया। आज्ञाचक्र या भ्रूमध्य में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अंगूठे के स्पर्श के साथ गुरुदेव की अंगुलियां आचार्यश्री के सिर का स्पर्श करने लगीं। उन्होंने कुछ कहा नहीं लेकिन आचार्यश्री ने अनुभव किया कि जैसे गुरुदेव ध्यान से देखने के लिए कह रहे हों। अंगूठे का स्पर्श होते ही उनके नेत्र मुंदने लगे थे और भीतर एक दूसरा ही जगत दिखाई देने लगा था। प्रतीत हुआ कि एक आकृति उभर रही है और विस्तीर्ण होती जा रही है। विस्तार लेते हुए वह विराट रूप धारण कर गया।

वह आकृति भयावह भी थी और सौम्य थी। वह आकृति मानवीय थी लेकिन जगत के संबंध में जो भी कल्पना की जा सकती थी वह सब उसमें दृष्टिगोचर हो रहा था। लगता था कि उस दृश्य में अग्नि, सूर्य, पृथ्वी, ग्रह, नक्षत्र आदि घटक दिव्य और अप्रमेय रूप में अपने आप व्यक्त हो रहे थे। विराट् जगत या रूप इतना सक्रिय दिखाई दे रहा था जैसे वहां सभी दिशाओं में हाथ फैले हों और वे अलग अलग कर्म कर रहे हैं। जगत के घटकों की संरचना का, उनके संरक्षण का और साथ ही जराजीर्ण हो चुके घटकों को तोड़ने मरोड़ने का भी। दृश्य इतना विराट था कि जैसे उसमें तीनों लोक समा गए हैं।

अर्चना स्तुति से परे

उस रूप के बाहर अनेक ऋषि, योगी, देवता, दानव, नृप, विद्वान और योद्धा इस विराट् रूप की अर्चना करते हुए खड़े हैं। इस स्तुति को विराट सत्ता न सुन रही है और न ही उनकी ओर देख रही है। लेकिन उसकी विशाल आंखों से कुछ छुपा हुआ भी नहीं है। बहुत विशाल होते हुए भी वे जैसे एक एक कण को निरख रही है। उस स्वरूप को देखते हुए अस्तित्व के विभिन्न रूप भयभीत हो रहे हैं। थर-थर कांप रहे हैं। उनमें कई उड़ते हुए से उस स्वरूप के भीतर समा रहे हैं जैसे धूल के कण उड़कर शरीर से चिपकते है या सूक्ष्मीक्षण यंत्र से देखने पर सांस लेते समय नासापुटों में जा रही हवा के साथ असंख्य कण भीतर प्रवेश करते दिखाई दें। उस स्वरूप का ब्रह्माण्ड की भांति विस्तार होता जा रहा था। कहीं कोई अवकाश था ही नहीं।

लगा कि आचार्यश्री स्वयं भी उस स्वरूप में समा गए हैं। वह स्वरूप एक साथ मधुर, दिव्य, आकर्षक, विकराल, विद्रूप, भयावह, भीषण और अलौकिक सब कुछ था। फिर लगा कि वह विस्तार सिमटता जा रहा है। सिकुड़ते सिकुड़ते लुप्त हो गया है और तिरोहित भी। तिरोहित होते ही आचार्यश्री

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ने देखा, गुरुदेव खड़े हैं। उन्होंने कपाल और सिर को आवृत्त करता हुआ अपना हाथ हटा लिया है और उनका दांया पैर कंधे पर रखा हुआ है। अपने कंधे पर पैर रखे होने की स्थिति में ही आचार्यश्री ने कुहनियों तक हाथ जोड़कर गुरुदेव को प्रणाम किया और शांत भाव से बैठ गए। उनकी दृष्टि मार्गदर्शक सत्ता पर टिकी हुई थी। उसमें कोई भी प्रश्न, जिज्ञासा या प्रतीक्षा का भाव नहीं था। चेहरे पर तृप्ति और शांति का भाव था।

गुरुदेव ने कहा, 'परम सत्ता अपनी अनंत भुजाओं से समस्त लोकों का आलिंगन किए हुए है। अपने लाखों हाथों से वह उनका निर्माण, पोषण और संहार करती है। सूर्य और चंद्रमा जैसे उनके नेत्रों में एक साथ भस्म कर देने वाला तेज और दाहक ताप को शांत करने वाली सौम्य शीतलता के साथ अग्नि की प्रचंड लपटों जैसी उनकी जिह्वाओं को अंतश्चक्षुओं से प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। कल कल बहते झरनों के मधुर संगीत सहित वेगवती नदियों की धाराओं की विविध अभिव्यक्तियां उस सत्ता के ही स्फुलिंग है।

कहते-कहते मार्गदर्शक सत्ता मौन हुई। आचार्यश्री ने नतमस्तक होकर उनके चरणों की ओर देखा जैसे पूछ रहे हों कि इस अनुग्रह के साथ क्या आदेश है। मार्गदर्शक सत्ता ने कहा, 'सर्वशास्त्रमयी जिस मंत्र ने तुम्हारी चेतना को इस शिखर तक पहुँचाया है, उसके माध्यम से इस विराट पुरुष की आराधना करो। विश्वरूप परमसत्ता के रोम रोम को इन अक्षरों से सजाओ।'

आचार्यश्री अपनी मार्गदर्शक सत्ता के सामने फिर नतमस्तक हुए। यह उनकी आज्ञा शिरोधार्य करने का प्रतीक था। गुरुदेव ने फिर कहा, 'महाकाल एक बार फिर जराजीर्ण और अवांछनीय को नष्ट करने का संकेत कर चुका है। उस ध्वंस से जो रिक्त होगा उसे भरने के लिए सृजन की देवी गौरी तत्पर हो गई है। जाओ और जागृत आत्माओं को नियंता के इस संदेश से अवगत कराओ।'

गुरुदेव के साथ रहते उनकी लीला और संदेशों का आनंद अनुभव करते हुए आचार्यश्री को यह याद ही नहीं रहा कि आषाढ़ का शुक्ल पक्ष आरंभ हुए दो सप्ताह बीत गये है। आज गुरुपूर्णिमा की वेला है।

आकाश में पूर्णचंद्र खिला हुआ था। बिना किसी पूजा उपचार और कर्मकांड संपन्न किए आचार्यश्री ने मार्गदर्शक सत्ता के सामने आत्मनिवेदन किया। निवेदन था कि रात उन्हीं के सान्निध्य में व्यतीत करना है। इसके लिए शब्दों का उपयोग नहीं किया था। मार्गदर्शक सत्ता ने इस निवेदन को जैसे पढ़

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिया। स्वगत ही कहा रात ही क्यों पूरा जीवन ही इस चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। 'इस चेतना' कहते हुए वे अपनी ओर संकेत कर रहे थे। कहा था कि यहां से मिलते रहने वाले निर्देशों का समर्पण भाव से पालन करना ही तुम्हारे लिए गुरुपूर्णिमा की दक्षिणा है।

निर्देश में अभी हिमालय में ही रहने का संकेत था। मन में अद्‌भुत शांति और आश्वस्त भाव था। आगे किसी सहयात्री या मार्गदर्शक की आवश्यकता प्रतीत नही हो रही थी। संवाद और संपर्क का वह दौर वहां पूरा हुआ। गुरुदेव के जाने के बाद आचार्यश्री सोचने लगे कि किस दिशा में जाएं। वे गुरुदेव की सिद्धशाला की ओर देखने लगे। यज्ञ कुंडों में उठ रही ज्वालाएं संयत हो गई थीं। उन्हें देखते देखते प्रेरणा उठी कि मानसरोवर की ओर चलना चाहिए। जहां भगवान शंकर ने पार्वती जी को रामायण की कथा सुनाई थी और कैलास पर्वत, जहां कहते हैं शिव पार्वती अब भी सदेह निवास करते हैं। पता नहीं इन उल्लेखों में कितना सच है और कितना काव्य।

काव्य भी तो सत्य की ही अभिव्यक्ति का एक प्रकार है। मन के ही एक कोने से आवाज आई। लेकिन यह आवाज अपनी नहीं थी। लगता था जैसे मार्गदर्शक सत्ता ही बोल रही है। जो दिखाई देता है, वही सच नहीं है। तुम जिस रूप में देखते और अनुभव करते हो वह भी यथार्थ है। जिसे तुम लक्ष्य कर रहे हो उन्हें किसी दृष्टा ने अपने मन की आंखों से देखा और ललित ललाम अनुभव किया। शुष्क मन यदि पत्थर को हथियार की तरह उठाता है तो वह श्रद्धालु मन को भटका हुआ समझ सकता है जो उसकी पूजा करता है। लेकिन श्रद्धालु के चित्त में वह पाषाण परमात्म सत्ता की जीवंत अनुभूति बन जाता है। आचार्यश्री ने कैलास और मानसरोवर के संबंध में उठे विचारों को झटक दिया। उन संदेहों को झटकते हुए उन्होंने सिर भी हिलाया जैसे सिर पर रखा कोई भार उसे हिला कर नीचे फेंक रहे हैं।

मार्गदर्शक सत्ता का आदेश होते ही आचार्यश्री ने कैलास मानसरोवर की ओर प्रस्थान किया। रास्ता देखा नहीं था। किसी से पूछा भी नहीं। पूछें तो बताने वाला कोई नहीं। वहां यज्ञ अनुष्ठान कर रहे तापस उस स्थान से जा चुके थे। तपोवन से यहां तक लाए गुरु भाई ने बताया था कि कैलाश मानसरोवर के लिए लीपूघाटी या गरव्यां गांव से कालापानी होते हुए सरगुम, सकला घाटी, माया, राक्षसताल होते हुए मानसरोवर पहुंचा जा सकता है। यह रास्ता मुश्किल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

से पचास मील दूर है लेकिन है दुष्कर। उन्हीं से मार्ग में पड़ने वाले पड़ावों के बारे में सुना ही था। रास्ते की कोई जानकारी तो नहीं ली थी। इसलिए यह संकेत या अस्पष्ट सा मार्ग चित्त से उतार दिया। फिर यह भी तो पता नहीं था कि इस समय कहां है। अपनी स्थिति का पता न होने की दशा में प्रस्थान बिंदु निश्चित नहीं किया जा सकता। यही उधेड़बुन चल रही थी। निर्धारण करने में कठिनाई होने लगी तो याद किया कि गुरुदेव ने जाते हुए किसी दिशा विशेष की ओर संकेत तो नहीं किया था। ऐसा कोई संकेत भी ध्यान नहीं आ रहा था। उन्होंने अब आगे कुछ ज्यादा सोचे बिना उसी दिशा में पग बढ़ाए, जिस तरफ गुरुदेव जाते हुए दिखाई दिए थे।

संघचुम, लीपूघाटी और तकलाकोट होते हुए राक्षसताल की तरफ बढ़ रहे थे कि कुछ दूर चलने पर लगा भटक गए हैं। किसी ने कहा नहीं, मन में ही प्रबोध हुआ। वे तिब्बत की सीमा में पहुँच गये थे। लेकिन किस क्षेत्र में है यह पता नहीं चल रहा था। कुछ दूर चलते हुए इक्का दुक्का युवक दिखाई दिए। इस क्षेत्र में पहुँचते या रहने के लिए युवा सामर्थ्य चाहिए। सामान्य नहीं उद्दाम और प्रबल सामर्थ्य। उनसे पूछा कि कैलास मानसरोवर जाना है। क्या हम ठीक चल रहे हैं, युवकों ने कहा आप मानसरोवर की ओर जाने वाले रास्ते से अलग निकल आए हैं। यह भिन्न क्षेत्र है लेकिन चिंता न करें। आप ज्यादा आसानी से कैलास मानसरोवर पहुँच जाएंगे।

योगाश्रम के साधक

आचार्यश्री उन युवकों की बातों को अबूझ भाव से सुन रहे थे। जैसे कुछ समझ नहीं पा रहे हों। उन युवकों ने कहा कि आप एक ऐसे क्षेत्र में आ गए हैं जहां हर किसी का प्रवेश नहीं हो सकता। इस क्षेत्र की व्यवस्था संभाल रही ऋषि आत्माएँ जिन्हें आमंत्रित करती हैं, वही यहां पहुँच पाते हैं। और कोई कदापि नहीं। वे युवक भी उसी क्षेत्र के निवासी थे। उन्होंने अपना परिचय ज्ञानगंज योगाश्रम के साधक के रूप में दिया।

ज्ञानगंज योगाश्रम का उल्लेख और स्थानों पर भी आया है। योग साधना के मार्ग पर बहुत आगे तक बढ़ चुके यतियों के अनुसार यह क्षेत्र लोकोत्तर साधना स्थली है। यहां निवास करने वाले योगी और परमहंस स्तर की चेतना दूसरे साधकों की सहायता के लिए तत्पर रहती हैं। वे स्वयं भी तप साधना में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निरत रहती हैं। कहते हैं कि इस सिद्ध भूमि की स्थापना प्राचीन काल में हुई थी। लेकिन अव्यवस्था के कारण यह विशृंखलित हो गयी। मध्यकाल में महर्षि महातपा के शिष्य स्वामी ज्ञानानंद ने इसका उद्धार किया। तब से अब तक सिद्धयोगियों के लिए यह क्षेत्र तीर्थ की तरह बना हुआ है।

उन युवा साधकों से चर्चा करते करते आचार्यश्री ज्ञानगंज आश्रम की सीमा में पहुँचे। उन्हीं ने बताया कि महर्षि महातपा कि आयु लगभग पंद्रह सौ वर्ष है। किसी भी तरह की भौतिक या शारीरिक आवश्यकताएं उन्हें नहीं होतीं। वे दिव्य देहधारी है और इच्छा मात्र से किसी भी स्थान में अबाध गति से जा सकते हैं। आश्रम में रहने वाले कई साधकों की आयु सौ वर्ष से भी अधिक है।

मानसरोवर कैलास की यात्रा में एक डेढ़ महीने का समय लगता है। किसी भी दिशा से जाएं, कम से कम साढ़े चार सौ मील पैदल या घोड़े या याक आदि की पीठ पर यात्रा तय करनी होती है। आचार्यश्री जिस रास्ते से मानसरोवर तक पहुँच रहे थे, वह निर्धारित पथ नहीं था। दांए, बांए और आगे पीछे आते जाते यह यात्रा दो महीने से ज्यादा समय में पूरी हुई। यह अवधि गोमुख और नंदनवन होते हुए कपाल ग्राम, सिद्धाश्रम, ज्ञानगंज आदि गुह्य बस्तियों की यात्रा करते हुए संपन्न हुई थी। कभी किसी पड़ाव पर कोई साथ मिल भी गया और कभी नहीं भी मिला। अकेले दूरी तय की।

सरोवर-शिव के नेत्र

ज्ञानगंज से निकल कर आचार्यश्री को करीब चालीस मील चलना पड़ा होगा। पठार पर उतरते हुए उन्हें दूर पक्षी उड़ते दिखाई दिए। पक्षी विविध प्रकार के नहीं थे। सफेद रंग के ये पक्षी पास आने पर पता चला कि हंस हैं। वहां बताने वाला कोई नहीं था। सिर्फ अनुमान ही लगाया जा सकता था। पठार से उतरते हुए मनुष्य के नेत्र के समान एक विशाल सरोवर। आंखों के आसपास पलकों, कोरों और कनपटियों तक जैसी रेखाएं फैली होती है, वैसी ही शाखाएं सरोवर के इर्दगिर्द भी छाई हुई थीं। पहाड़ी से उतरते हुए तालाब स्पष्ट रूप से आंख की तरह लगता था।

इस सरोवर का नाम है राक्षसताल। उसके आकार प्रकार और पहले मिले वर्णन से आचार्यश्री ने अनुमान लगाया कि इसी ताल के बारे में शास्त्रों ने शिव का नेत्र होने की बात कही है। यह भी कि राक्षसराज रावण ने यहीं खड़े

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होकर भगवान शंकर की आराधना की थी। सरोवर की भुजाएं चारों ओर टेढ़ी मेढ़ी होकर पहाड़ियों के बीच में फैली हुई है। सरोवर के तट पर आचार्यश्री कुछ पल तक शांत बैठे रहे। बैठे-बैठे वे अपने मन:क्षेत्र में इस पूरी पर्वतमाला का चित्र खींचने लगे। राक्षस ताल के दूसरी ओर मानसरोवर स्थित है। बीच में एक पहाड़ी है। पहाड़ियों की शृंखला का चित्र आंखों के सामने स्पष्ट उभरता जा रहा है।

ध्यान की अवस्था में चेतना ऊपर उठती जाती है। ऊंचाई से दृश्य दिखाई देता है जैसे वह पर्वतमाला जैसी विराट मुखाकृति में नासिका की तरह स्थित है। राक्षसताल और मानसरोवर उस नासिका के दोनों ओर विद्यमान दो आंखें हैं और ऊपर उठने पर लगा जैसे कि हिमालय की पर्वत माला धवल वस्त्र लपेटे हुए शिव का मुखारविंद है। गंगोत्री वह स्थान है जहां से शिव की जटा में से गंगा निकल रही है। हिम क्षेत्र में विद्यमान नदियां, सरोवर, पर्वत, चोटियां, खाई, खड्ड, झील, वृक्ष, वनस्पति जैसे उस मुख पर लिपटी हुई भस्म का लेपन हो। फिर आवाज़ आती है। भीतर से लगा कि गुरुदेव पुकार रहे हैं। चट्टान पर आसन लगाये बैठे आचार्यश्री अपनी पलकें खोलते हैं और देखते हैं कि सामने राक्षसताल है। अब इन स्थानों के बारे में किसी के कुछ बताने की जरूरत नहीं थी। कुछ पल ध्यान में डूबे रहने के बाद आचार्यश्री सहज हुए। राक्षसताल के किनारे चलते हुए उन्होंने मानसरोवर की दिशा पकड़ी। मानसरोवर का जल अत्यन्त स्वच्छ और नीली आभा लिए हुए है। स्वच्छ होने के कारण ही वह नीला दिखाई देता है। नीले आकाश की छाया के कारण ही जैसे यह वर्ण है।

राक्षसताल के आस-पास अपूर्व शान्ति थी। मानसरोवर में जैसे जिन्दगी चहकती थी। वहां पक्षी ज्यादा नहीं थे लेकिन हंसों की बहुतायत थी। उनके पंखों की फड़फड़ाहट से कभी कभार सन्नाटा बिंधता रहता था। हंस दो तरह के हैं। सामान्य भी और राजहंस भी। मटमैले सफेद रंग के और बादामी रंग के सामान्य हंस ज्यादा संख्या में थे। बतखों जैसी चोंच और सुतवां पेट। शायद इसी बनावट के कारण वे बहुत ऊँचाई तक उड़ पाते थे। राजहंस उज्ज्वल धवल आकृति के। गायत्री के वाहन रूप में जिस प्रकार के हंस की कल्पना की गई है वह यहां साकार दिखाई दे रही थी।

मानसरोवर के किनारे चलते-चलते कई विचार आए। सुना था कि मानसरोवर में मोती हैं और हंस उन्हीं मोतियों को चुगते हैं। इसी मानसरोवर के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पास कैलास पर्वत पर भगवान शिव आराधना करते हैं। यहां का जल राक्षसताल में जाता है। इसी जल से सरयू और ब्रह्मपुत्र नदी निकलती है। पढ़े हुए ये वर्णन ध्यान में आए और एक झोंके की तरह निकल भी गए। देखा मानसरोवर के किनारे मोतियों का कोई चिह्न नहीं है। हंस मानसरोवर में से अपना भोजन चुग रहे हैं। शायद मछली या कोई वनस्पति, कुछ ठीक से पता नहीं चला। यूं ही चहल कदमी करते आचार्यश्री ने उन वर्णनों का खुद ही समाधान किया कि वे सही न भी हों तो भी एक सत्य को उद्घाटित करते हैं। सत्य यह है कि निर्मल चेतना शुद्ध और सत को ही ग्रहण करती है। शेष को नकार देती है।

मानसरोवर से कैलास करीब बीस मील दूर है। मानसरोवर पहुँचते वह दिखाई देने लगता है। करीब बत्तीस मील परिधि में फैले कैलास की आकृति विराट शिवलिंग जैसी है। इसके आसपास छाए पर्वतों की संख्या सोलह है। सोलह पंखुड़ियों वाले कमल के बीच विराट शिवलिंग जैसे एक नैसर्गिक विग्रह हो। पूरे दृश्य को एक दृष्टि निक्षेप में देखा जा सके तो सोलह पंखुड़ियां गिनी जा सकती हैं। उनमें चौदह तो एकदम साफ हैं। दो पंखुड़ियां थोड़ी झुक गई हैं। क्या प्रकृति विक्षोभ के कारण? विचार प्रवाह में यह उभार आ ही रहा था कि जैसे एकाएक समाधान आया। यह झुका हुआ भाग शिव की अर्धा का अगला हिस्सा ही तो है। जहां से अविरल जल कुण्ड में गिरता है। सचमुच कैलास का जल इन्हीं शिखर रूपी पंखुड़ियों से होता हुआ गौरीकुण्ड में जाता है।

शिव का नैसर्गिक विग्रह

शिवलिंग के आकार वाला कैलास पर्वत आसपास के सभी शिखरों से ऊँचा है। कसौटी के ठोस काले पत्थर का बना यह विग्रह ऊपर से नीचे तक उज्ज्वल बर्फ से ढका रहता है। किन्तु उससे लगे हुए पर्वत की सोलह पंखुड़ियां लाल और मटमैले पत्थर की हैं। उस क्षेत्र के और तमाम पत्थर शिखर उन पंखुड़ियों जैसे लाल और कच्चे पत्थरों के हैं। कैलास अकेला ही वहां काले ठोस पत्थर का है।

कैलास पर्वत की परिक्रमा करते हुए आचार्यश्री को कई तिब्बती मिले। वे भी कैलास की परिक्रमा कर रहे थे। उनमें कुछ तो दण्डवत करते हुए परिक्रमा कर रहे थे। तिब्बतियों में कैलास के प्रति अपार श्रद्धा है। दण्डवत परिक्रमा करते हुए यात्रियों में कुछ की उम्र साठ वर्ष के आसपास रही होगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन्हीं में से एक ने आचार्यश्री से पूछा, 'आप हिन्दुस्तानी हैं? हमारे गुरु को आपने क्या दर्जा दिया हुआ है?'

तब तिब्बत के लामा लोग भारत आया करते थे। चीन ने तिब्बत की संस्कृति में घुसपैठ शुरु कर दी थी और वह तिब्बत के मठों और विहारों को नष्ट भ्रष्ट करने में लगा था। उस वृद्ध ने जब आचार्यश्री से यह प्रश्न पूछा तो उसके चेहरे पर उभर आई पीड़ा साफ देखी जा सकती थी। आचार्यश्री उसका चेहरा देखने लगे। वृद्ध ने फिर दोहराया, 'बताओ युवक तुम यहाँ अपने आदि गुरु को प्रणाम करने जा रहे हो। हमारे लामा भी तो इन्हीं कैलास के एक रूप है। उन्हें भी क्या इसी श्रद्धा से प्रणाम करते हो।'

आचार्यश्री ने कहा, 'बाबा कोई गुरु तिब्बत या भारत का होने से वन्दनीय नहीं होता। वह अपने तप तेज के कारण वंदनीय होता है।'

'पर उन पर जो अत्याचार हो रहे हैं वह।' वृद्ध ने कहा, 'उनके बारे में आपका क्या कहना है।'

आचार्यश्री ने कहा, 'यह नियति का विधान भी हो सकता है। हम एक ही दिशा में प्रगति कर जाएं और जीवन के दूसरे पक्षों की उपेक्षा कर दें तो प्रकृति का उल्लंघन करते हैं। तिब्बत ने वहां के धर्मगुरुओं और शासकों ने चेतना के क्षेत्र में तो बहुत विकास किया लेकिन लौकिक पक्ष को छोड़ दिया। उसका परिणाम यह हुआ कि व्यवहार जगत में वह कमजोर हो गया। उसकी प्रगति एकांगी रह गई। उस एकांगी प्रगति का दंड ही तिब्बत को भुगतना पड़ा है।'

सुनकर वृद्ध थोड़ा आशान्वित हुआ। आचार्यश्री का उत्तर सुनकर उसे लगा कि एक नया ही पक्ष उद्घाटित हो रहा है। उसने उत्कंठा वश फिर पूछा, 'तिब्बत क्या अपने आध्यात्मिक और लौकिक वैभव को फिर प्राप्त कर सकेगा।'

आचार्यश्री ने कहा, 'कोई भी जाति हमेशा एक ही दशा में नहीं रहती है। जाति ही क्यों व्यक्ति और अस्तित्व के प्रत्येक घटक पर यह बात लागू होती है। उत्थान और पतन दोनों ही स्थितियां, सभी के जीवन में आती हैं। इसलिए तिब्बत के दोबारा उठ खड़े होने में कोई संदेह नहीं है। उसके लिए तिब्बत के शासकों और धर्मक्षेत्र के लोगों को प्रयत्न करना होंगे।

वृद्ध आचार्यश्री के सामने नतमस्तक खड़ा हो गया। आचार्यश्री की वेशभूषा और व्यवहार को देखकर यह कतई नहीं लगता था कि वे योगी यति हैं। वे साधारण गृहस्थ लग रहे थे। आयु में उस वृद्ध से कम ही थे। फिर भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसने प्रणाम किया और पूछा कि अब आप एक बात और बताएं कि भगवान शंकर का दिव्यधाम कैलास क्या यही है?

कहकर वह वृद्ध व्यक्ति करबद्ध मुद्रा में सामने खड़ा हो गया। आचार्यश्री ने उस पर एक नजर डाली और कहा, 'इस उलझन में कोई सार नहीं है बाबा। जिस लोक को भगवान शंकर का दिव्यधाम कहते हैं, वह तो अपार्थिव (अलौकिक) है। यह कैलास उस दिव्यधाम का प्रतिरूप है। साकेत का प्रतिरूप जैसे अयोध्या है और भगवान कृष्ण के गोलोक का प्रतिरूप ब्रजधाम है, उसी तरह यह कैलास भी दिव्य कैलास का ही प्रतिरूप है, कहते कहते आचार्यश्री कुछ पल रुके और फिर बोले, 'बौद्ध मठों में जिन अवलोकितेश्वर अमिताभ की प्रतिमा को भगवान बुद्ध मानकर आप प्रणाम करते हैं, उनकी प्रतिमा की तरह है यह कैलास। लेकिन यह स्वयं वह दिव्यधाम नहीं है।'

वह वृद्ध आचार्यश्री को प्रणाम कर अपने रास्ते पर चल दिया। आचार्यश्री भी अपने पथ पर आगे बढ़ गए। कैलास शिखर पर देखने से चारों ओर मंदिर जैसी आकृति बनी दिखाई देती है। बत्तीस मील की परिक्रमा पूरी करने में तीन दिन लग जाते है। शिखर पर पहुँचना असंभव-सा है। समुद्र तल से उन्नीस हजार फुट ऊंचाई वाले इस पर्वत पर डेढ़ मील की सीधी चढ़ाई है। अभी तक किसी ने वहां पहुंचने का दुस्साहस नहीं किया। अगम्य क्षेत्र होने के कारण भी लोगों का यह विश्वास दृढ़ होता गया कि भगवान शिव का स्थूल विग्रह इस शिखर पर विद्यमान है।

परिक्रमा पूरी करते समय आचार्यश्री को ध्यान आया कि बद्रीनाथ तीर्थ का मूल स्थान यहीं कहीं आसपास है। तिब्बत की सीमा में धुलिंग मठ नाम से एक बौद्ध विहार आता है। कहने को वह जगह बौद्ध भिक्षुओं की साधना-स्थली है लेकिन वहां योग और तंत्र मार्ग के साधक भी रहते हैं। कैलास की परिक्रमा करते हुए आचार्यश्री ने आदि-बदरी जाने का निश्चय किया।

कहते हैं कि इन दिनों जहां बद्रिकाश्रम है, वह तीर्थ लगभग डेढ़ हजार साल पहले धुलिंग मठ में था। बद्रीनाथ धाम में प्रतिष्ठित विग्रह तब इसी जगह थे। कहते हैं कि आदि शंकराचार्य इन विग्रहों को धुलिंग मठ वाले स्थान से ले आए थे। एक मान्यता यह भी है कि शंकराचार्य के पहले ही विग्रह स्थानान्तरित हो गए थे। बौद्धकाल में यह परिवर्तन किया गया। उन विग्रहों को बद्रीनाथ-धाम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में भी स्थित नहीं रहने दिया गया। उन्हें हटा कर बौद्धों ने अलकनंदा में फेंक दिया। शंकराचार्य ने अपने विजय अभियान के समय अलकनंदा से इन विग्रहों को निकाला। जो भी हो धुलिंग मठ को लोग इसे आदि-बदरी के नाम से जानते हैं और संभव हो तो वहां यात्रा के लिए भी जाते हैं।

आचार्यश्री ने आदि-बदरी की यात्रा की तो उन स्थानों को देखा जहां घनश्याम रंग के शालिग्राम से बने बद्रीनाथ या भगवान विष्णु की प्रतिमा थी। उस स्थान पर बौद्ध साधनाओं का प्रभाव ज्यादा दिखाई दिया। आदि बदरी का नैसर्गिक सौंदर्य उन्हें बहुत पसंद आया। भगवान विष्णु, लक्ष्मी और पार्वती आदि की विशाल मूर्तियां वहां स्थापित थीं। उनके दर्शन करते हुए मन में कई तरह की हिलोरे उठीं। उनमें एक तरंग यह भी थी कि आदि-बदरी से हटकर बद्रीनाथ की प्रतिमा वर्तमान तीर्थ में स्थापित हुई।

सिद्धयोगियों ने भी माना है कि विग्रह एक बार यहां से और हटेंगे। जोशीमठ के आसपास कहीं स्थापित किए जाएगें। फिर वहां से भी स्थानांतरित होंगे, लेकिन वह क्षण देखने के लिए पृथ्वी पर जीवन नहीं बचेगा। अर्थात बद्रीनाथ के नष्ट होते ही पृथ्वी या पृथ्वी पर बसा जीवन भी समाप्त हो जाएगा। इन हिलोरों में से तरंगे भी उठती थीं कि क्या इस तरह के वर्णन सही हैं? अथवा ऐसे उल्लेख सिर्फ काव्य में ही आए हैं।

अगर काव्य में ही आए हैं तो उनका आशय यह है कि मानवीय स्वभाव में आए पतन से प्रकृति क्षुब्ध होती है। उसमें परिवर्तन आते हैं। वे परिवर्तन असंतुलन आने के रूप में कहें या मनुष्य को मिलने वाले दंड के रूप में प्रकृति विक्षोभ का ही संकेत करते हैं। आदि बदरी में देवदर्शन करते हुए यह बोध 'ईश्वरीय विधान के रूप में भी व्यक्त होता रहा। इन्हीं भावधाराओं में बहते हुए अंतस्थल में गूंगे की तरह ध्वनि उभरी, जो आभास दे रही थी कि अगले दिनों ईश्वरीय विधान, प्रकृति विक्षोभ और मानवीय स्वभाव में आने वाली उलटफेर को ज्यादा प्रत्यक्ष देखा जा सकेगा। देखा जाना है।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ममता के संरक्षण में

सन् १९६१ की चैत्र नवरात्रियों का समय पास आ रहा था। गायत्री तपोभूमि में अनुष्ठान के लिए आने वाले साधकों के पत्र आ रहे थे। परिजनों को पता था कि आचार्यश्री इन दिनों मथुरा में नहीं होंगे। लेकिन कई साधकों ने व्रत लिया हुआ था कि वे नवरात्रि साधना मथुरा में ही करेंगे। उनके साथ कुछ नए साधक भी आने के लिए उत्सुक थे। साधकों के पहुंचने की सूचना अखंड ज्योति कार्यालय आने लगी। उन्हें आना ही था। आचार्यश्री के जाने के बाद इस दिशा में सोचा नहीं था। माताजी ने उनसे जाने के पूर्व एकाध बार चर्चा की थी तो उत्तर मिला था कि समय और स्थिति के अनुसार स्वयं ही निर्णय ले लेना।

जनवरी के दूसरे सप्ताह तक छह पत्र आ गए। किसी भी पत्र का उत्तर एक दिन से ज्यादा नहीं रोका जाता था। विशेष परिस्थितियों में अधिक से अधिक दो दिन तक लग जाते थे। तीसरे दिन तो उत्तर दे ही दिया जाता। यह व्यवस्था गायत्री तपोभूमि की स्थापना के बाद ही बन गई थी। आचार्यश्री के जाने के बाद माताजी ने उत्तर लिखने के लिए एक और सहायक बढ़ा लिया था। उसके जिम्मे पत्रों के उत्तर देने का काम था। उस सहायक कार्यकर्त्ता ने तीसरे दिन याद दिलाया कि नवरात्रि के लिए छह पत्र आ गए हैं। उन्हें क्या उत्तर दिया जाए? इन पत्रों के उत्तर माताजी ने ही रुकवाए थे। इस बीच उन्होंने निर्णय ले लिया था। कौशिक नामक उन सहयोगी कार्यकर्त्ता ने पत्रों के बारे में याद दिलाया तो माताजी ने कहा कि इन लोगों को आने के लिए कह दो। साधना शिविर पहले की ही तरह चलेगा।

माताजी ने जिस दिन साधकों को पत्र लिखा था, उसी दिन दोपहर की डाक से आचार्यश्री का संदेश आया। उसमें चैत्र नवरात्रि के संबंध में दिशा निर्देश थे। लिखा था कि चौबीस साधकों से ज्यादा को स्वीकृति नहीं देनी है। इस बार की साधना में मौन को महत्त्व दिया जाए। पचास वर्ष से अधिक आयु वाले साधकों को घर पर रहकर ही साधना करने के लिए कहा जाए और यहां

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आए साधकों से जप, तप, हवन आदि के बाद श्रमदान कराया जाए। पत्र पढ़ कर माताजी सोच में पड़ गईं। आचार्यश्री ने चौबीस साधकों को ही अनुमति देने और पचास वर्ष से अधिक आयु वाले लोगों को रोकने के लिए कहा है। लेकिन इतने साधक आ पाएंगे क्या?

पिछले शिविरों में संख्या बीस पचीस से ज्यादा नहीं पहुंचती थी। उनमें भी ज्यादातर चालीस से साठ बर्ष की उम्र के बीच के लोग हुआ करते थे। परिजनों को पता है कि तपोभूमि में इस बार आचार्यश्री नहीं हैं। इस स्थिति में साधकों की संख्या में कमी ही आना थी। आचार्यश्री के पत्र से लग रहा था जैसे नवरात्रि में पहले की तुलना में ज्यादा लोग आने वाले हैं। कुछ देर तक माताजी पत्र में दिए संदेश के बारे में सोचती रहीं। फिर उन्होंने इस तरह के किंतु परंतुओं को मन से झटक दिया।

उस वर्ष का वसंत पर्व आचार्यश्री के बिना ही मनाया गया था। माताजी, गायत्री तपोभूमि के कार्यकर्त्ता और मथुरा के बाहर से आए साधक उस उत्सव में शामिल हुए थे। नवरात्रि के संबंध में आचार्यश्री का पत्र मिलने वाले दिन माताजी को यह वसंत भी याद आया। उन्हें वे क्षण याद आ रहे थे जब साधक गदगद भाव से कहते हुए आ रहे थे कि गुरुदेव यहीं कहीं हैं। हम उन्हें पहले से ज्यादा अनुभव कर रहे हैं। कुछ साधकों ने उनका स्पर्श अनुभव करते की बात भी कही। माताजी ने इस तरह के वक्तव्यों को ज्यादा महत्त्व नहीं दिया। कुछ वक्तव्य अतिरंजित भी रहे होंगे लेकिन यह सच था कि आचार्यश्री प्रत्यक्ष भले ही वहाँ नहीं हों, उनका प्रभाव, तेज और प्रेरणा स्फूर्त कर रही थीं।

उस शाम को माताजी ने यह भी निश्चय किया कि सिर्फ चौबीस साधकों को ही स्वीकृति दी जाए। जो आवेदन आ रहे थे, उनके उत्तर में साधकों से उनका पिछला जीवन वृत्त मंगाया गया। वृत्तांत मंगाने का उद्देश्य ही था कि उनकी साधना और जीवनचर्या का अनुमान लगाया जा सके। उसी शाम माताजी ने तपोभूमि से मार्कण्डेय, द्वारका प्रसाद, चमनलाल आदि कार्यकर्त्ताओं को संदेश भेजा कि वे सुबह आ जाएं। नवरात्रि शिविरों की व्यवस्था और इस बार बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में विचार करना था।

सुबह की गोष्ठी में आश्विन नवरात्रियों की चर्चा भी उठी। उस समय अठारह साधक आए थे। अनुष्ठान के लिए निर्धारित अनुशासन का पालन करते हुए जप हवन में सम्मिलित होकर वे चले गए थे। गोष्ठी में आए कार्यकर्त्ताओं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का मानना था कि उन साधकों को आचार्यश्री का नहीं होना खटका था और वे संतुष्ट नहीं थे। माता जी ने समाधान किया कि आचार्यश्री ने ही इस बार चौबीस साधकों को बुलाने के लिए कहा है। इस निर्देश के पीछे यह आश्वासन अनुभव किया जा सकता है कि लोग आएंगे और साधना में उनका मन भी खूब लगेगा। माताजी ने पिछली नवरात्रियों के बारे में कहा कि हम लोग ही उस आयोजन को संतोषजनक नहीं मानते हैं। लेकिन अभी तक जो छह आवेदन आए हैं, उनमें चार साधक आश्विन नवरात्रियों में भी आए थे। अगर उन्हें संतोष नहीं होता तो वे दोबारा आवेदन क्यों करते? वहां आए दूसरे कार्यकर्त्ताओं के मन में यह बात नहीं आई थी।

इसी बैठक में आचार्यश्री के अज्ञातवास पर जाने के बाद और उससे कुछ पहले की स्थितियों के बारे में चर्चा चली। वे पिछली गायत्री जयन्ती अर्थात ५ जून १९६० को अज्ञातवास पर रवाना हुए थे। तैयारी लगभग छह महीने से चल रही थी। अक्टूबर १९५९ में ही उन्होंने पत्रिका, साहित्य और संगठन का दायित्व माताजी को सौंप दिया था। उसके बाद धीरे-धीरे उपराम होने लगे थे। लोगों से मिलना जुलना कम कर दिया था।

सहस्रकुंडीय गायत्री महायज्ञ के बाद गायत्री तपोभूमि में साधकों का तांता लग गया था। आचार्यश्री उनमें साधना उपासना के बारे में चर्चा करने वालों से ही मिलते थे। कष्ट, कठिनाइयों के लिए आने वाले कार्यकर्त्ताओं को माताजी के पास भेज दिया करते थे। उनका कहना था कि निजी समस्याओं की जड़ अपने व्यक्तित्व में घुसी हुई विकृतियां और गुत्थियां हैं। इस तरह की समस्याओं से परेशान व्यक्तियों को स्नेह और दुलार मिले तो वे स्वयं भी अपनी समस्याओं से जूझ सकते हैं। स्नेह और दुलार माताजी के पास भरपूर है। आगे चलकर उन्हें गायत्री परिवार के तमाम साधकों को स्नेह बांटना होगा। उसका आरंभ अभी से करना चाहिए। सहस्रकुंडीय महायज्ञ के बाद आने वाले साधकों की संख्या धीरे धीरे बेतहाशा बढ़ने लगी थी। उनके भोजन आवास की व्यवस्था और सुख-दुख की बातें पूछने का दायित्व तभी से माताजी के पास आने लगा था। आचार्यश्री के अज्ञातवास पर जाने के बाद तो यह दायित्व पूरी तरह से आ गया था। संपादन, संगठन और गायत्री तपोभूमि की व्यवस्था का काम उस दायित्व में अतिरिक्त रूप से जुड़ गया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुबह की गोष्ठी में यह सब बातें उठीं। यह भी कि अज्ञातवास के दिनों में आचार्यश्री के पत्र और 'सुनसान के सहचर' या 'एक साधक की डायरी' शीर्षक से आ रहे यात्रा संस्मरणों के अलावा कोई संपर्क नहीं रह गया था। नंदनवन से आगे निकल जाने के बाद तो यह संपर्क भी क्षीण हो गया था। लगभग नहीं के बराबर । उनकी प्रत्यक्ष उपस्थिति और मार्गदर्शन नहीं मिला तब भी सब काम भली भांति चल रहे थे। किसी कार्यकर्त्ता ने उत्साह में आकर कहा, 'सब माताजी की कृपा है। उनके कारण ही सब विधिवत और व्यवस्थित चल रहा है।'

माताजी ने इस टिप्पणी पर तुरंत हस्तक्षेप किया और कहा कि गुरुदेव के कारण सब ठीक चल रहा है। हिमालय में उनके तप और उनके साथ जुड़े सिद्ध संतों का ही पुण्य प्रताप है कि हम सब उनके दायित्वों को भलीभांति निभा पा रहे हैं। जिन कार्यकर्त्ताओं ने तपोभूमि और गायत्री परिवार की गतिविधियां ठीकठाक चलने का श्रेय माताजी को दिया था, उन्होंने एक अद्‌भुत संस्मरण सुनाया। संस्मरण पिछले वर्ष की चैत्र नवरात्रियों यानी मार्च १९६० का था।

उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र के एक कार्यकर्त्ता विष्णु नारायण गौवरीकर प्रत्येक नवरात्रि शिविर में आते हैं। पिछली चैत्र नवरात्रियों में भी आए। उनका मन कई तरह की समस्याओं से परेशान था। आचार्यश्री से कहने और वहां से समाधान मिलने की उम्मीद थी लेकिन वे भी अज्ञातवास पर जा रहे थे। जरूरत पड़ी तो किससे सहायता मागेंगे। इसी पशोपेश में वे नवरात्रि के दूसरे दिन भोजन के लिए अखंड ज्योति संस्थान गए। तपोभूमि में तब साधकों के लिए भोजन की व्यवस्था नहीं थी। माताजी उन्हें अपने सामने, अपने चौके में बना भोजन ही कराती थीं। भोजन के लिए संस्थान चले तो गए लेकिन वे अपनी ही उलझन में डूबे थे। मन में उधेड़बुन चल रही थी।

गौवरीकर का आश्चर्य

भोजन परोसते समय माताजी का ध्यान उदास से बैठे गौवरीकर पर गया। कुछ क्षण तक वे देखती रहीं। फिर बोली कि बेटा परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है। तुम्हारी समस्याओं से हम लोग निपटेंगे। तुम आराम से खाना खाओ। गौवरीकर ने खाना शुरु तो किया लेकिन जैसे कोई स्वाद नहीं आ रहा था। उदास मन से वह धीरे-धीरे भोजन करने लगे। उन्हें कुछ ज्यादा ही परेशान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देख कर माताजी ने कहा कि मुझे पता है तुम पर भारी मुसीबतें आई हुई हैं। खेती का मामला, मुकदमा चल रहा है। दुकान एकदम ठप पड़ी है। तुम्हारी पत्नी इस समय काफी बीमार है। बेटी की शादी के लिए ढंग का बंदोबस्त नहीं हो पा रहा है। इतनी सारी तकलीफें एक साथ किसी पर आ जाएं तो वह टूट जाएगा लेकिन माँ के पास आकर भी बच्चे चिंतित रहें तो क्या फायदा।

गौवरीकर माताजी की यह बात सुनकर अचरज में पड़ गया। अपनी समस्याओं के बारे में अभी किसी को बताया नहीं था फिर भी माताजी को सारी बातें कैसे पता चलीं। मन ने इतना ही सोचा माताजी केवल गुरुदेव की धर्मपत्नी भर नहीं हैं वह योग सिद्ध महायोगिनी भी हैं। उनकी चिन्ता थोड़ी कम हुई और उन्होंने आराम से भोजन कर लिया। हाथ मुंह धोकर माताजी को प्रणाम किया। प्रणाम करते हुए उनकी आंखें छलक आई थीं। अंगुलियों से आंखों के पोर पोंछे और माताजी की ओर देखा फिर तपोभूमि की ओर चल दिए।

अभी अचरज की शृंखला का अंत नहीं हुआ था। जैसे ही तपोभूमि आए उन्होंने देखा कि आचार्यश्री यज्ञशाला की ओर टहल रहे हैं। गोवरीकर ने उन्हें प्रणाम किया। प्रणाम करके जैसे ही वह खड़े हुए आचार्यश्री ने कहा, 'बेटा अब परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है। माताजी ने तुम्हारी सारी समस्याओं का भार अपने ऊपर ले लिया है।'

आचार्यश्री की इन बातों ने गौवरीकर को एक बार फिर हैरत में डाल दिया। अखण्ड ज्योति संस्थान में माताजी की कही हुई बात आचार्यश्री को कैसे पता चलीं? उस जमाने में तो तपोभूमि और अखण्ड ज्योति संस्थान के बीच टेलीफोन की सुविधा भी नहीं थी। गौवरीकर की दुविधा दूर करते हुए आचार्यश्री ने कहा, 'बेटा हम और माताजी कोई दो थोड़े ही हैं। बस बाहर से दिखने के लिए दो हैं। भीतर से तो सब कुछ एक ही है।'

मध्यप्रदेश की ग्रामीण अंचल की एक साधक शिवरानी देवी ने भी इसी से मिलती जुलती स्थिति अनुभव की। मामूली पढ़ी लिखी यह महिला साधना उपासना के मामले में नियमित और निष्ठावान थी। ब्रह्म-मुहूर्त में उठकर सुबह तीन घंटे तक वह नियमित जप करती। दिनचर्या के दूसरे काम निपटाते हुए भी उनका मानसिक जप चलता रहता। वह सूर्यमंडल में स्थित गायत्री माता का ध्यान जप के साथ करती थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नियमित साधना के दौरान एक दिन ध्यान की अवस्था में उन्हें विचित्र अनुभव हुआ। वे गहरे ध्यान में डूबी हुई थीं। सूर्यमंडल में स्थित गायत्री माता की छवि को निहारते हुए मन जैसे खो गया था। उस छवि में उन्हें अचानक माताजी की झलक दिखाई देने लगी। निरभ्र अनंत आकाश में वह छवि विराट रूप लेती जा रही है। सारे ग्रह नक्षत्र उस तेजामयी मूर्ति के इर्दगिर्द चक्कर काट रहे हैं। धीरे-धीरे सब कुछ उनमें लीन होता चला जा रहा है। तभी प्रतीत होता है कि आचार्यश्री की छवि भी उसी प्रकाश से निकल रही है। माताजी की छवि लुप्त हो गई है। फिर माताजी दिखाई दीं और आचार्यश्री की छवि विलीन हो गई। कुछ क्षण बाद दोनों साथ दिखाई दिए। इस तरह के बिम्ब कई बार उभरते और बिखरते रहे। आनन्द की विचित्र अनुभूति हो रही थी।

ध्यान से उठने के बाद भी मन उसी भाव दशा में डूबता उभरता रहा। आचार्यश्री के अज्ञातवास से वापस आने के बाद शिवरानी ने अपने गुरुदेव को इस अनुभव के बारे में बताया। आचार्यश्री ने उनसे कहा, 'बेटी आदिशक्ति ही इस सृष्टि की जननी हैं। उनके कई रूप हैं। जैसी हमारी भावना होती है वैसी ही आकृति बन जाती है। वैसे माताजी के बारे में जो तुम्हारे भाव हैं वह सही हैं। मैं उनसे जरा भी अलग नहीं हूँ।'

आचार्यश्री के हिमालय जाने के बाद कई साधकों को तरह-तरह की अनुभूतियाँ हुई। उनका संदेश एक ही था कि लौकिक दृष्टि से दोनों का अस्तित्व अलग होते हुए भी मूलतः एक ही हैं। अन्तःसलिला सरस्वती गंगा और यमुना को जोड़ती हुई जैसे प्रयाग में प्रकट होती है, उसी तरह चेतना की उच्चतम उत्कृष्ट धारा उन दोनों में व्यक्त हुई है।

आचार्यश्री के हिमालय जाने के बाद माताजी पर कई नई जिम्मेदारियां आ गई थीं। आंतरिक दृष्टि से दोनों में कैसा ही अद्वैत अभेद हो, व्यवहार में तो फर्क पड़ता ही है। माताजी की अपनी जिम्मेदारियाँ अपने स्थान पर थीं और आचार्यश्री की सौंपी हुई जिम्मेदारियां अपने स्थान पर। ये जिम्मेदारियां अतिरिक्त ही कही जाएंगी। इनमें साधकों के आए पत्रों के उत्तर देना, अखंड ज्योति पत्रिका का संपादन प्रकाशन और गायत्री तपोभूमि की व्यवस्था संभालने जैसे कई काम थे। अतिरिक्त दायित्वों में सहयोग देने के लिए कुछ कार्यकर्त्ताओं को भी चुना गया। लेकिन वे सभी कसौटी पर खरे नहीं उतर रहे थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बच्चों की पढ़ाई चल रही थी। मृत्युंजय शर्मा तब आठवीं कक्षा में थे। आचार्यश्री कह गए थे कि जरूरी लगे तो सतीश (मृत्युंजय) को ओमप्रकाश के पास भेज देना। वहां पढ़ लेगा। ओमप्रकाश तब दिल्ली के पास गाजियाबाद में एक कालेज में प्राध्यापक हो गए थे। सतीश को उनके पास भेजने के पीछे माताजी को घरेलू दायित्वों से थोड़ा मुक्त करने का भाव ही था। आचार्यश्री ने अज्ञातवास पर जाते हुए पुत्री शैल का विशेष रूप से ध्यान रखने के लिए कहा था। यह भी कहा था कि बच्चों के मामले में कोई कमी रह जाए तो कोई बात नहीं लेकिन तपोभूमि और साधकों की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए।

आचार्यश्री के जाने के बाद माताजी ने निर्वाह करने के लिए एक नई व्यवस्था रची। साधकों के भोजन की व्यवस्था के लिए दो सहायक नियुक्त कर लिए और सफाई में भी वह इन्हीं से मदद लेने लगीं। अखण्ड ज्योति संस्थान में तब पन्द्रह बीस व्यक्तियों का भोजन नियमित बनता था। इस काम में सहायता मिलने से माताजी को दिन में लगभग चार घंटे का समय मिलने लगा। वे साधकों को भोजन तो अपने सामने ही करवाती थीं बीच बीच में रसोई में भी झांक लेती थीं।

पत्रिकाओं के संपादन को लेकर कभी कोई कठिनाई नहीं आई। आचार्यश्री ने पिछले छः महीनों में अपनी देखरेख में सामग्री संकलन से लेकर संपादन और अन्य व्यवस्थाओं की बारीकियों का प्रशिक्षण दे दिया था। इस काम में सहायता के लिए चुने हुए कार्यकर्त्ता भी कुछ हाथ बंटाते ही थे। मुख्य काम साधकों की भावनाओं का निर्वाह और समस्याओं का समाधान करना था। यह सब जिस तरह चलता रहा वह बाद में, पहले यह जानना मजेदार रहेगा कि लोग किस तरह की अड़चनें पैदा करते थे। आचार्यश्री के अज्ञातवास जाने की बात को कुछ द्वेषी धर्मगुरुओं ने मुद्दा बनाया। उन्होंने प्रचारित किया कि आचार्यश्री मथुरा छोड़ कर चले गए हैं। महायज्ञ के समय की बहुत सी देनदारियां बाकी हैं, उनसे मुँह चुराने के लिए छुप गए हैं। इस तरह के अपवादों का कोई जवाब नहीं था।

अज्ञातवास के उत्पात

आचार्यश्री अपने पीछे जिन कार्यकर्त्ताओं की टीम छोड़ गए थे उनमें कुछ को यह भ्रम होने लगा कि गायत्री तपोभूमि और परिवार की गतिविधियाँ उन्हीं के कारण सुचारू चल रही हैं। अहम के टकराव जिस प्रकार के विग्रह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

खड़े करते हैं वैसे ही विग्रह तपोभूमि में भी होने लगे थे। कुछ कार्यकर्त्ता एक दूसरे के विरुद्ध षडयंत्र रचने लगे। माताजी तक वह बात जानती थी लेकिन वे प्रायः अनसुनी कर देती थीं। उनकी कोई प्रतिक्रिया न देखकर कार्यकर्त्ता समझते थे कि शायद उन्हें झगड़ों के बारे में पता नहीं है। तीन-चार कार्यकर्त्ताओं में चुपचाप आपसी द्वन्द्व चलता रहा। न केवल चलता रहा बल्कि वह बढ़ता गया। हालत झगड़े फसाद तक पहुँच गई। झगड़ा पहली बार चेता ही था कि माताजी ने हस्तक्षेप किया। वे तपोभूमि गईं और कार्यकर्त्ताओं को एक जगह इकट्ठा किया। सभी के एक जगह बैठ जाने के बाद उन्होंने कहना शुरु किया बेटा मैं तुममें से हर एक को बहुत अच्छी तरह से जानती हूँ। तुम लोग इतने दिनों जो भी करते रहे हो उससे मैं अच्छी तरह परिचित हूँ। मैं इस भीड़ में किसी का नाम लेकर उसे शर्मिन्दा तो नहीं करूंगी पर तुममें से जिसने जो कुछ किया उसके कामों का खुलासा कर देती हूँ।

इतना कहकर माताजी ने उपद्रव मचा रहे कार्यकर्त्ताओं के कारनामे सुनाना शुरु किए। इन कारनामों में आर्थिक गड़बड़ियों के अलावा विद्वेष फैलाने, कुचक्र रचने और एक दूसरे को नीचा दिखाने की कई गतिविधियाँ थीं। उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया, सिर्फ अभी तक की ज्ञात और अज्ञात घटनाओं का खुलासा भर किया। जो घटना जिसके बारे में थी, उसने सुनी और सुन कर सिर झुका लिया। उन कार्यकर्त्ताओं को अपनी गलती या दुर्भावना का पता तो था ही। जब यह अनुभव हुआ कि संस्था प्रमुख की जानकारी में राई रत्ती बात है फिर भी उसकी ओर से क्षमा किया जाता रहा है। पता नहीं क्यों? उस 'क्यों' का उत्तर तलाशते हुए लोग अवाक थे।

दोष और गलतियां गिना चुकने के बाद माताजी ने कहा, 'मैं अभी तक चुप रही हूँ तो इसका कारण यह नहीं था कि मुझे पता नहीं था या तुम लोगों से कोई डर था। सिर्फ इसलिए चुप रही हूँ कि मैं तुम लोगों के सुधरने का इंतजार कर रही थी। सोच रही थी कि आज नहीं कल गलती का अहसास होगा और तुम लोग सही रास्ते पर आओगे। तुम लोग गलतियाँ कर रहे थे और फिर भी अधिकार के नशे में चूर हुए जा रहे हो तो यह मत समझो कि वे गलतियां सहन की जा रही हैं।'

माताजी यह कह ही रही थीं कि उन कार्यकर्त्ताओं को कंपकंपी छूट गई। उन्हें लगा कि अब माताजी कोई फैसला सुनाने वाली हैं। वह फैसला दंड

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के रूप में ही होगा। हो सकता है वे आश्रम से चले जाने के लिए कहें। किसी कार्यकर्त्ता के मन में इस आशंका का प्रतिरोध भी उभरा। वह सोचने लगा कि आश्रम छोड़कर जाने के लिए कहेंगी तो व्यवस्था लड़खड़ाने का डर है। यह बात माताजी भी अच्छी तरह समझती हैं। इस आधार पर हम लोग अकड़ दिखा सकते हैं। दंड सुनाने की स्थिति में क्या कहना है?

इस बारे में कार्यकर्त्ता सोच ही रहे थे कि माताजी ने कहा, 'तुम लोगों की हरकतों से वाकिफ होते हुए भी मैं चुप रही तो सिर्फ इसलिए कि तुम लोगों के चित्त बच्चों की तरह हैं। उनमें गलतियों का अनुभव होने और अहसास करा देने के बाद सुधर जाने की संभावना है। नहीं सुधरोगे तो जो सत्ता इस संस्थान को चला रही है वह तुम्हें सबक सिखाएगी। यह चेतावनी उसी सत्ता की ओर से है। रह गई इस आंदोलन की बात तो यह मत समझना कि उसमें कोई रुकावट आएगी। इस आंदोलन को भगवान ने जन्म दिया है। वही इसे बढ़ा रहे हैं। चाहे जितने लोग जैसे भी और जिस किसी भी वजह से इसका विरोध करें, कुछ नहीं होना है। इस आंदोलन को हर हाल में बढ़ना ही है।

उपद्रव मचा रहे लोगों को अपनी गलती का बोध हुआ। मन में जो उद्दंडता जाग रही थी उस पर जैसे पानी पड़ गया। वे पछतावे में पड़ गए। ग्लानि और क्षोभ ने मिल कर उनकी आंखों में आंसू भर दिए और वे रोते हुए माताजी के सामने झुक गए। उन्हें प्रणाम करते हुए माफी मांगने लगे। माताजी ने उन्हें दुलारते हुए कहा, 'माफी मांगने की जरूरत नहीं है। तुम लोग मन से बच्चे हो और बच्चों से गलती हो ही जाती है। उठो और अपने अपने काम में लग जाओ।'

आश्रम व्यवस्था में आ रहे व्यतिरेक का समाधान स्नेह दुलार से करने के बाद माताजी तपोभूमि आने लगी थीं। साधकों और कार्यकर्त्ताओं का संबंध प्राय: अखंड ज्योति संस्थान से ही रहता था। वे वहीं से मार्गदर्शन प्राप्त करते थे लेकिन वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने अनुभव किया कि कुछ समय के लिए माताजी को तपोभूमि भी आना चाहिए। उन्होंने इसके लिए दोपहर का समय चुना। कभी कभार वे सुबह के समय भी आ जाती थीं। उस समय तपोभूमि में यज्ञ हवन चल रहा होता था। आश्विन की नवरात्रियां बीत गईं थीं और पिछली घटनाओं का कहीं भी उल्लेख किए या दोहराये बिना तपोभूमि के काम व्यवस्थित चल रहे थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गायत्री तपोभूमि के कार्यकर्त्ता ही नहीं शाखाओं में सक्रिय साधकों को भी माताजी का सान्निध्य आश्वस्त करने लगा था। चैत्र नवरात्रियों में चौबीस साधकों को बुलाने की बात उठी तो गोष्ठी में थोड़े से प्रश्न उठे। उनका समाधान करते हुए माताजी ने यही कहा कि इतने साधकों को बुलाने का निर्देश आचार्यश्री की ओर से ही आया है।

माताजी का यह उत्तर सुनकर कार्यकर्त्ता चुप हो गए। अधिकांश का समाधान हो गया लेकिन कुछ को आशंका भी हो रही थी। उनके अनुसार माताजी सीधी सादी सरल गृहिणी है। वे स्नेह कर सकती है, ममता लुटा सकती है और साधकों का ध्यान रख सकती है लेकिन जहां व्यवस्था के क्षेत्र में दृढ़ निर्णय लेने की आवश्यकता होती है तो वहां पीछे हट सकती हैं। अमृतलाल नामक कार्यकर्त्ता ने इस गोष्ठी के बाद तुरंत कहा था कि समग्र शिविर चलाने में कठिनाई आएगी। वे चार पांच उपद्रवी कार्यकर्त्ताओं को क्षमा और स्नेह ही कर पाई। आवश्यक यह था कि उनके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाती।

अमृतलाल का अब भी यही मानना था कि माताजी पर भावपक्ष हावी है, इसलिए वे मजबूत फैसले नहीं कर पाती। उनकी और उनके जैसे कुछ और लोगों के लिए चैत्र नवरात्रियां परीक्षा की घड़ी थी। नवरात्रि शिविर आरम्भ हुआ तो उन जैसे कार्यकर्त्ताओं को देखकर आश्चर्य हुआ कि चौबीस ही साधक आए हैं। इतने लोगों को ही स्वीकृति दी गई थी। प्रथम नवरात्र की पूर्व संध्या तक सभी साधन आ गए थे।

उपवास का निषेध

उस दिन शाम की संध्या आरती हुई। आरती के बाद माताजी ने आगंतुक साधकों को अगले नौ दिन का कार्यक्रम समझाया। इस बार साधना के दौरान अधिक से अधिक मौन रहने का निर्देश था। अनुष्ठान का नियम था कि साधक दिन में एक बार भोजन करें। शाक, दाल और रोटी के अलावा शाम को दूध या फलाहार। चौबीसों साधकों ने नौ दिन तक अन्न का सेवन नहीं करने का व्रत लिया। फल या दूध पर ही अनुष्ठान की तैयारी दिखाई। माताजी ने कहा भी कि इस बार तीन घंटे की उपासना के अलावा श्रमदान भी करना है, इसलिए उपवास का व्रत सोच समझ कर लें। अपने शरीर पर दबाव नहीं आने दें। माताजी के सावधान किए जाने के बावजूद साधक अपने व्रत पर दृढ़ रहे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनुष्ठान की तीसरी विशेषता यह थी कि इस बार प्रवचन आदि की व्यवस्था नहीं की गई थी। एक घंटे के प्रवचन के स्थान पर वह अवधि मंदिर के सामने प्रांगण में मौन बैठकर अपने आपमें डुबकी लगाते हुए साधन भजन में लगानी थी।

नियत अनुशासन का पालन करते हुए साधना आरंभ हुई। श्रमदान के लिए तपोभूमि में फैले रोड़े पत्थर हटाने, वहां पौधे लगाने और सफाई करने का काम शुरू किया। उस चैत्र प्रतिपदा से माताजी ने आगे के लिए भी व्यवस्था बनाई कि तपोभूमि में अलग से सफाई कर्मचारी की नियुक्ति नहीं की जाएगी। यहां झाड़ू बुहारी करने और गंदगी हटाने का काम साधक और कार्यकर्त्ता ही संभालेंगे।

शिविर में आए साधकों ने आश्रम की सफाई और बागवानी के लिए पौधों को रोपने और सींचने का काम शुरु किया तो उसे लोगों ने सहज भाव से लिया। उस सहज भाव से साधक तपोभूमि के सामने की सड़क और जयसिंहपुरा की सफाई का काम भी शुरु कर रहे थे। उनके काम शुरु करते ही स्थानीय लोगों ने प्रतिक्रिया की। सुबह सफाई करते हुए कार्यकर्त्ताओं को लोगों ने अजीब भाव से देखा। नाक-भौं सिकोड़ी और एकाध ने एतराज भी किया लेकिन यह सोच कर चुप रह गए कि एकाध दिन यह काम कर लेने के बाद लोगों का उत्साह ठंडा पड़ जाएगा। लेकिन कार्यकर्त्ता अगले दिन भी अपने काम में जुट गए थे। काम में जुटते हुए उन्होंने स्थानीय लोगों से भी साथ आने का अनुरोध किया। अव्वल तो उनकी बात पर किसी ने ध्यान ही नहीं दिया। ध्यान दिया भी तो व्यंग्य कटाक्ष के रूप में। कहने लगे कि गांधीजी ने जिन लोगों को यह काम सिखाया था, वे राज करने लगे हैं। तुम लोग भी शायद इस काम को करते हुए राजकाज में जाना चाहते हो।

उस दिन शाम जयसिंहपुरा के कुछ सफाईकर्मी अखंड ज्योति संस्थान गए। इन लोगों को जयसिंहपुरा का काम विरासत में मिला था और घर-घर से मिलने वाली माहवारी से उनका गुजारा चलता था। माताजी से मिलकर वे कहना चाहते थे कि अपने कार्यकर्त्ताओं को रोकें। गांव की झाड़ू बुहारी करने से हमारी रोजी रोटी पर आँच आएगी। वे लोग अखंड ज्योति पहुंचे तो ऊपर जाने में झिझक हुई। उन्हें मालूम था कि माताजी के पास जाने, मिलने में कोई अड़चन नहीं है फिर भी एक अज्ञात भय था कि कहीं कोई रोक न दे। ऊपर जाते हुए किसी व्यक्ति के मार्फत उन्होंने संदेश भिजवाया कि जयसिंहपुरा के बाल्मीकि मिलना चाहते हैं। माताजी नीचे आकर हमारी बात सुन लें तो बड़ी मेहरबानी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संदेश ऊपर पहुंचने में दो मिनट का समय ही लगा होगा कि माताजी सीढ़ियां उतरती दिखाई दीं। जयसिंहपुरा के उन सफाई कर्मियों ने माताजी को प्रणाम किया और तत्क्षण अपनी बात शुरु कर दी। उन्होंने कहा कि माताजी हमारी दरख्वास्त है। माताजी ने हाथ से इशारा कर आगे कुछ बोलने से मना किया और कहा बाकी बातें बाद में। पहले आप लोग ऊपर चलें। सुन कर वे सकुचाने लगे। उन्होंने विनीत होकर कहा, 'हम यहीं ठीक हैं। ऊपर चलेंगे तो अच्छा नहीं लगेगा।'

माताजी ने कहा, 'अच्छा क्यों नहीं लगेगा। आप लोगों ने मुझे माताजी कहा है न। मै आपको ऊपर चलने के लिए कह रही हूँ और आप मना कर रहे हैं। यह अच्छा लग रहा है क्या?'

उन नागरिकों के लिए अब नीचे ही रुका रहना कठिन हो गया। माताजी भी अपनी बात कह कर रुकी नहीं। सीढ़ियों की ओर इशारा करती हुई चढ़ गईं। वे लोग भी चुपचाप पीछे हो लिए। ऊपर जाकर माताजी ने उन्हें परामर्श में बैठने के लिए कहा। वहां काम कर रहे कार्यकर्त्ता रघुनाथ को उनके लिए पानी लाने के लिए कहते हुए वे भी सामने बैठ गईं और कुशलक्षेम पूछने लगीं। आए हुए नागरिकों में एक ने जिनका नाम अच्छेलाल था कहा कि गायत्री परिवार के लोग जयसिंहपुरा में सफाई करने लगे हैं। इससे हम लोगों में चिंता है।

माताजी ने कहा कि चिंता किस बात के लिए? आप लोगों को डर है कि आपका कामधाम छूट जाएगा। अरे वे लोग तो नौ दिन के लिए आए हैं और तपोभूमि में रहने वाले साधक कोई आप लोगों को अपने काम से रोकेंगे थोड़े ही। अच्छेलाल ने अपने लोगों का भय खुलकर सामने रखा। कहने लगे कि वे लोग गांव वालों को अपने आसपास की जगह खुद साफ करने के लिए भी कहते हैं।

इस बीच रघुनाथ पानी लेकर आया था। माताजी ने कुछ नाश्ता वगैरह लाने के लिए भी कहा। जयसिंहपुरा के उन लोगों ने इस बार ननुनच नहीं किया। यह सोचकर कि मना करने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा। माताजी फिर कहने लगीं, 'वह कार्यक्रम लोगों में सफाई के प्रति जागरुकता लाने के लिए है। देखते नहीं लोग अपने घरों के आसपास कैसी गंदगी रखते हैं।' कहते हुए माताजी कुछ रुकीं। रघुनाथ चाय नाश्ता लेकर आ गया था। अच्छेलाल आदि को उसे लेने का आग्रह करते हुए माताजी ने कहा कि हम लोग तो आप में से भी कुछ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लोगों को तपोभूमि में रखने की योजना बनाए हुए हैं। आचार्यश्री कुछ महीनों बाद वापस आने वाले हैं। उनके आते ही इस फैसले को अमली रूप दे देंगे।'

माताजी उन लोगों से उनके घर परिवार के बारे में पूछती रहीं। उनके दुख दर्द और समस्याओं के बारे में पूछते हुए उन्होंने कहा कि हमारी जहां भी जरूरत हो, निस्संकोच बताना। जयसिंहपुरा और आसपास का इलाका जमीनी हद से ही तपोभूमि से बाहर है। वरना हम सब एक ही बस्ती के लोग हैं। एक ही घर परिवार के। आधी रात को भी कोई जरूरत पड़े तो बेझिझक तपोभूमि या यहां आ सकते हैं।

शंका मिटी

समाधान पाकर जयसिंहपुरा के बाल्मीकि वहां से चले गए। उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि माताजी ने उन्हें घर में बुलाया, जहां सब लोगों को बैठाते हैं, वहां बिठाया और अपने सामने नाश्ता कराया। अच्छेलाल की प्रतिक्रिया थी कि कोई बड़ा से बड़ा स्वराजी भी हम लोगों के जूठे बर्तन नहीं उठाता। आज भी लोग मिट्टी के बरतन में खाना देते हैं। माताजी ने घरेलू बर्तनों में हमें नाश्ता दिया है और जूठे बर्तन भी नहीं उठाने दिए। इसी तरह की बातचीत करते हुए रास्ता कट गया। उन लोगों ने रास्ते में ही तय कर लिया कि तपोभूमि के साधक अगले दिन सफाई करने आएंगे तो वे उन सबका हाथ बटाएंगे। वे लोग भावना से काम कर रहे हैं। उनकी भावना में हम लोगों को अपना कौशल भी मिलाना चाहिए।

शिविर में आए साधकों ने श्रमदान के तौर पर कुछ और काम भी किए थे। आश्रम के पीछे एक नाला उन दिनों बहता था। दक्षिण में बसी बस्तियों का गंदा पानी उसमें बहकर आता था। जहां तहां वह पानी जमा हो जाता और सड़ांध पैदा करता था। सफाई की बात चली तो एक साधक ने उस नाले की तरफ ध्यान खींचा। आठ, दस साधकों ने मिलकर तय कर लिया कि एक सप्ताह में इसे ठीक ठाक कर लेंगे। उन्होंने दूसरे दिन ही यह काम शुरु कर दिया। उन्हें सफाई के काम में जुटा देखकर गांव के लोग भी साथ आए और एक सप्ताह में ही नाले में जमा कूड़ा करकट साफ हो गया। अब पानी बहने लगा था। नवमी के दिन पूर्णाहुति समारोह हुआ तो गांव के कुछ बुजुर्ग लोग आए। उन्होंने इस सफाई का काम निरंतर जारी रखने का संकल्प लिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन नागरिकों को सफाई का संकल्प करते देख माताजी ने कहा कि हम लोग अपनी फैलाई गंदगी खुद साफ करें। यह तो ठीक है लेकिन अपने उन भाइयों को भी गले लगाएं जिन्हें हम दुरदुराते हैं। सिर्फ इसलिए दुरदुराते हैं कि वे हमारी फैलाई हुई गंदगी साफ करते हैं। ईमानदारी से सोचे तो हमें उन लोगों का उपकार मानना चाहिए। गांव वालों ने इस बात को सिर माथे लिया।

नवरात्रियां पूरी होने को थीं। राम नवमी के दिन ब्रजदर्शन का कार्यक्रम बना। दो दिन पहले ही इसका निर्धारण हो गया था। इस शिविर में आए वेद शास्त्री ने ब्रज दर्शन में अनिच्छा जताई। वेद तीसरी या चौथीं बार शिविर में आए थे। पिछले शिविरों में वे ब्रजमंडल की यात्रा कर आए थे। इस बार उन्होंने कहा कि यात्रा के स्थान पर गायत्री मंदिर में ही रहना चाहेंगे। जितनी देर यात्रा में जाएंगे, उतनी देर मां का ध्यान करते हुए बैठे रहेंगे। माताजी ने उनके लिए उसी तरह की व्यवस्था कर दी थी। यह व्यवस्था तय हो गई। अन्य साधकों के लिए यात्रा की तैयारी होने लगी। तैयारी में विशेष कुछ नहीं करना था। वाहन का प्रबंध और उसके बाद शाम तक या अगली सुबह सबकी अपने अपने घर वापसी।

वेद शास्त्री अपने लिए कुछ अलग योजना भी बना रहे थे। उनके मन में कुछ समय और गायत्री तपोभूमि में रहने की इच्छा थी। माताजी से कहने के बारे में सोचते हुए वे टहल ही रहे थे कि तपोभूमि में एक साधु प्रवेश करता दिखाई दिया। दिखने में वह कुरुप लग रहा था, शरीर पर जमा हुआ मैल और सिर में धूल मिट्टी जम जाने के कारण बालों की जटाएं बन गई थीं। उसके नख बहुत बढ़े हुए थे। कंधे पर सिर्फ एक गुदड़ी थी। वस्त्र के नाम पर उसने लंगोट पहनी हुई थी और उस पर अंगोछा लपेट लिया था। पहली ही नजर में वह पिशाच जैसा लग रहा था। वह सीधे मंदिर के सामने गया। वहां गायत्री माता को प्रणाम किया। स्तवन पढ़ा और वापस जाने लगा। वेद शास्त्री उन्हें ध्यान से देख रहे थे। कुछ और साधक भी उस साधु को गौर से देख रहे थे। पता नहीं उसमें क्या आकर्षण था।

दर्शन कर वह सीढ़ियां उतरा। मंदिर की परिक्रमा लगाई। यज्ञशाला की परिक्रमा लगाई और जिस तरह आया था, उसी तरह वापस जाने लगा। बाहर जाते हुए साधु के पीछे वेद भी चल दिए। गायत्री तपोभूमि के द्वार पर पहुंचते हुए साधु को उन्होंने पुकारा। वह साधु रुका। वेद ने प्रणाम करते हुए उनसे अनुरोध किया कि महाराज मुझे अपना शिष्य बना लीजिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साधु ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह टकटकी बांधकर देखता रहा। वेद शास्त्री ने दूसरी और फिर तीसरी बार यही सवाल दोहराया। साधु ने इस बार वेद को घूर कर देखा। देखने के बाद वह नीचे झुका और एक ईट उठा ली। जैसे वह वेद को ईंट से मारना चाहता हो, उसी भाव से उसने हाथ उठाया। फिर झटके से नीचे किया और ईंट का वह टुकड़ा वेद शास्त्री के हाथों में थमा दिया। वेद शास्त्री ने ईंट को उलट पलट कर देखा तब तक वह साधु कुछ कदम आगे बढ़ गया था। चलते हुए वह कह रहा था कि जिस जगह से आए हो, वहीं अपना मन रमाओ। हम जैसे बाबा बैरागियों को भी यहां धोक लगाने आना पड़ता है।

शाम के समय वेद शर्मा ने इस घटना के बारे में माताजी को बताया। माताजी ने कहा कि तुम बिरागी बनकर ईश्वर को पाना चाहते हो। इसकी जरूरत नहीं है। घर और संसार में रहकर ही साधना करो। यह निर्देश देने के बाद माताजी ने कहा तुम तो विद्वान व्यक्ति हो। तुम्हें नहीं मालूम कि यह कलियुग है और हमारे शास्त्रकारों ने कलिकाल में संन्यास को वर्जित किया हुआ है।

मन में उमड़ रही विराग भावना इतनी प्रबल थी कि वेद शास्त्री को यह बात ध्यान में ही नहीं आई थी। वह माताजी के चरणों में झुका और कहा कि नवरात्रि पूरी हो जाने के बाद मैं कुछ समय और गायत्री तपोभूमि में रुकना चाहता हूँ। पहले यह भावना थी कि यहां रहते हुए किसी संन्यासी गुरु का इंतजार करूंगा। अब वैसा कोई भाव नहीं रहा।

माताजी ने तत्काल हामी भर दी। यह भी कह दिया कि वेद शास्त्री नवरात्रि के बाद चालीस दिन का अनुष्ठान करें। वेद शास्त्री को यह व्यवस्था रास आई। इस अवधि में उन्होंने गायत्री तपोभूमि में चल रहे आर्ष वाङ्मय के काम में हाथ बटाने का निश्चय भी कर लिया।

अष्टग्रही का आतंक

नवरात्रि शिविर पूरा होने के ठीक एक दिन पहले आचार्यश्री का संदेश आया। उन्होंने अपनी वापसी के लिए गायत्री जयंती का दिन नियत किया था। संदेश में माताजी को नवरात्रि के संदेश और २३ जून तक चलाए जा सकने वाले कार्यक्रमों के बारे में निर्देश थे। नवरात्रि संदेश में भावी अशुभ आशंकाओं को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

टालने के लिए साधकों से गायत्री साधना पर जोर देने के लिए कहा था। उन दिनों १९६२ के अष्टग्रही योग को लेकर काफी बवाल मचा हुआ था। आचार्यश्री ने कहा था कि नवरात्रि शिविर में आए साधकों को अपना मनोबल बनाए रखने के लिए कहो। उन्हें आश्वस्त करें कि सर्वनाश जैसी कोई विभीषिका नहीं होने जा रही। यही बात अखंड ज्योति पत्रिका के माध्यम से भी सब तक पहुंचने लगी थी।

पिछले कुछ वर्षों से ज्योतिष जगत में हाहाकार मचा हुआ था। कि १९६२ में आठ ग्रह एक ही राशि में आ रहे हैं। १६ जनवरी से १२ फरवरी १९६२ तक सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, और केतु के मकर राशि में आने से प्रकृति बुरी तरह विक्षुब्ध हो उठेगी। उस कारण मनुष्य जाति को भयंकर आपदाओं का सामना करना पड़ेगा। महायुद्ध, महामारी, दुर्भिक्ष जैसे संकट बढ़ेंगे और देश समाज में भयानक अराजकता, अव्यवस्था आएगी। इन विपत्तियों के कारण जनधन की अपार हानि होगी।

अष्टग्रही योग का आतंक दरअसल १९५७ से चल रहा था। उस आतंक को निरस्त करने के लिए गायत्री परिवार ने साधना उपचार शुरु किया था। वह उपचार अब भी चल रहा था। लेकिन अष्टग्रही योग के आतंक की बताई तिथियां एकदम पास आ गईं थीं। इसलिए आचार्यश्री ने साधकों के प्रति आश्वासन दोहराने पर जोर दिया था।

ज्योतिषी, भविष्यद्रष्टा और नक्षत्रविद एक स्वर से कह रहे थे कि आठ ग्रहों का इतना समीप हो जाना विनाश को अवश्यंभावी कहता है। अखबारों, साप्ताहिक और मासिक पत्र पत्रिकाओं में इस विषय पर प्रचुर सामग्री छप रही थी। उपलब्ध प्रचार माध्यम भी इस विषय पर काफी सामग्री दे रहे थे। उनका कुल प्रभाव यह हो रहा था कि लोग डरने लगे थे। वे मान रहे थे कि १६ जनवरी से १२ फरवरी ६२ के बीच किसी भी दिन दुनिया नष्ट हो जाएगी। प्रलय मच जाएगा! खौफ को निरस्त करने के लिए आचार्यश्री ने तरह-तरह से विश्लेषण शुरु किया। परमात्मा अपनी सृष्टि को नष्ट होते नहीं देखना चाहता। संसार में जो कषाय कल्मष इकट्ठे हो गए हैं उन्हें मिटाने या संतुलित करने के लिए ही नियंता यह उलटफेर कर रहा है। ऐसा ही कुछ उन दिनों पत्रिका में भी प्रकाशित हो रहा था।

नवरात्रि शिविर संपन्न होने के दिन माताजी ने साधकों को दायित्व सौंपा कि वे अपने क्षेत्र में अगले वर्ष तक साधना उपासना के कार्यक्रम चलाएं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उद्‌बोधन सुन कर उन साधकों ने अगले वर्ष तक दस नए साधक बनाने का संकल्प लिया। माताजी ने शिविर समापन के समय ही कहा कि उनके अकेले के सान्निध्य में यह अंतिम शिविर हो रहा है। इसके बाद का नवरात्रि शिविर आचार्यश्री के सान्निध्य में होगा। आचार्यश्री गायत्री जयंती पर मथुरा आ रहे हैं। मुन्नालाल नाम के एक साधक ने पूछा भी कि अगले शिविर में माताजी से संपर्क नहीं हो सकेगा क्या? माताजी को उत्तर देने की आवश्यकता नहीं हुई। पास बैठे किसी साधक ने ही कह दिया कि माताजी का सान्निध्य क्यों नहीं मिलेगा? उनके बिना तो हम लोगों का फलाहार भी नहीं हो सकता। यह उत्तर विनोद भाव से सुना गया। मुन्नालाल को अपने साथी के हस्तक्षेप और बाद में उठी हंसी से समाधान नहीं हुआ। उनके चेहरे पर जिज्ञासा या प्रश्नवाचक भाव अब भी तैर रहा था।

माताजी ने उसे समझाया और कहा, 'पहले मैं साधकों और आगंतुकों को मां की तरह ही संभालती थी। आचार्यश्री के अज्ञातवास पर जाने के बाद मैंने उनकी सौंपी हुई जिम्मेवारियां भी यथाशक्ति पूरी कीं। अब वे वापस आ रहे हैं तो उनका काम वही करेंगे। मेरे लिए जो आदेश देंगे, उनका मैं पालन करूंगी।'

माताजी ने फिर उस कार्यकर्त्ता की ओर देखा। लगा कि उसका भलीभांति समाधान नहीं हुआ है। इसलिए उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा, 'परेशान मत होओ मुन्नालाल। आचार्यश्री ने एक वर्ष का यह दायित्व साधकों के बीच आने के लिए ही तो सौंपा है। मां की तरह तो मैं आगे भी काम करूंगी। आचार्यश्री की साधना सहचरी के रूप में भी अपने आपको सिद्ध करूंगी। अज्ञातवास से लौटने के बाद आचार्यश्री प्रखर और तेजस्वी रूप में प्रकट होंगे। उनका काम बढ़ेगा, व्यस्तताएं बढ़ेगी। साधकों की देखभाल के लिए उनके आदेश अनुसार मुझे भी आगे आना ही पड़ेगा।'

सुनकर साधक का समाधान हो गया। मुन्नालाल अपने स्थान से उठा। माताजी के पास गया और उनके चरणों में प्रणाम करते हुए कहने लगा 'गुरुदेव जैसे भी प्रचंड और तेजस्वी रूप में उभर कर आएं मुझे आपके स्नेह में ही विश्राम है। वह मिलता रहे और कुछ नहीं चाहिए। माताजी ने मुन्नालाल के सिर पर हाथ रखा और स्नेह से दुलराया। कुछ पल वह इसी स्थिति में माताजी के चरणों में बैठा रहा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साधकों के लिए आह्वान

अभी तक साधक गायत्री की सामान्य साधना ही करते थे। सहस्रांशु जप, अनुष्ठान और बहुत हुआ तो चौबीस लाख का महापुरश्चरण। इन साधनाओं का अनुशासन भी थोड़ी सी सावधानी बरतने पर सहज ही निभाया जा सकता था। ब्रह्मचर्य से रहने, जमीन पर सोने, एक समय भोजन करने, चमड़े की बनी वस्तुओं का उपयोग नहीं करने और अपनी सेवाएं आप करने जैसे व्रत-नियमों के साथ जप अनुष्ठान भी साधकों को अध्यात्म की उच्च कक्षा तक पहुंचाता था। आचार्यश्री अज्ञातवास से वापस आए तो उन्होंने पहली घोषणा यह की कि साधक गायत्री की उच्चस्तरीय साधना भी करें। १९६१ की गायत्री जयंती का दिन था। तपोभूमि में आते ही आचार्यश्री ने प्रातःकालीन प्रवचन में यह बात कही। उस समय गिने चुने साधक मौजूद थे। उन साधकों और तपोभूमि के कार्यकर्त्ताओं ने भी इस घोषणा को अहोभाव से सुना।

उस गोष्ठी में ही आचार्यश्री ने अष्टग्रही योग के आतंक की चर्चा फिर छेड़ी थी। कहा कि अगले साल ५ फरवरी १९६२ को यह योग आता बताया जा रहा है। लोग कह रहे हैं कि इससे पहले महाभारत के समय सात ग्रह एक राशि पर आए थे। तब महाविनाश हुआ था। इस बार आठ ग्रह एक राशि पर आ रहे हैं। उस विनाश की सिर्फ कल्पना ही की जा सकती है। वह कितना भयंकर होगा कहा नहीं जा सकता।

आचार्यश्री ने वहां उपस्थित साधकों से कहा कि इस योग का दूसरा पक्ष भी है। महाभारत के समय भगवान कृष्ण का अवतार हुआ था। उनकी संपूर्ण कलाएं उस योग के बाद ही प्रकट हुई थीं। अष्टग्रही योग का एक संदेश यह भी है कि भगवान एक बार फिर अपनी संपूर्ण कलाओं के साथ प्रकट होने वाले हैं। वहां मौजूद रतनलाल शास्त्री ने पूछा कि भगवान का जन्म होगा या वे अपने आपको प्रकट करेंगे। यदि प्रकट करेंगे तो हम उन्हें किन लक्षणों से पहचान सकेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रतनलाल शास्त्री के प्रश्न को सुन कर दूसरे साधकों ने भी उत्सुकता का भाव जताया जैसे उनके मन में भी यही प्रश्न उमड़ रहा हो। आचार्यश्री ने कहा कि यह तो भगवान के प्रकट होने पर ही समझा जा सकता है कि उन्होंने जन्म लिया है या अपने आपको व्यक्त कर रहे हैं। जहां तक उनके प्रभाव का प्रश्न है, वह फरवरी के बाद ही दिखाई देने लग सकता है। यह प्रभाव संसार और समाज की स्थितियों में आने वाले परिवर्तनों के रूप में होगा। परिवर्तन देखे ही नहीं अनुभव भी किए जा सकेंगे।

अष्टग्रही योग के बारे में इतनी सी बात कहने के बाद आचार्यश्री ने फिर उच्चस्तरीय साधना की चर्चा छेड़ दी। कहा कि अभी तक हम गायत्री के एक मुख की ही आराधना करते रहे हैं। साधना की अगली कक्षा में पंचमुखी गायत्री की साधना करेंगे। गायत्री के पंचमुखी स्वरूप का अर्थ है अपना अस्तित्व जिन आवरणों में बटा हुआ है, उन्हें जगाना। इन कोषों को शास्त्रों में अन्नमय, मनोमय, प्राणमय, विज्ञानमय और आनंदमय कहा है। अभी हमारा परिचय सिर्फ अन्नमय कोष से ही है। दिखाई देने वाले स्थूल शरीर तक ही हमारी गतिविधियां सीमित हैं। बहुत हुआ तो कुछ लोग मनोमय स्तर तक पहुंचते हैं। हजारों में एकाध प्राणमय सत्ता तक भी पहुंचते हैं। उनकी संख्या नगण्य ही है।

आचार्यश्री यह चर्चा कर ही रहे थे कि आश्रम में एक कपिला गाय ने प्रवेश किया। आचार्यश्री मंदिर के दालान में बैठे चर्चा कर रहे थे और साधक भी उनके सामने ही बैठे थे। उन साधकों में से दो लोगों ने गाय को हरकारा। गायत्री तपोभूमि के मुख्य द्वार पर ग्रिल के फाटक लगे हुए थे, लेकिन वे खुले थे। गाय यज्ञशाला के आगे तक आ गई, तब एक साधक ने उठकर उसे भगाना चाहा। आचार्यश्री ने उसे रोक दिया। कहा कि उधर ध्यान मत दो। वह भी संस्कारी आत्मा है। जिस तरह आई है, उसी तरह चली जाएगी।

कह कर आचार्यश्री आगे की चर्चा में व्यस्त हो गए। वह गाय सीढ़ियों के पास आकर बैठ गई थी। मंदिर की ओर टुकुर-टुकुर देखती हुई जैसे वह भी आचार्यश्री की कही बातों को सुन रही थी। चर्चा लगभग आधा घंटे तक चली। उसके बाद आचार्यश्री उठ गए। वे सीढ़ियां उतर कर आगे निकल रहे थे कि गाय भी उठ गई। उसके उठने का तरीका ऐसा था जैसे वह आचार्यश्री के साथ निकलना चाहती हो या उनसे संवाद करना चाहती हो। आचार्यश्री ने गाय की पीठ पर हाथ फेरा। वह मुदित हुई और सिर हिलाती हुई आगे बढ़ गई। चुपचाप परिसर से बाहर जाती हुई गाय को साधक मुग्धभाव से देख रहे थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अथर्ववेद भाष्य प्रकाशित होने के बाद चारों वेदों का सैट पूरा हो गया। १०८ उपनिषद, छह दर्शन शास्त्र, २० स्मृतियां, २४ गीताएं, १८ पुराण और योग वासिष्ठ के प्रकाशन का काम भी गति पकड़ चुका था। अज्ञातवास से लौटने के कुछ दिन बाद ही आचार्यश्री ने माताजी को बता दिया था कि अब से तीस वर्ष बाद आर्ष वाङ्मय के नवीन भाष्यों की जिम्मेदारी तुम्हें संभालनी है। उन भाष्यों में विज्ञान सम्मत अर्थ किए होंगे। इस दायित्व को संभालने के लिए माताजी ने प्रसन्नतापूर्वक सहमति जताई थी।

उन दिनों माताजी कुछ चिंतित थीं। चिंता का भाव हर किसी को दिखाई नहीं देता था। आचार्यश्री के सामने वह ज्यादा व्यक्त था। कारण अज्ञातवास के दिनों आचार्यश्री के लिखे पत्रों में ही संकेत रूप में विद्यमान थे। वे संकेत मथुरा आने के बाद धीरे धीरे स्पष्ट होने लगे थे। गायत्री जयंती के दिन तो वे पूरी तरह स्पष्ट हो गये। उस दिन आचार्यश्री ने माताजी को बताया कि सार्वजनिक जीवन में अपना काम दस वर्ष और शेष है। इसके बाद मथुरा से चले जाना है।

सुनकर माताजी स्तब्ध रह गईं। उन्होंने पूछा कुछ नहीं, लेकिन चेहरे पर चिंता की रेखाए साफ दिखाई दे रही थीं। आचार्यश्री ने कहा, 'दस वर्ष काफी समय होता है। हम पचास वर्ष के हो गए हैं। कायदे से इस उम्र के बाद घर ग्रहस्थी से निवृत्त हो जाना चाहिए। वह अब भी हो सकते हैं लेकिन गुरुदेव (मागदर्शक सत्ता) ने अभी दस वर्ष और इधर रहने का आदेश दिया है।'

आचार्यश्री की इस बात को भी माताजी ने चुपचाप सुना। उस समय वे सिर्फ सामान्य गृहिणी की तरह व्यवहार कर रही थीं। सामान्य और सहज मां की तरह सुनकर स्वीकार किया। दोनों बच्चे उस समय विद्यालय में थे या बाहर कहीं खेल रहे होंगे। आचार्यश्री की बात सुन कर माताजी कक्ष से बाहर निकलीं जैसे बच्चों को तलाश रही हों। आचार्यश्री ने उनकी विकल और चिंतित निगाहों को समझा। कहा, 'बच्चों की चिंता हो रही होगी। जब हम लोगों ने अपने आपको भगवान के भरोसे छोड़ दिया है तो अपने दायित्व भी उन्हीं के हुए मान लेना चाहिए।'

परिवार की व्यवस्था के बारे में आचार्यश्री ने अपनी बात आगे बढ़ाई। उन्होंने याद दिलाया कि अज्ञातवास के समय सतीश (मृत्युंजय शर्मा) को गाजियाबाद में ओमप्रकाश के पास छोड़ना था। वह सुझाव वैकल्पिक था लेकिन उसे अब चुन लेना चाहिए। अगले दस वर्षों में गायत्री परिवार को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विस्तार देना है। परिवार में हजारों लोग सम्मिलित होने वाले हैं। वे सभी साधक स्तर के होंगे। उनके आत्मिक विकास पर ध्यान देना है। देश भर में गायत्री यज्ञों और सम्मेलनों की शृंखला चलती है। उसका संयोजन करना है। उस स्थिति में हम बच्चों पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाएंगे। मृत्युंजय शर्मा तब नवीं कक्षा में पढ़ते थे। आचार्यश्री का मत था कि नया सत्र वे अपने बड़े भाई के पास ही शुरु करें।

वानप्रस्थ की ओर

माताजी आचार्यश्री की बात सुनकर कुछ बोली नहीं। हालांकि उन्हें तेरह चौदह वर्ष के किशोर को अपने से दूर भेजने की बात ज्यादा रास नहीं आ रही थी। आचार्यश्री ने इस बात को विस्तार दिया और कहा कि बड़े भाई को छोटे भाई का दायित्व संभालना चाहिए। पिता के नहीं रहने की स्थिति में परिवार का मुखिया बड़ा भाई ही होता है। वे इससे आगे कुछ नहीं कह पाए। कहते कहते उनकी दृष्टि माताजी के चेहरे पर पड़ गई थी। वहां उदासी घनी होती जा रही थी।

आचार्यश्री ने अपनी बात बीच में ही छोड़कर पूछा कि क्या हुआ? माताजी ने उत्तर दिया, 'बच्चों की पढ़ाई पर हम लोग वैसे भी क्या ध्यान दे पा रहे हैं। लड़का नवीं कक्षा में है। आपको अभी तक एक बार भी उसकी पाठशाला नहीं जाना पड़ा। आगे भी नहीं जाना पड़ेगा। आपकी दृष्टि में रहना ही काफी है। अभी बाहर भेजने की बात पर एक बार फिर विचार करें तो अच्छा रहेगा।'

आचार्यश्री ने कहा कि अच्छा सोचेंगे। शैल को यहीं रखना है। उसे आगे महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाने हैं। तुम्हारे सान्निध्य में वह ज्यादा अच्छी तरह विकसित होगी। आचार्यश्री के इतना कहने के बाद माताजी ने आगे कुछ नहीं कहा। न उन्होंने पूछा और न ही आचार्यश्री ने बताया कि अगले दस वर्ष के क्या निर्धारण हैं? इस अवधि में कौन से काम निपटाए जाने हैं।

जिस दिन परिवार के दायित्वों को हलका करने या बांटने की बात हुई थी, उसी दिन शाम को आचार्यश्री ने गायत्री तपोभूमि के कार्यकर्त्ताओं को बुलाया। यों कार्यकर्त्ता भोजन के लिए प्राय: घियामंडी आते ही थे। उस दिन सूचना भेज दी गई थी कि निवास पर गोष्ठी भी होगी। गोष्ठी में आचार्यश्री ने संगठन के बारे में महत्वपूर्ण फैसले किए। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार का पुनर्गठन किया जाना है। अब उन्हीं लोगों को इस अभियान में साथ रखा जाएगा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जो साधना और सेवा की कसौटी पर खरे सिद्ध होंगे। तपोभूमि के कार्यकर्त्ताओं से कहा गया कि वे अगले दिन से ही क्षेत्र में काम कर रहे साधकों को पत्र लिखें। उन पत्रों में साधकों के व्यक्तित्व के बारे में पूरी जानकारी मंगाई जाए। इसमें पारिवारिक पृष्ठभूमि और पहचान के अलावा अब तक चल रही साधना का विवरण और जन्म कुण्डली भी मंगाई जाए।

जन्म कुण्डली मंगाने के संबंध में किसी कार्यकर्त्ता ने पूछा कि इससे ज्योतिष आदि के प्रति लोगों में अंधविश्वास नहीं फैलेगा क्या? आचार्यश्री ने उस कार्यकर्त्ता को समझाया कि कुंडली का उपयोग साधक की आत्मिक स्थिति का आकलन करने के लिए है। उससे हमें आगे का साधना क्रम तय करने में सहायता मिलेगी। साधक यदि सामने हो तो उसे देखकर समझा जा सकता है। नहीं होने की स्थिति में जन्मकुंडली काफी सहायक होगी।

उस गोष्ठी में यह भी तय किया गया कि गायत्री परिवार की शाखाओं में अब भविष्य में चुनाव नहीं होंगे। राजनैतिक पार्टियों और सामाजिक, व्यावसायिक संगठनों में तो चुनाव ठीक है क्योंकि वहां पद के साथ समर्थन सहयोग और अधिकार की बात भी जुड़ी होती है। लेकिन आध्यात्मिक और धार्मिक संगठनों में चुनाव से ईर्ष्या द्वेष और अहंकार को बढ़ावा मिलता है। भविष्य में शाखाओं का संचालन करने के लिए केन्द्र से ही नियुक्तियां की जाएगीं।

उन्हें प्रमुख प्रतिनिधि या संयोजक आदि कहा जाएगा। ऐसे व्यक्तियों का चुनाव स्थानीय लोगों में से ही किया जाए। यह चयन या मनोनयन किसी को बड़ा बनाने या मानने के लिए नहीं बल्कि स्थानीय गतिविधियों का संचालन करने के लिए होगा। प्रतिनिधि उस शाखा का हिसाब किताब रखेगा। यह भी निर्धारित किया गया कि क्षेत्र में जितने भी साधक सक्रिय हैं, जो स्वयं श्रद्धा, निष्ठा से उपासना करते हैं और नए साधक तैयार करते हैं उन्हें भी स्वतंत्र दायित्व दिए जाएं। ऐसे साधक कम से कम दस साधक और बनाएं। वे साधक सप्ताह में एक दिन मिलकर अपने यहां गोष्ठी भी किया करें।

संगठन के बारे में चर्चा कर चुकने के बाद आचार्यश्री ने कहा कि इस वर्ष हम लोग गायत्री की उच्चस्तरीय साधना आरंभ करा रहे हैं। व्यक्तिगत स्तर पर कितने ही साधक आरंभ कर चुके हैं और बहुत से लोग वर्षों से कर भी रहे हैं लेकिन अभियान की तरह यह एक व्यवस्थित आरंभ है। गायत्री तपोभूमि के कार्यकर्त्ता भी उस साधना का अनुशासन पालें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साधना का प्रारंभिक अनुशासन बहुत सरल था। उसके अनुसार सप्ताह में एक दिन अस्वाद व्रत और मौन संयम। स्वाध्याय और प्राणायाम का अभ्यास इन तीन अनुशासनों को वे अन्न, प्राण और मनोमय कोष के द्वारों पर दस्तक की तरह बता रहे थे। इसके बाद संपर्क में आने वाले व्यक्तियों के प्रति अनुग्रह का भाव उनके प्रति कृतज्ञता मानने और ध्यान के समय अपने आपको एक शिशु की तरह गायत्री माता की गोद में अनुभव करने का अभ्यास था।

प्राणाकर्षण प्राणायाम की प्रक्रिया आचार्यश्री ने उस गोष्ठी में ही समझा दी। कार्यकर्त्ताओं को पालथी मारकर बैठने के लिए कहा। उन्हें निर्देश दिया कि वे मन में प्रसन्नता का भाव लाएं और प्रतीति जगाएं कि अपने आसपास सफेद बादलों की तरह चारों ओर प्राण लहरा रहे हैं। नाक से गहरी सांस लें और भावना करें कि चारों ओर लहरा रहा प्राण अपने भीतर प्रवेश कर रहा है। फेफड़ों में, पेट में और अंग प्रत्यंगों में वह प्राण समा रहा है।

शरीर का रेशा रेशा उस प्राण को पीकर पुष्ट हो रहा है। श्वांस भीतर खींच लेने के बाद उसे भीतर ही रोके रहें और अनुभव करें कि सूखी मिट्टी पानी पीकर जिस तरह गीली होती और एक आकार लेने लगती है उसी तरह अपना अस्तित्व भी भीग रहा है। यह तरलता व्यक्तित्व को नया रूप देने के लिए तैयार कर रही है। गीली मिट्टी जिस तरह अभीष्ट सांचे में ढलने के लिए तैयार होती है। उसी तरह अपना आपा भी इष्टदेव के साये में ढलने के लिए सन्नद्ध हो रहा है।

जितनी देर रोकी जा सके, उतनी देर सांस रोकने के बाद आचार्यश्री ने कार्यकर्त्ताओं को धीरे-धीरे सांस बाहर निकालने के लिए कहा। इस रेचक के समय अपने भीतर से विकारों और मल विक्षेपों के निष्कासन की भावना करने के लिए कहा गया। विकार बहुत दूर तक चले गये हैं और उन्हें वापस नहीं आने देने के लिए द्वार बंद कर देना है। इस प्रक्रिया को आचार्यश्री ने प्राणाकर्षण प्राणायाम कहा था। संध्या आरंभ करने से पहले इस तरह के तीन प्राणायाम करने थे।

गायत्री तपोभूमि के बाहर शाखाओं में काम कर रहे साधकों को यह साधना दीवाली बाद आरंभ करनी थी। उनके लिए साधना विधान १९६१ के अक्टूबर माह में भेजा गया। इससे पहले साधकों से उनके बारे में आवश्यक विवरण मंगा लिए गए थे। पंचकोशीय साधना में जिन साधकों ने उत्साह दिखाया, उनके लिए अलग से मार्गदर्शन भेजा गया है। उन साधकों की स्थिति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का विवरण भी अलग रखा गया। अखंड ज्योति संस्थान में ही ऐसे साधकों की पंजी बनाई गई। वह पंजी माताजी के संरक्षण में रहती थी।

असली संकट आगे

उस वर्ष एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय घटना हुई। गोवा, दमन और दीव पुर्तगाली शासन से मुक्त हुए और उनका भारत के संघराज्य में विधिवत विलय हुआ। इसके लिए कोई बड़ी कार्रवाई नहीं करनी पड़ी। दिसम्बर १९६१ के तीसरे सप्ताह में भारतीय सुरक्षा बलों ने गोवा में प्रवेश किया और वहां तिरंगा फहरा दिया। हैदराबाद रियासत के विलय के बाद यह बड़ी कार्रवाई थी। प्राचीन विवरणों में गोपपुरम, गोवापुरी या गोमंतक के नाम से उल्लेखित इस क्षेत्र को राष्ट्र की मुख्यधारा में मिलाने के लिए महाराष्ट्र और कर्णाटक में वर्षों से आंदोलन चल रहा था। सत्याग्रहियों के जत्थे गोवा में जाकर गिरफ्तारियां दे रहे थे। गोवा को मुक्त कराने के लिए छोटी मोटी सैनिक कार्रवाई की संभावना जुलाई, अगस्त से ही व्यक्त की जाने लगी थी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दिनों में आचार्यश्री के साथी सहयोगी रहे कांग्रेसी नेता जगनप्रसाद रावत ने गायत्री तपोभूमि में चर्चा के दौरान इस बारे में चर्चा की थी। आचार्यश्री ने उस चर्चा में सहज ढंग से कहा था कि गोवा तो आसानी से मुक्त हो जाएगा। आप उस पर गर्व भी कर सकेंगे लेकिन असली संकट आगे है। वह वर्ष देश और सरकार के लिए अग्नि परीक्षा का वर्ष होगा।

रावतजी आचार्यश्री के कथन को पहली ही बार में पकड़ नहीं पाए। उन्होंने आशय स्पष्ट करने के लिए कहा तो आचार्यश्री ने दो साल पहले तिब्बत में चीन द्वारा मचाए गये उत्पीड़न और आतंक का जिक्र किया। जागरुक पाठकों को याद होना चाहिए कि समूचे तिब्बत को निगल डालने के क्रम में ही चीन ने जो अत्याचार किए, उनसे अपना बचाव करते हुए हजारों तिब्बती अपने प्रमुख नेता दलाईलामा के साथ भारत आ गए। भारत ने इसका विरोध किया। चीन ने उस विरोध को अनसुना करते हुए भारत की इकतीस हजार वर्ग किलोमीटर जमीन पर भी कब्जा कर लिया। गोवा की चर्चा के दौरान आचार्यश्री ने रावत जी के सामने यह पक्ष रखा था।

दिसम्बर १९६१ में गोवा, दमन और दीव का भारत में आत्यंतिक विलय हो गया। इस पर देश भर में बधाइयां भेजी गईं। खुशियां मनाई गईं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्यश्री ने भी भारत सरकार को बधाई और पत्र में लिखा कि उसे भविष्य में आने वाले खतरों से सावधान रहना चाहिए। २० दिसम्बर १९६१ को आकाशवाणी और स्थानीय समाचार पत्रों के संवाददाताओं ने गोवा की फतह के बारे में आचार्यश्री की टिप्पणी मांगी। उन्होंने इस विजय को स्तुत्य बताया। साथ में यह भी कहा कि पड़ौसी देश ने हमारी जो भूमि दो वर्ष पहले हथिया ली है, उसे मुक्त कराने का भी ध्यान रखें। हमें सतर्क रहना चाहिए क्योंकि आने वाला समय हमारे लिए सामरिक दृष्टि से चुनौतीपूर्ण हो सकता है। यह टिप्पणी आकाशवाणी ने २० दिसम्बर १९६१ के कार्यक्रम में प्रसारित की थी और 'उजाला,' 'सैनिक,' 'जागरण,' 'राष्ट्रदूत' आदि अखबारों ने भी इसे प्रकाशित किया था।

एक संवाददाता ने पूछ भी लिया था कि आने वाली विपदाओं का कारण क्या फरवरी १९६२ में होने वाला अष्टग्रही योग है। आचार्यश्री ने कहा था कि यह योग नियति के जिस विधान के अंतर्गत आ रहा है, उसी नियति के एक अन्य विधान के कारण हमें राष्ट्रीय संकट में भी फंसना पड़ सकता है। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि नियति के अन्य विधान से उनका आशय पहले की गई कुछ गंभीर राष्ट्रीय भूलें हैं।

अष्टग्रही योग के बारे में जिस संवाददाता ने आशंका जताई थी, वह भी उसके आतंक से परेशान था। राज गोपाल वर्मा नामक इस संवाददाता ने इस विषय पर आचार्यश्री का एक इंटरव्यू लिया। आचार्यश्री ने स्पष्ट कहा था कि जिन चार दिनों में अष्टग्रही योग आने वाला है उसके मध्य बिंदु ५ फरवरी के दिन प्रलय जैसी आशंका से जरा भी विचलित नहीं होना चाहिए। ज्योतिर्विद भले ही कह रहे हों इस योग से महाविनाश होगा लेकिन हमारा मानना है कि इस कुयोग से सर्वनाश जैसा अनर्थ नहीं होने वाला।

लोगों को आश्वस्त रहना चाहिए कि योग के पचीस दिनों में कोई अनहोनी नहीं होगी। ये दिन भी साधारण दिनों की भांति शांति से बीत जाएंगे। ग्रहयोगों से इतने ही संकेत मिलते हैं कि अगले दस वर्षों में पूरी दुनिया में आश्चर्यजनक बदलाव आएंगे। संसार के प्रत्येक भाग में और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कठिनाइयाँ बढ़ेंगी। इन परिवर्तनों को शुभ की तैयारी के रूप में भी देखना चाहिए।

अष्टग्रही योग के आतंक को या भय को निष्प्रभावी करने के लिए आचार्यश्री ने जगह जगह साधना उपासना के कार्यक्रम चलाने के लिए कहा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उनकी इस अपील को लोगों ने सुना और अपनाया। फिर भी लोगों में भय तो था ही। १९६२ का फरवरी मास आते आते वह भय बढ़ने लगा। जनवरी का तीसरा सप्ताह लगते ही वातावरण में उसके चिह्न विकराल होने लगे थे। यह योग १९ जनवरी से शुरु होना था और १२ फरवरी ६२ को समाप्त होना था। इस अवधि में छह ग्रह मकर राशि में आने थे। २४ जनवरी को सात और २ फरवरी को आठ ग्रह एक ही राशि में आने थे। यह स्थिति ५ फरवरी तक रहनी थी। फिर क्रम से एक-एक ग्रह अलग होते जाने थे। जनवरी आते आते लोगों में भय का माहौल गहराने लगा, आत्महत्या करने वालों की संख्या बढ़ने लगी तो आचार्यश्री ने चौबीस दिन के लिए तपोभूमि में भी जप, यज्ञ और अनुष्ठान के क्रियाकलाप शुरु कराए। इन प्रयत्नों की सूचना मथुरा से बाहर नहीं जा सकी। स्थानीय समाचार पत्रों में एतद्विषयक समाचार छपे। उसे पढ़कर आसपास शहरों और कस्बों से लोग तपोभूमि आने लगे।

१९ जनवरी से १२ फरवरी तक चले जप अनुष्ठान के दिनों में ही वसंत पंचमी भी आई। अष्टग्रही योग मौनी अमावस्या के दिन निकल गया था। वह दिन बीत जाने के बाद लोगों ने चैन की सांस ली थी। वह घड़ी तो बीत गई लेकिन भय के वातावरण ने अनर्थ कर ही दिया।

पांच फरवरी-मौनी अमावस्या बीत जाने के अगले ही दिन व्रजमंडल के संतों और मथुरा वृंदावन के प्रतिष्ठित नागरिकों ने आचार्यश्री से संपर्क किया। अकेले या तीन चार के समूह में छह फरवरी को तपोभूमि में इन लोगों का तांता लगा रहा। वे चैन की सांस लेते हुए प्रतीत हो रहे थे । आचार्यश्री ने उन लोगों से यही बात कही कि अष्टग्रही योग के परिणाम अभी नहीं, आने वाले वर्षों में दिखाई देंगे। किसी भी तरह के कुयोगों के परिणाम दुनिया को गेंद की तरह उछाल देने या पके हुए फल को तोड़ कर पीस डालने जैसे कतई नहीं होते। सत्परिणाम भी तुरंत सामने नहीं आते। उनके लिए भी प्रतीक्षा करनी पड़ती है। शायद ज्यादा ही प्रतीक्षा करनी पड़ती है। क्योंकि सृजन की प्रक्रिया ध्वंस से ज्यादा जटिल और दीर्घ है। इस कारण भी उसके लिए कुछ ज्यादा प्रतीक्षा करना पड़ सकती है।

परिवर्तन का संकेत

उपलब्ध स्थितियों के बारे में आचार्यश्री ने आगंतुक संतो और नागरिकों से यही विचार व्यक्त किया कि यह योग आने वाले दीर्घकाल तक चरितार्थ होने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वाले परिवर्तनों को इंगित कर रहे हैं। आचार्यश्री के इन विश्लेषणों को स्थानीय नागरिकों ने भी गंभीरता से लिया। मौनी अमावस्या के बाद १२ फरवरी तक जगह जगह संकीर्तन और यज्ञ आदि कार्यक्रम चलते रहे।

वसंत पंचमी ३ फरवरी को थी। उस दिन आचार्यश्री को प्रणाम करने के लिए गायत्री तपोभूमि में पाँच सौ से अधिक लोग आए थे। इस बार आगंतुकों की संख्या कम थी। शायद ज्यादातर कार्यकर्त्ता अपने क्षेत्र में ही लोगों का मनोबल बढ़ाने में लगे हुए थे। उसके लिए आध्यात्मिक गतिविधियां चला रहे थे। वसंत पंचमी की प्रात:काल आचार्यश्री अखंड ज्योति संस्थान से जल्दी ही आ गए थे। यज्ञशाला में उन्होंने विशेष आहुतियां दी और वहीं साधकों ने जन्मदिन के प्रणाम किए। उस दिन माताजी भी साथ थीं।

पूजा उपचार संपन्न हो जाने के बाद आचार्यश्री ने साधकों को संबोधित किया। उनका संदेश था कि हमें अब जप तप और साधना उपासना तक ही सीमित नहीं रह जाना है। समाज में सुखद बदलाव लाने के प्रयत्न भी करने हैं। पंचकोशीय साधना में बताया गया साधना क्रम आरंभ है। वह क्रम व्यक्तिगत जीवन में आगे बढ़ेगा। सामाजिक जीवन में सुधार और निर्माण की योजना भी उन्हीं दिनों आरंभ कर दी गई थी।

वसंत के संदेश में आचार्यश्री ने उसे एक व्यवस्थित रूप दिया। आचार्यश्री ने उस पूरी प्रक्रिया को चार सूत्रों में परिभाषित किया। चार सूत्र भी मात्र चार शब्दों में ही सिमटे थे। साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा। उस वसंत पर उन्होंने 'युग निर्माण योजना' पद का विशेष उल्लेख किया। उल्लेख शायद पहले भी कभी किया है। लेकिन इसे पहली बार परिभाषित किया।

वसंतोत्सव एक नए सूत्रपात के साथ संपन्न हो गया। उस समय जो कार्यक्रम निश्चित किए गए थे, उनका क्षेत्रों में स्वागत किया गया था। साधकों में उत्साह दिखाई दिया और नवरात्रियों तक चालीस जगह नई शाखाएं आरंभ हुईं। पंचकोशीय साधना के प्रति साधकों का उत्साह ही था कि नवरात्रियों के लिए डेढ़ सौ से ज्यादा आवेदन आए। एक बारगी सोचा जाने लगा कि संख्या यदि बढ़ी तो दो शिविर कर लिए जाएं। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक एक और एकादशी से वैशाख कृष्ण चतुर्थी तक दूसरा। दूसरे शिविर में नवरात्रि की तिथियों का निर्वाह नहीं हो रहा था। लेकिन यह भी क्या कम था कि गायत्री तपोभूमि के साधनामय वातावरण में स्थान और संगति का लाभ मिल रहा था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यद्यपि दूसरे शिविर की आवश्यकता नहीं हुई। आगे कभी साधकों की संख्या बढ़ी तो उसके लिए एक निर्धारण हो गया।

नवरात्रि बीत जाने पर सांसद सेठ बिशनचंद्र गायत्री तपोभूमि आए। सहस्रकुंडीय महायज्ञ के बाद यह उनकी तीसरी या चौथी यात्रा थी। राजनैतिक और सामाजिक स्थितियों पर चर्चा चली। सेठजी ने बताया कि सीमा पर चीन की गतिविधियां बढ़ रही हैं। लद्दाख और असम से लगी सीमाओं पर चीन के सैनिकों का जमावड़ा हो रहा है। भारत सरकार इस मामले में अजीब उदासीनता बरत रही है। आचार्यश्री ने कहा कि हम लोगों को जानकारी का स्रोत अखबार और रेडियो ही है। आप जैसे महानुभाव कुछ सूचनाएं दे जाते हैं तो जानकारी थोड़ी और बढ़ जाती है। लगता है कि साल छह महीने में युद्ध होगा। सेठ बिशनचंद्र ने कहा कि कई लोग युद्ध के बादल मंडराते देख रहे हैं लेकिन हमारी सरकार को इस बात की जरा भी चिंता नहीं है। या तो उसका खुफिया तंत्र पूरी तरह नाकारा हो गया है अथवा सरकार जानबूझकर उदासीन है।

सेठ बिशन चंद्र हिंदू महासभाई नेता थे। हिंदू महासभा एक प्रकार से कट्टरपंथी लोगों की एक राजनैतिक पार्टी बन गई थी। महामना मालवीय के समय इस संगठन में भारतीय संस्कृति के उदार स्वरूप का जो आग्रह था वह कमजोर पड़ गया था। आचार्यश्री और सेठ बिशनचंद्र इन स्थितियों पर चर्चा कर रहे थे कि माताजी ने भोजन के लिए बुलाया। सेठ बिशनचंद्र, आचार्यश्री और गायत्री तपोभूमि से आए कुछ विशिष्ट कार्यकर्त्ता एक ही पंक्ति में बैठे थे। संख्या ज्यादा नहीं थी। कुल मिलाकर सात या आठ व्यक्ति रहे होंगे। भोजन के लिए बैठते हुए आचार्यश्री ने उन कार्यकर्त्ताओं का परिचय कराया। परिचय के आदान प्रदान के बीच ही भोजन की थालियां लग गईं। माताजी स्वयं भोजन परोस रहीं थीं। गायत्री मंत्र के उच्चारण के साथ भोजन आरंभ हुआ तो देश समाज की चर्चा एक बार फिर छिड़ गई।

एक साथ भोजन करने की इस पद्धति के बारे में सेठजी का कहना था कि आप लोगों ने शायद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से यह बात सीखी है। आचार्यश्री ने कहा कि ऐसा नहीं है। स्वतंत्रता आंदोलन के दिनों में महात्मा गांधी के आश्रम में जाना हुआ। उनके साथ भी दो एक बार ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा किया तो लगा कि यह पद्धति अपनाई जानी चाहिए। फिर हम लोगों का संगठन पारिवारिक स्तर का है। इसे संयुक्त परिवार या वृहत परिवार समझें। जहां तक हो सके सभी लोग साथ मिल बैठकर भोजन करें तो अच्छा लगता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चर्चा चल ही रही थी कि ऊपर जंगले से उतर कर एक गिलहरी आई। वह रुकती हुई भोजन कर रहे साधकों की ओर बढ़ी। उनके आगे से निकलती हुई आचार्यश्री के सामने पहुंच गई। आचार्यश्री गिलहरी को स्नेह से देख रहे थे और सेठजी की किसी बात का उत्तर भी दे रहे थे। उस संवाद के दौरान ही गिलहरी आचार्यश्री की थाली को पकड़ कर आगे तक बढ़ गई। उसने अगले पांवों की मदद से रोटी का एक कौर मुंह में दबाया और बाहर आ गई। थाली के पास बैठकर वह चुपचाप उस कौर को कुतरने लगी।

सेठजी यह दृश्य देख रहे थे। उन्होंने कहा कुछ नहीं। गिलहरी ने कौर का बड़ा हिस्सा कुतर लिया तो आचार्यश्री ने उसके सामने चावल के दाने रख दिए। गिलहरी ने उन्हें भी खा लिया और जिस तरह आई थी, उसी तरह वापस चली गई। गिलहरी को आचार्यश्री की थाली में से कौर निकालने, उसे कुतरने और खा चुकने के बाद वापस चले जाते हुए वहां बैठे लोग चुपचाप देख रहे थे। कार्यकर्त्ताओं के लिए यह नई घटना नहीं थी। वे अक्सर देखते थे। कभी गिलहरी तो कभी चिड़िया, कबूतर और कभी कभार तो चुहिया भी आचार्यश्री की थाली से रोटी के कौर खींच ले जाती थी। सेठ बिशनचंद्र और दूसरे अतिथियों के लिए पशु पक्षियों का यह व्यवहार विस्मयकारी था।

भोजन के बाद सेठ किशनचंद्र कुछ देर और रुके। उस दौरान हुई बातचीत में ही माताजी ने बताया कि अज्ञातवास से आने के बाद पशु पक्षी भी आचार्यश्री के साथ भोजन करने लगे हैं। यह तो साधारण जीव हैं। कभी कभार बंदर भी कूदफांद मचाने आ जाते हैं और इस तरह बैठ जाते हैं जैसे उन्हें पंगत में बुलाया हो। माताजी हंसते हुए बता रही थी कि उनके लिए अलग थाली लगानी पड़ती है।

अष्टग्रही योग बीत गया था। उसकी चर्चा अभी खत्म नहीं हुई थी। उन्होंने पूछ ही लिया कि आप इस योग का प्रभाव अगले दिनों चरितार्थ होने की बात कह रहे थे। वह प्रभाव किस रूप में होगा। चुनाव आने वाले है। नेहरु जी की सरकार नहीं बन पायेगी क्या? राष्टवादी शक्तियों को अवसर मिलेगा?

उस समय कांग्रेस के खिलाफ कहीं कोई सुगबुगाहट नहीं थी। भारतीय जनसंघ, स्वतंत्र पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी और समाजवादी पार्टी के अलावा हिंदू महासभा और राम राज्य परिषद जैसे दल ही सक्रिय थे। इनमें कोई भी अकेले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

या मिलकर कांग्रेस को चुनौती देने में सक्षम नहीं थे। आचार्यश्री ने सेठजी का प्रश्न टालते हुए कहा कि इस बारे में कोई भी उत्तर देना भविष्यवाणी करने जैसा होगा। इस समय चल रही गतिविधियों को ऊपरी तौर पर देखें और समझें तो कहीं नहीं लगता कि लोगों में राजनैतिक बदलाव की कोई इच्छा पल रही है। इन्हीं लोगों के दोबारा सत्ता में आने के आसार ज्यादा हैं लेकिन मुझे किसी और तरह के संकट की गंध आ रही है।

सेठजी ने उस संकट के बारे में कुरेदना चाहा। आचार्यश्री ने स्पष्ट कुछ नहीं कहा। गायत्री जयंती पर तपोभूमि आए साधकों से उन्होंने इतना अवश्य कहा कि इस वर्ष के अंत तक हमें एक राष्ट्रीय संकट से जूझने के लिए तैयार रहना चाहिए। सीमा पर आक्रमण हो सकता है। समाज विरोधी शक्तियां देश के भीतर भी उपद्रव मचा सकती हैं और प्राकृतिक आपदाएं भी हमारे धैर्य की परीक्षा ले सकती हैं। उन स्थितियों से निपटने के लिए हमें आत्मबल जुटाने में लग जाना चाहिए। अपना आत्मबल जगाएं और अपने आसपास के लोगों के भीतर अनुकरणीय बनें।

पवित्र रहें और आगे बढ़ें

गायत्री जयंती पर हुई गोष्ठी में गुजरात से आए निरंजन आत्मयोगी ने एक समस्या रखी थी। उनका कहना था कि हम और हमारे साथी दिन रात प्रचार में जुटे रहते हैं। खूब यज्ञ हवन करते हैं लेकिन लोगों पर कोई प्रभाव नहीं होता। वे संध्या गायत्री भी करते रहते हैं फिर भी वहीं के वहीं। कुछ और साधकों ने भी प्रचार में आने वाली इस तरह की निराशा का जिक्र किया था। आचार्यश्री ने कहा कि निराश होने की जरूरत नहीं है और न ही थोड़े से प्रयत्नों के बड़ें परिणामों की आशा करनी चाहिए। तुम अपने काम को करते रहो और पवित्र जीवन जियो। बुद्ध ने केवल प्रचार किया और पवित्र जीवन जिया, ईसामसीह, शंकराचार्य, रामानुज और तुलसीदास भी लोगों से आशा अपेक्षा करते नहीं घूमे। उन्होंने पवित्र जीवन जिया और लोगों को बदलने के लिए प्रेरित किया। हमारा अपना व्यक्तित्व या पवित्र जीवन ही लोगों को प्रेरित करता है। पवित्र और प्रेरक बनो तो तुम्हारे आसपास साधकों और कार्यकर्त्ताओं की बाढ़ आ जाएगी।,

सितम्बर १९६२ में लोकसभा चुनाव के बाद केन्द्र में जवाहर लाल नेहरू फिर प्रधानमंत्री बने। राज्य विधानसभाओं में भी प्राय: कांग्रेस का एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

छत्र साम्राज्य रहा। नेहरू जी के नेतृत्व को कहीं से चुनौती मिलती नहीं दिखाई दी। चुनाव अभियान में पूर्वोत्तर सीमा पर हो रही सैनिक हलचलें, तिब्बत का मसला और कश्मीर का सवाल मुद्दा बना था। मतदाताओं ने इन सवालों को ज्यादा महत्त्व नहीं दिया था। १९६२ के चुनाव में नेहरू की छवि शांतिदूत की तरह उभर कर आई थी। लोग उनकी तुलना सम्राट अशोक और सम्राट अकबर से करने लगे थे। उस दौर को नेहरू शासन का स्वर्णिम काल कहते हैं।

तीसरा आम चुनाव नेहरू के लिए राजसूय यज्ञ की तरह सिद्ध हुआ था। देश अभी नेहरू की विजय का उत्सव मना ही रहा था कि चीनी सेना ने लद्दाख और उत्तरी पूर्वी सीमा पर भारी हमला कर दिया। तीस हजार से ज्यादा सैनिक भारतीय सीमा में घुस आए। नेहरू इस आक्रमण से हक्के बक्के रह गए। सेनाएं इस स्थिति में नहीं थी कि चीनी आक्रमण का प्रतिरोध कर सकें। एक तो चीनी सैनिक संख्या में बहुत ज्यादा थे। वे आक्रामक थे और दूसरे भारत ने सीमाओं पर पर्याप्त चौकसी नहीं बरती थी।

भारत कूटनीतिक क्षेत्र में भी ठीक से पहल नहीं कर पाया। भारत सरकार ने चीनी आक्रमण के संबंध में दुनिया के तमाम देशों को पत्र लिखे। कुछ देशों ने भारत के प्रति सहानुभूति जताई। उसके पक्ष का समर्थन भी किया लेकिन सक्रिय रूप से कोई भी देश सहायता करने नहीं आया। चीनी सेनाएं महीने भर तक सीमाओं पर उत्पात मचाती भीतर तक घुस आईं। लद्दाख के एक बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया। उत्तरी पूर्वी सीमांत (नेफा) के एक बड़े भाग पर कब्जा कर लिया। उसके बाद २१ नवम्बर को एकतरफा युद्धविराम की घोषणा कर दी और अपने आप ही चीनी सेनाएं काफी पीछे तक चली गईं। युद्ध महीने भर से ज्यादा नहीं चला था लेकिन उसने पूरे देश के मनोबल को झखझोर दिया था। गायत्री परिवार के सदस्यों ने युद्ध के दिनों में कोई छुट्टी नहीं करने और अपने कार्यों को तत्परता से पूरा करने की प्रतिज्ञा की थी। आचार्यश्री ने साधकों को निर्देश दिया था कि इस अवधि में तमाम मतभेद भुला दिए जाए। धर्म, संप्रदाय, जाति, दल और भाषा, प्रांत के विवादों को फिलहाल दरकिनार किया जाए।

आचार्यश्री ने यह भी कहा कि जो युवक अपने आपको सेना के लायक समझते हैं, वे सेना में भर्ती हों। युद्ध की खबरों ने जनमानस को बुरी तरह विचलित और विक्षुब्ध कर दिया था। भारत सरकार युद्ध के सामरिक और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कूटनीतिक दोनों ही मोर्चों पर विफल सी रही थी। इसलिए भी लोगों में हताशा का भाव बढ़ने लगा। आचार्यश्री ने अपने साधकों से स्वयंसेवकों की तरह काम करने की अपील की। कहा कि युद्ध समाप्त होने के बाद राष्ट्रनिर्माण के कई मोर्चे खुलेंगे। ये मोर्चे राष्ट्र के आहत हुए स्वाभिमान को जगाने और आत्म निर्भर बनाने के लिए चुनौती की तरह होंगे। मथुरा में हुई एक गोष्ठी में उन्होंने युद्ध से उत्पन्न हुए संकट के बारे में कहा था कि विराम के बाद भी युद्ध समाप्त हुआ नहीं मान लेना चाहिए। कम्युनिस्ट शासन की प्रवृत्ति विस्तारवादी है। अखबारों में छप रही खबरों और विश्लेषणों से स्पष्ट होता है कि वह सीमा पर अपनी सैनिक हलचलें बढ़ाएगा।

दिसम्बर १९६२ में छह गुट निरपेक्ष देशों का सम्मेलन हुआ। उसमें श्रीलंका, बर्मा, कंबोडिया, इंडोनेशिया, घाना और संयुक्त अरब गणराज्य के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन में भारत चीन विवाद को बातचीत से निपटाने के प्रस्ताव पास किए गए। भारत सरकार ने तो इन प्रस्तावों को स्वीकार कर लिया लेकिन चीन ने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया। उलटे उन प्रस्तावों का मुंह चिढ़ाते हुए पश्चिमी क्षेत्र में सात असैनिक चौकियां स्थापित कर लीं। अपनी बनाई और थोपी हुई नियंत्रण रेखा पर उसने पत्थरों के ढेर जमा करने और बाढ़ लगाना भी शुरु कर दिया।

मथुरा की कुछ नागरिक और सामाजिक संस्थाओं ने दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में विचार गोष्ठी का एक कार्यक्रम हुआ। विषय था, 'राष्ट्रीय संकट और हमारे नागरिक दायित्व' गोष्ठी में वक्ताओं ने देश में राजनैतिक जागरुकता लाने, अपने अधिकारों के प्रति सचेत करना चाहिए। वक्ताओं में आचार्यश्री के अतिरिक्त किशोरी शरण गोस्वामी, प्रभुदयाल, प्रो० अवध बिहारी, स्वामी शरणानंद बिहारी आदि विद्वान थे। सभी विद्वानों ने अपना मत व्यक्त किया।

आचार्यश्री का कहना था कि राजनैतिक और सामरिक स्तर पर फैसले और पहल करना सरकार का काम है। हम उसमें प्रत्यक्ष दखल नहीं दे सकते। उसकी आवश्यकता भी नहीं है। अपने स्तर पर यह प्रयत्न करें कि देश समाज भीतर से मजबूत बने। समाज के भीतर आंतरिक शक्ति जगाने का काम राजसत्ता का नहीं है। उस मोर्चे पर धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं को सक्रिय होना चाहिए। धर्म और संस्कृति के क्षेत्र में काम कर रही संस्थाएं ऐसे क्रिया कलाप चलाएं, जिनसे उनके भीतर आत्मविश्वास उत्पन्न हो। वे अपने आपको संस्कारित करें और ऐसी रीति नीति अपनाएं जिनसे व्यक्ति बिना किसी का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(xxii)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मुखापेक्षी हुए अपने सुदृढ़ और समाज के लिए स्वयं उत्तरदायी सिद्ध हों। गोष्ठी में व्यक्त किए ये विचार वहां बोलने वाले अन्य वक्ताओं को भी उद्वेलित कर गए।

नए युग का अभिवादन

आचार्यश्री के अनुसार सृजन के विभिन्न मोर्चों पर आरंभ का यह सबसे अच्छा समय था। समाज का आत्मविश्वास लड़खड़ा रहा हो तो शैक्षिक और आध्यात्मिक उपाय किए जाने चाहिए। तपोभूमि में इस बीच पांच कार्यकर्त्ता अपने क्षेत्र में वापस लौट गए थे। इन लोगों ने पांच साल पहले आत्मदान किया था। शंभू सिंह कौशिक, गिरजा सहाय व्यास और चमन लाल गौतम को आचार्यश्री ने यह कह कर बाहर भेज दिया था था कि क्षेत्रों में केन्द्र बनाए। ये केन्द्र क्षेत्रीय संस्थान के रूप में काम करें। शंभूसिंह कौशिक को कोटा में केन्द्र बनाने के लिए कहा गया। बिलासपुर में गिरजा सहाय व्यास और बरेली में चमन लाल गौतम को दायित्व सौंपा गया। भगवान सहाय वसिष्ठ और बालकृष्ण अग्रवाल को क्रम से जयपुर और झांसी के आसपास का दायित्व दिया गया। इन कार्यकर्त्ताओं ने अक्टूबर १९६२ से वर्षांत तक सैकड़ों जगह कार्यक्रम संपन्न करा लिए थे। जयपुर में चंद्रमुखी रस्तोगी और इन्द्रसिंह शेखावत ने अपने क्षेत्र में यज्ञीय अभियान छेड़ दिया था। पिछले एक वर्ष से चल रही इन गतिविधियों ने अच्छा प्रभाव जमा लिया था।

यज्ञ आयोजनों के अलावा गायत्री तपोभूमि में स्वास्थ्य और साधना शिविर भी लगे। उनमें साधकों की संख्या दिनोदिन बढ़ने लगी। क्षेत्र में संगठन और प्रचार की गतिविधियां चलने लगीं। इस के लिए शाखाओं में गायत्री परिवार के सदस्यों का रजिस्टर रखने, साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक सत्संग चलाने, शरीर स्वास्थ्य संवर्धन के लिए अभ्यास कक्षाएं लगाने के अलावा वर्ष में कम से कम दस त्यौहार मनाने के निर्देश दिए गए। भारतीय धर्म परंपरा और समाज में उत्सवों की संख्या इतनी ज्यादा है कि उनका हिसाब लगाना और अंतर्कथाएं संग्रहित करना दुष्कर कार्य है।

इनमें नब्बे प्रतिशत पर्व क्षेत्रीय, जातीय वर्ग विशेष तक ही सीमित है। आचार्यश्री ने दस ऐसे पर्वों का चुनाव किया जो सार्वजनीन थे। पूरे देश में नहीं मनाये जाते थे तो भी एक बड़ा समुदाय इन उत्सवों को मनाता था। ऐसे दस पर्वों में श्रावणी, कृष्ण जन्माष्टमी, विजयादशमी, दीवाली, वसंत पंचमी, शिवरात्रि,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होली, रामनवमी, गायत्री जयंती और गुरुपूर्णिमा के नाम थे। आश्विन और चैत्र की नवरात्रियों को भी उत्सव और साधना पर्व के रूप में सम्मिलित किया गया।

धार्मिक वातावरण में होने वाले कार्यक्रमों में एक व्यवस्था संस्कारों को लेकर भी थी। शास्त्रों में सोलह संस्कारों का विधान किया गया है। किसी समय हो सकता है सभी संस्कार कराये जाते हों लेकिन इन दिनों संस्कार नामकरण, अन्नप्राशन, विवाह उसके बाद अंत्येष्टि तक ही सीमित रह गए हैं। उनमें भी नामकरण और अन्नप्राशन का लोप हो गया है। आचार्यश्री ने सोलह में से दस संस्कार चुने और उन्हें लोकप्रिय बनाने का कार्यक्रम दिया। इन कार्यक्रमों में पुंसवन, नामकरण, अन्नप्राशन, मुंडन, विद्यारंभ, यज्ञोपवीत, विवाह, वानप्रस्थ अंत्येष्टि और मरणोत्तर संस्कारों को लोकप्रिय बनाने पर जोर दिया। सोलह में से दस संस्कार चुनने के लिए आचार्यश्री का कहना था कि सभी संस्कार आवश्यक हैं। मनुष्य की चेतना और प्रकृति पर उनका प्रभाव पड़ता है लेकिन अभी हम दस संस्कारों को ही चुन रहे हैं। उन्हें मनाना सुविधाजनक है। फिलहाल उन्हें ही पुनर्जीवित किया जाए।

गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं को स्थानीय स्तर पर कुछ रचनात्मक कार्यक्रमों की जिम्मेदारी भी सौंपी गई। इन जिम्मेदारियों में शिक्षा का प्रचार, स्वास्थ्य सुविधाओं की व्यवस्था और लोक शिक्षण की गतिविधियां चलाने के लिए कहा गया।

कार्यक्रमों या घोषणाओं को आचार्यश्री ने नए युग के निर्माण का अभिवादन कहा था। अभिवादन शब्द प्रयोग करने की दृष्टि यह थी कि नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक वातावरण में बदलाव तो आना ही है। उस परिवर्तन में सहयोगी बनकर नए युग का स्वागत किया जाए। अपनी ओर से कुछ प्रयत्न कर लिए जाएंगे तो स्वयं को अनुग्रहीत और धन्य अनुभव किया जा सकेगा। यह धन्यता का बोध हर किसी को अनुभव करना चाहिए। गायत्री उपासकों को तो निश्चित ही।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समय रहेगा साक्षी

विनोबा भावे पूर्वी पाकिस्तान (अब बंगलादेश) की यात्रा कर वापस लौट रहे थे। पाकिस्तान में उनका अच्छा स्वागत हुआ था। उन्होंने वहां भी भूदान की अपील की। पंद्रह दिन की पाकिस्तान यात्रा के दौरान लोगों ने डेढ़ सौ बीघा जमीन भूदान में दी थी। लौटते हुए उन्होंने पश्चिम बंगाल की यात्रा की। गंगासागर, नवद्वीप धाम, शांति निकेतन, कामारपुकुर (रामकृष्ण परमहंस की जन्मभूमि) होते हुए वे आगे बढ़े। शान्तिपुर में उनके प्रवास के दिनों का संयोग ही था कि वहां गायत्री महायज्ञ चल रहा था। इस आयोजन में आचार्यश्री स्वयं गए थे। विनोबा दो दिन रुके थे और इतने ही समय आचार्यश्री का भी ठहरना हुआ था। यज्ञ सम्मेलन और संपर्क कार्यक्रमों में समय निकाल कर आचार्यश्री विनोबा से मिले।

विनोबा को उनसे हुई पिछली भेंट के बारे में तुरंत याद आ गया। आचार्यश्री को देखते ही वे ताली बजाते हुए उठ खड़े हुए और सूत की माला पहनाकर उनका स्वागत किया। आचार्यश्री के साथ गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता भी थे। वे चारों वेद और उपनिषदों का सैट लेकर आए थे। आचार्यश्री ने यह सैट उन्हें भेंट किया। कहा कि वेदों का आशय और अध्ययन जनसुलभ कराने की प्रेरणा उठी थी, सो यह प्रयत्न कर लिया है। विनोबा ने तुरंत वह सैट खोला और उलट पुलट कर देखने लगे। एक निगाह पलटाकर उन्होंने कहा, 'इस तरह का काम मैं सोचता ही रह गया। विनोबा के शरीर से नहीं हुआ श्रीराम के शरीर से हो गया। दोनों आचार्य हैं और दोनों के नाम में तीन अक्षर है—ब्रह्मा, विष्णु, महेश।'

विनोबा ने विनोद किया, फिर आचार्यश्री से गायत्री परिवार की प्रगति और आगामी योजनाओं के बारे में पूछने लगे। आचार्यश्री ने समयदान की बात कही तो विनोबा ने प्रसन्नता व्यक्त की। कहा कि हम लोग ब्राह्मण हैं। हमारा काम दान के बिना नहीं चलता है। आप समय मांग रहे हैं और मैं क्षेत्र। यों कहें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कि टाइम और स्पेस। संसार इन दोनों से मिलकर बना है और ब्राह्मणों को यह प्रचुर मात्रा में मिल जाए तो कहना क्या? फिर तो हम देवताओं को धरती पर आने के लिए मना ही लेंगे।

आचार्यश्री शांतिपुर से लौट रहे थे तो उनके मन में साधक कार्यकर्त्ताओं का विचार चल रहा था। कुछ स्थानों से शिकायत आ रही थी कि कार्यकर्त्ता अपने आपको धार्मिक नेता की तरह पेश कर रहे हैं। उनका व्यवहार स्वयंसेवक का नहीं सख्त प्रशासक का सा हो रहा है। साथ चल रहे सहयोगी श्रीकृष्ण चंद्र भट्ट से आचार्यश्री ने चर्चा छेड़ी। भट्टजी का कहना था कि कार्यकर्त्ताओं को जो सम्मान मिलता है, वे उसे हजम नहीं कर पाते। उनका आचरण इसलिए दंभपूर्ण होता है। आचार्यश्री ने कार्यकर्त्ता की जिम्मेदारी और समाज में उनकी स्थिति को लेकर अक्सर आने वाली पेचीदगियों का जिक्र किया। इसी प्रवास में कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविरों की रूपरेखा बनी।

मथुरा में माताजी से इस विषय पर चर्चा हुई। उन्होंने भी कार्यकर्त्ताओं के लिए अलग से शिविर रखने की योजना का समर्थन किया। यह परंपरा सी हो गई थी कि आचार्यश्री के मन में जब भी कोई निर्धारण जगते थे तो वे कार्यकर्त्ताओं से उसकी चर्चा करते। शाखाओं में काम करने वाले साधकों को प्रशिक्षित करने का जिक्र उठा तो आचार्यश्री ने कहा कि अपने आपको परमात्मा का सेवक मान लेना काफी है। किसी के मन में भलीभांति यह बोध जगाया जा सके तो व्यक्ति कार्यकर्त्ता के रूप में चमत्कार कर सकता है। कार्यकर्त्ता के भीतर छिपी क्षमता और संभावना को जगाना जरूरी है।

आचार्यश्री ने गांधी जी के आश्रम की एक घटना सुनाई। आचार्य कृपलानी वहां गांधीजी का भोजन बनाते थे और आश्रम रसोई की व्यवस्था देखते। एक अमेरिकी पत्रकार ने उन्हें भोजन बनाते देखा तो कहने लगा कि लगता है आप जे०बी०कृपलानी हैं। कृपलानी उस समय रसोई के बर्तन साफ कर रहे थे। उन्होंने हामी भरी और कहा कि मैं सिर्फ रसोइया ही हूँ। पहले भी यही काम करता था लेकिन गांधी जी बड़े करामाती हैं। मैं उनके संपर्क में आया तो उन्होंने मेरे भीतर ऐसा उत्कट भाव जगा दिया कि मुझे रसोई बनाना संसार का श्रेष्ठतम काम लगने लगा।

उस चर्चा में एक मोड़ यह भी आया कि कार्यकर्त्ताओं के लिए अलग से शिविर रखने के स्थान पर साधकों के शिविर में ही कार्यकर्त्ता छांटे जाए। यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बात माताजी ने कही थी। उन्होंने कहा था कि छोटे मोटे कर्मचारी अधिकारी बन जाने के बाद लोगों में अहंकार, अभिमान का ठिकाना नहीं रहता। हमारे कार्यकर्त्ता स्वयं को ईश्वरीय योजना का अंग, उसके अधिकारी और प्रतिनिधि नहीं मानेंगे तो यही होगा? अभिमान से लोगों के दिमाग फिर जाएंगे। ज्यादा अच्छा यह है कि हम साधकों को ही युग निर्माण के काम में लगायें। उनमें विनय, साधना का बल और आंतरिक शक्ति का जागरण होगा। यह ज्यादा उपयोगी होगा।

माताजी की इस बात को आचार्यश्री ने भी महत्त्व दिया और अगले दिनों विभिन्न तरह के साधना शिविर चलाने की योजना बनी। इनमें जप, तप, अनुष्ठान, चांद्रायण, योग, नवरात्र आदि शिविरों का निर्धारण कर लिया गया। साधक जप, ध्यान और उपासना आदि में मन लगायें। इन शिविरों में लोक व्यवहार सिखाने पर भी जोर दिया गया। उद्देश्य यह था कि कार्यकर्त्ता लोगों के पास जायें तो उन्हें अपने सामने विद्यार्थी, शिष्य या कनिष्ठ साधक नहीं समझे। जिनसे संपर्क किया जा रहा है, उन्हें अपना इष्ट, आराध्य मानें। लोक साधना में लगे कार्यकर्त्ताओं को मनोमय साधना के अभ्यास पर ज्यादा जोर दिया गया था। साथ ही कार्यकर्त्ताओं का एक प्रशिक्षण शिविर भी चल रहा था।

साधकों के लिए पंचकोशीय साधना का क्रम व्यवस्थित चल रहा था। सामान्य साधना के संबंध में आवश्यक निर्देश पत्रिका के माध्यम से पहुंचते थे। उस क्रम को अपनाने के बाद कुछ साधकों को आवश्यकता होती तो वे पत्राचार कर लेते। साधना मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए आचार्यश्री पत्र द्वारा मार्गदर्शन देते। आवश्यक होता तो उस साधक को अपने पास भी बुलाते।

नये शिविर की व्यवस्था

१९६१ में हुए चैत्र शिविर के बाद नवरात्रियों में वयस्क लोगों की संख्या बढ़ने लगी थी। यह मिथक टूटने लगा कि उपासना और जप ध्यान बड़ी उम्र के लोगों के लिए ही है। वयस्क या कामकाजी लोगों के लिए दस पंद्रह मिनट भगवान की प्रतिमा या तस्वीर के सामने हाथ जोड़ कर खड़े हो जाना ही पर्याप्त है। अब कामकाजी लोग भी समय निकाल कर शिविर में आने लगे थे। १९६२ के आश्विन मास के नवरात्रि शिविर में आने वाले साधकों की औसत उम्र चालीस वर्ष थी। १९६३ की चैत्र नवरात्रियों में भी साधकों की औसत आयु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसी के आसपास रही होगी। उस वर्ष एक नया आरंभ हुआ। शिक्षातंत्र से जुड़े साधकों के लिए मार्च अप्रैल या सितम्बर अक्टूबर में समय निकालना कठिन होता था। चैत्र और आश्विन की नवरात्रियां इन्हीं दिनों पड़ती हैं और ये दिन स्कूल कालेजों में परीक्षा के दिन होते हैं। इस तरह के साधकों को ध्यान में रखते हुए गायत्री जयंती पर दस दिन का एक शिविर और रखा गया।

३० मई से आरंभ हुए उस शिविर में लगभग तीस व्यक्ति आये थे। इनमें ज्यादातर शिक्षा जगत से जुड़े हुए थे। या तो अध्यापन के काम में लगे हुए थे अथवा विद्यार्थी थे। विद्यार्थियों में बीस वर्ष की आयु तक के छात्र थे। पहले ही दिन आचार्यश्री ने उन युवकों से कहा कि तुम लोग यदि पूरे समय उपवास नहीं रख सको तो एक बार भोजन कर सकते हैं। दूसरी बार फल आदि का सेवन किया जा सकता है। यह छूट इसलिए है कि बच्चों को लंबे उपवास की आदत नहीं होती। आदत नहीं होने पर लंबा उपवास किया तो कोई अड़चन आ सकती है। आचार्यश्री की दी हुई इस छूट में युवकों और किशोरों के अभ्यस्त जीवन की ज्यादा चिंता थी। इस छूट का लाभ किसी किशोर ने नहीं उठाया।

ग्वालियर से आए तेरह वर्ष का एक किशोर इस शिविर में सबसे कम उम्र का था। कम उम्र होने के कारण शिविर के और साधकों का ध्यान भी उस किशोर पर अटका रहता। अपने पिता के साथ आये इस किशोर ने शिविर आरंभ होने की पूर्व संध्या को कलावा बंधाया। व्रतबंधन के समय आचार्यश्री और माताजी को अपलक निहारता रहा। शिविर साधना का संकल्प पढ़ते हुए आचार्यश्री ने शिक्षा और अभिरुचि के संबंध में पूछा।

किशोर का उत्तर था कि उसी के लिए आपके पास आया हूँ। आप जो बताएंगे वही शिक्षा और जो निर्देश देंगे वही शौक। इस उत्तर को सुनकर आचार्यश्री और माताजी के चेहरे पर हलकी सी मुसकान आ गई। आचार्यश्री ने कहा हमारी शिक्षा तो यह है कि राम का नाम लो और गायत्री का जप करो। इसके बाद जो भी करो वह शुभ होगा। किशोर ने आचार्यश्री और माताजी को प्रणाम किया और आगे बढ़ गया।

साधना का संकल्प कर रहे अन्य शिविरार्थियों से भी आचार्यश्री ने उनके व्यक्तिगत जीवन के बारे में कुछ प्रश्न पूछे। शिविरार्थियों ने अपनी तरह से उत्तर दिये होगे। आचार्यश्री ने गायत्री जयंती के दिन दिये संदेश में उस किशोर के उत्तर का उल्लेख किया। गायत्री जयंती उस वर्ष एक जून को थी। आचार्यश्री

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ने कहा था कि जेठ की इस भरी दुपहरी में भगीरथ ने गंगा को पृथ्वी पर आमंत्रित कर लिया था। ग्रीष्म के ताप शोक को दूर करने के लिए गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुई थी। उसी तरह विश्वामित्र के चित्त और चेतना में भी संसार के रोग, शोक और दारिद्रय दूर करने वाले गायत्री मंत्र का अवतरण हुआ। गायत्री भुवः और स्वः लोक से भूलोक में आई। यह गायत्री चेतना प्रत्येक साधक के चित्त में अवतरित हो।

उस दिन आचार्यश्री ने भगवत्कृपा पाने का आधार बताया था कि व्यक्ति अपने आपको वंशी की तरह खाली और गांठ रहित कर ले। जब भीतर परमात्मा की ही प्रतीक्षा हो तो उन्हीं के सुर बजने लगते हैं। इन उद्‌बोधनों को सुनते हुए आये हुए विद्यार्थी साधक किसी ओर ही दुनिया में खो गये थे। वे अपनी सुधबुध भूल गये थे। पालथी मार कर इस तरह ध्यान लगाये हुए थे जैसे संसार में इसके सिवा कहीं और कुछ भी नहीं हो। गायत्री जयंती का वह शिविर कम उम्र के लोगों और उन्हें दिशा देने वाले शिक्षकों या लोकसेवियों के लिए एक आरंभ था जो बाद में भी चलता रहा।

अज्ञातवास से लौटने के बाद आचार्यश्री अपने संपर्क में आने वाले व्यक्तियों को देश समाज के लिए रचनात्मक योगदान देने के लिए कहते रहे थे। अखंड ज्योति पत्रिका के पन्नों पर भी इस तरह की जानकारी बिखरी रहती। चर्चा परामर्श और प्रवचनों में अपने निर्माण, परिष्कार, जीवन में संस्कारों के समावेश और समाज में सत्प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने पर जोर देते। इस तरह की प्रेरणा देते हुए वे कह उठते थे कि तुम मेरा काम करोगे तो मैं भी तुम्हारा काम करूंगा। यह कहते हुए मेरे काम से उनका आशय समाज में सत्प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने से होता था।

व्यासपूजा का भाव बोध

संवत् दो हजार बीस की गुरुपूर्णिमा। प्रचलित कैलैंडर के अनुसार ६ जुलाई १९६३ का दिन। उस दिन गायत्री जयंती के पांच सप्ताह पूरे हुए थे और गायत्री परिवार के उपासक अपनी ओर से कुछ संकल्प लेकर मथुरा के लिए रवाना होने लगे थे। आचार्यश्री ने पत्रों और पत्रिकाओं के माध्यम से कह दिया था कि जो आसानी से आ सकें, वहीं आयें। बाकी अपने घर गांव में रहकर ही गुरुपूर्णिमा मनायें। पिछले दो महीनों में आचार्यश्री ने एक सौ आठ कार्यक्रम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निर्धारित किये थे। इन कार्यक्रमों में जो जितने चला सकें, उतने चलाने का अनुरोध था। गुरुपूर्णिमा का दिन इन कार्यक्रमों के संकल्प का दिन नियत किया गया था। तपोभूमि आ रहे कार्यकर्त्ताओं का उद्देश्य अपने गुरु को प्रणाम करना और संकल्प लेना था। जो लोग क्षेत्रों में रह गये उन्हें भी व्यास पूजा करने और संकल्प के साथ श्रद्धासुमन चढ़ाने के लिए कहा गया।

परामर्श और मार्गदर्शन का यह क्रम पिछले पांच सप्ताह में अच्छी तरह संपन्न हो गया था। तपोभूमि में साधकों के लिए पर्याप्त व्यवस्थाएं की गई थीं। आचार्यश्री ने चतुर्दशी की शाम को आ रहे साधकों को ठहराने और पर्व मनाने के लिए की गई व्यवस्थाएं देखीं और अखंड ज्योति संस्थान आ गये। वहां रामकृष्ण मिशन के एक संन्यासी स्वामी अनुभवानंद उनकी प्रतीक्षा करते हुए बैठे थे। कुशल क्षेम के बाद उन्होंने बताया कि उन्हें स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा हुई है। एक स्वप्न दृश्य में वे आदेश देते हुए दिखाई दिए है कि गायत्री का प्रचार करो।

संन्यासी ने आचार्यश्री के सामने अपने आपको समर्पित करते हुए कहा कि जैसा वे कहेंगे उसी तरह आगे काम करेंगे। आचार्यश्री ने उन्हें अगले दिन इस बारे में कुछ तय करने की बात कहते हुए रात्रि विश्राम के लिए कह दिया। इस भेंट के बाद वे अपने शयन कक्ष में चले गये थे। सोने से पहले उन्हें रह रह कर स्वामी रामकृष्ण परमहंस का स्मरण आ रहा था उनके लीला संवरण से पहले की घटना थी। जो बारह शिष्य घर बार छोड़कर काशीपुर आकर रहने लगे थे, उन्हें बुलाया।

परमहंसदेव तब उद्यान भवन में थे। शिष्यों को वहां इकट्ठा कर उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें संन्यास दीक्षा दूंगा। दीक्षा लेने वालों में नरेन्द्र नाथ भी थे। अपने तरुण शिष्यों को गेरुआ पहनाकर परमहंस ने कहा, 'क्या तुम लोग अभिमान को पूरी तरह त्याग कर अपने कंधों पर झोली टांग सकते हो। नगर में जाकर भिक्षा मांग सकते हो।'

बारहों शिष्य उसी समय भिक्षा मांगने के लिए निकल पड़े। इन युवकों ने जिन गलियों और सड़कों पर घूमते हुए अपने सुनहले भविष्य के सपने संजोये हुए थे, उन्हीं गलियों में भिक्षा मांगते हुए उन्हें लज्जा नहीं आई थी। लेकिन जिन स्वजनों और परिजनों ने उन्हें भिक्षाटन करते हुए देखा उनकी आंखें जरूर भर आईं। युवा संन्यासियों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भिक्षा में जो अन्न मिला, युवा संन्यासियों ने उसे पकाकर परमहंस के सामने रखा। परमहंस गले में कैंसर की पीड़ा के कारण कुछ भी खाने में असमर्थ थे। लेकिन उस दिन उन्होंने युवा संन्यासियों का पकाया भोजन किया। भोजन करते हुए परमहंसदेव के आनंद की सीमा नहीं थी। उन्हें भोजन करता देख स्वामी विवेकानंद और अन्य युवा संन्यासी भी परम मुदित थे।

आचार्यश्री को परमहंस देव के जीवन की एक और घटना याद आई। स्मृति इतनी सघन थी जैसे वह घटना उनका अपना ही अनुभव हो। स्वामी विवेकानंद अपने गुरु के बताये हुए विधान से साधना कर रहे थे। जप, तप और ध्यान के सिवा उन्हें कुछ सूझता ही नहीं था। पंचवटी में वे कभी कभार पूरी पूरी रात ध्यान में डूबे रहते। परमहंस ने एक दिन उन्हें अपने पास बुलाया और कहा कि दिन रात साधना में लगा रहता हूँ। देख, कठिन साधना से मुझे अष्ट सिद्धियां मिली थीं। उनके उपयोग का मुझे तो कभी अवसर नहीं मिला। उन्हें तू ले ले, भविष्य में बहुत काम आयेगी।

विवेकानंद ने गुरु की बात सुनी और पूछा, 'महाराज क्या इन सिद्धियों से मुझे ईश्वर की प्राप्ति में सहायता मिलेगी।' परमहंस देव ने उत्तर दिया कि 'नहीं'। इस पर स्वामी विवेकानंद ने तपाक से कहा 'तो फिर मुझे यह सिद्धियां नहीं चाहिए।' इस तरह के और भी कई प्रसंग आचार्यश्री को ध्यान में आते रहे। उन स्मृतियों या अनुभवों की यात्रा करते हुए ही आचार्यश्री योगनिद्रा में चले गये।

वह वर्ष स्वामी विवेकानंद का जन्म शताब्दी वर्ष था। कन्याकुमारी में जिस शिला पर बैठकर स्वामी विवेकानंद ने तब से सत्तर साल पहले ध्यान लगाया था–वहां स्मारक बनने की योजना इसी वर्ष शुरू हुई थी। इस योजना का आरंभ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघ चालक गुरु गोलवलकर ने किया था। इस काम का दायित्व एकनाथ रानाडे को सौंपा था।

समुद्र के खारे जल में नहाते रहने वाले पचपन फुट ऊंचे शिलाखण्ड पर ध्यान मग्न बैठे स्वामी विवेकानंद को बोध हुआ था कि उनके गुरु उन्हें भारतीय धर्म संस्कृति का संदेश विदेशों में पहुंचाने के लिए कहते हुए प्रतीत हो रहे थे। उनका जीवन चरित कहता है कि रामकृष्ण परमहंस समुद्र की लहरों पर चलते हुए पश्चिम में जाते दिखाई दिए थे। उसी से शिष्य ने आशय समझा कि गुरु उनके संदेश को दिगदिगंत में गुंजाने के लिए कह रहे हैं। आचार्यश्री सुबह उठे। प्रात:काल की नियमित उपासना के बाद उन्होंने अपनी मार्गदर्शक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सत्ता को प्रणाम किया। उस दिन वे करीब बीस मिनट तक अपने आराध्य के सामने चुपचाप बैठे रहे। जैसे किसी संदेश की प्रतीक्षा हो। लगभग बीस मिनट बाद उठे तो प्रतिदिन की तरह माताजी ने कक्ष में प्रवेश किया और दोनों ने अपने इष्ट आराध्य को एक साथ प्रणाम किया।

उपासना कक्ष से बाहर आते हुए आचार्यश्री ने माताजी से चर्चा शुरु की। उन्होंने कहा कि दक्षिण में जहां अरब सागर और बंगाल की खाड़ी का मिलन होता है, वहां आज की सुबह हजारों लोग इकट्ठे हो रहे होंगे। जानती हो किसलिए? वहां पूर्णिमा के दिन सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य बहुत भव्य होता है। माताजी सुनकर आचार्यश्री की ओर निहारती रहीं। आचार्यश्री ने कहा सविता देव के ध्यान के लिए वहां से ज्यादा आकर्षक प्राकृतिक दृश्य कहीं और नहीं होगा। समुद्र जल से ऊपर उठता हुआ सूर्य बिंब प्रातःकाल के समय ऐसा लगता है जैसे सविता देव स्नान कर निकल रहे हों। अगाध जलराशि से उठती हुई तरंगे, उनसे उठता गिरता जल सूर्योदय समय ऐसा प्रतीत होता है जैसे सविता देव नहा कर बाहर निकले हैं तो उनके शरीर से पानी की बूंदे गिर रही हैं।

यह चर्चा करते हुए आचार्यश्री और माताजी परामर्श कक्ष में आ गये थे। परामर्श— जहां वे निवास पर आये साधकों या अतिथियों से मिलते थे। माताजी ने आचार्यश्री से अभी तक जो सुना था, उस विवरण को वे मथ रही थीं। पूछने का मन हो रहा था कि अचानक इस तरह के उल्लेख का क्या आशय है? अपनी स्मृति को कुरेदते हुए उन्हें कन्याकुमारी के संबंध में पढ़ी हुई पुराकथा याद आने लगी। उस कथा के अनुसार घोर तपस्या कर बाणासुर ने अजेय होने का वरदान पा लिया था। उस वरदान में एक शर्त जुड़ी हुई थी कि वह कुमारी कन्या पर विजय नहीं प्राप्त कर सकेगा। बाणासुर के उत्पातों का अंत करने के लिए इंद्र ने एक यज्ञ किया।

यज्ञाग्नि से एक कन्या का जन्म हुआ यह कन्या पार्वती के अंश से उद्भूत हुई थी। कुछ बड़ी होते ही समुद्र के तट पर शिव को वर के रूप में पाने के लिए तप करने लगी। प्रसन्न होकर शिव ने पाणिग्रहण स्वीकार कर लिया। यदि विवाह हो जाता तो बाणासुर का वध नहीं हो पाता। यह सोचकर देवताओं ने देवर्षि नारद से मिलकर ऐसी स्थितियां उत्पन्न की कि उनका विवाह नहीं हो पाया। वह मुहूर्त टल जाने के बाद देवी फिर तपस्या में निरत हो गईं। बाणासुर ने देवी के पास विवाह का प्रस्ताव भेजा। फिर इसके लिए हठ किया। हठ करने पर देवी और बाणासुर में युद्ध हुआ और युद्ध में राक्षस मारा गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

माताजी को यह पुराकथा याद आ रही थी। उसी समय आचार्यश्री स्वामी अनुभवानंद से कह रहे थे कि जिस चित्त में किसी और के लिए स्थान नहीं रह गया हो, उसी में परमात्मा का अवतरण होता है। चेतना के कुमारी होने का अर्थ है उसमें किसी भी कामना का उदय नहीं होना। उदय हुआ भी हो तो उसका पराभूत हो जाना। एक बार यदि किसी चित्त में परमात्मा का उदय हो जाता है तो वहां फिर दूसरी कामनाएं, वासनाएँ नहीं आती। आती भी है तो उस अग्नि में ध्वस्त हो जाती हैं। स्वामी अनुभवानंद से उन्होंने गुरु पूर्णिमा, ठाकुर रामकृष्ण परमहंस के लीलाप्रसंग स्वामी विवेकानंद के चरित, महत्व और उनकी परंपरा के अलावा अगले दिनों आने वाली विभीषिकाओं का भी जिक्र किया। दो तीन लोग और परामर्श में आये थे। इस बीच गायत्री तपोभूमि में उत्सव की तैयारियां पूरी हो चुकी थी। परामर्श के दौरान माताजी एक बार उठकर भीतर गई थी। शायद बच्चों को देखने के लिए।

तपोभूमि में यज्ञ पूर्णाहुति के बाद व्यास पूजा का कार्यक्रम हुआ। पर्व देवता के पूजन उपचार के बाद आचार्यश्री अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में कहा कि आज का दिन युग निर्माण योजना के विधिवत आरंभ होने का दिन है। पिछले दो वर्षों से हम लोग समाज सुधार, राष्ट्र निर्माण और परिवार निर्माण जैसे कार्यक्रमों की चर्चा करते रहे हैं। चर्चा परामर्श का वह दौर पूरा हुआ, जिसमें हम यहीं तक सीमित रहते थे। अब चर्चा परामर्श से आगे निकल कर उन कार्यक्रमों को कार्यरूप में बदलना चाहिए।

भविष्य की समीक्षा

उस आयोजन में आचार्यश्री ने कहा था कि आने वाले पचास वर्ष देश और समाज के लिए बहुत महत्वपूर्ण होंगे। हममें से बहुत से लोग उस समय नहीं होंगे। आपसे बातचीत करने और आपके संपर्क में रहने वाला यह शरीर तो निश्चित ही नहीं रहेगा। लेकिन कोई समीक्षक या इतिहासकार उस समय आज की स्थितियों की तुलना उस समय की परिस्थितियों से करेगा तो पायेगा कि समय और समाज ने कितनी प्रगति कर ली है। तब कोई समीक्षक आज के समय का मूल्यांकन करेगा तो यही कहेगा कि वह समाज कितना आदिम और पिछड़ा हुआ था। अभी हम दो हजार साल पहले का वर्णन पढ़ कर जिस तरह नाक भौ सिकोड़ते हैं उसी तरह पचास साल बाद लोग आज के बारे में पढ़ सुन कर राय देंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परिवर्तन प्रक्रिया को समझाते हुए आचार्यश्री ने साधकों से कहा कि युग निर्माण योजना के एक सौ आठ कार्यक्रम हैं। इनमें से कम से कम दस कार्यक्रम तो प्रत्येक साधक को हाथ में लेना चाहिए। जिन्हें अपने तक ही सीमित रहना है वे साधक भले ही अपने आपको अलग रखें। जिन्हें विश्वमानव की सेवा के रास्ते अपना निर्माण और परिष्कार करना है, वे परिवर्तन की इस ईश्वरीय इच्छा से अपने आपको निमित्त बनायें।

उद्‌बोधन के बाद आचार्यश्री ने आये साधकों से मिलने जुलने का क्रम शुरू किया। शाम तक लगभग सभी साधकों से मुलाकात हो गई। यहां मिल गये साधकों के बारे में सोचने लगे तो याद आया कि गायत्री जयंती पर आया वह किशोर नहीं दिखाई दिया, जो सबसे कम उम्र का था। यह ध्यान आते ही उन्हें मध्यप्रदेश से नियमित रूप से आने वाले ग्वालियर वाले जज साहब की याद आ गई। वे प्रणाम करने आये तो परिवार का हालचाल पूछा पर जज साहब ने कहा था कि गायत्री जयंती का शिविर करने के बाद प्रणव यहां हर वर्ष शिविर में आने की बात कहते हैं। अभी वह दक्षिण भारत गये हैं। उनके कुछ साथियों ने कन्याकुमारी की यात्रा का कार्यक्रम अचानक बना लिया। इन दिनों वहां शिला स्मारक की चहल पहल है। सुन कर आचार्यश्री ने कहा था कि बच्चों के सामने विवेकानंद, रामतीर्थ, गांधी, सुभाष और तिलक का आदर्श होना चाहिए। उससे कहना कि अखंड ज्योति पढ़ता रहे और महीने पंद्रह दिन में एकाध पत्र लिख दिया करे। कोई कष्ट कठिनाई हो तो वह भी निस्संकोच लिखे।

कन्याकुमारी और शिला स्मारक का ध्यान आते ही उन्हें स्वामी अनुभवानंद की याद आई। माताजी से पूछा तो पता चला कि सुबह के बाद वे कहीं दिखाई नहीं दिये हैं। उनके आने का उद्देश्य साफ समझ नहीं आया था। इतना ही अनुमान लग पाया था कि वे गायत्री तपोभूमि में रहना चाहते थे और वहां उन्हें जगह नहीं मिल पाई थी। स्वामी जी के बारे में माताजी से अपनी खुद की राय पूछी तो कहने लगी कि स्वामी जी का मन तपोभूमि में ही बस जाने का था। आपने उनकी इच्छा को महत्व नहीं दिया।

आचार्यश्री ने कहा कि गेरुआ वस्त्र पहनने के बाद व्यक्ति दूसरों से सेवा लेने का आदी हो जाता है। वह स्वयं अपनी सेवा नहीं कर पाता। गेरुआ वस्त्र सभी प्रकार के आश्रय आलंबन को त्याग देने का संकल्प है लेकिन इस संकल्प पर काफी धूल जम गई है। उन स्वामी जी में हो सकता है इस तरह का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रमाद न हो लेकिन तपोभूमि में गृहस्थ और वानप्रस्थ कार्यकर्त्ता रहते हैं। गायत्री परिवार में भी गृहस्थों का ही बाहुल्य है। हम स्वामीजी को कहां खपा सकते थे।

दस जुलाई से तपोभूमि और अखंड ज्योति संस्थान में गुरुपूर्णिमा के बारे में पत्र आने लगे। इन पत्रों में अपने यहां मनाये गये पर्व की सूचना थी। शुरु दिन तीन पत्र आए, अगले दिन पांच, फिर आठ और उसके बाद बारह। इसके बाद तो पत्रों का तांता लग गया। सामान्य पत्रों से अलग इन चिट्ठियों में गुरु पूर्णिमा के स्वरूप और संकल्प की सूचना थी। आचार्यश्री ने इन पत्रों का सार संक्षेप तैयार किया और डायरी में लिखा कि प्राय: सभी साधकों ने गुरुपूर्णिमा के दिन अपने जीवन में कुछ न कुछ परिवर्तन का निश्चय किया है। इस निश्चय को युग निर्माण की आधार शिला कहा जा सका है।

गायत्री उपासना के संबंध में दी गई प्रेरणा को अधिकांश पाठकों ने अपनाया है। पुराने उपासकों से अपने जप साधन में श्रद्धा भावना के समावेश की अपेक्षा की गई थी। उन्होंने ऐसा करने का संकल्प जताया है। जो इस मार्ग पर आगे बढ़ गये हैं, उन्होंने पंचकोशीय गायत्री साधना अपनाई। गायत्री परिवार में अभी अभी शामिल हुए लोगों ने गुरुपूर्णिमा से अपनी साधना आरंभ की। साथ ही यह आश्वासन दिया कि अपने कुटुंबी जनों को उपासना में लगने के लिए प्रेरित करेंगे।

स्त्रियों की गायत्री उपासना पर अधिक जोर दिया गया था ताकि नई पीढ़ी को प्रबुद्ध बनाने में सहायता मिले। इस सुझाव का सभी क्षेत्रों में स्वागत हुआ। परिवार में शाम के समय ज्ञान गोष्ठियां चलाने के सुझाव पर भी अमल हुआ। नशा, मांस, फैशन, फिजूल-खर्ची और समय को व्यर्थ नष्ट करने वाली प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने के संकल्प लेने वालों की संख्या पांच हजार के आसपास बैठती थी। व्यक्तिगत बुराइयों के अलावा सामाजिक बुराइयों को दूर करने के संकल्पों की भी बाढ़ सी आ गई थी। परिजनों ने मृत्युभोज, पशुबलि, बाल विवाह, अनमेल विवाह, दहेज जैसी कुरीतियों के खिलाफ आंदोलन चलाने के निश्चय किये।

सभी मार्ग आलोकित

अशिक्षा के कलंक को मिटाने के लिए जगह-जगह से वैकल्पिक व्यवस्थाएं बनाने की सूचना भी मिली। इस तरह की व्यवस्था में रात्रिशालाएं चलाने के समाचार ज्यादा थे। मध्यप्रदेश के कसरावद गांव में बाबा अर्जुनपुरी ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आसपास छह रात्रि पाठशालाएं शुरु कराईं। पिछले चार महीने से वे इसके लिए कोशिश कर रहे थे। गांव के लोगों ने व्यवस्था जुटाने का भरोसा दिया और आरंभ हो गया। रात्रि शालाओं के लिए जगह का इंतजाम भी गांव वालों ने ही किया। छह में से दो शालाएं मंदिर में शुरू की गईं।

इंदौर के एक किशोर छात्र ने लिखा था कि वह अपने संगी सहपाठियों में नये युग के संस्कार जगाएगा। इसके लिए स्वाध्याय गोष्ठियां चलाने का संकल्प था। गुरु पूर्णिमा के संबंध में उस साधक ने लिखा कि वह दिन उसने कन्याकुमारी में उस जगह व्यतीत किया जहां स्वामी विवेकानंद ने अस्सी वर्ष पहले ध्यान लगाया था। आंखों के सामने रह रह कर स्वामी विवेकानंद का चित्र उभर रहा था। पुस्तकों में जैसा पढ़ा और विद्वानों से जैसा सुना था उसी के आधार पर मानस चित्र बनाने की कोशिश की। सूर्यास्त के समय मन उस छवि में लवलीन हो उठा। उस ध्यान धारणा से ही तय किये गये संकल्प को अभी तुरंत साकार करना है। अपने साथियों को बुलाया, बिठाया और समुद्रतट पर बैठ कर गायत्री महाविज्ञान के कुछ पन्ने पढ़े। उनकी विषयवस्तु पर चर्चा की।

गुरुपूर्णिमा के बाद सामाजिक और सांस्कृतिक लक्ष्य प्राप्त करने पर ज्यादा जोर दिया जाने लगा था। अगस्त १९६३ की कोई तारीख थी। सीतारामदास ओंकारनाथ बाबा मथुरा आये। उनकी बड़ी ख्याति थी। उनसे दीक्षा या प्रेरणा लेकर हजारों लोग भगवन्नाम की साधना करने लगे थे। उनके अनुयायियों ने 'जयगुरु' नाम से एक साधना संप्रदाय भी बना लिया था। बाबाजी जहां भी जाते, उन्हें उनके भक्तगण घेरे रहते। अपने गुरु के साथ चलते हुए ये भक्त हरिनाम कीर्तन भी करते जाते थे। प्रारंभ में उन्होंने मौन व्रत ले लिया था। उसी स्थिति में नाम जप की प्रेरणा देते रहते। १९५५ में उन्होंने अपने गुरु की प्रेरणा से 'मौनव्रत' का उत्सर्ग कर दिया और नाम प्रचार में लग गये।

उन दिनों मथुरा में सावन के झूले सज रहे थे। अपनी शिष्य मंडली के साथ सावन में मथुरा की छटा निहारने ही निकले थे। वे गायत्री तपोभूमि के सामने से निकल रहे थे कि बाबा ने दायां हाथ उठाया। यह रुकने का संकेत था। बारिश के कारण तपोभूमि के सामने वाली सड़क पर जगह-जगह कीचड़ हो रहा था। उसकी परवाह किये बिना बाबा ने गायत्री मंदिर की ओर देखते हुए दंडवत प्रणाम किया और भीतर चले आये। साधकों या कार्यकर्त्ताओं को उनका विशेष परिचय नहीं था। आचार्यश्री ने बाबा को देखते ही पहचान लिया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और आदरपूर्वक परामर्श तक ले गये। इससे पहले बाबा ने मंदिर में गये और वहां दर्शन के बाद परिक्रमा की। लौटकर परामर्श में बैठे।

बाबा के बारे में कई चमत्कारी घटनाएं प्रसिद्ध थीं। उन सबका संबंध यद्यपि उनके दिव्य जीवन से ही था। उनका विवाह उस समय की मान्यता के अनुसार काफी विलंब से हुआ था। पत्नी को उन्होंने आध्यात्मिक सहचरी ही माना और वंशवृद्धि नहीं की। कहते है कि विवाह के दो वर्ष बाद ही उन्हें भगवान शंकर से दीक्षा मिली और उसके कुछ वर्ष बाद पत्नी चल बसी। घर गृहस्थी से मुक्त होकर वे एकनिष्ठ भाव से आराधना में लग गये। पत्नी के निधन के साल भर बाद ही उन्होंने मौन धारण कर लिया। बाइस वर्ष तक मौन साधना करने के बाद उन्होंने बोलकर नाम प्रचार शुरू कर दिया।

परामर्श में बैठते ही बाबा ने आचार्यश्री की ओर देखकर अट्टहास किया। इस हंसी में खोये हुए साथी को पा लेने जैसा उल्लास था। बहुत दिनों से बिछुड़ा साथी जैसे अचानक मिल जाए और हंसी फूट पड़े। उसके बाद बाबा ने कहा कि आपके मन में भी क्या वही बातें घुमड़ती है जो इस शरीर के बारे में दूसरे लोग सोचते हैं। इस कथन का आशय स्पष्ट नहीं था। लेकिन आचार्यश्री उसे समझ गये थे। उन्होंने कहा नहीं मुझे कोई आश्चर्य नहीं है। एक अवस्था के बाद पौराणिक और ऐतिहासिक का भेद मिट जाता है। अपनी आंतरिक स्थिति के कारण लौकिक और अलौकिक का भेद करते हैं। वस्तुतः ऐसा है नहीं।

आचार्यश्री की बात सुनकर बाबाजी ने प्रसन्नता व्यक्त की। कहने लगे गायत्री मंत्र इस युग का महामंत्र है। महामहामंत्र। रवीन्द्रनाथ टैगोर के पुरखों ने इसी की साधना की थी। इसलिए उनके वंशजों में एक से एक प्रतिभाएं आती गईं। ठाकुर कहते है कि आने वाले समय में इस महामंत्र के साधकों की संख्या बहुत ज्यादा बढ़ेगी। वे सब मिलकर ऐसी प्रचंड साधना करेंगे कि जो काम सौ साल बाद होना है वह दस बीस साल में ही संपन्न हो जाएगा।

बाबा की बात सुनकर आचार्यश्री ने सिर हिलाया। बाबा फिर कहने लगे, एक उपाय तो यह है कि छोटी छोटी हजारों प्रतिभाएं आयें और भगवान के काम में निमित्त बनें। दूसरा उपाय यह है कि प्रचंड प्रबल बारह महासाधक आयें जो अपनी स्वयं की सिद्धि से ही जगती को बदल कर रख दें। दोनों उपाय कारगर हैं लेकिन मैं देख रहा हूँ कि आपने जो अभियान छेड़ा है उसमें दोनों ही स्तर के प्रयोग सध रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्यश्री ने इस बात का भी स्वागत किया और कहा कि आप भी ईश्वर की उसी लीला के एक आकार हैं। हम सभी उसी के संकल्प की छोटी छोटी चिंगारियां हैं। दोनों में देर तक विभिन्न विषयों पर बात होती रही। करीब एक घंटे तक वे आश्रम में रहे और उसके बाद विदा लेने लगे। आचार्यश्री ने उन्हें उपनिषदों का एक सैट भेंट किया। चलते चलते बाबाजी ने तीन खंडों को उलटा पलटा। तीनों खंडों के अलग अलग नाम 'ज्ञान' 'साधना' और 'ब्रह्मविद्या' खंड पढ़कर वे मुग्ध से हो गये। कहा बाबा तुमने तो तीनों मार्गों को आलोकित कर दिया। यह कहते हुए उन्होंने अपने हाथ ऊपर उठा दिये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सृजन शिल्पियों की खोज

१९६४ की वसंत पंचमी पर अखंड ज्योति पत्रिका पचीसवें वर्ष में प्रवेश कर रही थी। लगभग तीन महीने पहले ही तय हो गया कि यह वर्ष रजत जयंती वर्ष के रूप में मनाना है। इस वर्ष को उत्सव अभियान के रूप में मनाने के लिए कार्यकर्त्ताओं से सुझाव मांगे गये थे। कई तरह के सुझाव आये। उनमें वसंत पंचमी पर मथुरा में एक बड़ा सम्मेलन करने, उसके लिए आर्थिक सहयोग इकट्ठा करने, संगठन को मजबूत बनाने, जगह जगह प्रचार फेरियां निकालने और लोगों का सहयोग जुटाने के कई तरह के विचार थे। इन सुझावों या कार्यक्रमों के बारे में आचार्यश्री का मानना था कि इनसे क्षणिक उत्साह भले आ जाय, परिवर्तन या युग प्रत्यावर्तन प्रक्रिया में कोई गुणात्मक परिणाम नहीं आयेंगे।

उन्होंने लिखा कि इस तरह के कामों से प्रचार का उद्देश्य ही पूरा होता है। ठोस काम और निर्णय विचार विनिमय से ही होते हैं। महत्वपूर्ण निर्णय लेने या आरंभ करने के लिए थोड़े से संकल्पवान व्यक्ति मिलें, बैठे और विचार विनिमय करें तो वह ज्यादा उपयोगी है। इस भूमिका के साथ गायत्री परिवार की या अखंड ज्योति पत्रिका की रजत जयंती मनाने के लिए पांच सूत्री कार्यक्रम नियत किये गये। उनके अनुसार १३ से १९ जनवरी तक सामूहिक जप, प्रार्थना और हवन आदि कार्यक्रम चलाने के बाद अंतिम दिन वसंत उत्सव मनाना था। दूसरे सत्र में यह व्रत लेना था कि प्रतिदिन कुछ समय और साधन युग निर्माण आंदोलन को विस्तार देने में लगाया जाय। विस्तार का अर्थ समर्थकों और सहयोगियों की संख्या बढ़ाना ही नहीं था। आंदोलन के एक सौ आठ कार्यक्रमों में से कुछ को चुनना और उन्हें अपनाना भी उस विस्तार के अन्तर्गत ही आता है।

गायत्री उपासना, यज्ञ अभियान और स्वाध्याय को बढ़ावा देने के लिए पूरे वर्ष कुछ न कुछ गतिविधियां चलाने का संकल्प तीसरा आरंभ था। इस आरंभ में साधकों को अपने निश्चय की सूचना मथुरा भिजवानी थी। साधक और निकट आयें, मिल जुल कर काम करें और स्थानीय संगठन को मजबूत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बनाएं। शाखाओं में कम से कम दस पर्व प्रतिवर्ष मनाये जाएं। इसकी तैयारी व्यवस्था भी रजत जयंती सप्ताह में कर ली जाय। इन पांच सूत्रों के साथ अखंड ज्योति या गायत्री परिवार का रजत जयंती उत्सव एक सप्ताह तक चलाने की प्रेरणा थी। विशेष कार्यक्रम तो पूरे वर्ष चलाये जाने थे।

मथुरा में वसंत पंचमी और गुरुपूर्णिमा पर आने वाले साधकों की संख्या हर साल बढ़ने लगी थी। चैत्र, आश्विन और दोनों के बीच में ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष में गायत्री जयंती तक तीन नवरात्रियों में साधक स्तर के लोग आते। शिक्षण शिविरों में रचनात्मक कार्यक्रम चलाने के प्रशिक्षण शिविरों में आने वालों का तांता भी लगा रहता। इन शिविरों में लोग साधना और प्रशिक्षण के लिए आते थे। वसंत पंचमी और गुरुपूर्णिमा पर आने वाले साधक सिर्फ प्रणाम के लिए आते। वे एकाध दिन के लिए ही तपोभूमि में ठहरते। वसंत पंचमी पर गायत्री परिवार के कुलपति का सान्निध्य प्राप्त करना एक प्रमुख आकर्षण था। गुरुपूर्णिमा पर साधक धर्म परंपरा के प्रवर्तकों और उन्नायक ऋषियों के प्रति भावांजलि व्यक्त करने के लिए आते थे। गायत्री परिवार के सदस्य आचार्यश्री एवं माताजी को अपनी मार्गदर्शक सत्ता के रूप में देखते थे। उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करना भी एक उद्देश्य होता था।

वसंत १९६४ पर और सालों की तुलना से ज्यादा लोग आये। रजत जयंती वर्ष होना भी उनके उत्साह का एक कारण हो सकता था। वसंत पंचमी के दिन प्रातःकाल पूजन, उत्सव आयोजन के बाद आचार्यश्री ने अपने उद्‌बोधन में अगली आधी सदी की संभावनाओं पर चर्चा की। उस चर्चा को साधकों ने सुना, नोट किया और मन में उतारा। उस उद्‌बोधन द्वारा जानकारी मिली कि साधकों को पंचकोशीय साधना का अभ्यास क्रम अब पत्राचार द्वारा चलता रहेगा। इसके लिये अखंड ज्योति में निर्धारित पृष्ठ रहेंगे। परिजन उसका स्वाध्याय कर अपनी आत्मिक प्रगति करते रहें।

पंचकोशी साधना से कुछ साधकों की अच्छी प्रगति हुई थी। आचार्यश्री ने ही बताया था कि करीब तीन सौ साधक मनस शरीर का अतिक्रमण करने की स्थिति में आ गये हैं। मनस शरीर के जागृत होने का अर्थ है कुंडलिनी का सिद्ध होना। छह चक्रों में से दूसरे, तीसरे, चौथे या पांचवे चक्र तक कुंडलिनी की यात्रा के बाद साधकों को रुक जाना असह्य लग रहा था। उन सबके मार्गदर्शन के लिए आचार्यश्री ने उस वर्ष कार्तिक पूर्णिमा को पंचकोशीय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साधना का समन्वित स्वरूप साधकों के सामने रखा। बाद में साधकों को साधना का मार्गदर्शन पत्रिका के माध्यम से ज्यादा मिलता रहा।

नेहरू के बाद

मई १९६४ की २७ वीं तारीख को भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का निधन हो गया। अपने करिश्माई व्यक्तित्व के कारण नेहरू जन जन के हृदय सम्राट थे। करीब डेढ़ साल पहले चीन से मिली शिकस्त ने उन्हें भीतर से तोड़ दिया था। पराजय एक राष्ट्रीय क्षति तो थी ही, उसके साथ नेहरू की अपनी आस्था बुरी तरह लड़खड़ाई थी। उनका पंचशील का सिद्धांत, चीन पर अगाध विश्वास, चाऊ एन लाई से घनिष्ठ मित्रता, गुट निरपेक्ष आंदोलन में यकीन और सरकार में ही अपने संगी साथियों पर निर्भर होने की हद तक विश्वास। सब कुछ चरमरा कर टूट और बिखर गया था। आस्था के स्तर पर वे इतने आहत हुए थे कि उसके लक्षण शरीर पर पक्षाघात के रूप में प्रकट हुए थे। उनकी मृत्यु के बाद भारत के उत्साही नागरिक, उभरता हुआ उदार नेतृत्व और समाजवाद में आस्था रखने वाले लोग स्वयं को अनाथ अनुभव करने लगे थे। स्वयं राजनैतिक नेतृत्व उस समय इतना आहत और किंकर्त्तव्यविमूढ़ था कि तत्काल कोई नेता नहीं चुन पाया। उस समय के गृहमंत्री गुलजारी लाल नंदा को प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई गई और केन्द्र में अस्थाई व्यवस्था बनी। नये नेता का चुनाव होने तक देश में संशय और अनिश्चय का विचित्र वातावरण था।

गुलजारी लाल नंदा के निकट सहयोगी और सदाशिव गवली उसी अवधि में मथुरा आये। संयोग ही था कि वे गायत्री तपोभूमि पहुंचे। वहां गायत्री मंदिर में गये और कहने लगे कि नंदाजी भी आदिशक्ति के आराधक हैं उनकी चिंता है कि नेहरू के बाद क्या होगा? उन्होंने अपना परिचय नहीं दिया था। सहज ढंग से ही चाहा था कि आचार्यश्री से भेंट हो जाए। भेट हुई तो उन्होंने अपना परिचय दिया और कहने लगे कि दिल्ली में अनिश्चय का वातावरण है। नेहरू के समय में ही यह सवाल उठने लगा था कि उनके बाद कौन? अब तो यह सवाल और विकट हो गया है। आचार्यश्री ने उनसे कहा, 'नेहरू जैसा व्यक्तित्व किसी समाज के शताब्दियों से संचित पुण्यों का फल है। हम उनके प्रति अगाध श्रद्धा रखते हैं लेकिन इतना निराश होने की जरूरत भी नहीं है।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुनकर गवली आचार्यश्री की ओर विस्मय से देखने लगे। इस टिप्पणी से उन्हें लग रहा था जैसे नेहरू का असम्मान हुआ हो। आचार्यश्री ने अपनी बात स्पष्ट की। कहा कि कोई भी व्यक्ति देश, धर्म और संस्कृति से बड़ा नहीं होता क्योंकि वह अंततः इन्हीं सबका अंग होता है। राम, कृष्ण, बुद्ध, चंद्रगुप्त, अशोक, हर्ष, कनिष्क और अकबर जैसी विभूतियां आई और काल के प्रवाह के साथ चली गईं। देश जहां का तहां है। आप निश्चिंत रहे। सभी को निश्चिंत रहना चाहिए। हम सब इस आघात से उबर जाएंगे और देखेंगे कि सब कुछ अपने ढंग से चलने लगा है।

नेहरू के निधन के बाद राष्ट्रीय शोक के तेरह दिन बीतते ही लोगों ने देखा कि एक विनम्र, शालीन और सौम्य व्यक्तित्व को उस समय के कांग्रेस संसदीय दल ने देश का प्रधानमंत्री चुन लिया। लाल बहादुर शास्त्री को प्रधानमंत्री चुनने में कोई कठिनाई नहीं हुई। नेता चुन लिए जाने के तुरंत बाद गवली मथुरा आये थे। उन्होंने शास्त्रीजी को प्रधानमंत्री चुनने का घटनाक्रम विस्तार से सुनाया। यही नहीं निश्चिंत आश्वस्त भाव भी व्यक्त किया कि अब आगे कोई कठिनाई नहीं है। कोई भीतरी या बाहरी संकट आयेगा तो हम उसे पार कर जाएंगे।

गवली जब यह कह रहे थे कि संकट की घड़ी पार हो गई तो आचार्यश्री ने उन्हें बीच में ही टोका। उन्होंने कहा कि कम से कम अगले सात वर्ष हम लोगों को भारी अनिश्चितता, अस्थिरता और संकट का सामना करना पड़ सकता है। सुनकर गवली चौंके। उस समय उनके साथ आए अधिकारी, सामाजिक कार्यकर्त्ता और वहां मौजूद तपोभूमि के साधकों को भी विस्मय हुआ। आचार्यश्री ने कहा सभी देशों और समाजों को परीक्षा की इन घड़ियों से गुजरना होता है। हमारे देश के सामने तीन बड़ी चुनौतियां हैं- अभाव, अशक्ति और अज्ञान। आने वाले संकट इन चुनौतियों से मुकाबले की सामर्थ्य देंगे। और विवेक ही हमें इस संकट से उबारेगा। निश्चिंत रहें हम उबर जाएंगे।

मंथन और परामर्श

'युग निर्माण योजना' की घोषणा अखंड ज्योति के रजत जयंती वर्ष का एक उभार था। योजना, आंदोलन या संगठन के लिए गायत्री परिवार के सदस्यों या साधकों से परामर्श का क्रम चल पड़ा था। दस दिन के, एक महीने के और तीन महीने के प्रशिक्षण शिविरों में साधकों की स्थिति और क्षेत्र की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आवश्यकता के अनुसार अभ्यास की रूपरेखा बनाई गई। इन शिविरों में कभी कभार समाज-साहित्य, धर्म, राजनीति और कला आदि क्षेत्रों से जुड़े लोग भी आ जाया करते। शिविरों में उनका व्याख्यान हो जाता और आचार्यश्री से विचार विनिमय भी। आने वाले विशिष्ट व्यक्तियों के मन में भी विचार विमर्श की ललक होती थी।

सर्वोदय आंदोलन से जुड़े यशपाल जैन उन्हीं दिनों आचार्यश्री के संपर्क में आए। जैन असल में वृंदावन के एक कार्यकर्त्ता शिविर में आए थे। उनकी गतिविधियों का केन्द्र दिल्ली ही था। सर्वोदय विचार और आंदोलन को व्यक्त करने वाली पुस्तकों के अलावा उन्होंने इतिहास, धर्म, संस्कृति और विश्व साहित्य की चुनी हुई पुस्तकों के हिंदी अनुवाद प्रकाशित किए थे। उन्हें पता चला कि आचार्यश्री ने आर्ष वाङ्मय का हिन्दी भाष्य प्रकाशित किया है तो उनकी उत्सुकता और बढ़ी। वृंदावन का शिविर समाप्त होते ही वे गायत्री तपोभूमि आए। उन्होंने अपने आने की कोई पूर्व सूचना नहीं दी थी। स्वतंत्रता आंदोलन में आचार्यश्री की भागीदारी और अब भी खादी पहनने, रेल में साधारण श्रेणी में सफर करने और आश्रम पद्धति से रहने के बारे में उन्हें मालूम हो गया था। उस जानकारी से ही अनुमान लगाया कि आचार्यश्री से मिलने में कोई कठिनाई नहीं होगी। वे शिविर में सीधे तपोभूमि आए।

आचार्यश्री उस समय अखंड ज्योति संस्थान जाने के लिए तैयार थे। यशपाल जैन ने उन्हें अपना परिचय दिया। आचार्यश्री ने नाम और दिल्ली से आने के बारे में सुनते ही कहा कि आपके बारे में ज्यादा कुछ कहने की जरूरत नहीं है। आपके संस्थान से प्रकाशित कई पुस्तकें हमारे पुस्तकालय में हैं। इसके तुरंत बाद उन्होंने यशपाल जैन से अपने साथ अखंड ज्योति चलने के लिए कहा। इससे पहले उन्होंने गायत्री तपोभूमि के दर्शन कराए। मंदिर, यज्ञशाला, प्रशिक्षण शिविर और विद्यालय आदि के बारे में बताया। यशपाल जैन यह सब देखते और बातचीत करते रहे।

उनका विचार था कि समाज सेवा के क्षेत्र में उतरना हो तो मंदिर या आश्रम बनाने की जरूरत नहीं है। इन स्थापनाओं के कारण लोगों में भय की स्थिति ही बनती है। धार्मिक कलेवर लोगों को कुछ करने के लिए प्रेरित करने के स्थान पर झुकना ही सिखाता है। उनकी राय थी कि इस तरह की स्थापनाओं में बहुत ज्यादा सावधानी की जरूरत है। सावधानी नहीं बरती जाए तो लोग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भीरू और नतमस्तक बनते हैं। आर्ष वाङ्मय और जीवन जीने की कला सम्बंधी पुस्तकों को उन्होंने सराहा था। इस विषय पर बातचीत करते हुए आचार्यश्री और यशपाल जैन अखंड ज्योति संस्थान की ओर रवाना हो गए।

दोनों साथ ही चल रहे थे। गायत्री टीले से कुछ आगे निकलने तक दसियों लोगों ने आचार्यश्री को नमस्कार किया। यशपालजी ने इस बात को नोट किया। चौक से आगे तक जाते हुए राजनीति पर चर्चा होने लगी थी। उस समय की स्थितियों पर टिप्पणी करते हुए यशपालजी कहने लगे थे कि नेहरूजी के साथ ही उनके युग का अंत हो गया। उनमें जो अभिजात्य सादगी थी और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति जैसी निष्ठा थी, उसकी झलक आने वाली पीढ़ियों में देखने को मिले या न मिले।

यशपालजी के स्वर में निराशा की झलक थी। जैसे नेहरू युग के अंत के साथ ही बहुत सी अच्छाइयों का भी अंत हो गया हो। आचार्यश्री ने उनकी बात का तुरंत कोई उत्तर नहीं दिया। घियामंडी शुरू होते ही वैद्य जगन्नाथ से सामना हुआ। सामना क्या हुआ वे अपने औषधालय से उतर कर नीचे आ गए और प्रणत भाव से आचार्यश्री के सामने हाथ जोड़कर खड़े हो गए। कहने लगे कि गोरक्षा संघ के लोगों ने चालीस गायें रुकवाई हैं। उन्हें ट्रक में भरकर ले जा रहे थे। अब तो धर्म को अफीम मानने वाले नेहरू बाबा का राज नहीं रहा फिर भी यह सब क्या हो रहा है ? वहां खड़े-खड़े ही वैद्यजी ने कई बातें सुना दी थीं। उसमें गाय के दूध और घी के बिना औषधियों के निर्माण में आने वाली दिक्कतों से लेकर धार्मिक भावनाओं तक कितने ही मुद्दे थे।

आचार्यश्री ने वैद्यजी से इतना ही कहा कि दो चार दिन के भीतर ही हम लोग मिलें बैठें और इस समस्या पर विचार करें। सरकार गाय की रक्षा नहीं कर पा रही तो जनता को ही कोई उपाय करना चाहिए। कहते हुए वे आगे बढ़ गए। यशपाल जैन ने शास्त्री जी का रोष देखकर आश्चर्य व्यक्त किया। कहा कि ऐसे लोग भी हैं जो नेहरू जी को गोरक्षा और धार्मिक मामलों में बाधक समझते हैं।

आचार्यश्री ने इस नई राय के बारे में भी कुछ खास नहीं कहा। सिर्फ इतना ही कि व्यक्ति विशेष देश या समाज की दिशा निश्चित नहीं करते। व्यक्तियों का समूह या बहुत से लोग वातावरण बनाते हैं। किसी महापुरुष के नहीं रहने के बाद लोग कई तरह के अनर्थों की आशंका करने लगते हैं। चर्चा करते हुए अखंड ज्योति संस्थान आ गया था। यशपाल जैन करीब दो घंटा वहां

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रुके होंगे। इस बीच अनेक विषयों पर चर्चा हुई। विदा लेते हुए यशपाल जैन ने कहा कि पहले आपका सान्निध्य मिला होता तो मैं भी दिल्ली को केन्द्र बनाने के बजाय किसी ऐसे शहर को केन्द्र बनाता जहां राजनीति की तुलना में संस्कृति का प्रभाव ज्यादा हो।

समाचार की परिभाषा

दिल्ली के साहित्यिक या सांस्कृतिक क्षेत्र से जुड़ी एक और प्रतिभा का उन दिनों मथुरा आना हुआ। नाम था उनका रतनलाल जोशी। वे हिंदी के प्रसिद्ध पत्र 'हिन्दुस्तान' के संपादक थे और मानते थे कि पत्रकारिता साहित्य की एक विधा है। व्यवहार में फिर भी समाचार और लेख या कहानी में अंतर तो होता है। जिन दिनों हिन्दुस्तान के संपादक गायत्री तपोभूमि आए, उन्हीं दिनों आचार्यश्री एक पाक्षिक समाचार पत्र शुरु करने की योजना बना रहे थे। पत्र का नाम तय हो गया था। 'युग निर्माण योजना' नाम के इस पाक्षिक पत्र का स्वरूप, गठन और विषय वस्तु के बारे में कई लोगों से चर्चा हुई थी। जोशी जी से भी चर्चा हुई। उन्होंने सुना तो हलकी सी टिप्पणी की। कहा कि इसमें आपके अनुयायी जगह-जगह जो यज्ञ अनुष्ठान आदि करते हैं उन्हीं के समाचार छपा करेंगे।

आचार्यश्री ने कहा, 'उन्हीं के नहीं, उनके भी। दरअसल यह पत्र समाचारों की परिभाषा बदलने के लिए निकाल रहे हैं।'

उनकी बात सुनकर जोशीजी ने अपने आपको संभाला। वे सोच रहे थे कि बातचीत हलके फुलके ढंग की है। आचार्यश्री अखंड ज्योति पत्रिका की सफलता से प्रेरित और आंदोलन को आगे बढ़ाने की मंशा से पत्र निकाल रहे है। उसी सहज भाव से उन्होंने टिप्पणी की थी लेकिन समाचार की परिभाषा बदलने का उत्तर आया तो वे उत्सुकता से आचार्यश्री की ओर देखने लगे। आचार्यश्री ने कहा, आपके अखबारों में कोई मंत्री, राजनेता भाषण देता है, उद्घाटन आदि करता है तो पहले पेज पर बड़े-बड़े शीर्षकों में खबर छपती है। इससे लगता है कि राजनीति सब कुछ है। जबकि समाज को आगे बढ़ाते हैं नैतिक मूल्यों को प्रतिष्ठा देने वाले सच्चे और ईमानदार लोग। वैज्ञानिक जो प्रयोगशालाओं में प्रयोग और अनुसंधान करते हुए मर खप जाते हैं और वे लोग जो शुभ और सौंदर्य के गीत गाते हैं। इन लोगों के लिए कहीं पैरा दो पैरा जगह भी नहीं मिलती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वरिष्ठ पत्रकार ने आचार्यश्री की इस बात को स्वीकारा। कहा कि दुनिया भर में यही चलन है। जो स्वाभाविक है वह समाचार नहीं है, जो विलक्षण और अद्‌भुत है वही समाचार है। इस पर आचार्यश्री का उत्तर था कि आपाधापी और स्वार्थ की घनघोर होड़ वाले इस युग में लोग नैतिक मूल्यों के लिए संघर्ष कर रहे हैं। सचाई और सेवा के लिए वे जान बूझकर कष्टों को आमंत्रित करते हैं तो उनके कार्यों को समाज के सामने क्यों नहीं लाना चाहिए।

जोशीजी ने कहा कि वे लोग स्वयं भी शायद चर्चा में नहीं आना चाहते। यश या प्रचार की कामना से वे लोग त्याग का रास्ता नहीं अपनाते शायद। आचार्यश्री की राय थी कि वे लोग सिर्फ निष्ठा के कारण सेवा, त्याग और समर्पण का मार्ग चुनते हैं। लेकिन उनके काम लोगों के सामने आना चाहिए। इससे सेवा और त्याग का वातावरण बनेगा। सचाई के रास्ते पर चलने की घटनाएं या वृत्तांत पढ़कर दूसरे लोगों को भी ऐसी ही प्रेरणाएं मिलेगी।

उन्होंने उदाहरण दिया कि १९५८ में मथुरा में सहस्त्र कुंडीय गायत्री महायज्ञ हुआ था। उस समय कुछ परिवारों ने मिल कर विवाह में दहेज, जेवर, नेग जोग और भेंट उपहार नहीं लेने का निश्चय किया। उस निश्चय को निभाया और यज्ञीय वातावरण में करीब पचीस विवाह हुए। उन विवाहों के बारे में लोगों को जैसे ही पता चला, कई परिवारों ने अपना कार्यक्रम बदल दिया। जिन परिवारों में देवउठनी एकादशी के बाद विवाह होने वाले थे वे वर वधू को लेकर मथुरा आ गए और यहीं संस्कार करा लिया। इस प्रचलन को लोगों ने सराहा, अपनाया और उसके बाद अब तक छह वर्ष के अंतराल में बिना दान दहेज के सैंकड़ों विवाह हो गए हैं।

जोशीजी ने आचार्यश्री के इस कथन से सहमति जताई कि ब्याह शादियों में होने वाली फिजूलखर्ची लोगों को बेईमान और दरिद्र बनाती है। उनकी राय थी कि राजनैतिक और प्रशासनिक स्तर पर भी इन्हें रोकने के लिए कदम उठाये जा रहे हैं। दावतों पर पाबंदी लगाने की बात चल रही है लेकिन ऐसे प्रयत्न काफी नहीं हैं। लोगों के मन बदलना चाहिए, उनकी बात पूरी करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि हम लोगों का मन बदलने के लिए माहौल बदलने की दिशा में ही छोटा मोटा प्रयास कर रहे हैं। जोशीजी इस संकल्प के साथ मथुरा से दिल्ली लौटे कि वे भी इस तरह की प्रवृत्तियों को अपने पत्र में स्थान देने की कोशिश करेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संवत दो हजार इक्कीस में वैशाख पूर्णिमा से ज्येष्ठ पूर्णिमा तक दस दस दिन के तीन शिविर हुए। परामर्श शिविरों के नाम से हुए इन आयोजनों में रजत जयंती वर्ष के कार्यक्रम तो मुख्य विषय थे। इन्हीं शिविरों में पाक्षिक समाचार पत्र की रूपरेखा बनी। आचार्यश्री ने पत्र के प्रारंभ की घोषणा कर दी। अंतिम शिविर १५ से २४ जून तक हुआ था। गायत्री जयंती के उसी शिविर में पूर्णिमा के दिन साधक व्रज के प्रमुख तीर्थों की यात्रा करने निकले। शिविर से लगभग सवा सौ साधक आए थे। पाक्षिक पत्र की घोषणा के बाद उसे समृद्ध बनाने की योजना भी बनी। समृद्ध बनाने का अर्थ पाठ्य सामग्री का प्रचुर होना। उसके लिए आचार्यश्री ने कहा कि युग निर्माण आंदोलन के कार्यक्रमों को अपनाना, क्रियान्वित करना है। पत्र की सफलता की गारंटी है। हो सकता है आगे चलकर इस तरह के पत्र की आवश्यकता नहीं रह जाए। जगह जगह से निकलने वाले दैनिक, साप्ताहिक और अन्य नियतकालिक पत्र ही हमारा काम करने लगें लेकिन अभी तो इस पाक्षिक को व्यापक और संपन्न बनाने का पुरुषार्थ हमें ही करना है।

चोरी और बंटवारा

शिविर संपन्न होते ही साधक यात्रा पर गए। उन साधकों में एक संन्यासी भी थे स्वामी कृष्णानंद। नौ दिन के अनुष्ठान और जप आदि के आकर्षण में वे तब तपोभूमि आ गए थे। गायत्री परिवार से उनका संगठन या नैष्ठिक संबंध नहीं था। वे यात्रा के लिए तो निकले साथ में ही थे लेकिन वृंदावन या नंदगांव आदि जगह नहीं जाकर यमुना के किनारे ही निकल गये। पगडंडी या सड़क से जाने के बजाय वे खेतों में होते हुए निकले। कुछ दूर निकलने पर उन्होंने देखा कि तीन चार व्यक्ति एक पेड़ के नीचे बर्तन उठा पटक रहे हैं। उठा पटक का तरीका देखकर लगता था जैसे वे बंटवारा कर रहे हों। उनकी गतिविधियों पर गौर करने के लिए स्वामी जी कुछ देर रुके। स्वामी जी को रुका और अपनी ओर देखता हुआ पाकर उन लोगों ने फुर्ती से बर्तन समेटे और उठाकर भागते बने। स्वामीजी को कुछ समझ नहीं आया। वे अपनी धुन में यमुना तट पर चल दिए। किनारे बैठकर उन्होंने ध्यान आदि का अभ्यास किया। काफी देर बैठे रह कर दोपहर बाद तपोभूमि लौटे।

तपोभूमि लौटने पर पता चला कि नवसारी (गुजरात) के एक कार्यकर्त्ता मगन भाई के बर्तन रात को चोरी हो गए। वे शिविर में सपत्नीक आए थे। मंदिर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के पीछे बने कमरों में वे रुके थे। वे अपने साथ स्टील के बर्तनों का सेट लाए थे। उन्हीं बर्तनों में खाना पकाते खाते थे। मगन भाई के हिसाब से कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ था लेकिन चर्चा तो थी ही। कुछ साधकों ने पुलिस में रिपोर्ट कराने की सलाह भी दी थी। वह सलाह मगन भाई के गले नहीं उतरी थी। इस बारे में आचार्यश्री से पहले ही बात हो गई थी। मगन भाई हंस हंस कर बता रहे थे कि माखनचोर की नगरी में यह उन्हीं की लीला है। स्वामी कृष्णानंद को याद आया कि उन्होंने यमुना तट पर जाते हुए कहा कि लोगों को खेत में बर्तन आदि के साथ देखा था। वे स्वामी जी को देखकर भाग गए थे। ये वही चोर थे जिन्होंने मगनभाई के बर्तन आदि चुराए थे।

मगन भाई जब लौट रहे थे तो आचार्यश्री ने उस चोरी का जिक्र नहीं किया। उन्होंने भी चर्चा नहीं छेड़ी। जब वे चले गए तो वहां मौजूद चार छह साधकों के बीच में कहा कि नुक्सान के लिए अपने आपको सांत्वना देना हो तो समझाया जा सकता है कि ज्यादा बड़ी दुर्घटना भी हो सकती थी। हो सकता है कांटे की चुभन से सूली जैसा कर्मफल निपट गया हो। स्वामी कृष्णानंद ने एकांत देखकर आचार्यश्री से कहा कि दीक्षा लेना चाहते हैं। उन्होंने यमुना के तट पर हुए अनुभव के बारे में बताया। वह अनुभव ध्यान दृश्य जैसा था। दिखाई दे रहा था कि महाभारत का युद्ध शुरु होने वाला है। दोनों पक्ष की सेनाएं आमने सामने खड़ी हैं। भगवान कृष्ण अर्जुन के रथ को हांकते हुए दोनों सेनाओं के मध्य में लाकर खड़ा करते हैं और दोनों में संवाद शुरू हो जाता है। यह संवाद गीता के रूप में है। स्वामी जी ने ध्यान दृश्य के बारे में बताया और फिर पूछ लिया कि युद्ध आरंभ होने की घड़ी में क्या इतना समय रहा होगा कि भगवान अठारह अध्यायों में विस्तृत उपदेश दे सकें।

आचार्यश्री ने इस प्रश्न का सीधे उत्तर नहीं दिया। कहा कि तुमने जिस दृश्य को देखा है उसका आनंद लेने तक ही सीमित रखो। अनुभूतियों को तर्क और विश्लेषण से समझने के बजाय संश्लिष्ट रूप में समझो। साधक की भलाई इसी में है। स्वामी कृष्णानंद ने दीक्षा का भी अनुरोध किया था। उसका समाधान भी किया। कहा कि एक गृहस्थ संन्यासी को दीक्षित नहीं कर सकता। अगर युगधर्म का निर्वाह करने की इच्छा है तो कषाय छोड़कर संसार में आओ। संसारी बनकर आसानी से सेवा कर सकोगे।

स्वामी जी ने कहा कि गुरुपूर्णिमा तक इस बारे में फैसला कर लेंगे। उन्हें आचार्यश्री की बताई विधि और साधना परंपरा रास आ रही थी। विदाई के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दिन ही बरसाना से आए एक साधक ने पूछा कि लोग भगवान कृष्ण को रास बिहारी कहते हैं। व्रज में ही नहीं सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में भी उनके रास को लोग प्रेम और विलास के रूप में देखते हैं। क्या यह उचित है कि भगवान को भोगी विलासी माना जाए और उसी रूप में उनका अनुकरण किया जाए। आचार्यश्री ने इस प्रश्न का कोई सैद्धांतिक विश्लेषण नहीं किया। उस साधक को सलाह दी कि रास रचाते कृष्ण और युद्धा के मैदान में खड़े कृष्ण का क्रम से ध्यान करें। सुबह के समय पार्थसारथी के रूप में ध्यान करें तो मर्म समझ में आ जाएगा।

शिक्षण की योजना

आचार्यश्री ने उन दिनों शिक्षण पर जोर देना शुरु कर दिया था। गायत्री जयंती के आसपास तीन कार्यक्रमों की रूपरेखा बनी। उनमें एक थी सोलह सत्रह वर्ष तक के किशोरों को मथुरा बुलाने की अपील। इस उम्र के बच्चों को एक से चार साल तक तपोभूमि में कम से कम एक वर्ष रहने के लिए कहा गया था। जरूरी हो तो आगे भी रहा जाए। वरना इतने समय तक रहना तो अपरिहार्य है। इस अवधि में लोक शिक्षण की कलाओं का अच्छा अभ्यास कर लिया जाए। यह अभ्यास तपोभूमि से जाते हुए क्षेत्र में काम आए।

दूसरी शिक्षण योजना एक महीने की थी। इसमें दंपत्तियों को आमंत्रित किया गया था। आचार्यश्री ने सैकड़ों साधकों को व्यक्तिगत पत्र लिखे। उनसे कहा कि आप अपनी पत्नी समेत मथुरा आकर हमारे पास रहें। इस अवधि में विस्तार से विचार विनिमय करें और भावी जीवन के लिए व्यवस्थित रूपरेखा लेकर जाएं। इस अवधि में व्यावहारिक जीवन में सफलता के सभी गुर समझा दिए जाने थे। महीने में पचास परिवारों को प्रशिक्षित कर सदगृहस्थ बनाने की योजना थी।

दोनों शिक्षण योजनाओं पर काम शुरू हुआ। किशोरों को स्वावलंबी और संस्कारवान बनाने वाले विद्यालय की रूपरेखा तैयार की जा रही थी। आचार्यश्री ने इस प्रयोजन के लिए शिक्षाविदों और छोटे मोटे उद्योग चलाने वालों को आमंत्रित किया था। लोग आते जाते रहते थे। उनसे विचार विमर्श का क्रम चलता रहता।

वृंदावन में प्रेम महाविद्यालय के संस्थापक राजा महेन्द्र प्रताप भी विचार विमर्श के इसी क्रम में आए। पश्चिमी उत्तरप्रदेश के एक राजवंश में जन्मे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

राजा महेन्द्र प्रताप ने १९०८ में अपने सगे संबंधियों और विशिष्ट व्यक्तियों को निमंत्रण पत्र भेजा। निमंत्रण नामकरण संस्कार के लिए था। पत्र में लिखा था कि उनकी संतान का नामकरण होगा। राजा साहब की कोई संतान नहीं थी। जिसने भी निमंत्रण पत्र पढ़ा, वह चौंका। आमंत्रित लोगों में से ज्यादातर आये भी। महामना मदन मोहन मालवीय भी उस आयोजन में आए थे। राजा का निमंत्रण है, यह सोच कर आने वाले अपने साथ नजराना भी लाए थे। नजराने में सोने चांदी के आभूषण और वस्त्र आदि बहुमूल्य वस्तुए थीं।

लोग वृंदावन में जहाँ नामकरण किया जाना था उस जगह पहुँचे तमाम लोग इकट्ठे हो गए तो राजा साहब ने कहा, 'मैं एक विद्यालय आरंभ कर रहा हूँ। वह विद्यालय ही मेरी संतति है। उसी का नामकरण किया जाना था। आज तक अतिथियों ने तरह-तरह के नाम सुझाए। इनमें महामना मालवीय का सुझाया नाम सबको पसंद आया-'प्रेम महाविद्यालय'। यही नाम रखा गया। विधिवत नामकरण संस्कार हुआ।

प्रेम महाविद्यालय में औपचारिक शिक्षा के साथ जीविका उपार्जन के प्रशिक्षण का समावेश भी किया गया। जीविका के लिए किसी की नौकरी के बजाय अपना ही उद्योग व्यवसाय शुरु करने पर जोर था। विद्यार्थियों को लकड़ी, लोहा, बुनाई, गलीचा बनाने और पेंटिंग, चित्रकारी, छपाई आदि काम सिखाये जाते। उनसे किसी तरह की फीस नहीं ली जाती थी। शिक्षकों की नियुक्ति इस बात को ध्यान में रखकर की गई थी कि छात्रों को देशभक्ति की प्रेरणा मिले और वे समाज के निर्माण में भी जुट सके।

वहां रखे गए शिक्षकों ने छात्रों की प्रतिभा और क्षमता को निखारा। स्वयं भी देश की सेवा के लिए बढ़ चढ़कर काम किया। डॉ० संपूर्णानंद जैसे विचारक और प्रशासक तथा आचार्य जुगल किशोर जैसे शिक्षाविदों ने प्रेम महाविद्यालय से ही अपनी सेवा साधना शुरु की थी। महाविद्यालय ने आगे चलकर जो साख बनाई उसके कारण अंग्रेज सरकार इसे अपने लिए खतरे की घंटी समझने लगी थी। उसकी खुफिया रिपोर्टों के अनुसार प्रेम महाविद्यालय क्रांतिकारियों का अड्डा था। यहां अंग्रेज सरकार को उखाड़ फेकने की योजनाएं बनाई जाती थीं। स्थापना के पचास वर्ष बाद तक १९४७ तक प्रेम महाविद्यालय ने देश को कई क्रांतिकारी, उद्यमी और साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक प्रतिभाएं दीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

राजा महेन्द्र प्रताप उस दिन गायत्री तपोभूमि आए। आचार्यश्री ने प्रेम महाविद्यालय में संदेश भिजवाया था कि वे राजा साहब से मिलना चाहते हैं। उद्देश्य गायत्री तपोभूमि में संस्कार और स्वावलंबन सिखाने वाले उपक्रम के लिए विचार विमर्श करना था। संदेश सुन कर राजा साहब स्वयं चले आए। उन्होंने बताया कि किसी धार्मिक संस्थान द्वारा स्वाललंबी देशभक्तों को तैयार करने वाले आरंभ की सूचना ने उन्हें गदगद कर दिया था। अन्यथा उनकी मान्यता थी कि धार्मिक संस्थान अंधविश्वास, कूपमंडूकता और भ्रम जंजालों में ही ज्यादा उलझाते हैं। रचनात्मक प्रेरणा देने वाले बहुत कम या नहीं के बराबर हैं। तपोभूमि आकर उन्होंने आचार्यश्री से विस्तृत परामर्श किया।

राजा साहब का अनुभव था कि आवासीय विद्यालयों में लोग ऐसे बच्चों को भेजते हैं जो उनके काबू में नहीं आते। इसके आगे उनकी राय थी कि ऐसे बच्चे प्रतिभाशाली और ऊर्जावान होते हैं। उन्हें दिशा मिल जाए तो वे कमाल कर सकते हैं। आचार्यश्री की मान्यता थी कि किशोर उम्र के बच्चों को काबू से बाहर नहीं कहना चाहिए। वे नटखट और शरारती हो सकते हैं। यह स्वभाव उनके भीतर बह रही ऊर्जा की ही अभिव्यक्ति है। इसे दिशा देना चाहिए। दोनों में देर तक चर्चा चलती रही। राजा महेन्द्र प्रताप यह कहते हुए उठे कि वे स्वयं कोई नई शुरुआत करने की स्थिति में नहीं है। यहां हो रहे सूत्रपात को पूरा सहयोग देते रहेंगे। इसके लिए जब भी बुलाया जाएगा तपोभूमि आते रहेंगे। अपनी जगह पर रहते हुए तो अपने ढंग से कुछ न कुछ करने ही रहेंगे।

जबलपुर के एक कार्यकर्त्ता दानाभाई मेघजी राठौर उन दिनों गायत्री तपोभूमि में ही थे। राजा साहब के बारे में उन्होंने कुछ बातें सुनी। किसी भी विशिष्ट व्यक्ति के आने पर चर्चाए तो होती ही हैं। दानाभाई ने सुना कि राजा साहब ने प्रेम महाविद्यालय को अपनी संतान की तरह माना था। यह बात कार्यकर्त्ताओं और साधकों से सुनकर रोमांच हुआ। कौतूहल भी लगा। उन्होंने आचार्यश्री से ही पूछ लिया कि क्या सचमुच ऐसा हुआ था। आचार्यश्री ने उस घटना की पुष्टि की। पुष्टि होते ही दानाभाई के मुंह से निकला। आप जो विद्यालय बनाएगें मैं भी उसे अपनी संतान की तरह समझूंगा।

कहते कहते दानाभाई रुक गए। भीतर किसी विचार ने उनकी वाणी को विराम लगा दिया। कुछ देर रुक कर बोले। नहीं गलती हो गई। विद्यालय के जन्मदाता तो आप हैं। वह आपकी संतान है। मैं उसे भाई की तरह मानूंगा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और उसकी देखभाल करूंगा। उसका खर्च हम लोग उठाएंगे। कहते हुए उन्होंने अपनी पत्नी लक्ष्मी बेन की ओर देखा। वहाँ भी सहमति का गदगद भाव था। आचार्यश्री ने कहा कुछ नहीं। दंपत्ति को देखते भर रहे। फिर दानाभाई ने कहा विद्यालय के लिए जो जमीन खरीदना होगी उसका खर्च यह भाई उठाएगा। उसके बाद भी मैं अपने भाई की संभाल में जो करूं, उसे आप रोकना मत।

आचार्यश्री ने दानाभाई की इस बात पर भी कुछ नहीं कहा। माताजी पास ही बैठी थीं। दानाभाई ने उनकी तरफ देखा जैसे पूछ रहे हों कि उनका निवेदन स्वीकार किया गया या नहीं। माताजी ने उनके भाव को समझा और कह दिया कि भाई की तरह खुद ही जिम्मेदारियां ले रहे हों तो हम लोगों को कहने सुनने की क्या जरूरत है। समय पर जो होगा देखा जाएगा। विद्यालय को लेकर तुम्हारे मन में कोई दुविधा नहीं होनी चाहिए।

राष्ट्रीय संकट की वह घड़ी

देश में भीषण अन्न संकट छाया हुआ था। लोग भुखमरी के शिकार हो रहे थे। तत्कालीन प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने आह्वान किया था लोग सप्ताह में एक दिन एकाशन रखें। एक समय ही भोजन करें। उन्होंने स्वयं भी सोमवार को एक समय का उपवास शुरु कर दिया था। सूखा, अकाल और भूख की समस्या से निपटने के लिए और भी कदम उठाए गये थे। देश आंतरिक संकट से जूझ रहा था कि अगस्त १९६५ में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया। पहले तो कोई तीन हजार घुसपैठिए कश्मीर में दबे छुपे आए। उनका उद्देश्य था कश्मीरी लोगों को सरकार के विरुद्ध विद्रोह के लिए उकसाना। कश्मीर के नागरिकों ने उनका साथ नहीं दिया तो सितम्बर में पाकिस्तानी सैनिकों ने आक्रमण कर दिया। भारतीय सेनाओं ने भी मुकाबला किया। चार छह दिन मुकाबला चलता रहा, उसके बाद युद्ध की घोषणा हो गई। लगभग दो सप्ताह तक चले इस युद्ध में पाकिस्तान को बुरी तरह मात खानी पड़ी लेकिन भारत के लिए भी यह लड़ाई कम मंहगी साबित नहीं हुई थी।

नागरिकों की माली हालत अच्छी नहीं थी। अन्न संकट से जूझने के लिए बाहर से सहायता आती थी। वह भी बंद हो गई। युद्ध ने दोनों देशों के सामने तबाही ही छोड़ी थी। उस स्थिति के कारण समर्थ और संपन्न लोगों में परस्पर सहयोग जुटाने का अभियान आचार्यश्री ने छेड़ा। उनने गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं से कहा कि वे राष्ट्रीय सुरक्षा कोष के लिए धन इकट्ठा करने में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जुटें। खुद सप्ताह में एक दिन व्रत करें और उससे होने वाली बचत को राष्ट्रीय कोष में जमा करायें।

युद्ध के दिनों में कार्यकर्त्ताओं ने जहां थे, वहीं सुरक्षा का मोर्चा संभाला। उस समय स्थानीय सुरक्षा और पुलिस कर्मियों को भी सीमा पर भेजने की स्थिति आ गई थी। कई लोग गए भी थे। उनके अलावा नागरिक क्षेत्रों में भी सुरक्षा पर ज्यादा ध्यान देना जरूरी हो गया था। गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं ने इन जरूरी और खाली हुए मोर्चों को संभालने की पहल की। रात को चौकीदारी और दिन में चौकसी करते हुए सन्नद्ध रहे। महानगरों में उन्होंने सामाजिक संस्थाओं, संगठनों के कार्यकर्त्ताओं के साथ मिल कर काम किया। २३ सितम्बर १९६५ को युद्ध विराम हो गया। छिटपुट हमले उसके बाद भी होते रहे। युद्ध समाप्त हो गया तो गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता वापस अपने काम में जुट गए।

युद्ध के दिनों में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघचालक दिल्ली से नागपुर लौट रहे थे। लौटते हुए वे कुछ समय के लिए मथुरा भी रुके। वहां स्वयंसेवकों से उन्होंने गायत्री उपासकों के योगदान का जिक्र किया। कहा कि हमारे स्वयंसेवकों के योगदान पर लोगों ने ध्यान दिया है क्योंकि हम मातृभूमि की उपासना पर ही बल देते हैं। ये साधक अध्यात्म और नवनिर्माण से ही संबंध रखते हैं। इसलिए उनके काम पर ध्यान नहीं दिया। लेकिन हम लोगों को इन साधकों से संपर्क रखना चाहिए। आगे हमारे कार्यक्षेत्र का विस्तार होगा तो यह संपर्क भारत माता की सेवा के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

संघ के एक स्वयंसेवक ने आचार्यश्री के पास आकर एक संदेश भी दिया था। संदेश मौखिक ही था कि गुरुजी उनसे भेंट करना चाहते हैं। उपयुक्त समय और स्थान का चुनाव उनकी सुविधा के अनुसार तय कर लिया जाएगा। इसका निर्धारण आचार्यश्री से ही करने के लिए कहा था। संघ की परंपरा के अनुसार इस तरह के प्रस्ताव लिखित•आते हैं। उन कार्यकर्त्ता ने स्वयं यह बात कही थी लेकिन आचार्यश्री ने इस तरह की औपचारिकता को अनावश्यक बताया। कहा कि गुरुजी जब भी चाहे, यहां आयें। उनका हमेशा स्वागत है। मुझे कहीं आने के लिए कहेंगे तो मैं पहुंच जाऊंगा और कहीं भेंट हुई तो वहां भी मैं उनका सम्मान करूंगा।

स्वामी कृष्णानंद संयोग से उस समय तपोभूमि में ही थे। गुरु गोलवलकर के मथुरा होते हुए निकलने की सूचना उन्हें भी थी। उन्होंने आचार्यश्री से इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बारे में चर्चा की। आचार्यश्री ने पहले कही बात नए सिरे से दोहरा दी। कहा कि गुरु गोलवलकर भी संन्यासी हो गए थे। लंबे समय तक वाराणसी में थे। स्वामी विवेकानंद के गुरुभाई स्वामी अखंडानंद से उन्होंने दीक्षा ली थी। उनके गुरु ने आदेश दिया कि संन्यास का विचार छोड़े और समाज के काम में लग जाओ। प्रसंग बताते हुए आचार्यश्री ने कहा कि आप गुरु गोलवलकर के भक्त रहे हैं। उनसे प्रेरणा क्यों नहीं लेते। इस पर स्वामी कृष्णानंद ने शास्त्र मर्यादा का हवाला दिया। कहा कि आश्रम धर्म में अतिक्रम तो हो सकता है उपक्रम नहीं। ब्रह्मचारी गृहस्थ में जा सकता है लेकिन गृहस्थ वापस पिछले आश्रम में नहीं जा सकता। वानप्रस्थ और संन्यास की भी यही मर्यादा है कि आप पीछे नहीं लौट सकते।

आचार्यश्री ने फिर कहा मध्यकाल में संत ज्ञानेश्वर का कुल और इसी युग में गुरु गोलवलकर हैं। वे संन्यासी बनने गए थे और समाज के साधक बनकर आए। इस चर्चा का तुरंत तो पटाक्षेप हो गया। अगले दिन सुबह स्वामी कृष्णानंद गायत्री मंदिर में संध्या आरती के बाद आचार्यश्री को प्रणाम करने गए। प्रणाम कर उनके सामने खड़े हो गए और कहने लगे गैरिक वस्त्रों से ही लोगों को भ्रम होता है न। मैं इन्हें वेदमाता को समर्पित करूंगा। इनके स्थान पर श्वेत वस्त्र या किसी और वर्ण के वस्त्र पहन लिया करूंगा। इससे ज्यादा उमक्रम आवश्यक नहीं है शायद। अब आप मुझे आज्ञा दें कि मुझे किस साधन भजन में लगना है। आचार्यश्री ने उनसे कहा कि अब तुम लोगों को गीता पढ़ाओ। गीता के माध्यम से स्वधर्म की शिक्षा दो। ऐसे शिक्षक तैयार करो जो गीता के उपदेशों की व्याख्या कर लोगों को धर्ममार्ग पर चलने के लिए कहें।

स्वामी कृष्णानंद को महीनों पहले का वह दृश्य याद आ गया जिसमें उन्होंने आचार्यश्री के सामने भगवद्गीता के उपदेश को लेकर कुछ प्रश्न किए थे। आचार्यश्री ने उन प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया था। सिर्फ ध्यान करने के लिए कहा था। उसके बाद उनके मन में कई प्रसंग उलटने पलटने लगे। प्रसंगों की कड़ियां अब मिलती दिखाई दे रही थीं। इन मिली हुई कड़ियों के बाद वे गीता के शिक्षण शिविरों की रूपरेखा बनाने लगे। मन ही मन निश्चय कर लिया कि परसों आचार्यश्री से-गुरुदेव से इस बारे में विस्तृत चर्चा करेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संक्रमण का दौर

ताशकंद समझौते के तुरंत बाद भारत के प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री का निधन हो गया। युद्ध से मिली विजय के बाद पूरा देश गर्व से फूला नहीं समा रहा था। शास्त्री जी के नहीं रहने के समाचार ने उस विजय बोध को आहत कर दिया। १२ जनवरी १९६६ को लाल बहादुर शास्त्री चिरनिद्रा में दिल्ली लौटे तो जैसे सभी देशवासियों को मृत्यु ने छू लिया था। इसके बाद राजनैतिक माहौल में अनिश्चय, अस्थिरता और असुरक्षा का एक और भयंकर दौर आया। वैसी तरंगे जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु के बाद भी नहीं फैली थी। उस समय देश ने अपने आपको अरक्षित तो नहीं अनुभव किया था। शास्त्रीजी के निधन के बाद वातावरण में असुरक्षा की गंध व्यापने लगी थी।

दस बारह दिन के अनिश्चय, आतंक और असुरक्षा के बाद देश ने नया प्रधानमंत्री चुन लिया। आचार्यश्री ने इस अवधि में एक प्रयोग किया था। उस प्रयोग के अंतर्गत वे आधी रात के बाद से सुबह छह बजे तक अपने साधना कक्ष में होते। माताजी से कह दिया था कि इस अवधि में भूल से भी कक्ष में नहीं आए। माताजी ने यह मान लिया कि शायद कोई गुह्य प्रयोग चल रहा है। सुबह गायत्री तपोभूमि में यज्ञ के समय महामृत्युंजय प्रयोग शुरू किया। गायत्री परिवार के सदस्य युद्ध के समय से ही विशिष्ट साधना प्रयोग कर रहे थे। उन्हें ये प्रयोग वसंत पंचमी तक चलाने के लिए कहा गया था।

१९ जनवरी को नए प्रधानमंत्री का चुनाव हो गया और कार्यवाहक प्रधानमंत्री गुलजारी लाल नंदा ने इंदिरा गांधी को सत्ता सौंपी। उसके बाद नंदाजी के सहयोगी गवली एक बार फिर तपोभूमि आए। उन्होंने दिल्ली में चल रही उठापटक के समाचार सुनाए और कहा कि इंदिराजी को राजनीति के शिखर का कोई अनुभव नहीं है। उन्हें लोगों ने इसलिए चुना है कि उनकी आड़ में अपनी मनमानी करते रहें। आचार्यश्री ने उन्हें इस तरह की टिप्पणी से रोका और कहा कि व्यक्ति हमेशा महत्वपूर्ण नहीं होते। व्यक्तियों का चुनाव होता है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और नियामक शक्तियां ही उन्हें चुनती हैं। वे चुन लेती हैं तो मोहनदास करमचंद गांधी जैसा मामूली सा बैरिस्टर युगनायक बन जाता है। आपको याद होगा कि गांधीजी वकालत की प्रैक्टिस करते थे तो उनके हाथ पांव कांपने लगते थे। महाकाल ने जब उनके हाथों में समय की कमान सौपी तो उन्होंने अंग्रेजी साम्राज्य को कंपकंपी छुड़ा दी।

वह चर्चा देर तक नहीं चली। प्रसंग यूं ही आए गए हो गए। उस वर्ष वसंत पंचमी के दिन आचार्यश्री ने अपने संदेश में कहा कि उनके सार्वजनिक जीवन के पांच वर्ष और बचे हैं। इन पांच वर्षों में नए युग की आधारभूमि तैयार हो जानी है। प्रस्तुत वर्ष के लिए उन्होंने दस कार्यक्रम दिए थे। पांच रचनात्मक और पांच प्रशिक्षणात्मक। रचनात्मक कार्यक्रमों में पहला शक्ति पुरश्चरण अनुष्ठान जारी रखने के लिए था। भारत पाक युद्ध छिड़ने के बाद से ही गायत्री परिवार के साधक नियमित उपासना के साथ पुरश्चरण साधना कर रहे थे। शांतिबीज के साथ हो रहे चौबीस करोड़ गायत्री महामंत्र के जप का प्रत्यक्ष प्रभाव इस रूप में दिखाई दिया था कि साधकों में सामूहिकता के साथ देश में आत्मविश्वास की भावना का भी उदय हुआ था। शरद पूर्णिमा से आरंभ हुए अनुष्ठान की पूर्णाहुति भी शरद पूर्णिमा को होनी थी। युद्ध समाप्त हो गया था, दोनों देशों में समझौता भी हो गया था। आचार्यश्री का कहना था कि संक्रमण का समय अभी चल रहा है। अनुष्ठान पूरा किया जाना चाहिए।

उपासना कुछ समय तक ही की जा सकती है। घंटा आधा घंटा या बहुत हुआ तो दो ढाई घंटे। लेकिन साधना प्रति पल की जानी चाहिए। अंत:क्षेत्र में सतत जागरुकता बनी रहे। इसके लिए प्रात: सायं आत्म निरीक्षण करना था। सुबह उठ कर दिनचर्या का निर्धारण और रात को सोते समय दिन भर किए कामों, आचरण और व्यवहार की समीक्षा।

समाज को संस्कारित करने के लिए एक घंटा समय और एक आना प्रतिदिन लगाने का कार्यक्रम भी इन्हीं दिनों तत्परता से अपना लेने का परामर्श दिया था। दिन भर की समीक्षा के लिए सुबह शाम आत्म-चिंतन और वर्ष भर की आत्मिक प्रगति का लेखा जोखा लेने के लिए जन्मदिन। जन्म दिन मनाने का प्रचलित विधान नाच गाने और पार्टी भोज तक सीमित है। आचार्यश्री ने इसे संस्कार की तरह मनाने की व्यवस्था दी थी। सभी उपासकों को अपना जन्मदिन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मनाने के लिए कहा गया। पांचवां कार्यक्रम अपने संपर्क और प्रभाव क्षेत्र में आने वाले लोगों को नए युग का संदेश देने के संबंध में था।

प्रशिक्षण से संबंधित कार्यक्रमों में युग निर्माण विद्यालय के लिए छात्रों को भेजने, सेवा निवृत्त या प्रौढ़ व्यक्तियों को गायत्री तपोभूमि मे आने और धर्मतंत्र से लोकशिक्षण की कला सीखने का आह्वान था। तीन सप्ताह के एक सान्निध्य शिविर में रहने और साधना अनुष्ठान के लिए गायत्री तपोभूमि में आते रहने का आमंत्रण था।

वसंत पंचमी उस वर्ष २७ जनवरी को थी। देश ने एक दिन पहले ही गणतंत्र दिवस मनाया था और आठ दिन पहले लोकतांत्रिक ढंग से नेतृत्व की समस्या हल कर ली थी। नेहरू के बाद दुनिया भर में लोग उत्सुकता से देख रहे थे कि भारत में लोकतंत्र अब क्या दिशा लेता है। जिन देशों को भारत के भविष्य को लेकर आशंका थी, उनने देखा कि यह देश चार साल के अंदर दो युद्धों से गुजर चुका है। इस अवधि में वह इतना शक्ति संपन्न हो गया है कि आक्रमणकारियों के छक्के छुड़ा सकता है। इस बीच भारतीय नागरिकों के दुलारे नेतृत्व को असमय मृत्यु का वरण करना पड़ा। लोगों ने उन्हें शहीद की तरह देखा। उस विजयी नेतृत्व के विदा होने के बाद फिर देश की बागडोर संभालने वाले हाथों को चुनने की घड़ी आई। यह देखकर दुनिया चमत्कृत हो उठी कि भारत ने नेतृत्व की बागडोर उनचास वर्ष की एक महिला को सौंप दी है। पश्चिमी अखबारों ने उस नेतृत्व को कमजोर, गुड़िया और सिंडीकेट (कांग्रेस के बुजुर्ग नेतृत्व) की कठपुतली कह कर मजाक उड़ाया था। लेकिन भारतीय जनता ने अपने चुनाव पर गर्व अनुभव किया। पश्चिम में ऐसे राजनयिकों की हालांकि कमी नहीं थी जो मान रहे थे कि भारत में लोकतन्त्र की जड़ें गहरी जम चुकी हैं।

आचार्यश्री ने वसंत १९६६ के संदेश में इन परिवर्तनों को रेखांकित किया। कहा कि देश का भविष्य उज्ज्वल है। अभी हमें कई परीक्षाएं देनी पड़ेंगी। लेकिन विश्वास किया जाना चाहिए कि हम उन परीक्षाओं को पार करेंगे। भारत को नए युग का नेतृत्व करना है। उसके विकास को सारी दुनिया देखती रहेगी और उससे प्रकाश ग्रहण करेगीं। इस संदेश का दूसरा पक्ष भी था। उसने गायत्री साधकों को थोड़ा चिंतित किया। उन्होंने गायत्री मंदिर की सीढ़ियो पर बैठ कर कहा था कि अब पांच वर्ष और इधर हैं। पांच वर्ष बाद किसी भी समय सार्वजनिक जीवन से उपरत हो जाएंगे। मथुरा छोड़ देंगे और अन्यत्र चले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जाएंगे। इस संबंध में स्पष्ट नहीं था कि वह कहां होंगे? कार्यकर्त्ताओं ने अटकल ही लगाई थी कि वह क्षेत्र हिमालय ही हो सकता है। हिमालय की बर्फीली चोटियों, हिमगिरि की गुफाओं, उपत्यकाओं या दुर्गम प्रदेश से लेकर उसके आंचलिक क्षेत्रों तक कोई भी जगह हो सकती है।

जिस समय यह घोषणा की जा रही थी, उस समय ताईजी भी वहीं थी। उन्होंने कहा कुछ नहीं। चेहरे पर रोष की रेखा भर उभरी। आचार्यश्री ने अपनी माँ की प्रतिक्रिया को देख लिया था और अखंड ज्योति लौटते हुए रास्ते में कहा भी था कि ताई तुम्हें दिया वचन नहीं तोड़ूंगा। जब तक तुम हो, मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊंगा। ताई जी ने संतोष की सांस लेते हुए कहा था कि अभी तुमने कहा, मथुरा छोड़कर चले जाओगे। जाओगे तो मुझे भी साथ ले जाओगे। अभी तक द्वारकाधीश का आसरा नहीं छोड़ा। आखिरी समय में उनसे अलग होना पड़ेगा क्या? आचार्यश्री ने फिर आश्वस्त किया कि ऐसा कुछ नहीं होगा ताई। अभी बहुत वक्त है। मैं न तुम्हें अकेला छोड़ रहा हूँ और न ही तुमसे द्वारकाधीश छुड़वा रहा हूँ।

माताजी का निश्चय

यह संवाद आरंभ और पूरा होने से पहले माताजी ने तपोभूमि में ही कह दिया था कि आचार्यश्री अज्ञातवास पर जाएंगे। हमें भी मथुरा में नहीं रहना है। वे तपस्या करने जा रहे हैं तो हम भी कहीं गंगा किनारे कुटिया बनाकर रहेंगे। वे वानप्रस्थ आश्रम में जा रहे हैं तो सहधर्मिणी होने के नाते मेरा भी धर्म बनता है कि मैं भी वानप्रस्थ अंगीकार करूं। माताजी ने अनायास ही यह बात कही थी। ऐसा लगा था जैसे कही नहीं किसी आंतरिक उभार से निकली है। माताजी की इस घोषणा या स्फुरणा पर आचार्यश्री ने कोई टिप्पणी नहीं की थी। उनके मौन को माताजी ने सहमति स्वीकृति के रूप में लिया था।

तपोभूमि में आए साधकों ने आचार्यश्री के इस निर्णय को स्तब्ध होकर सुना था। सुनकर उन्हें अच्छा नहीं लगा था। प्रतीत हो रहा था जैसे कोई संरक्षण दूर होने जा रहा हो। कुछ के मुंह से तो नहीं नहीं निकल भी पड़ा था। तीन चार कार्यकर्त्ताओं को हिचकियां लेते हुए रुलाई फूट पड़ी थी। आचार्यश्री ने उन सबको सान्त्वना देते हुए समझाया कि सभी अभिभावकों को किसी न किसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समय विदा लेना ही होता है। हमारी मार्गदर्शक सत्ता विदाई का क्षण आने तक व्यवस्थित काम कराना चाहती है तो उसमें सभी को प्रसन्न होना चाहिए।

सुन कर उन कार्यकर्त्ताओं की रुलाई फूट पड़ी थी। अपने गुरु को देखना, सुनना और अनुभव करना तब सहज संभव नहीं होगा। यह व्यथा उन्हें साल रही थी। आचार्यश्री ने उन्हें फिर समझाया कि यह विछोह जागतिक स्तर पर है। यज्ञ आयोजनों और दूसरे सार्वजनिक कार्यक्रमों में अब की तरह नहीं आ पाने के बावजूद हम लोग एक दूसरे के और ज्यादा निकट अनुभव करेंगे। वहां आये साधकों को इन वेदांती सान्त्वनाओं से संतोष नहीं हो रहा था।

आचार्यश्री ने इस विषय पर ज्यादा कुछ नहीं कहते हुए युग निर्माण आंदोलन की चर्चा छेड़ दी थी। इस विषय पर आचार्यश्री ने निर्णय बदलने या उस पर फिर से विचार करने में अवशता जताई। ऐसी अवशता, जिसमें यह ध्वनित हो रहा था कि निर्णय उनका अपना नहीं है। उनकी मार्गदर्शक सत्ता का है। कुछ साधकों से उन्होंने स्पष्ट कहा भी कि तुम लोगों के लिए यदि कोई व्यवस्था दूं तो उसे मानोगे या अपने स्वजन संबंधियों का मन रखने के लिए उसमें किसी तरह का संशोधन करोगे।

साधकों का उत्तर नकार में ही था। आशय यही था कि गुरु की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करेंगे। इस उत्तर के बाद साधकों को स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं रह गई थी। आचार्यश्री ने उस उत्तर को आगे बढ़ाते हुए कहा, 'मुझे अपने साथ अपने पास रखने की मोह माया छोड़ सकते तो उचित यह होगा कि युग साधकों का एक एक विरवा अपने घर में लगाओ। परिवार के एक सदस्य को महाकाल के काम में नियुक्त करो।

किशोरों के लिए उनका जोर था। पिछले दो वर्ष से बन रही रूपरेखा के अनुसार चार वर्षीय पाठ्यक्रम वाला युग निर्माण विद्यालय शुरु होना था। इसके लिए साधकों ने उत्साह दिखाया था। उस उत्साह का निर्वाह किया जाता तो ज्यादा युवकों को अवसर नहीं मिल पाता। आचार्यश्री ने क्षेत्र के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं को बुलाया और संख्या के साथ स्थिति का तालमेल बिठाने के लिए तीन दिन तक विचार मंथन किया। उस मंथन का सार यह निकला कि किशोरों की प्रतिभा को अंकुरित होने दिया जाए। पल्लवित, पुष्पित करने का दायित्व वह स्वयं उठाये। इस निर्धारण के बाद युग निर्माण विद्यालय का पाठ्यक्रम एक वर्ष निश्चित हो गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पाँच वर्ष बाद आचार्यश्री के चले जाने की बात कानों कान फैल गई। साधकों का मन इस प्रयाण को स्वीकार नहीं कर पा रहा था। अपनी भावनाएँ व्यक्त करते-तर्क देते हुए पत्रों का तांता लग गया था। तपोभूमि आने वाले साधकों की संख्या भी बढ़ गई। आने वाला हर साधक आचार्यश्री की विदाई और उनके बाद अपने संसार की चिंता जताता दिखाई देता था। आने वाले हर साधक को समझना और समझाना एक कठिन कार्य था। यह सिलसिला तीन चार महीने तक वेग से चला। फिर थम सा गया। साधकों ने मान लिया था कि निर्णय में कोई परिवर्तन नहीं होना है। आचार्यश्री का अपना स्वयं का निर्धारण नहीं है। उनकी मार्गदर्शक सत्ता ने ही तय किया है। कोई परिवर्तन होना है तो यह उन्हीं के वश की बात है।

संन्यास की सार्थकता

प्रयाग में कुंभ पर्व संपन्न हो चुका था। उस मेले में भारतीय अनुयायियों को संगठित करने की एक पहल हुई थी। उस पहल के अनुसार भारत में जन्में सभी विश्वासों, परंपराओं और पूजा उपासना पद्धतियों के अनुयायियों के लिए एक सामान्य संबोधन प्रयुक्त किया जाना था 'हिंदू'। यह संबोधन पहले भी प्रचलित था लेकिन पिछली कुछ दशाब्दियों से जैन, बौद्ध, सिख आदि अपने लिए अहिंदू या अल्प संख्यक जैसे शब्द इस्तेमाल करने लगे थे। विचारशील व्यक्तियों, सामाजिक नेताओं और धर्मगुरुओं को यह प्रवृत्ति विघटनकारी लग रही थी। कुंभ से पहले भी विभिन्न नेताओं और आचार्यों ने इस खतरे को अनुभव किया था। निराकरण की दिशा में कुछ उपाय भी सोचे जा रहे थे। इन उपायों में संगठन ही प्रमुख था। संगठन के काम में जुटने के लिए संघ के सरसंघचालक गुरु गोलवलकर पूरी शक्ति से जुटे थे। उन्होंने चारों शंकराचार्यों को, विभिन्न पीठों और संप्रदायों के अधिपतियों, प्रमुखों को एक मंच पर साथ लाने में सफलता प्राप्त कर ली थी।

संगठन की दृष्टि से यह भी एक बड़ी उपलब्धि थी कि अभी तक एक दूसरे के क्षेत्र के नहीं जाने और अपने क्षेत्र में किसी की उपस्थिति सहन नहीं करने वालें आचार्य एक जगह एक मंच पर आ गये थे। गुरु गोलवलकर और सामाजिक काम में लगे कार्यकत्ताओं की इस उपलब्धि पर आश्चर्य भी हो रहा था। आचार्यश्री ने इसे एक उपलब्धि तो माना था लेकिन इसे धर्माचार्यों की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समझदारी या मजबूरी के खाते में दर्ज किया था। गुरु गोलवलकर के प्रतिनिधि उनका निमंत्रण लेकर आचार्यश्री के पास आये थे। उन प्रतिनिधि ने धर्माचार्यों का एक मंच पर आना एक मंजिल की तरह निरुपित किया तो आचार्यश्री ने कहा कि विचार और तर्क के बढ़ते हुए प्रभाव वाले युग में भावुकता को आधार बना कर चल रहे साधु संतों का कोई भविष्य नहीं है। वे एक मंच पर आ रहे है तो यह शुभ है किंतु इससे ज्यादा उत्साहित नहीं होना चाहिए। साधु-संतों को संगठित करना बहुत दुष्कर है।

आचार्यश्री ने गुरु गोलवलकर का निमंत्रण स्वीकार कर लिया। भेंट के लिए वाराणसी का चयन हुआ। गुरु गोलवलकर अगले महीने वहां संघ के किसी कार्यक्रम में आने वाले थे। उन्हीं दिनों गायत्री परिवार भी वहाँ पांच कुंडीय गायत्री महायज्ञ कर रहा था। आचार्यश्री को उस आयोजन में जाना था। इस बीच गायत्री तपोभूमि में एक साधना शिविर संपन्न हो रहा था। शिविर में अठ्ठाइस साधक आये। इसे मात्र एक संयोग ही मानें कि अठ्ठाइस साधकों में से नौ संन्यासी थे। संन्यासियों को दीक्षा देने में आचार्यश्री संकोच करते थे। उनके संकोच का आधार यही था कि गृहस्थ को संन्यासी का अनुयायी होना चाहिए न कि संन्यासी को गृहस्थ का। दीक्षा के लिए आने वाले संन्यासियों का आग्रह होता था कि ऋषि गृहस्थ ही होते थे लेकिन उनका स्थान संन्यासी से ऊपर है। ऋषि व्यवस्था और परंपरा के नियामक है। इसलिए वे सभी आचार्यों के लिए वंदनीय है। इस शिविर में जब नौ संन्यासी एक साथ आ गये और दीक्षा का आग्रह करने लगे तब भी इसी तरह की चर्चा होने लगी।

आचार्यश्री ने संन्यासी साधकों से यह कहते हुए बात समाप्त कर दी कि हम कोई नया साधना संप्रदाय नहीं बना रहे। यज्ञोपवीत संस्कार के माध्यम से लोगों को सिर्फ गायत्री उपासना की प्रेरणा भर दे रहे है। आप भी चाहते है तो उपवीत पहनें और प्रात: सायं दोनों समय संध्या उपासना करे। आचार्यश्री ने अपनी बात को यहाँ विराम दिया और कुछ क्षण बाद फिर बोले 'लेकिन ध्यान रहे। संन्यास की दीक्षा लेते समय आप लोग यज्ञोपवीत का त्याग कर देते हैं। उसे दोबारा धारण करने में अवक्रम दोष लगेगा तो क्या करेंगे?'

स्वामी जगदीश्वरानंद नामक संन्यासी ने कहा कि आप हमारे मार्ग दर्शक हैं। हमें व्यर्थ न डराइये आपने अब से पहले भी किसी संन्यासी को कषाय छोड़ने और समाज का काम करने के लिए कहा है। तब आपको इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दोष का ध्यान नहीं आया था। हमें ही क्यों डरा रहे हैं? वहाँ आये अन्य संन्यासियों ने भी उत्थान पतन और अवरोध सहयोग आदि का विचार किये बिना साधना मार्ग पर चलते रहने की उत्कंठा जताई। आचार्यश्री ने यज्ञशाला में बिठा कर उनका गायत्री संस्कार कराया और दक्षिणा के तौर पर कहा कि अपनी साधना स्थली में एक-एक विद्यालय चलाएं। इस दक्षिणा के लिए प्रेरित करते हुए उन्होंने स्वामी केशवानंद का उदाहरण दिया था। राजस्थान में स्वामी केशवानंद ने हजारों बच्चों और युवकों को शिक्षित बनने का अवसर उपलब्ध कराया था। अगर स्वामी केशवानंद नहीं होते तो शायद ये युवक या बच्चे पढ़ लिख नहीं पाते।

संगरिया में विश्वविद्यालय स्तर का संस्थान ग्रामोत्थान विद्यापीठ उनके साधु पुरुषार्थ की ही देन है। स्वामी केशवानंद आचार्यश्री से प्रायः मिलते रहते थे। उनके काम और शैली को देखकर गद्‌गद होते रहे आचार्यश्री ने कई अवसरों पर उनका उल्लेख आदर और स्तुत्य भाव से किया। स्वामीजी दरअसल संन्यासी बने ही शिक्षा पाने और शिक्षा का प्रचार करने के लिए थे। शेखावाटी (राजस्थान) के पास एक छोटे से गाँव में जन्में स्वामी सहजानंद शिक्षा की खोज करते हुए फजिल्का में संत कुशलदास के आश्रम में आ गये। उद्देश्य विद्या अध्ययन करना था। विद्या के प्रति अनुराग ने उन्हें संन्यासी बनने के लिए प्रेरित किया तो उन्होंने वह भी स्वीकार कर लिया। गुरु ने उन्हें हरिद्वार की एक संस्कृत पाठशाला में भेज दिया। वहाँ पढ़ने की व्यवस्था कर दी।

साधु जीवन अंगीकार करने बाद उन्होंने फजिल्का के पास अबोहर कस्बे में एक छोटा सा पुस्तकालय शुरु किया। यह उनके शिक्षा अभियान का आरंभ था। पुस्तकालय से कक्षाएं, कक्षाओं से पाठशाला और पाठशाला से विद्यापीठ का विस्तार कुछ इस तरह हुआ कि वह केंद्र भारत भर के विचारकों, मनीषियों और नेताओं के आकर्षण का केन्द्र बन गया उसके विकास के लिए हर तरफ से सहयोग की उमंगें उमड़ने लगी। संगरिया में कुछ युवकों ने अपने गाँव में शिक्षा प्रचार के लिए एक छोटी-मोटी शुरुआत की थी। वह शुरुआत लड़खड़ाती हुई कुछ बढ़ी और मुंह के बल औंधी गिरने लगी तो स्वामी केशवानंद ने उसे संभाला और कुछ ही वर्षों में संगरिया के आस-पास का आठ सौ वर्गमील इलाका विद्यालयों, पाठशालाओं और स्वावलंबी केंद्रों से पट गया।

आचार्यश्री ने शिविर में आये संन्यासी साधकों को स्वामी केशवानंद की कार्य पद्धति के बारे में कितनी ही अनूठी बातें बताई। कहा कि आप अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्षेत्र में जाएं तो वहाँ भी इसी तरह के विद्याविस्तार के कार्यक्रम चलाना चाहिए। शिविर संपन्न हुआ। करीब दो सप्ताह बाद वाराणसी में गायत्री महायज्ञ होना था। आचार्यश्री वहाँ जाने से पहले तपोभूमि के कार्यकर्त्ताओं से कह रहे थे विद्या का विस्तार दो तरह से करना है। इन दो उपायों में शिक्षा और सद्ज्ञान दोनों समाहित हों। शिक्षा का अर्थ है लोग पढ़ना लिखना जानें। सद्ज्ञान अर्थात विद्या विवेक सीखें। यह प्रसार शिक्षित और साक्षर लोगों में ही किया जा सकता है। जो लोग विद्यालय आदि चला सकें, वे यह काम करें। इस तरह के कार्यों में अपने आपको खपा देने की स्थिति कम ही लोगों की होगी। यह काम साधु संन्यासियों को सौंपा जाएगा। वे लोगों से साधन सहयोग जुटा सकते है। दूसरी तरह का काम कोई भी लगनशील व्यक्ति कर सकता है। उसके लिए साधनों की उतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी लगन की। कपड़े के एक झोले में प्रेरक पुस्तकें रखकर यह काम किया जाता रह सकता है।

धर्मगुरुओं का संगठन

वाराणसी में महायज्ञ के अवसर पर आचार्यश्री और गुरु गोलवलकर की भेंट हुई। भेंट किसी सार्वजनिक स्थान पर न हो कर एक कार्यकर्त्ता के निवास पर हुई थी। सार्वजनिक स्थान पर उद्बोधन व्याख्यान आदि तो संभव थे लेकिन चर्चा या परामर्श के लिए एकांत ही उपयुक्त लगा सो गोदोलिया भवन के पास एक निजी भवन उपयुक्त समझा गया। आचार्यश्री और गायत्री परिवार के संबंध में गुरु गोलवलकर की मान्यता थी कि यहाँ प्राचीन और आधुनिक का संगम हो रहा है। परंपरा भी है और विवेक भी। वहां क्रांतिकारिता का दिखाऊ आवेश नहीं है और परंपरा के प्रति अंधभक्ति भी नहीं। इसलिए आचार्यश्री को धर्मक्षेत्र में पहल करनी चाहिए। वह भेंट कोई चालीस मिनट तक चली होगी। आचार्यश्री की राय थी कि करीब पचास लाख साधु-संत रचनात्मक कार्यों में लगें तो देश समाज की बड़ी सेवा हो सकती है। उन्हें संगठित करना बड़ा काम नहीं है। निहित स्वार्थ उन्हें सहज ही संगठित कर सकते है। असल बात उन्हें दिशा देने की है। बिना संगठित किये भी उन्हें रचनात्मक कार्यों में प्रयुक्त किया जा सकता है।

आचार्यश्री का कहना था कि अतीत में भी साधु संतों या धर्मक्षेत्र में काम कर रहे असंसारी लोगों को संगठित करने के प्रयत्न हुए है। उन प्रयत्नों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनुभव अच्छे नहीं रहे। बौद्धकाल में, उसके बाद शंकराचार्य के समय में दशनामी संप्रदाय, अखाड़े, मठ आदि कुछ ही समय तक ठीक ठाक काम कर पाये हैं। कुछ वर्षों में वे बिखर गये और उन बिखरे हुए लोगों में जो भी कोई समाज के जिस किसी भी क्षेत्र में गया, वहाँ अनर्थ मचाने लगा। आचार्यश्री ने अपनी बात के जो तथ्य और प्रमाण दिये थे, उन्हें सुन कर गुरुजी देखते रह गये। आचार्यश्री ने फिर कहा आपने साधु संतों को संगठित करने का बीड़ा उठाया है। आपका उद्देश्य अच्छा है। ईश्वर आपको सफल करे। जहाँ तक हम लोगों के उस संगठन से जुड़ने की बात है, उसके लिए थोड़ा संकोच है।

गुरु गोलवलकर आचार्यश्री को ध्यान से सुन रहे थे। उन्होंने संकोच का कारण पूछा नहीं। आचार्यश्री कह रहे थे कि हम लोग आत्म-परिष्कार और समाज साधना का समन्वित मार्ग अपनाये हुए है। कार्य-पद्धति में अध्यात्म और उपासना प्रधान इसलिए संगठित होना आवश्यक नहीं है। कठोर अनुशासन और विधि निषेध वाला संगठन साधक को कमजोर कर देगा इसलिए हमने 'गायत्री परिवार' जैसा उदार और लचीला नाम चुना है। परिवार की धारणा ही साधकों में सामंजस्य बनाये रह सकती है। यह मैं मानता हूँ कि राजनैतिक या सामाजिक लक्ष्य सामने हों तो एक अच्छा संगठन होना आवश्यक है।

आचार्यश्री की इन बातों को ध्यान से सुनते हुए गुरुजी बीच-बीच में अपनी सम्मति भी व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने कुछ पूछा भी। एक अवसर पर उन्होंने कहा कि साधु संतों को संगठित करना कठिन क्यों है? आप इसका आध्यात्मिक कारण बताइए। आचार्यश्री ने कहा, 'बहुत सरल सी बात है। संन्यास का मार्ग मोक्ष का मार्ग है। मोक्ष का अर्थ है हर तरह के बंधन अनुशासन और दायित्व से ऊपर उठ जाना। मुक्त होने की कामना से जो यात्रा आरंभ की गई है वह किसी संगठन के विधि निषेधों से कैसे रह सकती है। साधु-संतों और संन्यासियों के कोई भी संगठन इसीलिए सफल नहीं होते देखे गये।'

'व्यावहारिक कारण संसार से ऊपर उठने, मुक्त होने या उसे मार्गदर्शन देने वाला विशिष्टता का बोध है। संन्यास के साथ साधना यदि निरंतर नहीं चली हो तो विशिष्टता का यह बोध दर्प ओर अभिमान को जन्म देता है। उस कारण भी संन्यासी किसी संगठन अनुशासन में कम ही आते है।' आचार्यश्री ने इस विषय की दोनों स्तरों पर चर्चा की थी। गुरु गोलवलकर भी इन निष्कर्षों से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सहमत थे। लेकिन उनका कहना था कि फिर भी प्रयत्न तो करना ही चाहिए। साधु संन्यासी संगठित होकर समाज और संस्कृति की रक्षा करें, उसे बढ़ाये तो परिणाम शुभ ही होंगे।

गुरु गोलवलकर की इस आशा को आचार्यश्री शुभ मानते थे। गायत्री परिवार के ऐसे किसी प्रयास से जुड़ने के प्रस्ताव पर उन्होंने फिर भी संकोच किया। कहा कि उस मंच पर लब्ध प्रतिष्ठित संत महात्मा हैं। हम गृहस्थों को उस मंडली में बैठते हुए अच्छा नहीं लगेगा। हम लोग उनका, गुरुजनों की तरह आदर करते है फिर उन महान गुरुओं को भी हमें स्वीकार करने में संकोच ही होगा। गुरु गोलवलकर ने बाद में एकाध बार और अपनी बात पर जोर दिया। फिर उन्हें लगा कि आचार्यश्री का संकोच उचित है। साधु-संतो के रचनात्मक कार्यों में लगने की बात भी उन्हें अच्छी लगी। आचार्यश्री ने गुरु जी को पिछले नवरात्रि शिविर में नौ संन्यासियों के शिक्षा अभियान में जुटने की बात बताई थी। गुरुजी ने कहा था कि इस काम में लगी विभूतियां छात्रों को अपने धर्म, संस्कृति और परंपरा का बोध कराती चले तो अच्छा है। गुरु गोलवलकर ने चलते-चलते कहा कि धर्म तंत्र को सक्रिय और जीवंत बनाने के लिए आवश्यक सहयोग देते रहे हैं। इस तरह का सहयोग गायत्री परिवार की सीमा से बाहर भी दिया जा सकता है।

गायत्री तपोभूमि में युग निर्माण विद्यालय शुरु होने से कुछ ही महीने बाकी थे। करीब चालीस छात्रों ने आवेदन किये थे। पहले सत्र में पच्चीस को बुलाने का निश्चय किया गया। आचार्यश्री का कहना था कि यह प्रारंभ है। कुछ नये प्रयोग भी करना पड़ सकते है। इस लिए छात्रों की संख्या सीमित ही रहे तो अच्छा है। उन दिनों पंडित लीलापत शर्मा गायत्री तपोभूमि आने जाने लगे थे। उनका और दूसरे कार्यकर्त्ताओं का मन था कि आरंभ जोरशोर से हो। आचार्यश्री के निर्देश को ही विधान मानने वाले कार्यकर्त्ताओं की राय में जोरशोर से शुरु करने का कोई औचित्य नहीं था। अगर यह आवश्यक होता तो आचार्यश्री ने पहले ही इसकी घोषणा कर दी होती। व्यवस्था भी बनाते। धूमधाम से शुरू करने वालों के मन में इससे विराम लगा। युग निर्माण विद्यालय की व्यवस्था संभालने के लिए आचार्यश्री ने मध्यप्रदेश से वीरेश्वर उपाध्याय को पहले ही बुला लिया था। वे विद्यालय का पाठ्यक्रम बनाने और उसके सुचारु संचालन के लिए अनुभवी लोगों का सहयोग अर्जित करने में लग गये थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आश्विन नवरात्रि शिविर संपन्न होने के बाद लीलापत शर्मा मथुरा आने का मन बनाने लगे थे। पांच, छः वर्ष से तपोभूमि आते रहे पंडित जी ने विनोबा भावे के कार्यक्रम में आर्ष वाङ्मय का प्रचार करने, उन्हें वेदों का सैट भेंट करने और उत्तर प्रदेश के राज्यपाल विश्वनाथ दास को युग निर्माण मिशन का परिचय देने, उन्हें गायत्री परिवार के कार्यक्रमों में लाने के प्रयास वे मथुरा आने से पहले कर चुके थे। भरतपुर (राजस्थान) में जन्मे लीलापतजी बचपन से ही माता-पिता की छत्रछाया से वंचित हो गए थे। माताजी का सान्निध्य मिलने के बाद उन्हें प्रतीत हुआ कि मां का वात्सल्य क्या होता है? उस प्रतीति के बाद मथुरा में ही रह जाने का संकल्प दिनोदिन प्रबल होता गया और वह संकल्प १९६७ में तपोभूमि आकर बस जाने के रूप में पूरा हुआ।

गोरक्षा और राजनीति

शरद पूर्णिमा १९६६ से शुरू हुआ गायत्री महापुरश्चरण सफलतापूर्वक चल रहा था। यह अनुष्ठान गोरक्षा के लिए था। उन दिनों विभिन्न धार्मिक और सामाजिक संगठन गोवध बंदी के लिए सामूहिक आंदोलन चला रहे थे। राजनैतिक दल भी इस अभियान में शामिल हो गए थे। राजनीति के संबंध में आचार्यश्री की दृष्टि पहले ही स्पष्ट थी। वे इस या उस दल के पक्ष में दिखाई देने के स्थान पर नैतिक मूल्यों से प्रतिबद्ध होना ज्यादा श्रेयस्कर मानते थे। इसलिए उन्होंने आंदोलन में संगठन या गायत्री परिवार की कोई भूमिका निश्चित नहीं की। गायत्री परिवार के साधकों से कहा कि आंदोलन, धरना, प्रदर्शन आदि में वे चाहें तो भाग लें चाहें न लें और उन्हें उचित लगे तो भले ही इसका विरोध करें।

आध्यात्मिक स्तर पर उन्होंने गोरक्षा के लिए 'श्री' बीज मंत्र युक्त गायत्री महापुरश्चरण की व्यवस्था दी थी। २४ करोड़ मंत्र जप का यह अनुष्ठान हर महीने संपन्न हो रहा था। गोरक्षा आंदोलन में गायत्री परिवार के सदस्य अपनी समझ के अनुसार सत्याग्रह में शामिल हुए थे। ऐसे कार्यकर्त्ताओं की संख्या एक हजार के आसपास थी। ऐसे सदस्य भी थे जो आंदोलन की पद्धति और दिखावों के विरोधी थे। लेकिन गोरक्षा के लिए चल रहे मासिक महापुरश्चरण में वे कार्यकर्त्ता भी सम्मिलित हुए थे।

परिवार के सदस्यों ने साधना सहकार के अलावा पांच सूत्री कार्यक्रम भी शुरु किया था। इसके अंतर्गत वे लोगों से चमड़े की बनी हुई वस्तुओं का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रयोग नहीं करने का संकल्प करा रहे थे। बेल्ट, होलडाल, सूट केश और चमड़े के बने जूते चप्पलों का त्याग इस व्रत मर्यादा में आता था। लोगों से संकल्प कराये जा रहे थे कि वे सिर्फ गाय के दूध और उससे बनी खाद्य वस्तुओं का सेवन ही करेंगे। भैंस या बकरी के दूध को उपयोग में न लाकर गाय के दूध से बना दही, घी, छाछ, खोया और पनीर ही उपयोग करने वालों की संख्या बढ़ रही थी। गोपालन, गाय के दूध से बनी खाद्य सामग्रियों का व्यापार और बूढ़ी, मरियल, बीमार गायों की देखभाल के प्रबंध में सहयोग संचित करने का आंदोलन अलग चल रहा था। गोरक्षा महाभियान जैसे व्यापक और सर्वदलीय आंदोलन की तुलना में यह अभियान बहुत सामान्य ही था। समाचार माध्यमों में इसकी चर्चा लगभग नहीं होती थी।

वह चुनाव वर्ष भी था। राजनीति के आकाश में अनिश्चय और अस्थिरता के बादल मंडरा रहे थे। नेहरू और शास्त्री के बाद कांग्रेस की स्थिति कमजोर हो गई थी। जनसंघ, स्वतंत्र, समाजवादी और साम्यवादी पार्टियां अपने अपने गढ़ बना रही थीं। उस अस्थिरता और अविश्वास के वातावरण में गायत्री परिवार के सदस्य यह भी पूछ रहे थे कि किस पार्टी को वोट दें। आचार्यश्री ने विभिन्न मंचों और अवसरों पर स्पष्ट किया कि सभी राजनैतिक दल लोकतंत्र में विश्वास रखते हैं, इसलिए नाम और विचारधारा के कारण इस या उस का समर्थन विरोध नहीं किया जा सकता। राजनैतिक दल अपने आपमें अच्छे बुरे नहीं है। वोट देने के लिए पार्टी नहीं प्रत्याशी को परखना चाहिए। उन्होंने कहा कि वोट देते समय प्रत्याशी में चरित्र, निष्ठा और विचारशीलता को परखना चाहिए। जिनका चरित्र और दृष्टिकोंण हेय निंदित है, उन्हें वोट नहीं दें।

यह मार्गदर्शन पत्रिका के पन्नों, पत्रों, निजी चर्चाओं और शिविरों सम्मेलनों में दिया गया। कितने लोगों ने इस कसौटी को आधार बना कर वोट दिया इसका कोई हिसाब नहीं है। एक उपलब्धि चुनाव के बाद सामने आई। चुनाव होने के लगभग दो महीने बाद राजधानी दिल्ली में बीस जन प्रतिनिधियों ने एक बैठक की। इसमें सांसद और विधायक, पार्षद सभी श्रेणी के जन प्रतिनिधियों ने तय किया कि चुनाव का खर्च प्रकाशित करेंगे। चुनाव का खर्च लोगों को बताने के साथ अपनी आर्थिक स्थिति का खुलासा भी करेंगे। जन प्रतिनिधि होने के नाते लोगों के सामने अपनी हैसियत और आचरण पारदर्शी होना चाहिए। इस पहल के पीछे स्वयं को प्रामाणिक सिद्ध करने की मंशा छुपी हुई थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बैठक संपन्न होने के बाद राजस्थान के एक जनप्रतिनिधि हरिमोहन शर्मा आचार्यश्री के पास गये थे। उन्होंने जनप्रतिनिधियों के लिए अलग से शिविर लगाने का अनुरोध किया था। आचार्यश्री ने इस पहल को बढ़ावा नहीं दिया। कहा कि अंत:करण का निर्मल और आस्थावान होना पर्याप्त है। भीतर आत्मा का प्रकाश फैला रहे तो बाहर से अनुशासन लादना आवश्यक नहीं है।

हरिमोहन शर्मा ने फिर अनुरोध किया तो आचार्यश्री ने कहा कि जन प्रतिनिधि साधना, स्वाध्याय के लिए किसी भी शिविर में आ सकते हैं। उपवास, भूमिशयन, अपनी सेवायें स्वयं करने आदि के अनुष्ठान अनुशासन वे भी मानें। स्वयं को विशिष्ट नहीं समझें। सामान्य साधकों की तरह रहें। हरि मोहन शर्मा ने दिल्ली और वहां से जयपुर लौटकर अपने साथी जन प्रतिनिधियों को यह संदेश दिया। उसके बाद जन प्रतिनिधियों ने साधना शिविरों में आना शुरू किया।

युग निर्माण विद्यालय

यह विवरण प्रसंगवश ही आया है अन्यथा हम युग निर्माण विद्यालय की बात कर रहे थे। विद्यालय शुरु हुआ तो उसमें पचीस छात्रों को अनुमति दी गई। आये सिर्फ अठारह ही। उन विद्यार्थियों को आचार्यश्री ने स्वयं कलावा बांधा। माताजी ने रोली, तिलक लगाकर अभिवादन किया। पहले दिन उन्हें समझाया गया कि प्रेस, रेडियो और दूसरे लघु उद्योग सिखाने के लिए यहां अलग-अलग अध्यापक होंगे। साधना उपासना और संस्कृति की कक्षायें स्वयं आचार्यश्री लेंगे। विद्यार्थियों की उम्र १७-१८ वर्ष तक थी। उन्होंने कौतूहल भाव से ये निर्देश सुने। कुछ ने असुविधा भी महसूस की कि सुबह चार बजे उठना पड़ेगा। स्नान आदि से निवृत्त होकर आरती, उपासना और यज्ञ में जाना पड़ेगा। इस असुविधा को समझते हुए आचार्यश्री ने स्वगत ही समझाया कि जीवन शैली में यह बदलाव तुम लोगों के भीतर एक नये व्यक्तित्व को जन्म देगा। हो सकता है पूरे वर्ष इस व्यवस्था से सामंजस्य नहीं बिठा पाओ। लेकिन यहां की शिक्षा पूरी करने के बाद जब अपने घर जाओगे तो अनुभव करोगे कि आसपास का समाज तुम्हारे व्यक्तित्व के प्रकाश से पूरित हो रहा है। पड़ौसी कहेंगे कि हम भी अपने बच्चों को मथुरा भेजेंगे।

आचार्यश्री के इस संदेश ने विद्यार्थियों की पीड़ा को दिशा दी। वे स्वयं को आश्वस्त अनुभव करने लगे और उस पंद्रह दिन में नई दिनचर्या का उन्हें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अभ्यास हो गया। आत्म विकास की कक्षायें प्राय: आचार्यश्री ही लेते थे। बीच-बीच मे जहां तहां यज्ञ आयोजन होते थे। उन आयोजनों में जाने के बाद आचार्यश्री जितने दिन मथुरा में रहते, विद्यार्थियों में पूरी रुचि लेते थे। विद्यार्थियों से कह दिया था कि वे अपनी डायरी लिखा करें। जब भी समय मिले आचार्यश्री को वह दे दिया करें। डायरी आचार्यश्री स्वयं पढ़ेंगे और उसके अनुरूप मार्गदर्शन देंगे। उनकी अनुपस्थिति में डायरी माताजी को भी दी जा सकती है। यह क्रम चल पड़ने के बाद विद्यार्थियों को आचार्यश्री के बाहर जाने का आभास नहीं होता था। लगता था कि डायरी के रूप में गुरुदेव स्वयं सामने हैं और वे उनके सामने अपना मन खोल रहे हैं। गुरुदेव उनका अंतस और बाह्य पढ़ रहे हैं। विद्यार्थी पर दृष्टि रख रहे हैं। यह अनुभूति विद्यार्थियों को रोमांचित करती थी। कुछ ने इस तरह की अनुभूतियां डायरी में भी अंकित कीं। आचार्यश्री ने इस तरह की अभिव्यक्तियों को निरुत्साहित किया। डायरी में सिर्फ उस तिथि की घटनाएं और मन में होने वाली प्रतिक्रिया ही लिखने के लिए कहा।

अज्ञातवास से वापस आये पांच वर्ष बीत रहे थे। पांच साल का समय और शेष था। सन् १९६७ में आचार्यश्री ने शेष अवधि के लिए जो काम चुने थे, उनके लिए सिर्फ चार वर्ष ही बाकी थे। कुछ काम तो शुरू भी किए जा चुके थे। यज्ञ आंदोलन इनमें मुख्य था। दस वर्ष की अवधि के उत्तरार्ध में एक हजार कुंडों के यज्ञ हर साल करने का निश्चय हुआ था। यह संख्या अलग अलग जगहों पर यज्ञ के रूप में पूरी होनी थी। विभाजन की दृष्टि से तय किया गया था कि दो सौ जगह पांच पांच कुंडीय गायत्री महायज्ञ प्रतिवर्ष किए जाएं। आयोजनों में यथासंभव आचार्यश्री जाएं। जहां कार्यकर्त्ता पहले से सक्रिय हैं, गायत्री परिवार का आधार बन चुका है और साधकों की संख्या सैकड़ों में है या जिन स्थानों पर आसपास के लोग भी आसानी से आ सकते हैं वहां आचार्यश्री जाये। नई जगहों पर या जहां आचार्यश्री पहले जाते रहे थे, वहां गायत्री तपोभूमि के प्रतिनिधियों को भेजा जाय।

पिछले वर्षों में आचार्यश्री बीसियों आयोजनों में गये होंगे। यह अवधि छह वर्ष के आसपास बैठती है। लेकिन अगले चार वर्ष की यज्ञ शृंखला बहुत व्यवस्थित थी। आचार्यश्री प्राय: रेलगाड़ी से यात्रा करते थे। रेलगाड़ी से यात्रा का एक उद्देश्य लोगों को समझना और उनसे संवाद करना भी था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उनका वेश विन्यास देखकर कई बार लोग चकरा जाते थे। आचार्यश्री जिस स्थान पर जाते, यज्ञ सम्मेलन में ऋत्विज, पुरोहित और भजनोपदेशकों की टोली दो एक दिन पहले ही पहुँच जाती। आचार्यश्री के साथ जाने वालों में पंडित नीलकंठ शास्त्री, रमेशचंद्र शुक्ला, स्वामी प्रेमानंद और लीलापत शर्मा आदि हुआ करते थे। इनमें लीलापतजी को छोड़कर प्राय: सभी दाढ़ी मूंछ और जटाजूट रखने वाले होते थे। कुछ अपरिचित या कम परिचित स्थानों पर लोग आचार्यश्री को सामान्य कार्यकर्त्ता और तिलकधारी या साथ यात्रा कर रहे पुरोहित उपदेशकों को आचार्यश्री समझ बैठते। ऐसे समय में उत्पन्न हुई दुविधा का निराकरण थोड़ी देर बाद हो जाता। लेकिन तब तक अच्छी रोचक स्थिति बन जाती।

कुण्डलिनी जगा दो

पटना में हुए यज्ञ में पंडित रमेशचंद्र शुक्ल पहले पहुंचे थे। हृष्टपुष्ट शरीर के शुक्ला जी व्यक्तित्व से किसी संत महंत जैसे दिखाई देते। उन दिनों अखंड ज्योति में कुंडलिनी और योग विद्या पर लेख छप रहे थे। इन लेखों को पढ़ कर साधकों को सहज ही उत्कंठा होने लगती कि उन पंक्तियों के लेखक को अपना मार्गदर्शक चुना जाए। पटना के शासकीय महाविद्यालय में अध्यापन कर रहे एक साधक विद्वान को पता चला कि पंचकुंडीय महायज्ञ में आचार्यश्री आये हुए हैं तो वे दौड़ कर यज्ञ स्थल पर पहुँचे। उस समय आचार्यश्री कुछ कार्यकर्त्ताओं से बात कर रहे थे। पास ही शुक्ला जी यज्ञ की व्यवस्था का निरीक्षण कर रहे थे। प्राध्यापक ने उन्हें देखा तो दौड़कर पकड़ लिया और कहने लगे कि मुझे अपने साथ तपोभूमि ले चलिए। मैं वहां कुंडलिनी जागरण की साधना करूंगा।

शुक्लाजी उन्हें बताने लगे कि आचार्यजी मैं नहीं, वे हैं। वे हमारे गुरुदेव हैं। कहते हुए वे आचार्यश्री की ओर संकेत कर रहे थे लेकिन वे सज्जन मानने को तैयार ही नहीं थे। उन्हें बहुतेरा समझाया पर वे आचार्यश्री को अनदेखा ही करते रहे। यज्ञ स्थल पर साधकों की संख्या बढ़ने लगी। आने वाले साधक आचार्यश्री को प्रणाम करते रहे। तब उन सज्जन को बोध हुआ कि इस अभियान के सूत्र संचालक वही हैं। उन्होंने अपनी भूल सुधारी और आचार्यश्री को प्रणाम करते हुए उन्हें आत्मनिवेदन किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तिनसुकिया (असम) में हुए महायज्ञ और सम्मेलन में आचार्यश्री के साथ गये कार्यकर्त्ताओं को अनूठे अनुभव हुए। मथुरा से तिनसुकिया जाने के लिए तब सत्तर घंटे से ज्यादा समय लगता था। लंबी यात्रा में आचार्यश्री अपने साथ सूखा भोजन रख लिया करते थे। बीच में कहीं कोई विराम या कार्यक्रम होतो तो भले ही अलग बात होती अन्यथा चना चबैना किस्म का वह सूखा भोजन ही पर्याप्त होता। कई बार ऐसा भी होता कि रास्ते में गायत्री परिवार के साधकों को खबर मिलती। वे अपने गुरुदेव के लिए भोजन बना कर लाते। आचार्यश्री उस भोजन निवेदन में से दो एक कौर चखते। कभी कभार पूरा टिफन भी रख लेते। यह साधकों के आग्रह और साथ चल रहे लोगों की आवश्यकता पर निर्भर होता। ऐसे अवसर भी आये जब एक स्टेशन पर पांच सात साधक भोजन बना कर लाते। आचार्यश्री को सबका मन रखना होता। साथ ही अपने स्वास्थ्य और शरीर स्थिति का भी ध्यान रखना पड़ता।

निवेदन और लोकाचार की दृष्टि से साथ चलने वाले कार्यकर्त्ता आचार्यश्री के व्यवहार को देखकर शबरी प्रसंग की याद करने लगते थे। गुजरात में आणंद जिले के एक गांव में एक गृहिणी आचार्यश्री को अपने यहां आया देख भाव विभोर हो उठी। इतनी भाव विभोर कि वह दूध गरम कर लाई और उसमें चीनी की जगह नमक डाल दिया। आचार्यश्री ने वह दूध सहज भाव से पी लिया। साथ आये कार्यकर्त्ता उस दूध का एक घूंट लेते ही मुंह बनाने लगे थे। उन्हें मुंह बनाता देख आचार्यश्री ने इशारे से रोका। कार्यकर्त्ता उस संकेत को नहीं समझ पाये और दूध छोड़ दिया। उस गृहिणी ने कारण पूछा तो असलियत बताई। अपनी भूल पर वह ग्लानि से भर उठी। आचार्यश्री ने कहा मेरा दूध तो ठीक था। हो सकता है इनके दूध में गड़बड़ हो गई हो। कोई बात नहीं। उस गृहिणी की ग्लानि दूर करने के लिए आचार्यश्री ने भोजन तैयार करने के लिए कहा। कहने लगे कि तेज भूख लग रही है। जल्दी खाना बनाओ।

आयोजनों में यदा कदा व्यावहारिक समस्याएँ भी आतीं। इनमें कुछ का संबंध अपने समय की मूढ़ मान्यताओं और अंधविश्वासों से होता था। मध्यप्रदेश में अछनेरा गांव की घटना है। जानकी नामक एक कार्यकर्त्ता वहां झोला पुस्तकालय चलाती थी। दस बारह लोगों को प्रतिदिन पुस्तकें देती, पढ़ने का अनुरोध करती और पढ़ लेने के बाद वापस लेने भी जाती। उस गांव में यज्ञ सम्मेलन हुआ तो परिजनों के साथ महिलाएं भी आईं। आचार्यश्री जहां ठहरे थे,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वहां लोग इकट्ठे हुए। इनमें महिलाएं भी थी। किसी उत्सव में सम्मिलित होने की तरह सज धज कर आई इन महिलाओं में जानकी भी थी। उसने कोई साज सिंगार नहीं कर रखा था। उसके वेशविन्यास में सादगी नहीं उसकी उदासी झलक रही थी।

आचार्यश्री ने जानकी की ओर देखा और उसके चेहरे पर छाई उदासी को पकड़ा। उसे समझने के लिए दूसरी तीसरी और चौथी बार उसे देखा। इस देखने में जानकी की नजरें दो बार आचार्यश्री की नजरों से मिलीं। नजरें मिलते ही लगा कि वह अब रो उठेगी। आखिर आचार्यश्री ने पूछ ही लिया कि बेटी क्या समस्या है। जानकी सकुचाई। कुछ देर तक चुप रही। आचार्यश्री अपनी जगह से उठकर उसके पास गये और सिर पर हाथ रखकर पूछने लगे। कहा, 'तू मेरी बेटी है। बेटी अपने पिता से दुख दर्द नहीं कहेगी तो किसे कहेगी।'

जानकी ने सिर ऊपर उठाया और मूक निवेदन सा किया कि इन लोगों के सामने नही कह सकती। आचार्यश्री ने अलग ले जाकर उससे पूछा। जानकी अपनी व्यथा रोक नहीं पाई। फूटफूट कर रोने लगी। बचपन में ही उसका विवाह हो गया था। पति उम्र में करीब बीस साल बड़ा था। उस समय उसका निधन हो गया। जानकी के साथ जब वैधव्य घटा तो उसकी उम्र सत्रह अठारह साल थी। तबसे अब तक करीब बीस साल से वह अपनी बूढ़ी मां के साथ रहती आई थी।

गायत्री साहित्य बांटने के लिए वह घर घर जाती। अधिकांश घरों की महिलाएं उसका अपने यहां आना पसंद नहीं करतीं। कुछ तो उसे तत्काल ही विधवा, अशगुन, कलमुंही आदि कह कर अपमानित कर देते। उसने घर घर जाकर ज्ञानयज्ञ अभियान बंद कर दिया। उसने निवास पर ही पुस्तकालय बना लिया। इसके बाद चुनिंदा घरों में जाने लगी, जहां उस पर आक्षेप नहीं किये जाते। उन घरों में पुस्तकें देती, पढ़ाती और चर्चा करती। सामान्य घरेलू महिलाओं को यह भी सहन नहीं हुआ। उसकी निंदा भर्त्सना फिर भी करती रहीं।

जानकी तू पवित्र

जानकी अपनी व्यथा कहे जा रही थी। इतना सुन चुकने के बाद आचार्यश्री ने सारा माजरा समझ लिया और वहीं कहने लगे तू तो जानकी है बेटी। सीता माता की तरह पवित्र है। और मैं वेदशास्त्रों की बात कहता हूं तू गंगा जैसा पवित्र जीवन जीती है, श्रम करती है, लोकहित के लिए तपती है। जो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महिलाएं तुझ पर आक्षेप लगाती हैं, तेरा मुंह नहीं देखना चाहती वे अभागी हैं। वे गृहस्थी में हैं। इसलिए उनके जीवन में फिर भी वासना है। तू तो संयमी है, सदाचारी है। तेरी बराबरी कौन कर सकता है। इसके बाद आचार्यश्री जानकी को पीड़ित करने वाली महिलाओं को दुत्कारते, फटकारते हुए कमरे से बाहर आ गये। बाहर आकर उन्होंने आगंतुकों को भी फटकारा, जो वर्षों से यह सब चुपचाप देख रहे थे। जानकी उस एक विद्यालय में अध्यापन करती थी। आचार्यश्री ने कहा अब तुम कहीं नौकरी करने के बजाय स्वयं विद्यालय चलाने की योजना बनाओ। उसमें गरीबों के बच्चों को पढ़ाओ। शुरुआत करो। पांच बच्चों से ही शुरु करो। भगवान साधन सहयोग जुटा देंगे। वहां आये कार्यकर्त्ताओं ने अपनी भूल सुधारने के तौर पर विद्यालय के लिए साधन जुटाने का संकल्प लिया।

कच्छ (गुजरात) में आचार्यश्री ने लगभग इसी तेवर में एक कार्यकर्त्ता को फटकारा था। कार्यकर्त्ता का अपराध यह था कि उसने अतिथि के स्नानघर में रखीं तीन बाल्टियों का पानी खर्च कर दिया था। दो बाल्टियां अपने नहाने में खर्च कर दीं और एक से कपड़े धो लिए। घर के लोगों ने स्नानघर में बाल्टियां खाली देखी तो परेशान हुए। आपस में एक दूसरे को डांटने डपटने लगे। इससे आवाज बाहर तक गई और उन कार्यकर्त्ता ने अपनी बात आचार्यश्री से चुपचाप कह दी। इस गलती के लिए आचार्यश्री ने प्रायश्चित सुझाया कि गांव के लोग जिस कुंए से पानी लेकर आते हैं, वहां से पानी खीच कर लाएं। इस प्रायश्चित के बारे में घर के लोगों को पता चला तो वे अपनी गलती मानने लगे कि हमने शोर गुल क्यों मचाया? आचार्यश्री ने उस प्रायश्चित को तो स्थगित कर दिया लेकिन यह प्रतिज्ञा करवा ली कि भविष्य में पानी का उपयोग संभल कर ही किया जाएगा।

यज्ञ आयोजनों में इस तरह की सैकड़ों घटनाएं हैं। उनका संदेश यही है कि लोकसेवी को अपने इष्ट आराध्य की तरह ही रहना चाहिए। लोकसेवी का इष्ट आराध्य लोक है और समाज में गरीबी, अभाव, दैन्य है। हम दीन हीन तो नहीं दिखाई दें लेकिन सादगी को अपनी जीवन शैली बनायें। कई अवसरों पर उन्होंने कहा कि सादगी सबसे बढ़िया फैशन है। इस व्रत को सावधानी से निभाया जाए तो कार्यकर्त्ताओं की बात जन समाज ध्यान से सुनेगा। न केवल सुनेगा बल्कि उस पर आचरण भी करेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अभिनिष्क्रमण

तीन चार यज्ञ सम्मेलनों के बाद आचार्यश्री एक बार मथुरा आ जाते थे। आठ दस दिन मथुरा रहने के बाद वापस क्षेत्र में चल रहे आयोजनों में चले जाते। १९६७ से १९७० तक औसत यही क्रम रहा। वर्ष में चालीस से पचास यज्ञ आयोजन हुए। जितने आयोजनों में वे जा पाए, उनसे कई गुना ज्यादा कार्यक्रम हुए। साधकों की हर जगह आकांक्षा रहती कि आचार्यश्री उनके यहां भी आयें। यह व्यावहारिक नहीं था इसलिए कई बार जिला या संभागीय स्तर के कार्यक्रमों में ही कार्यकर्त्ताओं को बुला लेने की व्यवस्था बनाई। वहां हुई गोष्ठियों और निजी चर्चाओं में साधना और आंदोलन की जरूरतों पर विचार किया। जहां कोई समस्या होती थी वहां समाधान किया। निजी मुलाकातों या दर्शन प्रणाम के लिए आने वाले व्यक्तियों में ज्यादातर निजी समस्याएं लेकर आते थे। आचार्यश्री उन्हें ढाढ़स बंधाते या अपनी शुभ सामर्थ्य से उसका समाधान सुझाते। बहुतों का अनुभव था कि आचार्यश्री ने एक बार उनकी समस्या हल हो जाने की बात कह दी तो समाधान वास्तव में निकल आता। इस तरह के अनुभवों या संस्मरणों की संख्या गिनती से परे है। उनका उल्लेख यहां नहीं किया जा रहा।

यज्ञ सम्मेलनों में ही इस तरह लाभान्वित हुए साधक आचार्यश्री को अपने अनुभव बताते। उन्हें धन्यवाद देते और कोई काम बताने के लिए कहते। ऐसे अवसरों पर आचार्यश्री का उत्तर होता कि मेरा नहीं भगवान का काम करो। भगवान का काम यह है कि जगत में इन दिनों परिवर्तन की जो बयार बह रही है, अपने आपको उसके हवाले छोड़ दो। हो सके तो उस हवा में आ रही गंध को और जगह भी फैलने दो। यज्ञ सम्मेलनों से होते हुए वे जब मथुरा आते तो यहां भी उनका संदेश यही होता था। अनुदान या आध्यात्मिक सहायता लेने आये व्यक्तियों की ओर से उन दिनों जब प्रतिदान का प्रस्ताव आता तो आचार्यश्री महाकाल का निमित्त बनने के लिए ही कहते। इससे ज्यादा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुछ नहीं। यह प्रतिदान समय, साधन और जीवन किसी भी रूप में हो सकता था। यह व्यक्ति की स्थिति और आकांक्षा पर निर्भर रहता। इस रीतिनीति के चलते क्षेत्र में सैकड़ों कार्यकर्त्ता उभरने लगे थे। कुछ दिन में एक घंटा समय देते, कुछ महीने में एक दिन, सप्ताह में एक दिन और छुट्टी के तमाम दिन देने वाले कार्यकर्त्ताओं की संख्या भी काफी हो गई थी। कुछ लोग तो तीन चार महीने भी युग निर्माण के काम में लगाने के लिए उद्यत दिखाई दे रहे थे।

क्षेत्र में आई चहल पहल का परिणाम था कि गायत्री तपोभूमि में लोगों का आना जाना बढ़ गया था। प्रतिदिन प्राय: चालीस पचास लोग वहां आते और ठहरते थे। कार्यकर्त्ताओं के साथ उनके भोजन की व्यवस्था भी अखंड ज्योति स्थित आचार्यश्री के निवास पर ही की जाती। व्यवहार में उस जगह को 'माताजी का घर' या 'माताजी के यहां' या 'माताजी के पास' जैसे आत्मीय संबोधनों से याद किया जाता। भोजन सामान्य ही होता। रोटी, चावल, दाल और सब्जी के साथ आंवले की या किसी औषधि से बनी चटनी होती थी। तीज त्यौहार के दिनों में पूरी, कचौड़ी, खीर, चावल और साग सब्जी जैसे व्यंजन होते थे। उस दिन शाम को खिचड़ी या दलिया जैसा हलका फुलका भोजन होता। रसोई में सहयोग प्रेमवती बहन और उनकी सहयोगी बहनें देती। प्रेमवती सन् १९६० से माताजी से जुड़ी हुई थीं।

अज्ञातवास से लौटने के बाद आचार्यश्री के आसपास पशुपक्षियों ने मंडराना शुरु किया था। वह क्रम अब भी जारी था। १९६७ के आसपास चूहे, गिलहरी, कबूतर आदि के साथ बंदर भी माताजी के भोजनालय मे आने लगे थे। उनके लिए रोटी, सब्जी, दाल आदि अलग से रख दी जाती। कभी कभार बंदर ज्यादा उत्पात मचाने लगते थे। आचार्यश्री भोजनालय के आसपास होते तो उनमें से कुछेक को अपने हाथ से रोटी खिला देते। ज्यादा उत्पात मचाने पर वे छड़ी भी दिखा देते। आचार्यश्री की छड़ी देखकर वे खिखियाते हुए भाग जाते। बंदर कभी जिद में आ जाते और छड़ी दिखाने पर भी नहीं जाते। माताजी उनसे मजाक करती। कहती, 'अपने सेनापति की बात भी नहीं मानोगे क्या? खाओ पिओ ओर इन बच्चों को चैन से भोजन करने दो।' मजाक में ऐसे अवसर दो चार बार ही आये। लेकिन माताजी ने जब भी बंदरों को मीठी झिड़की दी, वे जिद छोड़ कर चले गये।

रसोई में ईंधन के लिए लकड़ियों का इस्तेमाल होता था। गैस या बिजली से जलने वाले चूल्हों की तब सुविधा नहीं थी। कई बार गीली लकड़ियां

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आ जातीं। उन्हें जलाने पर धुंआ ज्यादा होता था। तपोभूमि के कार्यकर्त्ताओं ने यह देखा तो चिंतित हुए। किसी ने सुझाव दिया कि जहां से लकड़ियाँ आई हैं, उस व्यक्ति को तलाशा और डांटा, डपटा जाए। उसे गीली लकड़ियाँ उठाकर ले जाने और बदले में सूखी लकड़ियां डाल जाने के लिए कहा जाए। भोजन कर रहे केशवदेव उपाध्याय को इससे भी आसान उपाय सूझा। उन्होंने कहा कि लकड़ियां तो बदल ही लें। साथ ही एक काम और भी करें। तपोभूमि में लकड़ियों का बहुत काम चल रहा है। वहां काफी बुरादा इधर उधर फैला रहता है। यहां लाकर रख लें ताकि माताजी को परेशानी न हो। व्यवस्थापक को क्या एतराज हो सकता था? उन्होंने कहा कि चार पांच बोरियां भर कर ले आना चाहिए। बल्कि जितना भी बुरादा वहां अभी तक इकट्ठा हुआ है, सभी यहां ले आया जाए।

अगले दिन लकड़ियां भी बदल गईं थीं और तपोभूमि से बुरादा भी आ गया । उस दिन चूल्हा जलाया तो लकड़ियां आसानी से जल उठीं। संयोग की बात कि उसी दिन शाम को आचार्यश्री की निगाह बुरादे परपड़ी। देखते ही बोले कि यह बुरादा कहां से आया है? माताजी ने तपोभूमि और वहां के कार्यकर्त्ताओं के बारे में बता दिया। आचार्यश्री ने पूछा कि कुछ दिया भी है या यों ही मुफ्त में आ गया। माताजी ने कहा, 'कुछ दिया तो नहीं है। इस बारे में बात करने का मौका नहीं मिला।' आचार्यश्री सुनकर उस समय तो चुप रह गए। अगले दिन सुबह तपोभूमि गये तो केशवदेव को परामर्श में बुलाया और जेब से दो रुपये निकाल कर दिये। कहा कि माताजी के नाम से रसीद बनाकर दे देना। यह उस बुरादे की कीमत है, जो तुमने अखंड ज्योति में पहुंचाया है।

सुनकर केशवदेव अवाक रह गये। वहां मौजूद और साधकों को समझ नहीं आया कि मामला क्या है? आचार्यश्री ने कहा, 'जब भी कोई चीज यहां से अखंड ज्योति (घर) ले जाओ तो मुफ्त में मत रख आया करो।'

भोज भंडारों पर प्रतिबंध

१९६७ से ६९ तक के वर्ष भीषण अकाल के दिन थे। देश में अनाज की कमी पिछले सालों से चली आ रही थी। वह इन दिनों और बढ़ी। लाल बहादुर शास्त्री के जमाने में लोगों ने एक दिन का उपवास शुरु किया था। वह बाद के वर्षों में भी चलता रहा। अन्न समस्या का यह क्षणिक और आंशिक समाधान था। विदेशों से काफी मात्रा में दान और उधारी में अनाज आ रहा था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसके वितरण के बावजूद अन्न संकट की विभीषिका कम नहीं हुई थी। आचार्यश्री ने इस संकट के चलते हुए महायज्ञ सम्मेलनों के समय भोज भंडारों पर प्रतिबंध लगा दिया। यह मर्यादा भी निश्चित कर दी कि आयोजन कम से कम खर्च में हों। कितना ही जनसहयोग एकत्रित हो जाए, उसका नियोजन मितव्ययता से ही किया जाए। आयोजनों के संबंध में नीति स्पष्ट कर दी थी कि हमारा उद्देश्य देवशक्तियों का आराधन करना है। वैभव का प्रदर्शन करना नहीं है।

यज्ञ सम्मेलनों के लिए जो अनुशासन नियत किए गये थे, उनमें एक मर्यादा यह भी थी कि आयोजन की किसी भी व्यवस्था भाग पर किया जा रहा खर्च अग्निहोत्र कर्म के खर्च से ज्यादा नहीं होना चाहिए। यज्ञ कुंड बनाने, उनमें आहुतियों के लिए हवन सामग्री, घी और पूजा सामग्री के अलावा पुरोहितों के मार्गव्यय तथा नैमित्तिक दक्षिणा पर जितना खर्च आये, वह तमाम खर्चों के लिए लक्ष्मण रेखा रहे। सजावट, भोजन, मंच, प्रदर्शनी और सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि तमाम खर्च अग्निहोत्र के व्यय से ज्यादा नहीं होना चाहिए। इस मर्यादा पर निगरानी रखने के लिए आचार्यश्री ने यज्ञों के आय व्यय का हिसाब और आयोजन से पहले उसका बजट मंगाना भी शुरु कर दिया था।

पटना में हुए गायत्री महायज्ञ में आचार्यश्री को लगा था कि वहां सीमा से ज्यादा खर्च हो रहा है। कार्यकर्त्ताओं ने शोभा यात्रा और उसके मार्ग से लेकर यज्ञशाला को सजाने में काफी खर्च किया था। आयोजन का स्वरूप ही बता रहा था कि खासा ठाटबाट रचा गया है। तपोभूमि से केन्द्रीय प्रतिनिधि के नाते रमेश चंद्र शुक्ला वहां कुछ समय पहले पहुंचे थे। आचार्यश्री ने पहले तो उनकी खिंचाई की, 'यहां आते ही कार्यक्रम के स्वरूप और स्तर पर ध्यान देना था। यहां के कार्यकर्त्ता नहीं मान रहे थे तो मथुरा खबर की होती।' फिर उन्होंने स्थानीय कार्यकर्त्ताओं को आड़े हाथों लिया। बिहार में अकाल के कारण बुरी हालत है। यहीं के लोग सादगी का ध्यान नहीं रखेंगे, अपने लोगों का दुख दर्द नहीं समझेंगे तो दूसरे इलाकों या बाहर देशों से क्या उम्मीद की जा सकती है। कार्यकर्त्ता गोष्ठी में उन्होंने कई बार इस बात को दोहराया।

कार्यकर्त्ताओं का तर्क था कि एक सौ एक कुंडीय महायज्ञ हो। स्वरूप की दृष्टि से यह कार्यक्रम विशाल है। उसकी गरिमा को ध्यान में रखते हुए आयोजन का वैभव बनाया गया। आचार्यश्री ने कहा कि संकट के समय भगवान को पुकारना पड़े तो वैभव दिखाने या उत्सव मनाने की चिंता नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करना चाहिए। उन्होंने कहा कि वैभव और सज्जा के बिना यदि कोई आयोजन नहीं हो सकता है, तो उसे नहीं करना ही अच्छा। आचार्यश्री कार्यकर्त्ताओं को डपट रहे थे तो उनके सामने चुप रहने के सिवाय कोई चारा नहीं था। वे अपनी गलती स्वीकार कर रहे थे लेकिन आचार्यश्री को इतने से ही संतोष नहीं था। उन्होंने व्यवस्था दी कि फिजूलखर्ची के लिए जो लोग जिम्मेदार हैं, वे भविष्य में इतनी ही बचत करके दिखाएं। इसके लिए अपनी आवश्यकताओं में कटौती करें। उन गोष्ठियों में लगभग चालीस कार्यकर्त्ताओं ने आगामी बारह वर्ष तक एकादशी का उपवास और रविवार को एकाशन व्रत रखने का संकल्प लिया।

संकल्प लेते समय आचार्यश्री ने विनोद में कहा कि इन उपवासों से तुम्हारी आत्मिक स्थिति उन्नत होगी, ऐसा मत समझना। उपवास सिर्फ उस विक्षेप को दूर करने के लिए है जो अपव्यय के प्रमाद के कारण चढ़ गया था।

ग्वालियर यज्ञ में भी एक बार इसी तरह की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। लेकिन वहां ज्यादा डांट डपट की नौबत नहीं आई थी। कार्यकर्त्ताओं ने तुरंत अपनी त्रुटि स्वीकार ली थी और उसके परिमार्जन का उपाय भी पूछ लिया था। आचार्यश्री ने कहा था कि 'इष्टापूर्ति' एक शास्त्रीय विधान है। इस विधान के अनुसार क्षति की पूर्ति कर ली जाए तो प्रायश्चित हो जाता है। उस आयोजन में ग्वालियार की राजमाता विजयराजे सिंधिया भी आईं थीं। अन्न संकट और दूसरी राष्ट्रीय समस्याओं पर दोनों में देर तक विचार विमर्श हुआ था। राजमाता ने अनुरोध किया था कि इन समस्याओं के संबंध में आचार्यश्री सामूहिक उद्‌बोधन के समय भी कुछ कहें। त्राहि-त्राहि कर रहे लोगों को ढाढ़स मिलेगा।

आचार्यश्री ने कहा कि इस संबंध में वे अपनी कलम से भी लोगों को आश्वस्त करते रहे हैं। जब जैसी स्थिति होती है, उसके अनुसार नागरिकों और साधकों से संवाद रखते हैं। राजमाता ने सुझाव देने से पहले स्वयं उस संकट के बारे में पूछा था। उनकी मूल चिंता भुखमरी, सूखा, अकाल जैसी प्राकृतिक विपदा थी और राजनैतिक अस्थिरता भी।

आचार्यश्री ने कहा था कि शासकों की इच्छा शक्ति और रचनात्मक प्रयासों से इन समस्याओं के समाधान होंगे। विदेशी सहायता, उपवास और धीरज उस समस्या को सहने के उपाय हैं। समाधान अधिक अन्न उपजाने और समृद्धि बढ़ाने से होगा। सरकारी स्तर पर इन दिनों कुछ पहल हुई है। वह पहल लोगों के कर्म से ही परिणाम तक पहुंचेगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

राजमाता ने कहा था कि कहीं ऐसा तो नहीं कि पहल अपने परिणाम तक पहुंच ही न पाये। वर्तमान शासकों में तो वैसी इच्छाशक्ति दिखाई नहीं देती। राजमाता अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाई थीं कि आचार्यश्री ने बीच में ही टोका, 'परिणाम किसी के किये या चाहने से नहीं आएंगे। परिवर्तन महाकाल की इच्छा है। वह तो होगा ही। कोई चाहे या नहीं चाहे भारत को भविष्य का मार्गदर्शन करना है। इसके लिए यहां शक्ति भी आएगी और समृद्धि भी।' राजमाता उस कार्यक्रम में आठ नौ वर्ष की एक कन्या को लेकर आईं थी। प्राथमिक विद्यालय में पढ़ रही वह लड़की गीता, रामायण और आध्यात्मिक विषयों पर धारा प्रवाह प्रवचन देती थी। लोग उसे सुनने के लिए दूर दूर से आते थे।

पूर्व जन्म के संस्कार

राजमाता सिंधिया ने उस कन्या की सहायता की थी। आशा व्यक्त की थी कि भविष्य में यह लड़की भगिनी निवेदिता और एनी बीसेंट की तरह भारतीय धर्म संस्कृति का संदेश दुनिया भर में पहुंचा सकती है। आचार्यश्री राजमाता की आशा और उत्साह को ध्यान से सुन रहे थे। वे कहे चली जा रहीं थीं। उस कन्या की पारिवारिक पृष्ठभूमि, बाल सुलभ स्वभाव, खेलने कूदने ध्यान में डूब जाने और अपने इष्ट का जोर जोर से स्मरण। यह सब मुग्ध भाव से बताते हुए राजमाता ने दो तीन बार आचार्यश्री की प्रतिक्रिया पूछी। उन्होंने यकायक कुछ नहीं कहा। राजमाता ने बार-बार अनुरोध किया तो कहा कि इस तरह की प्रतिभाएं पूर्व जन्मों के संस्कार से ही जागती हैं। कोई आवश्यक नहीं है कि वे आगे भी स्थिर रहें। इन प्रतिभाओं को बनाये रखने के लिए निरंतर साधना जरूरी है। साधना नहीं की गई तो प्रतिभा स्खलित भी हो सकती है। साधक की मेधा, कला, साहित्य, राजनीति आदि किसी भी दिशा में जा सकती है।

आचार्यश्री के इस उत्तर को राजमाता ने ध्यान से सुना। कहा भी कि वे इस लड़की के आत्मिक विकास या पिछले जन्मों के संस्कारों को अक्षुण्ण रखने की व्यवस्था करेंगी। उन्हें लग रहा था कि कन्या पिछले जन्म में उनकी पुत्री रही थी। आचार्यश्री ने उन्हें आश्वस्त किया था कि इस तरह के संस्कार किसी पुण्य का उदय होने पर ही जागते हैं। इसका अर्थ है कि साधक ने पिछले जीवन में भारी तप किया है। वह उस तप को आगे बढ़ाये तो इस जीवन में और विकास कर सकता है। आचार्यश्री ने कहा कि अच्छा किया कि इस कन्या को आपने पहचान लिया और आश्रय दे दिया। बहुत सी प्रतिभाएं तो अंधेरे में ही खोई रह जाती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युग निर्माण विद्यालय व्यवस्थित ढंग से चलने लगा था। तीस से चालीस विद्यार्थियों को प्रवेश मिलता। उनमें कुछ नटखट स्वभाव के भी होते। कुछ बच्चों की शरारत से खिन्न होकर एक दिन किसी कार्यकर्ता ने कहा कि लगता है माता पिता से संभलते नहीं हैं, इसलिए वे कुछ महीनों तक छुटकारा पाने के लिए बच्चों को यहां भेज देते हैं। आचार्यश्री तक यह टिप्पणी पहुंची। उन्होंने कार्यकर्ता को बुलाया और उसे डपटा कि बच्चे नहीं तो क्या बूढ़े शरारती और नटखट होंगे। भगवान भी बचपन से नटखटपन करते हुए ही अच्छे लगते हैं। हमने यह विद्यालय ऊर्जावान बच्चों को दिशा देने के लिए शुरू किया है।

विद्यालय के पाठ्यक्रम को आचार्यश्री ने संजीवनी विद्या कहा था। संजीवनी विद्या अर्थात जीवन जीने की कला। व्यक्तित्व के विकास और जीवन समाज में आने वाली समस्याओं के समाधान सिखाने वाले सान्निध्य के साथ छात्रों को आर्थिक स्वाललंबन की राह भी दिखाई जा रही थी। आर्थिक स्वावलंबन के लिए प्रेस व्यवसाय, बिजली, विज्ञान के आवश्यक विषय, रेडियो, ट्रांजिस्टरों की मरम्मत, उन्हें बनाना, घड़ी साजी, साबुन बनाना, मोजे, स्वेटर बनियान आदि की मशीनों से बुनाई, प्लास्टिक के फाउंटेन पेन, पेंसिलें, बटन आदि बनाने के ढेरों काम स्वावलंबन पाठ्यक्रम में शामिल किये थे। आचार्यश्री की दृष्टि थी कि सन् १९७१ तक युग निर्माण विद्यालय में कम से कम दो सौ युवक प्रशिक्षित हो जायें। इस संख्या को वे अपने सामने, अपने हाथों से लगाई पौध के रूप में देख रहे थे। इस शिक्षा पर आचार्यश्री ने बहुत जोर दिया था। उनका कहना था कि युवकों या किशोरों को अपनी पढ़ाई रोकना पड़े तो एक वर्ष के लिए स्थगित कर दें। यह मान लें कि एक बार फेल हो गये हैं। उस कारण साल भर की पढ़ाई हर्ज हो गई है। एक साल खराब होता दिखाई दे तो होने दें, लेकिन युग निर्माण विद्यालय में कम से कम एक वर्ष जरूर बितायें।

युग निर्माण विद्यालय में किशोरों और युवकों को आमंत्रित करते हुए भी आचार्यश्री अपने शेष कार्यकाल की बात याद दिलाते थे। उनके उद्‌बोधनों में बाकी दिनों के कार्यक्रम और आगे की तैयारियों का उल्लेख अवश्य होता था। अज्ञातवास के दिन जैसे-तैसे करीब आते जा रहे थे, कार्यकर्त्ताओं और परिवार के लोगों में वैसे वैसे बेचैनी बढ़ रही थी।

माताजी के मन में भी विचार आता था कि आचार्यश्री के बाद क्या होगा? पल भर के लिए यह विचार आता और फिर तिरोहित हो जाता। मन में उदित हो रही यह आस्था उन चिंताओं को काट फेंक देती थी जो अपने गायत्री

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परिवार के बच्चों के और तपोभूमि के बारे में उठती थीं। आचार्यश्री के अपने लौकिक परिवार में अभी बहुत सी जिम्मेदारियां बाकी थीं। ताई जी उन के बारे मे अक्सर कहती रहती थीं। सतीश (मृत्यंजय शर्मा) के कामकाज की अभी कुछ व्यवस्था नहीं बनी थी। बचपन में हुई दुर्घटना के बाद उनके हाथ की अंगुलियां गलत जुड़ गई थीं। हाथ किसी तरह कामचलाऊ स्थिति में आया था। शैलबाला ने इंटर की पढ़ाई शुरु की थी। उस समय उनकी आयु पंद्रह वर्ष रही होगी।

ताईजी अक्सर चर्चा छेड़ देतीं। घर के लोग भी, खास कर सगे संबंधी उनके पारिवारिक दायित्व की याद दिलाते। कहते इन दोनों बच्चों को व्यवस्थित जमा जाओ। फिर आराम से अपने गुरु के पास चले जाना। आचार्यश्री इन सलाहों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं करते। कभी कभार हंस कर रह जाते। माताजी ने एकाध बार चर्चा छेड़ी तो आचार्यश्री ने सिर्फ इतना ही कहा कि हम अपनी मार्गदर्शक सत्ता पर निर्भर हैं। बच्चों के बारे में कभी कुछ सोचने की जरूरत नहीं समझी। जो करना होगा वही करेंगे और हमें यदि कुछ करना है तो उनका निर्देश मिलने से पहले कुछ नहीं सोचना चाहिए। माताजी ने इसके बाद कभी कुछ नहीं कहा।

१९६७ में सतीश (मृत्युञ्जय) का विवाह हो गया। वह जन जागरण प्रेस में काम करने लगे थे। शैलबाला उस साल इंटर में पढ़ रही थी। वह शुरू से ही धीर गंभीर स्वभाव की थी। पढ़ाई के साथ माताजी के कामों में हाथ बटाती थी। अखंड ज्योति संस्थान आने वाले साधकों का ध्यान रखना भी उनकी जिम्मेदारी में शामिल था। आचार्यश्री के हिमालय पर चले जाने की तिथियाँ निकट आने तक मथुरा आने वाले साधकों की संख्या दिनोदिन बढ़ने लगी। सभी लोग अखंड ज्योति संस्थान भी आते। कभी कभार तो इतने ज्यादा लोग आ जाते कि पढ़ाई के लिए न तो समय मिलता और न ही जगह। उस हालत में दोनों भाई बहिन छत पर जाकर पढ़ते।

ताई जी का निर्देश

ग्यारहवीं की पढ़ाई शुरु करते ही प्रिंसीपल ने पूछा कि एन.सी.सी. में भर्ती होओगी क्या? पिछले पांच साल में देश ने दो युद्ध देखे थे। युद्ध के बादलों का प्रभाव था कि सैनिक अनुशासन सिखाने वाले इस सुरक्षा बल के प्रति छात्रों में आकर्षण था। शैलबाला ने तुरन्त हां कर दिया। घर आकर माताजी और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्यश्री को एन.सी.सी. के बारे में बताया। आचार्यश्री ने कहा, 'अच्छा किया, देश प्रेम, देश के लिए मर मिटने का जज्बा बचपन से ही होना चाहिए। ऐसा हौसला रखना कि जरूरत पड़े तो सीमा पर जाकर लड़ सको। देश की सुरक्षा के लिए मर सको ऐसी ट्रेनिंग करना।'

माता-पिता से प्रोत्साहन पाकर शैलबाला ने तन्मयता से अभ्यास किया। उस अभ्यास के चलते एन.सी.सी. में आगे बढ़ती गई। इन्टर की शिक्षा पूरी करने तक वायरलैस का उपयोग, निशाना साधना, घुड़सवारी से लेकर एन.सी.सी. के कुछ कैम्पों में सीनियर कैप्टन बनने का मौका मिला। यह सब बाद की बातें हैं, जब वह माताजी व आचार्यश्री से एन.सी.सी. में जाने की बात कर रही थीं तो ताईजी के कान पर भी गई। ताईजी ने अपने बेटे से पूछा कि लड़की को कहां भेजेगा?

आचार्यश्री ने कहा, 'कहीं नहीं ताई वो फौजियों की प्रैक्टिस करेगी। ताईजी ने कहा, 'फौजी बनाकर क्या करना है। उसकी ब्याह शादी की फिक्र कर। तीन चार साल बाद तो चला जाएगा। उसका घर बसाने की कौन सोचेगा।'

कहते-कहते ताईजी का कण्ठ रुँध आया। फिर उन्होंने बातचीत का रुख बदला। कहने लगीं क्योंरे, 'तूने तो मुझे वचन दिया था कि मुझे छोड़कर कहीं नहीं जाएगा। हिमालय जाने की बात क्या सुनती हूँ?

आचार्यश्री ने कहा, 'तुम्हें छोड़कर कहां जा रहा हूँ। तुम द्वारकाधीश के पास चली जाओगी तभी तो जाऊंगा। उसमें अभी समय है।'

ताईजी ने कहा, 'मेरा मन शैलो की डोली चढ़ते देखने का है। उसके बाद ही मेरी अर्थी जाए। उसका इन्तजाम कर।'

आचार्यश्री ने कहा, 'ताई यह तो वायदा नहीं हुआ था। हम लोगों में सिर्फ यही करार था कि तुम्हारे रहते तक मथुरा में ही ठिकाना रखूंगा। अपना ठौर नहीं बदलूंगा। सो उतना करार ही निभाउंगा। शैलो के बारे में तुम्हारी इच्छा है। इतना ही कह सकता हूँ कि तुम अपने होने वाले जमाई को देख लोगी।'

आचार्यश्री ने उन दिनों नये सिरे से पढ़ाई शुरू की थी। उन्होंने घोषणा की थी कि अखंड ज्योति के पन्नों पर तर्क, तथ्य, प्रमाण और वैज्ञानिक आधार पर धर्म, अध्यात्म के सिद्धान्त प्रतिपादित किये जाएंगे। यह तर्क का युग है। श्रद्धा विश्वास के आधार पर लोगों को कोई बात मानने के लिए तैयार नहीं किया जा सकता। उनके बुद्धि विवेक को जब तक कोई बात गले नहीं उतरती तब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तक वे संदेह और अविश्वास की दृष्टि से ही देखेंगे। नये सिरे से प्रतिपादन के लिए उन्होंने भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, शरीर विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र, मनोविज्ञान, दर्शन और अर्थशास्त्र आदि विषयों में जानकारों का सहयोग मांगा।

सन् १९६८ में चैत्र नवरात्रि के आसपास उन्होंने एक साधना शिविर में विद्वानों और मनीषियों से खुलकर सहयोग मांगा। उन्होंने कहा कि हिमालय जाने से पहले हम एक पढ़ाई और करेंगे। इस विद्याध्ययन में विद्वानों प्रोफेसरों और प्रतिभाशाली छात्रों का सहयोग मिलना चाहिए। अभी तक धर्म अध्यात्म को श्रद्धा भावना और विश्वास का विषय समझा जाता है। लेकिन यह स्थिति देर तक नहीं रहेगी। धर्म को तर्क और तथ्य की कसौटी पर खरा सिद्ध किया जा सकेगा, तभी इसका अस्तित्व बचेगा अन्यथा यह अन्धविश्वासों का जाल जंजाल बन कर रह जायेगा। विज्ञान की समस्त शाखाओं का अध्ययन करने की आवश्यकता है। हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने हमें इसके लिए निर्देश दिए हैं। अब वह स्थिति नहीं है कि कालेज में जाकर या लाइब्रेरियों की अलमारियां छानकर अध्ययन करें। अपने परिजनों से ही अपेक्षा करते हैं कि वे अपने अध्ययन अनुभवों का लाभ हमें दें। इस काम में ग्रेजुएट स्तर के परिजनों की सहायता अभीष्ट है। जिनके पास एक दो घंटा रोज का अवकाश है और उस समय को हमारी सहायता में लगाना चाहें वे अपना नाम नोट करा दें और अपनी शिक्षा का व्यौरा भी जमा करवा दें। ताकि उस स्तर पर काम किया जा सके। वहां आए परिजनों में से कुछ जनों ने हाथ उठाए।

एक बार फिर पढ़ाई

आचार्यश्री ने कहा कि इतने लोगों से बात नहीं बनेगी औरों का सहयोग भी चाहिए। फिलहाल दो प्रकार के काम इन सहयोगियों से कराने होंगे। एक तो यह कि उनकी शिक्षा में जो काम हमारे मतलब का होगा उसे सारांश में लिख भेजें। और दूसरे उन्हें कुछ ग्रन्थ पढ़ने के लिए दिए जाएंगे उसमें कुछ प्रसंग चुनने के लिए कहा जाएगा। यह एक रिपोर्ट होगी। इस आशय की अपील अखंड ज्योति में छपी थी। डेढ़ दो महीने में लगभग सौ से ज्यादा अध्येताओं के नाम आ गये थे।

१९६८ में गायत्री जयंती के शिविर में इंदौर से प्रणव आये। वे प्राय: जून के शिविरों में ही आते थे। अन्य अवसरों पर भी आना जाना होता था

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लेकिन ज्येष्ठ का शिविर निश्चित प्राय था। उस वर्ष प्रणव मेडीकल कालेज के दूसरे वर्ष में प्रवेश कर चुके थे। शिविर में आचार्यश्री ने देखा तो सीधे पूछा, 'आगे क्या करने का मन है। बेहतर होगा विस्तृत सेवा का क्षेत्र चुनो।'

प्रणव ने कहा कि चिकित्सा क्षेत्र में जाने, सर्जन (शल्य चिकित्सक) बनने का मन है। आचार्यश्री ने कहा शल्य चिकित्सा का क्षेत्र सीमित है। वह तरंग की भांति है जबकि औषधि विज्ञान (मेडीसीन) एक विराट सागर है। इस क्षेत्र में अधिकार सिद्ध करो तो ज्यादा सेवा कर सकोगे।

इतना कहने के बाद आचार्यश्री ने उन्हें भी अपने लिए पढ़ने, नोट्स तैयार करने और मथुरा भेजते रहने के लिए कह दिया। शिविर में आये और युवकों से भी मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, तर्कशास्त्र आदि विषयों पर नोट्स भेजने के लिए कहा था।

आचार्यश्री ने नई प्रतिपादन शैली के लिए 'वैज्ञानिक अध्यात्मवाद' पद का उपयोग किया था। सामग्री संकलन के लिए कई विद्वान और प्राध्यापक आगे आये थे। उनमें ध्रुवनारायण जौहरी, प्रो० रमण, निर्मला राय,यतीन्द्र डॉ अमल कुमार दत्ता जैसे अनेक नाम थे। कई विद्वान इस धारणा के विरुद्ध थे। उन्होंने 'वैज्ञानिक अध्यात्मवाद' पद की आलोचना की थी। आलोचना करने वालों में आचार्य रजनीश भी थे।

सागर और जबलपुर में दर्शनशास्त्र पढ़ा रहे आचार्य रजनीश की ख्याति उन दिनों फैलने लगी थी। तब वे खंडनात्मक शैली अपनाये हुए थे। जबलपुर में हुए एक यज्ञ समारोह के समय हुई एक गोष्ठी में दानाभाई राठौर ने उन्हें भी आमंत्रित कर लिया। उनका ख्याल था कि आचार्य श्रीराम शर्मा और आचार्य रजनीश-दो आचार्य एक मंच से बोलेंगे तो ज्यादा प्रभावपूर्ण रहेगा। लेकिन आचार्य रजनीश ने विज्ञान को पदार्थ का और अध्यात्म को चेतना का प्रतीक बताकर विवाद खड़ा कर दिया। उनका कहना था कि दोनों में विरोध है। आचार्यश्री ने रजनीश के तर्कों का इतना ही जवाब दिया कि विज्ञान भी समझने जानने की एक विधा है। अध्यात्म या प्रकृति के स्वभाव को जानने समझने की शैली या पद्धति है। दोनों एक ही सत्ता तक पहुँचाते है। आज नहीं तो कल हर किसी को तथ्य और प्रमाणों के आधार पर बोलना पड़ेगा, सिर्फ तर्क या भाव से ही बात नहीं बनेगी।

आचार्यश्री को मथुरा से प्रयाण करने में मुश्किल से तीन वर्ष बचे थे। इस अवधि में तीन सौ से ज्यादा जगह गायत्री महायज्ञों का निर्धारण हो गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पांच कुण्डीय गायत्री महायज्ञों की तुलना में इक्कीस, इकावन और एक सौ आठ कुंडीय गायत्री महायज्ञों की संख्या ज्यादा थी। सहस्त्रकुंडीय गायत्री महायज्ञों की संख्या पांच थी। इनमें ज्यादातर १९७०-७१ के वर्षों में हुए। टाटानगर, बहराइच, महासमुंद, भीलवाड़ा, और पोरबंदर में भव्य और विराट पांच गायत्री महायज्ञ आयोजन हुए।

आयोजनों में आर्यसमाज के भजनोपदेशक स्वामी प्रेमानंद और सनातन धर्म के कार्यकर्त्ता पंडित नीलकंठ शास्त्री प्राय: साथ रहते थे। सनातन धर्म और आर्यसमाज की दो विभूतियों को एक साथ देख कर लोग आश्चर्य भी करते। यज्ञ आयोजनों के अविरल प्रवाह के साथ आचार्यश्री ने वसंत पंचमी १९६८ से साधना अनुष्ठान का एक विराट अभियान शुरू किया था। चौबीस लाख गायत्री मंत्रों के प्रतिदिन जप वाले इस अनुष्ठान में चौबीस हजार व्यक्ति सम्मिलित हुए थे। प्रत्येक साधक प्रतिदिन एक माला का अतिरिक्त जप करता। वह जप नियमित साधना से अलग ही होता था। प्रतिदिन होने वाला यह महापुरश्चरण दस वर्ष तक चलना था।

यज्ञ अनुष्ठान और साधना की तैयारी के साथ १९७१ के बाद की व्यवस्था भी आचार्यश्री साथ साथ जुटाने लगे थे। निर्धारण के अनुसार माताजी को भी मथुरा छोड़ देना था। पहले वे मथुरा में ही रहने वाली थीं। आचार्यश्री के न रहने पर जन संपर्क और साधकों उपासकों को मार्गदर्शन का दायित्व उन्हीं पर आ रहा था। उन्हें मथुरा रहते हुए ही यह काम करना था लेकिन यह काम अन्यत्र रह कर ही चलाया जाना था। हिमालय के हृदय प्रदेश से निर्देश आया था कि यह काम हिमालय के प्रवेश द्वार पर रहते हुए ही चलाना है। निर्देश हरिद्वार के संबंध में था और आचार्यश्री वहां एक डेढ़ एकड़ जमीन का प्रबंध करने के लिए रवाना हुए।

आचार्यश्री यों पूरे देश में भ्रमण करते रहे थे। लेकिन दिल्ली में उनका आना जाना कम ही होता था। १९६८ की गर्मी के दिन थे। मई माह की कोई तारीख। आचार्यश्री दिल्ली जा कर शिवशंकर गुप्त के यहां ठहरे। सोचा यहीं से अपने कुछ लोगों को साथ लेकर चला जाए। दरीबा में आभूषणों के व्यापारी शिवशंकर गुप्त और भारत सरकार के प्रकाशन विभाग में काम कर रहे रामेश्वर उपाध्याय से साथ चलने के लिए कहा। गुड़गांव से ओमप्रकाश भी आ गये थे। वे अपने साथ एक गाड़ी लेकर आये थे। गाड़ी संभवत: किराये की थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्यश्री ने उन्हें इसलिए साथ चलने से मना कर दिया था कि हरिद्वार में ज्यादा दिन लग सकते हैं। इतने दिन तक व्यर्थ किराया देना पड़ेगा। इसके अलावा आचार्यश्री सड़क मार्ग की तुलना में रेल से यात्रा करने को प्राथमिकता देते थे। उन्हें रेलयात्रा ज्यादा काव्यात्मक प्रतीत होती थी।

ओमप्रकाश ने कहा था कि हरिद्वार में तो गाड़ी की उपयोगिता है ही। आचार्यश्री ने इस आग्रह को यह कहते हुए टाल दिया था कि स्थानीय यात्रा के लिए रिक्शे बेहतर साधन हैं। ओमप्रकाश वापस जाने लगे तो आचार्यश्री ने उन्हें रोका। कहा कि साथ नहीं चल पाने का बुरा मत मानना। तुम चाहो तो एक सहयोग कर सकते हो। मेरे कपड़े धोकर डाल दो। सुबह तक सूख जाएंगे। कह कर उन्होंने संदूक से कपड़े निकाले और ओमप्रकाश को दे दिए।

ओम प्रकाश ने आचार्यश्री के कपड़े धोकर छत पर सुखा दिए। सुबह रामेश्वर उपाध्याय के साथ हरिद्वार के लिए निकल पड़े। शिव शंकर किसी कारणवश साथ नहीं जा सके थे।

सुबह आठ बजे वाली ट्रेन पकड़ी और शाम चार बजे के लगभग हरिद्वार पहुँच गए। ठहरने के लिए आचार्यश्री ने कहा कि गंगा किनारे का कोई होटल चुना जाए। बस यह ध्यान रहे कि उसका मुँह गंगा की ओर हो। रामेश्वर उपाध्याय ने किसी धर्मशाला में रुकने का सुझाव रखा था। लेकिन आचार्यश्री ने कहा कि होटल में फोन वगैरह की सुविधा होगी। लोगों से आसानी से बातचीत हो सकेगी।

इस तरह हुई खोज

होटल में ठहरने के बाद पहला काम गंगा स्नान का किया। तरोताजा होकर काउंटर पर गए और वैसे ही फोन पर सौ नम्बर डायल किया। (उन दिनों टेलीफोन पर बात करने के लिए स्थानीय टेलीफोन आपरेटर की मदद लेनी पड़ती थी। आज की तरह इलेक्ट्रानिक एक्सचेंज नहीं हुआ करते थे।) दूसरी तरफ से जिस किसी ने फोन उठाया उनसे रामेश्वर उपाध्याय ने कहा कि हमें जमीन खरीदना है कोई जरिया बता सकते हो क्या? फोन उठाने वाले ने हरिद्वार के एक प्रापर्टी एजेण्ट का नाम पता बताया। इसके बाद आचार्यश्री हर की पौड़ी पर गंगा की आरती देखने गए। थोड़ी देर इधर-उधर घूमने के बाद भोजन करके वापस होटल में आ गए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुबह बताए हुए पते पर उस एजेण्ट से मिले। उसने कनखल में एक जगह बताई। यह जगह दक्ष प्रजापति मन्दिर से डेढ़ दो किलोमीटर दूर थी। आचार्यश्री उस जगह को परखते रहे। गंगा किनारे गए। आचार्यश्री ने एजेण्ट से पूछा, 'नीलधारा कहां है। यहां मिल चुकी है या आगे कहीं मिलती है।'

एजेण्ट ने दायीं तरफ इशारा किया और बताया कि यहां से कोई डेढ़ दो किलोमीटर दूर यही धारा नील धारा के मूल प्रवाह में जा मिलती है। यह तो सिर्फ गंग नहर से निकला जल ही है। आचार्यश्री ने उस स्थान की और तरह से भी परीक्षा ली। तीन चार जगह से मिट्टी उठाकर देखी। दो जगह आसन लगाकर बैठे। और कुछ देर बाद उठकर खड़े हो गए। उन्होंने एजेण्ट से कहा, 'कोई और जगह बताओ, जो गंगा के किनारे पर ही हो।'

एजेण्ट ने और दो तीन जगह दिखाईं। जिनमें एक गुरुकुल कांगड़ी के पास, एक विष्णु घाट के पास और एक चण्डी पर्वत के पास थी। भूमि परीक्षा का आचार्यश्री का अपना ढंग था। उस ढंग में पता नहीं कौन से मानक वे अपनाते और जगह की परीक्षा करते थे। दूसरे तीसरे दिन भी जमीन को ढूंढ़ने का यही सिलसिला चला। लेकिन कहीं बात बनती दिखाई नहीं दी। प्रोपर्टी एजेण्ट भी अपनी सुविधानुसार जगह बता रहे थे। और वह आचार्यश्री के मानकों पर खरी नहीं उतरती थी। आखिर खुद ही जगह ढूंढ़ने का निश्चय हुआ। लगभग एक सप्ताह बीत गया। रामेश्वर उपाध्याय को भी अपने दफ्तर जाना था उनकी छुट्टियाँ पूरी हो गई थीं। वह वापस दिल्ली चले गए। आचार्यश्री ने अकेले ही यह खोज अभियान जारी रखा।

हरिद्वार के पश्चिम भाग का पूरा हिस्सा लगभग छान लिया था। अब ऋषिकेश की तरफ की बारी थी। भीमगौड़ा से होते हुए रानीपुर, खड़खड़ी, पुस्ते के पास नीलधारा आदि स्थानों पर दस बारह जगह देखीं। कहीं भी आचार्यश्री की अपनी कसौटी के अनुसार बात नहीं बन रही थी। सप्तऋषि आश्रम का इलाका कुछ जंच रहा था, लेकिन वहां कोई जरिया नजर नहीं आ रहा था। साथ ही वहां एक अन्य भव्य आश्रम पहले ही स्थित था। उसके आस पास खेत ही खेत था। आश्रम के पीछे बिरला फार्म के नाम से एक बहुत बड़े रकबे का बगीचा था, बल्कि यूं कहें कि घनी अमराई थी।

सप्तऋषि आश्रम को पार करते हुए दूसरे गेट से ऋषिकेश रोड की ओर रवाना हुए। दायीं तरफ बिरला फार्म था और बायीं ओर खेत। कच्ची सड़क

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर चलते हुए कोई पांच-सात सौ मीटर की दूरी तय की होगी कि आचार्यश्री ठिठक कर रुके। बायीं ओर एक यज्ञशाला बनी हुई थी वहां आर्यसमाज पद्धति से हवन हो रहा था। सड़क पर खड़े होकर वे कुछ सोचने लगे। कुछ देर रुककर यज्ञशाला के पूर्व में स्थित खेत में उतर गए। दस पांच कदम चले होंगे कि दायीं ओर एक झरना दिखाई दिया। उस झरने के किनारे पंजे के बल बैठे और अंजुली भर पानी लिया। उस पानी को चखा और मन में थोड़ी तसल्ली महसूस की। पानी पीकर खेत के अन्दर दो चार कदम चले ही थे कि भीतर से एक महिला आती दिखाई दी। छूटते ही उससे पूछा, 'माई क्या यह खेत तुम्हारा है।'

उस महिला ने कहा, 'क्या काम है? सौदा करना है क्या?'

आचार्यश्री ने कहा, 'हाँ। हम यह जगह खरीदना चाहते हैं।'

'क्या करेंगे?' उस महिला के तेवर में वही कठोरता थी? आचार्यश्री ने कहा, कि आश्रम बनाएंगे। वह महिला उपहास उड़ाने वाले स्वर में हंसी। आश्रम बनाएंगे। यहां पहले ही आश्रमों की क्या कमी है? कहते हुए उसने उस जमीन के मालिक का नाम पता बता दिया। इसके बाद प्रक्रिया इतनी तेजी से चली कि आचार्यश्री ने जमीन का सौदा दो दिन में ही पक्का कर दिया।

वेदना उभरने लगी

'अखंड ज्योति' को नया तेवर मिल गया था। वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की अवधारणा और प्रतिपादन शैली ने पाठकों को प्रभावित किया। शुरू के दो अंक पाठकों के पास पहुंचे होंगे कि आचार्यश्री के नाम अस्सी पत्र आये। ये पत्र प्राध्यापकों, प्रोफेसरों, प्रतिष्ठित लेखकों और विचारकों, मनीषियों ने लिखे थे। कुछ माह पहले आचार्यश्री ने मनीषियों से जिस तरह का अध्ययन सहयोग मांगा था, उसके लिए भी इन पत्रों में अपने आपको प्रस्तुत किया था।

'वैज्ञानिक अध्यात्मवाद' की अवधारणा और शैली पाठकों को लुभा रही थी तो एक स्थिति उन्हें भीतर ही भीतर विचलित भी कर रही थी। उनका अंतस जैसे उस स्थिति से रह रह कर ऐंठने लगता था। वह स्थिति जून ७१ की तिथियां करीब आने के रूप में थी। उस माह की किसी तिथि को आचार्यश्री अपने परिजनों और साधकों से दूर एकांत में चले जाने वाले थे। यह स्थिति आचार्यश्री को स्वयं भी व्यथित कर रही थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्षेत्र के यज्ञ सम्मेलनों में और गायत्री तपोभूमि आने वाले कार्यकर्त्ताओं की ओर से अब भी यह अनुरोध आ रहा था कि विदाई के इस निश्चय को टाल दिया जाए। आचार्यश्री का सीधा और स्पष्ट उत्तर होता कि हमारे अपने वश में होता तो यह निर्णय निश्चित रूप से स्थगित कर देते, लेकिन निर्धारण मार्गदर्शक सत्ता का किया हुआ है। उनके निर्देश में राई रत्ती संशोधन करना अपने वश में नहीं है।

अपने अंतरंग का खुलासा करते हुए उन्होंने कुछ अवसरों पर बहुत भावुक होकर कहा भी। वे कहते थे कि पिछले और अगले दिनों की कभी तुलना करते हैं तो लगता है कि छाती फट जाएगी। एक हूक पसलियों को चीर कर बाहर निकल पड़ेगी। उस जगह के मांस और हड्डियों में एक ही तत्त्व उफनता दिखाई देगा। वह होगा असीम प्रेम। जीवन में एक ही संपदा कमाई है प्रेम, एक ही तत्त्व का उपार्जन किया है और एक ही रस चखा है प्रेम का।

वसंत १९६९ के बाद आचार्यश्री की मन:स्थिति उस पिता जैसी हो गई थी जिसे अपने बच्चों और परिजनों को छोड़कर हमेशा के लिए जाना पड़ रहा है। वस्तुस्थिति ऐसी ही थी लेकिन आचार्यश्री से इस तरह की अपेक्षा नहीं की जा सकती थी। उन्हें ब्रह्मविद, सिद्ध, तपस्वी, वीतरागी और संन्यासी स्वभाव का समझा जाता था। बड़ौदरा (गुजरात) में हुए एक महायज्ञ में एक संत से इस बात को आमने सामने कहा भी था।

यज्ञ सम्मेलन के समय मोटा महाराज भी बड़ोदरा आये थे। आचार्यश्री के संबंध में पहले कई बार सुना था। उनके तप त्याग साहित्य और संगठन से वे अभिभूत थे। अनुरोध भिजवाया कि आचार्यश्री भोजन मोटा महाराज के साथ ही करें। आचार्यश्री उनके इस व्रत से अच्छी तरह परिचित थे कि वे भोजन विश्राम आदि में अतिशय नियमित थे। निर्धारित समय चूक जाए तो न भोजन करते हैं और न ही विश्राम। आचार्यश्री ने इस नियम को ध्यान में रखते हुए उत्तर भिजवाया कि भोजन की बात शायद नहीं बन पाये। यहां एक सार्वजनिक कार्यक्रम में आये हैं, इसलिए देर सबेर हो सकती है। आप भोजन कर लें।

मोटा महाराज ने उत्तर भिजवाया कि आज के लिए यह नियम स्थगित है। आप आयेंगे तभी भोजन करेंगे। यज्ञ सम्मेलन से निवृत्त होने तक दोपहर के बारह बज गये। मोटा महाराज और आचार्यश्री उस समय भोजन के लिए बैठे तो कई विषयों पर चर्चा छिड़ी। उनमें अज्ञातवास पर जाने और जाने के बाद की व्यवस्था के विषय भी थे। मोटा महाराज ने बातों ही बातों में पूछा कि दो ढाई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साल बाद आप चले जाएंगे। अपने साधक परिवार को छोड़ कर जाते हुए कैसा लगता है। आपने कुछ स्थानों पर कहा है कि आप रात में कई कई बार जाग उठते हैं और सो नहीं पाते।

आचार्यश्री ने मोटा महाराज के इस प्रश्न का सकारात्मक उत्तर दिया। उन्होंने फिर कहा, 'आप जैसे ब्रह्मवेत्ता तपोनिष्ठ ऋषि को यह शोभा नहीं देता। आप व्यथित हो सकते हैं, लेकिन कम से कम कहिए तो मत।'

आचार्यश्री ने कहा, 'अपनी स्थिति को छुपाना ठीक नहीं है। हम ब्रह्मवेत्ता नहीं है। लोग यह मानें तो कोई बात नहीं लेकिन अपनों से बिछुड़ने का दर्द छुपाने के लिए झूठ का सहारा लें, यह ठीक नहीं है।'

इतना कहने के बाद मोटा महाराज और आचार्यश्री राग विराग, सबमें अपनी ही आत्मा देखने और इसी तरह के विषयों पर चर्चा करने लगे। उस चर्चा में अपनी भाव दशा को आचार्यश्री ने व्यक्त करते हुए कहा कि ज्ञान वैराग्य की पुस्तकें बहुत पढ़ी हैं। उनमें कही गई बातों को दूसरों के सामने दोहराया भी है। हाल की स्थितियां देखते हैं तो लगता है कि वे बातें अपनी मनोभूमि में प्रवेश नही कर पाई है।

न कोई पराया दीखता है और न ही कहीं माया का आभास होता है जिससे विरत हुआ जाए। जब अपनी ही आत्मा सब लोगों में जगमगा रही है तो किससे मुंह मोड़ा जाये? किससे नाता तोड़ा जाये, जो हमें नहीं भूल पा रहे हैं, उन्हें हम कैसे भूल जायेंगे? जो साथ घुले और जुड़े हैं, उनसे कैसे नाता तोड़ लें। पढ़ा हुआ ब्रह्मज्ञान रत्ती भर सहायता नहीं करता। कहते कहते आचार्यश्री का गला रुंधने लगा था। मोटा महाराज भी उनकी बातों को सुनते हुए विकल होने लगे थे। उनकी आंखों से अश्रुधार बहने लगी थी। कह उठे, 'जिस विभूति को अपने शिष्यों साधकों से इतना स्नेह है, वह प्रणाम करने योग्य है।'

ढाई साल बाद विदाई की बात चली तो एक अन्य अवसर पर आचार्यश्री ने कहा कि आप (परिजनों) की आंखों से हम दूर हो सकते हैं लेकिन हमारी आंखों से कोई भी दूर नहीं होगा। जिनकी आंखों में हमारे प्रति स्नेह और हृदय में भावनाएं हैं, उन सबकी तस्वीर अपने कलेजे में छिपा कर ले जाएंगे और उन देव प्रतिमाओं पर निरंतर अर्ध्य चढ़ाया करेंगे। कह नहीं सकते कि उनके स्नेह से उऋण होने का अवसर मिलेगा या नहीं पर यदि मिला तो इन देवप्रतिमाओं को सजाने, उनकी आराधना करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हरिद्वार के सप्त सरोवर क्षेत्र में डेढ़ एकड़ जमीन का सौदा होने के बाद काफी दिन तक उधर जाना नहीं हुआ था। बयाने की रकम मिल गई थी और खरीददार का पता नहीं था। जमीन के मालिक ने संदेश भिजवाये। उससे ज्यादा माताजी ने बार बार याद दिलाई। समस्या आर्थिक भी थी और स्थिति की भी। आर्थिक साधन पर्याप्त नही हो रहे थे। उनका प्रबंध किया जा सकता था लेकिन आचार्यश्री इन दिनों यज्ञ सम्मेलनों में व्यस्त थे। जमीन खरीदने की औपचारिक कार्रवाई में आठ दस दिन लगते। उतना समय नहीं मिल पा रहा था। अक्टूबर १९६८ में किसी तरह गुंजाइश बनी और आचार्यश्री वहा देखभाल हेतु रहने के लिए धर्मचक (छपरा) के रामचंद्रसिंह को साथ लेकर हरिद्वार रवाना हुए। अठाइस हजार रुपये में सौदा हुआ था और आचार्यश्री ने उसका पाई पाई चुका दिया। जिस काम में आठ दस दिन लगते वह तीन दिन में ही संपन्न हो गया।

उस स्थान की महत्ता

आचार्यश्री ने जिस झरने को देखकर जमीन का चुनाव किया था। वहां उन्होंने दीपक जलाया, हवन किया और उसके बाद कुदाल चलाई। अपने हाथ से कुदाल फावड़ा चलाने के तुरंत बाद साथ आये रामचंद्रसिंह ने झरने का रास्ता साफ किया। वहां एक क्यारी बनाई और तुलसी का बिरवा रोपा। इसके बाद निश्चित किया कि इस जगह सबसे पहले एक कुटिया बनानी है ताकि आते जाते हुए ठहरा जा सके। कुटिया बनाने के बाद उस क्षेत्र में फलदार वृक्ष, शाक सब्जी के लिए क्यारियां और क्रम से कुछ और कुटियाएं बनाने का निश्चय किया। श्रीरामचंद्र सिंह को आजीवन यहां रहने, १९७१ में माताजी के आने पर उनकी सेवा करने का निर्देश भी दिया।

आचार्यश्री ने इस काम की जिम्मेदारी जिस साधक को सौपी, उसे आजीवन यहीं रहने के लिए भी वचनबद्ध कर लिया। उस साधक का नाम था रामचंद्र सिंह। बिहार के एक सामान्य ग्रामीण परिवार में जन्मे रामचंद्रसिंह ने आजीवन सेवा का वचन देने की बात सुनते ही अद्‌भुत आनंद अनुभव किया। उसके मुंह से सिर्फ यही निकला कि आपका कहना ही हमारे लिए आदेश है। आप कहते हैं तो वचन ही सही लेकिन अब हम कहीं नहीं जाएंगे।

लगभग तीन माह बाद की यात्रा में साथ आए एक अन्य कार्यकर्त्ता ने जानना चाहा था कि यही स्थान चुनने के पीछे क्या कारण है? उनके मन में यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भाव उथल पुथल मचा रहा था कि कोई गूढ़ आध्यात्मिक कारण हो सकता है। लेकिन उनके मुंह पर यह बात नहीं आ पा रही थी। आचार्यश्री ने कहा इस क्षेत्र में किसी भी जगह बीस मिनट के लिए शांत होकर बैठो और सविता देव का ध्यान करो। तुम्हें स्वयं उत्तर मिल जाएगा। वे साधक पूर्व की ओर मुँह करके बैठ गये और स्वर्णिम आभा वाले सविता देव का ध्यान करने लगे। बीस मिनट तक एकाग्र चित्त बैठे रहे। घड़ी की सुइयां बीस मिनट से आगे बढ़ीं, इक्कीस, बाइस, तेईस, चौबीस, पचीस, तीस, चालीस की रेखाएं पार करती हुई काफी आगे निकल गईं। आचार्यश्री ने उस साधक को वापस आने के लिए संकेत किया। हलके से चुटकी बजाई और बोले जाग विरजानंद। उस दृश्य में खो मत जाओ।

आचार्यश्री ने यह बात धीमे स्वर में कही थी। उस साधक ने सुन लिया और वह तुरंत उठ कर खड़ा हो गया। साधक का नाम कुछ और था। उठने के बाद उसने नये संबोधन पर आश्चर्य जताया और कहा कि ध्यानावस्था में उन्हें कोई इसी नाम से पुकार रहा था। उसने अपना अनुभव सुनाया। जहां वह बैठा था उसके स्थान के आसपास चार पांच गायें घास चर रहीं थीं। ऋषि से दिखाई देने वाले एक वृद्ध पुरुष उन गायों की सेवा कर रहे थे। वहां से दो सौ गज दूर एक अन्य ऋषि ध्यान में स्थित थे। गो सेवा और ध्यान का यह दृश्य इतना मनोरम बन गया था कि उठने का मन ही नहीं हो रहा था। आचार्यश्री ने पूछा, 'उन ऋषि सत्ताओं को पहचानने की कोशिश की?'

उस साधक ने नहीं में गर्दन हिलाई। आचार्यश्री ने कहा, 'वह प्रतीति महर्षि विश्वामित्र और वसिष्ठ की थी। इन ऋषियों ने किसी युग में यहां तप किया था। उस युग में जब गंगा ने सात धाराओं में बंट कर उन ऋषियों को संरक्षण दिया था। पांच ऋषियों के तपस्थान यहां से दक्षिण की ओर हैं। गंगा तब इसी क्षेत्र में सात धाराओं में बहती थी। वसिष्ठ और विश्वामित्र की साधना के संस्कार यहां अब भी विद्यमान हैं।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आषाढ़ का वह दिन

इंदौर (मध्य प्रदेश) के एम०जी०एम० मेडीकल कालेज में आचार्यश्री के व्याख्यान ने बुद्धिजीवियों को आकर्षित किया था। वे 'वैज्ञानिक अध्यात्मवाद' विषय पर बोले थे। व्याख्यान का केन्द्रीय विचार यही था कि धर्म अध्यात्म को तर्क, तथ्य और प्रमाण की कसौटी पर खरा उतरना चाहिए। इस व्याख्यान में शहर के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान प्राध्यापक, पत्रकार और विद्यार्थी आये थे। नई दुनिया के संपादक राहुल बारपुते ने व्याख्यान सुनने के बाद कहा था कि इस तरह के प्रतिपादन और विवरण मिलते रहें तो वे अपने अखबार का एक पृष्ठ इस विषय के लिए सुरक्षित कर सकते हैं। आचार्यश्री ने कहा था कि वे सामग्री उपलब्ध कराने का वचन देते हैं। राहुल जी आरंभ करें। किन्हीं कारणों से यह संभव नहीं हो सका। शायद अखबार की अपनी व्यवस्थागत सीमाएं कारण रही होंगी। लेकिन इस आयोजन ने अध्यात्म को सुनने समझने के लिए एक नया वर्ग दिया था।

मार्च १९७० में यह आयोजन मेडिकल कॉलेज के विद्यार्थियों और गायत्री परिवार के कार्यकर्ताओं ने किया था। उस अवसर पर आचार्यश्री ने आयोजन व्यवस्था में अग्रणी रहे चिकित्सा छात्र प्रणव से कहा था कि मथुरा में होने वाले परामर्श शिविर में आना। आगे चलकर तुम्हें इसी विधा के कुछ महत्वपूर्ण काम करने हैं। प्रणव ने कहा कि वे अभी चलने को तैयार हैं। आदेश हो तो मेडिकल की पढ़ाई बीच में छोड़ी जा सकती है। आचार्यश्री ने पढ़ाई पूरी करने के लिए कहा। इंदौर के बाद थांदला, मंदसौर, नीमच आदि स्थानों पर यज्ञ सम्मेलन हुए। युवक छात्रों की मंडली इन स्थानों पर भी आचार्यश्री के साथ रही। इस मंडली में सतीश मेहता और रमाकांत शर्मा आदि के नाम भी उल्लेखनीय है।

वे वर्ष राजनैतिक उथल पुथल के थे। उथल पुथल का यह दौर १९६९ के आसपास शुरु हुआ था। इस कारण कांग्रेस टूट के कगार पर पहुँच गई थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इंदिरा गांधी ने १९६९ में बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर पार्टी और सरकार में चमक लाने की कोशिश की। गरीबी हटाओ का नारा आया और ग्रामीण रोजगार और साक्षरता बढ़ाने के कार्यक्रम बनाये गये। उन पर जोर दिया जाने लगा। पार्टी के पुराने नेता इन फैसलों से खिन्न थे। शायद इसलिए कि इंदिरा गांधी की ख्याति बढ़ रही थी और दूसरे नेताओं की चमक फीकी पड़ने लगी थी। उस समय कांग्रेस के वरिष्ठ नेता (बाद में राष्ट्रपति बने) डॉ० शंकरदयाल शर्मा ने आचार्यश्री से मुलाकात की। वे एकाध बार ही गायत्री तपोभूमि आये थे लेकिन आचार्यश्री के संपर्क में नियमित रहे थे।

'राष्ट्रीयकरण के फैसले और 'गरीबी हटाओ' कार्यक्रम शुरू करने के बाद इंदिरा गांधी का विरोध बढ़ने लगा तो डॉ० शर्मा ने पूछा कि क्या करना चाहिए? आचार्यश्री का दो टूक उत्तर था कि विकास की गति रुकने नहीं देना चाहिए। जो लोग अवरोध खड़े करते हैं उनसे छुटकारा पा लेना चाहिए। संयोग कहें या इस परामर्श का प्रभाव कि उसी वर्ष कांग्रेस के दो टुकड़े हो गये। इससे पहले राष्ट्रपति पद के लिए कांग्रेस के अधिकृत उम्मीदवार संजीव रेड्डी चुनाव हार गये। निर्दलीय उम्मीदवार वी०वी० गिरि ने उन्हें इंदिरा कांग्रेस के समर्थन से हराया।

कांग्रेस की इस टूट के बाद अब क्या होगा? यह प्रश्न चारों ओर गूंजने लगा था। राजनेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और बुद्धिजीवियों ने इस बारे में आचार्यश्री से पूछा। उनका एक ही उत्तर होता था कि व्यक्ति, संगठन या समूह नहीं देश बड़ा होता है। लोग और समूह आते जाते रहते हैं। भारत का भविष्य सुनिश्चित और सुरक्षित है। उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत को भविष्य का नेतृत्व करना है। इसलिए वह और भी सुरक्षित है।

क्षेत्रों में प्रवास और यज्ञ सम्मेलनों के साथ आचार्यश्री ने साधकों को मथुरा बुलाना भी शुरु कर दिया था। चार दिन के लिए विदाई शिविर नाम दिया गया था। मई से अक्टूबर १९७० तक होने वाले इन शिविरों में तमाम साधकों को आमंत्रित किया ताकि विदाई के बाद की जिम्मेदारियां सौंपी जा सकें। पिछले साल हुए ग्रीष्म शिविरों की तुलना में ये आयोजन अलग तरह के थे। उन ग्रीष्म शिविरों में आचार्यश्री ने सतीश मेहता को युवा पीढ़ी का नेतृत्व संभालने एवं प्रणव को धर्म अध्यात्म और विज्ञान के गहन अध्ययन के लिए कहा था। यह कहते हुए उन्होंने प्रणव को याद दिलाया था कि इंदौर कार्यक्रम में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिस काम के लिए मथुरा आने को कहा था, वह यही है। तुम्हें चिकित्सा व्यवसाय में ही उलझ कर नहीं रह जाना है, बल्कि लोकमानस के उपचार का एक नायक बन कर भी उभरना है।

उसी ग्रीष्म शिविर में लीलापत शर्मा ने प्रणव को देखा और पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में पूछा तलाशा। उनकी पूछ परख अपने स्तर पर थी। ग्वालियर वाले जज साहब (सत्य नारायण पण्ड्या) बीच में इंदौर चले गये थे, लेकिन गायत्री तपोभूमि में उन्हें पुराने नाम से ही पुकारा जाता था। लीलापत शर्मा और उज्जैन की कार्यकर्ता चंद्रा शर्मा ने विचार विमर्श किया और तय कर लिया कि प्रणव और आचार्यश्री की पुत्री शैलबाला के विवाह की बात शुरू करनी चाहिए। बातचीत शुरु हुई और वह चार छह महीने में निश्चित भी हो गई। प्रणव का विचार था कि पढ़ाई पूरी होने से पहले विवाह एक अतिरिक्त जिम्मेदारी होगी। लीलापत ने समझाया कि आचार्यश्री अज्ञातवास में जा रहे हैं। उनके हाथों कन्यादान हो जाए बस। घर गृहस्थी की तरह पढ़ाई के बाद भी रहा जा सकता है।

शुरु होने के बाद बातचीत आगे बढ़ने पर आचार्यश्री को भी बता दिया था। उन्होंने अक्टूबर १९७० में शिविर में आए प्रणव को गायत्री तपोभूमि में सीधे अखंड ज्योति संस्थान बुलाया और ताईजी के आगे किया। प्रणाम करते समय आचार्यश्री ने परिचय देते हुए कहा कि यह प्रणव है। शैलो के लिए बात चलाई है। ताईजी ने सुन लिया और आश्वस्त तथा प्रसन्न हुई। निश्चिंत उल्लास की आभा उनके मुखमंडल पर चमक उठी थी। कहा कुछ नहीं। उन्होंने दोनों हाथ उठाकर आशीर्वाद दिए। विवाह ३ जून १९७१, गायत्री जयंती के दिन आचार्यश्री के मथुरा छोड़ कर जाने से पूर्व का तय हुआ।

दिसम्बर १९७० में तत्कालीन केन्द्रीय गृहमंत्री गुलजारीलाल नंदा गायत्री तपोभूमि आये थे। उनके साथ मनुभाई भिवाणी भी थे। भिवाणी ने स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में नेता जी सुभाष चंद्र बोस को पेशावर तक पहुंचाया था। गुलजारी लाल नंदा दो बार कार्यवाहक प्रधानमंत्री रह चुके थे। उन्हें नैतिक मूल्यों के प्रति समर्पित राजनेता के रूप में जाना जाता था। लगभग आधा घंटा वे तपोभूमि रुके होंगे। आचार्यश्री से मुलाकात के दौरान उन्होंने देश की आंतरिक और सामाजिक स्थिति के बारे में चर्चा की। कहने लगे नैतिकता और चरित्र को बढ़ावा देने वाला कोई नेतृत्व इस समय नहीं है। देश का क्या होगा? समाज का क्या होगा? आप जैसे मनस्वी लोग मंदिरों और आश्रमों में बैठे हैं। आप लोगों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को समाज के बीच होना चाहिए। आचार्यश्री ने उनकी चिंता का समाधान किया कि हम समाज में ही हैं।

राजनीति में धर्मक्षेत्र

आचार्यश्री का मत था कि अच्छे लोगों को राजनीति में आना चाहिए। शासन व्यवस्था चलाने के लिए शौर्य, पराक्रम, सूझबूझ और निष्ठा चाहिए। जिस युग में वर्णाश्रम व्यवस्था प्रधान थी, उसमें क्षत्रियों में इन गुणों की अपेक्षा की जाती है। अब लोकतंत्र का जमाना है। इस युग में राजनेताओं से यह अपेक्षा की जाती है। उनमें इन गुणों के साथ नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा भी होनी चाहिए। गुलजारी लाल नंदा का कहना था कि महात्मा गांधी ने धर्मक्षेत्र में जुड़े लोगों को राजनीति पर अंकुश रखने और उसे दिशा देने का प्रयोग किया था। वह प्रयोग दोहराना चाहिए। महात्मा गांधी ने स्वयं के लिए भी कहा है कि वे मूलतः धर्मक्षेत्र से वास्ता रखते हैं। राजनीति में संयोगवश ही हैं। आपद धर्म के रूप में।

'धर्मतंत्र राजनीति का मार्गदर्शन कर सकता है। उसका संचालन या नियंत्रण नहीं।' आचार्यश्री का उत्तर था, 'प्राचीनकाल में ऋषिमुनि शासकों या राजन्य वर्ग से सघन रूप से जुड़े होते थे। वे निर्णय में सीधे हस्तक्षेप नहीं करते थे। प्रत्यक्ष रूप में सिर्फ मार्गदर्शन करते और परोक्ष में तपस्या द्वारा वातावरण बनाने की चेष्टा करते थे। आप पायेंगे कि प्राचीन साहित्य में जगह जगह विषम स्थितियों में ऋषि सत्ताओं द्वारा तप और साधना का उल्लेख मिलता है। वह तप वातावरण में अनुकूल तरंगे उत्पन्न करने के लिए ही होता था।'

कहते हुए आचार्यश्री कुछ रुके। उन्होंने आधुनिक युग का उल्लेख किया। इस युग में भी रामकृष्ण परमहंस, महर्षि रमण और महर्षि अरविंद ने साधना के प्रयोग किये हैं। उनकी साधना लोक मानस में स्वातंत्र्य चेतना उभारने के लिए थी। उनकी प्रचंड साधना का ही प्रभाव था कि साधारण से दिखाई देने वाले लोग भी स्वतंत्रता आंदोलन में कूदे और ऐसा पराक्रम दिखाया कि ब्रिटिश राज के पांव उखड़ गये।

आचार्यश्री की बातों को नंदाजी ध्यान से सुन रहे थे। बीच-बीच में वे कुछ पूछते भी जाते। आचार्यश्री उनकी बात का यथोचित उत्तर देते। एक प्रसंग में आचार्यश्री ने कहा कि महर्षि रमण और रामकृष्ण परमहंस जैसे तपस्वी और सिद्ध पुरुष नहीं होते तो महात्मा गांधी जैसा व्यक्तित्व भी नहीं उभर पाता। गहन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और सूक्ष्म दृष्टि रखने वाला कोई भी व्यक्ति महात्मा गांधी के उदय और स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता का श्रेय ऋषि स्तर की विभूतियों को देगा। घटनाएं सतह पर कुछ होती हैं। उनका आधार सूक्ष्म में होता है। वहां के स्पंदन हर किसी की पकड़ में नहीं आते।

गुलजारी लाल नंदा के लिए रामकृष्ण परमहंस, महर्षि रमण और श्री अरविंद के तप पुरुषार्थ का संदर्भ नया था। वे इस संदर्भ से गदगद थे लेकिन उनका मन यह मानने को राजी नहीं था कि महात्मा गांधी के उदय और विकास के पीछे योगी यतियों की तप साधना का प्रभाव था। उन्होंने अपनी असहमति जताई थी। आचार्यश्री ने यह कहते हुए समाधान कर दिया था कि मैंने अपनी मान्यता आपके सामने रखी है। हो सकता है यह गलत हो और महात्मा गांधी स्वयं ही पिछले जन्मों में सिद्ध योगी, तापस या आध्यात्मिक विभूति रहे हों। लेकिन यह तय है कि स्वतंत्रता आंदोलन जैसा इतिहास आध्यात्मिक पुरुषार्थ के बिना संभव नहीं है। बिना हथियार उठाये अभी तक कहीं कोई युद्ध जीते गये हैं, कोई क्रांतियां हुई हैं क्या, किसी देश ने स्वतंत्रता प्राप्त की है? नहीं न। नंदाजी को आश्वस्त कर आचार्यश्री ने उनसे अक्टूबर १९६९ की अखंड ज्योति का संपादकीय 'हम राजनीति में भाग क्यों नहीं लेते' पढ़ने के लिए कहा। प्रेस से उस अंक की एक प्रति भी मंगा दी।

यज्ञ सम्मेलनों के आयोजन धुंआधार चल रहे थे। बीच-बीच में गायत्री तपोभूमि में शिविर भी होते। यज्ञ सम्मेलनों में पहुँचने के लिए कष्टकर परिस्थितियों से गुजरना पड़ता। बड़े शहरों और कस्बों में तो यातायात के साधन उपलब्ध होते। अस्सी प्रतिशत स्थानों पर ये साधन कामचलाऊ स्तर के ही होते थे। फिर आचार्यश्री का नियम था कि रेलगाड़ी में सामान्य श्रेणी में ही यात्रा करनी है। जहां रेलगाड़ी नहीं थी, वहां बस से जाना होता था। धोती कुर्ता पहने होते थे। इसलिए लोग उन्हें अपने ही तरह का कोई यात्री समझते थे और वैसा ही व्यवहार करते।

आयोजन करने वाली शाखाएं अपनी तरह से अच्छे इंतजाम की कोशिश करती थीं। अच्छे इंतजाम की उनकी अपनी परिभाषा होती। कहीं किसी से मांगी हुई कार का जुगाड़ होता तो कहीं जिस सीट पर आचार्यश्री बैठते उसे खाली रखने का प्रयास किया जाता। इस व्यवस्था के लिए वे दुगना किराया चुका देते थे। कुछ स्थितियों में आचार्यश्री बैलगाड़ी से भी आयोजन स्थल तक गये। इन यात्राओं में उन्होंने साइकिल के कैरियर पर बैठ कर भी यात्रा की।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आयोजन छोटे हों या बड़े, आचार्यश्री के वहां पहुँचने, समय देने और साधकों कार्यकर्ताओं को संबोधित करने में समरसता होती थी। कार्यक्रम में चाहे दस लोग आये हों या दस हजार, आचार्यश्री के लिए दोनों का महत्त्व समान था। उस समय तो उनकी दृष्टि में आयोजन ही सब कुछ होता था। फरवरी ७१ के पहले सप्ताह में आचार्यश्री महासमुंद का सहस्रकुंडीय गायत्री महायज्ञ संपन्न कराकर राउरकेला (ओड़ीसा) पहुंचे थे। वहां यज्ञ अग्निहोत्र का कार्यक्रम आरंभ होने के बाद शाम को प्रवचन हुआ। प्रवचल चल ही रहा था कि मथुरा से तार द्वारा समाचार आया कि ताईजी का निधन हो गया है।

लीलापत शर्मा ने इस सूचना को उस समय रोक लिया। सुबह इस बारे में आचार्यश्री को बताया। उन्होंने निस्संग भाव से सुनकर बालाघाट और दुर्ग के कार्यक्रमों के बारे में पूछा। लीलापत ने उन कार्यक्रमों को रद्द कर देने की बात कही। आचार्यश्री वहां की तैयारियों के बारे में पूछ रहे थे। वहां के कार्यक्रम रद्द करने की बात सुन कर बोले, 'अगर तुम ताईजी की वजह से कार्यक्रम रद्द करने की बात सोच रहे हो तो गलत है। तुमने मुझे नहीं बताया लेकिन जायसवाल ने प्रवचन शुरू होने से पहले मुझे खबर दे दी थी। कार्यक्रम अपने नियत समय पर होंगे।'

लीलापत ने कहा, 'मथुरा में आपके बिना क्या होगा? ताईजी के सब संस्कार।'

असंग निर्णय

आचार्यश्री ने कहा, 'अन्तिम संस्कार तो हो ही गया होगा। आगे की व्यवस्था के लिए वहां ओमप्रकाश है। सतीश है। वीरेश्वर, रमेश हैं। बहुत लोग हैं।' सुनकर लीलापत की आंखें फटी रह गईं। ताईजी के स्नेह, लाड़ दुलार। आचार्यश्री की छेड़छाड़, मां बेटे की नितान्त आत्मिक वत्सलता और औघड़ व्यवहार के कई प्रसंग आंखों के सामने तैरने लगे। जैसे ताईजी सुबह सात आठ बजे ही द्वारकाधीश जाती। वहां से प्रसाद लेकर आती और अपने चिरंजीव को देती ताकि वह नाश्ता शुरु कर सके। आचार्यश्री सुबह का भोजन नौ बजे तक कर लिया करते थे। और जब मथुरा में होते तो द्वारकाधीश का प्रसाद ले कर ही भोजन करते थे। गर्मी के दिनों में तो ताईजी प्रसाद मुट्ठी में बांधकर लाती थीं। कभी कभी धुले हुए हाथों में प्रसाद भीग जाता था। गीले आटे की तरह लगता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

था। आचार्यश्री के सामने वही हाथ खोल देती थीं। आचार्यश्री हालत देखे बिना चुटकी भर प्रसाद उठाकर मुँह में रख लेते।

एक प्रसंग और याद आया जब उन्होंने आचार्यश्री को सबके सामने डांटा था। आचार्यश्री तब किसी कार्यकर्त्ता को उसके प्रमाद पर घुट्टी पिला रहे थे। वह कार्यकर्त्ता उस समय भोजन कर रहा था। ताईजी ने फटकारा था, 'श्रीराम तुमने तो कभी रोटी पर रोटी रख कर खाई नहीं है। इस बेचारे को तो खाने दो।'

ताई की यह डांट सुनकर आचार्यश्री तत्काल चुप हो गए। उस समय वे पचपन छप्पन के रहे होंगे। कुछ और बातें याद आई जैसे वह प्रवास पर जा रहे हैं तो ताईजी के पैर छू रहे हैं लौट रहे हैं तो पहले उन्हें ही प्रणाम करते हैं। चलते रहे ताईजी हाथ पर एक रुपया रखती हैं। यह कहती हैं कि दूध पी लेना। ऐसे न जाने कितने प्रसंग आंखों के सामने तैर गए और उस कक्ष में आचार्यश्री को देखा वे चुपचाप उठे, उठते हुए उनकी गर्दन नीचे झुकी हुई थी। आंखें शायद नम थीं कि उन्होंने अंगुलियों के पोरों से पलकों को पोंछा हो। पोंछना किसी के ध्यान में नहीं आया। और आचार्यश्री ने सिर ऊपर उठाकर कार्यकर्त्ताओं को देखा। कहा, 'यज्ञशाला में परिजन इकट्ठे हो गए होंगे। चलो आगे का कार्यक्रम देखें।'

राउरकेला उड़ीसा का कार्यक्रम संपन्न हुआ। वहां से दुर्ग में भी ताईजी के न रहने की खबर पहुँच गई थी। कार्यकर्त्ताओं को लग रहा था कि यह आयोजन रद्द हो जायेगा। मथुरा से एक टेलीग्राम बालाघाट पहुँच गया था। वहां के परिजन तो मान ही चुके थे कि कार्यक्रम स्थगित। उन्होंने घोषणा सी भी कर दी थी और आयोजन के व्यवस्थापक दुर्ग पहुँच गए थे। आचार्यश्री जब दुर्ग स्टेशन पर उतरे तो कार्यकर्त्ताओं की बड़ी भीड़ थी। उनमें से बहुत से यह मानकर चले थे कि आचार्यश्री सीधे मथुरा ही रवाना होंगे। लेकिन वे गाड़ी से उतरे और स्टेशन के बाहर आ गए। न दुर्ग के कार्यकर्त्ताओं को पूछने का साहस हुआ न आचार्यश्री ने कहा। वे जब स्टेशन से बाहर आकर गाड़ी में बैठे तो कार्यकर्त्ताओं को संकोच हो रहा था कि चलने के लिए कैसे पूछें। आचार्यश्री ने स्वयं ही कहा और शिविर में चले गए। दुर्ग में तीनों दिन कार्यक्रम हुआ। आचार्यश्री के प्रवचन भी। उन्होंने बालाघाट के कार्यकर्त्ताओं से अपने यहां की तैयारी देखने के लिए कहा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बालाघाट के बाद चार या पांच जगह और कार्यक्रम थे। आचार्यश्री ने सभी कार्यक्रमों में उद्‌बोधन दिया। मथुरा में ताईजी के मरणोत्तर संस्कार और तर्पण आदि हो गया था। आचार्यश्री उस समय बालाघाट या छिन्दवाड़ा में थे। उन्होंने वहीं पर अपनी मां के लिए श्राद्ध तर्पण किया और कार्यक्रम चलाते रहे।

अप्रैल १९७१ में जयपुर में हुआ एक सौ आठ कुंडीय गायत्री महायज्ञ विदाई सम्मेलन से पहले हुए गिने चुने आयोजनों में एक था। अन्यत्र हुए आयोजनों की तरह यहां भी राजनीति, धर्मक्षेत्र और समाज के विभिन्न वर्गों से जुड़े लोग आये थे। राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष निरंजननाथ आचार्य की उपस्थिति भी अन्य विशिष्ट व्यक्तियों की तरह थी। लेकिन उनकी प्रतिक्रिया अनूठी थी। उन्होंने आयोजन की जैसे रिपोर्टिंग कर दी। आयोजन का आंखों देखा विवरण लिखते हुए उन्होंने आचार्यश्री से भेंट के बारे में भी लिखा। कहा कि अभी तक कई धर्मगुरुओं से मिला हूँ। उन मुलाकातों की श्रृंखला में एक और कड़ी जुड़ जाने की आशंका लेकर उनसे मिला था। वह आशंका क्षण भर में तिरोहित हो गई। अद्‌भुत देवत्व और आनन पर अलौकिक तेज। वहां शालीनता, सरलता झलक रही थी। लगा कि मैं किसी विशाल वृक्ष की गहरी छांह में विश्राम ले रहा हूं। मौन साधना की अनुभूति से आत्मसात हो रहा था। पहुंचा था मन की भ्रांतियां, द्वन्द्व और ग्रंथियां लेकर, किंतु वे सब मौन थीं। सहज ही मन का विषाद घुलता नजर आया।

चार-चार दिन के विदाई शिविरों में आये साधकों के बारे में मान लिया गया था कि आचार्यश्री की उनसे दोबारा भेट नहीं होगी। लेकिन जून ७१ के निकट आते आते तक साधकों का मन बदलने लगा। आग्रह करने लगे कि आचार्यश्री मथुरा से विदा हों तो उस समय एक बार और मिल लें। पहले योजना थी कि जून ७१ की २० तारीख को चुपचाप मथुरा से निकल जाएंगे। उस समय सिर्फ माताजी ही साथ होंगी। साधकों का आग्रह निरंतर बढ़ता जा रहा था। उस स्थिति में १७ से २० जून की तिथियों में एक आयोजन की तैयारी की गई। विदाई सम्मेलन के रूप में होने वाले इस आयोजन की सूचना मिलते ही देश भर से आने के इच्छुक साधकों की सूचनाएं आने लगीं। अप्रैल ७१ आते तक बीस हजार से ज्यादा साधकों-परिजनों ने आने की सूचना भेज दी थी।

सन् १९७१ में जून की तीसरी तारीख को गायत्री जयंती थी। उस दिन एक सादे सौम्य और गरिमापूर्ण समारोह में शैलबाला और प्रणव पंड्या ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दाम्पत्य जीवन में प्रवेश किया। विवाह संस्कार गायत्री तपोभूमि में संपन्न हुआ था। सत्रह दिन बाद आचार्यश्री अज्ञातवास के लिए जाने वाले थे। अपने जीवन और कृतित्व को लोकोत्तर दिव्य आयाम देने वाले उस क्षण से पहले संपन्न किया, यह अंतिम लौकिक दायित्व था। विवाह संपन्न होने के बाद आचार्यश्री ने कहा अब हम संन्यस्त हुए। वैसे उनकी तत्कालीन जीवनचर्या संन्यस्त जीवन से जरा भी भिन्न नहीं थी।

जिस समय विवाह आयोजन की तैयारी चल रही थी उस समय आचार्यश्री विचार क्रान्ति साहित्य को नया कलेवर देने में व्यस्त थे। नई तरह का यह साहित्य एक पैसे मूल्य का था। अपने विषय में जीवंत प्रेरणा देने वाली 'विज्ञप्ति' शीर्षक की यह सामग्री लोगों को झखझोर देने की क्षमता लिए हुए थी।

मथुरा को प्रणाम

२० जून आते तक गायत्री तपोभूमि में हजारों साधक आ गये। समारोह चार दिन का था। सत्रह जून को शुरु हुए इस सम्मेलन में पहले दिन आदर्श विवाहों का आयोजन रखा गया था। चौबीस युगलों ने अपने जीवन साथी चुने। जीवन भर साथ चलने और धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की सिद्धि का व्रत लिया। विदाई सम्मेलन में प्रवचन आदि कार्यक्रम गौंण थे। मिलना मिलाना और आगे के लिए मार्गदर्शन लेने पर ही ज्यादा जोर था। उत्तर प्रदेश के मंत्री जगन प्रसाद रावत और राजस्थान के राज्यपाल निरंजन नाथ आचार्य भी इस समारोह में थे। चार दिन में तीन मार्मिक उद्‌बोधन हुए। एक उद्‌बोधन कार्यकर्ताओं के लिए दिशा निर्देश को लेकर था। उन्होंने कहा था कि हमारे जाने के बाद कोई भी परिजन स्वयं को वरिष्ठ और दूसरे को नया या कनिष्ठ नहीं माने। परिवार में रहते हुए सभी भाई हैं और सब की स्थिति समान है। इसी तरह यज्ञ आयोजनों, सम्मेलनों, शाखाओं और विभिन्न व्यवस्थाओं के लिए भी दिशानिर्देश थे।

२० जून आषाढ़ कृष्ण द्वादशी की दोपहर तक मिलने, प्रवचन करने और संकल्प करने आशीर्वाद लेने का क्रम चलता रहा। आचार्यश्री और माताजी को प्रणाम करते हुए साधकों के मन में विछोह की तोड़ देने वाली पीड़ा अनुभव हो रही थी। वह पीड़ा आंखों से झर झर कर बह रही थी। साधकों की आंखों से भी और आचार्यश्री व माताजी की आंखों से भी। अखंड ज्योति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संस्थान से निकलते समय घर के लोगों का कलेजा तो मुंह को आ ही रहा था। घियामंडी के आस पड़ौसी भी पीड़ा से बेहाल हो रहे थे।

मिलाते मिलाते आचार्यश्री और माताजी गायत्री तपोभूमि पहुँचे। रास्ते में दोनो ओर हाथ जोड़े लोग उन्हें अंतिम प्रणाम कर रहे थे। हाथ जोड़कर उनका अभिवादन स्वीकार करते हुए आचार्यश्री और माताजी भी वैसी ही विकलता अनुभव कर रहे थे। गायत्री तपोभूमि परिसर में प्रवेश करने के बाद दोनों जल्दी जल्दी कदम बढ़ाते हुए मंदिर की सीढ़ियों तक पहुँचे। आचार्यश्री ने इस बीच माताजी से धीरे से कहा था, 'जल्दी निकल जाना चाहिए। परिजन अपनी व्यथा को रोक नहीं पा रहे हैं'। दोनों ने मंदिर की सीढ़ियां चढ़ीं। गायत्री माता के सामने झुककर बैठ गये। आदि शक्ति को प्रणाम कर बाहर निकले तो देखा कि सामने दो जोड़ी खड़ाऊं रखी हैं। आचार्यश्री और माताजी से अनुरोध था कि इन्हें पहन लिया जाए। आपकी ये पादुकाएं ही तपोभूमि, संगठन और आंदोलन का संचालन करेंगी।

आचार्यश्री और माताजी ने खड़ाऊं पहन लीं। मंदिर की परिक्रमा की। एक बार सीढ़ियों के नीचे से ही गायत्री माता को प्रणाम किया और तपोभूमि के द्वार की ओर मुड़े। वातावरण में सिसकियों की आवाजें गूंज रहीं थीं। हजारों कंठ जैसे करुण क्रंदन करने के लिए बिलख रहे थे। आचार्यश्री और माताजी अपने आंसू पोंछते हुए मंथर गति से यज्ञशाला तक आये। पहनी हुई पादुकाएं उतार दीं। एक कार्यकर्त्ता ने आगे बढ़कर उन पर फूल चढ़ाये। लीलापत शर्मा ने दोनों पादुकाएं उठा कर सिर पर रख लीं और मंदिर की ओर चल दिये। उधर आचार्यश्री और माताजी गायत्री तपोभूमि के द्वार से बाहर आ रहे थे। पीछे रह गये थे रुदन और विलाप करते हुए कंठ। वहां आये हर साधक परिजन का अस्तित्व जैसे कंठ मात्र ही रह गया था। गाड़ी में बैठते हुए आचार्यश्री और माताजी ने एक बार फिर गायत्री माता को प्रणाम किया। गायत्री तपोभूमि को प्रणाम। वहां उपस्थित जनमेदिनी को प्रणाम।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ.प्र.)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता :** जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक :** जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी :** जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक :** जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी :** जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक :** जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक :** जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक :** जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना :** जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org